जनवरी १९४२

सचित्र मासिक पत्र

विषय-सूची

वर्ष ४ जनवरी
अङ्क १ १९४२

हल

संयुक्त-प्रान्तीय सरकार के ग्राम-सुधार-विभाग का मुख पत्र

प्रधान सम्पादक

ग्रामसुधार-अफ़सर, यू० पी०, लखनऊ

सम्पादक

श्रीनाथसिंह

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

१९४२

वार्षिक मूल्य ५॥)] [एक प्रति का ॥)

स चि त्र मा सि क प त्र

जनवरी १९४२ साल ४ अङ्क १
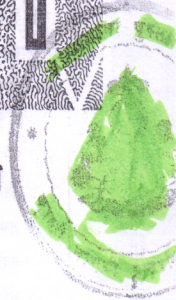
नहान

लेखक, श्री सुमित्रानन्दन पन्त

जन पर्व मकर संक्रान्ति आज,
उमड़ा नहान को जन-समाज,
गंगा-तट पर, सब छोड़ काज।

नारी-नर कई कोस पैदल,
आ रहे चले लो, दल के दल,
गंगा-दर्शन को पुण्योज्ज्वल!

लड़के, बच्चे, बूढ़े, जवान,
रोगी, भोगी, छोटे, महान,
क्षेत्रपति, महाजन औ' किसान।

गा रही स्त्रियाँ मंगल-कीर्तन,
भर रहे तान नवयुवक मगन,
हँसते, बहलाते बालकगण।

[illegible], सिगी, केला औ' सन,
[illegible] टँगे, स्त्री जन,
[illegible] छींटें, फुलवर, साटन।

बहु काले, लाल, हरे, नीले,
बैगनी, गुलाबी, पट पीले,
रंग-रंग के हलके, चटकीले।

सिर पर है चँदवा शीशफूल,
कानों में झुमके रहे झूल,
बिरिया, गलचुमनी, कर्णफूल।

माथे के टीके पर जन मन,
नासा में नथिया, फुलिया, कन,
बेसर, बुलाक, झुलनी, लटकन।

गल में कटवा, कंठा, हँसली,
उर में हमेल, कल चंपकली,
जुगनी, चौकी, मूँगे नकली।

बाहों में बहु बहुँटे, जोशन,
बाजूबन्द, पट्टी, बाँक सुषम,
गहने ही गवाँरिनों के धन!

कँगने, पहुँची, मृदु पहुँचों पर,
पिछला, मँझुवा, अगला क्रमतर,
चूड़ियाँ, फूल की मठियाँ वर।

हथफूल पीठ पर कर के धर,
उँगलियाँ मुँदलियों से सब भर,
आरसी अँगूठे में देकर,—

वे कटि में चल करधनी पहन,
पाँवों में पायज़ेब, झाँझन,
बहु छड़े, कड़े, बिछिया शोभन

यों सोने चाँदी से झंकृत,
जातीं वे पीतल गिलट खचित,
बहु भाँति गोदना से चित्रित।

ये शत, सहस्र नर नारी जन,
लगते प्रहृष्ट सब मुक्त, प्रमन,
है आज न नित्यकर्म बन्धन!

विश्वास मूढ़, निःसंशय मन,
करने आये ये पुण्यार्जन,
युग-युग से मार्गभ्रष्ट जनगण।

इनमें विश्वास अगाध, अटल,
इनको चाहिए प्रकाश नवल,
भर सके नया जो इनमें बल!

ये छोटी बस्ती में कुछ क्षण,
भर गये आज जीवन स्पंदन,—
प्रिय लगता जनगण-सम्मेलन।

खेतों की चकबन्दी सहकारी समितियों-द्वारा

लेखक, श्री जे० पी० मिश्रा, एम० ए०, प्रकाशन आफ़िसर, सहयोग-विभाग, यू० पी०

आजकल खेती-सम्बन्धी वाद-विवादों में अखबारों और भाषणों में खेतों की चकबन्दी करने के प्रश्न पर बहुत ज़ोर दिया जा रहा है। कुछ विशेषज्ञों का ख्याल है कि ग्राम-सुधार की असली नींव यही है और दूसरे लोग यह मानते हैं कि खेतों की चकबन्दी करने का प्रश्न ग्राम-सुधार की तमाम दूसरी स्कीमों से अधिक ज़रूरी है क्योंकि इससे उन्नति के रास्ते में बड़ी सुविधा हो जाती है।

उद्देश्य

खेतों की चकबन्दी करने का तात्पर्य यह है कि किसान को खेती-बारी के भिन्न-भिन्न कामों अर्थात् खाद डालने, हल चलाने, बोने, सिंचाई करने और खेत काटने में आसानी हो और उसका समय, रुपया और परिश्रम नष्ट न हो। इसका एक उद्देश्य यह भी है कि मुक़दमेबाज़ी कम हो क्योंकि अकसर मुक़दमेबाजी खेतों के अलग-अलग होने के कारण होती है।

खेतों की चकबन्दी करने का तरीक़ा

खेतों की चकबन्दी के दो तरीक़े हैं। जिन्हें इस मुल्क और दूसरे मुल्कों में कम या ज्यादा कामयाबी के साथ काम में लाया गया है। पहला तरीक़ा यह है कि लोगों को समझा-बुझाकर और प्रचार करके सहयोग-द्वारा खेतों की चकबन्दी की जाय और दूसरा तरीक़ा यह है कि जोतों की चकबन्दी क़ानून के ज़रिये से हो।

सहयोग से काम करने का तरीक़ा

सहयोग-द्वारा खेतों की चकबन्दी करनेवाली सोसाइटी को बनाने का तरीक़ा यह है कि पहले किसी गाँव में किसानों की आमसभा करके एक ऐसी प्रबन्धकारिणी कमेटी का चुनाव किया जाय जिसमें हर जाति और क़ौम के लोगों का प्रतिनिधित्व हो। यह कमेटी बहस करने के बाद बँटवारे के ख़ास सिद्धान्त नियत कर देगी जैसे कि ज़मीन की क़िस्म और यह कि कौन-कौन से खेतों पर क़ब्ज़ा पहले की तरह बहाल रहेगा और यह तय कर देगी कि साधारण बातों में मावज़ा देकर या किसी और तरह से तसफ़ीहा कर दिया जायगा। बँटवारे के सिद्धान्त नियत हो जाने के बाद प्रबन्धकारिणी कमेटी ज़मीनों को उसी सिद्धान्त के अनुसार खेतों को बाँट देने की एक योजना तैयार करती है और यह योजना आमसभा में मंज़ूरी के लिए पेश की जाती है। अगर सब मेम्बर इसको मंज़ूर कर लेते हैं तो इस पर अमल किया जाता है वरना उसे रद करके दूसरी और तीसरी योजना उस समय तक बराबर तैयार की जाती है जब तक कि कोई ऐसी योजना तैयार न हो जाय जिसे सब कोई पसन्द करें। संक्षेप में कोआपरेटिव के तरीक़ों से खेतों की चकबन्दी करने का तरीक़ा यह है कि गाँव की कुल ज़मीन आपस के समझौते से इकट्ठा कर दी जाती है और उसमें से जिन लोगों के पास पहले जितनी ज़मीन थी, उनको उसी के बराबर ज़मीन एक ही जगह और कम से कम खेतों की सूरत में दे दी जाती है। ऐसा करने में न्याय, निष्पक्षता और नेकनीयती के सिद्धान्तों को ध्यान में रक्खा जाता है।

सहकारी सिद्धान्त पर खेतों की चकबन्दी करने के काम की उन्नति

पंजाब

सहकारी तरीक़ों से खेतों की चकबन्दी करने में पंजाब सब प्रान्तों से आगे है। सन् १९२० ई० में पहली सोसाइटी की रजिस्ट्री हुई थी और सन् १९३० ई० में ऐसी सोसाइटियों की संख्या बढ़कर ६५० हो गई जिन्होंने २,६३,४२० एकड़ ज़मीन की चकबन्दी की। सन् १९३९ ई० तक यह काम तेज़ी से चलता रहा और ऐसी सोसाइटियों की संख्या १,४७७ तक पहुँच गई और इनके मेम्बरों की संख्या १,६०,७८२ हो गई। सन् १९३९ ई० में १,५७,२११ एकड़ ज़मीन की चकबन्दी हो गई और शुरू से उस वक्त तक कुल १०,६६,२२१ एकड़ ज़मीन चकबन्दी की जा चुकी। चकबन्दी करने के पहले खेतों की संख्या १३,०६५ थी लेकिन इसके बाद घटकर केवल ५,८५१ खेत रह गये। यह काम १९ ज़िलों में हो रहा है और जालन्धर का ज़िला इसका मुख्य केन्द्र है। इस ज़िले में कुछ गाँवों का ऐसा समूह है जहाँ कई फ़र्लांग ज़मीन सोसाइटियों-द्वारा यकजा कर दी गई है और खेतों के बीच से होकर सड़कें और रास्ते बना दिये गये हैं। सन् १९३५ ई० से सरकारी ग्राण्ट और अमले के बढ़ जाने के कारण यह बात सम्भव हो सकी है। इस काम के लिए एक कंसालिडेशन असिस्टेंट रजिस्ट्रार, ३३ इन्स्पेक्टर और ३२९ सब इन्स्पेक्टर हैं।

संयुक्तप्रान्त

पंजाब के बाद संयुक्तप्रान्त का नम्बर आता है जहाँ यह काम बाक़ायदा तौर पर सन् १९३१ ई० में शुरू किया गया था। अब यहाँ खेतों को यकजा करनेवाली १८४ सोसाइटियाँ मौजूद हैं। जिन्होंने ७६,००० से अधिक पक्के बीघा ज़मीन यकजा करके उनके खेतों की संख्या घटाकर १/१० कर दी है। बिजनौर, सहारनपुर और मुरादाबाद के ज़िलों के अतिरिक्त जो इस काम में सबसे आगे हैं आजकल मुज़फ़्फ़रनगर, मेरठ, बुलन्दशहर, आगरा, इटावा, फतेहपुर और रायबरेली के ज़िलों में भी काम हो रहा है।

उपर्युक्त सफलता केवल एक इन्स्पेक्टर और पन्द्रह सुपरवाइज़रों की कोशिशों का फल है। अब तक जो सफलता मिली है वह

सन्तोषजनक है। और जोतों के यकजा करने का खर्च लगभग ६ आने फ़ी बीघा पड़ता है।

कठिनाइयाँ

जोतों की यकजाई के काम में सबसे बड़ी कठिनाई पड़ती है और बहुत अरसा लगता है। क्योंकि सोसाइटी के मेम्बर होने की यह एक शर्त है कि जब तक प्रत्येक मेम्बर स्वयं राजी न हो जाय कोई काम नहीं किया जायगा। इस कारण से कुछ मेम्बरों की ज़िद के कारण काम कुछ दिन के लिए रुक भी जाता है। कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि कई महीनों की मेहनत किसी मेम्बर की वजह से बेकार जाती है और जब वह मेम्बर राजी हो भी जाता है तो भी काम बहुत धीरे-धीरे होता है। ऐसी हालत में सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि यह काम किसी न किसी तरह हो जाता है।

क़ानून के ज़रिये जोतों को यकजा करना

दूसरा तरीक़ा यह है कि क़ानून के ज़रिये जोतों को यकजा किया जाय। सन् १९२८ में जोतों को यकजा करने के ऐक्ट के बन जाने के बाद से मध्य प्रदेश में इस काम में काफ़ी उन्नति हुई है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण छत्तीसगढ़ डिवीज़न है जहाँ कि द्रुग और रायपुर ज़िलों में सन् १९३९ ई० तक ११ लाख एकड़ जमीन को १,१७२ गाँवों में फिर से बाँट दिया गया था और प्रत्येक टुकड़े का रकबा आधे एकड़ से बढ़ाकर ३$\frac{1}{5}$ एकड़ कर दिया गया। और २३,७०,००० टुकड़ों की संख्या घटाकर ३,५४,००० कर दी गई। पंजाब दूसरा प्रान्त है जहाँ जोतों को यकजा करने का ऐक्ट सन् १९३६ ई० में पास हुआ।

माल के मोहकमे के अमले केवल ७ ज़िलों में काम करते हैं और उन्होंने ५६,००० एकड़ जमीन को यकजा किया है। माल के मोहकमे के अमले कोआपरेटिव के अमले से मिल-जुलकर काम करते हैं। और कभी-कभी जब कि क़ानून के ज़ोर से काम नहीं चलता है तो सहकारी तरीक़ा काम में लाया जाता है। हमारे प्रान्त में भी जोतों को यकजा करने का ऐक्ट सन् १९३९ ई० में पास हुआ और इस ऐक्ट के अधीन जोतों को यकजा करनेवाले अफ़सरों की नियुक्ति थोड़े दिनों में होनेवाली है।

लाभ

कोआपरेटिव सोसाइटियों और क़ानूनों-द्वारा भिन्न-भिन्न प्रान्तों में जोतों को यकजा करने के आन्दोलन में धीरे-धीरे जो उन्नति हुई है उसका ऊपर संक्षेप रूप से बयान किया गया है। जोतों को यकजा करने से किसानों को बहुत फ़ायदे पहुँचे हैं। बहुत-से किसान अब पहली बार कुआँ खोदवा सके हैं और इसकी वजह से अधिक मूल्यवान् फसलों की खेती होने लगी है। बंजर ज़मीनों को खेती करने योग्य बना दिया गया है और फ़सलों की पैदावार भी पहले से काफ़ी अधिक हो गई है। छुटे मवेशियों और रास्ता चलने-वालों की वजह से जो नुक़सान होता था वह अब क़रीब-क़रीब बिलकुल नहीं होता। खड़ी फ़सलों की ठीक तौर से देखभाल करना असंभव हो गया है। मेड़ों और सिंचाई के झगड़े जिनका कि पहले कोई अन्त न था अब बहुत कम हो गये हैं और इसका नतीजा यह हुआ है कि किसानों के बीच मुक़दमेबाज़ी बहुत कम हो गई है। गाँवों के मकानों की हालत सुधर गई है, फलों के पेड़ भी लग गये हैं। सामाजिक जीवन को आनन्दप्रद बनाने के लिए बहुत-सी सुविधायें दी गई हैं और देहात में वास्तविक सामाजिक भावना जागृत हो गई है। जोतों को यकजा करने से काश्तकार जीवन को एक नये दृष्टिकोण से देखने लगा है और उसको अब ज्ञात हो गया है कि सम्मिलित प्रयत्नों द्वारा ऐसी सफलतायें प्राप्त की जा सकती हैं जिनका कि उसे कभी स्वप्न में भी ख्याल न था। वास्तव में देहातों की खुशहाली औसतन १५ फ़ी सदी और कहीं कहीं २५ फ़ी सदी तक बढ़ गई है।

भविष्य

यद्यपि कठिनाइयाँ बहुत अधिक हैं और सफलतायें कम हुई हैं फिर भी इसमें संदेह नहीं कि जोतों को यकजा करने का आन्दोलन तेज़ी पकड़ रहा है। वास्तव में इस आन्दोलन से जितने बड़े फ़ायदे हुए हैं वे इतने स्पष्ट हैं कि इस प्रान्त के पश्चिमी ज़िलों के कोआपरेटिव डिपार्टमेंट के अफ़सरों के पास जोतों को यकजा करने के लिए इतनी अर्ज़ियाँ आ रही हैं कि कार्य-कर्त्ताओं और रुपये की कमी के कारण उनकी प्रार्थनायें पूरी नहीं की जा सकतीं। अब समय आगया है कि ग्राम-सुधार के इस महत्त्वपूर्ण काम को आगे बढ़ाया जाय और इसमें जो रुपया खर्च होगा उससे गवर्नमेंट और जनता दोनों को लाभ पहुँचेगा। एक तरफ़ तो सरकार की मालगुज़ारी बढ़ जायगी और दूसरी तरफ़ किसानों की आर्थिक उन्नति होगी।

हिन्दुस्तानी ज़राअत का रेगिस्तानी किनारा

लेखक, डा० डब्ल्यू वर्न् स, एग्रीकल्चरल कमिश्नर, गवर्नमेंट ग्राफ इण्डिया

इस लेख में राजपूताना, सिन्ध और पंजाब के सूखे हिस्सों में काश्त के तरीक़ों का उल्लेख किया जायगा। अधिकतर इस बड़े रक़बे में फ़सलों की परवरिश के लिए वर्षा की ज़रूरत होती है और खरीफ़ की फ़सलों का खास स्थान होता है। फ़सल पैदा करने में निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है—

(१) बारिश का देर से होना जिसके कारण बोआई में देर होती है और पैदावार कम हो जाती है।

(२) एक बारिश और दूसरी बारिश के बीच लम्बा अन्तर जिसका फ़सलों के पकने पर बुरा असर पड़ता है।

(३) ज़मीन में काफ़ी नमी न होने के कारण रबी की फ़सलों का खराब जमाव।

(४) पौदों को हमेशा पानी का कमी के साथ मिलना।

सूखी खेती—इन कठिनाइयों का सामना करने के लिए सूबा बम्बई में शोलापुर और बीजापुर के रिसर्च स्टेशन पर, मदरास में हगारी रिसर्च फ़ार्म पर, रियासत हैदराबाद में रायचूर फ़ार्म पर और पंजाब के रिसर्च स्टेशन पर सूखी खेती के सम्बन्ध में खोज हो रही है। रोहतक के अलावा ऊपर लिखे तमाम रिसर्च फ़ार्मों पर बारिश का सालाना औसत २० इंच है। रोहतक में बारिश का सालाना औसत केवल १६ इंच है और यह बिल्कुल रेगिस्तानी इलाक़े से मिला हुआ है।

सूखी खेती का अभिप्राय—सूखी खेती का अभिप्राय यह है कि बारिश के पानी को कामयाबी के साथ जमा किया जावे और जितना पानी ज़मीन पर गिरे वह सही तौर से पौदे के प्रयोग में लाया जावे। ऐसे रक़बों में जहाँ बारिश का सालाना औसत कभी-कभी सिर्फ़ ८ से १० इंच तक होता है और कभी-कभी एकाएक पानी तेज़ी के साथ बरसने लगता है। जोती हुई परती ज़मीन रखने से पानी ज़मीन में क़ायम रखने में मदद मिलती है। रोहतक के खुश्क खेती के रिसर्च स्टेशन के परिणाम से मालूम हुआ है कि परती रखने के बाद सन् १९२९ ई० में बाजरे की पैदावार ४०३ पौंड फ़ी एकड़ हुई। इसके मुक़ाबिले में बग़ैर परती रक्खे हुए खेत की पैदावार सिर्फ़ २९ पौंड फ़ी एकड़ हुई। खेत के चारों तरफ़ बन्ध बनाने से पानी बहने नहीं पाता और ज़मीन में सोख जाता है। रियासत जोधपुर में केवल २·२५ इंच बारिश पर २० एकड़ ज़मीन में जिसके चारों तरफ़ बन्ध बना दिये गये थे तीन फ़ीट ऊँची ज्वार की फ़सल पैदा हुई। इसके मुक़ाबिले में २१० एकड़ ज़मीन की फ़सल जहाँ बन्ध नहीं बनाये गये थे ज़ाया हो गई।

सूखे रक़बों की फ़सलें—ऐसे रक़बों के लिए सख्त जान और जल्द पकनेवाली फ़सलों की क़िस्में रेगिस्तानी इलाक़ों से ही मिल सकती हैं।

कपास की क़िस्मों में "सेन जुइनम" नम्बर ११९—जो कि पंजाब के कृषि-विभाग ने मालूम की है बहुत उपयुक्त है। रियासत बीकानेर में गंगानगर फ़ार्म पर "सेन जुइनम" नम्बर ११९ ने ७९८ पौंड फ़ी एकड़ कपास और ३१३ पौंड फ़ी एकड़ रुई की पैदावार दी। इसके मुक़ाबिले में पंजाब नं० २८९/४३ एफ़ ने ५९४ पौंड कपास और १८३ पौंड रुई की पैदावार दी और पंजाब नं० २८९ डी० ने ५६६ पौंड कपास और १८१ पौंड रुई की पैदावार फ़ी एकड़ दी। पौदे गिनने से मालूम हुआ कि "सेन जुइनम" की ज्यादा पैदावार इसलिए हुई कि उसमें फ़ी एकड़ ज्यादा पौदे ज़िन्दा रहे। सिन्ध में अमेरिकन कपास की एक क़िस्म, जिसको "सिन्ध-सुधार" कहते हैं, काफ़ी सख्त जान साबित हुई है।

जो फ़सलें वर्षा पर निर्भर हैं उनको जल्द पकना बहुत ज़रूरी है—जैसे रोहतक ज़िले में सन् १९३८-३९ ई० में बाजरे के बीज की क़िल्लत हो गई और उसे गुरगाँव ज़िले से मँगाकर सन् १९४० ई० में बोया गया। सितम्बर की बारिश कम हुई और गुरगाँव का बाजरा अच्छी तरह से नहीं तैयार हो सका। इसके मुक़ाबिले में जल्द पकनेवाली रोहतक की क़िस्म कामयाबी के साथ पक गई। इस तरह अगर "मालीसोनी" क़िस्म की कपास जाड़े की बारिश होने पर मार्च में बो दी जावे तो वह अक्टूबर में तैयार हो जायगी लेकिन इसके बाद की बोई हुई कपास कामयाब न हो सकेगी।

बबूल के दरख्त जो कि कभी-कभी खुद उगते हैं और कभी कभी लगाये जाते हैं, सूबा सिन्ध में एक खास तरीके से खेती के सिलसिले में काश्त किये जाते हैं। बबूल का बीज ज्वार या बाजरे की फ़सल में बो दिये जाते हैं। ज्वार और बाजरे की फ़सल बबूल के छोटे पौदों के कारण ऊँट बकरियों से नुक़सान पहुँचने से सुरक्षित रहती है। नाज की फ़सल कट जाने के बाद बबूल के पौदे तेज़ी के साथ बढ़ते हैं और आइन्दा मौसम खरीफ़ तक उनको बारिश की आवश्यकता नहीं होती। खरीफ़ में उनको ६ इंच की आबपाशी दी जाती है। कटाई पाँचवें साल से शुरू होती है और दरख्त १५ साल के बाद काट दिये जाते हैं। उसके बाद ज़मीन में मामूली खेती शुरू कर दी जाती है। अगर एक बार बबूल के पेड़ ज़मीन में अच्छी तरह क़ायम हो गये तब उसके बाद उनको बहुत कम बारिश की आवश्यकता होती है।

("इंडियन फ़ार्मिंग" माह अक्टूबर, सन् १९४१ ई० से उद्धृत)

आहार

[यह लेख हम एक परमोपयोगी अँगरेजी पुस्तक से अनुवाद करके हिन्दी में छाप रहे हैं। इस लेख के लेखक महोदय अज्ञात ही रहना चाहते हैं, इसलिए हम उनका नाम प्रकट करने में असमर्थ हैं।—सम्पादक 'हल']

मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ अधिकतर उसके आहार पर निर्भर होती हैं। कुछ मनुष्यों ने आहारविशेष के प्रयोग को लाभदायक पाया और वे तथा उनके साथी उसी आहार को ग्रहण करते हैं। इसके प्रतिकूल वही आहार दूसरों के लिए ज़हर हो सकता है। कुछ लोगों के लिए मांसाहार ही उनका उपयुक्त भोजन है जिससे उनकी शारीरिक ग्रन्थियाँ काम कर सकती हैं और जिनसे उनके मस्तिष्क को शक्ति मिल सकती है। बहुत से लोग मांस को नहीं खा सकते, लेकिन वे मछली और अंडे खाते हैं। कुछ लोग केवल शाकाहारी ही होते हैं। कुछ लोग दूध के आहार को ही चाहते हैं लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दूध से दूर रहते हैं। कुछ लोग गेहूँ और दाल को ही शारीरिक बुराइयों का कारण बता कर उनका उपयोग नहीं करते। इस प्रकार की भिन्नता होते हुए किसी ऐसे पथ्य का चुनाव करना जिसका कोई विरोधी न हो, एक कठिन कार्य है। पथ्य सम्बन्धी विचार करने में अपनी स्वच्छन्द प्रकृति का आधार लेना चाहिए और किसी भावना या सामाजिक भय का शिकार न बनना चाहिए। उचित पथ्य न मिलने से स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता और बिना स्वास्थ्य के जीवन व्यर्थ है। हर एक पथ्य-वस्तु का आहार करके यह चुनाव कर लेना चाहिए कि कौन-सी वस्तु अधिक लाभप्रद और उपयोगी है और उसी का उपयोग करना चाहिए।

प्रत्येक राष्ट्र और जाति ने अपने आहार को चुन लिया है। उनके वासियों के स्वास्थ्य और बनावट से यह प्रकट हो जाता है कि उन पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ा है या बुरा। सर्द देशों में अधिक परिश्रम करना पड़ता है और अधिक परिश्रम करने पर अधिक आहार की आवश्यकता होती है। प्रकृति के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति वही वस्तु चाहता है जो उसके लिए स्वास्थ्यकर होगी। हमारा शरीर आहार, पेय और निद्रा उसी समय चाहता है जब इनकी आवश्यकता होती है। हमको उसी आहार के प्रयोग की आदत डालनी चाहिए जिसकी हमें इच्छा हो। इससे हमारे स्वास्थ्य को लाभ पहुँचेगा और हम एक विशेष वस्तु की इच्छा करेंगे। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम बहुमूल्य भोजन ही करें। बच्चों को फलों की बहुत अधिक चाह होती है। आम, अमरूद और नारंगी आदि के बाग़ इनसे नहीं बच सकते हैं। बच्चों को मिठाइयों की बड़ी चाह होती है। यदि ऐसा न हो तो बहुत-से फेरीवाले भूखे मर जायँ क्योंकि उनकी मिठाइयाँ कौन खरीदेगा? खाइयों में लड़नेवाले सिपाहियों को भी मिठाइयों की बड़ी चाह होती है। बच्चों को फल का आहार अधिक देना चाहिए क्योंकि यह प्राकृतिक माँग होती है और इससे बच्चों का स्वास्थ्य बढ़ता है, उनका रक्त साफ़ होता है, उनकी भूख बढ़ती है और उनकी हड्डियाँ मज़बूत होती हैं।

मानसिक परिश्रम करनेवालों को हलके और शक्तिदायक पथ्य की आवश्यकता होती है। सर्दी के दिनों में अधिक फ़ैट रखनेवाली पथ्य वस्तुओं का अधिक उपयोग करना चाहिए। अधिक खाने से हमें गठिया आदि कितने ही रोग हो जाते हैं। सादा भोजन, कठिन परिश्रम और नियमित समय पर भोजन करने से अपच और अन्य रोग शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

हम आवश्यकता से अधिक आहार करते हैं। आहार कम करने से हम अपने स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं और अपने धन को भी बचाते हैं। सबसे स्वास्थ्यप्रद और सस्ते आहार गेहूँ, दाल, आलू और चौराई, पालक, तथा बथुआ के साग हैं। फल स्वास्थ्य के लिए बहुत ही उपयुक्त हैं; वे रक्त को साफ़ करते हैं। फल पाचक भी होते हैं।

सदा एक-सा आहार स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। अनिच्छित आहार से भूख कम हो जाती है और उस दशा में आहार से पूर्ण खाद्यशक्ति नहीं ग्रहण की जा सकती है। क्षीण शक्ति को दूर करने के लिए ही आहार होना चाहिए लेकिन अधिक आहार करने से शरीर के अंग कमज़ोर पड़ जाते हैं। प्रत्येक अंग के लिए शरीर से कुछ नियमित शक्ति मिलती है और यदि कोई अंगविशेष आवश्यकता से अधिक काम करता है तो शरीर के अन्य अंगों को हानि पहुँचती है। कुछ अंश तक यह सह्य है लेकिन यदि अति हो जाती है तो प्रकृति व्यक्तिविशेष को बीमारियों-द्वारा दण्ड देती है। अधिकांश रोग आहार के अनियमित होने के कारण ही हो जाते हैं।

हम जो कुछ खाते हैं उससे हमारे मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है, अतः हम खाना खाने के बाद पूर्ण स्फूर्ति से काम नहीं कर सकते और न खाली पेट रहने पर ही कर सकते हैं। धनी मनुष्य का लड़का उतना प्रखरबुद्धि और स्वस्थ नहीं होता है जितना ग़रीब का। अनुचित आहार से हमारी मानसिक शक्ति क्षीण हो जाती है; मादक द्रव्यों का पान करने से मानसिक शक्ति शून्य हो जाती है। दो व्यक्ति एक समान आहार नहीं कर सकते हैं और न एक ही व्यक्ति को विभिन्न स्थितियों में एक समान आहार की ही आवश्यकता होती है। बच्चों के लिए क़हवा, चाय और मसालेदार पदार्थों की आवश्यकता नहीं होती है। जिन लोगों की पाचन-शक्ति ठीक न हो उन्हें भी इन वस्तुओं से परहेज़ रखना चाहिए। सिर्फ़ फलाहार लाभदायक हो सकता है। कुछ पथ्य-विशेषज्ञों का कथन है कि कई महीनों तक केवल फलाहार किया जा सकता है। हलका और स्वस्थ आहार से मस्तिष्क हलका रहता है और शारीरिक ग्रंथियाँ नियमित ढंग पर काम करती हैं। हर एक आदमी सौ वर्ष तक जीवित रह सकता है और ७० वर्ष की आयु तक उसका शरीर उन्नति कर सकता है। वृद्धापन क्षार होने के कारण हो जाता है। इस क्षार से रक्त-प्रवाह रुकने लगता है और फलतः कमज़ोरी आ जाती है। यदि हम अपने आहार को सुधार लें तो हम अधिक स्वस्थ हो सकते हैं और पैसा भी बचा सकते हैं। आहार की मात्रा से हमें शक्ति नहीं मिलती है। सैकड़ों लोगों का अनुभव है कि उन लोगों ने हानिकारक और उत्तेजक पदार्थों को छोड़ने की कोशिश की और सफल हुए। उसके प्रतिकूल उन पदार्थों के उपयोग करने से उनकी इच्छायें बढ़ती ही गईं।

बालक और बालिकाओं को पतला और कमज़ोर न होना चाहिए बल्कि उन्हें स्वस्थ, प्रसन्नचित्त और उत्साही होना चाहिए। वे राष्ट्र और समाज के भावी सन्तान हैं, अतः उन्हें स्वस्थ होना चाहिए। बच्चे कोमल होते हैं अतः उन पर साधारण असावधानी से बुरा प्रभाव पड़ जाता है तथा थोड़ी सी सावधानी से उनका स्वास्थ्य अच्छा भी हो जाता है। उनके लिए न तो दवाओं की आवश्यकता है और न महँगे आहार की ही। उन्हें फलाहार देना चाहिए और विशेष कर मौसमी फल। उन्हें अधिक फैट रखनेवाले फलों को देना चाहिए। अधिक चीनी से हानि होती है, लेकिन बच्चों को उचित मात्रा में चीनी देना लाभदायक होता है। उन्हें अधिक खेलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें थोड़ी-थोड़ी देर पर भोजन देना चाहिए और सोने के लिए काफ़ी समय भी देना चाहिए। बच्चों को थोड़ी-थोड़ी देर पर दूध देना चाहिए। कहा गया है कि यदि नींव मज़बूत हो जायेगी तो गृह अपने आप मज़बूत हो जायेगा।

दूध ही एक ऐसा आहार है जिसे पूर्ण आहार कह सकते हैं। बचपन में कई महीने तक उसी का सेवन किया जाता है। बड़े लोगों के लिए निरा दूध ही आहार नहीं है यद्यपि लोग वर्षों तक दूध का आहार करके रह चुके हैं। जिनका स्वास्थ्य खराब हो या जो कमज़ोर हों उन्हें अन्य आहारों के स्थान पर अधिक दूध का उपयोग करना लाभदायक होगा। बहुत-से लोग कहते हैं कि दूध उनके अनुकूल नहीं होता है और दूध पीने से उनके पेट में क़ब्ज़ आदि रोग हो जाते हैं। दूध एक आहार है और यदि उसका उपयोग अधिक करना होगा तो उसके स्थान पर अन्य आहारों को कम करना पड़ेगा। दूध बहुत पाचक होता है और उसे अधिक पाचक बनाने के लिए उसमें थोड़ा-सा नमक डाल देना चाहिए। गाय का दूध सबसे अच्छा होता है लेकिन भैंस और बकरी आदि का भी दूध लाभदायक होता है और उसमें पूर्ण खाद्य शक्ति होती है। बकरी का दूध बहुत ही लाभदायक होता है और उसके रखने का खर्च भी अन्य दूध देनेवाले जानवरों से कम होता है। सदा स्वस्थ जानवरों का ही दूध उपयोग करना चाहिए। बिना उबाला हुआ दूध कभी नहीं पीना चाहिए क्योंकि उसमें रोग-सम्बन्धी कीड़े हो सकते हैं। पीने के पहले दूध को खूब उबाल लेना चाहिए, केवल गरम करने से काम नहीं चलेगा। दूध शीघ्र ही खराब हो सकता है अतः इसे सदा ढककर रखना चाहिए ताकि मक्खियाँ और धूल न पड़ सके। दही बड़ा ही सुन्दर आहार है और विशेषकर गर्मी के दिनों में। यह प्यास को बुझाता है और डायरिया आदि रोगों में लाभदायक होता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि दही ताज़ा हो और खट्टा न हो गया हो। मक्खन निकाला हुआ दूध भी लाभदायक होता है केवल उसका फैट निकल जाता है।

अंडे हमारे आहार के एक प्रधान अंग होते हैं और उतनी ही मात्रा की मांस से अधिक खाद्य शक्ति रखते हैं। उनमें आयरन और फासफ़ोरस होता है। वह अपने आप पूर्ण आहार नहीं है बल्कि उसके साथ अन्य पदार्थों की भी आवश्यकता होती है। अंडे की सफ़ेदी बहुत ही शक्तिदायिनी होती है और उसके पीले अंश में काफ़ी फ़ासफ़ेड होता है जिससे काफ़ी ताक़त बनती है।

दालों में काफ़ी खाद्य शक्ति होती है। चावल भी शक्तिदायक और शीघ्र पचनेवाला आहार है। साफ़ किये हुए चावल को न खाना चाहिए क्योंकि उससे बेरीबेरी का रोग हो जाता है। चावल उबालकर पानी को न फेंकना चाहिए बल्कि उतना ही पानी डालना चाहिए जितने में चावल पक भी जाय और पानी न फेंकना पड़े। तरकारी पकानेवाले पानी को भी न फेंकना चाहिए क्योंकि सारी खाद्य शक्ति उसी पानी में होती है। हरी तरकारी अधिक लाभदायक होती है। पालक में अधिक रक्तदायिनी शक्ति होती है। बादाम भी बहुत ही लाभदायक होता है। प्रत्येक को इसे परिमित मात्रा में प्रयुक्त करना चाहिए नहीं तो पेट में खराबी हो जायगी।

भोजन के साथ पानी न पीना चाहिए क्योंकि इससे पाचन-शक्ति कमज़ोर पड़ जाती है। पानी से आहार घोटने में आसानी होती है अतः इससे चबाई ठीक नहीं होती है। कोई भी जानवर खाना और पीना एक साथ नहीं करता। पेय भोजन के आध घंटे बाद या पहले लाभदायक होता है। यदि पानी पीना है तो भोजन के दो घंटे बाद पीना चाहिए। भोजन के समय पानी न पीने से आपको उठते समय भारीपन नहीं प्रतीत होगा।

ठूँस-ठूँसकर भोजन न करना चाहिए बल्कि जब थोड़ी सी चाह रहे तभी उठ जाना चाहिए। यदि इस नियम का पालन किया जाय और चबाई हो तो कभी दवा करने की आवश्यकता नहीं होती है। बहुत अधिक नहीं खाना चाहिए। आहार जितना ही सादा होगा उतना ही शक्तिदायक होगा और पेट उतनी ही देर तक आसानी से अपना काम कर सकता है। तेल से छौंकने वग़ैरह का काम लिया जा सकता है। यह सस्ता भी होता है और शक्तिदायक भी। नारियल का तेल भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

यदि आपके सर में दर्द हो या बुखार आ जावे तो आप १२ से ४८ घंटे के अन्दर किये गये अपने भोजन के विषय में सोचिए, आपको बीमारी का कारण मालूम हो जायगा। इस तरह आपको मालूम हो जायगा कि कौन-सा भोजन आपके लिए हितकर है और कौन हानिकारक। कमज़ोर लोगों को हलका भोजन करना चाहिए। प्रकृति अपने आप सारी बुराइयों को दूर करती रहती है और यदि पेट में हर तरह की चीज़ें भर दी जायँगी तो वह शक्ति इन चीज़ों के पचाने में खर्च हो जायगी। कुछ बीमारियों में तो दूध ही रोगी के लिए काफ़ी होता है और उसी से वह अच्छा हो जाता है। यदि आपको भारीपन मालूम पड़े तो भोजन करने के स्थान पर केवल एक गिलास गरम पानी पी लीजिए।

पानी सर्वश्रेष्ठ पेय है। लेकिन यह ताज़ा और स्वच्छ होना चाहिए। छूत से फैलनेवाली बीमारियों के दिनों में स्वच्छ पानी के लिए सबसे उत्तम तरीक़ा यह है कि पानी को उबाल लिया जाय और फिर उसे किसी दूसरे बर्तन में ठंडा कर लिया जाय। इस बर्तन को साफ़ चीज़ से ढक देना चाहिए ताकि मक्खियाँ और धूल न पड़ सकें। कई क़िस्म के फ़िल्टर भी बिकते हैं जो कि पानी को साफ़ करते हैं, लेकिन उन पर बड़ी

सावधानी रखनी पड़ती है क्योंकि एक बार गन्दा हो जाने पर वे बहुत ही हानिकारक हो सकते हैं। सबसे अच्छा ढंग यह है कि पानी को उबालकर पीना चाहिए।

दूषित पानी से कालरा, टाइफ़ाइड, मलेरिया और अन्य रोग उत्पन्न होते हैं। गहरे कुएँ का पानी अच्छा होता है। तेज़ी से बहते हुए झरने आदि का पानी भी अच्छा होता है। मोरियों से सम्बन्ध रखनेवाली नदियों और छिछले कुओं का पानी हानिकारक होता है। गंदे बरतन से कभी भी पानी न खींचना चाहिए। गाँवों के समीप तालाब का पानी अकसर दूषित होता है। इसका पानी पीने के काम में न लाना चाहिए। प्यास रोकने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि अधिक पानी पीने से पाचन-शक्ति खराब हो जाती है और त्वचा की कार्यशीलता शिथिल पड़ जाती है। गरम शरीर होने पर ठंडा पानी न पीना चाहिए। बर्फ़ का पानी प्यास को बुझाता नहीं बल्कि बढ़ाता है।

प्रातःकाल एक गिलास गरम पानी पीने से पेट साफ़ रहता है और पेट की पाचन-शक्ति बढ़ जाती है। सोते समय भी एक गिलास उबाला हुआ पानी लाभदायक होता है। हम गरमी के दिनों में अधिक पानी पीते हैं और जाड़े में कम। जाड़े में अधिक पानी पीने की कोशिश करनी चाहिए ताकि दोनों मौसिमों का औसत बराबर पड़े। सदा घूंट-घूंट पानी पीना चाहिए। धीरे-धीरे एक गिलास पानी पीने से प्यास ही नहीं बुझेगी बल्कि लाभ भी होगा। धीरे-धीरे पीने से यह लार में मिल जाता है और शरीर को लाभ पहुँचाता है।

बिना भूख के खाने से ही तरह-तरह की शारीरिक बीमारियाँ होती हैं। यह सिद्ध हो चुका है कि यदि भोजन को खूब चबाया जाय तो साधारण भोजन की मात्रा से कम मात्रा में ही पूरा भोजन हो जाता है। अधिक खानेवाले अधिक काम करनेवाले नहीं होते हैं बल्कि इसके प्रतिकूल अधिक खाने से दिमाग सुस्त पड़ जाता है। मनुष्य के लिए उतना ही भोजन चाहिए जितने से रक्त बनता है। उससे अधिक भोजन करने से वह ज़हर का काम करता है। अधिक दिन जीवित रहने का सबसे सरल तरीक़ा यह है कि स्वास्थ्यप्रद भोजन किया जाय, बराबर कठिन परिश्रम किया जाय, काफ़ी खेल खेला जाय, शरीर साफ़ रखा जाय और काफ़ी आराम लिया जाय।

डाक्टरों का प्रथम प्रश्न यह होता है कि 'आपको भूख कैसी लगती है?' जिस मनुष्य या स्त्री को चौबीस घंटे में दो बार भूख न लगे तो उसे स्वस्थ नहीं कहा जा सकता है। उनकी पाचन-शक्ति में किसी प्रकार की खराबी होगी। स्वास्थ्य की खराबी खास कर भोजन की गड़बड़ी के कारण ही होती है। अनियमित समय पर भोजन करने से शरीर को बड़ी हानि पहुँचती है। पेट को आहार पचाने का समय देना चाहिए न कि थोड़ी-थोड़ी देर पर भोजन करके उस कार्य को रोकना चाहिए। सदा काम पर जाने के पहले या खेलने के पहले कुछ हलका-सा भोजन कर लेना चाहिए। क्योंकि पेट को कुछ काम देना चाहिए वर्ना यह अपनी शक्ति को ही बर्बाद कर देगा। प्रत्येक समय भोजन करने के समय में कम से कम पाँच घंटे का अन्तर होना चाहिए।

होरेस फ़्लेचर का कहना है कि अच्छी तरह से चबा-चबाकर भोजन करने से साधारण भोजन से कम मात्रा में ही पूर्ण भोजन हो सकता है और स्वास्थ्य भी बढ़ सकता है। इनका कहना यह है कि भोजन को इतना चबाना चाहिए कि वह अपने आप गले के नीचे उतर जाय। भोजन को काफ़ी समय तक मुँह में रखना चाहिए ताकि वह लार से मिल जाय क्योंकि पेट में पहुँचते ही लार की पाचन शक्ति नष्ट हो जाती है। खीर आदि खाने से चबाई का काम ठीक ढंग पर नहीं होता है। चबाकर थोड़ा खाना खाने से अधिक लाभ होता है। यदि एक बार इसकी आदत पड़ जाती है तो वह जीवनपर्यन्त रहती है।

आहार एक-सा न होकर विभिन्न तरह का होना चाहिए। भूख लगने पर सादा भोजन भी स्वादिष्ठ लगता है और ऐसे ही आहार के पचने पर शरीर को बहुत लाभ होता है। खाना खाने के बाद या कठिन परिश्रम करने के बाद तुरन्त ही फिर खाना ठीक नहीं है। भोजन करने के बाद भी कठिन परिश्रम न करना चाहिए। कभी पेट भर न खाना चाहिए। यदि आदमी भोजन के पश्चात् कम से कम डेढ़ घंटे नहीं बैठ सकता है तो उसे बिना भोजन किये ही सो जाना चाहिए। थके और भूखे मनुष्य को भोजन के आधे घंटे के बाद सो जाना चाहिए। यदि आपको भूख लगी हो और भोजन में कुछ देरी हो तो कुछ दूसरी चीज़ न खाना चाहिए बल्कि भूख को क़ायम रखने के लिए खाली पेट ही रहना चाहिए। यदि सह्य न हो तो गर्म या ठंडा एक गिलास पानी पी लेना चाहिए। इससे आपकी भूख रुक जायगी और आप पूर्ण इच्छा भर भोजन भी कर सकेंगे। भोजन अधिक स्वादिष्ठ न होकर हलका होना चाहिए जो कि आसानी से पच सकता है। भोजन करते समय न पढ़ना चाहिए बल्कि पूरे ध्यान से भोजन को चबाना चाहिए। धीरे-धीरे भोजन करना चाहिए। भोजन में कभी जल्दी न करना चाहिए। दूसरों के साथ खाने से दिल भी बहलता है और पाचन-शक्ति भी बढ़ती है।

व्रत रहनेवालों का कहना है कि दिन भर व्रत रहने से शरीर के फालतू वस्तुओं का नाश हो जाता है और पेट साफ़ हो जाता है। इस मिथ्यावाद में वे अपने शरीर और अंगों को नष्ट करते हैं। कभी-कभी डाक्टर भी अपने मरीज़ को भूखा रहने की राय देते हैं। यह यदि घातक नहीं तो हानि-प्रद अवश्य है।

लोग मांस खाना रोक सकते हैं, लेकिन यह कहना कि मांसाहार हानिकारक है, ठीक नहीं। यह कहा जा सकता है कि इस देश के अधिकांश मांसाहारी लोग यदि शाकाहार करें तो उन्हें अधिक लाभ होगा। शरीर की बनावट को बढ़ाने और नष्ट शक्ति को पूरा करने के लिए शाकाहारों में बहुत ही कम नाइट्रोजन होता है। बराबर शाकाहार करनेवाले मनुष्य या तो इस शक्ति से परे रह जाते हैं या अधिक भोजन करते हैं। प्रथम दशा में उनके शरीर और अंग कमज़ोर हो जायँगे और दूसरी दशा में पेट भारी हो जाता है और उसमें कोई न कोई खराबी आ जाती है। भारतवर्ष में शाकाहार करनेवालों में से अधिकांश को पूर्ण शारीरिक शक्ति नहीं

मिलती है अतः बहुत-से लोगों का स्वास्थ्य खराब हो गया है।

आहार चुनने में थोड़ा विचार से काम लेना चाहिए। वही भोजन चुनना चाहिए जिससे शरीर और मस्तिष्क की शक्ति बढ़े।

स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि समय-समय पर मांसाहार करने से भारत-वासियों को भी वही शक्ति मिल जायेगी जो अन्य प्रमुख राष्ट्रों के निवासियों को प्राप्त है। जानवरों में ही देख लीजिए, कौन-से जानवर हृष्ट-पुष्ट, तेज़ और शक्तिशाली होते हैं। दूसरे देशों की नक़ल न करनी चाहिए। उनकी स्थिति हमसे भिन्न है। अपने ही देश के उन लोगों में जो शाकाहारी हैं और जो मांसाहारी हैं उनमें तुलना करके देखिए। यह देखिए कि इनमें से कौन अधिक बहादुर, शक्तिशाली और तेज़ है। यह भी देखिए कि उनमें से कौन दीर्घजीवी रहता है और कौन देखने में हृष्ट-पुष्ट प्रतीत होता है। यह अनुभव आपको स्वयं करना चाहिए क्योंकि आपको ही अपना स्वास्थ्य बनाना है। प्रत्येक व्यक्ति को अपना आहार स्वयं निश्चित करना चाहिए क्योंकि आहार के विषय में कोई नियम नहीं बताया जा सकता है।

बाज़ारू दवाइयों से भी बहुत-से रोग फैलते हैं। प्रत्येक समाचार-पत्र ऐसी दवाइयों के विज्ञापनों से परिपूर्ण रहते हैं। इन दवाइयों के प्रयोग से बहुत-से लोगों का स्वास्थ्य और धन नष्ट हो रहा है। ये दवाइयाँ हानि-कारक और धन का नाश करनेवाली होती हैं। अतः इनसे दूर ही रहना चाहिए।

फूलगोभी

लेखक, मि० ई० टी० गस्टव, सरकारी बाग़, लखनऊ

इतिहास—यह फ़सल डेनमार्क से उत्पन्न होकर सारे संसार में फैली।

फ़सल—यह फ़सल अपने फूल के लिए बोई जाती है। छोटे-छोटे फूल मिलकर एक गोल वस्तु बन जाती है। इसकी फ़सल को तैयार करने में बनिस्बत और फ़सलों के बड़ी सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। इस फ़सल में अकसर चतुर लोग भी असफल हो जाते हैं।

जलवायु—यह एक रबी की फ़सल है। इसके लिए हलकी और समतल ज़मीन की आवश्यकता पड़ती है। यदि उसके बढ़ जाने तक भी काफ़ी ठंडक नहीं हुई तो फूल गठिया जाता है जिसको अँगरेज़ी में "बटनिंग" या "फ़ीज़नेस" कहते हैं। गर्म ऋतु में और सूखी मिट्टी में बँधा तथा कसा हुआ फूल उभड़ने की कोशिश करता है और उसके कारण फूल में छोटी-छोटी गाँठें-सी निकल आती हैं जिसके कारण सफ़ेद गोभी का फूल गन्दा, तथा मटमैले रंग का हो जाता है और ये गाँठें सारे फूल पर आ जाती हैं। यह गाँठ भी एक प्रकार का फूल है जिसकी पँखड़ियों का रंग मटमैला होता है और यही मटमैला-पन सारे फूल पर नज़र आता है। इस रोग का कारण यही होता है कि या तो जड़ें दब जाती हैं या जड़ें फंगस वग़ैरह के कारण घायल हो जाती हैं और तीसरा कारण काफ़ी सर्दी पड़ने का भी है। अधिक सर्दी पड़ने से फूल पर भी फंगस हो जाते हैं जो कि फूल के बहुत बारीक सूराख़ों में से अन्दर चले जाते हैं, जिसके कारण जब मनुष्य उस फूल को सब्ज़ी के रूप में खाता है तो बद-हज़मी की शिकायत हो जाती है।

मिट्टी—इसके खेत की मिट्टी अच्छी होते हुए भी उसमें फास्फेट की मात्रा अधिक होनी चाहिए और मिट्टी ज़्यादा गहरी और गुड़ी हुई होनी चाहिए। इस फ़सल को पहले नरसरी में जमाकर फिर खेत में लगाना चाहिए। इसके बीज से जमे हुए छोटे पौदों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। उसे ज़्यादा दिन ज़खीरे में न रखना चाहिए नहीं तो इस देरी के कारण बाद में फूल के ख़राब हो जाने का डर रहता है। इसे क़तारों में बैठाना चाहिए जो २४″ से ३६″ के अन्तर पर होनी चाहिए, और एक पौदे से दूसरे पौदे के बीच में १८″ से २०″ तक की दूरी होनी चाहिए। इस फ़सल के बोने का सबसे अच्छा समय अगस्त से अक्टूबर तक है और निराई के लिए अक्टूबर से दिसम्बर तक तथा फ़सल काटने का समय फ़रवरी से अप्रैल तक है।

पैदावार—इसकी पैदावार ७,००० फूल फ़ी एकड़ है और प्रत्येक फूल का वज़न ½ सेर से २ सेर तक है।

क़िस्में—अर्ली स्नोवाल क़िस्म की फूलगोभी सबसे अच्छी और जल्द तैयार होनेवाली है। इसे बरसात में भी लगा सकते हैं।

"डेनिश जायण्ट" की क़िस्म बहुत देर में तैयार होती है। इस फ़सल को जब काट-कर बाज़ार भेजना हो तो पत्तों-समेत भेजना चाहिए क्योंकि वहाँ जब फूल ग्राहक के सामने खोला जायगा तो वह इसे ज़्यादा पसंद करेगा। पहले से तोड़ देने से फूल की शोभा जाती रहती है और उस पर गर्द वग़ैरह जम जाती है, जिससे वह गन्दा हो जाता है। बीज के लिए जो पौदा छाँटना हो वह सब पौदों से तन्दुरुस्त होना चाहिए और उसे एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह पर लगाना चाहिए तथा ज़खीरे में ३-४ बार फेरना चाहिए जिससे उसकी जड़ों को चोट पहुँचे। जब पौदे को यह मालूम हो जायगा कि अब उसके अन्तिम दिन निकट हैं तो वह अपनी नस्ल बढ़ाने के लिए जल्दी से फूल देगा और जब फूल न दे तो उसे फेरते रहना चाहिए, जब फूल दे दे तब रुक जाना चाहिए।

प्रत्येक फेराई १० या १२ दिन के बाद होनी चाहिए।

फूलगोभी का बीज ५ साल के बाद बोये जाने पर भी जम सकता है बशर्ते कि वह सीलन वग़ैरह से बचा रहे।

गेहूँ की खेती

लेखक, श्री सी० पी० दत्त और बी० एम० पग

गेहूँ की खेती करने के लिए कई तरीक़ों का उपयोग किया जाता है। भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों में ये तरीक़े भिन्न-भिन्न होते हैं अतः उनका जान लेना आवश्यक हो जाता है।

गेहूँ के खेत की तैयारी—गेहूँ बोने के लिए वह खेत आदर्श समझा जाता है जिसकी मिट्टी अच्छी तरह से चूर-चूर कर दी जाती है और फिर उसे पटैल वग़ैरह से ठोस बना दिया जाय।

भारतवर्ष में खेत को बनाने के लिए भूमि की दशा तथा उसके सिंचाई होने या न होने पर विचार करके भिन्न-भिन्न तरीक़ों का प्रयोग करते हैं। कछार ज़मीन में, जैसे पंजाब, संयुक्त-प्रान्त और सिन्ध में ज़मीन को बार-बार उलट-पुलटकर उस समय तक जोतते हैं जब तक कि मिट्टी चूर-चूर नहीं हो जाती है। कभी-कभी किसान लोग १५बार तक जोताई करते हैं। साधारणतया आठ या दस बार जोताई की जाती है, यह जोताई अधिकतर बरसात के दिनों में की जाती है। केवल एक या दो बार सितम्बर और अक्टूबर में की जाती है। खेत को जोत लेने के बाद उसे पटैल से बराबर करते हैं। यह हथियार पंजाब में सोहागा और संयुक्त-प्रान्त में पटैल नाम से प्रसिद्ध है। यदि उपज की सिंचाई करनी होती है तो केवल दो या तीन बार की जोताई से काम चल जाता है। ढेले को तोड़ने के लिए हर बार जोताई करने के बाद पटैल दिया जाना आवश्यक है।

मध्यभारत, बुन्देलखण्ड, मध्यप्रान्त तथा बम्बई में गंगा के मैदान से भिन्न ही तरीक़ों का प्रयोग होता है। यहाँ भूमि को तैयार करने के लिए हल के स्थान पर बक्खर का प्रयोग किया जाता है। यह औज़ार इन स्थानों के लिए बहुत ही उपयुक्त होता है। यह ज़मीन में क़रीब ८ इंच तक की गहराई तक जाता है और मिट्टी को चूर-चूर कर देता है। इसके कारण पटैल देने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है। बक्खर का प्रयोग अप्रैल या मई में किया जाता है, एक या दो बार बरसात में और फिर सितम्बर में। खेत बोने के पहले अक्टूबर में एक बार फिर इस औज़ार का प्रयोग किया जाता है।

बोने का समय—आधे अक्टूबर से लेकर आधे नवम्बर तक गेहूँ बोया जाता है। सारे भारतवर्ष में गेहूँ बोने का यही ठीक समय है, लेकिन पश्चिमोत्तर प्रान्त और पंजाब के कुछ उत्तरी भागों में इसके बोने का समय कुछ देर में शुरू होता है।

बोने का ढंग—गेहूँ की बोआई तीन तरह से की जाती है। (१) छिटाई, (२) हराई और (३) कूँड की बोआई। छिटाई करने में बीज को हाथों से छीटकर फिर उसे हैरो-द्वारा या हल-द्वारा मिला देते हैं। यह तरीक़ा बहुत ही बुरा है और इस तरह बोने से साधारण ढंग से अधिक बीज ख़र्च होता है। बहुत-से बीज ऐसे स्थानों पर पड़ जाते हैं जहाँ वे नहीं जम सकते हैं। बीज भी एक समान गहराई पर नहीं गिरते हैं। बहुत-से बीजों को पक्षी चुग जाते हैं और खा जाते हैं। बीज भी एक प्रकार खेत में नहीं पड़ते हैं। अतः इस प्रकार बीज बोने का ढंग ठीक नहीं है। यह होते हुए भी भारतवर्ष के अधिकांश स्थानों में जहाँ गेहूँ की खेती होती है, इसी नियम का पालन किया जाता है। जब मिट्टी नम हो उस समय इस ढंग का प्रयोग किसी हद तक किया जा सकता है। इस ढंग पर बोआई करने से प्रतिएकड़ ४० या ५० सेर बीज ख़र्च होता है।

हराई-द्वारा बोआई में जोती गई हराई में बीज बोया जाता है। इस ढंग में बीज बोनेवाला हलवाहे के पीछे-पीछे चलता है और हराई में बीज डालता जाता है। मर्द हल जोतता है और स्त्रियाँ तथा बच्चे बीज बोते हैं। यह तरीक़ा प्रथम तरीक़े से अच्छा है लेकिन इसमें अधिक परिश्रम करना पड़ता है तथा प्रतिदिन के हिसाब से कम काम होता है। इस प्रकार की बोआई करने के बाद पटैल देना आवश्यक होता है ताकि बीज अच्छी तरह से ढक दिया जाय। यह काम बीज बोनेवाला अपने पैर से करता जाता है लेकिन इस प्रकार काम करने से काम कम होता है और अधिक समय लगता है। इस ढंग से बोआई करने से प्रतिएकड़ ३० या ४० सेर बीज की खपत होती है। इस ढंग का प्रयोग नहरों-द्वारा सिंचाई होनेवाले पंजाब प्रान्त के कुछ स्थानों में तथा बम्बई प्रान्त में सिंचाई होनेवाले भाग में होता है।

कूँड़-द्वारा बोआई करने का ढंग भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होता है। संयुक्त-प्रान्त और पंजाब में कूँड़ की बोआई का ढंग यह है कि हल के पीछे बाँस की एक नली लगा देते हैं और इसी नली के द्वारा बीज हराइयों में जाकर गिरता है। हल के पीछे गिरनेवाली मिट्टी से बीज ढक जाता है। इस प्रकार की बोआई में दो मनुष्यों की आवश्यकता होती है। एक हल चलाता है और बैलों को हाँकता है तथा दूसरा बीज गिराता है। बीज गिराने का काम अकसर स्त्रियाँ ही करती हैं। बाँस की नली को ठीक करके जोताई की गहराई कम या अधिक की जा सकती है। हराई के अन्त में हल मुड़ने के कारण वह स्थान ख़ाली रह जाता है। इनको पूरा करने के लिए खेत के चारों ओर कुछ हराई बाद में बो दी

जाती है। इस प्रकार की बोआई करने में २५ या ३० सेर प्रतिएकड़ बीज लगता है।

मध्यप्रान्त और बरार में बीज बोने का काम एक प्रकार के औज़ार से करते हैं जिसे स्थानीय भाषा में तिफ़ान कहते हैं। इस औज़ार में तीन खोखली नलियाँ मिली रहती हैं और प्रत्येक एक-एक कूँड में लगी रहती हैं जो कि ऊपर एक बड़े लकड़ी के बर्तन में मिल जाते हैं। बीज छोड़नेवाला इसी बर्तन में बीज छोड़ता है और बाद में बीज तीनों नालियों में चला जाता है। इस प्रकार ऐसे कूँड़ से तीन हराई या लीक बोई जा सकती है। इस ढंग से बोने पर प्रतिएकड़ ३० सेर बीज लगता है। बम्बई-प्रान्त में इसी प्रकार से कूँड़ का प्रयोग होता है लेकिन वह वज़न में भारी होता है। इस प्रकार की बोआई करने में क़रीब २० या ३० सेर प्रतिएकड़ बीज लगता है।

आजकल पाश्चात्य देशों के आधार पर नई मशीनों का प्रयोग बढ़ रहा है। ये कूँड़ खींचनेवाली ताक़त के आधार पर भिन्न-भिन्न ढंग का होता है। चूँकि भारतवर्ष में खींचने के लिए बैलों को काम में लाते हैं अतः ये मशीनें छोटी होती हैं। इस प्रकार के औज़ार से ५ या ६ लाइन एक साथ बोई जा सकती है। इसलिए इस औज़ार से बोआई करने में स्थानीय ढंग की बोआई में अधिक काम होता है। यह मशीन अच्छी है क्योंकि यह बीज को समान गहराई तक पहुँचा देती है। यदि खेत की तैयारी अच्छी की गई है तो यह मशीन बहुत अच्छा काम करती है।

फलतः तीनों तरीक़ों में यह अन्तिम तरीक़ा सर्वोत्तम है। इससे फ़सल भी अधिक होती है। इसका कारण यह है कि बीज समान गहराई पर पड़ता है और इस प्रकार बीज के उगने में आसानी होती है। इसमें प्रतिएकड़ औसत से कम बीज भी लगता है। बीज को एक निश्चित गहराई पर बोना चाहिए। जब बीज उगने लगता है तो तीन या चार जड़ें निकलती हैं। बीज उगने की पहली दशा में स्थायी जड़ें ऊपरवाले हिस्से से क़रीब ३ या ४ इंच की गहराई पर होती हैं। अतः यदि बीज अधिक गहराई पर बो दिया जाय तो उसकी वह दूरी व्यर्थ की होती है और उसमें बीज की शक्ति क्षीण होती है।

बोआई के बाद––बोआई करने के बाद निराई आदि के रूप में बहुत ही कम काम होता है। यदि खेत सिंचाई करनेवाले स्थान में होता है तो उसे क्यारियों में विभाजित कर दिया जाता है। पंजाब में बीज जमने के पूर्व जंदरा नामक औज़ार से क्यारियाँ बना दी जाती हैं। स्थानीय जलवायु तथा फ़सल की प्रकृति के अनुसार सिंचाई की जाती है। पंजाब में बोआई के बाद दो या तीन बार सिंचाई की जाती है। संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध में यह सिंचाई एक से लेकर तीन तक होती है। राजपूताना के कुछ खास स्थानों में छः बार सिंचाई की जाती है।

गेहूँ की निराई नहीं की जाती। केवल चतुर किसान ही गेहूँ की निराई करते हैं। गेहूँ की फ़सल का सबसे हानिकारक पौधा बथुवा और प्याज़ी है। कभी-कभी गेहूँ का पौधा गिर पड़ता है। इसका कारण यह है कि या तो डंठल कमज़ोर होता है या जड़ें कमज़ोर होती हैं और यह या तो ज़मीन की नमी के कारण या अधिक उर्वरा होने के कारण हो जाता है। यदि शुरू में पौधा गिर पड़ता है तो वह बाद में उठ जाता है लेकिन यदि वह बाद में गिरता है तो पौधा गिरा ही रह जाता है। गेहूँ का पौधा उसी समय गिरता है जब कड़ी वर्षा होती है और तेज़ हवा चलती है।

कटाई और पिटाई––मध्यप्रान्त और मध्यभारत के कुछ स्थानों में गेहूँ की कटाई मार्च में आरम्भ होती है। संयुक्त-प्रान्त में गेहूँ की कटाई आधे मार्च से आरम्भ होती है और आधे अप्रैल तक होती रहती है। पंजाब में कटाई आधे अप्रैल से आरम्भ होती है और मई तक होती रहती है। पश्चिमोत्तर प्रान्त में कटाई जून में आरम्भ होती है और महीने भर होती रहती है।

संयुक्त-प्रान्त में गेहूँ की कटाई हँसिया से होती है और पंजाब तथा मध्यभारत में दरेंती से। कटाई के बाद फ़सल को खलिहान में ले जाते हैं। फ़सल खूब पकी रहती है अतः उसे शीघ्र ही पीटकर अलग किया जा सकता है।

भारतवर्ष के अधिकांश स्थानों पर छटाई के लिए बैलों का प्रयोग करते हैं। खलिहान में फ़सल को फैला देते हैं और उस पर बैलों को बार-बार उस समय तक हाँका जाता है जब तक अन्न डंठल से बिलकुल अलग नहीं हो जाता है। भूसा और अन्न को अलग करने के लिए सूप या छाज का प्रयोग करते हैं। टोकरी को ऊपर उठाकर हिलाते हैं और इस प्रकार अन्न और भूसा हवा के ज़ोर से अलग अलग गिरता है। भूसा हलका होने के कारण अन्न से अपने आप अलग हो जाता है।

अलग कर लेने के बाद अन्न को बोरों में या खुले ही कमरों में रख देते हैं। कभी-कभी यह मिट्टी के बर्तनों में इकट्ठा किया जाता है। ये बर्तन भारत के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न ढंग के होते हैं। पारिवारिक खर्च के लिए गेहूँ को कुट्टियों या कोठियों में रखते हैं। कभी-कभी गेहूँ को मिट्टी के बर्तनों में भी रखते हैं। बेचा जानेवाला अन्न अलग करने के बाद तुरन्त सौदागरों के हाथ बेच दिया जाता है।

बीमारियाँ और हानिप्रद वस्तुएँ

गेरुई––भारतवर्ष में गेहूँ की सबसे भयानक बीमारी गेरुई लगना है। इस बीमारी के कारण गेहूँ की उपज बहुत कम हो जाती है। यदि गेरुई से होनेवाली हानि का औसत ५ प्रतिशत लगाया जाय तो सारे भारतवर्ष में मिलाकर कई लाख रुपये की हानि होगी।

भारतवर्ष में गेहूँ में तीन प्रकार की

गेरुई लगती है। नारंगिया गेरुई, पीली गेरुई और काली गेरुई।

नारंगिया गेरुई सबसे पहले पौधे पर दिखाई देती है। बिहार में तो यह बीमारी नवम्बर में ही दिखाई पड़ती है लेकिन अधिकतर साल के आरम्भ में यानी जनवरी के आरम्भ में दिखाई देती है। यह बीमारी पत्तियों पर होती है लेकिन कभी-कभी डंठल पर भी हो जाती है। यह गेरुई पीली गेरुई से आसानी पूर्वक पहचानी जा सकती है क्योंकि इसमें छाले एक समान न पड़कर पत्तियों पर इधर-उधर छिटके रहते हैं और पहले उनका रंग नारंगी के समान होता है लेकिन बाद में वे पीली गेरुई के समान ही हो जाते हैं। यह बीमारी पत्तियों के ऊपरी तह पर होती है।

पीली गेरुई नारंगिया गेरुई से बाद में तथा काली गेरुई के पहले दिखाई पड़ती है। यह पत्तियों पर भयानक आक्रमण करती है। कभी-कभी यह पत्तियों की झिल्लियों आदि पर भी भयानक आक्रमण करती है। इस गेरुई में छालों की क़तार की क़तार दिखाई देती है और उसका रंग नींबू के समान पीला दिखाई देता है। ये छाले पहले ऊपरी छिलके में ढके रहते हैं और उनके फूटने पर एक प्रकार का पीला पाउडर गिरने लगता है।

काली गेरुई पहले डंठल पर, फिर झिल्लियों पर और फिर पत्तियों आदि पर आक्रमण करती है। यह गेरुई सबसे बाद में दिखाई देती है। क़रीब मार्च के महीने में दिखाई देती है। इसके छाले बड़े-बड़े होते हैं जो लगातार क़तार में दिखाई देते हैं और फलतः शीघ्र ही फूट भी जाते हैं। यह फटते समय झिल्ली को फोड़ देता है और उसमें से भूरे रंग का पाउडर निकलने लगता है जो बाद में चलकर काला हो जाता है। यह पौधे के हर अंग में पाया जाता है लेकिन पत्तियों पर बहुत कम होता है।

ये तीनों प्रकार की गेरुई संयुक्त-प्रान्त और बिहार में हर साल होती हैं। ये तीनों एक ही पौधे पर भी हो सकती हैं। बम्बई और मध्यप्रान्त में नारंगिया गेरुई नहीं लगती है। पंजाब में भी यह गेरुई उस मात्रा में नहीं पाई जाती है, जिस मात्रा में अन्य दो। काली गेरुई भारतवर्ष में उतनी हानिकारक नहीं समझी जाती है जितनी संयुक्त-राष्ट्र अमरीका और आस्ट्रेलिया में। भारतवर्ष में पीले रंग की गेरुई बहुत ही हानिकारक होती है। इससे गेहूँ की फ़सल को बहुत नुक़सान पहुँचता है।

गेरुई का लगना वर्षा तथा नमी और अधिक सिंचाई आदि कई अवस्थाओं पर निर्भर होता है। जिस प्रकार गेरुई लगती है उसका संतोषपूर्ण वर्णन अभी तक नहीं किया गया है। इस गेरुई के विषय पर कई विचार प्रकट किये गये हैं। उनका वर्णन निम्नलिखित है:—

(१) प्रथम विचार यह है कि हिमालय पर बारबेरी नाम की झाड़ियाँ होती हैं। उन्हीं झाड़ियों में गर्मी के दिनों में यह बीमारी रहती है और जाड़े के आरम्भ में वह मैदानों में फैलकर फ़सल पर आक्रमण करती है।

(२) ये पौधे इधर-उधर पड़े हुए गेहूँ के पौधों पर जीवित रहते हैं जो गर्मी के बाद बरसात की मौसम में उगते हैं।

(३) गर्मी के महीने में यह पौधा दूसरी घासों पर जीवित रहता है।

(४) यह उस समय तक ज़मीन में रहता है जब तक कि नया पौधा तैयार नहीं होता है।

(५) यह जीव बीज में उस समय तक रहता है जब तक कि उसके आक्रमण करने की स्थिति ठीक नहीं रहती है। समय पाकर वह तुरन्त पौधे के ऊपरी हिस्से में प्रकट हो जाता है।

इम्पीरियल कौंसिल आफ़ एग्रीकलचरल रिसर्च ने बहुत छान-बीन करने के बाद यह पता लगाया है कि गेरुई कुछ खास प्रकार के पुनरुत्पादक बीजों से फैलती है जो कि ऊँचे स्थानों से वितरित होते हैं। उदाहरणार्थ संयुक्त-प्रान्त में सिवालिक पहाड़, पंजाब में मूरा पहाड़, बम्बई में पश्चिमीय पहाड़ तथा दक्षिण भारत में नीलगिरि और पालनी का पहाड़।

इस बीमारी को एकाएक नहीं रोका जा सकता है। इसका सबसे सरल उपाय यह है कि ऐसे गेहूँ की नस्लें बोई जायँ जिनमें इस बीमारी का सामना करने की शक्ति हो। कुछ ऐसी नस्लें बताई गई हैं जो इसका सामना कर सकती हैं। पूसा नं० ११४,१२०,१२५ और १६५ नारंगिया गेरुई का सामना आसानी से कर लेता है।

लूज़-स्मट—यह बीमारी गेहूँ उपजानेवाले स्थानों में अकसर होती है और ख़ासकर पंजाब में। इससे कोई विशेष हानि नहीं होती है क्योंकि यह एक प्रकार की महामारी है। इसमें पौधे के सरवाला हिस्सा काला हो जाता है और अन्न के स्थान पर काला पाउडर पाया जाता है। यह काला पाउडर एक प्रकार की झिल्ली से ढका रहता है जो कि फट जाती है। उसके फटते ही काला पाउडर हवा के झोकों से उड़ जाता है और पौधों में ख़ाली डंठल रह जाता है।

यह बीमारी पौधे में फूल लगते समय फैलती है। रेणु फूल में गिर पड़ती है और बढ़नेवाले अन्न को हानि पहुँचाती है। बीज बोने के समय तक यह बीज के अन्दर ही रहता है। बीज उगते समय यह पौधे के साथ उगता है और अन्न के स्थान पर अपने रेणुओं को उत्पन्न करता है।

इस रोग के बहुत-से उपाय बताये गये हैं लेकिन उत्तरी भारतवर्ष के लिए सबसे सुगम और आसान तरीक़े का नाम 'सोलर इनर्जी मेथड' है। इस नियम के अनुकूल गेहूँ के बीज को गर्मी के दिन में ४ घंटे तक भिगो देते हैं। बीज को पानी में से निकाल कर चार घंटे सुखाते हैं। सूख जाने पर बीज को बोआई करने के समय तक रख देते हैं। इस क्रिया से बीज के अन्दर रहनेवाला हानिकारक पदार्थ सूर्य की गरमी और रोशनी से

मर जाता है लेकिन अन्न या बीज को कोई हानि नहीं होती है।

बण्ट-स्मट––यह बीमारी भारतवर्ष के मैदानों में अधिक व्यापक नहीं है लेकिन बिलोचिस्तान, पश्चिमी हिमालय और खासकर काश्मीर में अधिक व्यापक होती है। इस रोग से पीड़ित होनेवाले पौधे की बाली गहरी हरी और अधिक खुली रहती हैं। ये पौधे भी शीघ्रतापूर्वक बढ़नेवाले होते हैं। इनकी बालियों में काले रेणु होते हैं जो उसमें चिपके होते हैं। यह रेणु पौधे से चिपका रहता है और हवा से नहीं उड़ता है। ये बीज काटने और पीटने के समय स्वस्थ बीजों के सम्पर्क में आते हैं और इस प्रकार बीमारी फैलाते हैं। ये रेणु अन्न से जकड़ जाते हैं और बीज के उगने के समय बढ़कर मुलायम पौधे के अन्दर घुस जाते हैं। इस रेणु का पुनरुत्पादक अंश बढ़ने लगता है, पौधे में अन्न के स्थान पर यही रेणु उत्पन्न हो जाते हैं।

इस रोग को कई तरह से दूर किया जा सकता है। सर्वप्रथम ढंग यह है कि अन्न को डिलूट फ़ार्मलिन सल्यूशन में डुबो दिया जाय। यह घोल ४० गैलन पानी में एक पौण्ड फ़ार्मलिन डालने से बनाया जाता है। इस प्रकार बनाये गये घोल से ८० मन अन्न डुबाया जा सकता है। अन्न को भीगे हुए बोरों से क़रीब दो घंटे तक ढक दिया जाता है और २४ घंटे के अन्दर बोया जा सकता है।

दूसरी विधि यह है कि कापर सल्फ़ेट और कापर कार्बोनेट पदार्थों को काम में लाना चाहिए। अनुभव से पता लगाया गया है कि कापर सल्फ़ेट से अन्न को हानि होती है और बीज के उगने में कठिनाई होती है। कापर कार्बोनेट अधिक प्रभावशील बताया गया है। कापर कार्बोनेट का प्रयोग करने के लिए इसकें चूर्ण को अन्न के ऊपर इस प्रकार फैलावे कि प्रत्येक अन्न इससे रँग जाय। इसके लिए अन्न को बार-बार उलटना चाहिए। कार्बोनेट जहर होता है अतः उसे सूँघना न चाहिए। इससे बचने के लिए नाक पर कोई कपड़ा बाँध लेना चाहिए।

अनिष्टकर कीड़े––गेहूँ के पौधे के डंठलों को छेदनेवाले कीड़े सबसे भयानक होते हैं। इनको कैटरपिलर कहते हैं और ये बहुत हानिकारक होते हैं। बड़ा कैटरपिलर एक इंच लम्बा, पतला और भूरे सरवाला होता है। यह कीड़ा गेहूँ के डंठल को खा जाता है। बढ़ने पर यह कीड़ा हो जाता है। इसके दूर करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यही है कि इनसे दूषित पौधों को नष्ट कर दिया जाय।

दूसरे कीड़े को एफ़िस कहते हैं। यह कीड़ा बाली और पत्तियों पर आक्रमण करता है। इसको दूर करने का कोई विशेष तरीक़ा नहीं बताया गया है। इसे एक प्रकार के कीड़ों-द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है। इसे लेडी-बर्ड बीटल्स कहते हैं।

ग़ल्ले में लगनेवाले कीड़े––स्थानीय प्रयोग या बीज के लिए रखे गये अन्न में भी कीड़े लग जाते हैं। ये कीड़े अन्न पर भिन्न-भिन्न समय में आक्रमण करते हैं और फलतः उसे आटे के रूप में बदल देते हैं। सबसे हानिकारक कीड़ा घुन होता है। यह छोटा-सा कीड़ा होता है और गेहूँ के अन्न पर ही अपने अंडे देता है। प्रत्येक मादा क़रीब ४०० अंडे देती है। छः या सात दिन बाद ये अंडे फूट जाते हैं। प्रत्येक लारवा अन्न में सूराख़ कर लेता है और उसी में रहता है। प्रत्येक कीड़े की जीवनलीला एक माह में समाप्त हो जाती है।

गेहूँ में लगनेवाला दूसरा कीड़ा खपड़ा होता है। यह काले और भूरे रंग का कीड़ा होता है। मादा नर से बड़ी होती है। प्रौढ़ कीड़ा केवल थोड़े दिनों तक जीवित रहता है। इसकी सारी जीवन-लीला एक माह में समाप्त होती है। मादा गेहूँ के अन्न पर अपना अंडा देती है। एक मादा ३५ से लेकर ६० तक अंडे देती है। अंडे ५ या ७ दिन में फूट जाते हैं। ये कीड़े अन्न खाते हैं और बढ़ते जाते हैं। ये कीड़े गर्मी के दिनों में बहुत कार्यशील हो जाते हैं और क़रीब रखे हुए ग़ल्ले के ऊपरी तहों पर आकर बहुत हानि पहुँचाते हैं। प्रौढ़ कीड़े विशेष हानिकारक नहीं होते हैं बल्कि छोटे कीड़े बहुत हानि पहुँचाते हैं। ये अन्न को खाते हैं। इनसे प्रभावित अंश सफ़ेद दिखाई देता है। अधिक प्रभावित होने पर अन्न आटा के रूप में हो जाते हैं। इससे होनेवाला नुक़सान धीरे-धीरे होता है क्योंकि कीड़े धीरे-धीरे बढ़ते हैं।

कार्बन बिसुलफ़ाइड का बफ़ारा देने से इन कीड़ों का नाश हो जाता है। १५ घनफ़ीट में रखे हुए अन्न को २४ घंटे तक इस द्रव्य से बफ़ारा देने पर ये कीड़े ही नहीं बल्कि उनके अंडे भी नष्ट हो जायँगे। यह द्रव्य जलनेवाला होता है अतः इससे आग को दूर रखना चाहिए।

अन्न को हानि से बचाने के लिए यह देख लेना चाहिए कि उसमें कोई रोग तो नहीं है। इसका अर्थ यह है कि जो बीज कीड़ों या उनके अंडों से दूषित हों उन्हें कभी न रखना चाहिए।

(प्रिंसपल्स एण्ड प्रैक्टिस आफ़ क्राप प्रोडक्शन इन इंडिया से अनुवादित)

सुगन्धित गुलाब की क़िस्में

लेखक, कुँअर तेजसिंह चौहान, सुपरिन्टेन्डेन्ट, सरकारी बाग़ात, इलाहाबाद

गुलाब फूलों का राजा के नाम से प्रसिद्ध है। यह बात भली भाँति लोग जानते हैं। गुलाब के फूल देखने में बहुत भले मालूम होते हैं। उसके रंग व सुगन्ध मन को मोहे बिना नहीं मानते हैं। भारतर्ष में गुलाब बहुत प्राचीनकाल से होता है। गुलाबजल, इत्र, गुलकन्द हमेशा से हमारे देश में होते रहे हैं। चैती गुलाब, जो शायद भारतवर्ष में सबसे प्राचीन गुलाब है, बहुत सुगन्धित होता है और गुलाबजल प्रायः इसी से बनाया जाता है। यह कन्नौज, चिरईगाँव, जलेसर, अलीगढ़ में बहुतायत से होता है और इसका व्यापार भी अधिक होता है।

हाल में पिछले क़रीब १०० वर्षों से गुलाब की काश्त में बड़ी उन्नति हुई है। इसकी बहुत अच्छी-अच्छी और बहुत फूलनेवाली, भिन्न-भिन्न चित्ताकर्षक जातियाँ इस समय में तैयार की गई हैं। योरप, अमरीका, जापान आदि देशों में फूलों के सम्बन्ध में विज्ञान को लोगों ने चरम सीमा तक पहुँचा दिया है। ऐसे-ऐसे आश्चर्यजनक आविष्कार किये गये हैं जिन्हें देखकर चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। भारतवर्ष में अब प्रायः सब जातें जो और देशों में बनाई जाती हैं, मिलने लगी हैं। यहाँ पर यदि दत्त-चित्त होकर लोग इन अच्छी जातियों के गुलाब की नर्सरियाँ ठीक ढंग पर करना शुरू कर दें तो इसमें सन्देह नहीं कि उन्हें लाभ होगा। जिन-जिन लोगों ने गुलाब की नर्सरियाँ उचित रूप से की हैं उन्हें लाभ हो रहा है।

गुलाब की खेती सरल है। यह ऐसी जगह करनी चाहिए जहाँ रेलवे स्टेशन समीप हो अथवा पक्की मोटर की सड़क दूर न हो। ऐसी जगह पर करने से पेड़ भेजने में सुविधा होती है। गुलाब के लिए वह ज़मीन उत्तम होती है जिसमें कृषि की फ़सलें अच्छी होती हैं। दूमट इसके लिए उपयुक्त होती है। पेड़ों को दो फ़ीट गहरे व दो फ़ीट चौड़े गड्ढों में लगाना चाहिए। ये गड्ढे गर्मी के मौसम में चार-चार फ़ीट की दूरी पर खोदना चाहिए। क्यारियों में भी गुलाब के लगाने की रीति है। क्यारियाँ आवश्यकता तथा ज़मीन के हिसाब से लम्बी चौड़ी बनानी चाहिए। गुलाब के पेड़ों के लगाने का सबसे अच्छा मौसम अक्टूबर-नवम्बर है। इस समय के लगाये हुए गुलाब कम मरते हैं और अच्छे चलते हैं। गुलाब लगाने से क़रीब एक डेढ़ हफ़्ता पहले गड्ढों को मिट्टी और खाद से अच्छी तरह से दबादबाकर भर देना चाहिए। कच्ची खाद से दीमक दौड़ने लगती है जो पेड़ों को मार देती है। पेड़ किसी अच्छी विश्वसनीय नर्सरी से ही खरीदकर लगाना चाहिए। गवर्नमेंट (सरकारी) बाग़ात से जो इस सूबे में इलाहाबाद, आगरा, लखनऊ, सहारनपुर में हैं, अच्छे पेड़ मिल सकते हैं। फ़ैज़ाबाद से भी बढ़िया अच्छे पेड़ मिलते हैं। इस सूबे में इनके अलावा और भी प्राइवेट नर्सरियाँ हैं जिनसे पेड़ मिल सकते हैं। जहाँ खरीदार का मन पूरा-पूरा भरे उसी जगह से पेड़ लेना चाहिए। अक्टूबर-नवम्बर में इन पेड़ों को लगा देने के पश्चात् इनकी बाद की देख-भाल करनी अत्यन्त आवश्यक है। समय पर पानी, गोड़ाई, खाद और उनकी काट-छाँट करते रहना चाहिए। ये गुलाब के पेड़ "मदर प्लाण्ट्स" कहलाते हैं क्योंकि इन्हीं पेड़ों से अच्छे चश्मे लेकर नये पेड़ तैयार होते हैं जो बाद में वैसे ही हो जाते हैं और फिर बेचे जाते हैं।

इस बिक्री के लिए पेड़ों को इस तरह से तैयार किया जाता है। एडवर्ड गुलाब की शाखें ९ इंच लम्बी नवम्बर-दिसम्बर में लगा दी जाती हैं। ये क़लमें दो-तीन हफ़्ते में फूटने लगती हैं। इनको शुरू मार्च मे दूसरी क्यारियाँ बनाकर नौ-नौ इंच के फ़ासले पर लगा देना चाहिए और गर्मी के महीनों में पानी देने में लाभ नहीं करना चाहिए नहीं तो इनका मर जाना स्वाभाविक है। इन्हीं पेड़ों को फिर बरसात में दूसरी क्यारियों में एक-एक फ़ुट के फ़ासले से क़तारों में लगा देना चाहिए। पेड़ों को लगाकर अखीर सितम्बर व शुरू अक्टूबर में इस प्रकार से छाँटना चाहिए कि केवल एक शाख ही रहे बाक़ी सब शाखें तने से मिलाकर गुलाब काटने-वाली क़ैंची से निकाल देनी चाहिए। नवम्बर-दिसम्बर तक यह शाख अँगूठे के बराबर मोटी हो जाती है। इन महीनों में इन शाखों पर फिर "मदर प्लाण्ट्स" से आँख लेकर चश्मा लगाना चाहिए। चश्मे की रीति सरल है और थोड़े-से अभ्यास से कामयाबी के साथ मश्क़ हो जाती है। यह नये चश्मा बढ़ाये गये पेड़ अगले अक्टूबर-नवम्बर मास तक यानी चश्मा लगाने के एक साल बाद प्रायः तैयार हो जाते हैं और उन्हें बेचना शुरू कर देना चाहिए। नये पुराने गुलाबों को तूतिया व चूने के पानी के घोल से बराबर धोते रहना चाहिए। यह काम पिचकारी-द्वारा बड़ी सरलता से हो जाता है। अच्छे मज़बूत पेड़ ही खरीदारों को बेचना चाहिए। गुलाब लगाने का उचित समय अक्टूबर-नवम्बर से अखीर फ़रवरी तक अच्छा होता है इसलिए इसी मौसम में पेड़ों की बिक्री भी की जाती है। देशी एड-वर्ड गुलाब की क़लम लगाने के एक साल बाद चश्मा बाँधने लायक़ हो जाती है और उस पर चश्मा बाँधकर एक साल बाद पेड़ बिक्री के क़ाबिल हो जाते हैं। पेड़ों में न तो कभी भी पानी की बहुत कमी और न बहुत ज्यादती होने देना चाहिए। ये दोनों बातें हानिकारक होती हैं। सुगन्धित गुलाब के बहुत-से पेड़ हैं और उनकी अनेक क़िस्में भी हैं। कुछ के नाम यहाँ पर दिये जाते हैं। इनमें सुगन्धि के साथ और भी खूबियाँ हैं और इन पेड़ों की बिक्री भी अधिक होती है।

अमेरिका एच० टी० गुलाबी रंग फूल बड़ा होता है
ऐनी एच० टी० " " " "

एनजिल परनेट पी० पीला नारंगी रंग होता है
आरथक कुक एच० टी०रंग गहरा लाल" "
अटरआफ़ रोज़ेज़ एच०टी०रंग हलका मक्खनी, किनारे गुलाबी, मझोला फूल
बैरिल एच०टी० सुनहला पीला लावी कली " "
बैटी एच० टी० ताँबे का रंग " "
ब्रिटिश क्वीन एच० टी० सफ़ेद बड़ा फूल
कैप्टेन एफ़० एस०
हारवी कैण्ट एच० टी० गेरुआ गुलाबी "
कैरोलिन टैस्टाउट एच० टी० गुलाबी "
सी० वी० हावर्स एच० पी० बहुत गहरा लाल "
काउण्टैस आफ़ गोसफ़ोर्ड एच०टी० गेरुआ गुलाबी "
क्रिमज़न चैटनी एच० टी० चमकदार गहरा लाल "
अर्ल आफ़ गीसफ़ोर्ड एच० टी० गहरा लाल "
एडवर्ड मौली एच०टी० मख़मली रंग का गहरा लाल "
एथिल सोमरसेट एच० टी० गुलाबी "
ईटि ओलीडी फ़ान्स एच० टी० गहरा लाल "
एवरेस्ट एच० टी० सफ़ेद "
फ़्रेड जे हैरीसन एच० टी० लाल "

इसके अलावा और बहुत-सी जातियाँ ऐसी हैं जो सुगन्धित हैं और अच्छी हैं। ये किसी भी गुलाब की लिस्ट से देखकर छाँटी जा सकती हैं और इनके बारे में और भी जो कोई बात पूछनी हो चिट्ठी-द्वारा सरकारी बाग़ातों से पूछी जा सकती है।

चैती गुलाब भी ख़ुशबूदार होता है और इससे ही गुलाबजल, इत्र इत्यादि बनाया जाता है। इसकी खेती भी ठीक ऊपर लिखे ढंग से की जाती है। चैती गुलाब तथा देशी जातियों के गुलाब के फूल भी मन्दिरों में चढ़ाने के काम आते हैं। फूलों की मालायें भी बनती हैं जो बिकती हैं। गुलाब के व्यवसाय में काफ़ी लाभ होता है और यदि बड़ी जाति-वाले सुगन्धित गुलाबों की काश्त की जाय तो और भी अच्छा हो। आशा है इस लेख को पढ़कर लोग गुलाबों की काश्त के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में दिलचस्पी लेंगे और उनसे लाभ उठावेंगे।

हल पुरस्कार-प्रतियोगिता

नीचे लिखे प्रश्न का उत्तर दीजिए और २०), १०) और ५) रुपये का नक़द इनाम लीजिए

नीचे एक प्रश्न दिया जा रहा है। इसका उत्तर हिन्दी या उर्दू में लिखकर भेजनेवालों में तीन को, जिनके उत्तर सर्वोत्तम होंगे, क्रमशः २० रुपये, १० रुपये और ५ रुपये का नक़द पारितोषिक दिया जायगा। इस पारितोषिक के नियम भी यहाँ दिये जा रहे हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने से पहले इन नियमों को अच्छी तरह से पढ़ लेना चाहिए।

प्रश्न

आपके पास-पड़ोस में ग्रामसुधार का जो कार्य हो रहा है उसमें आपकी सम्मति में और क्या क्या सुधार होने चाहिए ?

नियम

१—यह प्रतियोगिता "हल" के सिल-सिले में प्रारम्भ की जा रही है। जो उत्तर आयेंगे उनमें सर्वोत्तम तीन को पारितोषिक प्रदान किया जायगा। प्रतियोगिता में आये हुए उत्तरों की संख्या और विषय के अनुसार पारितोषिकों की संख्या और पुरस्कार की रक़म में कमी बेशी की जा सकेगी। यह प्रतियोगिता हल के अक्टूबर के अंक से प्रारम्भ हुई है और अप्रैल तक चलेगी।

२—इस मास की प्रतियोगिता के सिल-सिले में भेजे जानेवाले उत्तर सम्पादक "हल", इलाहाबाद के पास १५ जनवरी तक पहुँच जाने चाहिए। १५ जनवरी सन् ४२ के बाद जो उत्तर भेजे जायँगे उन पर विचार नहीं किया जायगा।

३—उत्तर संक्षिप्त और विषय के भीतर ही होना चाहिए। विषय का ध्यान भाषा और शैली की अपेक्षा अधिक किया जायगा और संपादक को यह स्वाधीनता होगी कि वह उत्तर की शब्दावली में जैसा उचित समझे वैसा परिवर्तन कर दे।

४—इस तरह इस प्रतियोगिता में पुरस्कार पाने का एक विद्यार्थी को उतना ही अवसर है जितना कि अनुभवी लेखक को हो सकता है।

५—जिन लेखों पर पुरस्कार दिया जायगा वे सब ग्राम-सुधार-अफ़सर की सम्पत्ति होंगे और यह उनकी मर्ज़ी पर होगा कि वे उन्हें चाहे जिस शकल में प्रकाशित करायें या बिलकुल प्रकाशित न करायें।

६—इस प्रतियोगिता और इसके पुरस्कार के सिलसिले में आनेवाले पत्रों का उत्तर न दिया जायगा।

७—प्रतियोगिता में भाग लेनेवालों के पास उनकी रचनायें वापस न भेजी जायँगी इसलिए यदि वे चाहें तो अपनी रचना की प्रतिलिपि अपने पास रख सकते हैं। ये उत्तर हिन्दी या उर्दू में लिखकर भेजे जा सकते हैं।

८—प्रतियोगियों को चाहिए कि वे साफ़-साफ़ और काग़ज़ के एक ही तरफ़ चौड़ा मार्जिन छोड़कर लिखें। उन्हें अपनी रचना के अन्त में अपना नाम और पूरा पता भी लिखना चाहिए। इस प्रतियोगिता का परिणाम और पारितोषिक विजेताओं का नाम उचित समय पर प्रकाशित किया जायगा।

९—ग्राम-सुधार-अफ़सर, संयुक्तप्रान्त का निर्णय अन्तिम होगा और वही सबके लिए मान्य होगा।

१०—पारितोषिक इस प्रकार दिया जायगा—

पहला पारितोषिक २० रुपये का, दूसरा १० रुपये का और तीसरा ५ रुपये का होगा।

ग्राम-सुधार-अफ़सर,
संयुक्तप्रान्त।

तब तक यह समस्या हल नहीं हो सकती। आप जानते हैं कि इन खेतों का भी चक करना एक आदमी के बस का नहीं—जब तक चकबन्दी-सोसाइटी से काम न लिया जाय और चकबन्दी ऐक्ट न लागू किया जाय यह काम बड़ा ही दूभर है।

यह सत्य है कि किसानों का काम सिर्फ़ खेतों के चक करा देने ही से नहीं चलेगा—जब तक उनके लगान की अदायगी, ग़ल्ले की बिक्री और दूसरे महाजनों के चंगुल से बचाने का प्रबन्ध न कर दिया जाय। अच्छे पशुओं, उम्दा बीजों, ज़मीन ज़रखेज़ बनानेवाले औज़ारों और खादों की खरीद के लिए भी हमें रुपया बहम पहुँचाने की ज़रूरत है। क्योंकि इन कामों के लिए भी उन्हें दूसरों की शरण ताकनी पड़ती है। अगर गाँव-गाँव ग्राम-बैंक क़ायम हो जायँ तो हमारे गँवई किसान अच्छे बीज, खाद और औज़ार आदि का प्रयोग कर उन्नतिप्राप्त ढंग पर अपने खेतों से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

यह बात स्पष्ट है कि क़र्ज़े के नये क़ानूनों की वजह से महाजन अब मनमाना सूद न ले सकेंगे—किन्तु यह भी है कि अब वे बहुसंख्यक (अधिक तादाद में) क़र्ज़ भी न दे सकेंगे। और किसानी का काम ऐसा है जो बिना उधार चल नहीं सकता है। ऐसी दशा में इन महाजनों का स्थान भी सहयोग-समितियाँ ही ले सकती हैं।

सौभाग्य से जहाँ-जहाँ ग्राम-सुधार का काम हो रहा था, वहाँ विभाग ने प्रचुरता से जीवन-सुधार-सभाओं के बनाने का आदेश किया और गाँव-गाँव जीवन-सुधार सहकारी सभायें बनने लगीं। अब इन समितियों-द्वारा उन्नतिप्राप्त बीजों, खादों और औज़ारों के भी मँगाने का आयोजन हो रहा है। कहीं-कहीं मार्केटिंग का काम भी शुरू हो गया है। और वे सभायें सब कामों को साधने के ख्याल से कहीं-कहीं ग्राम-बैंक का भी काम करने लग गई हैं। आशा है उन सारे गाँवों में जहाँ ग्राम-सुधार की योजना चालू है—वहाँ ऐसी सभायें (सर्वार्थसाधन सोसाइटियाँ) खुल जायँगी और हर प्रकार का काम होने लगेगा।

अब तक जहाँ सिर्फ़ क़र्ज़-सभायें थीं वहाँ केवल अपने मेम्बरों को क़र्ज़ देने का प्रबन्ध होता था—शेष ग्रामीण जिन्हें क़र्ज़ की ज़रूरत नहीं थी, इसमें भाग न ले सकते थे। पर ग्राम-बैंक के नियम हो जाने के कारण हर प्रकार के मेम्बर हो सकते हैं और भाग ले सकते हैं। प्रथम श्रेणी में वे लोग शुमार किये जायँगे जो बैंक के कुल कामों में हिस्सा लेने की ग़रज़ से शामिल होंगे। द्वितीय श्रेणी में वे लोग होंगे जो केवल जीवन-सुधार और रहन-सहन के सुधार का काम करते हुए मार्केटिंग (माल की बिक्री) से ताल्लुक़ रखनेवाले कामों के लिए शामिल होंगे—और तीसरी श्रेणी में वे लोग होंगे जो केवल जीवन-सुधार और रहन-सहन के कामों के लिए शरीक़ होंगे। इनके द्वारा खेती और रहन-सहन के अच्छे ढंगों को रिवाज देकर, उन्नतिप्राप्त कामों के लिए उचित सूद दरपर क़र्ज़ देकर, पैदावार की बिक्री का उचित प्रबन्ध कर दैनिक आवश्यक वस्तुओं को सस्ते मूल्य पर दिलाकर गाँववालों की नैतिक, सामाजिक, शारीरिक और आर्थिक दशा का सुधार किया जा सकेगा।

क्रय-विक्रय

खेती-बारी के सुधार के साथ गाँव की एक बड़ी समस्या पैदावार की वस्तुओं की बिक्री का मुनासिब इन्तज़ाम न होना है। अलग-अलग बेचने और खरीदनेवाली प्रणाली में उन्हें प्रायः हानि उठानी पड़ती है। गँवई बनिये, दूकानदार और सौदागर मनमानी कटौती करते और भाव रखते हैं। भारतीय गाँवों में ऐसे हतभागे किसानों की संख्या १० से ३० प्रतिशत है जो इन गँवई साहूकारों का हिसाब तक नहीं समझ पाते। इसी प्रकार चीज़ों की खरीद का भी उपयुक्त साधन नहीं है, इससे इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि उनके लिए एक ऐसी समिति बनाई जाय जिससे वे हर क़िस्म का बीज, आलू, तम्बाकू, ग़ल्ला और खाद आदि सस्ते मूल्य से मँगा सकें और अपनी पैदावार को सहयोगी ढंग पर अच्छे लाभ से बेच सकें। इस प्रकार की समिति का कार्य-क्षेत्र एक या कई गाँव हो सकता है।

मेम्बरों की पैदावार बेचने का प्रबन्ध नीचे लिखे हुए किसी एक या सब तरीक़े से किया जा सकेगा और जलसा आम बिक्री के वक्त का अन्दाज़ा करके उसके बारे में पहले तय कर लेगा।

(क) एकदम नक़द मूल्य पर बेचना—मेम्बर अपनी सभा को बाज़ारभाव पर फ़ौरन नक़द मूल्य पर बेच देगा और खरीद पर ग्राम-बैंक लाभ व हानि उठायेगा।

(ख) कमीशन के साथ बेचना—इस रीति से मेम्बर अपनी पैदावार खुद अपने या बैंक के गोदामों में रखेंगे। बैंक बानगी के साथ मेम्बर की पैदावार उसके हिदायत के मुताबिक़ बेच देगा। भाव के घटने-बढ़ने का ज़िम्मेदार न होगा। बिक्री के दामों में से कमीशन और दूसरे खर्चे निकालने के बाद क़ीमत मेम्बर को दे दी जायगी।

(ग) ज़मानती तरीक़ा—इस प्रकार के विक्रय में मेम्बर अपनी पैदावार बैंक के गोदामों में रख देंगे और ग्राम-बैंक उन्हें मूल्य के ७५ प्रतिशत तक उधार पेशगी दे देगा। और माल अच्छा भाव आने पर बेच देगा। ऐसी सूरत में जो क़ीमत वसूल होगी—उसमें से समिति (बैंक) कमीशन, किराया और उधार दिया हुआ रुपया मय सूद काट लेगी और शेष रक़म मेम्बर को अदा कर देगी।

नोट—यदि भाव गिर जाय तो सभा और अधिक ज़मानत तलब कर सकेगी और रज़ामन्द न होने की सूरत में मेम्बर को नोटिस देकर सारा माल बेच देगी।

उद्योग-समितियाँ

भारतीय गाँवों की आर्थिक दशा जो इतनी खराब हो गई है, उसका मूल कारण

हमारे उद्योग-धंधों का विनाश है। हमारे वहाँ के उद्योग-धंधे, जो उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गये थे--गाँवों से बिदा हो चुके हैं। आज विदेशों में ग्राम-उद्योगों की सराहना हो रही है। जापान और जर्मनी की उन्नति वहाँ के ग्राम-उद्योगों पर ही निर्भर है। वहाँ हमारे यहाँ-सा उद्योग-धंधा नहीं--वहाँ तो उच्च-कोटि के धन्धे हैं। उनकी उद्योग-मशीनें बिजली या भाप की शक्ति से चलती हैं। हमारे यहाँ के कारखाने मशीनों के नहीं हाथों के हैं। किन्तु ऐसी अवस्था में जब बिजली के उपकरण गाँवों में सुलभ हो रहे हैं--हमें अपनाने की ज़रूरत है। कृषि-उद्योगों के लिए एक आना फ़ी यूनिट वा तीन पैसा प्रतिहार्स-पावर कर है। इतनी सस्ती दर बिखरे हुए गाँवों के लिए अन्यत्र नहीं मिल सकती। युक्त-प्रान्तीय गाँवों में इन लाइनों पर सन् ३२-३३ में ३,०३,००० यूनिट बिजली खर्च हुई थी। हम यह नहीं कहते कि सारे उद्योग-धंधे बिजली-द्वारा ही पूरे किये जायँ। हमें तो उन उद्योग-धंधों को भी अपनाने की ज़रूरत है, जो थोड़ी पूँजी और मेहनत से किये जा सकते हैं। यथा--चरखा चलाना, सूत कातना, करघा चलाना, कपड़ा बुनना, घी और दूध बनाना आदि। इसी तरह और छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धंधे हैं, उन्हें अपनाना और तद्विषयक सहयोग-समिति बनाकर आर्थिक सहायता प्राप्त करनी चाहिए। यथा करघा और चरखा समिति इत्यादि।

नोट--करघा और चरखा आदि अनेक सहयोग-समितियों की नियमावली संयुक्त-प्रान्तीय सहकारी विभाग के रजिस्ट्रार साहब के प्रधान कार्यालय (लखनऊ) से मुफ़्त मिल सकती है।

साक्षरता-प्रचार

हमारे सारे उद्योग उस समय विफल हो जाते हैं जब गँवई गँवारों से भेंट हो जाती है। यह तो स्पष्ट है कि गाँव का होना गौरव की बात है, पर गँवार होना बदनामी है। हमारे गाँवों की जनता का बहुत बड़ा भाग निरक्षर भट्टाचार्यों की श्रेणी में है--उन्हें साधारण चीठी-पाती लिखने-पढ़ने तक का शऊर नहीं। कोरे कागज़ पर चपाट अँगूठे की छाप दे देना ही अपना गौरव समझते हैं और इस प्रकार निशिदिन लूटे और ठगे जाते हैं। साक्षरता के इस अभाव को दूर करना है। जब तक यह दूर नहीं होता हमारी कोई भी सुधारयोजना गाँवों में सफल नहीं हो सकती। "पाथर पै का मारना, चोखो तीर नसाय" की कहावत चरितार्थ होगी। इसे हम प्रौढ़-शिक्षा-समितियों और प्रौढ़-पाठशालाओं से ही किसी हद तक दुरा सकेंगे। श्री संगमलाल जी इलाहाबादी की शिक्षा-योजना के अनुसार हम निरक्षर प्रौढ़ों को छः सप्ताह के अन्दर साधारण लिखने-पढ़ने का ज्ञान करा सकते हैं। सहयोग-विभागीय योजना के अनुकूल तीन वर्ष के भीतर प्राइमरी स्कूल्स स्टैंडर्ड की योग्यता करा सकते हैं।

हमारी ये शालायें ऐसे केन्द्र का काम करती हैं जहाँ हर विभाग के कर्मचारी और पदाधिकारी आसानी के साथ थोड़े समय में अपना सुधार-संदेश गाँव की झोपड़ी-झोपड़ी तक पहुँचा सकते हैं।

नोट--यह याद रहे कि प्रौढ़ों की शिक्षा से ग्राम-सुधार की योजना में जो लाभ आज हो सकेगा--बच्चों की शिक्षा से वह २० वर्ष बाद होगा।

मेरे विचार से सहयोग और ग्राम-सुधार-विभाग को अधिक से अधिक प्रौढ़-पाठशालायें और प्रौढ़-शिक्षा-समितियाँ गाँवों में खोलनी चाहिए और कुछ अलग से स्टाफ़ इस काम के लिए नियुक्त करना चाहिए।

यद्यपि यह कहा जा सकता है कि उक्त विभागों का काम शिक्षा-प्रसार करना नहीं है, बल्कि यह काम डिस्ट्रिक्ट बोर्डों और शिक्षा-प्रसार बोर्डों और विभागों का काम है। मैं यह मानता हूँ कि यह सत्य है, परन्तु ग्राम-सुधार का काम तो ऐसा है जो कहा नहीं जा सकता कि किस काम को छोड़कर वह औरों में अधिक बल दे। उसे तो हर अंग ही सुधारने हैं। हमारे गाँवों का कोढ़ गलता कुष्टरोग है, उसे साधारण उपचार से अच्छा नहीं कर सकते। इस असाध्य रोग का उपचार प्रारम्भ करने के पहले उसकी आत्मा का सुधार ज़रूरी है--जिससे जो ओषधि उसे दी जाय उसकी सेवन-विधि, अनुपान और उसका परहेज़ उसे ज्ञात हो। वरन् वह ओषधि उतनी गुणकारी न होगी, जितनी होनी चाहिए; बल्कि यह सम्भव है कि वह कहीं अर्थ का अनर्थ न कर दे। इसलिए हम विभाग का ध्यान इस ओर अधिक दिलायेंगे कि वह जितना आवश्यक कृषि में उन्नत बीजों और तरक्क़ीदाद औज़ारों को समझता है अथवा हेल्थ में पानी पीनेवाले कुओं के पुनरुद्धार और निर्माण को समझता है, उससे कम ग्राम में रहनेवाले अपढ़ किसानों की आत्म-सुधार की आवश्यकता नहीं है।

लेख के बृहत् होने से मैं लेखनी को यहीं विराम दूँगा और फिर एक बार पाठकों का ध्यान इस ओर लाऊँगा कि यदि ग्राम-सुधार की योजना में गाँवों के भीतर प्रत्येक काम के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की सहयोग-समितियों को स्थान दें, उनका संगठन करें और उन्हीं के सहारे स्वावलम्बन का भाव पैदा करें और उनमें उन्नति और असंतोष की भावना जागृत करें एवं उनके जीवन का दृष्टिकोण बदलते हुए उनकी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा दैहिक उन्नति करें तो बड़ा कल्याण हो। यही ग्राम-सुधार का मुख्योद्देश्य है।

(शेष फिर)

भाग्य के विचित्र खेल

मृत्यु से बचने की आश्चर्यजनक घटनायें

भाग्य के खेल बड़े विचित्र हैं। ऐसी घटनायें अक्सर सुनने को मिलती हैं जिनमें मनुष्य निश्चित मृत्यु से बिना किसी मानवी प्रयत्न के साफ़ बच जाता है। नीचे कुछ ऐसी ही सनसनीपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया जाता है—

लन्दन के एक मकान में एक लड़का खिड़की से झाँककर नीचे सड़क पर देख रहा था। वहाँ कुछ बच्चे एक बाँसुरीवाले के स्वर पर मुग्ध होकर उछल रहे थे। लड़का इस तमाशे को देखने में इतना मग्न हो गया कि उसे अपनी स्थिति का ध्यान न रहा और वह खिड़की में बहुत ज्यादा झुक गया। परिणाम यह हुआ कि वह अपने शरीर को सँभाल न सका और बाहर सड़क की ओर गिरा। परन्तु अभी उसका शरीर खिड़की से बाहर ही हुआ था कि अकस्मात् खिड़की में बँधी हुई मजबूत डोरी हवा के झोंके से बाहर की ओर लटक पड़ी और लड़के का एक पैर डोरी में फँस गया। ऐसा जान पड़ा मानों किसी अज्ञात-शक्ति ने लड़के के पैर में डोरी का फन्दा डाल दिया हो। इस प्रकार लड़का मृत्यु के मुख से बाल-बाल बच गया।

रेलगाड़ी से कुचलने पर भी बचा

सन् १९०६ के जून मास में लन्दन से बकिंघम जानेवाली रेल पर एक पिता-पुत्र यात्रा कर रहे थे। लड़के ने एक खेत में कुछ घोड़ों को खड़े देखा। उसने अपनें पिता को भी वह दृश्य देखने के लिए खिड़की के पास बुलाया। आगे की ओर अधिक झुक जाने के कारण लड़का चलती ट्रेन से नीचे गिर गया। डिब्बे में बैठे हुए यात्रियों के मुँह से एक चीख निकल गई। लड़के का पिता गाड़ी की ज़ंजीर खींचने के लिए लपका। गाड़ी धीरे-धीरे रुकी और यात्रियों ने देखा कि लड़के का पिता नीचे उतरकर अपने पुत्र की ओर दौड़ रहा है। लड़का रेल की दूसरी पटरियों पर गिरा था परन्तु उसे चोट तनिक भी न आई थी। परन्तु अभी उसे एक बार फिर मौत का सामना करना था। वह अपने को सँभालकर उठ ही रहा था कि उन पटरियों पर भी दूसरी दिशा से डाकगाड़ी तेजी के साथ आ पहुँची। लड़के का पिता स्तब्ध होकर अपने स्थान पर मूर्तिवत् खड़ा रह गया और डाकगाड़ी लड़के के ऊपर से निकल गई। परन्तु डाकगाड़ी के चले जाने पर लड़का फिर उठकर अपने पिता की ओर दौड़ा। मौत को उसने एक बार फिर चुनौती दी थी। डाकगाड़ी के नीचे आ जाने पर भी वह साफ़ बच गया था। बात यह हुई कि पटरियों के बीच में जहाँ पर लड़का गिरा था उसके पास एक बड़ा गड्ढा था और डाकगाड़ी के झोंके में लड़का उसी गड्ढे के अन्दर चला गया था और इस प्रकार बाल-बाल बच गया। भाग्य ने उसे कुछ ही मिनटों के अन्दर दो बार मरने से बचाया।

५० फ़ुट नीचे गिरा

यूजेन नेसलर नाम का १४ वर्ष का एक लड़का न्यूयार्क नगर में ५० फ़ुट ऊँची इमारत की छत पर पतंग उड़ा रहा था। पतंग उड़ाने की धुन में वह बेख़बर था और उसी अवस्था में पीछे हटते हुए वह छत के किनारे पर आ गया और अन्त में नीचे गिरा। इतनी ऊँचाई से कंकरीट की पक्की सड़क पर गिरकर उसकी तत्काल मृत्यु होनी निश्चित थी, परन्तु भाग्य ने अपना खेल खेला और वह साफ़ बच गया। ३० फ़ुट तक गिरने के बाद उसके कपड़े एक तार से उलझ गये और वह उसी इमारत की निचली मंज़िल पर धीरे-से खिसककर पहुँच गया। उसे मृत्यु से बचने की प्रसन्नता तो न हुई उल्टे अपनी पतंग चली जाने का रंज हुआ।

अन्धा लड़का बचा

बेंगबी नाम का एक अन्धा लड़का अपने पिता की घोड़ागाड़ी के ऊपर बैठा था। इस गाड़ी में डबल रोटियाँ रक्खी हुई थीं। गाड़ी वाला पड़ोस की एक दूकान में रोटियाँ दे[ने] चला गया और अपनी गाड़ी को सड़क के ए[क] किनारे खड़ा कर गया। पास ही २०० फ़ु[ट] गहरा एक खड्ड था। घोड़ा सड़क के किना[रे] उगी हुई घास चरने लगा। खड्ड की ओ[र] की ढालू भूमि पर उगी हुई हरी घास चर[ने] के लिए घोड़ा आगे बढ़ा और गाड़ी तथा उ[स] पर बैठे हुए अन्धे लड़के सहित खड्ड में ज[ा] गिरा। गाड़ीवाले ने लौटकर देखा कि उसक[ी] गाड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं परन्तु घो[ड़ा] आराम के साथ खड्ड में घास चर रहा [है] और उसका अन्धा लड़का पास ही उगे हु[ए] एक पेड़ की डाल पर बैठा है मानों किसी[ने] उठाकर उसे वहाँ बैठा दिया हो।

मशीन में कटने से बचा

विलियम ली नाम का एक व्य[क्ति] लकड़ी चीरने के एक कारखाने में का[म] करता था। इस कारखाने में लकड़ी ची[रने] का आरा हवा के ज़ोर से चक्[र के] समान घूमता था। ली ने एक मोटा लट्[ठा] आरे के सामने लगाया और आरा च[ल] पड़ा। तुरन्त ही उसने देखा कि उसके क[ोट] का दामन भी लट्ठे के साथ आरे के दाँ[तों] में फँस गया है। अब उसके बचने का क[ोई] उपाय न था। यह समझकर कि लट्ठे [के] साथ ही उसका शरीर भी आरे के दाँ[तों] से कटकर दो टुकड़े हो जायगा, उसने [भय] के मारे अपनी आँखें बन्द कर लीं। पर[न्तु] ज्योंही उसका शरीर आरे से छूने को हु[आ] मशीन का चलना बन्द हो गया। आँखें खोल[कर] उसने देखा कि हवा के एकाएक बन्द हो ज[ाने] के कारण मशीन रुक गई है और इस प्र[का]र वह मौत के मुख से लौट आया है।

चलती ट्रेन की छत पर गिरा

सन् १९०१ की एक घटना और [भी] आश्चर्यजनक है। स्विटज़रलैंड के एक रे[लवे] स्टेशन पर एक मज़दूर स्टेशन की ढालू [छत] की पुताई कर रहा था। उसका पैर अकस्[मात्] फ़िसल गया और वह छत के ढाल पर ते[ज़ी] से सरकने लगा। छत के किनारे [पर] आते ही उसने देखा कि वह किनारे पर [लगे] हुए भाले की नोक जैसे छज्जे पर जा [कर] गिरेगा और उसकी मृत्यु निश्चित है। न[ीचे] रेल की पटरियाँ बिछी हुई थीं। मज़दूर

यह जान पड़ा कि पैनी धारवाले छज्जे की अपेक्षा रेल की पटरियों पर गिरने में प्राण बचने की संभावना अधिक है। अतः उसने साहस करके नीचे की ओर छलाँग मारी। परन्तु इस बीच में नीचे पटरियों पर एक ट्रेन गुज़रने लगी जो उस स्टेशन पर रुकने-वाली नहीं थी। मज़दूर जब कूदने पर नीचे आया तो पटरियों पर गिरने के बदले वह चलती हुई ट्रेन की छत पर गिरा। उसने अपने होश दुरुस्त रक्खे और ट्रेन की छत पर गिरते ही वहाँ लगे हुए एक कुन्दे को मज़बूती से पकड़ लिया। उसी दशा में ट्रेन की छत से चिपटा हुआ वह अगले स्टेशन तक पहुँच गया। इस दुर्घटना से उसके हृदय को धक्का तो बहुत ज़बर्दस्त लगा परन्तु वह मरने से साफ़ बच गया।

एक मरा, दूसरा बच गया

मेरिल नाम के एक अमेरिकन पेन्टर के जीवन की घटना बहुत ही विचित्र है। मेरिल अपने एक साथी सहित अमेरिका की एक दूकान का साइनबोर्ड रँग रहा था। यह दूकान सड़क से ६ मंज़िल की ऊँचाई पर थी। जिस तख्ते पर बैठकर ये लोग काम कर रहे थे वह अकस्मात् टूट गया। मेरिल का साथी तो सड़क पर आकर गिरा और उसका काम तमाम हो गया। परन्तु मेरिल के हाथ में पास की खिड़की का एक कोना आ गया और वह उसे पकड़कर लटक गया। परन्तु इस प्रकार कुछ मिनट तक भी लटके रहना असम्भव था और उसके हाथ से खिड़की छूट गई। सड़क पर खड़े हुए लोगों ने देखा कि मेरिल की भी वही दशा होने जा रही है जो कुछ क्षण पहले उसके साथी की हुई थी। परन्तु भाग्य बड़ा प्रबल है। जब मेरिल गिरता हुआ नीचे आ रहा था, इमारत की सबसे निचली मंज़िल के एक दूकानदार ने यह देख-कर कि उसकी दूकान पर धूप तेज़ पड़ रही है दूकान के सामने कैनवेस का तनाव तान दिया। कैनवेस का पर्दा ठीक उस समय ताना जा रहा था जब मेरिल नीचे गिरता हुआ आ रहा था और वह सड़क पर गिरने के बदले कैनवेस के पर्दे पर गिरा और मरने से बच गया।

इस प्रकार की घटनाओं का विवरण पढ़कर यही कहना पड़ता है कि भाग्य के खेल बड़े विचित्र हैं।

(भारत से)

हल्दी की खेती

लेखक, श्री रमेशचन्द्र अवस्थी, बी० ए०

शोभा—उस दिन लपेटे मुझसे कह रहे थे कि हल्दी की खेती करनी चाहिए। इसलिए उसी का हाल मुझे मालूम करना है। भला इसमें क्या फ़ायदा, टका महीना खर्चा। अरे कोई अच्छी खेती करे। इसमें क्या रक्खा है?

रामू—अरे तुम नहीं जानते। इसके फ़ायदे गिनाता हूँ, सुनिए ध्यान से—तरकारी और दाल में यह डाली जाय, हिन्दू लोग त्यौहारों में कपड़ा रँगें, ओषधियों में डाली जाय, रंग बनाने के काम में आवे, चोट में लगाई जाय, उबटन में डाली जाय। इसमें कीड़ा मारने की भी शक्ति है और हिन्दुओं के यहाँ तो यह इतनी शुभ मानी जाती है कि ब्याह के एक दिन पहले बिना इसकी पूजा किये ब्याह अशुभ माना जाता है। देखा कितने फ़ायदे हैं।

शोभा—तब तो मैं अवश्य हल्दी की खेती करूँगा और इससे सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों को जानूँगा। अच्छा, इसके लिए ज़मीन कैसी होनी चाहिए?

रामू—सबसे पहले भारत ने इसको उपजाया। इसकी खेती पहाड़ी प्रान्त और उसके आस पास की तराई तथा हलकी दूमट ज़मीन में हो सकती है। इसकी खेती के लिए नमी की बड़ी ज़रूरत होती है लेकिन इसकी जड़ों में पानी न इकट्ठा होने पावे। इसी से इसके लिए भुरभुरी और दूमट ज़मीन की ज़रूरत होती है। खास बात यही है कि इसकी खेती दोरसवाली ऊँची ज़मीन में अच्छी तरह से खाद डालकर और सिंचाई करने से होती है।

शोभा—और यदि मटियारी ज़मीन में खेती करूँ।

रामू—अरे, पागल हुए हो तुम भी। मटि-यारी ज़मीन में किस तरह खेती कर सकते हो। बात यह है कि ऐसी मिट्टी भुरभुरी नहीं होती। और पृथ्वी के अन्दर पैदा होनेवाली चीज़ें जैसे—मूँगफली, आलू, शकरकन्द, अरवी, इत्यादि। यदि ये बढ़ने की जगह न पावेंगी तो छोटी हो जायँगी हैं। ऊपर भले ही घनी दिखाई दें जो बिलकुल बेकार हैं। इसी से इसकी खेती ऊँची, चौरस और समतल ज़मीन में होनी चाहिए।

शोभा—तब तो इसके खेत तैयार करने में बड़ी सावधानी और परवाह रखने की ज़रूरत है।

रामू—और नहीं क्या, और इन खेतों को माघ अर्थात् जनवरी में फावड़े से खूब तेज़ गोड़ना चाहिए और इसके बाद सात-आठ दफ़ा पाटा चला करके मिट्टी खूब महीन कर लेनी चाहिए। क्योंकि बड़े ढेलेवाले खेतों में इसकी उपज मारी जाती है। हल्दी की फ़सल की तो यह विशेषता है कि इसके पौधों को छाया से बहुत कम हानि पहुँचती है। इसी लिए बाग़ में पेड़ों के नीचे या गन्ने के खेत में गन्ने के साथ ही बोई जा सकती है।

शोभा—और खाद कितनी पड़नी चाहिए? यह तो तुमने बताया ही नहीं।

रामू—हाँ, उसे भी सुनिए। खाद की इसमें बड़ी ज़रूरत पड़ती है। अच्छी तरह से जोताई करने के पश्चात् बीज बोने के एक महीना पहले सड़े गोबर की खाद फी बीघा १६ गाड़ी डाल देनी चाहिए। और यही बीघा पीछे करीब ५ मन के हिसाब से रेंड, नीम की खली और राख इसके लिए बड़े फ़ायदे की होती है। साथ ही साथ खेतों में भेड़ें भी बैठानी चाहिए। गोबर की खाद खेत में पहले ही जोताई के वक्त मिला देनी चाहिए। खली और राख आधी तो गाँठ बोने के वक्त गढ़ों में डाल देनी चाहिए और शेष पहले दफ़े मिट्टी चढ़ाते वक्त।

शोभा—अच्छा, यह भले बता दिया। अब ख्याल रक्खूँगा। अब बोवाई और बीज वग़ैरह कैसे काम में लाना चाहिए यह भी बता दीजिए।

रामू—हाँ, ध्यान से सुने जाइए। हल्दी की गाँठें ही बीजों का काम देती हैं। एक बीघा में क़रीब १५-२० सेर हल्दी लगती है। बैसाख, जेठ के बीच में हल्दी बोनी चाहिए। नहीं तो जेठ के अखीर में, दो-एक पानी होने के पश्चात् जब खेतों में नमी हो जाती है तब इसके बोने का सबसे अच्छा समय होता

है। बीज बो देने के बाद खेत में नमी रहनी चाहिए और यदि पानी न बरसे तो सिंचाई करा देनी चाहिए। इस तरह से ये बीज १५-२० दिन में उग आते हैं।

शोभा—अच्छा बोयें कैसे ?

रामू—इसको गेहूँ-जौ की तरह क़तारों में बोनी चाहिए। एक आदमी दो-दो बालिश्त की बराबर दूरी पर ८ या १० अंगुल का गड्ढा बनावे और दूसरा आदमी टोकरी से बीज लेकर बोता जाय। फिर दूसरी क़तार में गड्ढे बनाये जायँ और इनकी मिट्टी पिछली क़तार के गड्ढों के बीजों पर गिरा देनी चाहिए। इससे बीज ७ या ८ अंगुल मिट्टी के नीचे हो जाता है और सूरज की गर्मी से सूखने नहीं पाता।

शोभा—अच्छा, बोने के पश्चात् तो फिर कोई झंझट नहीं करनी पड़ती।

रामू—अरे अभी ही ऊब गये। अभी कर ही क्या डाला है। कम से कम ४ या ५ दफ़े घास, खर-पतवार छिला देना चाहिए। अर्थात् निराई करा देनी चाहिए और साथ ही साथ गोड़ाई भी करा देनी चाहिए। गोड़ाई से खेतों में नमी रहती है और गाँठें मोटी तथा बड़ी होती हैं। किनारे की मिट्टी खोदकर पौधों पर डाल देनी चाहिए। इससे जो नालियाँ बन जाती हैं उनसे वर्षा का पानी निकल जाता है और इकट्ठा हो करके गाँठों में नहीं लगने पाता है। ये सब बातें आषाढ़ के महीने में करनी चाहिए। और उसी खेत में फिर हमेशा हल्दी ही न बोवे। हल्दी गन्ने के खेत में या गन्ने के साथ बोने से कोई हानि नहीं होती। बल्कि और लाभ ही होता है। इसमें किफ़ायत होती है और कीड़ा अधिक नहीं लगने पाता।

शोभा—अच्छा, इतना तो समझ में आगया। लेकिन यह कब मालूम पड़ता है कि फ़सल तैयार हो गई है और कब खोदाई करनी चाहिए।

रामू—हल्दी पूस तक पक कर तैयार हो जाती है। अगहन या पूस तक खोदने के लायक़ हो जाती है। पकने की पहचान यह है कि हल्दी के ऊपर के पत्ते हल्दी के पक जाने पर पीले होकर चारों तरफ़ गिरने लगते हैं। भूरे रंग की गुच्छेदार हल्दी खोदकर कटी और बीजवाली गाँठें गुच्छे से बाहर निकाल ली जाती हैं। ये केवल खाने के लिए ठीक होती हैं। इनमें बीज की शक्ति नहीं रहती। बीज-वाली गाँठों का रंग पीसने पर लाल होता है। ये दूसरे साल बोने के लिए छाँटकर रख लेनी चाहिए। इसी तरह से अगर खूब परिश्रम करके बोवे तो फ़ी बीघा क़रीब पक्के १०० या सवा सौ मन तक होती है।

शोभा—बीज रखना कैसे चाहिए क्योंकि खुला रखने से तो ये सूख जायँगी।

रामू—बीजों के लिए अच्छी और मोटी गाँठें छाँटकर सावधानी के साथ घर के भीतर आड़ में चौरस ज़मीन में पुआल और टाट के नीचे ढककर रक्खे। और यदि हो सके तो दो बालिश्त गड्ढा खोदकर नीचे पुआल बिछाकर रक्खे। ऊपर से ३ या ४ अंगुल गीली मिट्टी की तह लगा दे। इससे बीज सूखने नहीं पाते।

शोभा—कच्ची हल्दी को पकाना कैसे चाहिए यह तो कृपया बता दीजिए।

रामू—बीजों के लिए हल्दी निकाल लेने के पश्चात् शेष हल्दी कार्य में लाने के लिए उबाली जाती है। खोदने के पश्चात् हल्दी को साफ़ पानी से धोकर मिट्टी और रेशों को अलग कर देते हैं। फिर सुखा करके साफ़ जगह में रख देते हैं। फिर १ महीना बाद उसे उबालते हैं। कड़ाही में भट्ठे पर पानी के साथ मंद-मंद आँच से पकावे। इस तरह से वह एक घंटा में तैयार हो जाती है और महकने लगती है। इसी तरह से बार-बार उसी पानी में हल्दी की साफ़ गाँठें डालकर पका लेनी चाहिए। फिर चटाई या टाट बिछाकर सुखा लेना चाहिए। पकने की पहचान आलू की तरह टटोलकर मालूम कर लेना चाहिए। ५ या ६ दिन धूप में और १२ दिन छाया में सुखावे। बाद में उनके रेशे उखाड़कर बोरों में भर लेना चाहिए।

शोभा—लेकिन कृष्णदत्त के यहाँ से जो हल्दी हमने पारसाल ली थी वह तो रंगीन और अच्छी अच्छी थी। हमको तो आपने रँगने की तरकीब ही नहीं बताई।

रामू—हाँ, वह भी सुनिए। उबालने के पश्चात् हल्दी सूखकर चौथाई रह जाती है। उबाली हुई सूखी हल्दी में अच्छा रंग लाने के लिए एक बर्तन में २० सेर मट्ठा, आधी छटाँक बारीक पिसी हुई फिटकिरी और डेढ़ सेर पिसी हुई बारीक हल्दी को खूब मिलावे। फिर दूसरे बर्तन में ५ सेर पीली पिसी रामरज या पहली गाँठों को खूब अच्छी तरह लपेटे। फिर पहले बर्तन में बनाये हुए रंग में खूब मिलाकर छाया में चटाई पर सूखने के लिए फैला दे।

शोभा—अहा हा! यह बात तो बड़ी अच्छी बताई।

रामू—हाँ, यह तो ठीक है। लेकिन तैयार हल्दी के रखने का तरीक़ा तो अच्छी तरह जान लीजिए।

शोभा—क्यों नहीं, वह भी बताइए, नहीं तो कहीं घुन ही लग जायगा।

रामू—तैयार हल्दी को रखने में बड़ी सावधानी करनी चाहिए। बराबर ज़मीन में या ऊँची जगह पर हल्दी के रखने के लिए उसके अंदाज़ का गड्ढा बना लीजिए। उसकी तह में कंकड़ या कड़ी मिट्टी कूट दीजिए। नीचे और बग़ल में उस गड्ढे के चारों तरफ़ दोहरी-तेहरी चटाई लगाकर रख दीजिए। ऊपर से चटाई बिछा मिट्टी से पाट दीजिए। मिट्टी ढलवाँ डालिए ताकि वर्षा का पानी बह जाय और हल्दी की गाँठों को हानि न पहुँचे। इससे हल्दी घुनती नहीं है। और जब चाहिए तब निकाल करके बेंच लीजिए। बोरों में बाहर रखने से घुन लग जाता है और सब तरह की हानि पहुँचने की संभावना रहती है।

शोभा—धन्य है! वाह! वाह! अब तो मैं इसी तरह से करूँगा। इस तरह हल्दी की खेती करने से मुझे मालूम पड़ता है बड़ा लाभ होगा। भला सब खर्च, खेत का लगान, गोड़ाई-निकाई, जोताई, खाद, बीज, और फुटकर खर्च निकालकर एक बीघे में कितनी बचत हो जाती है।

रामू—यह प्रश्न तुमने अच्छा पूछा। इसमें प्रत्येक स्थान का ठीक-ठीक खर्च तो नहीं लगाया जा सकता है। क्योंकि जलवायु, पृथ्वी, मज़दूरी आदि प्रत्येक स्थान पर पृथक्-पृथक् हैं। कहीं कम कहीं अधिक। लेकिन पारसाल बच्चू वाजपेयी ने हमारे गाँव के पास एक बीघा में सब खर्च निकालकर सवा सौ रुपया बचाया था। इससे ऊटपटाँग खेती के बजाय इसी की खेती कीजिए।

बचत के साधन

लेखक, श्री आर० के० ककड़, इन्स्पेक्टर कोआपरेटिव सोसाइटीज़, यू० पी०

हमारा भारतवर्ष जिसको हिन्दुस्तान के नाम से पुकारा जाता है एक ऐसा मुल्क है जिसमें राजा से लेकर फ़क़ीर तक लगभग सभी प्रकार के लोग निवास करते हैं, मगर ९० फ़ी सदी लोग देहातों ही में रहते हैं और उनका गुज़र केवल खेती-बारी ही पर निर्भर है । शहर में रहनेवालों के लिए तो सब क़िस्म के आराम का सामान मौजूद ही है और वे लोग अपनी बचत का रुपया बैंकों, डाकखानों, बीमा-कम्पनियों और किसी न किसी रूप में लगाते रहते ही हैं । अब वे लोग जो छोटे-छोटे क़स्बों में रहते हैं वे भी अपनी बचत या तो महाजनों या और बनियों के पास रखते हैं या छोटा-मोटा ख़ुद रोज़गार ही कर लेते हैं । ग़रज़ यह कि शहर और क़स्बों के लोगों के लिए बचत की गुंजाइश भी काफ़ी है और उसके साधन भी वे जानते हैं । दिक्क़त तो सिर्फ़ उन लोगों को है जो देहात में रहते हैं और जिनके लिए न तो पेट भर अन्न ही है और न तन ढकने के लिए कपड़ा । और दूसरे मुल्कों के ग्रामों ने चाहे कुछ भी तरक्क़ी कर ली हो परन्तु हमारे देश के ग्राम तो अभी तक बहुत ही पीछे हैं । इसलिए बचत की ज़रूरत सबसे ज्यादा ग्राम-निवासियों के लिए ही है । इसलिए आज हम अपने काश्तकार भाइयों को इस रेडियो-द्वारा यह बताना चाहते हैं कि बचत वे लोग कैसे कर सकते हैं । यह तो सब कोई जानते हैं कि बचत किसको कहते हैं और सब लोग चाहते भी हैं कि बचायें, पर क्या करें लाचारीवश नहीं बचा सकते । उनका यही कहना होता है कि खर्चे को तो अटता ही नहीं बचावें क्या और कहाँ से । ग़रीबी ने ऐसा चारों तरफ़ से घेरा है कि पनपने ही नहीं देती । इसलिए बचत के पहले इसका उपाय होना ज़रूरी है कि जिससे हम काश्तकारों की आमदनी बढ़े, फ़िज़ूलख़र्ची कम हो, तब कहीं बचत हो । ठीक है, बस किसान भाइयों की इन्हीं मुश्किलात और तकलीफ़ों को दूर करने के लिए सरकार ने सहकारी मोहकमा खोल रक्खा है । यह मोहकमा क़रीब-क़रीब तीस वर्ष से अपना काम कर रहा है । इसको हमारे किसान भाई बैंक के नाम से पुकारते हैं । तो बस इस लेख में हम यही बतायेंगे कि जिस बैंक-द्वारा उनको क़र्ज़ा, बीज, खाद वग़ैरह दिया जाता रहा है और जिस बैंक-द्वारा अब जीवन-सुधार भी किया जाता है तो वही बैंक यह भी सिखाता है कि बचत के साधन क्या हैं और वह कैसे की जा सकती है । अब साधन की बात रही तो यह किसान को ख़ुद करने की बात है । देखो गाँववाले सभी हुक्का पीते हैं और अपने बालकों को भी वे ही सिखाते हैं । पीते-पीते उनकी भी आदत पड़ जाती है और यहाँ तक बढ़ती है कि एक दफ़ा खाना नहीं खायेंगे मगर हुक्का ज़रूर पियेंगे । इससे यह ज़ाहिर है कि अगर किसी काम को गाँव-वाले बार-बार करें तो उससे उनकी आदत पड़ जाती है और फिर उसको बिला किसी रोक-टोक के करने लगते हैं । अगर उनके गाँव का बैंक उनकी बचत के साधन के लिए कुछ नियम बना दे और फिर उन नियमों का पालन उनसे कराया जाय तो वे बचत ज़रूर करने लगेंगे और उनका साधन भी हो जायगा । इसलिए सबसे पहले किसानों को चाहिए कि जब रात को इकट्ठा होकर गाँव की चौपाल में बैठें तो यही सोचें कि उनकी तकलीफ़ें और समस्यायें क्या हैं और वे क्या करें कि उनके पास चार पैसे बच जायँ और वे सब लोगों की तरह अपने काम ठीक समय पर कर लिया करें । इस तरह पर बचत के नियम बनायें और उनके साधन की योजना भी रक्खी जाय । न करने पर उचित दंड का भी होना ज़रूरी है । इसके बाद एक ऐसे मनुष्यों की पंचायत चुनी जाय जो उस गाँव में बाअसर हों और जो इस बात का ज़िम्मा लें कि वे बनाये हुए नियमों का साधन सब गाँवों के लोगों से करायेंगे तो बचत अवश्य हो सकती है । जो लोग गाँव के ख़िलाफ़ जायें यानी बताये हुए नियमों के अनुसार बचत न करें तो उनको यही पंचायत उचित दंड भी दे, जैसे अगर बिरादरी या गाँव के और किसी मामले में कोई आदमी ख़िलाफ़ जाता है तो आमतौर पर या तो उसका हुक्का बन्द कर दिया जाता है या उस पर रोटी पड़ जाती है । यह एक गँवार मसला है कि "भय बिन होय न प्रीती" इसलिए अगर बचत कराने की आदत डालनी है तो उनको दंड भी देना पड़ेगा, मसलन जुर्माना कर देना, चौपाल में न बैठने देना, बिरादरी के मामलों में राय न लेना, बिरादरी की दावत में न शरीक़ करना वग़ैरह-वग़ैरह ।

वह आदमी जिसकी आमदनी बँधी हुई हो हर महीने, या हर महीने हुआ करती हो हर समय ही कुछ न कुछ बचा सकता है और बचाता भी है । चाहे वह फिर ख़र्च कर दे । मगर हमारे काश्तकार तो ऐसा नहीं कर सकते उनके तो सब काम फ़सल ही पर होते हैं । जब तक फ़सल नहीं होती है क़र्ज़े से ही काम चलता है चाहे यह क़र्ज़ा महाजन दे, ज़मींदार दे, बनिया दे या गाँव का बैंक दे फिर फ़सल पर सब वसूली को दौड़ते हैं । यही समय है जब किसान बचत भी कर सकता है तो पहली बचत तो फ़सल की होनी चाहिए । मामूली तौर पर सभी काश्तकारों के यहाँ साल में दो फ़सलें होती हैं इसलिए दो दफ़ा में तो वे ज़रूर ही कुछ न कुछ बचा सकते हैं । इसके अलावा जो काश्तकार ज़ायद फ़सल जैसे गन्ना, तम्बाकू, आलू, मूँगफली, रुई, तरकारी या फल बोते हैं वे उसे समय से भी बचा सकते हैं । पहले हम यह बतायेंगे कि फ़सल से बचत कैसे हो । यह हर गाँव का दस्तूर है कि फ़सल काटने के बाद खलिहान में जमा

की जाती है और फिर अनाज इकट्ठा किया जाता है। इस समय एक काश्तकार गाँव के दस्तूर के मुताबिक़ मज़दूरों को, नाई को, लोहार को, बढ़ई को, धोबी को और उन सब प्रजा को जिनसे उनका काम पड़ता है देता है ठीक इसी तरह पर उसको इसी समय पर कुछ न कुछ अपने बचत के बैंक में भी देना चाहिए। इस बचत का नाम हम चुटकी की बचत रखते हैं इसके बाद जब काश्तकार अनाज घर में ले जाता है तो भूसे को अलग रखता है खाने के लिए अलग रखता है और बाक़ी को बेचता है। बेचने पर पैसे मिलते हैं जिससे वह लगान, क़र्ज़ा वग़ैरह अदा करता है। दूसरी बचत पैसे की होनी चाहिए। पहली बचत के लिए एक कोठार बना लेना चाहिए और उसमें सब काश्तकारों का ग़ल्ला जमा कर देना चाहिए। बिक्री की बचत के लिए सोसाइटी को अपने मेम्बरान की गोलक दे देना चाहिए और वे अपनी बिक्री का चौथा, पाँचवाँ या दसवाँ जो कुछ भी डाल सकें डाल दें। कमेटी की कमेटी यह सब रक़म उनके खाते में जमा कर दी जाया करे। जमा किये हुए ग़ल्ले को साफ़ कराने के बाद मेम्बरान को फिर बीज के रूप में बाँट देना चाहिए। इस तरह पर वह बहुत बढ़ जायगा और जब ज़रूरत से ज़्यादा हो जाय तो उसको बेचकर रुपयों की शक्ल में कर लिया जाय और फिर वह भी उस मेम्बर के हिसाब में जमा कर दिया जाय। अब तीसरी बचत बच्चों और औरतों के द्वारा की जा सकती है। हर काश्तकार अपने बच्चों और औरतों को भी ज़रूर कुछ न कुछ देता है। बच्चों के लिए तो यह ज़्यादा अच्छा होगा कि अगर गोलक रंग-बिरंग की और खिलौने की शक्ल में बनाई जाय और उनसे यह कहा जाय कि जो ६ महीने में अपनी आमदनी में से सबसे ज़्यादा बचायेगा तो उसको खिलौना इनाम में मिलेगा। इस तरह पर साधन करते-करते बच्चों को भी बचाने की आदत पड़ जायगी और वे भी बचाने लगेंगे। अब रही औरतें, औरतों का मिजाज क़रीब-क़रीब हर क़ौम और जात में एक ही-सा होता है। सभी औरतों को सबसे पहले ज़ेवर और उसके बाद कपड़े का शौक़ होता है। इनके बचत के साधन में पहले यह ज़रूरी होगा कि इनसे ऐसा काम कराया जाय जो इनको प्रिय हो यानी इनसे यह कहा जाय कि जब-जब ये बाज़ार करने जायँ तब-तब वे कुछ न कुछ बचायें और उस बची हुई रक़म को अपने पास गाड़कर रख लें और जब वह इतनी हो जाय कि वे एक ज़ेवर बनवा लें तो वे अपनी तबीअत के मुताबिक़ ज़ेवर बनवा लें। ज़ेवर औरतों को बहुत प्रिय होता है और इसके लिए वे अपने शौहरों से भी लड़ जाती हैं। शुरू-शुरू में ऐसा करने से उनकी आदत पड़ जायगी और वे ज़ेवर की लालच में ज़रूर बचायेंगी। फिर उनसे कहा जाय कि और ज़्यादा बचाने से वे बजाय राँगा-काँसा के ज़ेवर के चाँदी और सोने के ज़ेवर बनवा सकती हैं। अब चौथा साधन शादी के मौक़े पर हो सकता है यानी हर काश्तकार के लिए जब कि उसके लड़के की शादी हो तो मिली हुई दहेज़ में से कुछ न कुछ जमा करे। स्त्रियाँ यह बचत तो उस रुपये में से कर सकती हैं जो वे अपने शौहरों से लेती हैं। उनकी दूसरी बचत जो पैसे के रूप में हो सकती है वह इस प्रकार से हो सकती है कि गाँव का ँक उनको कोई दस्तकारी सिखाने का इन्तज़ाम करे, जैसे पंखे बनाना, डलिया बनाना, सुतली बनाना, रस्सी बनाना, निवाड़ बनाना, चर्खी चलाकर रुई कातना और सूत बनाना, कपड़ा बुनना, क़ालीन बनाना, क़सीदा काढ़ना, छपाई करना वग़ैरह-वग़ैरह। यह आमदनी ख़ुद उनकी मेहनत की होगी और गाँव का बैंक इन सब चीज़ों की बिक्री का इन्तज़ाम कर देगा। इस साधन से काफ़ी रुपया बच सकता है। एक छोटी-सी रक़म औरतें अपने खाना बनाने के समय भी कर सकती हैं, यानी वह आटा, दाल या चावल जो अख़ीर में खाना बनाने के बाद बच जाता है एक हाँड़ी में जमा करती रहें और फिर जब वह कुछ जमा हो जाय तो उसको बाज़ार में बेचकर पैसे कर लिये जायँ। इसी तरह पर अनेकों साधन हो सकते हैं और इन्हीं साधनों के अनुकूल नियम बना लिये जायँ। अब इस तरह से कुछ समय के बाद हर काश्तकार के पास काफ़ी रुपया जमा हो जायगा तब उससे यह कहा जाय कि अब क़र्ज़ा लेने की आदत कम करो और इसी रक़म में से अपने आये वक़्त के लिए भी बचा करके रक्खो। मसलन फ़सल की ख़राबी पर लगान देना, बैल ख़रीदना, लड़की या लड़के की शादी करना, मरनी-करनी के लिए, तीर्थ-यात्रा के लिए भी बचाना ज़रूरी है। यदि ऊपर लिखे अनुसार हमारे काश्तकार भाई साधन करने लगें और इनकी आदत पड़ जाय तो फिर गाँव की सभी समस्यायें बड़ी आसानी से हल हो जायँ और यह सब साधन सहयोग-द्वारा ही बड़ी सरलता से हो सकते हैं। इसलिए सब काश्तकारों को अपने गाँव में ऐसी सोसाइटियाँ बनानी चाहिए और उनके द्वारा अपना सुधार करें जिसमें हमारा देश भी एक बार फिर हरा-भरा और ख़ुशहाल हो जाय।

बाग़ लगाते समय किन बातों का देखना आवश्यक है ?

लेखक, मि० श्रीराम शुक्ल, सुपरिन्टेन्डेन्ट, ताजबाग़, आगरा

बाग़ चाहे तिजारती लगाया जाय या शौक़िया तौर पर, कुछ बातों का ध्यान तो हर हालत में रखना आवश्यक है। ये बातें नीचे दी जाती हैं।

ज़मीन—मिट्टी का अच्छा होना ज़रूरी है। मिट्टी न बलुई होनी चाहिए और न चिकनी। दूमट सबसे अच्छी होती है। मोटी पहचान यह है कि जिस ज़मीन में फ़सलें अच्छी होती हों या और दरख़्त ठीक लग रहे हों वह जगह बाग़ के लिए भी अच्छी होती है। यह भी देख लेना चाहिए कि ज़मीन समतल हो, बहुत ज़्यादा ऊँची-नीची न हो। ऐसी जगह पर भी न हो जहाँ पानी भर जाता हो। यह भी देख लेना चाहिए कि नीचे चट्टान या कँकरीली मिट्टी न हो और मिट्टी की गहराई कम से कम ५ या ६ फ़ीट अवश्य हो। एक आठ या दस फ़ीट का गड्ढा खोद लेने से इन बातों का पता लग जाता है।

पानी—यह तो प्रत्यक्ष ही है कि बिना पानी के कोई बाग़ नहीं लग सकता। पानी का बहुत अच्छा इन्तज़ाम होना चाहिए। यहाँ पर एक बात बतला देनी ज़रूरी है कि कोई बाग़ केवल नहर के सिंचाई की भरोसे नहीं लगाना चाहिए। यदि नहर का पानी हो तो भी कुएँ का होना आवश्यक है क्योंकि नहर अकसर गर्मियों में तथा और समय पर, जब पानी की ज़रूरत होती है, बन्द हो जाती है। यह भी देख लेना चाहिए कि पानी खारी न हो और काफ़ी तादाद में मिलता हो। कुओं की गहराई ३० या ४० फ़ीट से ज़्यादा न होनी चाहिए। जहाँ पानी ज़्यादा नीचे पर मिलता है वहाँ बाग़ अच्छा नहीं लगता।

आबहवा—आबहवा तो कहीं की बदली नहीं जा सकती पर यदि ख़राब आबहवा में ही बाग़ लगाना है तो ऐसी क़िस्में लगानी चाहिएँ जो उस आबहवा को बर्दाश्त कर सकें। फिर भी जहाँ तक हो ख़ुश्क व बहुत गरम आबहवा में बाग़ न लगाना चाहिए। बरसात कम से कम २५ इंच या ३० इंच हो। लू या पाला बहुत ज़्यादा न हो और बिलकुल ही न हो तो और भी अच्छा है। फिर भी जैसा पहले कहा जा चुका है, आबहवा के हिसाब से पेड़ों की क़िस्में छाँटनी चाहिए।

अब अगर तिजारती बाग़ लगाना है तो और भी दो एक बातों का ख्याल रखना होगा।

मंडी—पैदावार की निकासी के वास्ते मंडी का होना बहुत ज़रूरी है गोया किसी मंडी के नज़दीक बाग़ लगाना चाहिए या अगर दूर हो तो वहाँ तक पैदावार जल्दी से जल्दी पहुँचाने का कोई ज़रिया होना चाहिए। यह ज़रिया या तो मोटरलारी या रेल से हो तो अच्छा है।

मज़दूर—तिजारती बाग़ के वास्ते यह भी ज़रूरी है कि मज़दूर सस्ते मिलते हों। मान लीजिए कि मंडी के नज़दीक मज़दूरी अधिक है तो यह अच्छा होगा कि बाग़ मंडी से दूर जहाँ मज़दूरी सस्ती हो लगाया जाय और माल बज़रिए रेल या मोटरलारी-द्वारा मंडी तक लाया जाय।

जंगली जानवरों से बचाव—जिस जगह पेड़ लगाये जायँ यह ज़रूरी है कि वहाँ जंगली जानवर न लगते हों। लेखक के तजुरबे में आया है कि ऊपर लिखी और सब बातें ठीक होने पर भी केवल जंगली जानवरों के कारण बाग़ न लग सका। इसका इन्तज़ाम पेड़ लगाने से साल भर पहले ही कर लेना चाहिए। आजकल तार की क़ीमत तो बहुत बढ़ गई है इसलिए सबसे बढ़िया बचाव खाई खोद कर उस पर थूहड़ लगाकर हो सकता है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। साल भर पहले लगा देने से थूहड़ खूब बढ़कर मज़बूत हो जावेगा।

और छोटी-छोटी बातें तो और भी हैं, पर ऊपर लिखी बातें ज़रूरी हैं कि उनमें से एक के भी बग़ैर काम नहीं चल सकता और इसका पूरा होना ज़रूरी है।

जगह छाँटने के बाद एक बात बहुत आवश्यक है यानी ज़मीन की सतह ठीक कर लेनी चाहिए। यह काम पेड़ लगाने के बाद नहीं हो सकेगा और इसके बग़ैर सिंचाई वग़ैरह में बहुत दिक़्क़त होगी। ज़्यादा जानकारी के लिए मोहकमे ज़राअत की बुलेटिन नम्बर ४ देखिए।
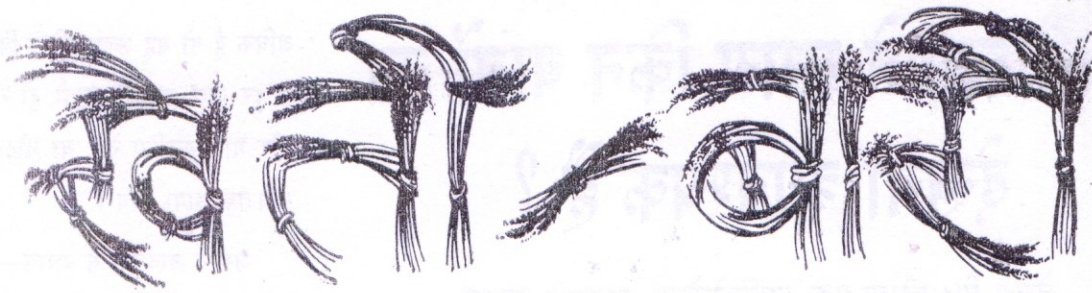
अमरूद

उद्धृत बुलेटिन नं० ४, फ़्रूट सीरीज़
कृषि-विभाग-द्वारा प्रकाशित

अमरूद की फ़सल लगाने के बाद बहुत जल्द तैयार हो जाती है। यह उस कमज़ोर ज़मीन में भी पैदा हो सकता है जिसमें आम, पपीता, सन्तरा, नारंगी या और क़ीमती फलों के दरख़्त अच्छी तरह नहीं हो सकते। इसके लिए केवल कुछ वर्गफ़ीट भूमि की आवश्यकता होती है। ख़ुश्की या पानी की अधिकता, जिसकी वजह से दरख़्त अपनी ख़ुराक नहीं हासिल कर सकते, इसको ज़्यादा नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। यह आम जैसे बड़े फलदार दरख़्तों के दरमियान कुछ सालों तक अच्छी तरह लगाया जा सकता है। अभी अमरूद की काश्त बढ़ाने की काफ़ी गुंजाइश है। इसकी खेती आसानी से हो सकती है और इसका दरख़्त बहुत जल्द तैयार होकर नख़लबन्दी के चौथे साल फल देने लगता है और सात साल में अपने पूरे क़द तक पहुँच जाता है। २० साल तक इसकी फ़सल से मुनाफ़ा हासिल किया जा सकता है।

ज़मीन---संयुक्त-प्रान्त में ३० फ़ीट तक हर जगह अमरूद की काश्त हो सकती है। अगर ज़मीन ऐसी हो कि वह जड़ों को पकड़ ले और जज़्ब रख सके तो दरख़्त उसमें पैदा हो सकता है। यह ख़ासियत और किसी फ़लदार दरख़्त में नहीं होती। सूखे नीचे मोकामों में यह अच्छी तरह से पैदा होता है।

क़लम बाँधने के समय---चूँकि बीज से असल दरख़्त नहीं लगते लिहाज़ा उसको क़लम-द्वारा पैदा किया जाता है। जुलाई और जनवरी में चश्मा बाँधकर पौदे तैयार किये जाते हैं। स्टाक या कठिया ६-७ महीने से ज़्यादा का न होना चाहिए और चश्मा उस सब्ज़ हिस्सा से निकाला जावे जिसमें अर्क़-सज़री का बहाव तेज़ हो। क़लम बाँधने के महीने फ़रवरी, जुलाई और अगस्त हैं। स्टाक या कठिया एकसाला होना चाहिए और डेढ़ साल से ज़्यादा का न होना चाहिए। जोड़ तीन महीने में ठीक हो जाता है। लेकिन फ़रवरी का बाँधा हुआ क़लम जुलाई के पहले जुदा नहीं करना चाहिए। जुलाई और अगस्त में बाँधे हुए क़लम के लिए बनिस्बत फ़रवरी में बाँधे हुए क़लम के निगरानी की ज़रूरत होती है। इसलिए बरसात में क़लम बाँधना अच्छा होगा। क़लम बाँधने के लिए स्टाक बहुत होशियारी से तैयार करना चाहिए। दिसम्बर में केवल पके हुए फल से बीज निकालकर उसे धोकर तीन दिन तक साया में सुखा करके इकट्ठा कर लेना चाहिए और तब उसको धूप में सुखाया जावे। एक बार कुछ बीज उस समय बोना चाहिए। दूसरी बार जनवरी में, तीसरी बार फ़रवरी में और आख़िरी बार जुलाई में बोना चाहिए। एक दफ़ा तमाम बीजों को नहीं बोना चाहिए। अन्तर देकर बोने से इस बात का काफ़ी मौक़ा मिलता है कि क़लम बाँधने के लिए अच्छे पौदे चुने जावें। बीज बोते समय बीज को घना नहीं बोना चाहिए। जब पौदे निकल आवें तो घने पौदों को निकालकर कम कर देना चाहिए ताकि पौदों में एक-दूसरे के बीच का फ़ासला ६ इंच बाक़ी रह जाय। कुछ समय बाद इनको गमलों में बदला जा सकता है।

दरख़्तों का फ़ासला---दरख़्तों को घना नहीं लगाना चाहिए। ऐसा करने से दरख़्तों को काफ़ी रोशनी नहीं मिलती और उनकी बढ़वार अच्छी तरह नहीं हो सकती। अमरूद में एक से दूसरे दरख़्त का फ़ासला १८ फ़ीट मुनासिब होता है। अगर दरख़्तों की कटाई-छटाई ठीक समय पर होती रहे तो १५ फ़ीट पर भी उनको लगाया जा सकता है।

कटाई-छटाई---इसका प्रयत्न करना चाहिए कि जब दरख़्त फल देने के लायक़ हो जावें तो उनमें तीन या चार फ़ीट ऊँचा तना हो। किनारे की शाखें जो आवश्यकता से अधिक हों निकलते ही चाक़ू से काट देना चाहिए। ख़ास तने से केवल तीन चार शाखें छोड़ देना काफ़ी है और ये शाखें भी इस तरह काटी जावें कि हर एक शाख़ में तीन या चार शाखें रहें और दरख़्त को इस तरह बनाया जावे कि वह छाते की तरह मालूम हो। छोटे दरख़्तों के काट-छाँट की आवश्यकता तीन-चार साल तक रहती है। इस समय की लापरवाही आगे चलकर नहीं सुधारी जा सकती। एक अच्छी तरह काट-छाँट किये हुए बग़ीचे की आमदनी बनिस्बत बदनुमा और बेतरीक़ाशाखोंवाले दरख़्तोंके कहीं ज़्यादा होती है। कटाई-छटाई का काम माह अप्रैल और मई में होना चाहिए जब कि पतझड़ होता है और दरख़्त आराम की हालत में होता है और उसमें खाद वग़ैरह दी जाती है। काट-छाँट से फल बड़े आते हैं, फ़ी एकड़ ज़मीन में ज़्यादा पौदे लगाये जा सकते हैं, फल तोड़ने और ज़मीन की गोड़ाई-जोताई कराने में आसानी हो जाती है और फल जल्द आता है।

फूलने और फलने के समय---फूल और फल साल में दो बार आते हैं। पहली बार फूल जनवरी में निकलता है जिसको "अम्बा बहार" कहते हैं। इसका फल जुलाई से अक्टूबर तक पकता है। दूसरी बार फूल माह जून में आता है। जिसको "मर्गबहार" कहते हैं। इस फ़सल का फल माह नवम्बर से जनवरी तक पकता है। अगर खाने के वास्ते फल को

आवश्यकता हो तो दोनों फ़सलों से फल लेना चाहिए और अगर मुरब्बा वग़ैरह बनाना हो तो सिर्फ़ जाड़े का फल रखना चाहिए। जब फल दोनों फ़सलों से लिये जाते हैं तो छोटे होते हैं और सिर्फ़ एक जाड़े की पैदावार दोनों फ़सलों की पैदावार से अधिक होती है।

खाद—अगर्चे अमरूद का दरख़्त कमज़ोर ज़मीन पर अच्छी तरह हो सकता है, ताहम खाद देने से इसकी पैदावार में काफ़ी इज़ाफ़ा होता है। पौदे लगाते समय अच्छी तरह खाद देने की आवश्यकता होती है। सालाना खाद देने के लिए दरख़्त के चारों तरफ़ एक फ़ीट गहरी एक फ़ीट लम्बी और एक फ़ीट चौड़ी नाली खोदनी चाहिए। नाली शाखों के बाहरी फैलाव के नीचे हो। इस नाली में ९ इंच खाद और मिट्टी मिलाकर भर देनी चाहिए और तीन इंच जगह आबपाशी के लिए छोड़ दी जावे। खाद पुरानी और सड़ी होनी चाहिए। खाद और मिट्टी की मात्रा बराबर हो। नाली का व्यास सालाना शाखों की बढ़त के साथ बढ़ता जावेगा। जब दरख़्त पूरे तौर पर बढ़ जावे तो उसके चारों तरफ़ तीन इंच की गहराई और तीन फ़ीट की चौड़ाई में खाद फैला दी जावे और ४-६ इंच ज़मीन खोदकर उसको मिला दिया जावे। इस दायरे का बाहरी व्यास शाखों के फैलाव तक होना चाहिए। मई के आख़ीर में दरख़्तों को खाद देनी चाहिए और उसके १५ दिन के बाद पानी देना चाहिए। अगर पानी न मिले तो बारिश होने के दस या पन्द्रह रोज़ पहले खाद देनी चाहिए।

सिंचाई—सिंचाई का सवाल एक ख़ास सवाल है। यह इस ख़्याल से नहीं कि उसमें कितने पानी की आवश्यकता है बल्कि इस ख़्याल से कि ज़मीन की ढाल किस तरफ़ है। यह बात बाग़ लगाने के पहले ठीक-ठीक मालूम कर लेनी चाहिए। पानी की बड़ी नाली को ऊँची सतह से नीची सतह की तरफ़ बनाना चाहिए और बड़ी नाली से हर दूसरी और तीसरी क़तारों के दरमियान में छोटी नालियाँ बनाई जावें और बाद में इन नालियों से हर एक दरख़्त तक अलग-अलग दूसरी नालियाँ बनाई जावें। नये दरख़्तों के लिए जिनकी उमर एक से तीन साल तक हो गर्मी के मौसम में फ़ी महीना दो बार और जाड़े के मौसम में फ़ी माह एक बार पानी देना चाहिए। पुराने दरख़्तों में इससे अधिक अरसे के बाद पानी देने की आवश्यकता होती है।

कम्पोस्ट की खाद बनाने के आसान तरीक़े

लीफ़लेट नं० १४४, कृषि-विभाग-यू० पी० के आधार पर

हमारे सूबे की ज़मीनों में "ह्यूमस" अर्थात् वानस्पतिक अंश की कमी है। भूमि की उर्वराशक्ति क़ायम रखने के लिए इस हिस्से का होना ज़रूरी है। वानस्पतिक खादें जैसे गोबर या घूरे की खाद या कम्पोस्ट की खाद खली की खादों के मुक़ाबिले में ज़मीन के अन्दर "ह्यूमस" को बढ़ाने के लिए ज़्यादा उपयुक्त हैं।

गोबर और कम्पोस्ट की खादें प्रयोग करने से ज़मीन कम ख़र्चे के साथ उपजाऊ की जा सकती है। ईंधन की कमी होने के कारण काश्तकार गोबर को उपलों की शकल में जला देते हैं और इस तौर पर वह इस्तेमाल करने के लिए काफ़ी मिक़दार में नहीं मिल सकता। गोबर की इस कमी को पूरा करने के लिए कम्पोस्ट की खाद बनाने की सिफ़ारिश की जाती है। कम्पोस्ट की खाद बनाने के लिए हर क़िस्म का कूड़ा, घास, पेड़ों की पत्तियाँ, भूसा और फ़सलों के डंठल और दूसरी बेकार चीज़ें एक जगह पर इकट्ठा की जाती हैं और इस तरह इकट्ठा किये हुए ढेर में फालतू गोबर डाला जाता है। इस तमाम ढेर को उथले गड्ढों में, जो कि दो फ़ीट गहरे होते हैं, सड़ने दिया जाता है और समय-समय पर हवा लगने के लिए पलटा जाता है और आवश्यकतानुसार पानी डालकर नमी क़ायम रक्खी जाती है। इस प्रकार तीन-चार महीने के अन्दर कम्पोस्ट की खाद तैयार हो जाती है जो घूरे की मामूली खाद के मुक़ाबिले में ताक़तवर होती है। निम्नलिखित तरीक़ों से कम्पोस्ट की खाद बन सकती है—

(१) सूखे मौसम में कम्पोस्ट बनाने का तरीक़ा—(सी० मायादास स्क्वायर, आई० ए० एस० का जारी किया हुआ)—एक फ़ीट गहराई और आवश्यकतानुसार लम्बाई-चौड़ाई-वाला गड्ढा खोदा जावे और घास, पत्तों वग़ैरह की तह गड्ढे की फ़र्श पर फैला दी जावे। इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि सख़्त जड़ें इस कूड़े में न हों। इसके बाद एक हलकी तह गोबर की खाद की फैला दी जावे। पेशाब की मिट्टी (वह मिट्टी जिसमें जानवरों का पेशाब सोख गया हो और जो खोदकर अलग इकट्ठा कर ली गई हो) उसके ऊपर छिड़क दी जावे और थोड़ी-सी पुरानी खाद और फफूँदी डाल दी जावे। बाद में गड्ढे को कूड़े की एक और तह डालकर भर दिया जावे। जब गड्ढा भर जावे तब चार या पाँच घड़े पानी उस पर डाल दिया जावे। यह काम हर हफ़्ते किया जावे और इसके साथ ही साथ गड्ढे के कूड़े को फावड़े से पलटा जावे। दो महीने तक ऐसा करने के बाद तीसरे महीने में केवल दो बार इसको पलट दिया जावे। फिर तीन-चार इंच मिट्टी की तह डालकर तैयार होने के लिए छोड़ दिया जावे। ऐसा करने से चार-पाँच महीने के अन्दर कम्पोस्ट की खाद तैयार हो जावेगी।

(२) बरसात के मौसम में खाद बनाने का तरीक़ा—(इन्दौर के तरीक़े की बुनियाद पर)—गर्मी के मौसम में खेतों और मकानों का तमाम कूड़ा-कर्कट, घास और पत्तियाँ वग़ैरह एक जगह इकट्ठा कर ली जावें और जितना गोबर इकट्ठा हो सके उसमें डाल दिया जावे। इस कूड़े को तीन-चार फ़ीट ऊँचे और आवश्यकतानुसार लम्बे-चौड़े ढेरों की शकल दी जावे। हर ढेर के चारों तरफ़ ६

इंच से ८ इंच तक ऊँचे मेड़ बना दिये जावें। बारिश शुरू होने पर ढेरों में पानी खूब सोख जायगा और अगर बारिश आवश्यकतानुसार होती रहे तो ढेर चार हफ़्ते के अन्दर पहली पलटाई के क़ाबिल हो जायगा। इस समय में जब कभी सम्भव हो पत्तियाँ और पेशाब की मिट्टी का घोल इसके ऊपर छिड़कते रहना चाहिए। चार हफ़्ते के बाद ढेर को दूसरी बार पलटा जावे और मौसम बरसात ख़त्म होने से पहले तीसरी बार पलटाई की जावे। अगर पानी में ज़्यादा अन्तर न हो तो पानी देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और कम्पोस्ट अक्टूबर के महीने में तैयार हो जायगा। इस आसान तरीक़े को काम में लाने से काश्तकार को ५-६ महीने में २५०-३०० मन कम्पोस्ट मिल सकता है। इस कम्पोस्ट के बनाने का ख़र्चा ३ पाई से १० पाई फ़ी मन पड़ता है।

कम्पोस्ट के अंश—जो कम्पोस्ट ऊपर लिखे हुए तरीक़ों से मिलता है उसमें आमतौर से १·२ फ़ी सदी नाइट्रोजन, १·३ फ़ी सदी फ़ास-फोरिक एसिड और २·७ फ़ी सदी पोटाश पाया जाता है। इसके मुक़ाबिले में मामूली तरीक़े से तैयार की हुई घूरे की खाद में .४ फ़ी सदी नाइट्रोजन, १·१ फ़ी सदी फासफ़ोरिक एसिड और २·२ फ़ी सदी पोटाश पाया जाता है। ऊपर लिखी हुई संख्याओं से प्रकट होता है कि कम्पोस्ट की खाद घूरे की खाद के मुक़ा-बिले में खेतों की उर्वराशक्ति बढ़ाने के लिए अधिक उपयुक्त है।

संयुक्तप्रान्त के मैदानों में तरकारियों की खेती

बुलेटिन नं० ७०, कृषि-विभाग, यू० पी० से उद्धृत

ज़मीन—जिस जगह तरकारी का बाग़ लगाया जाय वहाँ पेड़ों की साया न होनी चाहिए और वहाँ की ज़मीन में पानी की निकासी का उचित प्रबन्ध होना ज़रूरी है। नीची ज़मीनों में तरकारियों की खेती मुमकिन नहीं है। दोमट ज़मीन में तरकारी की खेती बहुत अच्छी तरह हो सकती है जब कि उसमें ह्यूमस (वानस्पतिक अंश) काफ़ी मात्रा में मौजूद हो।

खाद—गोबर की खाद जो कि आसानी से इकट्ठा हो सकती है इस्तेमाल करनी चाहिए। खाद के इस्तेमाल करने का तरीक़ा यह है कि वर्षा के बाद पहले ज़मीन की जोताई या खोदाई की जाय, जब कि उसमें कुछ नमी मौजूद हो, इसके बाद आवश्यकतानुसार २ इंच से ६ इंच तक खाद की तह खेत में फैला दी जाय और फिर मिट्टी पलटनेवाले हल से जोत दिया जाय या फावड़ों के द्वारा ज़मीन में मिला दी जाय। यह हमेशा मुमकिन नहीं कि पूर्ण रूप से तैयार हुई गोबर की खाद समय पर मिल सके इसलिए किसानों को चाहिए कि खाद का प्रबन्ध पहले से कर रक्खें।

हरी खाद (सनई, ग्वार इत्यादि) ज़मीन को ताक़तवर बनाने का एक बहुत अच्छा तरीक़ा है जब सनई लगभग दो मास के हो जावे तो उसको मिट्टी पलटनेवाले हल के द्वारा ज़मीन में जोत दिया जाय ऐसा करने से हवा की नाइट्रोजन जिसको यह पौदा अपनी जड़ों के द्वारा हासिल करता रहता है, खेत की जरखेज़ी बढ़ाने के काम में आ जाती है।

जोताई—बहुधा समय जोताई की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता और उसके बजाय खाद डालकर ज़्यादा पैदावार की आशा की जाती है, मगर बग़ैर जोताई के पैदावार अच्छी नहीं होती। जोताई के द्वारा ज़मीन की हालत ठीक होती है और ज़मीन में गर्मी और नमी का प्रभाव पहुँच सकता है, जिसकी वजह से खाद सड़कर पौदे के इस्तेमाल में आती है। इस बयान से मालूम हो गया होगा कि खाद और जोताई दोनों पौदों की बाढ़ के लिए ज़रूरी हैं। जोताई करने से ज़मीन खुल जाती है और पौदा अपने आवश्यकतानुसार खाद हासिल कर सकता है। बहुत-से लोग इस काम को केवल खर-पतवार को दूर करने का ज़रिया समझते हैं। यह एक हद तक सही है। इसलिए कि खर-पतवार ज़मीन से पानी और ख़ुराक खींचते हैं जिससे उनका दूर करना ज़रूरी है।

ज़मीन का परती रखना—यह मालूम होने के बाद कि बेचारे किसान अपनी ज़मीन को कितनी कम खाद देते हैं यह बहुत आश्चर्य की बात मालूम होती है कि वह साल-बसाल उसी ज़मीन पर फ़सलें लेता रहता है। बावजूद साल-बसाल फ़सलें लेने के खेतों में इसलिए पैदावार होती रहती है कि साल के तीन महीनों में जब कि गर्मी ज़्यादा होती है ज़मीन परती पड़ी रहती है और सूरज की तेज़ गर्मी ज़मीन के ज़र्रों पर असर डालती रहती है और घास, खर-पतवार के वानस्पतिक अंशों को जो कि पिछली फ़सलों से ज़मीन में रह गये हैं, पौदों के इस्तेमाल के क़ाबिल बनाती है। ज़मीन परती रखने से यह मतलब नहीं है कि उसकी जोताई भी न की जावे बलिक जोताई करने से परती ज़मीन को बहुत फ़ायदा पहुँचता है।

सिंचाई—तरकारियों की कामयाब खेती के लिए पानी का काफ़ी प्रबन्ध होना चाहिए। इस क़दर ज़्यादा पानी देना कि ज़मीन दो, एक रोज़ तक पानी से भरी रहे पौदों के लिए हानिकारक है। क्यारियों की सतह पर ऊपर से पानी छिड़कना हानिकारक है क्योंकि ऐसा करने से जड़ें ज़मीन की सतह से मिली हुई बढ़ती हैं और ज़्यादा गर्मी या हवा के झोंकों को बर्दाश्त नहीं कर पातीं और पौदों में फूल और फल भी अच्छी तरह नहीं आते। आबपाशी का पानी ज़मीन में अच्छी तरह सोख जाना चाहिए ताकि पौदों की जड़ें नीचे की तरफ़ बढ़ें और पानी न मिलने की हालत में वे नीचे से नमी हासिल कर सकें।

निकाई—सिंचाई के बाद जब कि ज़मीन निकाई-गोड़ाई के क़ाबिल हो जावे तो खर-पतवार को निकाल दिया जावे और खेत की निकाई-गोड़ाई कर दी जावे। यह निकाई और गोड़ाई हर सिंचाई के बाद जितनी बार हो

द तक सही है।
न से पानी और
का दूर करना

ा—यह मालूम
न अपनी ज़मीन
ह बहुत आश्चर्य
वह साल-बसाल
हता है। बावजूद
तों में इसलिए
साल के तीन
होती है ज़मीन
न की तेज़ गर्मी
ी रहती है और
क अंशों को जो
में रह गये हैं,
ठ बनाती है।
मतलब नहीं है
ी जावे बल्कि
ो बहुत फ़ायदा

कामयाब खेती
होना चाहिए।
क ज़मीन दो,
रहे पौदों के
की सतह पर
रक है क्योंकि
सतह से मिली
ीं या हवा के
तीं और पौदों
ह नहीं आते।
अच्छी तरह
ौदों की जड़ें
न मिलने की
ल कर सकें।
जब कि ज़मीन
जावे तो खर-
और खेत की
़ निकाई और
तनी बार हो

सके बराबर दोहराते रहना चाहिए जब तक कि ज़मीन की सतह बिलकुल सूख न जावे।

फ़सल का हेर-फेर—फ़सलों के सही हेर-फेर से ज़मीन सिर्फ़ कमज़ोर होने से बची ही नहीं रहती बल्कि उसमें ज़हरीला माद्दा भी नहीं पैदा होता जो पौदों की बढ़वार के लिए हानिकारक होता है। तमाम पौदे कुछ फ़ुज़ला या सीकरेशन अपनी जड़ों-द्वारा निकालते हैं। यह फ़ुज़ला या सीकरेशन उसी जाति के पौदों के लिए हानिकारक होता है, लेकिन दूसरे क़िस्म के पौदों पर उसका बुरा असर नहीं पड़ता। चाहे कितनी ही खाद डाली जावे। अगर एक ही क़िस्म के पौदे साल-बसाल ज़मीन में लगाये जायँगे तो वे बराबर कमज़ोर होते रहेंगे और कम पैदावार देंगे। दूसरी क़िस्म के पौदे बोने पर इस फ़ुज़ला या सीकरेशन का बुरा असर नहीं पड़ता इसलिए यह बात ज़रूरी है कि एक ही क़िस्म की फ़सल बराबर न ली जाये। इसके अलावा उथली और गहरी जड़ोंवाली फ़सलें भी एक दूसरे के बाद लेते रहना चाहिए।

तरकारियों की कुछ फ़सलों की काश्त के समय और फ़ासला वग़ैरह का एक चार्ट सामने दिया गया है—

नोट नं० १—आख़िरी ख़ाने में पौदों की दो क़तारों के बीच का फ़ासला और एक पौदे से दूसरे पौदे का फ़ासला दिया गया है। जो फ़ासला पहले लिखा गया है उससे मतलब क़तारों का फ़ासला है और जो बाद में लिखा गया है उससे मतलब क़तारों के पौदों के बीच का फ़ासला है।

नोट नं० २—दरजा अव्वल के पौदों से मतलब यह है कि वह एक ख़ास फ़ासले पर दी हुई लम्बाई-चौड़ाई के मुताबिक़ ज़मीन में लगा दिये गये हैं—जैसे फूलगोभी २½ – २ फ़ीट का मतलब यह है कि क़तारों का फ़ासला २½ फ़ीट है और पौदे से पौदे का फ़ासला २ फ़ीट है। दरजा २ के बीजों के लिए पहले फ़ासले से मतलब दो क़तारों के बीच के फ़ासले से है और दूसरे फ़ासले से मतलब यह फ़ासला है जिस पर कि पौदे आख़िरी निकाई के समय रहने दिये जावेंगे और गाजर एक फ़ीट, ९ इंच से मतलब यह है कि क़तारों का फ़ासला एक फ़ीट है और पौदे अगर्चे मिले हुए निकले हैं लेकिन आख़ीर में अधिक पौदे निकाल दिये जावेंगे और एक पौदे से दूसरे पौदे का फ़ासला ९ इंच रक्खा जायगा।

अँगरेज़ी नाम	हिन्दुस्तानी नाम	लैटिन नाम	ख़ानदान	बोने का वक़्त	दर्जा	फ़ासला
ब्राडबीन	बाकला सेम	विसिया फेना	लेग्यूमिनोमी	अक्टूबर-नवम्बर	२	१', २½'
बीन फ्रेंच किडनी	विलायती सेम	फिसिओलस वलगरिस	"	सितम्बर-नवम्बर	२	१½', १'
बीन रनर	"	फिसिओ-लस मल्टी फ्लोरस	"	सितम्बर-दिसम्बर	२	४', १'
पमाकिन	कद्दू	कुकर बिटा मुस्चाटा	कुकर बिटेसी	फ़रवरी-जून	२	१०', १०
स्नैपमेलन	फूट	कुकुमिस मेलो	"	फ़रवरी-मार्च या जून-जुलाई	२	५', ५'
वाटरनमेलन	तरबूज़	सिटरूलस वलगरिस	"	जनवरी-मार्च	२	५', ५'
ऐनीसीड	सौंफ	पिम पिनेला एनीसम	एम्बली फरी	अक्टूबर-नवम्बर	२	१', ६"
फेनुग्रकि	मेथी	ट्री गोनेला फोइनम ग्रेइसन	लेग्यूमिनोसी	अक्टूबर-नवम्बर	२	१', ६"
कैबेज	बन्द गोभी	ब्रेसीका ओलो रेशिया	करोसी फ्री	सितम्बर-नवम्बर	१	१½', १½'
कैरट	गाजर	डाकस क्रोटा	ऐम्बली फरी	अगस्त-नवम्बर	२	१¼', ९"
पी	मटर	पैसम सटाइनस	लेग्यूमिनोसी	अक्टूबर, नवम्बर	२	४', ९"
पोटैटो	आलू	सुलेनमटयूबरोरुम	सोलोनेसी	सित०-नव०	२	२', १'
रेडिरा	मूली	रिफान सटाइनस	करोसी फरी	अगस्त-जनवरी	२	६", ४"
स्वीट पोटैटो	शकरकन्द	आइपोमिया बटाटाज	कनवाल वलेसी	मार्च और जून	२	१½', १½
टोमैटो	टमाटर	लायको परसीकम एसकोलिण्टम	सोलोनेसी	जून-अक्टूबर	१	३', १½'
टरनिप	शलजम	ब्रेसिका रीपा	क्रोसो फरी	जुलाई-नवम्बर	२	१¼', ९"
काली फ्लावर	फूलगोभी	ब्रेसिका ओलो-रेशिया	क्रोसो फरी	जून-अगस्त	१	२½', २'

अंगूर के लिए उपयुक्त खाद

लेखक, कुँवर तेजसिंह चौहान, सुपरिन्टेन्डेन्ट, सरकारी बाग़ात, इलाहाबाद

अंगूर इनसान के लिए ज़रूरी ख़ुराक है। इसमें रक्त शुद्ध करने की विलक्षण शक्ति है और बल, पौरुष, तेज बढ़ाने के लिए यह रामबाण महौषधि है। भारतवर्ष में इस फल का सदा से आदर होता आया है। यहाँ पर पहले समय में योद्धाओं, मुनियों और सब भारतवासियों की यह सर्वश्रेष्ठ प्रिय भोजन की सामग्री थी। दुनिया के और सभी देशों के लोग भी इसे अपने मुख्य भोजनों में स्थान देते हैं। इसी कारण से अंगूर का आदर व मान सब जगह होता है। भोजन के अतिरिक्त इसके व्यवसाय में भी बहुत लाभ है क्योंकि इस फल की सब जगह बहुत माँग है। भारतवासियों को तो इस दृष्टि से इसे और भी अपनाना चाहिए। पहले समय में इसकी खेती बड़े अच्छे ढंग पर बहुत होती थी जिसके कारण सब लोग इसे खा सकते थे। अब भी अगर हम लोग ठीक ढंग से इसे पैदा करने का प्रयत्न करें तो इसमें संदेह नहीं कि हमारे स्वास्थ्य में बहुत परिवर्त्तन हो जावे और अपने पूर्वजों जैसी शक्ति हममें फिर आ जावे और व्यापारिक लाभ भी हो।

अच्छे फलों का लगना, अधिक फल पैदा होना तथा उनका स्वादिष्ठ होना, उनका बड़ा होना अच्छी तथा उपयुक्त मात्रा में खाद देने पर बहुत कुछ निर्भर है। अभी तक बहुत-से लोगों को ठीक क़िस्म की खाद देने की जानकारी बहुत कम है। खाद एक बहुत महत्त्वपूर्ण विषय है। इसलिए इस पर जितना ही प्रकाश डाला जावे और लोगों में जानकारी पैदा की जावे उतना ही अच्छा हो। और देशों के कृषक भाइयों ने बहुत परिश्रम करके इस विषय में बहुत जानकारी प्राप्त कर ली है जिसके कारण वे बहुत फल थोड़ी-सी ही जगह में पैदा कर लेते हैं और बहुत धन कमाते हैं।

पौदों और पेड़ों को नाइट्रोजन, पोटाश और हड्डी फ़ास्फ़ेट की आवश्यकता होती है। पेड़ पत्तियों तथा जड़ों-द्वारा बढ़ते हैं और फैलते हैं। इसलिए ज़मीन में नाइट्रोजन होना चाहिए जिससे पेड़ अपनी ख़ुराक इस रूप में ले सकें। इसी तरह से पोटाश का होना भी ज़रूरी है जिससे फलों को सहायता मिले। यह फलों को पकने में भी मदद देती है। फ़ासफ़ोरिक एसिड भी इसी गुण को बढ़ाती है, इसलिए इसका होना भी आवश्यक है।

अंगूर के पेड़ों को भी इन्हीं खादों की ज़रूरत है। कृषि में यह एक सुनहरा वसूल है कि जो वस्तुएँ पेड़ अपनी ग़िज़ा के लिए ज़मीन से लेते हैं वह ज़मीन को चतुर किसान को फिर से देते रहना चाहिए। ऐसा न करने से केवल ख़र्च ही ख़र्च होता रहेगा और ज़मीन कुछ समय बाद निकम्मी हो जावेगी। ऊपर कही हुई वस्तुओं के अतिरिक्त चूना, गन्धक और मिनरल साल्ट्स भी ज़मीन में स्वाभाविक तौर पर होते हैं और वे भी पेड़ों को भोजन पहुँचाते हैं। चूना का मुख्य गुण यह है कि वह पेड़ों के तनों को मज़बूत करता है और पेड़ों की लकड़ी को भी ठीक दशा में रखता है। यह देखने में आया है कि अंगूर के पेड़ जब ऐसी ज़मीन में लगाये गये जिसमें चूना ठीक मात्रा में मौजूद था, तो पेड़ों की हालत अच्छी रही, वे मज़बूत रहे और उनमें फल अच्छे आये और फलों की रंगत भी ठीक हुई। जो पेड़ ऐसी ज़मीन में लगाये गये जिसमें चूना नहीं था या था तो बहुत कम था, उसमें पेड़ लगाये गये, कमज़ोर रहे, उन पर फल देर में लगे और उन पेड़ों में शाखें और पत्तियाँ अधिक मात्रा में बनीं। इन पेड़ों की शाखें कोमल व नरम रहीं, मज़बूत न बनीं और फल की जगह यही अधिक बनीं।

अंगूर को नियमित रूप से खाद देने पर उनसे लाभ होगा। गोबर की सड़ी हुई खाद भी अंगूर के लिए लाभकारी है। लेकिन बहुत-से लोगों को यह खाद ठीक तरह से तैयार करनी नहीं आती। उसको गर्मी और बारिश से बचाना चाहिए। म्युनिसिपैलिटी की खाद भी इसके लिए अच्छी होती है।

अंगूर में फल नई शाख़ों-टहनियों पर आते हैं। अंगूर प्रायः दिसम्बर, जनवरी में छाँटे जाते हैं। छाँटने के बाद जो पुरानी शाखें बच जाती हैं उनमें जो आँखें होती हैं उन्हीं से नई शाखें पैदा होती हैं। इन्हीं नई शाखों में फूल-फल आते हैं। छाँटने के क़रीब तीन-चार हफ़्ते बाद फूल लगने शुरू होते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि ज़मीन में इस समय अच्छी खाद का होना आवश्यक है जिससे अच्छी बलवान् शाखें बनें। दिसम्बर में खाद दे देनी चाहिए। दूसरी दफ़े खाद मार्च, अप्रैल में देनी चाहिए। दिसम्बर में यह खाद देनी चाहिए——

एक हिस्सा सलफ़ेट आफ़ पोटाश,
एक हिस्सा हड्डी या सींग की खाद,
एक हिस्सा हड्डी का चूरा।

आख़ीर फ़रवरी, मार्च और अप्रैल में नीचे लिखी हुई खाद देनी ठीक होगी——

दो हिस्सा सलफ़ेट आफ़ पोटाश,
एक हिस्सा सलफ़ेट आफ़ अमोनिया,
एक हिस्सा सूखा हुआ ख़ून,
एक हिस्सा सुपर फ़ास्फ़ेट।

इन खादों को पेड़ के तने से बचाकर देना चाहिए। खाद हाथ से पेड़ के चारों ओर छितरा देनी चाहिए, इसके बाद ख़ुरपी से थाले की मिट्टी में मिला देनी चाहिए। बाद में पानी दे देना चाहिए। गोबर की सड़ी हुई खाद पेड़ों की छँटाई के बाद ही दे देनी चाहिए। सलफ़ेट आफ़ पोटाश एक औंस फ़ी वर्गगज़ के हिसाब से देना चाहिए। यह उस समय दिया जाय जब फल की रंगत में फीकापन मालूम हो।

नीम की खली देने से दीमक रोकने में सहायता मिलती है। इसलिए इसको व्यवहार में लाना चाहिए। बाग़ में सफ़ाई रखने से खाद का पूरा असर पेड़ों पर ही होता है नहीं तो खाद जंगली घास को लाभ-दायक होती है।

हरदोई में ग्राम-सुधार

लेखक, श्री भूपनारायण सक्सेना, इन्स्पेक्टर

जब हम किसी गृह-निर्माण का कार्य करते हैं तो सबसे पहले बुनियादी कामों की ही ओर विशेष ध्यान देते हैं। हमारा यही विचार होता है कि यदि बुनियाद पुष्ट होगी तो घर सुरक्षित रहेगा। ठीक इसी तरह मेरा ध्यान ग्राम-सुधार की नींव की ओर गया। ज़माना हलचल का था। मेम्बर साहबान त्यागपत्र दे चुके थे। चौधरी सितवत अली साहब बी-कॉम के स्थान पर रायबहादुर ठाकुर विभूतिसिंह, एम० एल० ए० चेयरमैन नियुक्त हुए और मंत्री के पद पर जनाब डिप्टी कमिश्नर साहब ने ग्राम-सुधार-कार्य की उपयोगिता को महसूस करते हुए अपने ज़िले के सुयोग्य डिप्टी कलक्टर श्रीमान् जी० एम० जोलानी को नियुक्त किया जिन्होंने ज़िले के अतिरिक्त कामों में व्यस्त रहते हुए भी ग्राम-सुधार-कार्य में जो योग दिया है एक आदर्श है। ज़िले का एक हाकिम कितना सहृदय हो सकता है—गाँववालों के दुख को सहनशीलता से सुनकर सुख में बदल देना उसका एक अनूठा कार्य है। आप गाँववालों को गवाँर, बेवक़ूफ़, आलसी नहीं समझते और यही बात ग्रामसेवकों को पद-पद पर बतलाते हैं कि गाँववालों की बिखरी हुई शक्ति को इकट्ठा करना ही गाँव का असली उत्थान है।

ज़िले के इधर-उधर बिखरे हुए २४ सेण्टरों का पुनः निर्माण कर निगरानी ठीक रखने के लिए कुल १६ सेण्टर रक्खे गये हैं। प्रत्येक ग्रामसेवक के पास १५ रजिस्टर्ड जीवन-सुधार-सभायें हैं। हर केन्द्र में ग्राम-सुधार के ४-४ दवाखाने हैं।

हमारे यहाँ १२ रात्रि-प्रौढ़-पाठशाला, २५ भजन-मंडल, ५ पुस्तकालय, ६ बीज-गोदाम और ४ व्यायामशाला हैं।

१२ रात्रि-प्रौढ़-पाठशालाओं में २८९ छात्र शिक्षा पाते हैं। शिक्षा नीरस नहीं दी जाती और न उन्हें हिन्दी-कक्षाओं में पढ़ाने-वाली पुस्तकें ही पढ़ाई जाती हैं। छात्र भी पाठशाला को दुकान समझकर नहीं आते परन्तु वहाँ आकर अपना गौरव समझते हैं।

हमें खेद के साथ लिखना पड़ता है कि बाज़-बाज़ जगह पाठशाला शुरू करते समय संचालकगण इस बात को भूल गये हैं कि सस्ते से सस्ता अध्यापक तलाश किया जाय जिसका गाँव में कोई महत्त्व न हो। इसका परिणाम यह होता है कि प्रौढ़ छात्र का मानसिक विकास नहीं होता। चरित्र का संगठन नहीं होता और छात्र को जैसा साहसी, पराक्रमी, उत्साही, चरित्रवान्, शीलवान् होना चाहिए वह नहीं बन पाते। और यही कारण है कि हमारे युवक आजकल भटकते हैं।

हमारे यहाँ विपरीत इसके योग्य अध्यापकों का चुनाव हुआ है और शिक्षा भी प्रौढ़ों को एक नवीन शिक्षा-प्रणाली द्वारा दी जाती है, जिसमें प्रौढ़ छः माह में ही साधारण लिखना-पढ़ना जान जाते हैं। हर पाठशाला के प्रत्येक छात्र को किताबें, कापी, पेंसिलें, तख़्ती, तेल आदि मुफ़्त दिये जाते हैं।

उनकी शिक्षा को जीवित रखने के लिए गाँव-गाँव में वाचनालय और पुस्तकालय हैं, जिनके लिए मुफ़्त पुस्तकें और अख़बार दिये जाते हैं। पुस्तकें जीवन-सुधार-सभा का कोई भी मेम्बर ले जा सकता है।

व्यायामशालाओं में ४०-४० लेज़म, गदकाफरी, मुगदर, रस्सा, लोहे का गोला, नाल, सीना चौड़ा करने के स्पिरिंग आदि हैं। बैठे-बैठे खेलने के लिए कैरमबोर्ड भी हैं। ३७ अखाड़े और कार्य कर रहे हैं।

पाठशालाओं के भवन बनाने में इसी बात का विचार रक्खा गया है कि वे हवादार हों और देखने में रमणीक हों। अहातों में एक-एक बग़ीचा रक्खा गया है, जिसमें आधुनिक कृषि-ज्ञान की शिक्षा दी जाती है। गृह-धंधों को पुनर्जीवित रखने के लिए उन प्रौढ़ों को उनके इच्छानुसार योग्य कारीगरों-द्वारा कताई, बुनाई, टोकरी बनाना, रस्सी सूत आदि से चीज़ें तैयार करना, बढ़ईगीरी और मिट्टी के खिलौने बनाना सिखाया जाता है।

हमारे अफ़सरान का इन प्रौढ़ों का निरीक्षण करते समय अक्षर-ज्ञान देखने के अलावा इस बात पर अधिक ज़ोर है कि इन्हें आदर्श रूप से सिखाया जाय कि मनुष्य के जीवन का उद्देश्य दूसरों की सेवा और सहायता करना है।

इसी उद्देश्य को चालू रखने के लिए हमारे यहाँ के स्काउट ट्रूप हिन्दुस्तान स्काउट असोसियेशन इलाहाबाद से रजिस्टर्ड हैं। इस समय हमारे यहाँ ६७२ रोवर स्काउट हैं।

कृषि—हमारे यहाँ ग्राम-सुधार के ६ बीज-गोदाम हैं। प्रत्येक बीज-गोदाम में एक-एक सुपरवाइज़र और तीन-तीन कामदार हैं। इन गोदामों से किसानों को बड़ा उपकार हुआ है। इस साल १,०१२ मन रबी का बीज ४३५ मन ख़रीफ़ का बीज और ३,७९० मन फ़सल ज़ायद का बीज बाँटा गया था।

जीवन-सुधार-सभाओं को सवाई पर बीज बाँटा गया था। गन्ने की बढ़ती हुई पैदावार बेचने के लिए गाँव-गाँव गन्ने बेचनेवाली सभायें हैं जिनसे काश्तकारों को तुरन्त सही-सही दाम दे दिये जाते हैं।

औज़ार—२१५ लोहिया हल, ७६ अकोलो हो, ९ कोल्हू, १३ कड़ाही और १०३ चारा काटने की मशीनें गाँववालों को बेची गईं।

खाद—ग्राम-सुधार गाँवों में १,०४४ खाद के गड्ढे हैं जो इस्तेमाल किये जाते हैं। ७४५ बीघे में विलायती खाद और ३१३ बीघे में हरी खाद का इस्तेमाल कराया गया। अलावा इनके २५७ पेशाब की खाद के गड्ढे और बनाये गये। बीज-गोदामों में से चारे की फ़सलों के बीज (लूसर्न और बरसीम) प्रचारार्थ काश्तकारों को मुफ़्त बाँटे गये। ६५२ नमूने के चक तैयार कराये गये।

बाग़ात—फलों के व्यापार का और अधिक प्रचार करने के लिए ७४२ आम की क़लमें आधे दामों पर गाँववालों को दी गईं। नीबू, नारंगी, अमरूद के १,३७६ पेड़ बाँटे गये। ४३९ किसानों को उन्नतिशील तरकारी के बीज बाँटे गये।

जंगलात—ग्राम-सुधार गाँवों में गोबर को जलाने से बचाने के लिए जंगल लगाये गये हैं। ५ साल में लकड़ी तैयार हो जावेगी। देखना है कि किसानों का इससे कहाँ तक हित होता है।

ऊसर—५ एकड़ के चक पर तजुर्बे किये जा रहे हैं और आशा है कि जल्द ऊसर दूर करने का कोई न कोई अच्छा ज़रिया निकल आयेगा।

एलक्ट्रोकलचर—हमारे ज़िले में ५ ग्राम-सेवक इस कार्य में दक्ष हैं जिन्होंने सूखते हुए पौधों को हरा करने और ज़्यादा से ज़्यादा

अच्छी फ़सल पैदा करने में इन मशीनों से काम लिया है।

सिंचाई––हमारे ज़िले में नहर काफ़ी है। सेक्रेटरी साहब ने ग्राम-सेवकों को हिदायत की है कि उनके कुल गाँवों की गूलें ठीक तौर से साफ़ करा दी जायँ। अलावा इसके ४ आबपाशी के कुएँ और ७ बाँध बनवाये गये हैं। ३ कुओं में बोरिंग की गई है ताकि और ज़्यादा भाग में आसानी से सिंचाई की जा सके। इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया है कि नहर के इलाक़ों में काश्तकार तीन-तीन फ़सलें तैयार करें।

पशु-उन्नति––हमारे यहाँ बीमार जानवरों का इलाज करने के लिए ४ अस्पताल हैं। इन केन्द्रों से १,९४३ जानवरों के टीके लगाये गये। ३५१ बैल बधिया किये गये और ७३ साँड़ जानवरों की नस्ल सुधारने के लिए केवल २२) की दर पर बाँटे गये।

रास्ते––हमने इस बात पर विशेष ध्यान दिया कि गाँव में आने-जाने के साधन सरल हो जायँ। २३ ऐसी आने-जानेवाली गलियाँ दुरुस्त कराई गईं। २६२ गाँव के गलियारे ठीक कराये गये। अब गाँव के गलियारे पक्के कराने के लिए विशेष ध्यान है। १,३६८) बिहटा सधई के गलियारे पक्के कराने के लिए मंज़ूर हो चुके हैं। १,८००) का और फ़तेहपुर गपन्द जो कि ज़िले का अव्वल गाँव है ५ मील लम्बी सड़क बनाने के लिए प्रस्ताव आ चुका है। यह वही गाँव है जिसको शिफ़ारिश हेगशील्ड के लिए की गई है।

कताई-बुनाई––सन्डीला तहसील के असही आज़मपुर गाँव में कताई-बुनाई का सेण्टर क़ायम किया गया और एक योग्य शिक्षक भी नियुक्त किया गया, जिसने २४९ प्रौढ़ों को शिक्षा दी। ५० चर्खे आधी क़ीमत पर बाँटे गये। महाशय गंगाप्रसाद को २५) कम्बल बनाने का काम शुरू करने के लिए दिये गये हैं। टाट, पट्टी, निवाड़ और सनई की चीज़ें बनाने का काम हमारे यहाँ बहुत-से ग्राम-सुधार-केन्द्रों में पुनः चालू किया गया है।

ज़िले में एक अँगरेज़ी दवाख़ाना, एक यूनानी और तीन आयुर्वैदिक औषधालय हैं, जिनसे ६०,९३८ मरीज़ों को दवा बाँटी गई है। अलावा इनके ७२ छोटे दवाख़ाने और स्थापित हैं, जिनसे ७२ गाँवों के लोगों को और उनके पड़ोसियों को फ़ायदा पहुँच रहा है। इन सबको दवा मुफ़्त दी जाती है।

एक स्त्री और बच्चों का इलाज कराने के लिए ग्राम-सुधार का अस्पताल है जिसमें २४९ औरतों के बच्चे जनाये गये और १३ दाइयों को मुफ़्त काम सिखाया गया है।

आँख के इलाज के लिए १३ मरीज़ भेजे गये और वे सफल हुए।

हम अपने ज़िले के पब्लिक हेल्थ-विभाग की बिना सराहना किये नहीं रह सकते जिन्होंने कालरा के दिनों में गाँव-गाँव दौड़कर, मुफ़्त दवा बाँटकर और सैकड़ों के टीके लगाकर लोगों की जान बचाई, जिनको हम धन्यवाद देते हैं।

ज़िले में ग्राम-सुधार-केन्द्र, फ़तेहपुर गपन्द में एक होमियोपैथिक ग्राम-सुधार ख़ैराती अस्तपाल भी है जिसके संचालक हैं पंडित राजकुमार चतुर्वेदी जो इस कार्य में ट्रेण्ड हैं और गाँववालों की निःशुल्क सेवा कर रहे हैं। हमारे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

जनरल––२६२ गली, ९ तालाब, २,७२५ मकान साफ़ कराये। ३३९ रोशनदान लगाये गये। २७६ जानवरों के बाड़े बनवाये गये, जिनमें ३१४ रोशनदान खोले गये। ८०५ कुओं की सफ़ाई कराई गई और ९५१ कुओं में लाल दवा डाली गई।

१९ कुओं का नव-निर्माण हुआ और ३१ कुओं की मरम्मत की गई। ७ कुएँ हरिजनों के लिए बनवाये गये। अब तक ९ पंचायतघर बन चुके हैं।

७ प्रदर्शनियाँ की गईं, जिनमें गाँववालों को विविध प्रकार के इनाम बाँटे गये। मुर्ग़ागाड़ी लखनऊ से आई जिसने ज़िले में ६ दिन प्रदर्शन किया और उन्नतिशील मुर्ग़ियाँ बाँटीं। ५ रेडियो लगे हुए हैं जिनसे गाँववालों का थकावट के समय अच्छा मनोरंजन व ज्ञानवर्धन होता है।

अन्त में हम यहाँ उन तमाम अफ़सरान का ज़िक्र किये बिना नहीं रह सकते, जिन्होंने ग्राम-सुधार-कार्य में प्रोत्साहन समय-समय पर दिया है। श्रीमान् कैप्टन काशीनाथ जी प्रधान ग्राम-सुधार-अफ़सर विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने स्काउट-भवन–जिसकी लम्बाई ४० फ़ीट और चौड़ाई ७० फ़ीट है–का उद्घाटन किया। इमारत की कुल लागत को गाँववालों ने ख़ुद बर्दाश्त किया। सरकारी मदद बिलकुल नहीं ली। गाँववालों की दिलचस्पी का यह एक ऐसा आदर्श है जिसका नमूना अभी ५२ ज़िले के प्रान्तों में कहीं नहीं है। गाँववालों ने स्वयं ईंटा ५ मील की दूरी से बरसात के मौसम में ढोये। लकड़ी कुल मुफ़्त दी और कुल मज़दूरी के कार्य बढ़इयों ने, लोहारों ने और कुम्हार और चमारों ने मुफ़्त किये हैं। ८०-८० मज़दूर बिला एवज़ नित्य लगातार कई दिन तक आधी और चौथाई में और कुछ तो बिलकुल मुफ़्त में कार्य करते रहे। इसका श्रेय है शाहबाद के तहसीलदार साहब श्रीमान् बाबू ज्वालाप्रसाद जी गुप्त थानेदार, कु० हरनामसिंह हाकिम परगना शाहबाद जनाब (अब कोतवाल) जी० एम० जोलानी साहब, ग्राम-सुधार-सभा के सरपंच ठाकुर दीपसिंह ज़मींदार, मंत्री हकीम प्यारेलाल शर्मा तथा स्काउटर ठाकुर महाराजसिंह व ग्राम-सुधार आर्गनाइज़र इत्यादि। धन्य है वह गाँव फ़तेहपुर गपन्द और वहाँ के रहनेवाले जिन्होंने असली ग्राम-सुधार को अमली तौर से कर दिखाया है।

चेयरमैन साहब ठाकुर विभूतिसिंह रायबहादुर कार्यकारिणी के मेम्बरान, डिप्टी कमिश्नर खानबहादुर मसूदुलहसन साहब सेक्रेटरी जी० एम० जोलानी साहब का मैं चिर कृतज्ञ हूँ जिनकी प्रेरणा से व ग्राम-सेवकों के पूर्ण सहयोग बिना व उन्नतिशील विभागों की सहायता बिना इतना कार्य करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होता। मैं उन तमाम एस० डी० ओ० साहबान व तसीलदारान को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे ग्राम-सुधार कार्य में सहायता दी है।

कोआपरेटिव मार्केटिंग की सफलता के रहस्य

लेखक, श्रीयुत हरीराम गुप्ता, ग़ाज़ीपुर

कोआपरेटिव मार्केटिंग का प्रारम्भ सबसे पहले पश्चिमी देशों में हुआ। केवल एक देश अमरीका ही में सैकड़ों कोआपरेटिव सोसाइटियाँ किसानों की उपज को बेचने के लिए स्थापित हो गई हैं, जिनमें बड़ी-बड़ी सोसाइटियाँ ग़ल्ला, रुई और फल बेचने के लिए हैं। इसी प्रकार कैनाडा, हालैंड, जर्मनी और अन्य पश्चिमी देशों में क्रय-विक्रय की सहयोग-समितियाँ बड़ी सफलता के साथ काम कर रही हैं और वहाँ की उपज का अधिक से अधिक भाग इन्हीं सहयोग-समितियों के द्वारा बेचा जाता है। उन देशों में इस प्रकार की समितियों को भी वही महत्त्व प्राप्त है जो क़र्ज़ेवाली समितियों को।

दुर्भाग्य से भारत में ऐसा नहीं हुआ। सन् १९०४ तक तो क़ानूनन इस प्रकार की कोई संस्था बन ही नहीं सकती थी। सन् १९१२ में यह क़ानूनी कठिनाई दूर हुई और सरकार की ओर से इस बात की साधारण आज्ञा हो गई कि मार्केटिंग की समितियाँ भी कोआपरेटिव सोसाइटीज़ ऐक्ट के अनुसार रजिस्टर्ड हो सकती हैं। फिर भी वर्षों तक इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। अधिक ओर क़र्ज़ा-समितियों ही की ओर दिया गया। सन् १९१२ से १९३० तक यानी १८ साल के अन्दर कुल भारतवर्ष में सिर्फ़ ३४७ मार्केटिंग सोसाइटियाँ बन सकीं जब कि क़र्ज़े की सोसाइटियाँ इतने ही समय में ८३ हज़ार तक स्थापित हो चुकी थीं। पिछले १० वर्ष के अन्दर इसमें संदेह नहीं कि इस ओर लोगों का विशेष ध्यान गया है और अब वे यह समझने लगे हैं कि किसानों की ग़रीबी का इलाज सस्ते सूद पर क़र्ज़ देना ही नहीं है बल्कि उनकी पैदावार का अच्छा दाम दिलाना और हर सम्भव उपाय से उनका सुधार करना ही है।

हमारे प्रान्त में इतने समय में ओर विशेषकर पिछले ४-५ वर्षों के अन्दर इस आन्दोलन ने काफ़ी ज़ोर पकड़ा है। इस प्रान्त में शायद ही कोई ऐसा ज़िला बाक़ी हो जहाँ पैदावार की बिक्री का काम कोआपरेटिव समितियों के द्वारा न होता हो। कुछ जगह मार्केटिंग सोसाइटियों का यूनियन बनाकर और कुछ स्थानों पर कोआपरेटिव बैंकों के द्वारा इस काम को किया गया है। पिछले दो-तीन वर्षों का अनुभव यह बतलाता है कि इस काम में कोई विशेष लाभ नहीं हुआ और बहुत-से स्थानों पर बड़े-बड़े घाटे भी हुए। अब हमें यह देखना है कि आख़िर इस असफलता का कारण क्या है और इसका क्या इलाज हो सकता है। असफलता का कारण मालूम करने के लिए हमको समितियों के काम पर एक दृष्टि डालनी पड़ेगी और यह देखना होगा कि इस प्रान्त के अन्दर ग़ल्ला ख़रीदने के क्या-क्या उपाय काम में लाये गये हैं। साधारणतया सहयोग के द्वारा ग़ल्ले की ख़रीद निम्नलिखित ढंग पर होती है—

(१) वर्तमान प्रारम्भिक समितियों का एक यूनियन बनाकर उसके द्वारा मेम्बर समितियों, व्यक्तिगत मेम्बरों तथा अन्य ग़ैर मेम्बरों का ग़ल्ला कमीशन पर बिकवाना या भविष्य में महँगे दाम का फ़ायदा उठाने के अभिप्राय से अमानत की तौर पर यूनियन के गोदाम में रखकर ७५ प्रतिशत तक रक़म पेशगी दे देना या फिर उनका ग़ल्ला बाज़ार-भाव पर स्वयं ख़रीद लेना। पहली दो सूरतों में नफ़ा-नुक़सान किसान का रहता है। यूनियन को केवल कमीशन और सूद से आमदनी होती है और अन्तिम रूप यानी एकदम ख़रीदने पर लाभ-हानि यूनियन का होता है। इस अन्तिम तरीक़े के अनुसार यूनियन या तो तुरन्त उस ग़ल्ले को बेच डालता है या कुछ दिनों तक भाव अच्छा आने के विचार से उसे रोके रहता है। साधारणतया ग़ल्ला रोका ही जाता है और यही एक ख़ास ख़राबी है जिसका इलाज करना है।

(२) दूसरा तरीक़ा यह है कि अलग यूनियन न बनाकर और तमाम कोआपरेटिव बैंकों-द्वारा प्राइवेट अढ़तियों की सहायता से विभिन्न मंडियों में क़र्ज़ा-समितियों के मेम्बरों और ग़ैर मेम्बरों से ग़ल्ला ख़रीदना और उपरोक्त ढंग से उसकी बिक्री करना।

इन दोनों तरीक़ों में एक बड़ा भारी दोष यह है कि काम शुरू करने से पहले यह नहीं मालूम रहता कि हम किस मौसम में कितने का कारबार करेंगे और कितना हमारा ख़र्चा होगा। किसान की पैदावार का कोई हिसाब नहीं होता और उससे कोई इक़रारनामा इस बात का नहीं लिखाया जाता कि वह अपनी कुल पैदावार समिति के द्वारा ही बेचेगा और न कोई इक़रारनामा समिति की ओर से होता है कि वह मेम्बर की कुल पैदावार ख़रीद ही लेगी। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक किसी प्रकार की सफलता की आशा रखना बेकार होगा।

दूसरा मुख्य दोष है ग़ल्ले ख़रीदकर इस विचार से रोके रखना कि भविष्य में अच्छा भाव मिलने पर बेचा जायगा। ऐसा करने में एक विशेष कारबारी योग्यता की आवश्यकता है जिसकी हम सहयोगी कार्यकर्त्ताओं से आशा नहीं रखते। इसके अतिरिक्त यह काम उन लोगों का है जिनके पास पैसा है और जो अपने पैसों से जुआ खेलना चाहते हैं। हमारा ध्येय तो किसान की पैदावार को अच्छे दाम पर बिकवाना और उसकी आर्थिक दशा का सुधार करना है। इसलिए ख़रीदने का तरीक़ा ऐसा होना चाहिए कि ग़ल्ले के ख़रीद के साथ ही साथ बिक्री भी होती रहे। ऐसा करने से यह प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि एक साथ बिक्री से ख़र्चा नहीं निकल सकेगा। इसका निवारण इस तरह से हो सकता है कि

आप किसान को सिवा सच्ची तौल के और किसी प्रकार की रिआयत उस समय तक न दीजिए जब तक कि आपका काम जम न जाय और आप किसी क़ाबिल न हो जायँ। आप जानते हैं कि बाज़ार के बनिये तौल में डंडी मारने के अतिरिक्त सैकड़ों प्रकार के चन्दे किसान पर लगाते हैं और ग़ल्ले के रूप में उनको वसूल करते हैं। बेचारा किसान इन चन्दों को विवश होकर ही कटवाता है। वही तमाम कटौतियाँ कमीशन के सहित समिति भी वसूल कर सकती है और उससे ख़र्च चला सकती है। धीरे-धीरे जैसे-जैसे आपका काम जमता जाय और आपकी जानकारी बढ़ती जाय आप इन कटौतियों को कम करते जायँ और अन्त में सिर्फ़ इतना रह जाय कि समिति अपने मेम्बर का माल बेचने में सहायता कर दे और किसान से उसको कुछ कमीशन मिल जाय।

तीसरा दोष वर्तमान कोआपरेटिव मार्केटिंग में यह है कि माल की निकासी का कोई उचित प्रबन्ध नहीं है। हमारी समितियों को मंडियों ही में अढ़तियों के हाथ अपना माल बेच देना पड़ता है। स्थानीय मंडियों में अच्छा भाव नहीं मिल सकता। इसलिए जब तक इस बात की कोशिश नहीं की जायगी कि बाहर बड़े थोक बाज़ारों में अपना ग़ल्ला बेचा जाय उस समय तक कोई ख़ास लाभ नहीं हो सकेगा। पश्चिमी ज़िलों के लिए हापड़ सबसे बड़ी थोक की मंडी है और पूर्वी ज़िलों की कानपुर और कलकत्ता। इन स्थानों पर किसी विश्वसनीय अढ़तिये से तय कर लिया जाय और उसी के द्वारा समितियों का माल बेचा जाय। सबसे अच्छा यह हो कि एक असिस्टेंट रजिस्ट्रार के अधीन कुल समितियों की ओर से थोक-मंडी में एक अढ़तिये के यहाँ काम किया जाय। ऐसा करने से और इकट्ठा काम मिलने से सम्भव है कि अढ़तिया अपना कमीशन और अन्य ख़र्चे जो माल पर पड़ते हैं कम कर दे।

चौथा दोष यह है कि हमारे सहयोगी कार्यकर्त्ताओं को बाहर के बाज़ारों की हालत और वहाँ के भावों का कोई विशेष ज्ञान नहीं रहता। वे स्थानीय मंडियों के भाव ही पर निर्भर रहते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि भावों की सूचना बराबर बिक्री की समितियों को मिलती रहे। ऐसा निम्नलिखित साधनों से सम्भव है—

(१) व्यावसायिक पत्र जैसे व्यापारी या इण्डियन ट्रेड जनरल आदि के बराबर पढ़ते रहने से।

(२) बड़ी-बड़ी मंडियों में चेम्बर्स आफ़ कामर्स होते हैं जो अपनी साप्ताहिक रिपोर्ट प्रकाशित करते हैं, उनके पढ़ने से।

(३) इम्पीरियल काउन्सिल का एग्रीकल्चरल रिसर्च एक साप्ताहिक रिसर्च प्रकाशित करती है जिसमें भावों का उल्लेख होता है।

(४) हर प्रान्त से जो गवर्नमेंट गज़ट निकलता है उसमें भी अनाज के भाव रहते हैं।

(५) थोक मंडी की प्राइवेट एजेंसियाँ फ़र्म में साप्ताहिक या पाक्षिक अपनी रिपोर्ट निकालती हैं जिनमें बाज़ार की हालत का उल्लेख होता है।

(६) दैनिक समाचारपत्रों में भी ग़ल्ले के भाव निकलते हैं।

(७) प्राइवेट अढ़तियों से तार और चिट्ठी के द्वारा यह समाचार मालूम किया जा सकता है।

(८) रेडियो से भी बड़ी-बड़ी मंडियों के भाव प्रतिदिन मालूम हो सकते हैं।

मार्केटिंग में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए अग्रलिखित बातों पर भी ज़ोर दिया जाय तो अच्छा होगा—

(१) मार्केटिंग की सोसाइटी ग़ल्ले की पैदावार के आधार पर बनाई जाय न कि किसी विशेष रक़बे को सामने रखकर जैसे गेहूँ की बिक्री की अन्य समिति को। तेलहन की अलग और इसी प्रकार अन्य चीज़ों की भी अलग। इससे यह लाभ होगा कि एक ही जिन्स का क्रय-विक्रय करने से बड़े से बड़ा काम हो सकेगा और बाज़ार अपने हाथ ही में रहेगा। एक छोटे-से क्षेत्र में विभिन्न जिन्सों का काम करने से बाज़ार का नियंत्रण अपने हाथ से जाता रहता है।

(२) कोआपरेटिव मार्केटिंग में ग़ैर-मेम्बरों से ख़रीद भी एक ज़रूरी चीज़ है क्योंकि ऐसा करने से समिति का कार्य बढ़ता है। लाभ अधिक होता है और ख़र्च घटता है। बोनस केवल मेम्बरों को ही देना उचित होगा।

(३) तीसरी सूरत सफलता की यह है कि ख़रीद के बाद ग़ल्ले का ग्रेडिंग भी होना चाहिए। इससे थोक के बाज़ार में मिले हुए ग़ल्ले की अपेक्षा अधिक दाम मिलता है।

(४) समिति के स्टाफ़ में एक आदमी ऐसा ज़रूर हो जो अन्दर और बाहर के बाज़ारों का अध्ययन अवश्य करता रहे।

(५) मार्केटिंग के साथ ही साथ समिति अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की चीज़ों को भी इकट्ठा तौर पर पूरी करते रहने का भी प्रबन्ध करे। इससे भी कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा।

(६) समिति की हर दूकान पर एक बीज-गोदाम हो जहाँ से मेम्बरों को सवाई पर बीज दिया जाय। इस काम से भी समिति का मुनाफ़ा बढ़ने लगता है और ख़र्च का औसत कम होने लगता है।

युद्ध का सामान सप्लाई करने में प्रतापगढ़ कोआपरेटिव बैंक के प्रयत्न

लेखक, श्रीयुत आर० के० लाल, एम० ए०, इन्स्पेक्टर कोआपरेटिव सोसाइटी, प्रतापगढ़

प्रतापगढ़ के ज़िले में सन की काश्त एक बहुत बड़े रक़बे में की जाती है। इस ज़िले में कुछ ऐसे हिस्से हैं जो सन की काश्त के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं और वहाँ हर काश्तकार के पास एक या दो एकड़ ऐसी ज़मीन ज़रूर होती है जिसमें सन की काश्त की जाती है। चिलबिला से अन्तू तक रक़बे की ज़मीन जो क़रीब ४ मील चौड़ी है सन की काश्त के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

इस ज़िले में तीन तहसीलें हैं और क़रीब क़रीब हर तहसील में सन की कुछ न कुछ काश्त ज़रूर की जाती है। पिछले दो वर्षों में हर साल १,७०० एकड़ से ज़्यादा ज़मीन पर सनई की काश्त की गई थी, जिसका ५५ फ़ी सदी हिस्सा सिर्फ़ तहसील सदर में था। सनई की काश्त करना, सुतली बनाना और टाट पट्टी बुनना कुर्मी जाति के आदमियों के ख़ास पेशे हैं जो बहुत ही मेहनत और होशियार काश्तकार समझे जाते हैं। कुछ दिनों से और जाति के लोगों ने भी इस धंधे को करना शुरू कर दिया है लेकिन अधिकतर यह धंधा अब भी कुर्मियों के हाथ में है।

पंजाब और संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा-विभाग और स्थानीय बोर्डों के लिए टाट-पट्टी विभिन्न मंडियों से विशेषकर अन्तू चिलबिला और जगेशरगंज से सप्लाई की गई है। युद्ध के कारण पिछले कुछ वर्षों से टाट-पट्टी की माँग बहुत अधिक बढ़ गई है। यही हालत सन् १९१४-१९१८ के गत युद्ध के समय में भी थी। फ़ौजी ज़रूरतों के लिए ज़्यादातर पर ८ इंच चौड़ी टाट-पट्टी की माँग बहुत होती है, जो ख़ेमों के हिस्से जैसे बड़े सलीते, बैगपिन और बैग-बाल के बनाने में काम आती है।

अन्तू सेंटर में जाल की जाँच हो रही है।

इंडियन स्टोर्स डिपार्टमेन्ट को टाट-पट्टी के बने हुए हिस्सों की बहुत बड़ी संख्या में ज़रूरत थी और इसकी माँग एक बारगी बढ़ जाने के कारण टाट-पट्टी के दाम भी बहुत अधिक बढ़ गये। ये दाम यहाँ तक बढ़े कि जुलाई सन् १९४० ई० में एक मामूली टाट-पट्टी का दाम १ रुपया या उससे भी ज़्यादा हो गया। अधिकतर सामान सप्लाई करनेवाले अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रतापगढ़ ज़िले में आते थे और इसलिए बाज़ार की हालत बहुत ही असाधारण हो गई। टाट-पट्टियों की माँग बढ़ने के साथ ही साथ उनके दाम बढ़ जाने का प्रत्यक्ष प्रभाव यह पड़ा कि धीरे-धीरे टाट-पट्टियाँ पहले की अपेक्षा ख़राब बनाई जाने लगीं। नाप और बिनावट को देखते हुए बाज़ार में बहुत घटिया क़िस्म का सामान आने लगा। यह दशा बहुत दिनों तक नहीं रह सकती थी और उसकी प्रतिक्रिया हुई। सामान घटिया होने के कारण उसके दाम भी गिर गये।

अन्तू गाँव के एक परिवार के लोग सुतली बना रहे हैं।

इंडियन स्टोर्स डिपार्टमेन्ट ने टाट-पट्टी के घटिया होने की शिकायत की और सामान सप्लाई करनेवालों ने इसका यह कारण बताया कि अच्छी क़िस्म की टाट-पट्टी तैयार नहीं होती। इस पर सरकार ने यह प्रस्ताव किया कि टाट-पट्टियों का ख़रीदना बन्द कर दिया जाय। यहाँ तक कि राय यह हुई कि टाट-पट्टी को नमूने के अनुसार बनवाना ही हमेशा के लिए बन्द कर दिया जाय। इस प्रस्ताव का एक कारण और था। मद्रास-प्रान्त में नारियल की जटा से ख़ेमों के हिस्से बनाने के प्रयोग बहुत ही सफल सिद्ध हुए थे। यह सामान बहुत ही मज़बूत और सस्ता था, यद्यपि वज़न में भारी था। युद्ध-काल में किफ़ायत का बहुत विचार किया जाता है, इसलिए सरकार ने संयुक्त-प्रान्त के कन्ट्रोलर आफ़ सप्लाइज़ से नमूने के अनुसार टाट-पट्टी न बनवाने के प्रस्ताव पर और टाट-पट्टी के बजाय नारियल की जटा की चटाई इस्तेमाल किये जाने के सम्बन्ध में राय ली।

बाईं ओर मिस्टर एस० एस० हसन, आई० सी० एस०, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़, रायबहादुर पं० श्यामबिहारी मिश्र, मैनेजिंग डाइरेक्टर, प्रतापगढ़ बैंक और ख़ाँ साहिब मुर्तज़ा अली, असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार फ़ैज़ाबाद बैठे हैं। उनके सामने जालों को तौला जा रहा है।

कन्ट्रोलर आफ़ सप्लाइज़ ने देखा कि यदि इस प्रस्ताव पर अमल किया गया तो इस प्रान्त को बड़ा नुक़सान होगा। विशेषकर उन ज़िलों को जहाँ सनई की अत्यधिक काश्त होती है, और इस प्रान्त में सन के धंधे को उन्नति देने का अवसर जाता रहेगा।

कन्ट्रोलर आफ़ सप्लाइज़ ने टाट-पट्टी के धंधे का बड़ा समर्थन किया और नमूने के अनुसार टाट-पट्टी बनवाने को जारी रखने के लिए बहुत कोशिश की। साथ ही साथ उन्होंने इंडियन स्टोर्स डिपार्टमेन्ट को आश्वासन दिलाया कि अच्छे क़िस्म का सामान सप्लाई करने का प्रबन्ध किया जायगा। इस अवसर पर उन्होंने संयुक्त-प्रान्त के कोआपरेटिव विभाग से नमूने के अनुसार टाट-पट्टी के सप्लाई करने में मदद माँगी। इस सम्बन्ध में तुरन्त ही प्रतापगढ़ और अन्य ज़िलों में जाँच शुरू कर दी गई। जाँच करने से पता लगा कि
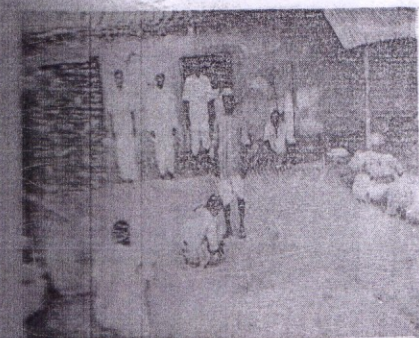
सेंटर में सुतली खरीदी जा रही है और उसकी मजबूती की भी जाँच हो रही है।

अच्छा सामान न मिल सकने का केवल एक बहाना था। अच्छे दाम देने से अच्छे क़िस्म की टाट-पट्टी मिल सकती थी।

अन्तू, चिलबिला और जगेशरगंज की मंडियों की हालत दरयाफ़्त की गई और पता लगा कि काम शुरू करने के लिए अन्तू सबसे अधिक उपयुक्त जगह है। चूंकि उस समय तक इस रक़बे में कोआपरेटिव संस्थायें न थीं, इसलिए प्रतापगढ़ के ज़िला कोआपरेटिव बैंक ने इस धंधे में रुपया लगाना स्वीकार कर लिया और २४ नवम्बर सन् १९४० ई० से बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर रायबहादुर पं० श्यामबिहारी मिश्र की निगरानी में इस केन्द्र ने काम आरम्भ कर दिया। बैंक के नाम पर इस विभाग ने ३,००० पूरे सेट (यानी बड़े सलीते, बैगपिन, बैग बाल--तीन तीन हज़ार, जिनकी क़ीमत ४०,५०० रु० थी) के लिए आर्डर प्राप्त किये।

चूंकि काम बिलकुल नया था जिसके सम्बन्ध में कोई अनुभव न था इसलिए बहुत कठिनाइयाँ हुईं। कई गाँवों का दौरा करना पड़ा और अच्छे क़िस्म की टाट-पट्टी तैयार करने के लिए बड़ा प्रचार करना पड़ा। अच्छी टाट-पट्टी की पहचान यह है कि वह बहुत घनी बुनी हो और उसकी नाप हर जगह एक समान हो। मंडी में हमारे पहुँच जाने से पुराने व्यापारियों को यह ख्याल हुआ कि गाँव में हमारे दौरों और टाट-पट्टी बनानेवालों के बीच प्रचार करने से शायद उनपर हमारा प्रभाव ज़्यादा पड़े और इस प्रकार मंडी पर हमारा क़ब्ज़ा हो जाय। इसलिए उन्होंने हमारे सम्बन्ध में यह ग़लत ख़बरें फैलानी शुरू कीं कि हम सरकारी आदमी हैं और टैक्स लगाने के उद्देश्य से हमें टाट-पट्टी बनानेवालों की एक सूची बनाने के लिए नियुक्त किया गया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि लोगों को अपने आदेश के अनुसार काम कराने के लिए हमें भी प्रचार करना पड़ा। आखिरकार हमारे प्रयत्न सफल हुए। टाट-पट्टियाँ बहुत बड़ी संख्या में आने लगीं और बाज़ार के दिन हमारे गोदामों पर टाट-पट्टी बेचनेवालों की भीड़ होने लगी। हमारे गोदामों के हाथ माल बेचने में उन्हें सुविधायें थीं :--

१. हम उनको उचित दाम देते थे।

२. उनको नक़द दाम मिलते थे।

३. हिसाब बाक़ायदा रक्खा जाता था और किसी ग़लती या भूल होने की सूरत में जाँच करके उसे ठीक कर दिया जाता था।

टाट-पट्टियों से सम्बन्धित कठिनाइयों के दूर हो जाने के बाद खेमों के हिस्से बनानेवालों की संख्या बढ़कर बहुत जल्द ४०० से अधिक हो गई।

३,००० सेट का पहला आर्डर ३१ जनवरी सन् १९४१ ई० तक पूरा हो जाना चाहिए था, लेकिन इस आर्डर की तामील १० रोज़

मेम्बर अपने बिने हुए जाल लाकर सेंटर में दे रहे हैं।

पहले ही यानी २० जनवरी सन् १९४१ ई० को हो गई थी। चीफ़ इन्सपेक्टर स्टोर्स एन्ड क्लोदिंग कानपुर, के एक प्रतिनिधि ने अन्तू में क़रीब २ हफ़्ते तक मुआइना किया। हमारी टाट-पट्टियों के सम्बन्ध में उनकी राय बहुत अच्छी थी। गोदाम का सब माल उन्होंने ले लिया और कोई भी सामान अस्वीकार नहीं किया। निस्सन्देह कुछ की बिनावट में दोष थे जिनको तुरन्त ही वहीं ठीक कर दिया गया। इन सबका असर इतना अच्छा हुआ कि बैंक को आर्डर पर आर्डर बराबर मिलते गये।

नवम्बर सन् १९४० ई० के आखिरी हफ़्ते से लेकर अगस्त सन् १९४१ ई० तक १,३७,४७९ टाट-पट्टियाँ ख़रीदी गईं। सुतली कातने और टाट-पट्टी बुनने के काम में ६५ गाँवों के मज़दूरों ने भाग लिया। इन कामों में ६०० से अधिक परिवार के लोग लगे थे। हर क़िस्म के काम जैसे सिलाई करने, रस्सा बनाने और लपेटने, पल्लेदारी वग़ैरह के लिए मज़दूरों की ज़रूरत पड़ी। लगभग ४०० परिवार के लोग खेमे के हिस्से बनाने में और ६० परिवारों के लोग दूसरे कामों में लगे हुए थे। इसलिए यह आसानी से कहा जा सकता है कि हमारे इस काम से लगभग एक हज़ार से अधिक परिवारों को लाभ हुआ।

इन परिवारों को टाट-पट्टियों की क़ीमत के लिए ७०,८४६ रुपये, खेमे के हिस्से की सिलाई के लिए ७,३७० रु० और दूसरे कामों के लिए मज़दूरी के रूप में १,६७० रु० दिये गये।

टाट-पट्टी को सप्लाई करनेवाले मुख्यकर कुर्मी थे। दूसरे कामों में हर जाति और वर्ग के मज़दूर थे। पिछले अप्रैल के महीने में २२३ मज़दूर टाट-पट्टियाँ सिलने के लिए ले जाते थे। इनमें से ५८ ब्राह्मण, ३४ जुलाहे, ३२ चमार, २५ अहीर, १० भुजवा, ७ ठाकुर और बाक़ी अन्य जातियों के लोग थे। इससे यह प्रकट होगा कि हमारे मज़दूरों में ऊँची और नीची जातियों के काफ़ी लोग थे और हमने उनको शारीरिक काम की इज्ज़त करना अच्छी तरह सिखा दिया है।

सब आर्डरों को दृष्टिकोण में रखते हुए इस केन्द्र ने १५ अगस्त सन् ४१ तक टाट-पट्टी के बने हुए निम्नलिखित सामान सप्लाई किये :--

नाम	तादाद	क़ीमत रु० में
बड़े सलीता	७,७४४	
बैगपिन	१९,९८०	१,३९,१८७
बैग-बाल	१९,०१४	
८ इंची टाट-पट्टियाँ	६९,९०० गज़	५,२८३

यह कहते हुए मुझे बड़ा हर्ष होता है कि
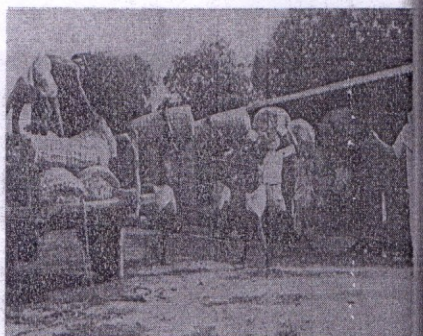
जाल रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी में लादकर मिलिटरी को भेजे जा रहे हैं।

सब आर्डरों की तामील नियत समय के पहले ही कर दी गई थी।

क़रीब आधे जून सन् १९४१ ई० से हमारे विभाग को धोखे में डालनेवाले जालों को सप्लाई करने का काम मिला। इसके पहले जो ठेकेदार सरकार को जाल सप्लाई करते थे वे आमतौर से सुतली बंगाल से मँगाते थे। लेकिन हमसे विशेष रूप से कहा गया कि हम अपने ही यहाँ की बनी हुई सुतली से जाल तयार करायें ताकि सुतली बनानेवालों को लाभ हो। यह काम कठिन था और सुतली के लिए प्रबन्ध करना पड़ा।

क़रीब एक महीने तक सुतली कातने, बटने और सूतने के प्रयोग केन्द्र पर किये गये। इसके बाद हमने गाँवों में आदमी भेजे कि वे सरकारी नमूने के अनुसार सुतली बनाने का प्रचार करें। प्रदर्शन करके उनको सुतली-बनाना सिखायें और उनको यह काम करने के लिए तैयार करें। धीरे-धीरे उन्हें इस काम में सफलता मिली। जब काफ़ी प्रचार किया जा चुका और लोग सुतली बनाना सीख गये तो सुतली की माँग और उसकी सप्लाई बहुत बढ़ गई।

धीरे-धीरे सुतली की सप्लाई से सम्बन्धित बहुत-सी कठिनाइयाँ दूर हो गईं। नीचे दिये हुए आँकड़ों से, प्रकट होगा कि जो काम एक बहुत छोटे पैमाने पर शुरू किया गया था वह अब कितना बढ़ गया है।

हर हफ़्ते ख़रीदी हुई सुतली का रोज़ाना औसत (मनों में)

सिलसिलेवार नं०	महीने का नाम	पहला हफ़्ता	दूसरा हफ़्ता	तीसरा हफ़्ता	चौथा हफ़्ता	रिमार्क
१	जून, सन् १९४१	..	·०२	·०८	·७५	
२	जुलाई, १९४१	३·५	८·५	२३	२६	सुतली कातने और
३	अगस्त, १९४१	३२	३०	३२·५	२४·५	बनाने में क़रीब.
४	सितम्बर, १९४१	२७·२	३४·६	३७	५५·७५	२,५०० परिवारों के
५	अक्टूबर, १९४१	६०	४५	४०	६१·७	लोगों ने काम किया।
६	नवम्बर, १९४१	४८	३६	(अभी आँकड़े नहीं मिले)		

सितम्बर सन् १९४१ ई० के आख़िर में बाहर से बहुत ज़्यादा ख़रीदार आगये जिसके कारण बाज़ार की हालत असाधारण हो गई। भाव क़रीब २० फ़ी सदी बढ़ गये और बाज़ार में काफ़ी ख़राब सुतली आने लगी। यह ख़ुशी की बात है कि अब बाज़ार की दशा सुधर रही है। बाहर के ख़रीदार एक-एक करके जा रहे हैं और बाज़ार की दशा तथा भाव से प्रकट होता है कि बाज़ार की हालत बहुत जल्द पहले जैसी हो जायगी।

इस रक़बे के लोगों के लिए जालों का बुनना एक बिलकुल नया धंधा था। इस प्रान्त में यह काम अधिकतर कहार और केवट करते हैं। लेकिन यहाँ ये लोग नहीं मिल सके। आरम्भ में कुछ लोगों को जो ज़्यादातर जुलाहे थे इस काम के लिए तैयार किया गया और होशियार कारीगरों ने जो ख़ासकर काम सिखाने के लिए बाहर से बुलाये गये थे उन लोगों को जाल बुनना सिखाया। जाल बुननेवालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई और इस काम में बड़ी सफलता मिली। एक नक़शा नीचे दिया जाता है जिसमें अक्टूबर सन् १९४१ ई० तक बुननेवालों (जिसमें ८८ गाँवों के लोग थे) की जाति और उनकी संख्या दी हुई है। इससे यह प्रकट होगा कि हर जाति और धर्म के लोगों ने इस धंधे का किस प्रकार स्वागत किया है:—

१ जुलाहे	१९
२ ब्राह्मण	७
३ ठाकुर	७
४ बनिया	१४
५ कायस्थ	३
६ चमार	३७
७ अहीर	२८
८ मुराऊ	२५
९ अन्य जाति के लोग	१३३
	५३२

लगभग २०० आदमियों ने इस काम के सीखने के लिए दरख़्वास्तें दी हैं और वे धीरे-धीरे लिये जा रहे हैं। अनुमान है कि क़रीब १००० परिवारों के लोग जाल बनाना सीख गये हैं। सुतली की तरह जाल बुनने में भी बड़ी सफलता हुई है जैसा कि निम्न-लिखित नक़्शे से प्रकट होगा:—

जाल बनाने की तादाद हर महीने बढ़ती गई और जुलाई से लेकर १५ नवम्बर सन् १९४१ ई० तक हमने ४०,१०५ जाल सप्लाई किये जिनकी क़ीमत १,५८,८२० रु० थी। एक हज़ार जाल रोज़ाना बनाने के उद्देश्य से अन्तू से पाँच मील की दूरी पर जगेशरगंज में एक और केन्द्र अभी हाल में खोला गया है।

कम वर्षा होने के कारण इस साल सन की फ़सल बहुत ख़राब हुई। जून के महीने में हमें भय था कि सुतली कातनेवालों के पास कहीं सन की कमी न हो जाय। इस आकस्मिक आवश्यकता के लिए हमने एक हज़ार मन से अधिक सन ख़रीद लिया था। वास्तव में कातनेवालों ने हमसे बहुत कम सन लिया और बाक़ी सन हमारे गोदाम में रखा है।

इस रक़बे में बहु-धंधी सोसाइटियों के संगठन करने के भी उपाय किये गये हैं। सुतली बुननेवाले और जाल बनानेवाले बहुत-से लोग उनके मेम्बर हो रहे हैं। ये सोसाइटियाँ क़र्जसम्बन्धी सुविधायें और अच्छे क़िस्म के बीज देंगी और अच्छी रहन-सहन का प्रचार भी करेंगी। अन्तू में बिक्री के एक संघ की भी रजिस्ट्री हुई है जहाँ समय आने पर ग़ल्ला बेचा जायगा और जो साधारणतः प्रारम्भिक सोसाइटियों के अन्य कामों को एकीकरण करेगा।

हर हफ़्ते जालों का रोज़ाना औसत

सिलसिलेवार नं०	महीने का नाम	पहला हफ़्ता	दूसरा हफ़्ता	तीसरा हफ़्ता	चौथा हफ़्ता
१	जुलाई	७	२७	५०	७५
२	अगस्त	८५	१२६	२०५	२६८
३	सितम्बर	१९५	३०४	२६६	३४८
४	अक्टूबर	३०८	३६०	२६७	६२०
५	नवम्बर	५२७	११०१	(अभी आँकड़े नहीं मिले)	

काम की किताबें

युग मानव—लेखक, श्रीयुत कमल कुलश्रेष्ठ, बी० ए०, पृष्ठ-संख्या ८१, मूल्य ।।।)।

यह पुस्तक श्री कुलश्रेष्ठ की फुटकर कविताओं का संग्रह है। आपने भूमिका में लिखा है "प्रगतिशील साहित्य का अर्थ मैं स्थूल तथा यथार्थ जीवन के निकट का साहित्य मानता हूँ। और मेरी कवितायें पूर्ण प्रगतिशील हैं।" कविताओं के पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि को वास्तविक जीवन के कुछ कटु अनुभव करने पड़े हैं। कवितायें सुन्दर और अपने ध्येय में समर्थ हैं। कवि ने 'मानव ही मानव का भक्षक पद पाता है' आदि ऐसे स्थल उपस्थित कर दिये हैं जिन्हें देखते ही हमारे समक्ष आज का नग्न रूप नाचने लगता है। यह पुस्तक पढ़ने योग्य है। भाषा शुद्ध और प्रवाहशील है। छपाई और गेट अप अच्छा है। पुस्तक मिलने का पता है, कुलश्रेष्ठ-भवन, मधपुर, प्रयाग।

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद की दो पुस्तकें

(१) एक धर्मयुद्ध, लेखक श्री महादेव हरिभाई देसाई, अनुवादक श्री काशीनाथ त्रिवेदी, पृष्ठसंख्या १२७, मूल्य १।)।

प्रस्तुत पुस्तक गुजराती में लिखी गई थी। गुजराती के इसके लेखक श्री महादेव देसाई हैं। हिन्दी-भाषाभाषियों के उपयोगार्थ श्री काशीनाथ त्रिवेदी ने इसका हिन्दी में अनुवाद किया है। इस पुस्तक का अनुवाद बहुत ही सुन्दर और सरल है। पुस्तक के पढ़ने से यह नहीं प्रतीत होता कि यह अनुवादिक पुस्तक है। 'एक धर्मयुद्ध' नाम ही इस पुस्तक की ओर आकृष्ट करनेवाला है। इसका अवलोकन करने पर विदित होता है कि लेखक ने मिलमालिकों और मज़दूरों की लड़ाई को एक 'धार्मिक' युद्ध माना है। इस पुस्तक में अहमदाबाद के मज़दूरों की हड़ताल और मिलमालिकों की प्रतिद्वन्द्विता का बड़े ही स्पष्ट रूप में वर्णन है। इसे अहिंसावादी युद्ध का सिद्धान्त केवल अहमदाबाद ही नहीं बल्कि सारे भारतवर्ष के मज़दूरों के लिए एक सिद्धान्त-सा हो गया है। यह युद्ध अपने ढंग का निराला था। कारण यह था कि इसके संचालक महात्मा गांधी स्वयं थे। धर्म, न्याय और सत्य की सदा विजय होती है। अतः यहाँ भी वही परिणाम हुआ। मज़दूरों की फलतः विजय हुई। पुस्तक पढ़ने में बड़ी ही रोचक है।

प्रत्येक व्यक्ति इसे पढ़कर आनन्द उठा सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसे अवसरों पर उपस्थित होनेवाली कठिनाइयों का सामना क्योंकर करना चाहिए वह भी स्पष्ट हो जाता है। हम आशा करते हैं कि मजदूरों से विशेष सहानुभूति रखनेवाले लोग इस पुस्तक को पढ़कर उचित लाभ उठावेंगे।

(२) गांधी जी—लेखक, श्री जुगतराम दवे, श्री काशीनाथ त्रिवेदी, पृष्ठ-संख्या १५६, मूल्य ।=)।

मूल पुस्तक गुजराती में लिखी गई थी। हिन्दी जाननेवालों के लिए इसका अनुवाद श्री काशीनाथ त्रिवेदी ने किया है। इस पुस्तक में सरल भाषा में महात्मा गांधी जो ऐसे महान् व्यक्ति की जीवन झाँकी दिखाई गई है। बीच बीच में कई आकर्षक चित्र दिये गये हैं। इस छोटी-सी पुस्तक में महात्मा जी का जीवनचरित्र और उनके कार्य तथा उनके सिद्धान्तों का सुन्दर वर्णन दिया गया है। इसके पढ़ने से प्रत्येक व्यक्ति को महात्मा जी के बाल्यकाल से लेकर अद्यपर्यंत जीवन-चरित्र का ज्ञान हो जायेगा। पुस्तक का मूल्य भी बहुत कम है। भाषा सरल और रोचक है। अनुवादक ने इतना अच्छा अनुवाद किया है कि पुस्तक पढ़ने के समय इस बात का ज़रा भी खटका नहीं होता है कि यह पुस्तक अनुवादित है। हम आशा करते हैं कि हिन्दी भाषाभाषी इस अनुपम पुस्तक का अवलोकन करके इससे उचित लाभ उठावेंगे।

मारवाड़ी चेम्बर आफ़ कामर्स की वार्षिक रिपोर्ट

मारवाड़ी चेम्बर आफ़ कामर्स के अवैतनिक मंत्री श्री किशोरीलाल ढांढनियाँ ने चेम्बर की सन् १९४० की एक सुन्दर रिपोर्ट प्रकाशित कराई है। यह रिपोर्ट हिन्दी में है। इसमें कामर्स ने भारतीय व्यापार के भिन्न भिन्न पहलुओं पर अपने विचार और आँकड़े दिये हैं। इससे प्रतीत होता है कि चेम्बर भारतीय व्यापार के अन्तर्गत हर एक मसलों पर काफ़ी विचार करता है और उनमें संशोधन करने के साथ साथ नई स्कीमों का भी प्रस्ताव करता है। चेम्बर का यह कार्य अत्यन्त सराहनीय है। इस रिपोर्ट के विशद वर्णन के लिए मंत्री धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रार्थना-पुष्पांजलि—संग्रहकर्त्ता तथा प्रकाशक श्री रामानन्द मिश्र, 'आनन्द'। इस पुस्तक में संग्रहकर्त्ता ने सरल और सुन्दर प्रार्थनाओं को संकलित किया है। इसमें धार्मिक और राजनैतिक दोनों प्रकार की प्रार्थनायें हैं। कोई बत्तीस पृष्ठों की यह सरल पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। मूल्य केवल दो आना है। इसके मिलने का पता है—रामानन्द मिश्र 'आनन्द', अध्यापकसेन्ट्रल जेल, लखनऊ। जो सज्जन इसे मँगाना चाहें, उपर्युक्त पते से मँगा सकते हैं।
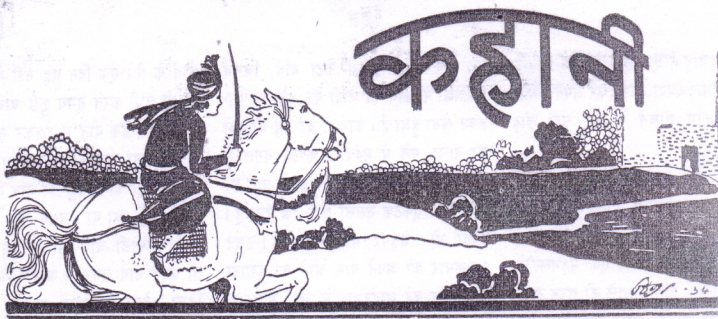
नुवाद किया
स बात का
क यह पुस्तक
हैं कि हिन्दी
ा अवलोकन
गे।

क़ामर्स की

र्स के अवै-
ढांढनियाँ ने
ुन्दर रिपोर्ट
 हिन्दी में
व्यापार के
वेचार ओर
ीता है कि
ति हर एक
ा है और
नई स्कीमों
र का यह
रिपोर्ट के
धन्यवाद

ा तथा प्रका-
न्द'। इस
ुन्दर प्रार्थ-
में धार्मिक
प्रार्थनायें
रल पुस्तक
 दो आना
-रामानन्द
लखनऊ।
क्त पते से

बुन्देलखण्डी कहानी

स्वर्णकेशी

लेखक, श्री शिवसहाय चतुर्वेदी

किसी नगर में एक राजा रहता था। उसके एक ही पुत्र था। जब वह बड़ा हुआ तो जंगल में शिकार खेलने जाने लगा। धीरे-धीरे उसे तीन साथी और मिल गये। आपस में गाढ़ी मित्रता हो गई। कुछ दिनों के बाद राजकुमार को एक शरारत सूझी। बड़े तड़के जब वह मित्रों के साथ टहलने जाता तो निशाना मारकर पनिहारिनों के सिर के घड़े फोड़ देता। ऐसा करने में उसे मज़ा आता था। बेचारी औरतें पानी से भीगी हुई खाली हाथ लौटतीं और घरवालों को राजकुमार की धृष्टता का हाल कह सुनातीं। गाँव के लोग राजा के डर से मन मसोसकर रह जाते। लेकिन जब राजकुमार का उपद्रव दिन-पर-दिन बढ़ने लगा तो जनता ने तंग आकर एक दिन राजदरबार में फ़रियाद की। राजा ने तुरन्त ही राजकुमार को बुलाकर पूछा। राजकुमार ने अपराध स्वीकार कर लिया। राजा ने कहा, "यह तुम्हारा पहला क़सूर है राजकुमार! इसलिए माफ़ किये देता हूँ। आयन्दा ऐसी शिकायत मेरे पास न आनी चाहिए।"

कुछ दिनों तक तो राजकुमार ठीक रहा, लेकिन बाद में फिर उसने पनिहारिनों के घड़ों में पत्थर मारना शुरू कर दिया। गाँव-वालों ने मिट्टी की जगह ताँबे और पीतल के घड़े बनवा दिये; लेकिन राजकुमार इससे बाज़ आनेवाला नहीं था। उसने लोहे की गोलियाँ बनवाईं और ताँबे-पीतल के घड़ों को फोड़ने लगा। आखिर विवश होकर गाँव-वाले फिर राजा की सेवा में पहुँचे। इस बार राजा को बहुत दुख हुआ। उसने राजकुमार को बुलाकर कहा, "तुम अपनी आदत से लाचार दीखते हो। लेकिन क्या कभी तुम यह भी सोचते हो कि तुम्हारी इस करतूत से प्रजा को कितना दुख होता है? मैं राजा हूँ। प्रजा की रक्षा करना मेरा धर्म है। तुम समझते हो कि मैं राजपुत्र हूँ सो मनमानी कर सकता हूँ, यह तुम्हारी भूल है। न्याय के आगे राजकुमार, राजा या एक मामूली आदमी सब समान हैं। बोलो तुम्हारा क्या जवाब है?"

राजकुमार ने कहा, "पिता जी, मैं जानता हूँ मेरी हरकत से प्रजा को दुख पहुँचता है, और मैं अपने को रोकने की कोशिश भी करता हूँ; लेकिन करूँ क्या? निशानेबाज़ी की ऐसी आदत पड़ गई है कि छूटती ही नहीं।"

यह सुनकर राजा ने राजकुमार को सात साल के लिए देशनिकाले की सज़ा दे दी और कहा कि तुम इसी समय यहाँ से चले जाओ। यदि तुम अपनी आदत को सुधार सके तो सात साल बाद वापस आ जाना।

राजा ने अपना धर्म निबाहने के लिए कुँवार को देशनिकाले की सज़ा दे तो दी; लेकिन उसके मन में जो दुःख हुआ, उसे वही जानता था। जब यह समाचार रानी को मिला तो वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

राजकुमार को एक घोड़ा, हथियार और कुछ अशर्फ़ियाँ मिल गईं और वह परदेश के लिए रवाना हो गया। महल से चलकर वह अपने मित्र लोहार के लड़के के पास आया और अपने देशनिकाले की बात उसे सुनाई। लोहार के लड़के ने कहा, "मित्र, मैं तुम्हारा साथी हूँ। मुझे भी साथ ले चलो।"

राजकुमार बोला, "अपने मा-बाप से पूछकर तुम चल सकते हो।"

लोहार के लड़के ने माता-पिता की आज्ञा ली और राजकुमार के साथ हो लिया। इसके बाद वे दोनों बढ़ई मित्र के पास पहुँचे और सारा हाल कह सुनाया। वह भी मा-बाप की आज्ञा लेकर उनके साथ चल दिया। अब रहा बहेलिया का लड़का। सो उसके पास जब वे तीनों पहुँचे तो वह भी उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया।

इस प्रकार चारों मित्र नगर छोड़कर चल दिये और एक दूसरे नगर में पहुँचकर एक धर्मशाला में डेरा डाला।

अगले दिन चारों मित्र बाज़ार घूमने निकले। यहाँ-वहाँ बहुत-सी चीज़ें देखने के बाद राजकुमार की निगाह एक दूकान पर पड़ी जिसमें बहुत-से हथियार रक्खे हुए थे। राजकुमार ने उन्हें देखकर दूकानदार से पूछा, "क्यों भाई, इन हथियारों में क्या खास बात है? और इनकी क़ीमत कितनी है?"

दूकानदार ने उत्तर दिया, "यह हथियार जिसके पास रहता है, उसकी रक्षा तो करता ही है, साथ ही उसके लिए आगे की बात बताने का काम भी करता है। जब तक इस पर पानी रहता है, इसका मालिक जीवित रहता है। पानी उतरा कि मालिक के प्राण उड़ जाते हैं। दाम इसका एक हज़ार है।"

इस पर राजकुमार ने पूछा, "यह बताओ भाई, कि क्या तुम इस हथियार का बनाना हमारे आदमी को भी सिखा सकते हो? कितने दिन लगेंगे और कितना खर्च आयगा?"

दूकानदार ने कहा, "सिखा सकता हूँ। एक साल लगेगा और एक हजार रुपया देना पड़ेगा।"

राजकुमार ने एक हथियार खरीद लिया और एक हज़ार रुपया और देकर अपने लोहार मित्र को काम सीखने के लिए वहाँ छोड़ दिया।

तीनों मित्र आगे बढ़े और एक दूसरे नगर में जाकर धर्मशाला में बिस्तर लगाया। अगले दिन जब वे बाजार में चक्कर लगा रहे थे तो राजकुमार का ध्यान एक उड़नखटोले की तरफ़ गया। हथियारवाले की तरह राजकुमार ने उसे भी दो हज़ार रुपये देकर एक हज़ार में तो एक उड़नखटोला खरीदा और एक हज़ार में उड़नखटोला बनाने का काम सीखने के लिए अपने बढ़ई मित्र को वहाँ छोड़कर बहेलिया मित्र के साथ वह आगे बढ़ा।

चलते-चलते वे दोनों एक शहर में पहुँचे। वहाँ उन्होंने लोहे की शलाखों का एक पिंजड़ा देखा। पिंजड़े में गुण यह था कि उसमें लगे काँटों से खोई चीज़ का पता लग जाता था। राजकुमार ने दो हज़ार रुपये यहाँ भी खर्च किये। पिंजड़ा साथ लिया और बहेलिये के लड़के को वहाँ छोड़ अकेला आगे चल दिया।

चलाचल चलाचल वह एक नदी के किनारे पहुँचा। नदी के दूसरे किनारे पर एक आलीशान महल बना हुआ था। उसके चारों तरफ़ कोसों तक सूना मैदान और घना जंगल था। उस पार जाने के लिए नदी पर पुल भी था। राजकुमार पुल को पारकर महल के सामने पहुँचा तो देखता क्या है कि सामने बाग़ में एक अत्यन्त रूपवती युवती खड़ी है। वह कैसी है––बार-बार मोती गुहें, सोलह शृङ्गार करें, बारह आभूषण पहनें, सिंदूर-सुरमा लगायें, बिछिया-अनूटा पहनें, मोतियों से माँग भरें, केसर-कस्तूरी का लेप करें, पान खायें, अतर लगायें, लौंग-इलायची का बटुआ कमर में खोंसें। और उसका शरीर था कि पान खाय तो गले से पीक दिखाय, मक्खन कैसा लोंदा, पूनो कैसो चन्दा, दिवाली कैसो दिया, कनेर कैसी डार––लफ-लफ दूबर हो जाय।

देखकर राजकुमार उसपर मोहित हो गया। उसे अपने तन-बदन की सुध न रही। उसी समय उस सुन्दरी की निगाह राजकुमार पर पड़ी। उसने देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर पुरुष खड़ा है। गुलाब कैसा फूल, चम्पे कैसा रंग, सूरज कैसी ज्योति, तोते कैसी नाक, भौंरा कैसे बाल, सिर पर जरी का मंडील बाँधे, कीमखाब का अंगा और मिसरू का पैजामा पहने, कमर में रेशमी फेंटा बाँधे जिसमें नक्क़ाशी के काम की चाँदी की मूठ का पेश-क़ब्ज़ खुसा हुआ है। कान में बड़े-बड़े मोतियों का बाला, गले में सूबेदारी कण्ठा, बग़ल में मखमल की म्यान में तेगा, मुँह में पान का बीड़ा और एकटक उसकी ओर देख रहा है। युवती भी उसपर मोहित हो गई। उसने राजकुमार को अपने पास आने का इशारा किया और बड़े आदरभाव से उसे भीतर ले गई। पूछा, "आप कहाँ से आ रहे हैं? मेरा मन आपकी ओर खिंच गया है। लेकिन मुझे एक बड़ी चिन्ता है। मैं एक दानव की लड़की हूँ। मेरा पिता आदमखोर (आदमी को खानेवाला) है। वह सबेरे ही शिकार के लिए जंगल में चला जाता है। अब लौटने ही वाला है। उससे बचने का तुम्हारे पास क्या उपाय है?"

राजकुमार ने कहा, "इसकी तुम चिन्ता न करो। बाहर से मैं भले ही सुकुमार दीखूँ। भीतर से मैं बहुत मज़बूत हूँ। मुझे तुम्हारे पिता का ज़रा भी डर नहीं है। लेकिन यह तो बताओ कि अगर हममें आपस में लड़ाई हुई तो एक के प्राण तो ज़रूर चले ही जायँगे।"

युवती बोली, "नहीं-नहीं, अगर तुम्हारी जीत हो जाय तो तुम उसे मारना मत। आखिर वह मेरा पिता है।"

राजकुमार राज़ी हो गया। थोड़ी देर में उसे दानव आता हुआ दिखाई दिया। पास आकर दानव हँसा। बोला, "क्या बढ़िया भोजन आज घर बैठे मिला है! इसका खून पीने में कैसा मज़ा आयगा। हा––हा––हा!!"

राजकुमार ने आगे बढ़कर दानव को ललकारा। देर तक दोनों में मल्लयुद्ध होता रहा। अन्त में राजकुमार की तलवार दानव के माथे पर इतने ज़ोर से लगी कि उसका सिर चकरा गया और वह धरती पर गिर पड़ा।

दानव की बेटी और राजकुमार दोनों ने मिलकर उसका इलाज किया और जब वह अच्छा हो गया तो उसने प्रसन्न होकर कहा, "तुम दोनों आनन्द से इस भवन में रहो। अब तुम मेरे दामाद हो। मैं यहाँ से चला जाऊँगा और किसी दूसरी जगह अड्डा जमाऊँगा।"

इतना कहकर दानव ने उन दोनों का विवाह किया और वहाँ से चल दिया।

दानव के चले जाने के बाद वे दोनों आनन्द से रहने लगे। दानव की बेटी के बाल सोने के थे। एक दिन वह नदी में नहा रही थी तो कंघी करते समय कुछ बाल टूट गये। उन्हें उसने एक दोने में रखकर नदी में बहा दिया। दोना बहते-बहते एक दूसरे राज्य में आया। वहाँ का राजकुमार नाव में बैठा नदी की सैर कर रहा था। उसने देखा कि दोने में कोई चमकीली चीज़ बही चली आ रही है। तो उसने नाव उधर ले जाकर दोना निकाल लिया। देखा कि उसमें सोने के बाल हैं। उसने सोचा कि जब ये बाल इतने सुन्दर हैं तो जिसके ये बाल होंगे वह न जाने कितनी सुन्दरी होगी! ऐसा सोच वह घर आया और अपने मित्रों-द्वारा अपने पिता से कहलवाया कि या तो इस सोने के केशवाली सुन्दरी से मेरा विवाह हो, नहीं तो मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा।

पिता ने उसे समझाया कि धीरज धरो। मैं उसका पता लगाकर तुम्हारे साथ उसका ब्याह करा दूँगा।

राजकुमार को कुछ संतोष हुआ।

इधर राजा ने दरबार में दूतियाँ बुलवाईं। सबसे चतुर दूती से राजा ने कहा कि तुम जाओ और जिस युवती के ये केश हैं उसका पता लगाकर लाओ। दूती एक नाव और कुछ मल्लाह लेकर चल दी।

चलते-चलते कुछ दिनों बाद वह उसी घाट पर आ पहुँची, जहाँ दानव का महल बना हुआ था। दूती वहाँ उतर पड़ी और मल्लाहों से कहा कि जब तक मैं लौटकर न आऊँ, तुम लोग थोड़ा आगे जाकर मेरी राह देखना।

इतना कहकर दूती महल के दरवाज़े पर जा पहुँची और ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ देने लगी––बेटी, दरवाज़ा खोलो।

ज्यों ही स्वर्णकेशी ने आकर दरवाज़ा खोला कि दूती उससे लिपटकर रोने लगी। रोती जाती थी और अपना परिचय देती जाती थी। उसने कहा––"बेटी, तू मेरी बहनौतिया (बहन की लड़की) है। तू बहुत छोटी थी तबसे अब भेंट हुई है।"

दूती की बातों पर भोली-भाली स्वर्ण-केशी ने विश्वास कर लिया। बड़े आदर से वह उसे महल में ले गई और सन्ध्या के समय जब राजकुमार लौटे तो उनसे परिचय कराया।

दूती की वेश-भूषा को देखकर राजकुमार को शक हुआ कि यह कोई चालाक औरत है। रात को शयनागार में उन्होंने राजकुमारी

से कहा कि देखो, इस औरत से सावधान रहना। यह मुझे भली नहीं जान पड़ती।

कुछ दिनों बाद दूती ने उससे कहा—बेटी, ज़रा राजकुमार से पूछना कि उनके प्राण कहाँ रहते हैं ?

शाम को जब राजकुमारी ने राजकुमार से यह सवाल पूछा तो उनका सन्देह और मज़बूत हो गया। उन्होंने कहा—"तुम इस औरत के चक्कर में न पड़ो। नहीं तो यह मेरी जान ले लेगी।"

परन्तु स्वर्णकेशी अपनी बात पर अड़ी रही। बोली कि तुम्हें मेरे सवाल का जवाब देना ही होगा।

राजकुमार ने खिन्न होकर कहा—"अच्छी बात है। तुम नहीं मानतीं तो बताये देता हूँ। लेकिन एक बात का ध्यान रखना। मैं मर जाऊँ तो मेरी लाश को जलाने मत देना। उसे तेल में डालकर इसी महल में बन्द करके ताला लगा देना।"

इसके बाद राजकुमार ने दरवाज़े की चौखट पर कुछ लिखा और फिर राजकुमारी के पास आकर कहा कि देखो, मेरे प्राण इस हथियार में हैं।

दूती दीवाल के सहारे कान लगाये खड़ी थी। सो उसने राजकुमार की बात सुन ली।

अगले दिन राजकुमार तो शिकार के लिए जंगल में चला गया। इधर दूती ने उस हथियार को लेकर अँगीठी में रक्खा और ऊपर से आग जला दी। थोड़ी ही देर में आग धू-धू करके जलने लगी। अँगीठी की आग से ज्यों-ज्यों हथियार का पानी उतरने लगा, राजकुमार की बेचैनी बढ़ने लगी। उसने शिकार खेलना बन्द कर दिया और वह घोड़े पर चढ़कर तेज़ी से घर की ओर दौड़ा। जैसे-जैसे समय बीतता जाता था, उसकी तबीअत गिरती जाती थी। ज्यों ही वह महल के पास आकर घोड़े से उतरा कि उसके प्राणपखेरू उड़ गये।

स्वर्णकेशी इस घटना से बहुत दुखी हुई और रोने लगी। दूती भी दिखाने के लिए रोने लगी। कुछ समय के बाद स्वर्णकेशी को अपने पति की बात याद आई। उसने उनकी लाश उठवाकर तेल में डुबोकर एक कमरे में रखवा दी और ताला बन्द करा दिया।

कुछ दिन बीतने पर दूती ने कहा—बेटी, हमारे कुल की रीति है कि जो स्त्री विधवा हो जाती है, वह दसवें दिन नाव में बैठकर नदी की सैर को जाती है। सो आज दसवाँ दिन है। तुम भी उस दस्तूर को पूरा करो।"

स्वर्णकेशी दूती के साथ नदी पर पहुँची। नाव वहाँ पहले से ही तैयार खड़ी थी। दोनों उस पर सवार हुईं और दूती का इशारा पाकर नाव चल दी।

थोड़ा आगे चलने पर स्वर्णकेशी ने कहा कि अब तो बहुत दूर निकल आये मौसी। चलो, लौट चलें।

दूती ने कहा—"बेटी, घबराती क्यों है ? तुझे मैं एक ऐसी जगह लिये चलती हूँ जहाँ तू ज़िन्दगी भर सुख से रहेगी।"

स्वर्णकेशी बहुतेरी रोई-चिल्लाई; पर वहाँ सुननेवाला कौन बैठा था ?

शाम होते-होते नाव ठिकाने पर आ लगी। दूती ने तुरन्त ही स्वर्णकेशी के आने का समाचार राजमहल भिजवाया। ज़रा-सी देर में राजमहल से नववधू को लेने के लिए पालकी आ पहुँची। उसमें बिठालकर स्वर्णकेशी को राजमहल पहुँचा दिया गया।

स्वर्णकेशी दूती की चाल समझ गई। उसने अपना धर्म बचाने का एक उपाय निकाला। उसने एक दासी के द्वारा राजा से कहलवाया कि मैं आपसे कुछ बातें करना चाहती हूँ। पर्दा बीच में डालकर स्वर्णकेशी और राजा की बातचीत होने लगी। स्वर्णकेशी ने कहा—"पिता जी, अब तो मैं बहू बनकर आपके घर आ ही चुकी हूँ, लेकिन एक भिक्षा आपसे माँगती हूँ। मैं इष्टदेव का अनुष्ठान कर रही हूँ। उसके पूर्ण होने में छः महीने बाक़ी हैं। आप मुझे आज्ञा दे दें कि छः महीने मैं नगर से बाहर रहकर अपने अनुष्ठान को पूरा कर लूँ। उसके बाद आप मेरा विवाह कर दें।"

राजा ने स्वर्णकेशी की प्रार्थना स्वीकार कर ली और नगर के बाहर एक महल में उसके रहने का प्रबन्ध कर दिया गया।

× × ×

राजकुमार के मित्रों में सबसे पहले बहेलिया के लड़के ने अपना काम सीख लिया और अपने बनाये हुए पिंजड़े को लेकर उसके काँटों की मदद से रास्ते का पता लगाता हुआ बढ़ई मित्र के पास पहुँचा। बढ़ई का पुत्र भी अपना काम सीख चुका था। उसने अपने उस्ताद से आज्ञा ली और एक उड़नखटोला लेकर दोनों मित्र लोहार के लड़के के पास जा पहुँचे। लोहार का पुत्र भी हथियार बनाने का कार्य सीख चुका था और अपना बनाया हथियार लिये मित्रों की प्रतीक्षा कर रहा था।

तीनों मित्र उड़नखटोले पर बैठकर राजकुमार की खोज में निकले और पिंजड़े के काँटों की मदद से उस स्थान पर पहुँच गये जहाँ राजकुमार का मुर्दा शरीर बन्द पड़ा था। वहाँ पहुँचकर उन्होंने दवारज़े पर राजकुमार की लिखावट पढ़ी और सारा रहस्य समझ गये। उन्होंने दरवाज़ा खोलकर हथियार की तलाश की और लुहार के लड़के ने उसपर फ़ौरन पानी चढ़ाना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे पानी चढ़ता जाता था, राजकुमार के शव में प्राण आते जाते थे। जब पानी पूरी तौर पर चढ़ गया तो राजकुमार जीवित होकर बैठ गया और 'स्वर्णकेशी-स्वर्णकेशी' कहकर चिल्लाने लगा।

मित्रों ने उसे समझाया कि उसके फेर में अब मत पड़ो। उसका मोह छोड़ दो।

राजकुमार ने कहा—"यह नहीं होने का। वह मेरी विवाहिता पत्नी है। उसका तो पता लगाना ही होगा।"

राजकुमार का हठ देखकर बहेलिये के लड़के ने अपने पिंजड़े के काँटों की मदद से पता लगाया कि स्वर्णकेशी कहाँ है, और चारों मित्र उड़नखटोले पर बैठकर वहाँ पहुँचे। शहर के बाहर उन्होंने डेरा डाला।

सवेरा होते ही राजकुमार को छोड़कर तीनों मित्रों ने साधु का भेष बनाया और राजकुमारी के पास पहुँचे। अवसर पाकर उन्होंने अपना परिचय दिया। कहा कि अब तुम्हारे विवाह का दिन पास आगया है। तुम राजा से कहना कि हमारे कुल का रिवाज है कि विवाह होने से पहले दूल्हा-दुलहिन उड़नखटोला पर बैठकर नगर की सात परिक्रमा करते हैं। इतना काम तुम कर लेना। बाक़ी हम देख लेंगे।

इतना कहकर तीनों मित्र अपने डेरे पर वापस आये। बढ़ई के पुत्र ने उड़नखटोला लेकर नगर में तमाशा दिखाना शुरू कर दिया, जिससे राजा को मालूम हो जाय कि उड़नखटोलावाला उनके नगर में आगया है।

उधर स्वर्णकेशी ने उड़नखटोले पर उड़नेवाली बात राजा से कहलवाई। उड़नखटोलेवाला बुलाया गया। बढ़ई के पुत्र ने राजा की आज्ञा पाकर दूल्हा-दुलहिन को उड़नखटोले पर बिठाया। इसी समय शौक़ में आकर दूती

ने कहा कि मैं भी बैठूँगी। आखिर वह भी बैठा ली गई।

उड़नखटोला आसमान में मँडराने लगा और एक-दो चक्कर लगाने के बाद लोगों की निगाह से ओझल हो गया।

राजकुमारी की आज्ञा से बढ़ई के बेटे ने दूल्हा और दूती दोनों को नदी में फेंक दिया। इसके बाद वे लोग उस स्थान पर आये जहाँ राजकुमार और दो मित्र बैठे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

राजकुमार स्वर्णकेशी और अपने तीनों मित्रों के साथ उड़नखटोले पर बैठकर अपने पिता की राजधानी को लौटा। राजकुमार को घर छोड़े सात साल बीत चुके थे। राजा-रानी उन सबको पाकर बहुत प्रसन्न हुए। स्वर्णकेशी-सी पुत्रवधू पाकर उनके आनन्द की सीमा न रही। उस दिन से वे सब मिलकर सुखपूर्वक रहने लगे।

देवरी (सागर)
(मधुकर से)

एडवर्ड के रुपये का चलना बन्द होगा

भारतस-रकार के ८ नवम्बर के गजट में यह घोषणा की गई है कि सम्राट् सप्तम एडवर्ड की छाप के रुपयों तथा अठन्नियों का ३१ मार्च १९४२ ई० के बाद चलन नहीं रहेगा।

पहले के चलनेवाले चाँदी के सिक्कों का चलना बन्द कर उनकी जगह सम्राट् जार्ज षष्ठ की छाप के नये प्रकार के किनारोंवाले रुपयों को चलाया जाय। सम्राट् छठे जार्ज के रुपये ऐसे धातुमिश्रण से तैयार किये गये हैं जो बड़ा कठोर होता है। इनका किनारा इस प्रकार का होता है कि जाली सिक्के तैयार करना बड़ा कठिन और व्ययसाध्य होगा।

सम्राट् जार्ज के नये रुपये तथा एक रुपये के नोट इतने अधिक परिमाण में, चलन में या सुरक्षित कोष में हैं कि जनता को असुविधा पहुँचाये बिना ही सम्राट् सप्तम एडवर्ड के रुपयों का चलन बन्द किया जा सकता है।

३० सितम्बर, १९४२ ई० तक सम्राट् सप्तम एडवर्ड की छाप के रुपये सारे सरकारी खज़ानों, डाकखानों और रेल के स्टेशनों पर स्वीकार किये जायँगे। उसके बाद जब तक कोई सूचना न दी जाय ये रुपये रिज़र्व बैंक की कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास-स्थित मुद्रा-प्रचलन-शाखाओं में ही स्वीकार किये जायँगे।

ग्राम-मेला-नुमायश हाईस्कूल, सिरसा

लेखक, पं० गंगासरन गौड़, मेजारोड, इलाहाबाद

इस नुमायश का सिलसिला तीन साल से क़ायम है जो हर साल इसके हर काम में तरक्क़ी होती जाती है। इस नुमायश के क़ायम करनेवाले मिस्टर क़ाज़मी साहब इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स, इलाहाबाद हैं, और बाबू लक्ष्मीनारायण साहब रईस सिरसा इसके मुन्तज़िम हैं। इस साल यह नुमायश १४ अक्टूबर सन् १९४१ ई० से १७ अक्टूबर सन् १९४१ ई० तक की गई। जिसका उद्घाटन श्रीमान् ए० डी० डिकसन साहब, आई० सी० एस०, कलक्टर एण्ड डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, ज़िला इलाहाबाद ने किया श्रीमान् कलक्टर साहब बहादुर के अलावा और भी ज़िला अफ़सरान इस नुमायश के सिलसिले में तशरीफ़ लाये थे।

जनाब डाक्टर हींगमबाटम साहब, मि० क़ाज़मी साहब, इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स, जनाब मौलवी अब्दुलरऊफ़ खाँ साहब, हाकिम परगना ऐन और सेक्रेटरी ग्राम-सुधार ज़िला इलाहाबाद, जनाब मुहम्मद इब्राहीम खाँ आगा साहब, तहसीलदार मेजा, जनाब हेल्थ आफ़िसर साहब ज़िला इलाहाबाद वग़ैरह अफ़सरान ने नुमायश को देखा और तारीफ़ की।

नुमायश में खेती, दस्तकारी वग़ैरह तरह तरह की चीज़ें इकट्ठा की गई थीं। मोहकमा ज़राअत, कोआपरेटिव, ग्रामसुधार, हेल्थ डिपार्टमेंट वग़ैरह से नमूने नुमायश में लाये गये। हर मुहकमे का अहलकार अपने काम को कामयाब बनाते हुए नुमायश के काम में दिलचस्पी लेता रहा।

नैनी फ़ार्म से आलात के नमूने नुमायश में भेजे गये थे, जिनका इस्तेमाल काश्तकारों को अच्छी तरह समझाया गया।

मुहकमा ज़राअत की तरफ़ से बीज, खाद, आलात के नमूने और फ़सलों की बीमारियों के कीड़ों के फोटो नुमायश में लाये गये।

बीज, खाद, आलात, तरक्क़ी नस्ल मवेशी, फ़सलों को बीमारियों से बचाने के तरीक़े, वग़ैरह काश्तकारों को लेक्चर के ज़रिये समझाया गया।

नुमायश में क़रीब ३,००० आदमियों की भीड़ रोज़ाना रहती थी। पारसाल की नुमायश में जिन लोगों को काश्तकारी पर इनाम दिया गया था उन लोगों को इस नुमायश में वह इनाम जनाब कलेक्टर साहब बहादुर, ज़िला इलाहाबाद ने खुद तक़सीम किया जिनकी तफ़सील नीचे की जाती है—

(१) तिवारी बद्रीनाथ, गेहूँ पूसा ४, (२) पं० रामकृपाल सरपंच, बघवा जीवन-सुधार सोसाइटी, जौ २५१, (३) चौधरी हरिहरप्रसादसिंह, ऊख ४२१।

नुमायश में रोशनी का इन्तज़ाम बिजली से किया गया था। लेक्चर लाउड स्पीकर से दिये गये ताकि हर आदमी आसानी से सुन सके और समझ सके।

देशी बीज व देशी आलात से तरक्क़ी-शुदा बीज व आलात मुहकमा ज़राअत से मुक़ाबिला करते हुए काश्तकारों को समझाया गया, जिसका असर पब्लिक पर काफ़ी अच्छा पड़ा।

इस साल यह ग्राम-मेला-नुमायश सिरसा ऐसे वक्त पर जब कि मुहकमा ज़राअत के अहलकारान तक़सीम बीज रबी और दूसरे कामों में लगे हुए थे और नुमायश का काम भी पिछले दो सालों से कहीं ज़्यादा बड़े पैमाने पर था, मगर फिर भी काम ज़्यादा होते हुए नुमायश को अच्छी तरह कामयाब बनाया गया। जिसका कारण जनाब डिवीज़नल सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब, मुहकमा ज़राअत, इलाहाबाद का इस नुमायश में दिलचस्पी लेने का सबब है कि जनाब ने मिस्टर बुख़ारी, एग्री० इन्स्पेक्टर को इस नुमायश को कामयाब बनाने में मदद देने के वास्ते भेज दिया था।

गाँव के घरेलू धंधे

लेखक, श्री रणधीर वर्मा 'प्रभाकर' टैकनीकल आफ़िसर ग्रामसुधार, यू० पी०

भारत कृषिप्रधान देश है । खेती का काम पूरे ३६५ दिन नहीं होता है । खेतो के कामों से किसानों को बहुत फ़ुर्सत मिलती है। हमारे देश का किसान प्रायः ३ या ४ महीने निठल्ला रहता है। खेती की ज़रूरतों के अनुसार स्थान और परिस्थिति के परिणामस्वरूप इस अवकाश के समय में कमी और बढ़ी भी हो जाती है । केवल खेती की आय से ही अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट पालना नामुमकिन तो नहीं लेकिन मुश्किल ज़रूर है। अगर इस ख़ाली समय में किसान खेती के साथ-साथ कोई सहायक काम-धंधा करे तो सरलता से जीवन निर्वाह कर सकता है। इस ख़ाली समय का अच्छे से अच्छा उपयोग क्या हो सकता है, जिससे किसान की आमदनी बढ़े ? और वह सहायक रोज़गार एसा होना चाहिए जिसमें बड़ी मशीनों की ज़रूरत न हो । मशीनें मोल लेने के लिए पैसे का सवाल सामने आ खड़ा होता है। पहले तो मशीन का मूल्य चुकाना ही कठिन है--दूसरे गाँव की इतनी भारी आबादी में जहाँ शिक्षा के सुभीते नहीं के बराबर हैं--यह आशा नहीं की जा सकती है कि वह मशीन को सँभालकर चला सकेगा और टूट-फूट को दुरुस्त कर सकेगा। ऐसी हालत में हमारे देश के ग्रामीणों के लिए गाँव के लोहार और बढ़ई की बनाई छोटी-मोटी मशीन ही कारगर हो सकती है। भारत में वही उद्योग-धंधे सफलतापूर्वक चलाये जा सकते हैं जिनका गहरा सम्बन्ध खेती-बारी से हो। जो छोटे और बड़े पैमाने पर चलाये जा सकें और ज़रूरत के समय बन्द कर देने में आसानी हो। जिस काम में किसान-परिवार के सभी लोग लड़के-लड़कियाँ और उसके बड़े मा-बाप भागीदार बन सकें वही काम गाँव में आसानी से चल सकता है।

तरकारी और फलों की खेती, फूलों के बाग़ लगाना, शहद की मक्खियाँ पालना, रेशम के कीड़े पालना, खँडसाल क़ायम करना या गुड़ बनाना, जंगलों का लगाना। सन बोना। नारियल के छिलकों का रेशा निकालना, जंगल से जड़ी-बूटी लाना, घी-दूध का रोज़गार और गो-पालन, मुर्ग़ियाँ और सुअर पालना, भेंड़-बकरी पालना। मछली निकालकर रोज़गार करना, कपास बोना, चर्खा चलाना और कपड़े तैयार करना, आटा पीसना, चावल निकालना, तेल निकालना, मूँगफली और दूसरे बीजों को छीलना, हाथ से काग़ज़ बनाना, रस्सी, चटाई, ताँत बनाना, कैंची, चाक़ू और ताले बनाना, बटन और मरे जानवरों का उपयोग में लाना तथा ऊन के कालीन, और आसनी बनाना । ये कुछ ऐसे काम-धंधे हैं जो ख़ाली समय में किये जाने पर मनुष्य को बेकारी की बुराइयों से बचाकर माली इमदाद पहुँचा सकते हैं।

लोहार, बढ़ई, चमार, पासी, छीपी, धोबी, रँगरेज़, धरकार, दबकार, सुनार, माझी, धुनिए, जुलाहे, दर्ज़ी, कुम्हार आदि सब प्रकार के पेशेवर लोग भारत में अब तक मौजूद हैं जो अपने-अपने काम करते हैं। कम या अधिक मात्रा में इनके कामों की किसान को ज़रूरत पड़ती है। इन कामों का गाँव में चलना तो ज़रूरी है ही।

भारत के अधिकांश निवासी शाकाहारी हैं, इस दृष्टि से फल और शाक-भाजी की खेती किसानों के लिए अच्छी फ़ायदे की चीज़ है।

फलों का उपयोग दो प्रकार से किया जाता है। कुछ फल हरे और ताज़े खाये जाते हैं और कुछ सुखाकर काम में लाये जाते हैं। हमारे प्रान्त में स्थान-स्थान पर विभिन्न प्रकार की जलवायु है। प्रायः अधिकांश फल हमारे प्रान्त में उत्पन्न हो सकते हैं। कुमाऊँ और गढ़वाल में सेब, नाशपाती, चीलू, और केले की काश्त होती है। लेकिन अभी तक हमारे गाँव के रहनेवाले भाई इसके महत्त्व को नहीं समझे हैं। घर के आस-पास इन चीज़ों के पेड़ लगाकर काफ़ी फ़ायदा उठाया जा सकता है। अख़रोट, हल्दी और आलू की खेती भी बिना किसी विशेष परिश्रम के की जा सकती है। बनारस ज़िले के चिरई और बरई गाँव में गाँव के लोगों ने पिछले कुछ ही वर्षों से नींबू, नारंगी, पपीता और केले के बाग़ लगा अपने गाँव को नमूने का गाँव बना लिया है। अपने गाँव की भारी ७० हज़ार रुपये की क़र्ज़दारी बेबाक़ कर दी है। केले, पपीते, अमरूद, नींबू, और नारंगी के पेड़ प्रायः सरलता से गाँव में लगाये जा सकते हैं और किसान खाने-पीने के बाद भी बाज़ार में बेचकर काफ़ी लाभ उठा सकता है। फल अधिक काल तक ताज़े रहें ताकि बाहर की मंडियों में भेजे जा सकें, इसका प्रबन्ध भी जीवन-सुधार सभायें कर सकती हैं। हमारे देश में आम बहुतायत से फलता है। आमों को सुरक्षित कर विदेशों में भेजने का कार्य बड़ा लाभदायक सिद्ध हो सकता है। नींबू, पपीते और कटहल से सत, पेपसिन और बेकटिन सरलता से तैयार कर बेचा जा सकता है जो दवाओं के काम में आता है और अच्छी क़ीमत दे सकता है। लहसुन, प्याज़ और अदरक की भी काफ़ी खपत होती है। स्वास्थ्य के लिए ये उपयोगी वस्तुएँ हैं। अदरक से जींजर नामक पदार्थ बनता है जो विदेशों से आता है, इसके बनाने के प्रयोग भी किये जा सकते हैं। हल्दी और शाक-भाजी पैदा करके भी काफ़ी लाभ हो सकता है। रावलपिंडी में शाही कमीशन के सामने एक आदमी ने बयान दिया था कि उसने अपने गाँव में शाक-भाजी पैदा करके ३५,०००) एक साल में पैदा किये थे। शहरों के निकट और सड़कों के निकट बसनेवाले लोग इसी प्रकार इस छोटे-से उद्योग से लाभ उठा सकते हैं।

सहारनपुर के ज़िले की भूमि में तम्बाकू की खेती बहुत उत्तम और लाभदायक समझी गई है। वहाँ के गाँववाले 'बरजीनियाँ'

तम्बाकू बोकर अच्छे पैसे बना सकते हैं। हमारे देश में सिगरेट की काफ़ी खपत है जिसके लिए तम्बाकू विदेशों से आता है। हमारे गाँवों में लाखों रुपये का तम्बाकू आसानी से पैदा किया जा सकता है।

फलों से सिरका, मुरब्बा और अचार बनाकर बाहर भेजा जा सकता है। केवल फलों से ही नहीं, अनाज से भी बहुत-से सहायक रोज़गार चलाये जा सकते हैं। बिस्कुट बनाने का धंधा उन्हीं में से है। गेहूँ, जौ आदि से भी 'माल्ट' आदि बनाया जा सकता है।

जौनपुर, सिकन्द्रा और कन्नौज के आस-पास फूलों की काश्त भी होती है। काशी, प्रयाग, अयोध्या और मथुरा में फूलों के रोज़गार से काफ़ी आमदनी की जाती है। अन्य स्थानों पर भी फूलों की खेती हो सकती है।

जिन किसानों के पास फल-तरकारी के बाग़ हैं वे मधुमक्खियाँ पालें। मक्खियों के लिए बाग़ों में बक्स लगाना ज़रूरी है जिसमें एक ओर से तो मधुमक्खियों के लिए रास्ता हो और दूसरी ओर से एक ऐसा ढँकना हो जिसे खोलकर सुभीते से बिना छत्ता तोड़े शहद लिया जा सके। शहद की मक्खी को शहद जमा करने में इतनी देर नहीं लगती है जितनी कि शहद का छत्ता बनाने में। रानी मक्खी को पकड़कर बक्स में बसा देना चाहिए और उँचाई पर बक्स को रख देना चाहिए। इन बक्सों से काफ़ी मात्रा में शहद मिल सकता है मधुमक्खियों से खेती की उपज बढ़ती है, इसलिए ये खेती की सहायक कही जा सकती हैं। शहद का उद्योग भले प्रकार से शिक्षा प्राप्त करने पर मनुष्य अच्छी रक़म पैदा कर सकता है।

रेशम के कीड़े भी शहतूत के बाग़ों में पाले जा सकते हैं। आसाम में रेशम के कीड़े पालकर ही लाखों रुपये वहाँ के गाँववाले पैदा करते हैं। यह व्यापार अब अधिकतर विदेशियों के हाथ में चला गया है। विदेशी लोग करोड़ों रुपये का रेशम हमारे देश में बेच जाते हैं। रेशम के व्यापार को अपनाकर गाँववाले अपने देश के करोड़ों रुपये विदेशियों की जेब में जाने से बचा सकते हैं। ये कीड़े आसानी से बाग़ों में पाले जा सकते हैं।

हमारा देश अहिंसाप्रधान देश है फिर भी शहरों और क़स्बों में अंडों की काफ़ी खपत है। बतख या मुर्ग़ियाँ पालकर किसान काफ़ी पैसा पैदा कर सकता है। मुर्ग़ी और बतख़ पालने का उद्योग मनोरंजन के साथ-साथ आमदनी देनेवाला भी है। थोड़ी-सी भूमि में यह रोज़गार चलाया जा सकता है। विदेशों में अंडों की काफ़ी खपत है। केवल ग्रेट-ब्रिटेन में ही हर साल ११½ करोड़ पौंड के अंडे विदेशों से आते हैं। सफल अंडों का व्यापार करने के लिए अच्छी नस्ल की मुर्ग़ियाँ, बतख और उनकी रक्षा के लिए जालीदार बड़े-बड़े दरबे बनाने की ज़रूरत है।

दूध-घी का रोज़गार या गोपालन हमारे देश का सबसे उत्तम रोज़गार है। गाय मनुष्य के लिए कामधेनु है। अमृत-समान दूध, दही और मक्खन गाय से ही मिलता है। खेती के लिए मज़बूत बैल, तथा उत्तम खाद के लिए गोबर मिलता है। हमारे देश में दूध की बहुत कमी हो गई है जिसका असर हमारे स्वास्थ्य पर पड़ा है। हमारा देश गरम देश है। बिना गाय के दूध के बच्चा पनप ही नहीं सकता। ऐसी अवस्था में अच्छी नस्ल की गायें पालना आवश्यक है। उत्तम घी-दूध की सभी स्थानों पर भारी माँग है। डेनमार्क में घी-दूध और पनीर का व्यापार ऊँचे पैमाने पर किया जाता है। वही देश इँगलैंड का ग्वाला है। हमारे देश में जिस दिन गोपालन के महत्त्व को किसान समझ जावेंगे उसी दिन हमारे दुःख-दरिद्र कट जावेंगे। भैंस, बकरी और भेड़ पालकर अच्छी आमदनी की जा सकती है। हमारे देश भी में चमड़े, ऊन, हड्डी और सींग के सामान करोड़ों रुपये का विदेशों से आता है। विदेशियों की कच्चा माल ख़रीदने की बड़ी-बड़ी आढ़तें हैं। उस सामान को ले जाकर नाना प्रकार की वस्तुएँ बनाकर हमारे देश में करोड़ों रुपये के नफ़े से बेच देते हैं। हमारे देश के चमार तो अपनी चमड़ा निकालने और साफ़ करने की उपयोगी कला को भी भूल गये हैं। इसके लिए हमारे प्रान्त की सरकार ने चमड़े का काम सिखलाने की आयोजना की है, जहाँ वैज्ञानिक ढंग से उत्तम वस्तुएँ तैयार करने का काम सिखाया जाता है। मरे जानवरों के सींग से बटन, और कंघियाँ बनती हैं। हड्डी की खाद बड़ी ही उपजाऊ और खेती के लिए लाभदायक होती है। हमारे देश में बालोंवाले जानवर काफ़ी तादाद में होते हैं। क़ालीन, आसनी, कम्बल का रोज़गार आसानी से गड़रिये और बिनकार लोग कर सकते हैं। मरे जानवरों की बालोंवाली खालें विदेशों में अच्छे मूल्य पर बिकती हैं। खालों को भली प्रकार से यदि रँगा जावे तो वे खालें काफ़ी फ़ायदा दे सकती हैं।

हमारे देश में विदेशों से प्रायः प्रतिवर्ष साठ करोड़ रुपये का सूती कपड़ा आता है। तन ढँकने के लिए किसानों को अपना अनाज, भूसा, गाय, और बछिया तक बेचनी पड़ती है। यदि गाँव के किसान अपने गाँव में रुई पैदा कर, घर में रुई से बिनौले निकालकर, धुनिए से रुई धुनाकर, घर की देवियों से चर्खा चलवाकर सूत कतावें और गाँव के जलाहे से सूत बुनवाकर, गाँव के धोबी से धुलाकर और घर की देवियों से या गाँव के दर्ज़ी से सिलाकर कपड़े बनावें और पहनें, तो हमारे देश के धन की बड़ी धारा जो विदेशों में बहकर चली जा रही है यहाँ ही रुक सकती है। इससे किसानों और देशवासियों को रुपये में सत्रह आने लाभ है। थोड़ी-सी मेहनत से जो कपड़ा हमें एक रुपये में मिलता है वह चार, छः आने में ही मिल जावेगा। रुई किसान के खेत में होती ही है। अच्छी रुई के लिए अच्छे प्रकार के बीज काम में लाये जा सकते हैं। घर में गाँव की औरतें, बुढ़िया या लड़कियाँ सभी आसानी से रुई ओटकर बिनौले

ये के नफ़े से
 चमार तो
 साफ़ करने
भूल गये हैं।
ी सरकार ने
आयोजना की
उत्तम वस्तुएँ
ा जाता है।
और कंघियाँ
ा ही उपजाऊ
भदायक होती
वाले जानवर
लीन, आसनी,
 गड़रिये और
मरे जानवरों
अच्छे मूल्य पर
प्रकार से यदि
ी फ़ायदा दे

प्रायः प्रतिवर्ष
ड़ा आता है।
अपना अनाज,
नी पड़ती है।
 में रुई पैदा
लकर, धुनिए
यों से चर्खा
व के जलाहे
 से धुलाकर
ा के दर्ज़ी से
ं, तो हमारे
ा विदेशों में
रुक सकती
यों को रुपये
मेहनत से जो
है वह चार,
रुई किसान
रुई के लिए
ये जा सकते
ा लड़कियाँ
र बिनौले

निकाल सकती हैं, घर में ही सब औरतें मिलकर खाली समय में कात सकती हैं। धुनिए, जुलाहे, धोबी और दर्ज़ी को उनकी मेहनत के लिए कुछ अनाज देना होगा। इस तरह से देश का पैसा देश में ही रहेगा। इससे एक और बड़ा लाभ होगा आज जो धुनिए जुलाहे, धोबी और दर्ज़ी जिन्हें काम नहीं मिलता है खेतों की ओर दौड़ रहे हैं, जब अपना धंधा जो उनका जातीय धंधा है, पा जावेंगे तो खेती छोड़ देंगे, इससे किसान को खेती की ज़मीन काफ़ी मात्रा में मिलेगी और उसका खेत का कष्ट दूर हो जावेगा। कपड़े का धंधा ऐसा है जिसमें परिवार का ६ वर्ष के बच्चे से लेकर ६० वर्ष के बूढ़े तक अपना समय लगा सकता है। आज जो बढ़ई और लोहार बेकारी से परेशान हैं उन्हें चर्खे बनाने, कर्घे बनाने, बिनौले साफ़ करने की चर्खी बनाने से समय ही नहीं मिलेगा। यह जीवन की डोर सरीखा उद्योगधंधा यदि फिर से चल पड़े तो हमारे अधिकांश दुःख-दारिद्र्य हवा हो जावेंगे।

भारत में एक सौ से अधिक ऐसे पौधे मिलते हैं जिनसे रेशे निकाले जाते हैं। सन, जूट, कपास, मूँज, नारियल, फ़्लेक्स आदि से अच्छे रेशे निकलते हैं। इनमें से अधिकांश टाट, बोरे, रस्से, सूती रस्सियाँ आदि बनाये जाते हैं। जूते के तल्ले, ट्यूब, कागज़ आदि बनाने के अन्य उपयोगों में भी ये आते हैं।

गाँव में रस्सी बनाने का काम होता है लेकिन बहुत थोड़ा बाज़ार में देश और विदेश दोनों में रस्सों की काफ़ी खपत है। यदि गाँव-वाले जरा ध्यान से इस उद्योग को अपनावें तो काफ़ी लाभ उठा सकते हैं। रेशे को निकालने के लिए हमारे देश में पौधे को पानी में सड़ाने की प्रथा है। इससे एक अड़चन है, तालाब में सड़ाने से पानी और आब-हवा दोनों गन्दे हो जाते हैं और रेशे मुलायम और साफ़ नहीं निकलते हैं। इसके लिए यदि 'गंधकाम्ल' को मिलाकर गरम पानी से रेशे निकाले जावें तो अच्छे, नरम और साफ़ रेशे निकलते हैं, जिनसे अच्छे प्रकार के रस्से बनाये जा सकते हैं। नारियल के रेशों की चटाइयाँ, पापोश, ब्रुश, ग़लीचे आदि अन्य कई उपयोगी और सुन्दर चीज़ें बन सकती हैं।

बाज़ार में पत्तों की चटाइयों की भी खपत है। किसान लोग आसानी से इसको तैयार कर सकते हैं। खजूर, छीद तथा अन्य मज़बूत घासों की अच्छी और सुन्दर चटाइयाँ बनती हैं। डलिया और टोकरी के लिए शहतूत आदि अनेक चीज़ों की लकड़ियाँ काम में लाई जाती हैं।

हमारे देश में गुड़ तथा खाँड़ बनाने का काम भी लगभग साल में चार महीने चलता है। यदि किसान रस को भले प्रकार साफ़ कर अच्छी भट्ठी जैसे 'प्रभाकर', 'जालन्धर', 'तूफ़ान' आदि पर अपना गुड़ तैयार करें तो आमदनी काफ़ी बढ़ सकती है। खाँड़ बनाने का काम बहुत प्राचीन है और काफ़ी फ़ायदे-वाला है। गुड़ और चीनी की खपत हमारे देश में काफ़ी है। ताड़ी से भी अच्छे प्रकार का गुड़ बनता है। भारतीय जीवन में गुड़ ही सुस्वादु पदार्थ है।

तेलहन से तेल निकालना, ओखली से चावल निकालना, चक्की से आटा पीसना ये हमारे देश के प्राचीन काम हैं। इन्हें किसी हालत में न छोड़ना चाहिए। स्वास्थ्य और आमदनी के ढंग से ये सबसे अच्छे हैं।

कैंची, चाकू, ताले, मिट्टी के खिलौने और मूर्तियाँ, लकड़ी के खिलौने, लैस, बेल-बूटे बनाना यह छोटे-छोटे अन्य उद्योग-धंधे हैं। इनके अलावा मछली पकड़ना, जड़ी-बूटी जंगलों से लाना, परती ज़मीनों में जंगल लगाना आदि ये सब उद्योग किसान के लिए उसकी आमदनी बढ़ाने के साधन हो सकते हैं। इनके अलावा अन्य कई कलायें हैं जिनका अभ्यास किया जा सकता है। रँगरेज, छीपी, सुनार, गाना-बजाना, नक़्क़ाशी आदि। लेकिन इन चीज़ों का सम्बन्ध किसान जीवन से बहुत कम है, खेती से तो बिलकुल ही नहीं है। मानव-जीवन में इन कलाओं का स्थान ज़रूर है लेकिन जब किसान ऋणमुक्त हो जायँ समृद्ध हो जायँ, सुखी हो जायँ।

बेकार गाँववालों के लिए मैंने कुछ सहायक उद्योग-धंधों पर अपने विचार प्रकट किये। किसान का मुख्य धंधा खेतीबारी है। खेतीबारी से समय मिले तो वह ज़रूर किसी न किसी उद्योग-धंधे में मन लगावे, जिस काम से उसकी खेतीबारी के काम में रुकावट न पड़े और अच्छी मज़दूरी मिले। जिसे अन्य कोई काम न मिले वह चर्खा कातकर अपना और अपने गाँव का उद्धार करे। दरिद्र किसान के लिए खद्दर का काम उसकी दरिद्रता दूर करने के लिए सबसे सहज, सुलभ और सुघर साधन है।

स्थान, स्थिति और समय देखकर अपने लिए किसान स्वयं ही सहायक धंधा चुने। इन उद्योग-धंधों के करने से किसान के समय का केवल सद्व्यय ही न होगा बल्कि उसकी आत्मा में आत्म-निर्भरता पैदा होगी, आत्मा में बल का संचार होगा।

हल

लेखक, श्रीयुत रामसिह ठाकुरिया,
बछरावाँ, रायबरेली

आओ मिलकर हल अपनायें,
औ' मिलकर उसके गुण गायें।
जो हल देखें वह चकरायें,
जो रोटी का प्रश्न उठायें।
उनको हल की बात सुनायें,
मिल जायें सब मिलकर गायें।
आओ मिलकर हल अपनायें,
जोत जोत राशें उपजायें।
बेकारी का नाम मिटायें,
धन से फिर घर-घर भर जायें।
जीवन अपना सफल बनायें,
आओ मिलकर हल अपनायें।
घर-घर विद्या औ' ज्ञान बढ़े,
धन जन जीवन औ' मान बढ़े।
यश गौरव जीवन दान बढ़े,
नत मस्तक ऊँचे हो जायें।
आओ मिलकर हल अपनायें॥

हमारा पंचायत-घर

समय ६-३० से ७-१५ बजे तक (शाम)

१ जनवरी, १९४२—गीत, दादरा और ग़ज़ल, श्री अब्दुल हाफ़िज़ किदवई । उत्साह (नाटिका) श्री बुद्धिभद्र । पाला (कविता), श्री राजाराम शर्मा । ख़बरें और मौसम का हाल ।

२ जनवरी, १९४२—नात, रिकार्ड के गाने, क़व्वाली, श्री मुतुर्ज़ाहुसेन । बाँस के उपयोग (भाषण), श्री फ़ासिह अहमद अंसारी । सगुन तकिया, श्री चौधरी और काका में बतकही । लड़ाई के हाल-चाल, श्री लपेटे और झपेटे । ख़बरें और मौसम का हाल ।

३ जनवरी, १९४२—सोहर और गीत, श्री माथुर और उनके साथी । बियाही बिटिया को उपदेश, श्रीमती तोरनदेवी शुक्ला । पनघट की बात-चीत, श्री सुशीला और पद्मावती । बहिनो तुम्हार खत मिला, श्री दीदी । ख़बरें और मौसम का हाल ।

४ जनवरी, १९४२—बच्चों की सभा, सुनहरी डोलची, श्री फूलचन्द्र । बिरहा और गीत, श्री नैपाल अहीर और श्री जंगबहादुर । तुम्हार खत मिला । दुनिया के हाल-चाल, श्री लपेटे-झपेटे । ख़बरें और मौसम का हाल-चाल ।

५ जनवरी, १९४२—देहाती गाने, श्री गोपाल बनर्जी और श्री जंगबहादुर । देश बिराना (नाटिका), श्री रसूल अहमद अबोध । सिपाही सभा, श्री रहनुलहक़ और एम० सी० जाफा । ख़बरें और मौसम का हाल ।

६ जनवरी, १९४२—भक्ति रस, रिकार्ड का गाना । भजन और कीर्तन, महाराष्ट्र-कीर्तन-मंडली । गाँवों में सड़कों की समस्या, श्री जगदीशप्रसाद द्विवेदी । विटामिन-शक्ति, श्री समरबख़्शसिंह और चौधरी । ख़बरें और मौसम का हाल ।

७ जनवरी, १९४२—ग्राम-संगीत-सम्मेलन, क़रीब-क़रीब सब गायक-मंडलियाँ इसमें भाग लेंगी ।

८ जनवरी, १९४२—भजन और गीत, श्री प्रणत बनर्जी और जंगबहादुर । महामारी (नाटिका), करे श्री एस० एन० तिवारी । ए० आर० पी० की सुनो हवाल (आल्हा), श्री नन्दकिशोर भट्ट । ख़बरें और मौसम का हाल ।

९ जनवरी १९४२—क़व्वाली, रिकार्ड । नात और क़व्वाली, श्री रहमतउल्ला और उनके साथी । रजिस्ट्री क़ानून, श्री इसरार-हुसेन । कताई और बुनाई, श्री विश्वनाथ-प्रसाद और चौधरी । देश-विदेश की बातें, श्री लपेटे और झपेटे । ख़बरें और मौसम का हाल ।

१० जनवरी, १९४२—भजन और गीत, श्री सुधा माथुर । बाँसुरी (नाटिका) श्री बुद्धिभद्र । बहिनो तुम्हार खत मिला, श्री पद्मा दीदी । ख़बरें और मौसम का हाल ।

११ जनवरी, १९४२—बच्चों की सभा, कालरा और चेचक के गीत, श्री दिलावर-हुसेन और उनके साथी । एक कहानी, श्री ए० आर० एल्वी । पूर्वी भजन, श्री रामजी-दास । तुम्हार खत मिला । दुनिया के हाल-चाल, श्री लपेटे और झपेटे । ख़बरें और मौसम का हाल ।

१२ जनवरी, १९४२—देहाती गाने, श्री जंगबहादुर । अनपढ़ की दुर्गति, श्री शान्ति-प्रसाद । गाँव के नाइट क्लब, पुस्तकालय और रीडिंग रूम, श्री हरिश्चन्द्र । ख़बरें और मौसम का हाल ।

१३ जनवरी, १९४२—आरती, रिकार्ड । कीर्तन और रामायण, श्री रामेश्वर वाजपेयी । प्रौढ़ तथा बाल-शिक्षा, श्री शालिग्राम चतुर्वेदी । फ़सलों के कीड़े, श्री बच्चालाल और मुमताज़अली । ख़बरें और मौसम का हाल ।

१४ जनवरी, १९४२—बच्चों की सभा, गुरु-दक्षिणा, श्री बुद्धिभद्र । लचारी और भजन, श्री रामेश्वर वाजपेयी । मकर-संक्रान्ति, श्री चन्द्रप्रकाश विद्यार्थी । दुनिया के हाल, श्री लपेटे और झपेटे । ख़बरें, मौसम का हाल तथा बाज़ार-भाव ।

१५ जनवरी, १९४२—भजन और गीत, श्री कृपाशंकर तिवारी । खींचातानी, श्री बृज-नारायण चौबे । मूली, श्री करतारसिंह और रामू । ख़बरें और मौसम का हाल ।

१६ जनवरी, १९४२—दादरा और गीत, श्री बलदेवप्रसाद श्रीवास्तव । मोनी अमावस्या (भाषण), श्रीरूपनारायण पाण्डेय । कुम्भ की झलक (नाटिका), श्री बुद्धिभद्र । बुदकि (कविता), श्री चन्द्रिकाप्रसादसिंह 'कौतुक' । ख़बरें ।

१७ जनवरी, १९४२—भजन और गीत, कुमारी कनकलता । नई बहुरिया, श्रीमती धानवती मिश्र और दीदी । अनमेल विवाह (कविता), श्रीमती धानवती मिश्र । तुम्हार खत मिला, श्री दीदी । ख़बरें ।

१८ जनवरी, १९४२—बच्चों की सभा, दुनिया का कारखाना, श्री काका । भजन और गीत, श्री मुरारीलाल । तुम्हार खत मिला । लड़ाई का हाल-चाल । ख़बरें ।

१९ जनवरी, १९४२—देहाती गाने, श्री जंगबहादुर । बीज-बोआई, श्री गंगाप्रसाद मिश्र । गाँवों की कहानी, श्री शिवबिहारी दीक्षित । ख़बरें और बाज़ार के भाव ।

२० जनवरी, १९४२—रामायण और कीर्तन, श्री शंकर शुक्ल । खेतों की चकबन्दी, श्री दलीपसेनसिंह । कुम्भ-यात्रा (भाषण), श्री बेनीप्रसाद वाजपेयी 'मंजुला' । देश-विदेश

की बातें, श्री लपेटे और झपेटे। खबरें और बाज़ार भाव।

२१ जनवरी, १९४२—बच्चों की सभा; ऋतु-ज्ञान, श्री चौधरी। स्वागत वसन्त! (कोरस-गीत), श्री गोमतीप्रसाद मिश्र। आवा वसन्त (कविता), श्री राजाराम शर्मा। खबरें और बाज़ार भाव।

२२ जनवरी, १९४२—वसन्त गीत और भजन, श्री रामजीदास। बहादुर किसान, श्री पी० डी० मिश्र। घर की देवी, श्री बेनीप्रसाद 'मंजुल'। खबरें।

२३ जनवरी, १९४२—क़व्वाली, रिकार्ड। नात और दादरा, श्री मुर्तुज़ाहुसेन। सहकारी सभाओं की जरूरत (भाषण), श्री आई० एन० मसावी। बन खेती, श्री लपेटे और झपेटे। लड़ाई के हाल-चाल (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे। खबरें।

२४ जनवरी, १९४२—पनघट, देहाती गाने, श्री मेनिका डे मलिक। पढ़इयो कि नाहीं (भाषण), श्री प्रकाशवती पाल। बहिनो तुम्हार खत मिला, श्री दीदी।

२५ जनवरी, १९४२—बच्चों की सभा; [illegible], श्री काका। भजन, रिकार्ड। गीत और [illegible], श्री रामआसरे शुक्ल। चैत अमावस्या (कविता), श्री जगन्नाथसिंह। तुम्हार खत मिला। लड़ाई के हाल-चाल, श्री लपेटे और झपेटे। खबरें।

२६ जनवरी, १९४२—सोज़ और नौहा, सैयद प्यारे नवाब। मुहर्रम (भाषण), श्री अमीन सालनवी। हरहों की नस-सुधार, श्री काका। खबरें और बाज़ार-भाव।

२७ जनवरी, १९४२—सोज़ और नौहा, श्री सैयद प्यारे नवाब। रात्रि-पाठशाला (बतकही), श्री चौधरी और काका। मासिया, सैयद क़यूम रज़ा। खबरें और बाज़ार-भाव।

२८ जनवरी, १९४२—बच्चों की सभा; [illegible] के अचरज, श्री मँझले भैया। सोज़ और नौहा, करबला, सैयद क़यूम रज़ा। देश-विदेश की बातें, श्री लपेटे और झपेटे। खबरें और बाज़ार-भाव।

२९ जनवरी, १९४२—देहाती गाने, श्री जंगबहादुर। संसार की कहानी, श्री नजमुद्दीन नदवी। सींग की कंघी, श्री लपेटे और झपेटे। बेटी का विवाह (कविता), श्री रमेशचन्द्र अवस्थी। खबरें।

३० जनवरी, १९४२—नात (रिकार्ड)। क़व्वाली और गीत, श्री मुर्तुज़ाहुसेन। दाँतों की हिफ़ाज़त (भाषण), एक डाक्टर। कपास का कीड़ा, श्री रामू और झपेटे। लड़ाई के हाल-चाल, श्री लपेटे और झपेटे। खबरें।

३१ जनवरी, १९४२—पनघट, रामायण और गीत, श्री सुशीला विद्या और उनकी पार्टी। बुन्ला (भाषण), श्री सावित्री खन्ना। बहिनो तुम्हार खत मिला, श्री दीदी।

किसान के प्रति

श्रीयुत श्रीभागवत मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी० चेयरमैन, आर० डी० ए०, ग़ाज़ीपुर

अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥
खेतों में मेड़ें बनवाकर,
मेस्टन हल से जोत-जोतकर,
उन्नतशील बीज सब बोकर,
खाद डालकर सींच-सींचकर,
तू अच्छी फ़सल उगाया कर।
जब पके, तभी कटवाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥१॥

अपने घर सुन्दर बनवा ले।
हवादार खिड़की लगवा ले॥
चिकनी मिट्टी से पुतवा ले।
झाड़ दे नित साफ़ करा ले॥
तू सच्ची सीख सिखाया कर।
तू सबको राह दिखाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥२॥

गलियों में ईंटें बिछवा दे।
जहाँ-तहाँ सोख्ते बनवा दे॥
खादों के गड्ढे खुदवा दे।
खेतों में उनको रखवा दे॥
तू अपने रोग भगाया कर।
तू सबको स्वस्थ बनाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥३॥

तू हिसार से साँड़ मँगा दे।
गोवों की नस्लें सुधरा दे॥
दूध, दही की नदी बहा दे।
गाँवों को बैकुण्ठ बना दे॥
तू पी पी दूध पिलाया कर।
घी खा, खा दही, खिलाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥४॥

कूओं को पक्के बनवा ले।
जगतें उनकी टीक करा ले॥
पानी की नाली बनवा ले।
मेहँदी की टट्टी लगवा ले॥
तू निर्मल नीर भराया कर।
जल सबको स्वच्छ पिलाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥५॥

तू गाँव-गाँव स्कूल बना दे।
सबको साक्षर, सुपढ़ करा दे॥
ऊँच, नीच का भेद मिटा दे।
आपस का विद्रोह हटा दे॥
तू सबमें प्रेम बढ़ाया कर।
हँस-हँस खूब हँसाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥६॥

श्रम का सबको पाठ पढ़ा दे।
तू धंधे, उद्योग सिखा दे॥
घर घर तू चर्खे चलवा दे।
तू बुनना, बिनना सिखला दे॥
तू कपड़े स्वयं बनाया कर।
तू घर भर को पहनाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥७॥

बाग़, बग़ीचे तू लगवा ले।
ईंधन के भी पेड़ उगा ले॥
कसरतखाने भी बनवा ले।
जीवन सुखमय सरल बना ले॥
तू दुख-दारिद्र भगाया कर।
तू मन से मैल मिटाया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥८॥

सहकारी संस्था खुलवाकर,
बन सदस्य, सबको बनवाकर,
गृह पंचायत का रचवाकर,
बार-बार जलसे करवाकर,
सबको स्वधर्म सिखलाया कर।
तू धन का मर्म बताया कर॥
अपना हल आप चलाया कर।
तू अन्न खूब उपजाया कर॥९॥

प्रान्त के कोने-कोने से

कुमायूँ में ऊनी उद्योग

आज से लगभग ३ वर्ष पूर्व कुमायूँ में ऊनी उद्योग प्रारम्भ हुआ। कुमायूँ के प्रत्येक भाग में आज इस उद्योग का दिन-प्रतिदिन प्रचार हो रहा है। इस उद्योग का एकमात्र उद्देश्य दीन ग्रामनिवासियों की आर्थिक उन्नति करना ही है। इसके लिए उद्योग-विभाग सतत प्रयत्न कर रहा है और आशा है कि निकट भविष्य में ही कुमायूँ की जनता स्वावलम्बन-द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक होगी। बहुत-सी सोसाइटियाँ आपरेटिव बेसिस पर इस कार्य को कर रही हैं। बहुत-से लोग ऊन कातकर अपनी आजी-विका उपार्जन करने लगे हैं, जनता बड़े उत्साह से इस कार्य में भाग ले रही है। निकट भविष्य में ही, यह आशा है कि प्रत्येक कुमाऊनी इस उद्योग से अधिकाधिक लाभ उठाने में समर्थ हो सकेगा। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि आज केवल इसी उद्योग द्वारा कुमायूँ यत्र-तत्र ख्याति प्राप्त कर रहा है। इस उद्योग-द्वारा निर्मित वस्त्र, पट्टू, पंखी, कम्बल और थुल्मे आदि का सभी लोग सम्मान कर रहे हैं। आज देश की दृष्टि इस उद्योग की ओर आकर्षित हो रही है। उत्त-मोत्तम डिज़ाइन के वस्त्र बनाने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है। कुमायूँ के इस उद्योग की सफलता के लिए प्रत्येक युक्त-प्रान्तीय और भारतीय का कर्त्तव्य है कि वह कुमायूँ के बने हुए ऊनी वस्त्रों को अपनाकर उनके प्रचार में सहायक हो जिससे शीघ्रातिशीघ्र वह स्वर्ण सुयोग प्राप्त हो कि ऊनी वस्त्रों की सम्पूर्ण आवश्यकताओं को कुमायूँ ऊनी उद्योग पूर्ण कर सके और बहुत ही सस्ते मूल्य पर वस्त्र प्राप्त हो सकें। हमें यह स्मरण रहे कि इस उद्योग की उन्नति हमारे देश की ही उन्नति है। आपका सहयोग अनिवार्य है।

जिन सज्जनों को ऊनी वस्त्र मँगाने हों वे निम्नलिखित पते से पत्र-व्यवहार करें :—

—सेल्स मैनेजर,
कुमायूँ ऊनी कारोबार,
अल्मोड़ा

ग्राम-सुधार-प्रदर्शनी वीसलपुर, ज़िला पीलीभीत

ज़िला पीलीभीत में वीसलपुर रामलीला के मेले के समय पर २८ सितम्बर से पहली अक्टूबर तक एक ग्राम-सुधार-प्रदर्शनी की गई। प्रदर्शनी छोटी होते हुए भी जितनी ज़्यादा लाभ-प्रद और खूबसूरत बनाई जा सकती थी बनाई गई। कुल ख़र्च इस प्रदर्शनी पर सिर्फ़ २५०) रु० हुआ, जिसमें से २००) मह-कमा ग्राम-सुधार से मिला और ५०) वीसलपुर की रामलीला कमिटी ने प्रदान किया।

यह प्रदर्शनी कई विभागों में विभाजित की गई थी। कृषि-विभाग में हर प्रकार के उन्नतिशील हल व अन्य खेती के औज़ार प्रदर्शित किये गये थे जो कि किसान भाई खुद ख़रीदकर या जीवन-सुधार-सभाओं के ज़रिये इकट्ठे होकर ख़रीदकर इस्तेमाल करके फ़ायदा उठा सकते हैं। चकबन्दी या खेतों के इकजाई होने के फ़ायदे, फ़सलों का हेर-फेर, आबपाशी करते समय पानी के उचित इस्ते-माल के फ़ायदे, उन्नतिशील बीज बोने के फ़ायदे इत्यादि भली भाँति प्रदर्शित किये गये।

गन्ने के विभाग में ऊख के बारे में सभी बातें दिखाई गईं। पेड़ी रखने से नुक़सान, ऊख की कई बीमारियों की पहचान व उनके कारण और इलाज, लाइनों में बोने के फ़ायदे और कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि जिससे किसान उतने ही गोबर से कई गुनी खाद तैयार कर सकें।

जंगल व चारा-विभाग में यह प्रदर्शित किया गया था कि किसान अपने गोबर को खाद के लिए अपने खेतों में लकड़ी पैदा करके किस प्रकार बचा सकता है और साथ ही साथ अपने रोज़ के काम के वास्ते लकड़ी भी हासिल कर सकते हैं। इन्हीं खेतों से अपने जानवरों के वास्ते चारे का कैसे प्रबन्ध भी हो सकता है और खेतों को बरसाती पानी व नदी-नालों के कटान से कैसे बचा सकते हैं।

स्वास्थ्य-विभाग में चार्टों व लकड़ी के बने हुए माडेलों इत्यादि के ज़रिये बीमारियों के फैलने के कारण, उनसे बचाव व इलाज और गाँव की सफ़ाई पर काफ़ी आकर्षित प्रदर्शन था।

जानवरों में बीमारियाँ फैलने के कारण व बचाने के उपाय दर्शाये गये। फुटवाथ, चारा रखने की तरकीब और अच्छी सालें बनाने की तरकीबें बनाकर दिखलाई गईं।

कृषि-इंजीनियरिंग-विभाग में कुओं में आबपाशी के वास्ते बोरिंग के फ़ायदे, हर क़िस्म के रहट इत्यादि प्रदर्शित किये गये।

उपरोक्त वर्णित विभाग, अपने-अपने विभागों के अफ़सरों की देख-रेख में किसानों को हर समय सब बातें बतलाते रहे।

प्रदर्शनी के दूसरे भाग में दस्तकारी का विभाग जिसमें कालीन व निवाड़ व कम्बल इत्यादि बुनकर प्रदर्शित किये जा रहे थे और देहातों की कला-कौशल की वस्तुएँ एक अलग शामियाने में प्रदर्शित की गई थीं।

शिक्षा-विभाग में बेसिक शिक्षा, लड़कियों के स्कूलों की कला-कौशल और अन्य शिक्षा की वस्तुओं का भली भाँति प्रदर्शन किया गया।

जच्चा-बच्चाविभाग में मिडवाइफ़ चार्टों के ज़रिये देहाती औरतों को शिक्षाप्रद औरतों से सम्बन्ध रखनेवाली बातें बताने को हर वक्त उपस्थित थीं।

प्रदर्शनी में विशेष वस्तु एक नमूने का घर था जो कि पूरे मकान का चौथाई बनवाया गया था जिसमें जानवरों को रहने की जगह से अलग रखने का इन्तज़ाम, खिड़की, रोशन-दान, दरवाज़े, रसोई, बैठक या चौपाल, सोने का कमरा, जानवरों की साल और घर

के अन्दर फूल-पत्ती व तरकारी बोने के लिए उचित स्थानों का इन्तज़ाम किया गया। बहुत से किसान और ज़मींदार साहबान तो इस क़दर आकर्षित हुए कि इस मकान के नक़शे और तखमीना पूछकर साथ ले गये।

पास ही में एक गाँव बसाकर दिखाया गया था जिसमें पंचायतघर का स्थान, कुआँ, खेल का मैदान, रास्ते व गलियों की तरतीब, सोख्ते गड्ढे, खाद के गड्ढे, जानवरों के बाँधने का स्थान और खेतों की तरतीब दिखाई गई थी।

फल-उन्नति-विभाग में बाग़ लगाने की सब विधियाँ बाग़ों में पेड़ों के बीच तुरशावा इत्यादि भरने का उपाय, उचित रूप से पेड़ों को सींचने के उपाय तथा क़लमें बाँधने के तरीक़े, माडेल, चार्ट व रंगीन काग़ज़ के बने पेड़ों से पृथ्वी पर प्रदर्शित थे।

गुड़ बनाने के लिए उन्नतिशील भट्ठियों का भी प्रदर्शन किया गया। गुड़ बनाकर न दिखाया जा सका क्योंकि अभी गन्ना कच्चा था।

एक ग्राम-सुधार लाइब्रेरी व एक दवा का बक्स जनता के इस्तेमाल को हर वक्त खुले रहते थे।

प्रदर्शनी के बीच में एक बड़े शामियाने के नीचे रेडियो, भजनमंडली, मैजिक लालटेन इत्यादि का दिन भर व रात के ११ बजे तक जनता के मनोरंजन के लिए इन्तज़ाम किया गया था।

इस प्रदर्शनी को क़रीब साठ हज़ार स्त्री-पुरुषों ने देखा।

---बेदानन्द वर्मा,

ज़िला ग्राम-सुधार-इन्सपेक्टर।

गाँव कंचनपुर (मटियारी) का वार्षिक कार्य-विवरण

कंचनपुर मटियारी सदर मुक़ाम से लखनऊ बाराबंकी की पक्की सड़क पर सात मील पर बाईं तरफ़ स्थित है। यहाँ की जीवन-सुधार-सभा रजिस्टर्ड है। वर्तमान पंचायत का चुनाव २८ अगस्त सन् १९४१ ई० को हुआ था। इस कार्यकाल में पंचायत की १८ मीटिंग्स व ८ आम मासिक जलसे हुए। इस प्रकार कुल २६ मीटिंगें हुईं।

इस पंचायत ने दो महत्त्वपूर्ण व संगीन मुक़दमों के फ़ैसले किये जो सन् १८७९ ई० से मतलब रखते थे व छोटे-छोटे अन्य बहुत से फ़ैसले मुक़दमों के किये। इस गाँव में इस वर्ष किसी भी प्रकार की चोरी नहीं हुई।

होली व दिवाली के अवसर पर गाँव में प्रत्येक मकान व जगह की साल में दो बार सफ़ाई हुई। गाँव के मकानों की दीवालों पर छोटे-छोटे मतलब से पूर्ण वाक्य लिखे गये। इस वर्ष तीन कुओं की जगत बनी, दो सुअर-बाड़े गाँव के बाहर बनवाये गये, दो नये पक्के कुएँ बनवाये गये, और पक्की सड़क लखनऊ बाराबंकीवाली से गाँव तक क़रीब ६ फ़र्लांग का कच्चा रास्ता १० फ़ीट चौड़ा बनाया गया। गाँव से ५६ घूरे हटवाये गये और गाँव के बाहर गड्ढे खोदकर रक्खे गये।

गाँव में एक रात्रि-प्रौढ़-पाठशाला व एक कन्या-पाठशाला खोली गई। इसमें एक अच्छी तादाद में प्रौढ़ औरतें व लड़कियाँ शिक्षा पाती हैं। एक स्काउट ट्रूप १८ प्रौढ़ों का बनाया गया। स्काउट ट्रूप को ड्रिल, शारीरिक कसरतों, फ़र्स्ट एड व कोमलपद की शिक्षा दी गई। स्काउट ट्रूप समय-समय पर पंचायत व गाँव के कामों में हाथ बँटाता रहा। फ़ुटबाल व वालीबाल क्लब्स क़ायम किये गये। इसमें गाँववाले काफ़ी उत्साह से खेलते-कूदते हैं। क्लब में हर एक खेलनेवाले से एक आना माहवारी चन्दा लिया जाता है। गाँव में एक अखाड़ा बनाया गया जिसमें कि गाँव के बालक व प्रौढ़ दोनों आ करके काफ़ी दिलचस्पी लेते व कुश्ती लड़ते हैं।

इस गाँव की जीवन-सुधार-पंचायत के द्वारा १८ उमदा खाद बनाने के गड्ढे खोदे गये तथा पशुओं की नस्ल सुधारने के लिए एक साँड़ रक्खा गया। २० मेस्टन हल और एक चैफ़ कटर का प्रयोग होता रहा। एक अकोला हो इस वर्ष गाँव की पंचायत से मँगाया गया। ७० फलदार पेड़ लगवाये गये। पंचायत के स्टोर में २२।ऽ।।— बेसारह सवाई पर उठाने के लिए मौजूद है। इस गाँव में सब उन्नतिशील बीज बोये जाते हैं।

गाँव की पंचायत सुचारु रूप से काम कर रही है। गाँव में रेडियो ग्राम-सुधार मुहक़मे की तरफ़ से है जिसे कि करीब-करीब रोज ४० से ५० आदमी तक सुनने के लिए इकट्ठा होते हैं। यहाँ पर एक ग्राम-सुधार मुहक़मे की लाइब्रेरी है जिसमें कि पढ़नेवालों की संख्या इस वर्ष काफ़ी अच्छी रही है।

---कामताप्रसाद चतुर्वेदी

बनारस में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग-दिवस

निश्चित कार्य-क्रम के अनुसार १-११-४१ को बनारस ज़िले की सभी सहयोग-समितियों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग-दिवस मनाया गया।

ज़िला सहयोग-समितियों और व्यक्तिगत सहयोगियों का तत्सम्बन्धी एक खुला अधिवेशन, श्री रामनाथ जी आग़ा (असिस्टेंट रजिस्ट्रार) के सभापतित्व में चौबेपुर केन्द्र पर हुआ। इस अवसर पर एक सुन्दर किसान-प्रदर्शनी सजाई गई थी और स्कूल के बच्चों एवं प्रौढ़, युवकों का टूर्नामेंट और ग्रामीणों का दंगल भी रचाया गया था।

---हरिदास 'सहयोगी'

संयुक्त मंत्री, सहयोग-मंडल

चौबेपुर, काशी।

बनारस गुलदाउदी-प्रदर्शनी

बनारस गुलदाउदी-प्रदर्शनी ता० ६ व ७ दिसम्बर सन् १९४१ ई० को मिन्टो हाउस के बाग़ में डा० एस० एस० नेहरू, सभापति बनारस गुलदाउदी कमेटी के अधिपतित्व में मनाई गई। बनारस की जनता बड़ी संख्या में उपस्थित थी, और प्रदर्शनी में दिलचस्पी ली। फूल अधिक संख्या में आये थे, जो कि बनारस के लिए गौरव-पूर्ण बात है। फूलों का निरीक्षण डा० आर० डी० फ़ोर्डहम, डिप्टी

डाइरेक्टर गार्डन्स, यू० पी० तथा श्री ज़ुहेर रेकेन नक़वी और श्री तेजसिंह चौहान सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेंट गार्डन्स फ़ैज़ाबाद व इलाहाबाद ने किया। श्रीमती नेहरू जी ने अपने कर-कमलों से जीतनेवालों को पुरस्कार प्रदान किया।

पुलिस बैन्ड ने प्रदर्शनी को और भी मनोहर बना दिया था।

मुख्य-मुख्य इनाम पानेवालों के नाम निम्नलिखित हैं :—

१—श्रीमती आर० डी० नेहरू

२—नन्देसर गार्डन्स

३—म्युनिसपल गार्डन्स

४—मि० फिनले, कलेक्टर बनारस

५—मि० पीटर्स, प्रेसिडेन्ट कौंसिल-आफ़ एडमिनिस्ट्रेशन, बनारस-स्टेट

६-मि० एम० बी० एल० माथुर, सुपरिन्टेन्डेन्ट वाटर-वर्क्स, बनारस

७-मि० हाक्सवर्थ, सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल

८-विक्टोरिया पार्क

९-महाराज कुमार बहादुर विजयानगरम्

१०-बनारस क्लब इत्यादि-इत्यादि।

—एच० आर० सूद,
आनरेरी सेक्रेटरी।

सेन्ट्रल कोआपरेटिव बैङ्क लिमिटेड, मोहनलालगंज

इस साल (१९४०-४१) बैंक के हिस्सेदारों की संख्या २१० हो गई है, जिनमें ९७ शख़्सी हिस्सेदारान, १०७ प्रारम्भिक क़र्ज़ावाली सोसाइटियाँ, ३ सेन्ट्रल सोसाइटियाँ, १ ग़ैर ज़राअती प्रायमरी सोसायटी और दो आबपाशी सोसाइटियाँ हैं। पिछले साल शख़्सी हिस्सेदारों की संख्या ९५ थी। इस साल दो नये शख़्सी हिस्सेदारान का और इज़ाफ़ा हुआ। प्राइमरी सोसाइटियों की तादाद पिछले साल १०५ थी, इस साल २ सलाली व गढ़ा रुस्तम नम्बर २ नई सोसाइटियाँ रजिस्टर्ड हुईं। कालयान खेड़ा व छतौनी सोसाइटियों को रजिस्टर्ड हुए क़रीब ८ साल हो गये। हर साल उनमें काम शुरू करने की भरसक कोशिश की जा रही है पर अब तक उनमें कोई काम शुरू न हो सका और न आगे इसमें काम शुरू होने की कोई उम्मीद दिखाई देती है। इस साल कुछ सोसायटियाँ ग्राम-बैंकों में तब्दील हो गई हैं और कहीं-कहीं की बेटर लीविंग सोसाइटियाँ व प्रौढ़-पाठशालायें भी ग्राम-बैंकों में शामिल हो गई हैं। इससे आशा है कि अब ये ग्राम-बैंक क़र्ज़े के अलावा अपने दीगर सुधार के कामों में भी तरक्क़ी करेंगे।

इस साल बैंक का कारोबारी सरमाया १,३६,२५३) है जिसमें २४,३५१) सरमाया हिस्सा ७२,००३) शख़्सी अमानत और २०,०५२) सोसाइटियों व बैंकों की अमानतें, १४,४०२) बचत की पूँजी और ५,४४५) दीगर फंड्स के शामिल हैं। पिछले साल कारोबारी सरमाया १,३६,९६१) था जो इससे पहले साल १,४४,३८३) था। इससे प्रकट है कि पिछले साल कारोबारी सरमाये में क़रीब ७,४००) की कमी हुई और इस साल भी बमुक़ाबिले पिछले साल से क़रीब ७००) के कारोबारी सरमाया में कमी हुई। पिछले साल इस क़दर कमी होने की वजह यह थी। कि क़रीब ४,०००) शख़्सी अमानतें वापस की गईं और प्रायमरी सोसाइटियों ने अपनी अमानत में से क़रीब २,५००) रुपया निकालकर यूनियनों में बतौर मुस्तक़िल अमानत जमा कर दिया और इस साल कम होने की वजह यह है कि कुछ रुपया तो फंडों में कम हो गया, दूसरे पिछले सालों की तरह प्रायमरी सोसाइटियों ने अपनी अमानत का रुपया निकालकर ज्यादा सूद पाने की ग़रज़ से यूनियनों या दीगर सोसायटियों में लगा दिया है। इस प्रकार सोसायटियों की अमानतें दिन पर दिन कम होती चली जा रही हैं। बैंक के दीगर फंड्स में भी इस साल क़रीब ७८४) की कमी हुई। बैंक का निजी सरमाया ४४,१९८) है जो कि कारोबारी सरमाये का ३२३/८ प्रतिसैकड़ा है। पिछले साल निजी सरमाया कारोबारी सरमाया का ३२१/२ प्रतिसैकड़ा था, यानी इस साल पिछले साल से क़रीब १/१० प्रतिसैकड़ा कम हो गया।

सीड-स्टोर, संडीला बैंक व टूटी हुई सोसाइटियों पर लगे हुए रुपये में काफ़ी रुपये ऐसे हैं जिसके नाक़ाबिल वसूल होने का अन्दाज़ा है। इसके अतिरिक्त चलतू सोसाइटियों के लिए भी यह नहीं कहा जा सकता कि उनपर लगा हुआ सब रुपया सुरक्षित है। साल ३९-४० में टूटी हुई सोसायटियों का क़र्ज़ा बट्टाखाता फंड से १,१६८) निकालकर पूरा किया गया था। और इस साल भी बट्टाखाता फंड से ७२३) निकालकर नाक़ाबिल क़र्ज़ों को पूरा किया। इससे ज़ाहिर होता है कि बैंक को हर साल कुछ न कुछ रुपया बट्टाखाता में सालाना पड़ता है। इसलिए बैंक की माली हालत सुधारने के लिए फंडों को मज़बूत बनाने और उनमें से बहुत सोच-समझकर ख़र्च करने की ज़रूरत है।

—बलदेवप्रसाद अवस्थी।

आज़मगढ़ में सहयोग-दिवस

पहिली नवम्बर सन् ४१ को कोइलसा में श्री ठा० रामदेवसिंह के सभापतित्व में 'सहयोग-दिवस' मनाया गया। उपस्थिति लगभग ६०० के थी जिसमें समीपवर्ती सहयोगी सभाओं के मेम्बर तथा अन्य गण्य-मान्य पुरुष उपस्थित थे। सहयोग तथा कृषि-विभाग के कर्मचारियों के अतिरिक्त अन्य माननीय पुरुषों के व्याख्यान हुए। अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग-समिति लन्दन की ओर से भेजा हुआ प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। जलसे की सफलता के लिए ज़िले के सहयोग-विभाग के कर्मचारियों का उत्साह सराहनीय है।

कोआपरेटिव केन डेवलपमेंट यूनियन लिमिटेड गौर (बस्ती)

ता० १ नवम्बर सन् १९४१ ई० को दिन के क़रीब ३ बजे यूनियन गौर के दफ़्तर

में ठाकुर उमाशंकर जी डाइरेक्टर के सभापतित्व में सहयोग-दिवस मनाया गया।

जनता को बतलाया गया कि सहयोग की नींव कैसे पड़ी तथा ऐसे असमय में सहयोग क्या महत्त्व रखता है और सहयोग की हर स्थान पर क्या आवश्यकता है।

—गुरु प्रतापनारायण गुप्ता।

ग़ाज़ीपुर में ग्राम-सुधार

इस ज़िले में १७ केन्द्रों पर ग्राम-सुधार कार्य हो रहा है। हर केन्द्र में औसतन १० जीवन-सुधार-सभायें बनाई जा चुकी हैं जिनकी रजिस्ट्री भी कराई जा चुकी है। एक केन्द्रीय संघ (सर्किल यूनियन) का भी संगठन हो चुका है और इसकी भी रजिस्ट्री कर ली गई है।

कृषि की उन्नति के लिए ६ सरकारी बीज-गोदाम खोले जा चुके हैं। इनके द्वारा गाँवों में उन्नतिशील बीजों और गन्नों का काफ़ी प्रचार कराया गया है। "बासूंपुर" में सहकारी ढंग पर उन्नत खेती का प्रचार कराया गया है और इसके लिए एक सहयोग-समिति बना दी गई है।

लुप्त उद्योग-धन्धों को फिर से चलाने की कोशिश की जा रही है। कई केन्द्रों पर कम्बल बनाने और कताई-बुनाई करने का काम हो रहा है। गुड़-निर्माण का कार्य भी बड़े ज़ोरों से हुआ है। अनेक उन्नतिप्राप्त कोल्हू तकावी पर दिये गये हैं और बहुतेरी उन्नतिप्राप्त भट्ठियाँ बनवाई गई हैं।

ज़िले के १४ मुख्य स्थानों पर स्काउटिंग और प्रौढ़-शिक्षा-सम्बन्धी शिविर खोले गये हैं जहाँ समुचित ट्रेनिंग दी जाती है और फ़ौजी, फ़िज़िकल और देशी कसरतें सिखाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त ३ बालिका-पाठशालायें भी चल रही हैं। मनोरंजन के लिए एक दर्जन पंचायती भवन व बालचर-सभायें बनाई गई हैं। ५ पुस्तकालय और वाचनालय खोले गये हैं।

—रामनिरंजनलाल, इन्स्पेक्टर ग्राम-सुधार-विभाग, ग़ाज़ीपुर

तहसील 'हसनपुर' ज़िला मुरादाबाद में ग्राम-सुधार-सभा

गत १३ सितम्बर सन् १९४१ ई० को तहसीली स्कूल हसनपुर में ग्राम-सुधार की एक साधारण सभा चेयरमैन साहब ग्राम-सुधार-संघ, मुरादाबाद के सभापतित्व में हुई जिसमें तीनों केन्द्रों के बहुत-से ग्राम-सेवक, पंच, सरपंच, ज़मींदार, मुखिया आदि सम्मिलित हुए। सभा में ग्राम-सुधार की प्रचार-गाड़ी, जिसमें लाउड स्पीकर लगा हुआ था, आई थी और एक यू० पी० की भजनमंडली और एक मंडली गुजरौला केन्द्र, ज़िला मुरादाबाद की शरीक हुई थी।

सभा की कार्यवाही स्कूल के छात्रों की प्रार्थना के द्वारा प्रारम्भ हुई। इसके बाद सभापति महोदय ने एक संक्षिप्त परन्तु सारगर्भित भाषण किया और अपना स्थान बाबू छोटेलाल जी असिस्टेंट डी० ओ० एच०, मुरादाबाद को देकर चले गये। पहले आर० डी० भजनमंडली, यू० पी० ने प्रचारगीत सुनाये, फिर ब्वाय स्काउट की ओर से जनस्वास्थ्य पर एक नाटक खेला गया और संवाद सुनाये गये। फिर सफ़ाई पर दो छात्रों ने मिलकर एक कविता पढ़ी जिसके बाद ग्राम-सुधार-इन्स्पेक्टर ने अपने भाषण में ग्राम-सुधार के कार्यों का उल्लेख करते हुए किसानों को बताया कि स्वालम्बन का अर्थ क्या है और गाँव का सच्चा सुधार कैसे हो सकता है? सरकारी सहायता किन कामों में कितनी और किस प्रकार दी जा सकती है और गाँव का सुधार करने में उनका अपना क्या कर्त्तव्य है? उनके बाद बाबू छोटेलाल का भाषण हुआ और सभा की कार्यवाही यू० पी० भजनमंडली के गानों के साथ समाप्त हो गई।

गाँव के गीत

लेखक, श्रीयुत कपिलदेव श्रीवास्तव 'निरक्षर'

जब हम खरिहान रखाइत है।
कुछ राति बिते हमहूँ दादा,
खा-पी के छुट्टी पाइत है।
दादा तनिका आराम करैं,
हम हुक्का दौरि चढ़ाइत है।
दुइ फूँक तमाखू पी-पी के, हम, दादा दूनौं जाइत है।
जब माघ-पूस में बाबू लोगे,
तानि रजाई सोवत हैं।
तौनेउ पर जाड़ न छोड़ै,
अपने जनम क बैठे रोवत हैं।
हम दादा पुअरा ओढ़ि-ओढ़ि कै, जाड़उ के डेरवाइत है।
गर्मी में बन्द बयारि होइ,
पंखउ सब उगिलै लगैं आगि।
हैरान राति भर रहैं लोग,
एकौ छन आँखि न सकै लागि।
पैरे पर हम गमछा बिछाइ,
खुब चैन क बंसी बजाइत है।
खरिहानै में जब कबहु कबहु
पानी यक लहरा आइ जाइ।
कमरी, लाठी, सब लिहे दिहे—
"नटवा" के घर जाई पराइ।
तब गोरू एकौ आइ गये पै,
उहीं से हाँक लगाइत है।
हर साल, सब दिनै, इही तरह से,
हम खरिहान रखाइत है।
सब सोइ जायँ जब जाइत है।
लोहा लगतै उठि जाइत है।
लेकिन चौअन के डर के मारे,
दिन निकरे घर आइत है।

(यह देहाती कविता लेखक ने हल के लिए विशेष रूप से लिखी है। यह शुद्ध जौनपुर ज़िले की देहाती भाषा में लिखी गई है।)
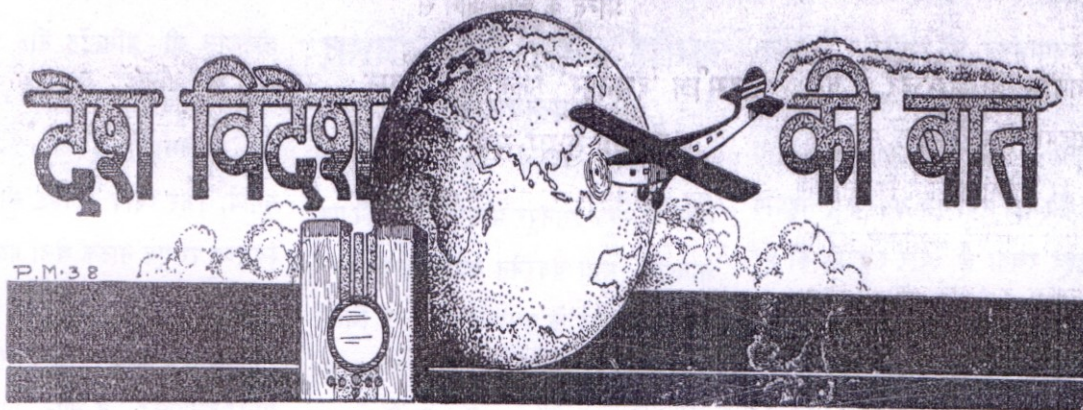
संसार का संक्षिप्त घटनाचक्र

लेखक, रायबहादुर पण्डित शुकदेवबिहारी मिश्र

अपना इस विषयवाला गत लेख मैंने २० नवम्बर को लिखा था और आज ठीक ३० दिनों के पीछे यह लेख लिख रहा हूँ। इस महीने में हमारा घटनाचक्र बड़ी ही तेज़ी से धावित हुआ है। जापान ने बिर्तानिया तथा संयुक्त-राज्य अमरीका से युद्ध ७ दिसम्बर हाल से ठान दिया। एक ओर तो अमरीका से शान्ति की बातें होती रहीं तथा दूसरी ओर यकायक धावा करके उसने अमरीका के जल-दल एवं पर्ल बन्दर को भारी हानि पहुँचा दी। उधर थाइस्तान (स्यामदेश) उसी से मिल गया। अतएव अब युद्ध सीधा-सीधा रूस, ब्रिर्तानिया तथा अमरीका से जर्मनी, जापान और इटली का हो रहा है। जापानी मलयवाले धावे से संग्राम भारत के भी अति निकट आगया है तथा बर्मा के एक छोटे से भाग पर जापानी धावा हो ही चुका है अथ च आगे-पीछे बर्मा पर यह युद्ध बढ़ेगा ही। कलकत्ते पर भी जापानी हवाई धावा बहुत सम्भव है तथा वहाँ से हज़ारों आदमी भाग रहे हैं। भारत के इतर स्थानों पर भी बहुत कुछ सनसनी है, यद्यपि होनी न चाहिए थी। स्वयं हमारे जंगी लाट वावेल महोदय ने इस विषय पर धीरज बँधवाया है। अब तक भी भारत में युद्ध के प्रतिकूल कोई विशेष प्रयत्न किसी ने नहीं किया था, तथा फ़ौजी भर्ती के लिए समुचित संख्या में लोग मिल ही रहे हैं। भारतीय शिल्प-सम्बन्धी प्रयत्न युद्धसामग्री के लिए पूर्ण सहयोग के साथ चल रहा है तथा सधन भारतीय सौ में प्रायः ९५ सरकार के पक्ष में हैं। फिर भी मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस का सहयोग सरकार को अभी पूरा-पूरा या कुछ भी प्राप्त नहीं है। समझा ऐसा जाता है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों प्रचुर संख्या में इन दोनों संस्थाओं के पृथक् कारणों से अनुयायी हैं। मुस्लिम लीग का विचार है कि सरकार हिन्दुओं को अभी काफ़ी नहीं दबाती। उधर बहुतेरे हिन्दू समझते हैं कि सरकार खुली-खुली मुसलमानों के पक्ष में है तथा देश को स्वराज्य किसी दशा में नहीं देना चाहती। सरकार का कहना है कि हिन्दू-मुसलमान यदि आपसी मेल कर लेवें, तो उसे स्वराज्य देने में कोई आपत्ति नहीं। उधर मुसलमान यद्यपि संख्या में प्रायः पंचमांश हैं, तथापि ऊँची राजनीति में बिना प्रायः आधा भाग पाये उन्हें संतोष नहीं। हिन्दू तिहारा भी देना नहीं चाहते। मुसलमानों को सरकार से यही द्वेष है कि वह उनकी इच्छा के अनुसार निर्णय क्यों नहीं कर देती? उधर हिन्दू समझते हैं कि बिना ठीक न्याय किये सरकार मुसलमानों को तिहारा भाग ज़बरदस्ती दे रही है और प्रायः इससे भी अधिक देती है। लीगी मुसलमानों के नेता जिन्ना महोदय यह भी कहते हैं कि सरकार असल में वास्तविक अधिकार देना नहीं चाहती और केवल ढकोसलेबाज़ी कर रही है। उधर बहुतेरे हिन्दुओं का विचार है कि कहने को तो सरकार हिन्दू-मुस्लिम मेल के अभाव का कथन कहती है किन्तु वास्तव में वही स्वार्थान्धता के कारण इन दोनों को चिरकाल से लड़ाती आई है। इतना तो हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा है जो अभी तक तय नहीं हुआ है।

दूसरा प्रश्न सम्पत्ति, समाज और समतावादों का है। सम्पत्तिवादी यह चाहते हैं कि सरकारी प्रबन्ध और कर-नियन्त्रण इस प्रकार से हों कि वह सभी पर प्रायः बराबर बैठें। समाजवादी ऐसा सोचते हैं कि धनिकों पर न्यूनाधिकरीत्या अधिक टिकस बैठे, क्योंकि उनके पास धन विशेष है। समतावादी यह सोचते हैं कि सब लोग मिलकर काम करें तथा जितनी आय हो वह सबमें बराबर बट जावें। बीमारों, अशक्तों, बच्चों आदि के अधिकार भी वे कार्यकर्त्ताओं के ही बराबर मानते हैं। दो एक उदाहरणों से यह मामला अधिक साफ़ हो जावेगा। नमक पर जो महसूल लगता है वह सम्पत्तिवादियों के अनुकूल है, क्योंकि अमीर-ग़रीब सभी लवण प्रायः बराबर खाते हैं। इन्कम टैक्स (आय पर टिकस) सम्पत्तिवादियों के प्रतिकूल है क्योंकि वह ग़रीबों पर बिलकुल नहीं लगता। पूरा साम्यवाद तो कहीं नहीं चलता, किन्तु रूस में इसका प्रचार अन्य सभी देशों से बहुत अधिक है। वास्तव में सारे देश समाजवादी हैं, क्योंकि सभी सम्पत्तिमान् लोग भी न्यूनाधिकरीत्या धन पर कर देने को तैयार ही हैं तथा पूरे साम्यवाद का न तो कहीं प्रचार है, न कोई उसके लिए लड़ने को प्रस्तुत है। जिन देशों में सम्पत्ति पर कर कुछ कम है वे सम्पत्तिवादी कहलाते हैं तथा जिनमें साम्य से निकट कर-विधान है वे समतावादी माने जाते हैं। फ़्रांस में वर्तमान युद्ध के पूर्व सम्पत्ति और साम्यवादियों का प्रायः बराबर बल था, जिससे वह ठीक प्रकार से युद्ध बिलकुल न कर सका और गिर गया। रूस में साम्यवाद प्रबल था जिससे उसने करारा युद्ध किया। भारत में प्रायः सन् १९१० पर्यन्त सम्पत्तिवादियों का पूर्ण बल था, किन्तु वे जनता के नाम पर सरकार से अधिकार-वृद्धि माँगा करते थे। उधर सरकार कहती थी कि जनता पर तुम्हारा प्रभाव ही क्या है? तुम तो जनता के नाम पर अपना मतलब बनाना चाहते हो। बात भी बहुत कुछ यही थी। धीरे-धीरे बहुतेरे नेता ऐसी बात करने लगे जिससे जनता पर अधिकाधिक प्रभाव बढ़े। इन प्रयत्नों से साम्यवाद की बातों का मान देश में बढ़ने लगा। कांग्रेस

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री श्री चर्चिल। आप अमेरिकन राष्ट्रपति श्री रूज़वेल्ट से फिर मिलने वाशिंगटन गये हैं।

ं नरम और गरम दल हो गये। धीरे-धीरे नरम दल पराजित हो गया, क्योंकि उसके प्रयत्नों तथा सरकार से खुशामदपूर्ण माँगों के द्वारा कोई मनमाना फल न निकला, यहाँ तक कि नरम दलवाले ही अपनी असफलता के राग स्वयं अलापते रहे, यद्यपि कार्यप्रणाली नरम सिद्धान्तों की ही चलानी चाहते थे। नियमों का उल्लंघन पाप था ही और वे लोग समझते भी ऐसा ही रहे। उधर गरम दलवालों ने नियमोल्लंघन की नीति चलाई जो ज़ोर पकड़ गई।

सरकार का यह कहना है कि तुम्हारे राजनैतिक विचार और प्रयत्न कैसे भी हों, किन्तु यह समय आपसी झगड़ों का नहीं है। क्योंकि तुम भी मानते हो कि यदि सरकार हारी, तो तुम्हारे स्वतंत्रता-सम्बन्धी विचारों का मान जर्मनी या जापान के हाथों से उतना भी न होगा जितना आज हो रहा है। यह तर्क सम्पत्तिमानों को तो ठीक दिखता है, क्योंकि पराजय से राजनीतिक प्रश्नों के अतिरिक्त उनके धन के भी लुट जाने का भय है। उधर निर्धनों का यह सोचना है कि हमारा क्या जाता है? हमसे कोई क्या लेगा? सम्पत्ति और साम्यवाद की उपर्युक्त गुत्थियों को साधारण जनता तो समझती नहीं, किन्तु ऐसे नेताओं को मानती है जो उस विषय को समझते हैं। उनमें भी बहुतेरे सधन हैं। ऐसे नेताओं-वाला अपना यह विचार भी बाहरी मात्र है क्योंकि उनसे अपना आन्तरिक सम्बन्ध है नहीं। जो कुछ ऊपर से सुन पड़ता है, उसी के अनुसार समझ काम करती है। देखने में ऐसा आता है कि सधन नेताओं में कुछ तो ऐसे हैं जो जनता के सच्चे हितू होने से साम्यवाद की ओर इतना झुके हुए हैं कि अपनी भी सम्पत्ति खोने का भय नहीं करते। ऐसों ही का देश पर असली प्रभाव है। कुछ सम्पत्तिशाली देशप्रेमी ऐसे भी समझ पड़ते हैं जो मिले तो प्रकट में वास्तविक नेताओं से हैं किन्तु उनके प्रयत्नों की प्रचुर धन-द्वारा सहायता करके अपनी तथा अन्य धनिकों की सम्पत्ति का बृहदंश प्रेमभाव से बचाना चाहते हैं। ऐसों का विशेष प्रभाव जनता पर नहीं है, वरन् कुछ चोटीवाले नेताओं-मात्र पर थोड़ा-बहुत है। धनी नेताओं तथा इतर सम्पत्तिमानों का कोई भारी प्रभाव जनता पर पड़ता नहीं, और यद्यपि वे चाहते हैं कि ऐसे अवसर पर सच्ची राजभक्ति आवश्यक है, तथापि साम्यवाद के हितू वास्तविक नेता उन्हें स्वार्थी समझते हैं और उनका समुचित प्रभाव देश पर नहीं पड़ता। इन विचारों में वास्तविकता कितनी है, सो निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। जितना ऊपरी ज्ञान अपने को है, उससे ऐसे विचार ध्यान में आते हैं।

सरकार ने अधिकार थोड़े-बहुत दिये अवश्य हैं, किन्तु प्रभावशाली नेताओं को वे नगण्य समझ पड़ते हैं। ८ अगस्त सन् १९४० को अधिकार-वृद्धि की एक और घोषणा सरकार ने की तथा सोलह महीनों से उसी पर डटी हुई है। प्रभावशाली नेता उसे कुछ भी नहीं समझते और सरकार उसका हवाला इतने बार दे चुकी है कि अब उस हवाले का दोहराया जाना प्रभावशाली नेताओं को गाली-सा बुरा लगता है। आजकल फिर बड़े लाट महोदय ने उसी का हवाला देकर समझाया कि उसे मानने से भारत को धीरे-धीरे पूर्णाधिकार प्राप्त हो जावेंगे, अतएव ज़िद न करना चाहिए। अणे महोदय ने भी मुलायम शब्दों में यही समझाया। उधर नेता कहते हैं कि जब इतनी विपत्ति के समय भी स्वराज्य देने को सरकार निश्चित समय नहीं नियत करती, तब आगे प्रसन्न होकर कभी दे देगी, ऐसा उन्हें रंचमात्र विश्वास नहीं। निर्धनों के पक्षी शायद यह सोचते हैं कि पराजय से भी ग़रीबों का क्या

महात्मा गांधी ने कहा है कि यदि हवाई हमले हों तो लोग धैर्य्य से काम लें।

जाता है? क्या उनके चित्त धनिकों की सम्पत्ति तथा बर्तानिया के अपने प्रतिकूल भारतीय अधिकारों की रक्षा के लिए हुलसें? सरकार से प्रतिकूलता, जहाँ तक समझ पड़ता है, किसी भारी जनसंख्या को नहीं है, किन्तु उदासीनता का भाव दूर करने को वास्तविक नेता सन्नद्ध नहीं समझ पड़ते, यद्यपि धनिकों आदि की भी कामना इस विषय पर विशेष अनुकूलता लिये हुए है। जब तक सरकार इस गहन प्रश्न का निर्णय नहीं करती, तब तक यहाँ दिनोंदिन साम्यवाद की वृद्धि होगी। ऐसा अनिवार्य समझ पड़ता है। विलायत की लेबरपार्टी का मुखपत्र डेली हेरैल्ड इन दिनों इस प्रश्न पर काफ़ी ज़ोर लगा रहा है। उस पार्टी में विलायत में यह प्रश्न भी पेश है और एक भारतीय कमिटी भी बनी है, किन्तु बहुमत का जैसा झुकाव तारों से देख पड़ा है, उससे निर्णय की आशा कम है। सर सुल्तान अहमद महोदय ने कांग्रेस को यह शिक्षा-सी दी कि वह पूना-पैक्ट पर एक बार फिर से आ जावे। पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद तथा राजगोपालाचारियर आदि महोदयों के भाषण पूना-पैक्ट के अनुसार-से हैं, किन्तु इस बिना पर मामला बारे लगते हुए देख नहीं पड़ रहा है। समझ पड़ता है कि भारतीय सम्पत्तिवादियों को कुछ भारी क्लेश झेलना बदा है, क्योंकि उनके विचारों के अनुसार न तो सरकार चलती हुई दिखती है न जनता। लंका और बर्मा से जो भारतीय समझौता हो रहा है, उसके बारे लगने की आशा है।
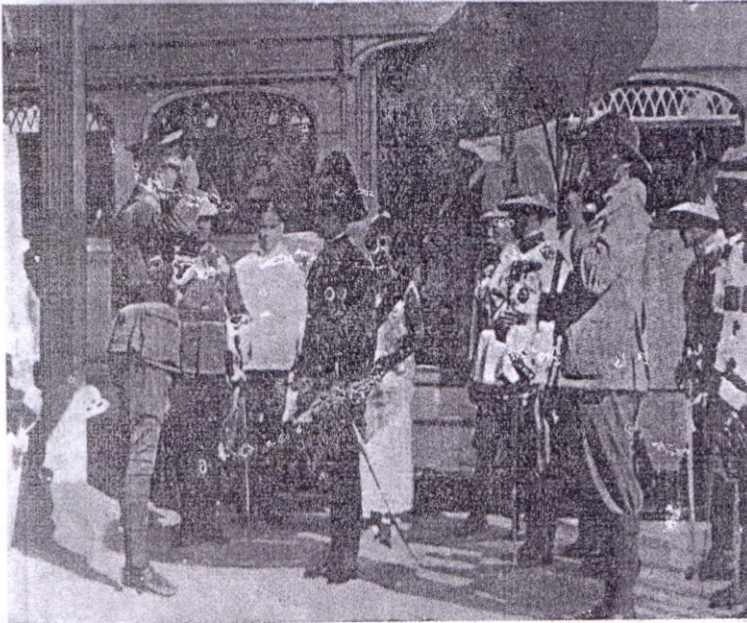
थाइलड के बादशाह तथा उनकी रानी। इन्होंने अपने देश को हाल में जापान को सुपुर्द कर दिया है।

लीबिया में गिरफ्तार हुए जर्मन और इटैलियन।

अमरीका में आजकल युद्ध छिड़ने के पीछे सभी पार्टियाँ मिलकर काम करती हुई दिखती हैं। वह देश बिर्तानिया, रूस, चीन और डच ईस्ट इंडीज़ से मिलकर काम करना चाहता है। हानि तो काफ़ी हुई है किन्तु प्रयत्न में कमी न पड़ेगी। युद्ध सामान भी काफ़ी बनाया जावेगा। बिर्तानिया उत्तरी अफ़रीका में जर्मन तथा इटैलियन सेनाओं को पराजित कर रही है। आशा है कि दस ही पन्द्रह दिनों में इस आक्रमण का परिणाम निकल आवेगा। रूसी युद्ध में मास्काऊ लेने का जो प्रचुर प्रयत्न जर्मनी कर रही थी, वह पूर्णतया निष्फल हो गया। अनभ्यस्त होने के कारण जर्मन सेना वहाँ की सर्दी का वेग नहीं उठा सकती और अब पीछे हट रही है तथा रूसी उसका पीछा करके काफ़ी हानि पहुँचा रहे हैं तथा युद्ध का सामान भी छीन रहे हैं। जर्मन-सेना शायद किसी अनुकूल स्थान पर पैर जमाने का प्रयत्न करे। अभी तक ऐसा हुआ नहीं है तथा रूसी सेना इसके प्रतिकूल उपाय करने में कसर भी न लगावेगी। उस ओर अब ऐसा समय आगया है कि देखें, कितनी हानि सहकर जर्मन-सेना मार्च तक कहाँ ठहरती है? पीछे फिर धावा करने का प्रयत्न करेगी, यदि तब तक उसमें इतनी शक्ति शेष रही। अभी यह भी सोचा जाता है कि उस देश में तब तक, शायद इतने युद्धकर्त्ता ही न मिलें कि फिर से रूस पर धावा हो सके। अभी इस वर्ष रूस पर जो संकट पड़ा था, वह कट-सा गया है। पूर्व में रूस मित्रों की सहायता में जापान से लड़ सकेगा या नहीं और कहाँ तक प्रभाव डाल सकेगा, ये बातें अभी अनिश्चित हैं। समझा ऐसा जाता है कि युद्ध न करके वह अमरीका आदि को सुविधायें-मात्र देगा। फ़्रांस ने अमरीका से अपनी तटस्थता की घोषणा की है तथा अभी तक स्पेन भी तटस्थ है। इससे अभी जिब्राल्टर पर बोझ पड़ने का भय नहीं है। ईजिप्ट पर धमकी अब नहीं के बराबर है। फ़ारस, इराक़, सीरिया आदि पर सरकारी प्रभाव पूर्ण है। टर्की अभी तक मित्रों के ही साथ है। उसपर भी जर्मन-दबाव पड़ने का भय समय पर है।

जापान ने फ़िलिपाइन्स के मुख्य टापू लोज़ान पर धावा किया है, किन्तु अभी तक कोई विशेष साफल्य नहीं पाया है। पर्ल बन्दर को कुछ हानि हुई है तथा कई अमरीकन युद्धपोतों को पहले ही दिन हानि पहुँची थी। जापानी भारी युद्धपोत हरूना को अमरीका ने भी डुबोया है तथा और भी हानियाँ पहुँचाई है। युद्ध हो रहा है। इधर बिर्तानिया के मलय देश पर जापानियों का करारा धावा हुआ है तथा देश के कुछ अंश पर उनका अधिकार हो गया है। वे दक्षिण की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ सिंगापुर का भारी बन्दर है। सरकार इस बन्दर को जान तोड़कर बचावेगी। देखें क्या फल होता है? अभी अपनी सरकार इधर पूरी-पूरी तैयार नहीं है। आशा है कि शीघ्र तैयार हो जावेगी। इधर ज़्यादा गड़बड़ बढ़ने से आस्ट्रेलिया या भारत पर भी संकट पड़ सकता है। आस्ट्रेलिया में चिन्ता भी विशेष है। भारत में साधारण जनता में खलबली-सी है, यद्यपि अभी इसका मौक़ा बिलकुल नहीं है। बर्मा पर थाइस्तान और जापानी दल ने मिलकर आक्रमण का डौल बाँधा है। बर्मा में खनिजपदार्थों की उपज ऐसी महती है, तथा उसका पेट्रोल जापान के लिए ऐसा लाभकर होगा कि वह इस पर अवश्य ज़ोर लगावेगा, और सरकार उसके बचाने का भी प्रयत्न जान तोड़कर करेगी। देखिए क्या फल निकलता है। हांगकांग चीन के पूरब छोटा-सा सरकारी टापू है। उस पर जापानी सेना घुस पड़ी है और उसकी रक्षा में विशेष प्रयत्न हो रहा है, किन्तु सरकारी सेना उधर थोड़ी ही है तथा पूर्ण रक्षा की आशा बहुत भारी नहीं है। सरकारी दो युद्ध-पोतों की हानि इस ओर बुरी और आकस्मिक हुई। आशा है कि अब भविष्य में मामला सँभल जावेगा।

हमारी कोआपरेटिव सोसाइटियाँ

फ़ैज़ाबाद कोआपरेटिव कान्फ्रेंस

फ़ैज़ाबाद कोआपरेटिव कान्फ़्रेंस का चौथा अधिवेशन आदर्श वाक्यों तथा नारों से सुसज्जित एक बड़े शामियाने के नीचे गवर्नमेंट नार्मल स्कूल के हाते में गत नवम्बर को हुआ। मि० पी० डब्ल्यू० मार्श, एडवाइज़र, संयुक्त-प्रान्त ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

इस अवसर पर कई कोआपरेटर तथा आन्दोलन से दिलचस्पी रखनेवाले प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे जिनमें मि० जे० जान्स्टन, आई० सी० एस०, मि० एस० एस० हसन, आई० सी० एस०, रायबहादुर पं० परमेश्वरनाथ सप्रू, रायबहादुर बाबू त्रिलोकीनाथ कपूर, खाँ साहब मुरतजाअली, मि० सुरेन्द्रनाथ कपूर, मि० महादेवप्रसाद और मि० इसरारुन नबी प्रमुख थे।

रायबहादुर पं० परमेश्वरनाथ सप्रू ने स्वागतकारिणी समिति की ओर से निम्न-लिखित अभिनन्दनपत्र दिया—

"हम, ज़िला-कोआपरेटिव कान्फ़्रेंस, फ़ैज़ाबाद के चौथे अधिवेशन की स्वागत-कारिणी समिति के सदस्य आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। हमारी कान्फ़्रेंस में सभापति का स्थान स्वीकार करके आपने यहाँ आकर जो कष्ट किया है उसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। ग्राम-समस्याओं में आप सदा बड़ी दिलचस्पी लेते रहे हैं और गाँव की हालतों के सम्बन्ध में आपकी अच्छी जानकारी होने से सरकार के जिस उच्च पद को आप सुशोभित कर रहे हैं उसके लिए आप सर्वथा योग्य हैं। हमारा विभाग आपके संरक्षण में है। इस काल से हमें अपने कार्य में नवीन बल प्राप्त होता है और भविष्य के लिए आशा का संचार होता है।

फ़ैज़ाबाद में हमने कोआपरेटिव-आन्दोलन को ज़िले में बढ़ाने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न किया है। हम गर्व के साथ कहते हैं कि हमारे केन्द्रीय बैंक प्रान्त के सबसे अच्छे बैंकों में से है।

उधार देने और बिक्री के मामलों में हम निरन्तर उन्नति करते रहे हैं जिसके परिणाम-स्वरूप आज हमारे किसानों की लगभग २१९, और किसानों के अलावा और लोगों की ५० उधार देनेवाली समितियाँ हैं। यद्यपि हमारा प्रमुख कार्य किसानों को सस्ते ब्याज पर रुपया देने का है फिर भी हमने आन्दोलन के अन्य कामों की उपेक्षा नहीं की है। वेतन पानेवालों के लिए हमारी ९ समितियाँ और ज़मीन के रेहन पर रुपया देनेवाला एक बैंक है। कपड़ा बुननेवालों का एक स्टोर है और बाग़बानी करनेवालों की तीन प्राइमरी समितियाँ हैं। गन्ना सप्लाई करनेवाली अनेक समितियाँ हैं और हरिजनों की भी ६ समितियाँ हैं। इनके अतिरिक्त ग्राम-सुधार-विभाग-द्वारा संचालित २६६ समितियाँ हैं जो रहन-सहन के ढंग को अच्छा बनाने की व्यवस्था करती हैं। इस प्रकार ज़िले में समितियों की कुल संख्या ५६८ है जो हमारे ज़िले के गाँवों की संख्या का चौथा हिस्सा है।

हम जानते हैं कि इस संबंध में हमें अभी बहुत काम करना है और आन्दोलन को बढ़ाने की आवश्यकता इस ज़िले में उतनी ही है जितनी कि अन्य ज़िलों में। परन्तु बिना काम करने-वाले और निरीक्षण करनेवाले अमले की पर्याप्त संख्या के आन्दोलन को बढ़ाने का कार्य सम्भव नहीं हो सकता है। जहाँ तक उधार देने और बिक्री के कार्य का सम्बन्ध है, तमाम ज़िले में फैली हुई लगभग २७० सोसाइटियों की देख-भाल के लिए हमारे पास केवल ९ सुपरवाइज़र हैं। इसलिए प्रत्येक सुपरवाइज़र को औसतन ३ सोसाइटियों की देख-भाल करनी पड़ती है जिसका परिणाम यह होता है कि आन्दोलन के विकास के लिए कोई गुंजा-इश नहीं रहती है। कार्य को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि सुपरवाइज़रों की संख्या यदि अधिक नहीं तो कम से कम ५० प्रति-सैकड़ा अवश्य बढ़ाई जाय। युक्त-प्रान्तीय कोआपरेटिव यूनियन जो कि कोआपरेटिव सुपरवाइज़रों का आधे से ज़्यादा खर्च उठाती है हमारे आन्दोलन के विकास के लिए हमको और अधिक धन नहीं दे सकती क्योंकि उसके पास इतना धन नहीं है कि वह इस भार को उठा सके। हमें आशा है कि आप इस प्रश्न पर सहानुभूति के साथ विचार करने में समर्थ होंगे और आन्दोलन के विकास के लिए तथा इस सम्बन्ध में जो अतिरिक्त अमले की आवश्यकता होगी उसके लिए आप सरकारी बजट में अधिक धन देने की व्यवस्था करेंगे।

जहाँ तक बड़े अफ़सरों द्वारा इन सोसाइ-टियों की देख-भाल का संबंध है, डिपार्टमेंट ने दो सर्किल अफ़सर और दो आडीटरों को ज़िले में नियुक्त किया है। परन्तु ज़िले की कुल सोसाइटियों की देख भाल के लिए यह संख्या भी पर्याप्त नहीं है। हम आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि आन्दो-लन की उन्नति के लिए सरकार इस बात पर विचार करे कि विशेषकर इस ज़िले के संबंध में यह बहुत आवश्यक है कि निरीक्षण करनेवाले अमलों में वृद्धि कर दी जाय।

इस संबंध में हम यह बात भी आपके ध्यान में लाना चाहते हैं कि हमारे केन्द्रीय बैंकों पर, रुपया जमा करनेवाली जनता का पूर्ण विश्वास है जिसके फलस्वरूप सस्ते ब्याज की दर पर इन बैंकों को काफ़ी रुपया मिलता है जो ज़िले की कोआपरेटिव संस्थाओं में लगाया जा सकता है। इसलिए बैंकों को या तो रुपया अमानत में रखने से इनकार करना पड़ता है या ज़रूरत से अधिक रुपयों को दूसरी जगह लगाने को बाध्य होना पड़ता है। अमलों की कमी के कारण ज़िले के भीतर आन्दोलन को बढ़ाना सम्भव नहीं है और ज़िले के बाहर रुपयों को लगाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और विभिन्न बैंकों के आपस में उधार देने का काम करनेवाली कोई प्रान्तीय संस्था के अभाव के कारण ये कठिनाइयाँ और भी बढ़ जाती हैं। यह दूसरी कठिनाई तभी दूर हो सकती है जब एक प्रान्तीय बैंक का संगठन किया जाय। ऐसे बैंक के लिए योजना तैयार की गई है। इसको कार्यान्वित करने के लिए केवल थोड़ी-सी सरकारी सहायता की ज़रूरत है। ऐसा हो जाने से इस प्रान्त में आन्दोलन की एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति हो जायगी। और हम आशा करते हैं कि आप इस प्रश्न पर जो कि हमारे आन्दोलन के लिए आवश्यक है, सहानुभूति के साथ विचार करने में समर्थ होंगे।

आन्दोलन के हित के लिए यह आवश्यक है कि आन्दोलन के पक्ष में बड़े पैमाने में सारे

प्रान्त में उचित ढंग से प्रचार का कार्य किया जाय। ऐसे प्रचार-कार्य की आवश्यकता सदा से अनुभव की जा रही है और इस संबंध में दो रायें नहीं हैं कि आन्दोलन की उन्नति के लिए इस प्रकार का प्रचार-कार्य अनिवार्य है। बड़े पैमाने में प्रचार-कार्य करने के लिए शिक्षित अमले को रखने तथा सिनेमा की मशीन और प्रचार-कार्य की लारियों आदि की आवश्यकता होती है। सरकार-द्वारा आवश्यक धन दिये बिना यह काम नहीं हो सकता है। हमें आशा है और हम प्रार्थना करते हैं कि आप मिहरबानी करके हमारी प्रार्थना को सरकार के सामने रक्खेंगे और उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए कोआपरेटिव बजट में पर्याप्त धन की व्यवस्था करने के लिए सरकार से पूरी सिफ़ारिश करेंगे।

अन्त में हम फिर आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमारी कान्फ्रेंस में आकर समय दिया है और अपनी उपस्थिति से आज हमको प्रोत्साहित किया है।"

इसके पश्चात् निम्नलिखित प्रस्ताव पेश हुए और स्वीकार किये गये।

(१) सरकार ने ५ आना प्रतिमन के भाव से गन्ने की जो कम से कम क़ीमत निश्चित की है वह बहुत कम है। इसलिए यह कान्फ्रेंस प्रार्थना करती है कि इसको बढ़ाकर ६ आना प्रतिमन कर दिया जाय।

(२) चूँकि नवाबगंज-मिल को गन्ना सप्लाई करनेवाले काश्तकारों को (क) नवाबगंज को गन्ना भेजने में बहुत खर्च उठाना पड़ता है और (ख) आबपाशी-द्वारा उनका पैदा किया हुआ गन्ना बहुत अच्छे क़िस्म का होता है इसलिए रजिस्ट्रार और केन-कमिश्नर साहब से यह प्रार्थना की जाती है कि वे उन काश्तकारों को ५ पाई प्रतिमन अधिक दिलवाने में तथा आबपाशी किये हुए खेतों के गन्ने के लिए २ पाई प्रतिमन प्रीमियम दिलवाने में सहायता करें जिससे गन्ना भेजने का खर्च निकल सके।

(३) सोसाइटियों को जहाँ कहीं भी सम्भव हो मितव्ययिता को प्रोत्साहन देना चाहिए। अनाज जमा करने और प्राविडेंट फण्ड की पालिसियों के संबंध में विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

(४) मार्केटिंग यूनियनों को सफलता-पूर्वक चलाने के लिए यह आवश्यक है कि बिक्री के तथा जमा किये जानेवाले केन्द्रों में, उपयुक्त गोदाम बना दिये जायँ।

और यह भी निश्चय किया गया कि सरकार से कहा जाय कि वह (क) इस खर्च का $\frac{1}{3}$ हिस्सा देकर सहायता करे और (ख) बक़ाया खर्च के लिए बिना ब्याज के रुपया क़र्ज़ दे जो कम से कम १५ साल में अदा कर दिया जायगा।

(५) कोआपरेटिव सोसाइटियाँ अपने सदस्यों के झगड़ों को पंचायत-द्वारा फ़ैसला करने के उपनियमों को लागू करें और इसके लिए आवश्यक सूची और नियम बना लें।

(६) यह कान्फ्रेंस धुरी शक्तियों की उन पाशविक और पैशाचिक तरीक़ों की घोर निन्दा करती है जिनके द्वारा एक जर्मन की क्षति हो जाने से सैकड़ों बेक़सूर मनुष्यों की हत्या की जाती है, बेक़सूर बच्चों, स्त्रियों और शान्ति-प्रिय नागरिकों पर बम के गोले गिराये जाते हैं और पूजा के स्थान अस्पताल और ग़रीब आदमियों के घर बर्बाद किये जाते हैं। यह कान्फ्रेंस सब कोआपरेटरों से अनुरोध करती है कि वे जन, धन और सामग्री से ब्रिटिश सरकार की सहायता करें, यह कान्फ्रेंस उन लोगों से यह भी निवेदन करती है कि वे झूठे समाचारों का खंडन करें और अपने-अपने हलक़ों में शान्ति क़ायम रक्खें।

सोसाइटियों की ओर से गवर्नर के युद्ध-कार्य-संबंधी फण्ड के लिए सभापति को १०१ रुपये की एक थैली भेंट की गई।

कान्फ्रेंस विर्सजित करते हुए मि० मार्श ने पश्चिमी ज़िलों की अपेक्षा इस ज़िले में आन्दोलन के कार्य की सफलता पर अत्यन्त हर्ष प्रकट किया। उन्होंने कहा कि इस सफलता का बहुत कुछ श्रेय रायबहादुर पं० परमेश्वरनाथ सप्रू आदि उन अवैतनिक कार्यकर्त्ताओं को है जिन्होंने निस्स्वार्थ भाव और परिश्रम के साथ काम किया है। उन्होंने आगे चलकर कहा कि कोआपरेटिव सोसाइटियाँ सब जाति, धर्म और वर्ग के लोगों के समान हित की संस्थायें हैं और इनकी सफलता मुख्य करके सदस्यों की संख्या की अपेक्षा उनकी ईमानदारी और सच्चरित्रता आदि गुणों पर निर्भर होती है। इसलिए उन्होंने यह सम्मति दी कि सदस्यों के चुनाव में काफ़ी सतर्क रहना चाहिए और प्रारम्भ में सदस्यों की संख्या कम होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि उचित लोगों को तक़ावी बाँटने के कार्य के लिए कोआपरेटिव सोसाइटियाँ काम में लाई जा सकती हैं।

कान्फ्रेंस समाप्त होने के पश्चात् डिविज़नल हिन्दुस्तान स्काउटों की रैली हुई, जिसमें स्कूलों, ग्राम-सुधार कोआपरेटिव सोसाइटियों तथा स्त्रियों के ट्रेनिंग सेन्टर के १,००० से अधिक स्काउटों ने भाग लिया। ग्राम-सुधार-विभाग की बालिकाओं (स्काउटों) ने लेजिम, फ़र्स्ट एड और कोरस गानों का जो प्रदर्शन किया उसकी लोगों ने बहुत प्रशंसा की। दीक्षा-संस्कार करते हुए पं० श्रीराम बाजपेयी, नेशनल आर्गनाइज़िंग कमिश्नर, ने कहा कि स्काउट-आन्दोलन ग्राम-सुधार और कोआपरेटिव सोसाइटियों में भी फैल गया है। उन्होंने स्काउटों को उपदेश दिया कि वे अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहें और स्काउट-आन्दोलन के योग्य सदस्य होने की चेष्टा करें।

इस अवसर पर एक प्रदर्शनी भी की गई थी जिसमें विभिन्न सरकारी सुधार-विभागों, स्त्रियों के ट्रेनिंग सेन्टर, फ़ैज़ाबाद, बाग़बानी, की सोसाइटियों और बेसिक शिक्षा-सेक्सन ने अपनी कार्यवाहियों का प्रदर्शन किया। कोआपरेटिव कोर्ट में प्रान्त की औद्योगिक सोसाइटियों के विभिन्न प्रकार के बुने हुए कपड़े विशेष रूप से दिखाई देते थे। प्रतापगढ़ ज़िले की अन्तू कोआपरेटिव वार सप्लाई सेन्टर द्वारा शत्रु को धोखे में डालनेवाले जालों का बनाना और उनके उपयोग को प्रत्यक्ष रूप से दिखाया गया।

बाराबंकी में कोआपरेटिव (सहकारी) सोसाइटियों का सम्मेलन

पंडित भैरवप्रसाद जी के सभापतित्व में बाराबंकी ज़िले के सरइयाँ नामक स्थान में कोआपरेटिव सोसाइटियों की एक सभा हुई। सहकारी आन्दोलन में दिलचस्पी लेनेवाले और कोआपरेटिव सोसाइटियों के बहुत-से सदस्य उपस्थित थे।

मि० इसरारुननबी भूतपूर्व असिस्टेंट रजिस्ट्रार, लखनऊ ने अपने भाषण में सदस्यों को यह बताया कि वे अपने आपसी झगड़ों का पंचायतों-द्वारा फ़ैसला करवाकर और मार्केटिंग यूनियन-द्वारा अपनी पैदावार को बेचकर किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं और अपने कृषि-गोदामों के अच्छे बीज और औज़ारों का प्रयोग कर पैदावार किस प्रकार बढ़ा सकते हैं।

विभिन्न सोसाइटियों के पंचों ने अपनी सोसाइटियों की कार्य-प्रणाली और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला और यह भी बताया

[illegible] किन साधनों और उपायों द्वारा [illegible] की जा सकती है। इरीगेशन सोसाइटियों को स्थापित करने के संबंध में और [illegible] द्वारा साँड़ों को ख़रीदने और गाँव [illegible] को तय करने के लिए प्रस्ताव पास किये गये।

इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय, [illegible] सेंट्रल कोआपरेटिव बैंक के मैनेजर [illegible] बी० एन० टंडन को है।

बनारस यूनिवर्सिटी का कोआपरेटिव स्टोर (सहकारी गोदाम

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के कोआपरेटिव स्टोर की पहली सालाना साधारण [illegible] वहीं के भूतपूर्व प्रो० वाइस-चान्सलर [illegible] ज्वालाप्रसाद के सभापतित्व में हुई थी। मि० आर० एन० आगा, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, [illegible] और मि० ए० बी० लाल, सर्किल [illegible] भी उपस्थित थे।

स्टोर के आनरेरी सेक्रेटरी डाक्टर पी० [illegible] ने सालाना रिपोर्ट पेश की जिससे प्रकट हुआ कि स्टोर ने साल भर तक बराबर उन्नति की। उसके सदस्यों की संख्या बढ़कर १२० हो गई है। स्टोर ने २३,१५७ रु० का माल ख़रीदा और २३,२४९ रु० का माल मेम्बरों के हाथ बेचा। उसको ९६२ रु० का लाभ हुआ और उसने १० प्रतिसैकड़ा के हिसाब से डिवीडेंड बाँटने का निश्चय किया।

संक्षेप में मि० आगा ने अपने भाषण में इस बात पर ज़ोर दिया कि स्टोर का काम सफलतापूर्वक होने के लिए यह आवश्यक है कि मेम्बर स्टोर के सच्चे हितैषी हों और उसकी सहायता करें।

इलाहाबाद का कोआपरेटिव (सहकारी) कोर्ट

अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनी में जो इलाहाबाद में हुई, फिर इस वर्ष सहकारी विभाग की तरफ़ से एक कोर्ट था। इलाहाबाद की दूध सप्लाई करनेवाली सहकारी समिति ने जिसे स्थापित हुए केवल तीन महीने हुए हैं आधुनिक ढंग पर दूध की एक दूकान खोली। उसमें दूध ठंडा रखने की एक मशीन भी लगाई गई थी। लगभग सात हज़ार व्यक्तियों ने दूध पिया। पाव भर दूधवाली बोतल का मूल्य एक आना रक्खा गया था। लगभग [illegible] नये ग्राहक बनाये गये। आजकल दूध का यूनियन लगभग १३ मन दूध प्रतिदिन बेचता है। क़ौमी सहकारी गोदाम और क़सीदे की सहकारी सोसाइटी, इलाहाबाद ने भी भाग लिया था। डाक्टर बी० के० मालवीय की देख-रेख में, जो सोसाइटी के इंचार्ज हैं, फलों को सुरक्षित रखनेवाली सोसाइटी ने यह प्रदर्शित किया कि फलों को कैसे सुरक्षित रक्खा जा सकता है।

सहकारी विभाग की दूकान को सहकारी विभाग के उद्देश्यों और सहयोगी विज्ञापनों द्वारा बड़े सुचारु रूप से सजाया गया था और जनता में बहुत काफ़ी संख्या में पुस्तिकायें और पर्चे बाँटे गये थे। जिन प्रमुख सज्जनों ने इस दूकान को देखा, वे सर राधाकृष्णन, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, प्रोफ़ेसर अमरनाथ झा, मिस्टर बी० एन० सिंह, आई० सी० एस० जस्टिस बाजपेयी और जस्टिस वर्मा थे। यह कहा जा सकता है कि पिछले तीन वर्षों से इलाहाबाद की स्वदेशी प्रदर्शनी में सहकारी विभाग की दूकान खोलने के कारण, इलाहाबाद की जनता को अब इस बात का कुछ ज्ञान हो गया है कि सहयोग क्या है और सहकारी विभाग के उद्देश्य क्या हैं।

इस दूकान को जो सफलता प्राप्त हुई उसका मुख्य श्रेय असिस्टेंट रजिस्ट्रार, इलाहाबाद मिस्टर इनामुररहमान, और मि० बी० ए० मेहता, सरकिल अफ़सर इलाहाबाद को प्राप्त है।

ददरी मेले में प्रदर्शनी

ददरी का वार्षिक मेला, जिसमें लाखों आदमी आते हैं, इस वर्ष फिर ग्राम-सुधार संघ के प्रचार का क्षेत्र रहा। इस वर्ष काफ़ी उन्नति की गई थी। इस प्रकार प्रदर्शन, दैनिक प्रोग्राम और अन्य विभागों से सम्बन्ध तथा प्रचार का काम बहुत ही सुव्यवस्थित ढंग पर किया गया।

इस वर्ष मेले में भाग लेनेवालों में से संयुक्त-प्रान्त का सूचना-विभाग था जिसने लाउड स्पीकर भेजा था, तथा यू० पी० रेड-क्रास सोसाइटी का हाइजिन पब्लिसिटी भाग भी था जिसने सिनेमा प्रदर्शन किया। इनके अलावा टैनिंग ह्यू शनल क्लास तथा गोरखपुर के इंडस्ट्रियल स्टोर भी थे। सिनेमा और लाउड स्पीकर से ग्रामोफ़ोन के गानों ने मेले में नया जीवन पैदा कर दिया और इससे जनता को आकर्षित करने का ध्येय पूरा हुआ। सदैव की तरह कृषि-विभाग, एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग, वेटेरिनरी, गुड़ डेवलपमेंट, फ़ूट डेवलपमेंट तथा पब्लिक हेल्थ विभागों ने भी हाथ बँटाया और काफ़ी दिलचस्पी और उत्साह बढ़ाया।

'हमारा अखबार' का विशेष प्रचार किया गया। गाँवों से आनेवाले युद्ध-सम्बन्धी सामानों का प्रदर्शन किया गया। गाँवों के युद्ध-प्रयत्न का प्रचार भी किया गया। एक खाद का गढ़ा, सोख्ता गढ़ा और नालियाँ भी बनाई गई थीं। एक पंचायतघर और एक नमूने का घर भी दिखाया गया था।

प्रोग्राम—प्रतिदिन का दैनिक दिलचस्प और शिक्षाप्रद प्रोग्राम श्रीमान् कलेक्टर साहब की राय से बनाया जाता था। १२५ लड़कों का ७ स्काउट ट्रुप और १२ फ़िज़िकल कलचर क्लबों ने भी भाग लिया। सोरा केन्द्र के स्काउट ट्रुप ने तेज़ी, मार्च और ड्रिल में अन्य ट्रुपों से बाज़ी मार ली। मासुमपुर 'बालीबाल क्लब' को 'ग्राम-सुधार निगम वालीबाल टूर्नामेंट कप' श्री आर० एस० लाल जी ने प्रदान किया। यह टूर्नामेंट गाँवों के लिए पहली चीज़ थी अतः यह बहुत ही दिलचस्प सिद्ध हुई। प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले लोगों तथा प्रदर्शन की वस्तुओं पर भी एक कमेटी ने, जिसमें चेयरमैन और सेक्रेटरी ग्राम-सुधार-संघ, ग्राम-सुधार के डिवीज़नल सुपरिंटेंडेंट, एग्रीकल्चर के सेक्रेटरी तथा म्युनिसिपल बोर्ड के सेक्रेटरी थे, उचित इनाम दिये। फ़्री स्टाइल, फ़ुटबाल रेस और गंगा में तैरना भी प्रोग्राम का एक विषय था।

मीटिंग—२ नवम्बर सन् १९४१ को ४-३० मि० पर श्री जे० निगम, आई० सी० एस० बलिया के कलेक्टर ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। उन्होंने इसके बाद इस प्रदर्शनी का चक्कर लगाया तथा चेयरमैन और सेक्रेटरी ग्राम-सुधार-संघ बलिया ने उनको प्रदर्शनी की सब चीजें दिखाईं। प्रदर्शनी को देखकर कलेक्टर महोदय बहुत प्रसन्न हुए।

उत्सव के अन्त का प्रबन्ध भी बहुत ही शानदार था। ददरी बलिया खास से ५ मील की दूरी पर है फिर भी लोग काफ़ी संख्या में उपस्थित हुए। चेयरमैन ने अपने भाषण में यह बताया कि किस प्रकार उन्होंने बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करके इस वर्ष की प्रदर्शनी में कुछ नई बातें कीं और सफलता पाई। अन्य विभागों के प्रधान अफ़सरों तथा म्युनिसिपैलिटी के कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद देते हुए सभापति ने श्री निगम तथा उनकी

पत्नी श्रीमती निगम को हार्दिक धन्यवाद दिया, क्योंकि उन्हीं के सौजन्य से बलिया ज़िले में ग्राम-सुधार का काम बड़ी सफलता से हो रहा है।

इसके बाद श्रीमती निगम ने इनाम बाँटा। इनाम बाँटने के बाद बलिया के कलेक्टर श्री जे० निगम, आई० सी० एस०, ने ग्राम-सुधार-संघ के चेयरमैन श्री के० ए० सिंह की बड़ी प्रशंसा की तथा अन्य विभागों के सहयोग पर भी हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। इसके बाद उन्होंने संघ के सेक्रेटरी श्री एन० डी० कक्कड़ तथा सहायक मंत्री श्री निरंकार-प्रसाद श्रीवास्तव की प्रशंसा की जिनके परिश्रम-स्वरूप वह प्रदर्शनी मेले में सर्वोपरि हुई थी।

सभापति महोदय ने अपने भाषण में जनता को ग्राम-सुधार के उद्योगों से लाभ उठाने की राय दी। इसके बाद 'हमारा अखबार' का उपयोग बताकर आपने स्थानीय जनता को उसे प्रयोग करने की सलाह दी।

अन्त में श्री आर० एल० लाल जी मिश्र ने सबको दावत दी, जिसमें संघ के सब मेम्बरों ने भाग लिया।

झाँसी कोआपरेटिव कान्फ्रेंस

उत्सव के प्रारम्भ में प्रार्थना की गई। इसके बाद एक ग्राम-प्रचारक ने एक कविता सुनाई जिसमें यह बताया गया कि किस प्रकार ग्रामवासी सबकी आवश्यकताओं की पूर्ण करते हैं और किस प्रकार वे देश के धन को बढ़ाते रहे हैं?

सिया कोआपरेटिव सोसाइटी के सरपंच ने अपनी समिति की रिपोर्ट सुनाई और यह बताया कि पिछले दस वर्षों में उस समिति ने कितना काम किया? उन्होंने यह भी बताया कि समिति क़र्ज़े की सूद-दर ९ प्रतिसैकड़ा रक्खेगी और वह इस समय अपने पैरों पर काम कर रही है। उसपर किसी क़िस्म का बार नहीं है। गाँव का प्रत्येक कुटुम्ब उस समिति का मेम्बर है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि समिति बिजीनिया तम्बाकू लगाने का भी प्रयोग कर रही है तथा गाँव में एक कैटिल ब्रीडिंग सोसाइटी बनाने का भी विचार किया जा रहा है। उस सोसाइटी का सेक्रेटरी एक मेम्बर ही है। वह सोसाइटी अपने ढंग की निराली है। उसमें यह भी बताया गया है कि लोगों ने अपने व्यक्तिगत हिस्से के क़रीब १४० रुपये तक इकट्ठा कर लिया है।

इसके बाद चारबाग़ मार्केटिंग यूनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में यह बताया कि किस प्रकार यह यूनियन अक्टूबर सन् १९४० में बनाया गया और किस प्रकार इसने प्रतिद्वंद्वी कच्ची अरहटों का सामना करके पहले ही साल में क़रीब ३,२७,००० रुपये का व्यापार किया। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि इस यूनियन का सारा प्रबन्ध मेम्बर ही करते हैं और फलतः खेती करनेवालों तथा बेचनेवाले दोनों को उचित लाभ हो रहा है।

यह यूनियन मंडी के अन्य कच्चे अरहटों से स्वतन्त्र रूप में काम कर रहा है अतः इसने अपना चार्ज ४ पाई प्रतिरुपया नियत किया जब कि मंडी में ६ पाई प्रतिरुपया प्रचलित चार्ज था।

तत्पश्चात् कोआपरेटिव सोसाइटीज़ के रजिस्ट्रार मिस्टर एस० एस० हसन, आई० सी० एस० ने अपने भाषण में कहा कि अन्य देशों के किसान वर्तमान युग के नये औज़ारों तथा अन्य कृषि-सम्बन्धी आविष्कारों से लाभ उठाकर बड़ी उन्नति कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष के किसानों को भी समय के साथ बदलना चाहिए और इसके लिए उनको सहयोग समितियों से अच्छी कोई दूसरी संस्था नहीं मिल सकती है। उन्होंने मेम्बरों को सलाह दी कि सूद की दर कम से कम रखने की कोशिश की जाय। अन्त में उन्होंने समिति तथा मार्केटिंग यूनियन के कार्य पर सन्तोष प्रकट किया जिससे उपस्थित लोगों को बड़ा उत्साह मिला।

मेरठ-कोआपरेटिव-कैम्प

मेरठ के असिस्टेंट रजिस्ट्रार श्री आर० पी० माथुर-द्वारा व्यवस्थित कैम्प का उद्घाटन मेरठ ग्राम-सुधार संघ के चेयरमैन ख़ाँ बहादुर शेख वहीउद्दीन, सी० आई० ई०, ने किया। अपने भाषण में उन्होंने बताया कि स्टाफ के लोगों को सेवा-कार्य जीवन के प्रत्येक पहलू में धार्मिक दृष्टि से करना चाहिए। उपस्थित सज्जनों में ख़ाँ बहादुर बशीरउद्दीन, फ़ैज़ाबाद के असिस्टेंट रजिस्ट्रार ख़ाँ साहब मुर्तज़ाहुसेन, लखनऊ के असिस्टेंट रजिस्ट्रार मिस्टर इसरारुननबी और श्री सत्यप्रकाश, सेक्रेटरी कोआपरेटिव इंस्पेक्टर एसोसियेशन लखनऊ, प्रमुख थे। यह कैम्प १० दिन तक था। विभाग-सम्बन्धी भाषणों के अलावा इलाहाबाद के हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन के डिवीज़न आर्गनाइज़र मिस्टर एम० आई० सिद्दीक़ी की देख-भाल में स्काउट और हवाई हमले से हिफ़ाज़त सम्बन्धी ट्रेनिंग भी दी गई।

गोरखपुर में सहयोग-दिवस

शनिवार, १ नवम्बर सन् १९४१ को केन डेवलपमेंट आफ़िस में गोरखपुर के ऐडिशनल मैजिस्ट्रेट श्री भगवतीप्रसाद के सभापतित्व में सहयोग-दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बहुत-से सहयोगी उपस्थित थे। प्रकाशन अफ़सर श्री रामराज ओझा ने सहयोग-दिवस की आवश्यकता समझाया, डी० ए० वी० हाईस्कूल के हेडमास्टर श्री गुप्त जी ने इंटरनेशनल कोआपरेशन एलाएन्स लन्दन के प्रस्ताव को पेश किया और श्री के० एन० मेहरोत्रा ने उसे अनुमोदित किया। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया। ख़ाँ साहब मिर्ज़ा खादिमहुसेन ने युद्ध-सहायता पर भाषण दिया। श्री ज़ेड० ए० ख्वाजा तथा ग्राम-सुधार के सुपरिन्टेंडेंट ने ग्रामोन्नति पर भाषण दिया। श्री विंध्यवासिनी-प्रसाद वकील ने लेबर पर भाषण दिया जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया। श्री गुलामहुसेन ने एक कविता पढ़ी और श्री चन्द्रभूषण पाण्डे ने प्रार्थना किया। इसके बाद सभा समाप्त हो गई।

संग्रामगढ़-समिति का सहयोग-दिवस

संग्रामगढ़ सर्किल की समितियों ने १ नवम्बर सन् १९४१ को 'अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग-दिवस' मनाया था। इसमें क़रीब ५०० जनता उपस्थित थी और इसके सभापति साँडा-हरखपुर-समिति के सरपंच पंडित भद्रकालीदीन जी बनाये गये। राचडेल सिद्धान्त पर विश्वास प्रकट करते हुए यह प्रस्ताव पास किया गया कि शान्ति के आधार पर एक नई आयोजना बनाई जाय और समिति को भी कान्फ्रेंस में सदस्य भेजने का हक़ दिया जाय। सहयोग तथा ग्रामोन्नति पर श्री सत्यप्रकाश, श्री मूलचन्द्र उपाध्याय और श्री कल्पबरुश ने उचित भाषण दिया। सुधरी हुई भट्ठा के प्रदर्शन के साथ-साथ एक छोटी-सी पशु-प्रदर्शनी और गाँव के खेल भी दिखाये गये। पशु-प्रदर्शनी और खेल में भाग लेनेवालों को क़रीब १२५ इनाम बाँटे गये। इसके बाद सभा समाप्त कर दी गई।

हमारे सूबे में ग्राम सुधार

अक्टूबर सन् १९४१ के कार्य की तफ़सील

इस महीने में रबी की फ़सल का ज़ोर था अतः ग्राम-सुधार-विभाग के कार्यकर्त्ता अधिकतर रबी के बीज वितरित करने में लगे रहे।

१६७ जीवन-सुधार-समितियाँ बनाई गई और १४ समितियों को रजिस्ट्री की गई। ६,६००) जीवन-सुधार-समितियों को चन्दे के रूप में समाचार-पत्र आदि मँगाने के लिए दिया गया। यह रियायत उन गाँवों के लिए है जिनमें रजिस्टर्ड जीवन-सुधार-समितियाँ हैं। समाचार-पत्रों के मँगाने का समय पंचायत या जीवन-सुधार-समिति बहुमत से तय करेगी।

ग्राम-सुधार के छोटे कार्यकर्त्ताओं ने अपने समय को ग्राम-सुधार केन्द्रों में लगाया और निम्नलिखित तीन सिद्धान्तों को सफल करने में लगे रहे। (१) पंचायतघरों का बनाना और नियमित रूप से मासिक मीटिंगें करना तथा सालाना प्रोग्राम को चलाना; (२) प्रत्येक केन्द्र में एक गाँव को चुनकर साल के अन्त तक उसे नमूने का गाँव बनाना और (३) ग्राम-सुधार केन्द्रों में अधिक से अधिक पक्के घरों या कुओं आदि का बनवाना।

सन् १९४० की 'हेगशील्ड' प्रतियोगिता के फलस्वरूप निम्नलिखित गाँवों में से प्रत्येक को २००) इनाम मिला है जिसे वे जनता के उपयोग की वस्तुओं के बनाने में खर्च करेंगे।

डिवीज़न	ज़िला	गाँव का नाम
मेरठ	मेरठ	अमरपुर
आगरा	अलीगढ़	गभाना
[illegible]	पीलीभीत	औना
[illegible]	इटावा	भिथानपुर
[illegible]	हमीरपुर	इगोहटा
[illegible]	ग़ाज़ीपुर	बासूपुर
[illegible]	आज़मगढ़	कलिचाबाद
[illegible]	हर्दोई	फतहपुर गैंद
[illegible]	बहराइच	कल्याणपुर

विभाग की विभिन्न लाभदायक स्कीमों के समझाने के लिए २,५०० मीटिंगें की गईं। हिज़ इक्सीलेन्सी दी गवर्नर बस्ती ज़िले के अहिरा और बढ़या गाँवों में गये और बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने २००) का इनाम भी दिया। आगरा ज़िले में बटेश्वर के मेले में एक रूरल डेवलपमेंट कोर्ट भी बनाया गया था। प्रौढ़-स्कूलों के अध्यापकों ने स्काउटिंग और अन्य कसरतें दिखाईं। ग्राम-सुधार गाँवों में १३० ड्रामा किये गये। इससे गाँववालों को बड़ा लाभ हुआ। सूबे भर में १८६ भजन-मंडलियाँ बनाई गईं। ये भजनमंडलियाँ गाँववालों को आनन्द भी देती हैं और बहुत ही शिक्षाप्रद सिद्ध हुई हैं। ग्राम-सुधार की प्रचारगाड़ियाँ देहातों में घूम कर बड़े प्रचार का काम कर रही हैं। फ़ैज़ाबाद, मेरठ, कानपुर और लखनऊ उनके केन्द्र बनाये गये हैं। आगरा डिवीज़न के लिए मथुरा का 'डाइविल पब्लीसिटी वैन' काम में लाया जा सकता है।

इस माह में २४० अखाड़े बनाये गये। १,४२० स्काउट और ग्राम-सेवकों को ट्रेनिंग दी गई। प्रत्येक ज़िले को ५००) फिज़िकल कल्चर के लिए दिया गया है। इसमें से क़रीब १००) स्काउटों के वर्दी के लिए दिया जा सकता है। ५०) तक खर्च से किसी गाँव में टूर्नामेंट या प्रतियोगितायें की जा सकती हैं।

क़रीब ७,००० खाद के गड्ढे खोदे गये और २,५९९ पेशाबखाने बनाये गये। सिंचाई के साधनों को उन्नति करने के लिए बराबर कोशिश की गई। १०२ सिंचाई के कुओं को बोरिंग की गई और ८७ कुएँ बनाये गये। ग्राम-सुधार गाँवों में ७४२ सुधरे हुए औज़ार लाये गये। २११ अच्छी नस्ल के साँड़ छोड़े गये और क़रीब ३९० अच्छी नस्ल के जानवर लोगों ने अपने व्यक्तिगत प्रयोग के लिए खरीदा। १,१८३ साँड़ों को बधिया किया गया और ६,७६१ बीमार जानवरों को फ़र्स्ट एड दिया गया।

गाँववालों को ईंधन लगाने के लिए फ़ालतू ज़मीन को तैयार करने का प्रचार किया गया। ४,९१६ एकड़ भूमि में ईंधन के पेड़ लगाये गये और ४१,५६१ एकड़ में सुधरे हुए बीज बोये गये।

ग्राम-सुधार केन्द्रों में किसी क़िस्म की छूत की बीमारी नहीं थी और साधारण जन-स्वास्थ्य अच्छा रहा। गाँव में सफ़ाई काफ़ी उन्नति कर रही है। इस महीने में २३६ सूअर-बाड़े बस्तियों से दूर हटाये गये और ३३२ टूटी-फूटी जगहें बराबर की गईं। २,६७० गलियाँ साफ़ की गईं और १२,३५१ घूर फेंके गये। १५० पाख़ाने, १२८ पेशाबखाने नये बनाये गये। १८२ ग़ुसुलख़ाने बनाये गये और २,७६१ सोख्ते गड्ढे घर के मोरियों के पास बनाये गये। १,९८० रोशनदान लगाये गये और ३८० सेनीटरी कुएँ बनाये गये। इन सबसे गाँव का दृश्य बहुत कुछ बदल गया है।

४२,२५० मरीज़ों की दवा की गई और ३,१९० आदमियों को टीका दिया गया। क़रीब ४०० से अधिक फ़र्स्ट एडर्स और २२१ डेसेज़ को ट्रेनिंग दी गई।

हर एक ज़िले में बहुत-से पंचायतघर बन रहे हैं। ९ पंचायतघर इस महीने में बने और जनता के उपयोग के लिए खोल दिये गये। १७ नये घर नमूने के अनुसार बनाये गये। १८० नई मशीनें गृह-उद्योग के लिए काम में लाई गईं।

"हल" पुरस्कार-प्रतियोगिता का निर्णय

गत अक्टूबर और नवम्बर के महीनों में "हल" पुरस्कार-प्रतियोगिता के सिलसिले में जो उत्तर आये थे उनमें से निम्नलिखित तीन महानुभावों के उत्तर क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय समझे गये इसलिए, ग्राम-सुधार अफ़सर ने अपनी घोषणा के अनुसार इन तीनों महानुभावों को क्रमशः २०), १०) और ५) का नक़द पारितोषिक प्रदान किया है। इन पारितोषिक-विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं :—

१—मुहम्मद इक़बाल, प्रीतिनगर, अमृतसर (पंजाब)।

२—शिवनारायणलाल विशारद, बछरावाँ, रायबरेली।

३—मुहम्मद रज़ा अंसारी, फिरंजी महल, लखनऊ।

एक विशेष पुरस्कार

उपरोक्त लिखे गये तीन व्यक्तियों के अतिरिक्त २०) का एक विशेष पुरस्कार श्रीयुत तिलकराम असिस्टेंट रूरल डेवलपमेंट आफ़िस, लखनऊ को प्रदान किया है। वास्तव में श्री तिलकराम जी का ही उत्तर सर्वश्रेष्ठ समझा गया था। परन्तु ग्राम-सुधार अफ़सर साहब ने उन्हें यह विशेष पुरस्कार इसलिए प्रदान किया कि जिसमें "हल" प्रतियोगिता के पुरस्कार में समुचित लाभ ग्राम-सुधार-विभाग के बाहरवाले लोग ही उठा सकें। आशा है कि इस मास के हल में जो प्रश्न छप रहा है उसमें भी पाठकगण उसी तरह दिलचस्पी लेंगे और अपना उत्तर भेजेंगे।

उत्तर अँगरेज़ी में भी

ग्राम-सुधार अफ़सर का यह अनुमान है कि यदि अँगरेज़ी में भी इस प्रश्न के उत्तर मँगवाये जायँ तो इस प्रतियोगिता का क्षेत्र और भी विस्तृत हो सकता है। इसलिए उन्होंने हमें यह घोषणा करने की आज्ञा दी है कि भविष्य में अँगरेज़ी में भी उत्तर स्वीकार किये जायँगे। अतएव इस दूसरे प्रश्न के उत्तर, जो चाहें वे अँगरेज़ी में भी भेज सकते हैं। इस तरह अब इस प्रश्न का उत्तर हिन्दी, उर्दू और अँगरेज़ी तीनों भाषाओं में स्वीकार किया जायगा। आशा है कि जो हिन्दी या उर्दू में उत्तर न भेज सकने के कारण पिछले प्रश्न का उत्तर नहीं भेज सके वे इस दूसरे प्रश्न का उत्तर अवश्य भेजेंगे।

दूसरा इनामी प्रश्न

दूसरा प्रश्न यह है कि आपके पास-पड़ोस में "ग्राम-सुधार" का जो काम हो रहा है उसमें आपकी सम्मति में क्या-क्या सुधार होना चाहिए।

यह प्रश्न दिसम्बर के "हल" में छप चुका है। इस मास के हल में भी यह १६ पृष्ठ पर प्रकाशित हो रहा है। इस प्रश्न का उत्तर देना भी बहुत ही सरल है और जैसा कि नियमों के पढ़ने से मालूम होगा यह कोई ज़रूरी नहीं है कि इस प्रश्न के उत्तर देने के लिए किसी अच्छे साहित्यिक ज्ञान की ज़रूरत हो। मतलब भाषा से नहीं है विचार से है। जो भी आपकी समझ में आये आप इस प्रश्न के सम्बन्ध में अपनी राय भेज सकते हैं। यदि आपकी राय उपयोगिता और मौलिकता की दृष्टि से श्रेष्ठ समझी गई तो आपको यह पुरस्कार मिल सकता है और अब तो ग्राम-सुधार अफ़सर ने यह भी सुविधा कर दी है कि जो चाहें वे अँगरेज़ी में भी उत्तर भेज सकते हैं। इस प्रश्न का उत्तर १५ जनवरी तक आ जाना चाहिए। आशा है इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले पाठकगण नियमों को एक बार फिर पढ़ लेंगे।

आँखों की चिकित्सा का प्रबन्ध

ग्राम-सुधार-विभाग की ओर से इस वर्ष फिर देहात के रहनेवाले भाई-बहनों की आँखों की चिकित्सा का प्रबन्ध किया गया है। इस सम्बन्ध में ग्राम-सुधार अफ़सर राय बहादुर पंडित काशीनाथ जी ने एक सरक्यूलर जारी किया है और उन्होंने ज़िला ग्राम-सुधार-संघ के मंत्रियों से खासतौर से यह निवेदन किया है कि वे अपने-अपने ज़िलों में यह बात गाँव-गाँव में पहुँचा दें ताकि जहाँ कहीं भी ऐसे लोग हों जो आँख के रोग से पीड़ित हों वे ग्राम-सुधार के इस स्कीम से लाभ उठा सकें। उन्होंने यह भी घोषित किया है कि इस काम में तहसीलदार, ग्राम-सुधार-विभाग के इन्स्पेक्टर, आर्गनाइज़र, सिनेटरी इन्स्पेक्टर आदि से भी सहायता ली जा सकती है। ये सब लोग गाँवों में पोस्टल लगवाकर, नोटिसें बँटवाकर और और तरीकों से सबको यह बात बतायें कि आँख की चिकित्सा का कहाँ-कहाँ प्रबन्ध है। "हल" के पाठकों से भी निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध में ग्राम-सुधार-विभाग के कार्यकर्ताओं का हाथ बटावें। 'अन्धे को आँख देना' सबसे पुण्य का कार्य है। जहाँ कहीं भी कोई, ग्रामवासी अपनी आँख

बेकाम हो जाने से कष्ट भोग रहा हो और काम न कर सकता हो वहाँ प्रत्येक हमदर्द का यह फ़र्ज़ है कि वह उसे ऐसी जगह पहुँचा दे जहाँ उसकी आँख का मुफ़्त इलाज हो सकता है। उसकी आँख को फिर से मुफ़्त रोशनी मिल सकती हो और इस तरह उसके जीवन में फिर से नया रस पैदा हो सकता है।

ग्राम-सुधार अफ़सर ने जो सरक्यूलर जारी किया है उसका खुलासा हम नीचे उद्धृत करते हैं ताकि इस पुण्य के कार्य में दिलचस्पी लेनेवाले को इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी हो जाय।

यह इलाज निम्नलिखित ३४ ज़िलों तथा प्राइवेट और मिशन अस्पतालों में किया जा रहा है :—

ज़िले—इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, [illegible], बिजनौर, बस्ती, ग़ाज़ीपुर, जौनपुर, मुज़फ़्फ़रनगर, बरेली, फ़ैज़ाबाद, मेरठ, आज़मगढ़, इटावा, मुरादाबाद, सहारनपुर, हर्दोई, मिर्ज़ापुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, अल्मोड़ा, बुलन्दशहर, बहराइच, बलिया, बदाऊँ, गढ़वाल, नैनीताल, शाहजहाँपुर, झाँसी, खीरी, गोरखपुर, गोंडा और मथुरा।

प्राइवेट और मिशन अस्पताल—(१) [illegible] आई हास्पिटल, सीतापुर, (२) मोहन आई हास्पिटल, अलीगढ़, (३) खतौली आई हास्पिटल मुज़फ़्फ़रनगर, (४) झींझक आई हास्पिटल कानपुर, और (५) कछवा, मिर्ज़ापुर।

इन केन्द्रों तक जाने के लिए रोगियों का [illegible] खर्च इस आयोजना के अंतर्गत न होगा। ग्राम-सुधार के कार्यकर्त्ताओं को चाहिए कि जहाँ तक सम्भव हो, निर्धन और अधिकारी [illegible] के रोगियों को इन अस्पतालों तक मुफ़्त पहुँचाने की व्यवस्था करें। इसके लिए वे अपने ज़मींदारों की सहायता ले सकते हैं।

जो लोग इस योजना में सहायता देना चाहें उनका कर्त्तव्य है कि वे गाँवों के चक्षु-रोगियों को यह सलाह दें कि वे अपने पड़ोस के किसी सरकारी डाक्टर से यह जाँच करवा लें कि उनकी आँखें खराब हैं या नहीं। उनमें दवा डालने या आपरेशन करने की आवश्यकता है या नहीं। जो डाक्टर नहीं हैं उनका कर्त्तव्य यह है कि वे मरीज़ का नाम और पता एक कागज़ पर लिखकर उसे निम्नलिखित सरकारी डाक्टरों में से किसी एक के पास प्राथमिक परीक्षा के लिए भेज दें :—

(१) डिस्ट्रिक्ट मेडिकल अफ़सर और उनके सहायक।

(२) पी० एम० एस० और पी० एस० एम० एस० मेडिकल अफ़सरों के पास।

(३) ग्राम-सुधार मेडिकल अफ़सर।

(४) डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के डाक्टर।

(५) सहायता पानेवाले अस्पतालों के डाक्टर। निजी तौर पर चिकित्सा करनेवाले डाक्टर जो इस स्कीम में सहायता करने की इच्छा रखते हैं।

प्रारम्भिक जाँच करनेवाले डाक्टरों को एक-एक किताब दी जायगी जिसमें क्रमानुसार टिकट होंगे। मेडिकल अफ़सर मरीज़ की जाँच करके यह देखेंगे कि अमुक व्यक्ति दवा या आपरेशन करने योग्य है या नहीं। अपनी राय के अनुसार चुने हुए रोगियों को उनके टिकट भर कर वे सिविलसर्जन या पास के आँख के अस्पताल के इन्चार्ज के पास चिकित्सा के लिए भेज देंगे।

इस योजना को समुचित ढंग पर सफल बनाने के लिए सिविलसर्जन अपनी सुविधानुसार ज़िले को कई भागों में विभक्त कर सकते हैं। और विभिन्न भागों के मरीज़ों को बारी-बारी से बुला सकते हैं ताकि एक ही बार बहुत-से मरीज़ों की भरमार न हो जाय। ग्राम-सुधार-संघ के सेक्रेटरी से सलाह करके सिविल सर्जन इस योजना में काम करनेवालों की जानकारी के लिए समय-समय पर सविस्तर हिदायतें जारी करेंगे।

ग्राम-सुधार-अफ़सर ने इस विषय में यह साफ़ कर दिया है कि इस योजना के संचालन में स्थानीय ग्राम-सुधार-संघ के कोष से कुछ भी खर्च न होगा। हाँ, प्रत्येक कार्यकर्त्ता से यह निवेदन किया है कि इस योजना में दिलचस्पी लेना उनका कर्त्तव्य है और इसे पूर्णतया सफल बनाने के लिए वे भरसक उद्योग करें।

कुम्भ-मेला

इस मास में इलाहाबाद में प्रसिद्ध कुम्भ-मेला होने जा रहा है। मेले की सब तैयारियाँ क़रीब-क़रीब पूरी हो चुकी हैं और जब तक पाठकों के हाथ में "हल" का यह अंक पहुँचेगा, मेला एक प्रकार से आरम्भ हो चुका होगा। इस अवसर पर रेलवे कम्पनियों की ओर से बराबर यह विज्ञप्ति निकाली जा रही है कि लोग जहाँ तक हो सके मेले में बहुत कम जायँ। यह इसलिए कि रेलें इस वक्त फ़ौजी सामान युद्ध के मोर्चों पर पहुँचाने में लगी हुई हैं। स्पेशल गाड़ियों का प्रबन्ध सम्भवतः नहीं हो सकता। मेले के दिनों में रेलवे कम्पनियों को प्रायः अच्छी आमदनी हो जाती थी और कुम्भ में तो कहना ही क्या है। इसमें तो लाखों यात्री आते हैं। लेकिन इस मौक़े पर रेलवे कम्पनियाँ जो स्पेशल ट्रेनों के छोड़ने से इनकार कर रही हैं इससे यह स्पष्ट है कि उनके सामने उनकी कठिनाइयाँ हैं। ऐसी दशा में बाहर के मुसाफ़िरों को सोच-समझकर ही अपने घर से निकलना चाहिए। यों भी विचार करके देखा जाय तो जाड़े के दिनों में एक ऐसे मेले में अपने बाल-बच्चों को लेकर जाना खतरा ही लेना होता है। क्योंकि इन दिनों अकसर पानी बरसता है, काफ़ी ठंडक पड़ती है और इस ठंड और बरसात में यात्री बाहर वैसा अपना बचाव नहीं कर सकते जैसा उनके घर पर हो सकता है। इससे अकसर लोग बीमार पड़ जाते हैं। कभी-कभी तो मेलों में बड़ी-बड़ी बीमारियाँ भी फूट निकलती हैं। यद्यपि हम यह मानते हैं कि बहुत-से लोग धार्मिक भाव से प्रेरित होकर ऐसे मेले में जाते हैं और इसे अपने धार्मिक जीवन का एक कर्त्तव्य समझकर किसी भी प्रकार की

अड़चन और कठिनाई की परवाह नहीं करते। परन्तु इस बार ऐसे धार्मिकप्राण लोगों को भी सोच-समझकर अपने घर से बाहर निकलना चाहिए। क्योंकि यदि स्पेशल गाड़ियों की व्यवस्था न हो सकी जैसा कि रेलवे कम्पनियाँ घोषित कर रही हैं तो उन्हें कितनी ही रातें खुले स्टेशनों पर गुज़ारनी पड़ेंगी। ठंड तो पड़ती ही है और यदि पानी बरसा तो उनकी मुसीबत और भी बढ़ जायगी। फिर खाने-पीने की चीज़ें भी बहुत महँगी मिलती हैं और वे भी मेले में अच्छी और ताज़ी नहीं मिल सकतीं। इसलिए समझदार लोगों को इन सब बातों पर पूर्णरूप से ग़ोर करके ही घर से निकलना चाहिए।

अब यह भी सुनने में आया है कि ४ जनवरी से लेकर ४ फ़रवरी तक इलाहाबाद आने-जानेवाले यात्रियों के लिए टिकट बेचना भारत सरकार ने बन्द करा दिया है। यात्रियों को इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए। टिकट न मिलने पर उनकी कठिनाइयाँ कितनी बढ़ जायँगी यह सहज ही में अनुमान किया जा सकता है।

युद्ध हमारे दरवाज़े पर

योरप का युद्ध अब विश्वव्यापी हो उठा है। जापान और अमरीका के युद्ध में आ जाने से पूर्व में भी लड़ाई क़रीब-क़रीब भारत की सीमा पर पहुँच चुकी है। इस बात की आशङ्का की जाती है कि कदाचित् भारतवर्ष के बड़े-बड़े शहरों पर भी हवाई हमले हों। प्रान्तीय सरकारों की ओर से हर ज़िले में हवाई हमलों से हिफ़ाज़त के कार्य प्रारम्भ हो गये हैं। पिछले दिनों कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता जेलों से मुक्त कर दिये गये हैं और ब्रिटेन की जनता ब्रिटिश सरकार पर यह दबाव डाल रही है कि वह हिन्दुस्तान को संतुष्ट करे ताकि युद्ध में हिन्दुस्तान भी तन-मन-धन से अपना समुचित फ़र्ज़ अदा कर सके। जब कि ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं बारडोली में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक होने जा रही है। उसमें इस प्रश्न पर विचार होगा और जब पाठकों के हाथ में यह अंक पहुँचेगा तब तक शायद कांग्रेस का निर्णय भी निकल चुके।

क्या अच्छा हो कि कोई ऐसी सूरत निकल आवे जिससे कि सब लोगों का मतैक्य युद्ध के प्रश्न में हो जाय और भारतवर्ष भी इस विश्वव्यापी युद्ध में अपना समुचित सहयोग दे सके। कुछ भी हो यह प्रश्न तो हमारे सामने है ही कि हवाई हमले की हालत में क्या किया जाय? जहाँ तक गाँवों का सवाल है यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि गाँवों में हवाई हमले का क़तई भय नहीं है। युद्ध होता रह सकता है और गाँवों के लोग निश्चिन्ततापूर्वक अपना काम जारी रख सकते हैं। अड़चन तब पैदा हो सकती है जब गाँवों में हवाई हमले के भय से शहरी लोग बहुत बड़ी संख्या में पनाह लेने के लिए पहुँच जावेंगे। यदि ऐसा अवसर आये तो गाँववालों को उनका स्वागत ही करना चाहिए; क्योंकि इससे उजड़े गाँव एक बार फिर से आबाद हो जायँगे। शहरी लोगों का ध्यान गाँवों के सुधार की ओर आकृष्ट होगा और वे ग्राम-सुधार के उद्योग में फिर उदासीन नहीं रह सकते। हम तो इस बुराई में एक यह भलाई स्पष्ट देख रहे हैं कि इससे हमें गाँवों की हालत सुधारने का उन्हें शहरों की भाँति सुविधा-सम्पन्न बनाने का अवसर मिलेगा। और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से यह लड़ाई हमारे ग्राम-सुधार के कार्य को बढ़ाने में सहायक ही सिद्ध होगी।

मवेशी और बमवर्षा

आधुनिक युद्ध में बमवर्षा से जैसे मानवों का प्राण नाश होता है वैसे ही उनके पालतू पशुओं की भी जानें जाने की सम्भावना रहती है। यद्यपि यह सच है कि गाँवों में शहरों के मुक़ाबिले में कम बमवर्षा का भय होता है तथापि यह एक प्रश्न है जो गाँववालों के मन में उत्पन्न हो सकता है। क्योंकि किसान को अपने मवेशी अपने प्राणों के समान प्यारे होते हैं। योरप में बमवर्षा का मवेशियों पर क्या असर पड़ा है इस सम्बन्ध में कैनाडियन डेयरी न्यूज़लेटर लिखता है—"पिछले हवाई हमले के दिनों में कितने ही बम देहातों में भी गिरे हैं। परन्तु उससे मवेशियों का उतना संहार नहीं हुआ जितना कि अनुमान किया जाता था। फिर भी सबसे अधिक प्राणों का नाश गौओं और भेड़ों आदि का हुआ और सबसे कम घोड़ों का। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि इन पशुओं में बहुत पास-पास रहने की आदत होती है। हवाई हमलों से हताहतों की संख्या में घोड़ों और सुअरों का आखिरी नम्बर आता है। बड़े-बड़े डेयरियों से जो समाचार आये हैं उनसे मालूम होता है कि हवाई हमले से भयग्रस्त गायों की दूध देने की शक्ति पर कोई असर नहीं पड़ा। वे उसी प्रकार दूध देती रहती हैं और उनका भय भी क्षणिक ही होता है।

कृषि के औज़ारों की रक्षा

गेहूँ की फ़सल की बोआई कार्तिक में पूरी हो चुकती है। उसके बाद कटाई शुरू होने के बाद तक कृषि के अधिकांश औज़ार बेकार-से पड़े रहते हैं। यदि इस बेकारी के समय में इन औज़ारों की रक्षा की ओर विशेष ध्यान न रक्खा गया तो प्रायः ये ख़राब होकर बेकाम हो जाते हैं और फिर नये औज़ार लेने पड़ते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि ज्यों ही किसी औज़ार का काम ख़त्म हो जाय और उसे कुछ दिन के लिए अलग रखना पड़े त्यों ही इस बात का पूरा प्रबन्ध कर लेना चाहिए कि उसके लोहे के हिस्से में मोर्चा आदि न लगने पावे। मान लीजिए कि हल आपको रखना है। उसमें मुख्य बात आपको ध्यान देने की यह है कि हल के लोहे का वह भाग जिसे फल कहते हैं उसमें मोर्चा न लगे। इसके लिए उसे पहले साफ़ कर लीजिए फिर उसमें कोई चिकनाई लगा दीजिए। रेंडी या कड़आ तेल लगाकर रख देने से भी हल में मोर्चे का

ां का मवेशियों प
न्ध में कैनाडियन
—"पिछले हवाई
ो बम देहातों मे
मवेशियों क
तना कि अनुमान
ो सबसे अधिक
भेड़ों आदि का
ड़ों का। इसका
के इन पशुओं मे
ादत होती है।
संख्या में घोड़ों
ब्बर आता है
ाचार आये है
ाई हमले से भय-
शक्ति पर कोई
प्रकार दूध देती
भी क्षणिक ही

की रक्षा

ाई कार्तिक मे
कटाई शुरू होने
औज़ार बेकार-
कारी के समय
ा और विशेष
ये खराब होकर
ाये औज़ार लेने
हैं कि ज्यों ही
हो जाय और
ना पड़े त्यों ही
ना चाहिए कि
आदि न लगने
आपको रखना
को ध्यान देने
वह भाग जिसे
लगे। इसके
ए फिर उसमें
ंडी या कड़आ
ह में मोर्चे का

[illegible] असर नहीं होगा। बीच-बीच में चिक-[illegible]नाई लगाते रहना चाहिए। इस तरह से [illegible] फिर जोताई शुरू होगी। आपको हल ठीक [illegible] में मिलेगा। इसी तरह कृषि के अन्य [illegible]ज़ारों और मशीनों की भी हिफ़ाज़त की [illegible] है। हर औज़ार का कुछ हिस्सा लोहे [illegible] है और कुछ लकड़ी का। लोहे के [illegible]के उसमें चिकनाई लगानी [illegible] और [illegible] हिस्से में यह देखते [illegible] आदि तो नहीं [illegible]। रँगाई [illegible] टिकाऊ [illegible] जाती है लेकिन [illegible] रँगाई की [illegible] सम्भव नहीं होती। ऐसी हालत में [illegible]ज़ारों की मूठ वग़ैरह में जो लकड़ी की हों [illegible] तेल लगाकर रख दिया जा सकता है [illegible] जो मशीनों वग़ैरह में लकड़ियाँ लगी हों [illegible] ख़ास तौर से क़रीब के बाज़ार से रँग-[illegible] बुलाकर रँगवा लेना चाहिए। उन [illegible]ज़ारों को वर्षा में भीगने से भी बचाना [illegible] ज़रूरी है। अकसर देखा गया है कि [illegible] और धूप का लकड़ियों पर ख़राब [illegible] पड़ता है। बराबर भीगने और धूप [illegible] से लकड़ियाँ फट जाती हैं और [illegible] हो जाती हैं। इसलिए जो ऐसी [illegible] जिन्हें खुली जगह में रखना अनि-[illegible] हो, तो उनके उन हिस्सों को निकालकर [illegible] कर देना चाहिए जो लकड़ी के बनते [illegible]।

[illegible] यन्त्रों में रबड़ के टायर आदि [illegible] उनको जब रखना हो तो रबड़ के [illegible] को निकालकर उनसे अलग कर देना [illegible] और इस्तेमाल के समय उन्हें फिर [illegible] लेना चाहिए।

ऊँटों के पेट में अफ़ीम

[illegible] में नाजायज़ अफ़ीम बेचनेवाले, [illegible] अफ़सरों से जान बचाने के लिए [illegible] अफ़ीम प्रायः ऊँटों के पेट में रखकर [illegible] जाते हैं। इस सम्बन्ध में एक बड़ा ही दिलचस्प समाचार एक अँगरेज़ी समाचार-पत्र में प्रकाशित हुआ है। उसका खुलासा यह है कि ये लोग एक ख़ास क़िस्म के पीपों में अफ़ीम बन्द करके उन्हें वे अपने ऊँटों को पानी के साथ पिलाते हैं। ये पीपे प्रायः उन ऊँटों को पिलाये जाते हैं जो मारकर खाये जाने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजे जाते हैं। अपने मंज़िले मक़सूद पर पहुँ-चने पर जब उनके पेट चीरे जाते हैं तब उनमें से ये पीपे निकल आते हैं और इससे अफ़ीम का वहाँ नाजायज़ रोज़गार चलता है। ईजिप्ट के सरकारी अफ़सरों को बहुत दिनों तक यह ख़बर मिलती रही है कि अफ़ीम मांस की बिक्री के लिए ले जानेवाले ऊँटों के ज़रिये एक जगह से दूसरी जगह पहुँच जाता है परन्तु वे इसकी समुचित छान-बीन करने में बहुत समय तक असमर्थ रहे। और ये रोज़गारी उनकी आँखों में धूल झोंकते रहे। इसका पता एक साधारण से संदेह के साथ अधिकारियों को लग गया। जब कि एक रोज़गारी ने एक दुबले ऊँट को जिसका दाम मुश्किल से तीन इजिप्टी मुद्राएँ होतीं १० इजिप्टी मुद्राओं तक बेचने में इनकार कर दिया। इससे कुछ ऊँट जाँच के लिए रोके गये और जब वे मारे गये तो उनके पेटों से अफ़ीम के छोटे-छोटे पीपे निकले। इस सिलसिले में सब से आश्चर्य की बात यह मालूम हुई कि कितने ही ऊँट अपने पेटों में सेरों अफ़ीम रखने पर भी लम्बी यात्रा करने में ज़रा भी तकलीफ़ या बेचैनी का अनुभव नहीं करते थे। लेकिन चूँकि ऊँटों की ईजिप्ट में बहुतायत है और हर बड़े बाज़ारों से बहुधा सैकड़ों ऊँट गुज़रते हैं इसलिए अफ़सरों को उनमें से हर एक को रोकना और उनको मारना सम्भव न हो सका। इसलिए अब वहाँ एक्सरे का एक यंत्र बनवाया गया है। उस यंत्र के सहारे अब निरीक्षक लोग बिना ऊँटों को मारे ही यह पता लगा सकते हैं कि उनके पेट में कितनी अफ़ीम ले जाई जा रही है और इससे वे ऐसी अफ़ीम ज़ब्त कर लेते हैं और अफ़ीम के रोज़-गारी को गिरफ़्तार कर लेते हैं।

भारत में पीत ज्वर का ख़तरा

पीत ज्वर का ख़तरा हिन्दुस्तान के लिए भी पैदा हो गया है। भारत-सरकार की ओर से गत १८ दिसम्बर को दिल्ली से एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है जो इस प्रकार है :—

युद्ध छिड़ने के साथ-साथ भारत में पीत ज्वर फैलने का ख़तरा भी काफ़ी बढ़ गया है। इसकी रोक-थाम के लिए आवश्यक उपाय कर लिये गये हैं जिससे भारत अभी तक इस ख़तरे से मुक्त है। अभी तक भारत इस ख़तरे से इस दिशा में जो उपाय किये उनमें इंडियन एयरक्राफ़्ट पब्लिक हेल्थ इम-जेंसी रूल्स का प्रचारित किया जाना भी शामिल है। इन नियमों का उद्देश्य यह है कि पीत ज्वर संक्रान्त कोई भी वायुयान भारत में पहुँचने पर कराची को छोड़कर और किसी स्थान पर न उतरे—यदि स्थल पर उतरने-वाला विमान हो तो वह कराची एयर पोर्ट पर उतरे और यदि पानी पर उतरनेवाला विमान हो तो कराची मोरन पोर्ट पर उतरे। इन्हीं नियमों के अन्तर्गत यह व्यवस्था भी है कि जिन आदमियों को पीत ज्वर हो या पीत ज्वर होने की शंका हो अथवा जो पीत ज्वर संक्रान्त प्रदेश से बिना टीका लगवाये आ रहे हों उन्हें मच्छरदानियों से ढके हुए अस्पतालों में रखा जाय। समुद्र मार्ग से पीत ज्वर कहीं भारत में न घुस आवे इसके लिए भी उपाय किये जा रहे हैं।

न्यूयार्क की राकफेलर फाउंडेशन संस्था और लंदन के वेलकम ब्यूरो से पीत ज्वर का टीका लगाने के लिए काफ़ी दवा मँगा ली गई है। यह दवा कसौली के सेन्ट्रल रिसर्च इंस्टिट्यूट, बम्बई के हाफकाइन इंस्टिट्यूट, गिंडी के किंग इंस्टिट्यूट और नई दिल्ली की प्रान्तीय पब्लिक हेल्थ लेबरेटरी के ठंढे गोदामों

में रखी है और यहाँ पीत ज्वर का टीका लगाने की सुविधायें भी हैं।

इस बात को भी मान लिया गया है कि यदि भारत में पीत ज्वर फैल जाय और टीका लगाने की दवा पर्याप्त परिमाण में न्यूयार्क या लन्दन से न मिले तो इसे यहीं तैयार करने की आवश्यकता होगी। इस दवा का बनाना सीखने के लिए मेडिकल रिसर्च डिपार्टमेंट के एक अनुभवी अफ़सर को अमेरिका के राकफ़ेलर फ़ाउंडेशन में भेजने का प्रबंध कर लिया गया है।

दिल्ली में भारत-सरकार के उन अफ़सरों और कर्मचारियों के टीके लगा दिये गये हैं जिन्हें पीत ज्वर के प्रकोप के समय काम करना है और यह भी निश्चय कर लिया गया है कि बम्बई और कराची के बन्दरगाहों के उन व्यक्तियों के भी टीके लगा दिये जायँ जिनके सम्बन्ध में यह सम्भावना है कि उन्हें पीत ज्वर संक्रान्त जहाज़ या हवाई जहाज़ के सम्पर्क में आना है।

हुनर सिखाने की विशाल योजना

भारतीयों को विविध हुनर सिखाने की सरकारी योजना बड़े ज़ोर से काम करती हुई जान पड़ती है। इसके अनुसार मार्च १९४३ तक में भारत में ४८ हजार कारीगरों को शिक्षा दी जा चुकी होगी। इस सम्बन्ध में विशेष विवरण हम भारतीय समाचार से यहाँ उद्धृत करते हैं :—

भारत सरकार की टेकनिकल ट्रेनिंग योजना का तेजी से विस्तार हो रहा है। लगभग साल भर पहले जब इस योजना के अनुसार कार्य आरम्भ हुआ था तो ध्येय केवल १५,००० व्यक्तियों को ट्रेनिंग देना था। अब उद्देश्य यह है कि मार्च १९४३ तक ४८,००० व्यक्तियों को ट्रेनिंग दे दी जाय।

ट्रेनिंग देने के इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर देश की लगभग प्रत्येक टेकनिकल संस्था और कितने ही कारखानों से काम लिया जा रहा है। भारत भर में लगभग ३०० केन्द्रों में यह कार्य हो रहा है और आशा की जाती है कि शीघ्र ही २५,००० व्यक्तियों को ट्रेनिंग देने का प्रबन्ध हो जायगा। टेकनिकल ट्रेनिंग जाँच-कमेटी ने जो योजना तैयार की थी उसका अब बहुत अधिक विस्तार हो गया है। कमेटी ने कहा था :—

"वर्तमान टेकनिकल कालेजों और संस्थाओं में उनके साधारण काम के अतिरिक्त ९८९ कारीगरों को ट्रेनिंग दी जा सकती है। यदि कमेटी-द्वारा बताई सामग्री और कर्मचारियों की उपर्युक्त संस्थाओं में वृद्धि कर दी जाय तो और भी २,००० कारीगरों को ट्रेनिंग दी जा सकती है।"

ट्रेनिंग के विषय में भी उन्नति की गई है। कुछ शिल्पों की ट्रेनिंग में और तेज़ी ला दी गई है। इस प्रकार जो ट्रेनिंग साल में समाप्त होनेवाली थी उसमें अब केवल ४ या ६ महीने लगेंगे।

जो १०० ब्रिटिश शिक्षक आनेवाले थे उनमें से ५० आ पहुँचे हैं और ६० की नियुक्ति विविध संस्थाओं में कर भी दी गई है। इस कथन से आश्चर्य होना स्वाभाविक है, किन्तु सरकार की नीति यह है कि शिक्षकों का जहाज़ इँग्लैंड से रवाना होते ही उनकी नियुक्ति विविध संस्थाओं में कर दी जाय। इस प्रकार जो २० शिक्षक अभी भारत आ रहे हैं उन्हें भी विविध संस्थाओं के लिए निर्धारित कर दिया गया है।

साथ ही साथ बेविन ट्रेनिंग योजना के अनुसार भी तेज़ी से कार्य हो रहा है। इस योजना के अन्तर्गत भारतीयों को ५०-५० के दलों में ट्रेनिंग के लिए इँग्लैंड भेजने का नियम है। इस योजना के अन्तर्गत ट्रेनिंग पानेवाला प्रथम दल जनवरी में वापस आयेगा। इन लोगों को उनकी योग्यतानुसार युद्ध-सामग्री तैयार करनेवाले सरकारी कारखानों या ट्रेनिंग केन्द्रों में क्रमशः फ़ोरमैन या शिक्षक के पदों पर नियुक्त कर दिया जायगा। तीसरा दल ब्रिटेन के रास्ते में है और चौथा दल दिसम्बर में इँग्लैंड के लिए रवाना होगा।

जौनपुर में ग्राम-सुधार गाँव सुचितपुर

डाक्टर एस० एस० नेहरू एच० डी०, एल-एल० डी०, आई० सी० एस० कमिश्नर, बनारस डिवीजन, हाल में जौनपुर ज़िले के सुचितपुर गाँव में गये थे। आप लिखते हैं कि इस गाँव में फिर आकर और इसके इस परिवर्तित रूप से जिसे देखकर इसे पहचानना कठिन है, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। इसकी उन्नति सर्वतोमुखी है। गत वर्ष मैंने जहाँ टूटे-फूटे कुएँ देखे थे वहाँ आज मुझे प्रथम श्रेणी के ५ पाइंट के १६ सेनेटरी कुएँ दिखाई दे रहे हैं जिनमें नमूने की ऊँची जगतें, चबूतरे, नाँदें, छिड़ककर सिंचाई करने के प्रबन्ध आदि हर तरह से प्रशंसनीय हैं। इसके अलावा केले के फल भी लगाये गये हैं। मैं नीबू और पपीते की खेती करने की भी राय दूँगा। प्रत्येक घर में पानी की प्रचुर मात्रा होने के कारण कुछ फल लगाये जा सकते हैं। अमरूद की भी अच्छी फ़सल होगी। मैं प्रत्येक ग्रामवासी को सलाह दूँगा कि फालतू ज़मीन में रेंडी के पौधे लगायें और उसे गाँव के कोल्हू में पेरकर तेल निकालकर मोटर के इंजिनों के लिए 'कैस्ट्रल' तैयार करके काफ़ी रुपया पैदा करें। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि गाँववालों को रेंडी की खेती करने को प्रोत्साहित किया जाय। यह बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा।

[साल ४
यतानुसार यु
रकारी कारखा
ओरमैन या शिक्ष
दिया जायगा
में हैं और चौ
रुए रवाना होगा

गाँव सुचितपु
हरू एच
० सी० एस
हाल में जौनपु
गये थे। आ
फर आकर अ
जिसे देखकर इ
ड़ी प्रसन्नता हु
ो हैं। गत व
वहाँ आज मुझे
२६ सेनेटरी कु
की ऊँची जगत
चाई करने के
नीय हैं। इसके
ये गये हैं। मै
ने की भी राय
ी प्रचुर मात्र
जा सकते हैं
गी। मैं प्रत्येक
कि फालतू
और उसे गाँव
ककर मोटर के
करके काफ़ी
यह बहुत
ंडी की खेती
र। यह बहुत

Regd. No. A-294.

हल के वार्षिक चन्दे में रियायत

हमारे सूबे की सरकार की मेहरबानी से नीचे लिखे हुए लोगों और संस्थाओं के लिए "हल" का वार्षिक चन्दा ४॥।≈) से ३॥) कर दिया गया है परन्तु यह रियायत केवल ३,५०० प्रतियों तक सीमित है। आशा की जाती है कि नीचे लिखे हुए लोग इस विशेष रियायत से लाभ उठावेंगे।

१—सरकारी इमदाद पानेवाले मदरसे।

२—"किसान उपकारक"—"मुफ़ीदुलमज़ारीन" और "हल" के देहातों में रहनेवाले मौजूदा ग्राहक।

३—वे लोग जो देहातों में खेती करते हों।

४—ज़मींदार जो सरकार को १,०००) या इससे कम सालाना मालगुज़ारी देते हों।

५—वे लोग जो देहात में रहते हों और जिनकी आमदनी १००) महीने से कम हो।

६—सहयोग और जीवनसुधारसभायें या यूनियन या केन-सुसायटियाँ या यूनियनें।

७—वे लोग जो देहात में रहते हों और गाँव में मुफ़्त बाँटने के लिए एक साथ पाँच या ज़्यादा कापियाँ मँगावें।

८—डिस्ट्रिक्ट और म्यूनीसिपल बोर्ड और इमदादी अस्पताल।

सब प्रकार के पत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर 'हल'

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

फ़रवरी १६४२

विषय-सूची

वर्ष ४
अङ्क २

फ़रवरी
१९४२

संयुक्त-प्रान्तीय सरकार के ग्राम-सुधार-विभाग का मुख पत्र

प्रधान सम्पादक

ग्रामसुधार-अफ़सर, यू० पी०, लखनऊ

सम्पादक

श्रीनाथसिंह

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

१९४२

वार्षिक मूल्य ५।।)]

[एक प्रति का ।।)

पाठशाला
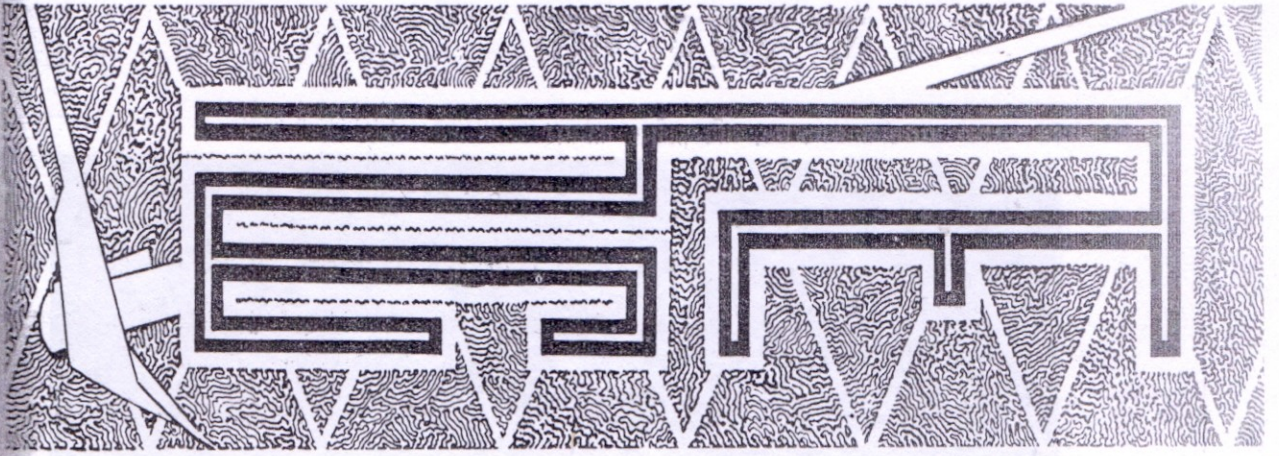
स चि त्र मा सि क प त्र

फ़रवरी १९४२ साल ४ अङ्क २

फूलों का प्राक्कथन

श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

(१)

हम रहते हैं उस प्रदेश में जहाँ अनोखा एक नगर है;
सबका भाषा-भाव एक चलने-फिरने की एक डगर है।
खिलकर हास्य, रुदन मुरझाकर नियम सभी के लिए एक है;
नीचे धूल शयन है सबका, ऊपर आसमान छप्पर है।
एक राग का मधुर गला है, स्वर-संधान सभी का कोमल;
रूप हमारे भिन्न-भिन्न, दिल मिला सभी को एक मगर है।

(२)

सबके सब आज़ाद यहाँ, पर सबका एक प्रेम-बन्धन है;
इन कुसुमों के लिए हमेशा यहाँ एक विश्वास मरन है।
आँखों में है रजत-नीर, फिर भी होंठों पर स्वर्ण भरा है;
स्वार्थ-भरे मानव क्या जानें, हम कैसे अनमोल रतन हैं?
उनके यहाँ प्यार रोता, पर घृणा सदा हँसती रहती है;
कुछ जो हैं सुकुमार हमीं-से उनके अन्दर बड़ी जलन है।

(३)

यह दुनिया है अजब, यहाँ के लोग महामानव कहलाते;
रोज़-रोज़ आँसू बरसाकर बड़े जतन से नेह लगाते।
हम अबोध कैसे जानें, यह प्यार देख हिल-मिल जाते हैं;
जब हम हँसना सीख गये, हँसकर दिल के कुछ भेद बताते।
तब इनका व्यवहार देखिए गरदन कतर गूँथ देते हैं;
कुछ अपने तन को सजते हैं, कुछ पत्थर पर हमें चढ़ाते।

(४)

फिर भी है यह हृदय हमारा, जो कठोरता भूल गया है;
जड़ में अंजलि-भर जल पाकर अमित प्यार से फूल गया है।
मूर्ख नहीं, हम जान रहे हैं इन प्रलोभनों का फल सारा;
मन क्या, तन भी समझ रहा, वह भी शूलों पर झूल गया है।
कुछ दिलदार समझ सकते हैं, इस छोटे से प्राक्कथन को;
दिल ऐसा, जो प्यार देखकर ही सारा दुख भूल गया है।

'माधुरी' से

लोहिया हल की उपयोगिता

लेखक, श्रीयुत गङ्गाधर अग्रवाल, एम० ए०, कृषि-कालेज, कानपुर

मिट्टी पलटनेवाले हलों का ज़िक्र आते ही मुझे एक किसान की कहानी याद आ जाती है। वह किसान किसी प्रदर्शनी में गया था। वहाँ उसने तरह-तरह के खेती के औज़ार और हल आदि देखे। वहाँ समझाया जा रहा था कि मेस्टन हल देशी हल के मुक़ाबिले में उन्नतिशील हल है। इससे जोताई बढ़िया और अधिक गहराई तक होती है। बिना जोती ज़मीन नहीं छूटती है और गाँव के बैल इसे अच्छी तरह खींच सकते हैं। देहाती ने एक मेस्टन हल ख़रीदा और उस हल-द्वारा अपने गेहूँ के खेत तैयार किये। गाँव के और किसान बड़ी उत्सुकता से उस हल को देखते और कहते कि अगर इस हल से इस किसान को लाभ हुआ तो हम लोग भी ऐसे हल से ही जोताई करेंगे। उन खेतों में गेहूँ की पैदावार अच्छी होना तो दूर रही, गेहूँ उगे भी नहीं। किसान ने तथा और गाँव-वालों ने असली ग़लती न समझते हुए नये हल के ऊपर ही सब दोष रक्खा। उन्हें यह नहीं मालूम था कि रबी में खेत की जोताई मिट्टी पलटनेवाले हल-द्वारा करने से खेत की नमी नष्ट हो जाती है, और नमी न रहने पर बीज नहीं उग सकता। किसान ने यह समझा था कि यदि मेस्टन हल उन्नतिशील हल है तो देशी हल की इसके रहने पर कोई आवश्यकता नहीं है और इसी हल को हर एक काम में प्रयोग कर सकते हैं।

लोहिया हल के उचित उपयोग के सम्बन्ध में भ्रान्ति केवल अशिक्षित किसान को ही नहीं बल्कि बहुत-से शिक्षित व्यक्तियों को भी है। भारतीय कृषि की उन्नति के लिए जब कार्य प्रारम्भ हुआ था तो कार्य-कर्त्ताओं का ध्यान देशी हल की ओर गया। उन्होंने पश्चिमी देशों में प्रयोग होनेवाले बड़े-बड़े वज़नी लोहिया हलों का प्रचार इस देश में भी करना चाहा। इन हलों का नाम बजाय मिट्टी पलटनेवाले हल के उन्नतिशील हल रक्खा गया। जिसकी वजह से लोगों को प्रायः यह भ्रम हो जाता है कि लोहिया हल ख़रीद लेने से देशी हल की आवश्यकता नहीं रहती।

इस देश के जोताई-सम्बन्धी तजुर्बों से यह ज्ञात हुआ है कि लोहिया हलों का अधिक प्रयोग हर एक मिट्टी अथवा जलवायु में उप-योगी नहीं है। इस देश की मिट्टी तथा जलवायु में इँगलैंड की मिट्टी और जलवायु से जहाँ कि इस प्रकार के हल उपयोगी हैं, बहुत अन्तर है। इँगलैंड की मिट्टी में औसतन ·१५ फ़ी सदी नाइट्रोजन और ·३ फ़ी सदी कार्बोनिक पदार्थ का अंश होता है और हमारी ज़मीन में केवल ·०५ फ़ी सदी नाइट्रोजन और ·६ फ़ी सदी कार्बोनिक पदार्थ है। सिंचाई की सुविधा भी सब जगह नहीं है। संयुक्त-प्रान्त में केवल एक तिहाई ज़मीन को सिंचाई की सुविधा है, शेष दो तिहाई ज़मीन में खेती वर्षा के ऊपर निर्भर है। अतएव हर एक किसान को जोताई इस ढंग से करनी पड़ती है कि उसकी ज़मीन की नमी तथा कार्बोनिक पदार्थ कम से कम नष्ट हों। लोहिया हल का ग़लत और अधिक इस्तेमाल करने से इन दोनों ही वस्तुओं के नष्ट होने का डर रहता है इसलिए हर एक किसान को इन हलों के सही उपयोग का ढंग तथा किन दशाओं में इनका उपयोग नहीं करना चाहिए इसका ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। कई वर्षों की खोज और परिश्रम के बाद अब बहुत-से क़िस्म के हलके लोहिया हल बन गये हैं जो कि इस देश की ज़मीन, जलवायु तथा बैलों के लिए बहुत उप-युक्त हैं। गत वर्ष इस प्रान्त के कृषि-विभाग ने लगभग २१,००० लोहिया हल बेचे। इससे ज्ञात होता है कि इनका इस्तेमाल कृषक करने लगे हैं। इन हलों को हम साधारण रीति पर दो तरह के कह सकते हैं।

१—भारी हल जिनको खींचने के लिए मज़बूत बैलों की आवश्यकता होती है—जैसे विक्टरी हल।

२—हलके हल जो कि साधारण बैलों की जोड़ी द्वारा खींचे जा सकते हैं, जैसे मेस्टन हल, प्रजा हल, वाहवाह हल आदि।

इन हलों के सम्बन्ध में प्रत्येक किसान को निम्नाङ्कित बातें जानना अत्यावश्यक है।

१—मिट्टी पलटनेवाले हल देशी हल के एवज़ में प्रयोग नहीं हो सकते हैं। दोनों के जोताई-सम्बन्धी काम अलग-अलग हैं।

२—खेत में इकट्ठी हुई नमी पर यदि फ़सल उगाना है तो इन हलों का उपयोग नहीं होना चाहिए। इसलिए ही रबी की फ़सल में इन हलों से जोताई नहीं करते, क्योंकि वर्षा द्वारा जो नमी खेत में आ जाती है इन हलों के प्रयोग से नष्ट हो जाने का डर रहता है।

३—इन हलों के पीछे बोआई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इनके द्वारा बनाई गई कूँड़ बोआई के लायक़ नहीं होती।

४—उन स्थानों में जहाँ वर्षा कम होती हैं और सिंचाई की सुविधा नहीं है वहाँ लोहिया हल से जोताई दो तीन वर्ष में एक या दो बार ही करनी चाहिए। तजुर्बों-द्वारा ज्ञात हुआ है कि इनका इस्तेमाल इस प्रान्त के बुन्देलखण्ड भाग में विशेष उपयोगी नहीं है। दोआब की ज़मीन में और प्रान्त के उन भागों में जहाँ वर्षा अधिक है जैसे तराई के जिले या दूमट ज़मीन में इन हलों के इस्तेमाल से पैदावार बढ़ जाती है। कानपुर में, लोहिया हल और देशी हल की जोताई-द्वारा गेहूँ की पैदावार पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी जाँच करने से मालूम हुआ कि बिला मिट्टी पलटे हुए हल की जोताई के मुक़ाबिले में गहरी जोताई मिट्टी पलटनेवाले हल से करने से दाना, भूसा की पैदावार ४५।० फ़ी सदी अधिक हुई और मिट्टी पलटनेवाले हल से मामूली गहरी जोताई करने से ३३।० पैदावार अधिक हुई और बिना मिट्टी पलटे हुए गहरी जोताई से पैदावार केवल १३।० ही अधिक हुई। इनसे

ज्ञात होता है कि मिट्टी पलटनेवाले हल का उपयोग प्रान्त के उपरोक्त भागों में लाभदायक हैं। लायलपुर में भी इसी सम्बन्ध में तजुर्बे किये गये थे किन्तु वहाँ पैदावार में कोई अन्तर नहीं पड़ा। इसका कारण यही समझा जाता है कि वहाँ वर्षा बहुत कम है। गत वर्ष से इम्पीरियल एग्रिकल्चरल इंस्टीट्यूट, दिल्ली में भी इस क़िस्म की जाँच की जा रही है। वहाँ विक्टरी हल प्रयोग करने से जौ की उपज देशी हल की जोताई की अपेक्षा अधिक हुई।

५—हरी खाद को ज़मीन में दबाने के लिए इन हलों का होना बहुत आवश्यक है और बहुत-से गाँवों में हरी खाद का उपयोग इन हलों के अभाव के कारण रुका है। किसानों के पास और कोई औज़ार ऐसा नहीं है जिसके द्वारा वे हरी सनई की फ़सल मिट्टी में इतने अच्छे ढंग से दबा सकें। हरी खाद से सस्ती और सुविधाजनक और कोई खाद किसानों के लिए नहीं है। क्योंकि गोबर तो बहुत अंश में वे उपलों में नष्ट कर देते हैं और इतनी पूँजी है नहीं कि खली या अन्य नमक की खाद खरीदकर खेत में डाल सकें। अतएव मिट्टी पलटनेवाले हलों का प्रचार उन ज़िलों में जहाँ हरी खाद के लिए पानी की कमी नहीं है बहुत आवश्यक है।

६—रबी की फ़सल काटने के बाद खेत को सींचकर अथवा जहाँ सिंचाई की सुविधा नहीं है वहाँ वर्षा होने पर इन हलों से जोताई करने से बहुत लाभ होता है। उन खेतों में वर्षा का जल अधिक रुकता है और खेत की मिट्टी कटकर बहने से नष्ट नहीं होती, खेत में नमी अधिक मात्रा में रुकी रहती है जिससे रबी की फ़सल को बहुत लाभ पहुँचता है।

७—उपजाऊ ज़मीन में या जहाँ किसान पानी का पूरा प्रबन्ध कर सकते हैं या गन्ना अथवा आलू ऐसी फ़सलों के लिए खेत तैयार करने में इन हलों का उपयोग बहुत लाभदायक है।

८—खरीफ़ में जो खेत परती रहते हैं उनमें लोहिया हल से जोताई करने से खेत की सब घास नष्ट हो जाती है। मथुरा ज़िले में बैसुरई नाम की बहुत बुरी घास किसानों के खेत में बहुतायत से होती है और उसकी वजह से पैदावार में बहुत कमी हो जाती है किन्तु उसी भाग में सरकारी फ़ार्मराया पर इन हलों के इस्तेमाल करने से वह घास नष्ट हो गई है।

९—गन्ने की कूँड़, मेंड़ तथा सिंचाई की नाली आदि लोहिया हल द्वारा कम समय में और कम खर्चे पर बनाई जा सकती है।

१०—इन हलों का इस्तेमाल करने में किसानों को चाहिए कि यदि खेत में पहली बार हल बीच में रखकर जोताई की गई है तो दूसरी बार किनारे से बीच की ओर जोताई करें। ऐसा करने से खेत की सतह समतल रहेगी और ऊँची-नीची नहीं हो सकेगी।

उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि किसानों के पास देशी हल के अतिरिक्त लोहिया हल होना भी आवश्यक है। किन्तु दिन पर दिन किसानों के पास खेत का रक़बा कम होता जा रहा है। इस प्रान्त में ५० फ़ी सदी किसानों के पास पाँच एकड़ से भी कम ज़मीन है। ऐसी दशा में भारी क़िस्म के लोहिया हल तो बड़े ज़मींदार या अधिक रक़बा की जोताई करनेवाले किसान ही रख सकते हैं और हलके लोहिया हल अर्थात् मेस्टन हल आदि ४-५ एकड़ से अधिक ज़मीनवाले किसानों को रखना चाहिए किन्तु छोटे काश्तकार जिनके पास चार एकड़ से भी कम ज़मीन है उनके लिए ग्राम-सुधार, सहकारी-समितियों को चाहिए कि इस प्रकार के कुछ हल वे अपने पास रक्खें, और केवल लागत-मात्र खर्चे पर ही उनकी जोताई के लिए किराये पर दें।

अंडी की खेती

अंडी की फ़सल की पैदावार के लिहाज़ से हमारे सूबे का नम्बर हिन्दुस्तान में तीसरे दर्जे पर है, चूँकि यह फ़सल ज़्यादातर मिलुवाँ बोई जाती है, इसलिए इसका सही रक़बा नहीं दिया जा सकता। सन् १९३५-३६ ई० में इस सूबे के कारखानों और हैन्डस्क्रू प्रेसों में ४,७८,००० मन अंडी का तेल निकाला गया और ४१,४१६ मन बीज बाहर भेजा गया।

अंडी का तेल बतौर लुबरीकेन्ट के मशीनों में इस्तेमाल किया जाता है। यह साबुन और गिलोर बनाने के काम में भी आता है। यह जुलाब के तौर पर भी इस्तेमाल होता है।

अंडी की खली खाद देने के काम आती है। रेशम के कीड़े इसके पत्तों से खुराक हासिल करते हैं। इसके डंठल जो कि काफ़ी मोटे होते हैं, छप्पर बनाने के काम आते हैं।

क़िस्में—अंडी की क़िस्मों को दो हिस्सों में बाँटा जाता है।

१—कुछ साल तक बराबर कायम रहनेवाली क़िस्में जिनके पौधे लम्बे होते हैं और बीज बड़ा होता है।

२—एक साल क़ायम रहनेवाली क़िस्में जिनके पौधे आमतौर पर छोटे होते हैं और बीज भी छोटा होता है, पहले बतलाई हुई क़िस्मों को हर साल काटा भी जा सकता है और हर साल नये सिरे से बोया जा सकता है। इसलिए कि इनमें भी दूसरी क़िस्मों की भाँति ६ से ८ महीने में बीज आता है। बड़े बीजवाली क़िस्मों का तेल आमतौर से घटिया क़िस्म का होता है और जलाने व लुबरीकेशन के काम में लाया जाता है। छोटे बीजवाली क़िस्मों का तेल उत्तम होता है और ओषधि में इस्तेमाल किया जाता है। छोटे दानेवाली अंडी से बड़े दानेवाली अंडी के मुक़ाबिले में ज़्यादा तेल हासिल होता है।

कृषि-विभाग की उन्नतिशील क़िस्में अंडी नम्बर ३—पैदावार और तेल के परता के लिहाज़ से अच्छी साबित हुई है।

खेती का तरीक़ा—अगर्चे यह फ़सल खरीफ़ और रबी दोनों मौसमों में हो सकती है। लेकिन इसका खरीफ़ में बोना अच्छा है इसलिए कि रबी में बोने से इस पर पाले का असर पड़ जाता है। इसकी खेती के लिए ज़रखेज़ दूमट ज़मीन जिसमें पानी की निकासी का उचित प्रबन्ध हो ठीक है। मगर इसके पौधे हलकी और मटियार ज़मीनों में भी उग आते हैं। निचले खेत जिनमें पानी भर जाता हो, इस फ़सल के लिए ठीक नहीं। इसको फ़रवरी से जुलाई तक अकेले या मिलुवाँ दोनों तरीक़ों से बोया जा सकता है। अगर इसे खरीफ़ में अलग बोया जाय, तो पहली वर्षा होते ही बोआई कर देनी चाहिए। बीज को खुरपियों के द्वारा बोया जा सकता है और हल के पीछे भी कूँड़ के अन्दर डाला जा सकता है। हल के पीछे बोआई करने के बाद जब पौधे अच्छी तरह ऊपर निकल आयें तो उनकी दूरी पौधे से पौधे तक डेढ़ फ़ीट और लाइन से लाइन भी डेढ़ फ़ीट रक्खी जाय और बीचवाले पौधे उखाड़ दिये जायँ। बड़े पौधोंवाली क़िस्मों के लिए २ × ३ फ़ीट की दूरी मुनासिब है। मिलुवाँ फ़सल के लिए दो-तीन सेर बीज फ़ी एकड़ काफ़ी हैं और अलग फ़सल के लिए पाँच-छः सेर बीज फ़ी एकड़ इस्तेमाल करना चाहिए। अगर हल के पीछे बोआई की जाय तो बीज की मात्रा मिलुवाँ फ़सल में ५-६ सेर और अलग फ़सल में १०-१२ सेर फ़ी एकड़ होगी।

घूरे की खाद १५० मन फ़ी एकड़ के हिसाब से खेत में डाली जाय, नीम की खली का भी इस्तेमाल लाभदायक है। इसलिए कि इससे बीज में तेल का परता बढ़ जाता है। बोने के वक्त ज़मीन में काफ़ी नमी होनी चाहिए, नहीं तो बीज नहीं जमेगा जब तक कि पौधे अच्छी तरह से ज़मीन में अपनी जड़ें मज़बूत न कर लें, उस समय तक दो बार निकाई, गोड़ाई ज़रूरी है, जब उनकी पत्तियाँ ज़मीन पर काफ़ी साया डालने लगें तो गोड़ाई की ज़रूरत नहीं, अगर वर्षा कम हो और पौधों पर सूखा का असर पड़ने लगे तो सिंचाई ज़रूरी है।

खरीफ़ की फ़सल ८ से १० महीने में पककर तैयार हो जाती है, इसके पहले कि फल फटने लगें उनको तोड़ लेना चाहिए। कटाई आमतौर से फ़रवरी के अन्त में आरम्भ की जाती है और अप्रैल के अन्त में खत्म हो जाती है, गुच्छों को सप्ताह में एक या दो बार तोड़ा जाता है और धीरे-धीरे पौधे से सब गुच्छे तोड़ लिये जाते हैं। जिन गुच्छों को बीज के लिए रखना हो उनको साया में दो-तीन दिन तक सूखने के लिए रख देना चाहिए इसके बाद धूप में उस समय तक रखा जाय जब तक कि यह खुद-बखुद फट न जाये और बीज बाहर न फेंक दें फिर बाक़ी फलियों को किसी लकड़ी से धीरे-धीरे पीट लिया जाय और हवा में ओसाकर बीज अलग कर लिया जाय, अगर बीज बाज़ार में बेचना हो तो गुच्छों को एक गढ़े में भर दिया जाय, और उसे भूसा और गोबर से ढक दिया जाय। ३-४ दिन के बाद गुच्छों को निकालकर कुछ दिन तक धूप में रक्खा जाय, यहाँ तक कि फलियों से तमाम बीज निकल आयें।

पैदावार—खालिस फ़सल की पैदावार का औसत दस मन फ़ी एकड़ होता है। मिलुवाँ फ़सल की पैदावार ४-५ मन फ़ी एकड़ होती है।

(बुलेटिन नम्बर ७८ कृषि-विभाग यू० पी० से लिया गया।)

पावर केन-क्रशिंग मशीन-द्वारा गुड़

लेखक, श्रीयुत महमद गुलाम अकबर, ए० ओ० लखीसराय

(बरबीघा थाना के अन्दर और बस्ती में सड़क के किनारे, तीन किसान आपस में बातचीत कर रहे हैं।)

देवी महतो—क्या कहें भाई मंगर! यह सब नसीब का दोष है, नहीं तो पार साल हम लोगों ने केतारी की खेती कम की थी तो केतारी इतनी महँगी बिकी और गुड़ भी इतना महँगा बिका कि हम लोग हाथ मल-मलके पछताते रहे कि और क्यों नहीं किया और उसी के बदले इस साल ज़्यादा करके पछताना पड़ता है कि इसको अब कोई पूछनेवाला ही नहीं।

मंगर महतो—हाँ भाई! देखो न, इस साल कोई मिलवाले भी तो नहीं पहुँचते हैं। जब आये भी तो कहने लगे कि दस पैसे मन लें और अपने ही ख़र्चे से स्टेशन तक भी पहुँचाना पड़ेगा। कहो तो, जहाँ हमलोगों ने आठ आने मन बीहन ख़रीद कर लगाया वहाँ दस पैसे मन कैसे बिक्री करें? कम से कम चार आने मन भी ले तो कोई हर्ज़ नहीं।

भोजल महतो—भैया! यह सब हम लोगों के नसीब का खेल है, नहीं तो इस मर-जंग की लड़ाई में सब चीज़ें महँगी हो गईं और करीब-क़रीब दूनी क़ीमत में बिक रही हैं। मालूम पड़ता है सब चीज़ों का कसर केतारी और गुड़ ही पर बैठाया गया। क्या लड़ाई में इसका ख़र्च नहीं है?

देवी—सबसे भारी आफ़त तो यह है कि गुड़ भी बनाया जाय तो कैसे? हम तमाम घूम आये, लेकिन कहीं भी कोल्हू और कड़ाह का बन्दोबस्त न लगा और साथ-साथ इतनी ऊख तैयार करने के लिए बैल कहाँ से लावें?

भोजल—मेरे जानते तो यह सब फसाद एग्रिकल्चर डिपार्टमेन्ट के आदमी का किया हुआ है, क्योंकि जब तक हम लोगों ने नहीं किया था तब तक तो ये लोग बस्ती में आ आकर धूम मचाते थे और लेक्चरबाज़ी करते थे कि केतारी की खेती करो, इससे यह फ़ायदा है वह फ़ायदा है, फलानी केतारी लगाओ, ऐसे लगाओ इत्यादि। बस, अब लग गई तो कोई खोज-ख़बर भी नहीं लेता है।

मंगर—अरे भाई! भला इन लोगों से हम लोगों को फ़ायदा थोड़े ही पहुँच सकता है? इन लोगों ने तो आ आकर लेक्चर दिया और इसी में सरकार से तलब मिली। बस, बता दिया कि फलानी बस्ती में केतारी का प्रचार किया, यह किया, वह किया।

देवी—हाँ भाई, यह तो बिलकुल सही है। उन लोगों को इसकी क्या फ़िक्र है?

(एग्रिकल्चरल ओवरसियर का एक कामदार को साथ लिये हुए वहाँ पर पहुँचना और तीनों किसानों का उठकर एक स्वर में सलाम करना!)

तीनों किसान—आदाब हुज़ूर!

ए० ओ०—आदाब भाई! आदाब! कहो ख़ैरियत तो है?

देवी—क्या बतावें ख़ैरियत, हुज़ूर? इस साल तो ऐसी तरद्दुद में हम लोग पड़ गये कि कुछ कहते नहीं बनता है। आप लोगों के कहे मुताबिक़ ख़ूब ज़ोरों के साथ केतारी लगाई और अब पछता रहे हैं। न कहीं कोल्हू-कड़ाह मिलता है और न डाँट ही बिकता है। इस ज़मीन में कोई दूसरी फ़सल लगाते तो कहीं बेहतर था, जो इतनी तरद्दुद भी न होती और मज़े से पैदा हो जाता।

ए० ओ०—तुम लोग तो इसके लिए बेकार इतनी तरद्दुद करते हो। अगर कोल्हू और बैल मिलने में दिक़्क़त है तो देखो हम एक आसान तरीक़ा बताते हैं। आज-कल सरकार के यहाँ से एक 'बिहार जूनियर केन-क्रशर' याने मशीन के द्वारा केतारी पेरने की कल निकली है, जिससे आसानी से गुड़ निकाल सकते हो। तब बात यह है कि तुम लोग इसको अभी ख़रीद नहीं सकते हो जब तक इसका फ़ायदा नज़र से अच्छी तरह देख न लोगे। लेकिन प्रचार के वास्ते हम पहली बार सबौर से मँगवा दे सकते हैं।

मंगर—तब तो सरकार आपका बड़ा एहसान मानें। अच्छा, यह बताइए तो, इसके मँगाने में कुछ ख़र्चा भी लगेगा?

ए० ओ०—हाँ, ख़र्चा तो ज़रूर लगेगा। पहले तो तुम लोगों को ७५ रुपया बतौर पेशगी के जमा कर देना होगा और मशीन चालू कराने का रोज़ाना ख़र्च क़रीब पाँच रुपया लगेगा, यानी तीन रुपये का तेल और दो रुपये मिस्त्री की रोज़ाना मज़दूरी। अलावे, मशीन मँगाने का एक तरफ़ का ख़र्चा।

मंगर—नहीं सरकार! बाज आये ऐसा गुड़ बनाने से। ऐसा हम लोग नहीं चाहते कि "नौ की लकड़ी नब्बे ख़र्च।" भला इतना ख़र्चा केतारी पेराने में लगावेंगे?

ए० ओ०—तुम लोग भी तो देहाती के देहाती ही रहे। अरे भाई! पहले यह तो सोचो कि तुम लोग जो गुड़ बनाते हो उसमें ख़र्चा लगता है या मुफ़्त में तैयार होता है?

देवी—नहीं सरकार, ख़र्चा लगता तो है ज़रूर, लेकिन जितना आप बताते हैं उतना नहीं।

ए० ओ०—यह तुम लोगों की समझ का फेर है। अगर हिसाब करके देखो तो ख़र्चा कहीं ज़्यादा पड़ता है, अलावे परेशानी और समय भी ज़्यादा लगता है। अच्छा, हम मोटा-मोटा हिसाब तुम लोगों से पूछते हैं, इसका जवाब दो।

देवी—पूछिए, सरकार।

ए० ओ०—अच्छा, सबसे पहले यह बताओ कि एक कोल्हू से दिन भर में यानी दस घंटे में कितनी केतारी पेर सकते हो और उसमें कितने बैल और कितने मज़दूर की ज़रूरत पड़ सकती है?

देवी—दिन भर में एक जोड़ा बैल तो खींच ही नहीं सकता है। हम लोग एक कोल्हू में दो जोड़े और चार जन मौजूद रखते हैं तब सब काम ठीक से होता है और दिन भर में २० मन केतारी तैयार करते हैं।

ए० ओ०—अच्छा, तुम्हारी ही बात सही मान ली जाय, तो इस हिसाब से दो जोड़े बैल की मज़दूरी कम से कम बारह आने ज़रूर दोगे। इसके अलावे चार जन की मज़दूरी एक रुपया और तुम लोगों ने यह भी कहा है कि कोल्हू का भी छः आने रोज़ भाड़ा देना पड़ता है, तो कुल मिलाकर २=) हुआ, यानी २० मन केतारी पेरने में २=) ख़र्च होता है।

देवी—हाँ, सरकार इतना ख़र्च तो बैठता ही है।

ए० ओ०—अच्छा, अब हम लोगों के तरीक़े से बनाने का हिसाब सुनो। हमने पहले ही बता दिया है कि वह मशीन दस घंटे चलने से २०० मन केतारी पेरती है और उसमें कम से कम ५ चूल्हों की ज़रूरत पड़ती है, जिसमें सब मिलाकर क़रीब १० जन खटते हैं। १० जनों की मज़दूरी २।।) हुई और मशीन का पाँच रुपया रोज़ाना ख़र्च पहले ही बता चुके हैं। तो कुल मिलाकर ७।।) ख़र्च बैठा, जिसमें २०० मन केतारी तैयार की जाती है यानी २० मन केतारी में

सिर्फ़ ।।।) खर्चा बैठा और इस हिसाब से फ़ी २० मन में १।≈) की बचत है।

देवी—तब सरकार आपने जो बताया कि ७५) जमा करना होगा ?

ए० ओ०—उन रुपयों में मिस्त्री की मज़दूरी जितना रोज़ काम करेगा वह काट-कर बाकी फिर वापस मिल जायगा। इसके अलावे हम तुम लोगों को चूल्हा भी बनाने का नया तरीक़ा बता देंगे, क्योंकि तुम लोग जो चूल्हा बनाते हो उसमें ज्यादा जलावन खर्च होता है और हम लोगों के बनाये हुए चूल्हे में जलावन कम, ताव बेशी और गुड़ जल्दी तैयार हो जाता है। इसमें तीन तीन फ़ायदे हो जाते हैं।

मंगर—अच्छा सरकार, सवाल तो यह रहा कि हम लोग ग़रीब आदमी इतना रुपया कहाँ से लावें जो जमा करें।

ए० ओ०—किसी बड़े आदमी को अपने में शामिल करो जो अभी रुपया जमा कर दें। फिर पीछे हिसाब करके तो अपना चुका ही लेंगे।

देवी—हाँ हुज़ूर, यह ठीक कहा आपने। हम लोगों के मालिक के भी बहुत केतारी है और उनका भी पेराने का कोई इन्तज़ाम नहीं हो रहा है, उन्हीं से चलकर कहा जाय।

ए० ओ०—हाँ जी, हमसे भी एक बार उन्होंने इसके बारे में कहा था।

देवी—तो सरकार भी साथ में चलकर सब फ़ायदा उनको समझायें तो हम लोगों का काम बने।

ए० ओ०—अच्छा चलो। उनको तो सब बातें मालूम ही हैं।

(किसान-सहित ओवरसियर साहब का ज़मीन्दार के यहाँ पहुँचना, जहाँ ज़मीन्दार साहब एक तख्तपोश पर बैठे रैयतों से बातें कर रहे हैं। तीनों किसानों का झुक-झुककर सलाम करना।)

ए० ओ०—आदाब अर्ज़ है।

ज़मीन्दार—आदाब अर्ज़ है। आइए, अभी तो आप ही का तज़किरा कर रहे थे। फ़रमाइए कैसे तशरीफ़ लाये ?

ए० ओ०—कहिए, केतारी पेराने का इन्तज़ाम हुआ ?

ज़मीन्दार—क्या कहा जाय जनाब। इसी के बारे में तो अभी इन लोगों से बातें हो रही थीं। ये लोग भी केतारी पेराने के लिए परेशान हैं।

ए० ओ०—पिछले महीने हम जब यहाँ आये थे और इसी विषय की चर्चा चली थी तब हमने 'बिहार जूनयर केन-क्रशर' मँगाने के बारे में आपसे कहा था और उसका खर्चा और बचत भी अच्छी तरह से समझा दिया था। ७५ रुपये जमा करके क्यों नहीं प्रचार के वास्ते इस साल मँगा लेते हैं ? इन ग़रीबों की भी भलाई इससे हो जायगी।

ज़मीन्दार—ठीक फ़रमाया आपने ! यह तो ख्याल से बिलकुल ही उतर गया था, इससे तो समय की भी बचत होगी, क्योंकि जो केतारी तैयार होने में जून तक लगेगा वह एक महीना के अन्दर हो जायगी और साथ-साथ बरबादी से भी बचेगी।

(अपने मुंशी जी से) मुंशी जी ! लिखिए तो एक दरख्वास्त 'डिप्टी इन्स-पेक्टर आफ़ एग्रिकल्चर, सबौर' को।

(मुंशी जी ने एक दरख्वास्त लिखकर जमीन्दार साहब से दस्तखत करा के ए० ओ० के हवाले की।)

ए० ओ०—देखिए साहब ! इसकी मंजूरी आ जाने से आप रुपया जमा कर दीजिएगा। उसके बाद मशीन जब आ जायगी तो हम भी कामदार को लेकर पहुँच जायेंगे। अच्छा, आदाब।

जमीन्दार—आदाब।

(कुछ रोज़ के बाद मशीन जब पहुँच गई, ए० ओ० भी तीन कामदार को साथ लेकर पहुँच जाते हैं।)

ए० ओ०—(बाद आदाब बन्दगी के) देखिए साहब, मशीन पहुँच गई। अब काम शुरू कर दीजिए। लेकिन सबसे पहले हमको चूल्हा बनाने के लिए बता देना पड़ेगा; बल्कि अपने सामने ही बनाकर दिखा देना पड़ेगा, क्योंकि देशी चूल्हे से काम नहीं चलेगा। मिस्त्री और मज़दूर को बुलाइए।

ज़मीन्दार—(मिस्त्री और मज़दूर को बुलाकर ए० ओ० के हुकुम के मुताबिक काम करने का आदेश देते हुए) लीजिए जनाब जैसे आपको पसन्द हो वैसे बनाइए।

ए० ओ०—(बुलेटिन नं० २ सन् १९३२ में का नक्शा हाथ में लिये हुए तीन फ़ीट ज़मीन में निशान देकर) देखो जी ! इस निशान पर इस तरह से नीचे दो फ़ीट नौ इंच तक गढ़ा बनाओ जो उलटा बाल्टिन की शकल का हो और उसका व्यास ४ फ़ीट ६ इंच रहे। फिर ३ फ़ीट का व्यास लेकर तीन फ़ीट तक उसी तरह खनते जाओ जिससे नीचे में ४ फ़ीट व्यास रह जाय। जैसे इस नक्शे में है वैसे हवा निकलने का रास्ता बना दो और जलावन देने का मुँह बना दो और एक चिमनी ताव निकलने के लिए दूसरी तरफ़ बना दो। बीच में ग्रेटिंग रखो और ऊपर में कड़ाह फिट करके रखो।

(कुछ देर के बाद नक्शे के मुताबिक चूल्हा तैयार हो जाता है और इसी तरह और भी चूल्हे बनकर काम शुरू हो जाता है। बस्ती के बहुत-से लोग देखने के लिए जुट जाते हैं और ताज्जुब के साथ देखते हैं।)

ज़मीन्दार—वाह साहब, आपने तो खूब बढ़िया तरीका निकाला है। यद्यपि इस चूल्हे में ईंटा और ग्रेटिंग देशी चूल्हे से फाज़िल लगा लेकिन काम बड़े ठिकाने से चल रहा है।

ए० ओ०—आप लोगों को एस० बी० शक्कर बनाने का तरीका भी बता देते हैं जो देशी गुड़ की अपेक्षा दूनी क़ीमत में बिकेगा।

ज़मीन्दार—यह आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

ए० ओ०—साधारण गुड़ बनाने में जिन औज़ारों की ज़रूरत होती है उससे फाज़िल इसमें लोहे की दो खुरपी और लकड़ी की दो थापी लगती हैं और इसके बनाने का तरीका यह है—

तीन टीन रस एक कड़ाह में डालकर धीरे-धीरे आँच दी जाय और ऊपर में छाली हो जाने से उसको जल्दी से निकाल दिया जाय। ताव बढ़ने पर खौलते हुए रस में एक चम्मच सायट्रिक एसिड दे दिया जाय और जितनी बार छाली पड़े निकाले जायँ। इस तरह से ३० मिनट में राब बन जायगी। तब उसमें आधी छटाँक शुद्ध कड़आ तेल डाल देना चाहिए और उसको बराबर गुरदानी से चलाते रहना चाहिए। १५ मिनट के बाद उसको उतारकर सीमेन्ट की थाली में पतला करके फैला देना चाहिए और जल्दी-जल्दी खुरपी से फेरते हुए हवा लगाते रहना चाहिए, ताकि ढेला न होने पावे और ढेले को थापी से फोड़ते रहना चाहिए। उसके बाद मारकीन के कपड़े से ढक देना चाहिए। थोड़ी देर के बाद कपड़ा हटाकर ढेलों को थापी से चूर-चूर कर देना चाहिए। और दोनों हथेलियों से दबा-दबाकर अलग रखते जाना चाहिए और फिर थापी से चूर कर देना चाहिए। बस यही तो है एस० बी० शक्कर बनाने का तरीका।

ज़मीन्दार—अगर तकलीफ़ न हो तो आप लोग अपने से एक दो बार बनाकर बता दीजिए।

(इसके बाद कामदार ऊपर बताये हुए तरीके से गुड़ बनाने में लग जाते हैं और दो घंटे के अन्दर एस० बी० शक्कर तैयार हो जाती है।)

ए० ओ०—देखिए साहब, यही एस० बी० शक्कर कहलाती है।

ज़मीन्दार—धन्यवाद है आप लोगों को। अब हम लोगों की सब तकलीफ़ें दूर हो गई।

ए० ओ०—कहिए साहब, अब तो सब काम ठीक हो गया?

ज़मीन्दार और दूसरे किसान—जी हाँ, अब किसी को कोई तकलीफ़ नहीं है।

ए० ओ०—(किसानों को सम्बोधन करते हुए) आप लोगों ने इसका फ़ायदा नज़र से देख ही लिया। इस विषय में ज़्यादा कुछ कहना नहीं है। तब बात यह है कि इस साल आप लोगों को प्रचार के वास्ते यह मशीन [illegible]। हर साल नहीं मिल सकती है। इससे बेहतर है कि सब कोई मिलकर एक मशीन [illegible] खरीद लें।

किसान लोग—इसकी क़ीमत क्या होगी [illegible]?

ए० ओ०—क़ीमत तो इसकी २,३००) [illegible] अगर अकेला एक किसान नहीं [illegible] सकता, तो आप लोग आपस में 'केन-[illegible] सोसाइटी' क़ायम करके मँगा सकते [illegible]।

(केन ग्रोअर्स सोसाइटी के बारे में ए० [illegible] का कुछ देर तक लेक्चर देना और [illegible] चल देना।)

किसान लोग—अच्छा आदाब हुज़ूर।

ए० ओ०—आदाब भाई! आदाब।

(किसानों की आपस में बातचीत)

[illegible] महतो—ऐ भाई मंगर! वाक़ई [illegible] साहब ने जैसा कहा वैसा ही [illegible] देखो, हम लोगों के सिर से कितना [illegible] उतर गया!

[illegible]—हाँ भाई! हम लोग देखते हैं [illegible] इन लोगों को हम ही लोगों के [illegible] के वास्ते रखती है। कैसी आसानी [illegible] काम निकाल दिया?

[illegible] महतो—(जो सबसे बुद्धिमान् [illegible]) अरे यह क्या देखते हो। सवौर [illegible] एक महकमा ही अलग है, जहाँ बड़े-[illegible] काम करते हैं। हम पार साल सवौर गये थे तो देखा कि बड़े-बड़े अफ़सर साल भर केवल यही आजमाइश करते रहते हैं कि किस किस्म की ज़मीन में कौन-सा बीहन ठीक होगा और उन्हीं लोगों के हुक्म के मुताबिक ये लोग बस्ती-बस्ती में प्रचार करते फिरते हैं कि फलानी ज़मीन में फलाने नम्बर का बीहन दो, इत्यादि।

देवी—हाँ भाई! यह सब हुआ, अब हम लोग अपने-अपने घर चलें।

खाने की चीज़ों को कोल्डस्टोरेज में सुरक्षित रखना और उनकी बारबरदारी

लेखक, श्री डी० बी० करमारकर

हर मुल्क के लिए यह ज़रूरी है कि खाने की चीजें उसके हर हिस्से में आसानी से पहुँच सकें। हिन्दुस्तान जैसे बड़े मुल्क में बग़ैर आने-जाने के उचित साधनों के यह मुमकिन नहीं है। जल्द ख़राब न होनेवाली चीज़ें जैसे नाज और शकर तो आसानी से मुल्क के एक हिस्से से दूसरे हिस्से को भेजी जा सकती हैं। लेकिन सड़ जानेवाली चीज़ें बग़ैर ख़ास बचाव के एक जगह से दूसरी जगह नहीं भेजी जा सकतीं। पुराने ज़माने में जल्द ख़राब हो जानेवाली खाने की चीज़ों को सुखा करके, धुआँ देकर या नमक लगाकर क़ायम रखा जाता था और ये तरीक़े अब भी जारी हैं। सुखाये हुए फल, नमक लगाई हुई मछली और शकर लगे हुए फल बाज़ार में बिकते हैं। इन चीज़ों को अच्छी हालत में रखने के लिए केवल इतना बचाव करना होता है कि उनमें नमी न लगने पाये।

फलों को बोतलों और डिब्बों में बन्द करके सड़ने से बचाने के कला-कौशल ने गत सौ वर्ष के समय में बहुत उन्नति कर ली है। अगर बोतलें और डिब्बे अच्छी तरह बन्द कर दिये जाते हैं तो उनकी बारबरदारी में कोई कठिनाई नहीं होती और वे दुनिया के हर हिस्से को भेजे जा सकते हैं। खाने की चीज़ों को एक समय तक सुरक्षित रखने के लिए कोल्डस्टोरेज का तरीक़ा बहुत सफल हुआ है। इस तरीक़े में यह फ़ायदा है कि जिन चीज़ों को ख़राब होने से बचाना होता है उन्हें नीचे टैम्परेचर पर रक्खा जाता है। रेफ़रीजरेटर मशीनों के द्वारा से जल्द ख़राब हो जानेवाली चीज़ों को कोल्डस्टोरेज में या तो ठण्डा करके रक्खा जाता है या बहुधा समय उनको जमी हुई दशा में रक्खा जाता है। गोश्त, मछली वग़ैरह ठण्डी हालत में ज़्यादा समय तक अच्छे नहीं रह सकते, लेकिन अगर उनको मुनजमिद होनेवाले टैम्परेचर पर रक्खा जाय तो वह लगभग असीमित समय तक अच्छी हालत में रह सकते हैं। फल और तरकारियाँ ३२ डिगरी फ़ार्नहाइट टैम्परेचर के नीचे सुरक्षित नहीं रक्खी जा सकतीं इसलिए कि जब वे जमी हुई हालत में निकाली जाती हैं तो उनके रेशे टूटने लगते हैं और फल व तरकारियाँ सिकुड़ी हुई मालूम होती हैं।

विभिन्न फल और तरकारियों को विभिन्न टैम्परेचर पर कोल्डस्टोरेज में रक्खा जाता है, जैसे सेब के लिए सबसे अच्छा टैम्परेचर ३२ डिगरी फ़ार्नहाइट और नारंगी के लिए ४० डिग्री फ़ार्नहाइट है। दक्षिणी अफ़्रीका, कनाडा और केलीफ़ोर्निया से इँगलिस्तान को फल कोल्डस्टोरेज में भेजे जाते हैं। यह बहुत बड़ा व्यापार ऐसे जहाज़ों-द्वारा किया जाता है जिनपर कोल्डस्टोरेज का प्रबन्ध होता है। हिन्दुस्तान में रेलवे के इन्सुलेटिड कम्पार्टमेंट ख़राब हो जानेवाली चीज़ों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए इस्तेमाल होते हैं। इनमें बर्फ़ का पानी और सूखी बर्फ़ भी इस्तेमाल होती है और इस सिलसिले में रेफ़रीजरेटर रेलवेकार बनाने का तजुर्बा भी किया गया है। इम्पीरियल कौंसिल आफ़ एग्रिकलचरल रिसर्च का मार्केटिंग स्टाफ़ आड़, अंगूर और इसी क़िस्म के अन्य फलों को एक जगह से दूसरी जगह बग़ैर ख़राब हुए ले जाने के विभिन्न पहलुवों पर जाँच कर रहा है।

(इण्डियन फ़ार्मिंग पत्रिका नवम्बर मास सन् १९४१ से लिया गया)।

जंगल और समाज

यह निस्सन्देह है कि जंगल-विभाग के उद्देश्य के विषय में सर्वसाधारण जितना कम ज्ञान रखते हैं उतना कम ज्ञान और किसी भी भारतीय सरकारी विभाग के कामों में नहीं रखते।

जंगल––यह समझना कि वृक्षों से भरी हुई ज़मीन ही जंगल है––एक बहुत भारी भूल है। लोगों का कथन है कि जिस तरह संसार में सुयोग्य और अयोग्य का झगड़ा जारी है उसी प्रकार जंगलों में भी एक वृक्ष दूसरे वृक्ष को नष्ट कर उसका स्थान ले लेने की कोशिश करता है। यहाँ प्रकृति अपना रंग और विभिन्न दशा दिखलाती है जिसके कारण जंगल संसार में एक विचित्र वस्तु है। जंगल में केवल पौधे, वृक्ष और जानवर रहा करते हैं और इसी नाते वे मित्रवत् शत्रु हुए। जीवन के निर्वाह-हेतु जितनी मनुष्य को आवश्यकता है उतनी ही वृक्ष तथा पौधों को भी है। इसी लिए जो वृक्ष सबसे अधिक बलवान् और सम्पन्न है उसी का राज्य है। जंगल के इतिहास और मनुष्य के इतिहास में बहुत समानता है अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य ने जंगल की गुफाओं में वास करते-करते यहाँ तक उन्नति की कि संसार का राजा बन गया, उसी प्रकार जंगलों ने भी अपनी उन्नति की। यह जंगल के इतिहास से भी सिद्ध होता है "जैसी करनी वैसा फल"।

ऐसे बहुत प्रमाण हैं जिनसे पता चलता है कि पृथ्वी का अधिकांश भाग किसी समय जंगलों से आच्छादित था। मनुष्य जैसे-जैसे जंगली रहन-सहन छोड़कर सभ्य होने लगा और पालतू पशु पालने, खेती करने और रहने की झोपड़ी बनाने लगा वैसे-वैसे जंगली भागों को साफ़ करने की आवश्यकता होती गई। यदि शहर बसाने के लिए या खेती के लिए ज़मीन तैयार करने के इरादे से जंगल साफ़ किया जाय तो कोई भी बुद्धिमान् मनुष्य इसका विरोध नहीं कर सकता। यह सोचने की बात है कि ऐसा करने से मानव-समाज का लाभ होता है या नहीं, यदि होता है तो वृक्षों को काटने में कोई हानि नहीं। परन्तु ऐसा हमेशा कोई नहीं करता।

बहुधा देखा है कि हम स्वार्थवश या अपनी मूर्खता के कारण या लापरवाही से सैकड़ों वर्ष की संचित एवं सुरक्षित सम्पत्ति को कुछ ही सालों में नष्ट कर देते हैं। इससे हमारा जितना नुक़सान होता है उसका अंदाज़ा हम अच्छी तरह नहीं लगा सकते। सचमुच हम घर आई हुई सम्पत्ति को पाँवों से ठुकरा देते हैं। कितनी भी पुरातन सभ्यता क्यों न हो वह जंगलों में तथा घास-भरे मैदानों में फूली-फली और समतल भूमि पर उसने अपना आधुनिक रूप धारण किया। अब वह बिलकुल निराली मालूम होती है। इसी सिलसिले में जंगलों को सुरक्षित रखने का ज्ञान भी पैदा हुआ।

जुर्म करने पर सज़ा मिलती ही है। मनुष्य घास, वृक्ष और जल के प्रति जो जुल्म करता है उसकी भी सज़ा उसे भोगनी पड़ती है। चिरसुरक्षित जंगलों का मनुष्य-द्वारा ध्वंस होने के कारण आज मेसोपोटामिया और सिन्धु नदी की सभ्यता की दशा शोचनीय है।

फ़ारस, अरब, सीरिया और मिस्र को भी इसका फल भोगना ही पड़ा।

जंगल की आग से भीषण हानि––शहरों में जब अग्नि का प्रकोप होता है तो एक हुल्लड़ सा मच जाता है। फ़ायरब्रिगेड (आग बुझानेवाली मशीन) की चिल्ल-पों से शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सनसनी छा जाती है। परन्तु गर्मी की ऋतु में जंगल में लगने वाली आग इतना प्रचण्ड रूप धारण करती है कि इसका हद व हिसाब शहरों में रहनेवाले शायद ही लगा सकते हैं। हमारे देश में जितनी लकड़ियाँ काम में लाई जाती हैं उससे बहुत ही अधिक दावाग्नि से जलकर नष्ट हो जाती हैं। अकसर राहगीरों की लापरवाही के कारण जंगल में आग लग जाती है। घास से भरे हुए मैदानों को साफ़ करने के लिए लोग उसमें आग लगा दिया करते हैं। अगर जंगल निकट रहा तो यह आग जंगल को नष्ट कर देती है। आग लग जाने पर उसको बुझाना आसान नहीं है। सूखी लकड़ियों और पत्तियों के कारण आग बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ना शुरू करती है और कई एकड़ अच्छे जंगलों को बात की बात में बरबाद कर देती है, जिसका नुक़सान कई वर्षों में भी पूरा नहीं किया जा सकता। हम लोगों में एक आदत होनी चाहिए कि दियासलाई या और जलती हुई काड़ी फेंकने के पहले देख लें कि वह अच्छी तरह बुझी है या नहीं। किसी पड़ाव से रवाना होने के पहले वहाँ अगर आग जलाई गई हो तो उसे बुझा डालना बहुत ही आवश्यक है। दूसरों की असुविधाओं पर ध्यान देना मनुष्यों का धर्म है। लापरवाही से हमारी कमज़ोरी प्रकट होती है और असफलता होती है।

लकड़ियों को काम में लाने के नाते किसी हद तक हम लोगों को लकड़हारा बनना उचित है। देश की भलाई के लिए जंगलों का होना बहुत ही ज़रूरी है। हम चौकस रहते हैं कि हमारे घरों में या शहरों में आग न लगे। तो फिर जंगल में या उसके निकट हम इस विषय में लापरवाह क्यों रहें? यद्यपि हम लोगों को प्रत्यक्ष रूप से मालूम नहीं होता कि हमारी क्या नुक़सानी हो रही है, फिर भी जंगलों के नष्ट होने से जो घाटा होता है उसमें हम सभों को हाथ बँटाना पड़ता है। मनुष्य की असावधानी से जंगल में आग लगने से जो हानि होती है वह मुफ़्त की बरबादी है। इससे हमारे देश के सारे व्यापार को भी गहरा धक्का लगता है।

चरागाह––बिना विचारे किसी भी ज़मीन को चरागाह के काम में लाना भी जंगलों की बरबादी का एक बड़ा कारण है।

कोई भी ज़मीन अनगिनती मवेशियों का पेट नहीं भर सकती। सभी चीज़ की एक सीमा होती है। एक खास हद तक ही ज़मीन भी खाना पैदा कर सकती है––लेकिन हम लोग कभी इसका ख़याल नहीं करते।

झुण्ड के झुण्ड मवेशी एक ही साथ जंगलों में चरने के लिए छोड़ दिये जाते हैं। इसका परिणाम होता है कि बहुत ही जल्द जंगल की जितनी भी खाने की चीज़ें होती हैं सभी समाप्त हो जाती हैं और खाद्य पदार्थ पाँवों से कुचलकर नष्ट हो जाते हैं। इन्हीं सब कारणों से हरी-भरी ज़मीन बलुआही हो जाती है और अन्त में सारी ज़मीन ऊसर हो जाती है। ऐसी जगहों के मवेशी दुबले-पतले और निकम्मे हो जाते हैं। जब तक नई घास नहीं उगती तब तक बैल हल में जुतने लायक़ नहीं होते।

इन सब कारणों से चरागाहों को बदलते रहना चाहिए। जब मवेशी किसी खास मैदान में चरते हों, उस समय दूसरे मैदानों में मवेशियों का जाना एकदम रोक दिया जाय जिससे कि घास अच्छी तरह बढ़ सके।

जंगलों की अप्रत्यक्ष उपयोगिता––किसी भी स्थान की जलवायु पर वृक्षों के समूह का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जंगलों के निकट की भूमि न ज़्यादे गर्म होती है न ठण्डी। ऐसे स्थानों में जलवायु का आकस्मिक परिवर्त्तन नहीं होता। दिन में न ज़्यादा गर्मी रहती है न रात को अधिक ठण्ड ही पड़ती है। कभी-कभी आँधी के कारण रास्ते और घर बालू से भर जाते हैं, परन्तु जहाँ जंगल हैं वहाँ ऐसी खराबियाँ नहीं होतीं।

जंगलों में जब ज़ोर से पानी बरसता है तो पेड़ की पत्तियों से टकराकर बड़ी-बड़ी बूँदें लाखों छोटे-छोटे कण बन जाते हैं। पत्तियाँ वर्षा के वेग को रोकती हैं और पानी धीरे-धीरे ज़मीन पर बिछे हुए सूखे पत्तों पर पड़ता है और वहाँ से ज़मीन की उस सतह पर पहुँचता है जहाँ हज़ारों पेड़ों की जड़ें तथा जड़ की कड़ियाँ रहती हैं। जंगल में पेड़ और पत्तों में पानी को सोखने की शक्ति होने के कारण ढालू ज़मीन होने पर भी वहाँ की मिट्टी पानी के साथ नहीं बहती और बाढ़ नहीं होती। सबको विदित है कि सामान्य ऋतु के कारण लोग नदी-नाले और बाँध के किनारों को मज़बूत करते हैं तो यह सोचने की बात है कि खुली ढालू ज़मीन पर वृष्टि का क्या प्रभाव होगा। सब पहाड़ी देशों में, जिनसे नदियों को पानी मिलता है, जंगल का सुरक्षित रहना केवल सौन्दर्य और लाभ के लिए नहीं, परन्तु पहाड़ी तथा उसकी तराई के निवासियों की भलाई व रक्षा के लिए अत्यावश्यक है। जंगल के न रहने से सब मिट्टी बह जाती है; खाई बन जाती है और पानी का वेग बढ़ जाता है और पहाड़ सब वीरान और ऊसर पड़ जाते हैं। उन पहाड़ों की तराई में रहनेवालों की दुर्दशा का तो पूछना ही क्या है। गहरे पसीने की कमाई से उन्हें बाँध इत्यादि तैयार करने पड़ते हैं, जिसमें वे सुरक्षित रह सकें। परन्तु मूसलधार वृष्टि होने से जल-प्रवाह के साथ बड़े-बड़े चट्टान भी नीचे चले आते हैं और उनके बाँध को तहस-नहस कर देते हैं। गाँव के गाँव नष्ट हो जाते हैं और इससे इतनी धन-जन की हानि होती है जिसका हद व हिसाब नहीं है।

प्रत्यक्ष उपयोगिता––आर्थिक लाभ––लकड़ी तथा जंगल की दूसरी चीज़ों के व्यापार से देश के धन की काफ़ी वृद्धि होती है। सन् १९३० के संसार-व्यापी आर्थिक संकट के पहले तक जंगल की आमदनी बराबर बढ़ती ही जा रही थी। जंगल-विभाग की आमदनी १८६४-६५ से १८६८-६९ तक ३७.४ लाख थी, परन्तु १९१३-१४ से १९१८-१९ के बीच इसकी आमदनी बढ़कर २९६ लाख हो गई। महायुद्ध के बाद चीज़ों की दर बढ़ जाने के कारण १९२४-२५ से १९२८-२९ के बीच इसकी आमदनी ५९५ लाख हो गई है। १९३० से आमदनी कम हो गई है और आज इसकी आमदनी ३९५ लाख है। ऊपर दिये गये अंकों में उन चीज़ों की गिनती नहीं की गई है जो जंगल-वासी देहातियों को मुफ़्त या नाम-मात्र के दाम पर दी जाती हैं। जंगल के समीप रहनेवालों के लिए लकड़ी, जलावन, घास, चरागाह इत्यादि बहुत ही आवश्यक चीज़ें हैं। मुफ़्त में जितनी चीज़ें उनको दी जाती हैं उनका मूल्य लगभग ६६ लाख रुपये प्रति-साल है। जंगलों में लगभग १,३०,००,००० मवेशी चरते हैं, जिनमें लगभग ८०,००,००० मवेशी मुफ़्त ही चरते हैं। जंगल के केवल थोड़े ही हिस्सों में चराई की मनाही है। जब मवेशियों के खाद्य पदार्थ की कमी होती है तो जंगलों से बहुत ही मदद मिलती है।

जंगलों में लोगों को जीविका भी प्रदान की जा सकती है, इसका विचार शायद ही कोई करता है। जब लोगों को खेती से फ़ुरसत मिलती है, ठीक उसी मौसम में जंगलों में काम शुरू होता है। १९३१ की मर्दुमशुमारी के मुताबिक़ ब्रिटिश भारत के क़रीब २०,००,००० आदमियों को जंगल-विभाग में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नौकरी मिलती है। इन अंकों को देखकर बहुत लोग आश्चर्यान्वित हो जायँगे, लेकिन वास्तव में यह बतलाना है कि हिन्दुस्तान जैसे कृषि-प्रधान देश में जंगलों से यहाँ की आर्थिक समस्या पर क्या प्रभाव पड़ता है। (बिहार के जंगल-विभाग का एक पर्चा।)

––किसान से

भारतवर्ष में चारे की फ़सलें

लेखक, श्री सी० पी० दत्त और बी० एम० पग

आज-कल चारे की समस्या दिन प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है। इसके कई कारण हैं। इनमें से सर्वप्रथम कारण यह है कि भारतवर्ष में डेयरी का काम इतना बढ़ रहा है कि इसके लिए अच्छे चारे की ओर अधिक ध्यान देना बहुत आवश्यक है। दूसरा कारण यह है कि देश में साधारणतया चरा-गाहों की कमी होती जा रही है। तीसरे देश में कृषि के साधनों में उन्नति हो रही है। फलतः नये नये औज़ारों का प्रयोग बढ़ रहा है जिनके उपयोग के लिए अच्छे जान-वरों की आवश्यकता होती है। चारे की दिलचस्पी और उसमें अधिक शक्तिदायिनी वस्तु का आविष्कार करने का अन्तिम कारण यह है कि हमारा ज्ञान इस बात पर उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है कि कौन-सी वस्तु मनुष्य और जानवर दोनों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी? उपर्युक्त कारणों से भारतवर्ष में चारे की समस्या कृषि की कठिनाइयों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

अधिकतर चारे को दो भागों में विभक्त किया गया है:—(१) घासें और (२) छीमीदार पौधे। भारतवर्ष में घासों में प्रमुख नेपियर घास, गाइना घास, जई और दूब या हरियाली घासें हैं। छीमीदार पौधों में (१) ल्यूसर्न, (२) क्लोवर और गौरा विशेष हैं।

चारे की घासें

नेपियर—यह पौधा मध्य अफ़्रीका के घासों के मैदान का है जहाँ पर यह कसरत से पाया जाता है। पहले पहल रोडेशिया में इसका प्रयोग चारे की तरह किया गया। भारतवर्ष में इसका प्रचार क़रीब १९१७ में हुआ। तब से इसका प्रचार भारतवर्ष के कोने-कोने में दिन दुना रात चौगुना हो रहा है और खासकर सरकारी प्रयोगों तथा प्रदर्शनों और व्यक्तिगत प्रयोगों में लाया जाता है।

नेपियर घास क़रीब ६ या १० फ़ीट ऊँची होती है। इसके डंठल खूब बढ़ते हैं और पहले साल उनकी संख्या करीब बीस होती है लेकिन धीरे-धीरे उनकी ऊँचाई और संख्या बढ़ती जाती है। डंठल अकसर सीधे होते हैं। डंठल का निचला हिस्सा अकसर चिकना होता है लेकिन सिरे के पास कुछ बालदार होता है और वह एक प्रकार के आव-रण से ढका रहता है। पत्तियाँ घास की तरह ही होती हैं। डंठल पत्तियों के ढक्कन से ढका रहता है और अकसर चिकना होता है परन्तु कभी-कभी वह बालदार भी होता है। पत्तियाँ लाइनदार और करीब दो या तीन फ़ीट लम्बी होती हैं। इसका पुष्पपुञ्ज क़रीब ६ से १२ इंच तक लम्बा होता है। इसके बीज पूर्ण परिपक्व नहीं होते।

चूँकि इस पौधे के बीज परिपक्व नहीं होते हैं अतः इसके बोने के लिए इसकी जड़ें और इसकी कटिंग का प्रयोग करते हैं। इसकी जड़ों-द्वारा बोआई करना सर्वोत्तम और शीघ्र फलदायक होता है। ये जड़ें एक दूसरे से तीन या चार फ़ीट की दूरी पर बोई जाती हैं और कतारों के बीच में दो या तीन फ़ीट की दूरी होती है। पहली बोआई के चार महीने बाद यह घास कटाई के लिए तैयार हो जाती है और इसके बाद पानी और मौसम की अच्छी अवस्थायें होने से एक-एक महीने के बाद उसकी कटाई की जाती है। सिंचाई करने पर यह और भी बढ़ती जाती है लेकिन सूखा सहने की शक्ति भी इसमें अधिक होती है। इसे पाले का डर बराबर रहता है। सिंचाई करने से फ़सल की उन्नति खूब होती है। अच्छी सुविधायें होने पर पहली बार क़रीब २०० मन घास एक एकड़ में हो सकती है। इस प्रकार हरे चारे को १० बार काटने में उसका औसत क़रीब २,००० मन होगा। ४,००० मन से ५,००० मन तक का भी औसत पाया गया है। हरी घास ही जानवरों को खिलाई जाती है फिर भी यह सुखाकर भी रखी जा सकती है।

गाइना घास—यह घास अफ़्रीका में सबसे पहले हुई और उसके बाद जमैका में फैली जहाँ से संसार के अन्य भागों में प्रच-लित हुई। भारतवर्ष में यह घास जमैका से क़रीब अठारहवीं शताब्दी में प्रचलित हुई। उस समय से यह घास भारतवर्ष में चारे के लिए बहुत ही उपयोगी बताई गई है।

यदि यह घास बढ़ती जाय तो यह ४ से ६ फ़ीट तक बढ़ सकती है। यह पौधा भी नेपियर घास की तरह बढ़ता है और इसमें भी बीस या बीस से अधिक शाखें निकलती हैं। इसके डंठल सीधे होते हैं और नीचे की तरफ़ कुछ टेढ़े होते हैं। इसकी पत्तियाँ नेपियर घास की तरह चौड़ी नहीं होती हैं बल्कि लम्बी होती हैं। उनकी बनावट भी कुछ भद्दी होती है। इस घास की पत्तियों में बहुत कुछ विभिन्नता पाई जाती है। इसका कारण भूमि और जलवायु तथा प्राकृ-तिक विभिन्नतायें होती हैं। कभी-कभी तो ये पत्तियाँ मक्के की पत्ती के समान चौड़ी होती हैं। इसके बीज आसानी से और शीघ्रता से छितरा जाते हैं अतः परिपक्व बीज पाना कठिन है। यदि बीज परिपक्व होने के पहले हटाकर छाये में रख दिये जायँ तो कुछ बीज मिल सकते हैं।

भारतवर्ष ऐसे गरम देश में यह पौधा खूब उगता है। सूखी जगहों में यह पौधा आसानी से रह सकता है लेकिन जहाँ काफ़ी नमी होती है वहाँ यह पौधा और भी अधिक संख्या में उपज सकता है। पानी लगने-वाली जगहों में यह फ़सल अच्छी नहीं हो सकती। उत्तरी भारतवर्ष में सर्दी के दिनों में इस पौधे की बढ़ती रुक जाती है और गरमी आते ही वह शीघ्रता से बढ़ता जाता है। इसपर पाला भी बहुत पड़ता है। यह हर

प्रकार की मिट्टी में उपजाया जा सकता है लेकिन खासकर दोमट या हलकी दोमट में इसकी उपज बहुत अच्छी होती है।

इसकी बोआई बीजों-द्वारा की जाती है लेकिन अधिकतर जड़ों द्वारा की जाती है। इसकी बोआई कतारों में की जाती है और प्रत्येक पौधे के बीच में तीन फ़ीट की दूरी होती है और हर कतार के बीच में दो फ़ीट की दूरी होती है। इसकी बोआई हराइयों के किनारे किनारे की जाती है। बोआई के समय हराइयों में पानी भर दिया जाता है। भारतवर्ष में सिंचाई करके बोआई करना ही लाभदायक सिद्ध होगा।

एक बार लग जाने पर पौधा कई साल तक रहता है। तीन चार वर्ष के बाद फिर बोआई की जा सकती है लेकिन इसके लिए जमीन को खूब खाद देनी चाहिए। सबसे उत्तम यह है कि दूसरी बार पौधे को दूसरी जगह ही लगाया जाय।

जब पौधा बहुत ही मुलायम और हरा रहता है तभी कटाई की जाती है। अकसर कटाई करने से अच्छा और सुन्दर चारा होता है। इस प्रकार साल भर में औसतन ८ या [illegible] कटाई की जा सकती है और एक एकड़ जमीन में हरी घास का चारा क़रीब १५० से [illegible] मन तक होता है।

जई—रूस के एक अनुसन्धानक मिस्टर [illegible] का कहना है कि जई की उत्पत्ति का प्रारम्भिक स्थान भूमध्यसागर के समानवाले जलवायुवाले देशों में और खासकर अफ़्रीका [illegible] पहाड़ तथा पीरनीज़ पहाड़ के [illegible] में है। भारतवर्ष के बहुत-से भागों में जई की खेती चारे के ख़याल से बहुत आवश्यक हो गई है और खासकर सरकारी मिलीटरी फ़ार्मों में लेकिन दिल्ली के आस-पास पंजाब-प्रान्त और संयुक्त-प्रान्त में इसकी खेती अन्न के लिए भी की जाती है।

जई गेहूँ और जौ की तरह उगनेवाला पौधा है। इसके डंठल गेहूँ तथा जौ के डंठलों से मुलायम और लम्बे होते हैं। इसका पौधा भी गेहूँ या जौ के पौधे के समान बहुत अधिक आसानी से फैलता है और इसी कारण यह गुच्छे की तरह दिखाई देता है। इसकी पत्तियाँ भी चौड़ी और अधिक होती हैं।

इसका पुष्पपुञ्ज कुछ ढीला होता है। इसमें से डालियाँ चारों तरफ़ फैली हुई रहती हैं। ये सीधी या नीचे गिरी हुई हो सकती हैं और कभी-कभी एक तरफ़ ही झुकी हुई होती हैं। इन फूलों में अपने आप जमने की शक्ति होती है लेकिन जलवायु के अनुसार कभी-कभी एक-दूसरे से भी जनन व्यवहार होता है। इसकी जड़ें गेहूँ की जड़ों की तरह होती हैं। अधिकांश जड़ें दो फ़ीट की गहराई तक होती हैं लेकिन कोई-कोई जड़ें चार फ़ीट की गहराई तक जाती हैं।

जई ठंडे देश की उपज है अतः वह भारतवर्ष के उत्तरी देशों में ही बोई जाती है। यह दोमट और मटियार ज़मीन में अच्छी उपजती है। इसकी खेती का तरीक़ा गेहूँ या जौ आदि अन्नों के समान ही होता है।

दूब या हरियाली घास—यह घास भारतवर्ष के सब भागों में पाई जाती है और यह मवेशियों, घोड़ों तथा अन्य जानवरों को खिलाई जाती है। यह घास भारतवर्ष की उपज है और इसका उपयोग चराई के लिए भी किया जाता है। अमरीका में इसका प्रचार बरमुडा घास के नाम से किया गया है। इसकी बोआई बीज या जड़ों की कटाई द्वारा करनी चाहिए। यह काम बरसात के दिनों में आसानी से किया जाता है। यह हर प्रकार की भूमि में बढ़ती है लेकिन कमज़ोर ज़मीन में या पानी लगी हुई ज़मीन में नहीं उगती है। छायादार जगहों में भी इसकी उपज अच्छी नहीं होती है।

सुडान घास—यह घास ज्वार से सम्बन्ध रखती है लेकिन आजकल यह चारे के काम में लाई जाती है। यह बहुत ज़ोरों से बढ़ने वाली घास है और इसका दूर करना बड़ा कठिन है। भारतवर्ष के उत्तरी भागों में इसका प्रचार अधिक बढ़ रहा है जहाँ इसकी सिंचाई की जाती है। साल भर में तीन या चार कटिंग की जाती है। इस प्रकार २०० मन प्रतिएकड़ हरा चारा मिल सकता है या ६०० से ८०० मन प्रतिएकड़ सालाना हरा चारा मिल सकता है।

बफलो घास—यह घास मैक्सिको की स्थानीय उपज है और इसका सम्बन्ध मक्के से है। इसकी शकल भी मक्के की तरह होती है और यह क़रीब ८ या १२ फ़ीट की उँचाई तक जाती है। यह मक्के से अधिक आसानी से फैलती है। यह उपज खरीफ़ की है। और अधिकतर नम जगहों में होती है। एक सीज़न में कई बार इसकी कटाई होती है और प्रत्येक सीज़न में २०० से २५० मन हरा चारा प्रतिएकड़ मिल सकता है।

इन घासों के अलावा ज्वार, मक्का और बाजरा भी चारे के काम में लाया जाता है।

छीमीदार चारे

ल्यूसर्न या अल्फाफा—यह पौधा छीमीदार चारों में सबसे प्रसिद्ध है। इसका जन्म-स्थान दक्षिण-पश्चिम एशिया, टर्की, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान है। यह एक ऐसा चारा था जिसे एशिया के लोग सिर्फ़ चारे के लिए लगाते थे। आजकल संसार के सूखे स्थानों में इसकी खेती अधिक होती है।

यह पौधा क़रीब दो से तीन फ़ीट तक ऊँचा होता है। इसकी शाखायें ज़मीन से कुछ ऊपर से फैलती हैं। इसकी शाखाओं की संख्या क़रीब ४० के होती है। यह पौधा तीन पत्तियोंवाला होता है जिसमें बीचवाली पत्ती इतनी बड़ी होती है कि वह आसानी से पहचानी जा सकती है। इसकी जड़ मूसला होती है और काफ़ी गहराई तक जाती है। इसके फूलों का रंग बैंजनी होता है लेकिन कभी-कभी इसका रंग नीला, हरा और पीला भी होता है। फूलों में स्वयं बीज धारण करने की शक्ति होती है और कभी-कभी आपस में एक दूसरे से भी प्रजनन-व्यवहार होता है। इसका फल छीमीदार होता है जो कि दो-

... में इसे ज्वार से मिलाकर बोते हैं। ... बालिस बोआई होती है तो इसमें ... १० पौंड प्रतिएकड़ के हिसाब से ... लगता है। जब चारे के लिए बोया ... है तो इसे फूलने के समय या छीमी ... समय काट लेना चाहिए। यदि बीज ... लिए बोआई की जाती है तो फ़सल को ... होने देना चाहिए।

...--इस उपज की खेती बम्बई और ... हाते में बड़ी कसरत से होती है और ...-प्रान्त के पहाड़ी हिस्सों में तथा छोटा ..., बंगाल के उत्तरी ज़िलों और आसाम ... कुछ हिस्सों में भी की जाती है। गौरा की ... चारे और हरी खाद दोनों के लिए ... खेती की जाती है। यह पौधा ... है। इसमें बहुत-सी शाखायें होती हैं जो ... में उलझी सी रहती हैं या जो उन फ़सलों ... हैं जिनके साथ बोई जाती है। ... त्रिपत्र होती हैं। फूल एक से तीन ... हैं। इसकी छीमियाँ १½ या दो इंच ... होती हैं। इनमें पाँच या छः बीज ... हैं।

इसकी उपज अधिकतर हलकी मुला-... बलुई ज़मीन में होती है और अधिकतर ... की लाल और हलकी पहाड़ी जगहों में ... है। इसकी खेती का ढंग और दालों की ... के समान होता है। दक्षिण भारतवर्ष ... इसकी खेती साल के हर महीने में की जा ... है लेकिन उत्तरी भारतवर्ष में इसकी ... रबी के बाद तुरन्त की जा सकती ... या खरीफ़ के साथ। यदि चारे के ... इसकी बोआई की जाती है तो इसको ... बोते हैं और क़रीब २५ पौंड प्रतिएकड़ ... लगता है। चारे के लिए बोई हुई ... की बोआई के एक या डेढ़ महीने बाद ... काट लेना चाहिए।

अन्य चारे--उपर्युक्त चारों के अलावा ... में और भी बहुत-सी छीमीदार ... हैं जिनको चारे के काम में लाते ... इनमें से सोयाबीन, काऊपीज़, सेम, उर्द ... मूँग आदि प्रमुख हैं।

(प्रिन्सपल एण्ड प्रैक्टिस आफ़ क्राप प्रोडक्शन इन इंडिया से अनुवादित)

संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध में टिड्डीदल के आक्रमणों का भय

लेखक, श्रीयुत बुद्धीलाल, डिवीज़नल सुपरिण्टेण्डेण्ट, कृषि-विभाग, इलाहाबाद

खबरें मिली हैं कि टिड्डीदलों का हमला इस प्रान्त में भी शुरू हो गया है। अतः किसानों को मुस्तैदी के साथ अभी से उनके रोक थाम की तदबीरें अख्तियार कर लेनी चाहिए।

इश्क़ ने नरगे में डाला है सितमगारों के रिन्द।
एक मैं ज़ुज़ओज़ईफ़ और सैकड़ों जल्लाद हैं॥

आजकल हमारे किसान भाइयों की दशा पर 'रिन्द' का उपर्युक्त शैर बिलकुल ठीक ठीक लागू हो रहा है। एक तरफ़ ये बेचारे जाड़े, गर्मी और बरसात में कठिन परिश्रम के साथ अपने खेतों में इसलिए काम करते हैं कि खाने और पहनने की तमाम चीज़ें और दूसरी जीवन की अन्य चीज़ें जो कि ज़मीन से खेती द्वारा पैदा की जा सकती हैं पैदा करके अपनी ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरियात को पूरा करें और नीज़ उन लोगों को जो कि दूसरा पेशा करते हैं मुहय्या करें। परन्तु अक़ल हैरान है कि प्रकृति क्यों इन ग़रीब किसानों के इस क़दर विपरीत है कि बेचारों पर समय समय पर ऐसी विपत्तियाँ आती रहती हैं कि जिसके कारण उनकी दशा पनपने ही नहीं पाती।

गत कई वर्षों से तो इनपर प्राकृतिक दुर्घटनाओं का ऐसा ताँता बँधा हुआ है कि यह किसानवर्ग बहुत निर्धन हो गया है। कभी अल्प वर्षा और कभी अतिवर्षा से हानि, कहीं ओला, कहीं पाला और कहीं दीमक, कहीं खेती को नुक़सान पहुँचानेवाले चूहे, कहीं गन्ने में काने की बीमारी, कहीं रेडराट, कहीं पशुओं की वबाई बीमारी इत्यादि विपत्तियों से उनका नाक में दम आ रहा है। एक तरफ़ ये कठिन परिश्रम करनेवाले लोग समस्त प्राणी के लिए रोज़ी पैदा करने की कोशिश में लगे हुए हैं, दूसरी तरफ़ तरह तरह की प्राकृतिक घटनायें उनके शत्रु बनी हुई हैं गोया एक तरफ़ ग़रीब किसान तथा दूसरी तरफ़ उनके हज़ारों घातक शत्रु।

गत जाड़े की ऋतु से संयुक्तप्रदेश आगरा व अवध में फिर से टिड्डीदलों के आक्रमण का भय हो गया है। अतः काश्तकारों को चाहिए कि अभी से उनके रोक-थाम का उपाय जैसा कि कृषि-विभाग संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध के लीफ़ लैट नं० १६५ में दर्ज है काम में लावें। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा जावे कि इन फ़रादी कोशिश से ज़्यादा कामयाबी की उम्मीद नहीं है। जिस गाँव में टिड्डियाँ रात को ठहरें वहाँ के तमाम आदमी अगर मिलकर कोशिश करें तो बहुत ज़्यादा तादाद में टिड्डियाँ मारी जा सकती हैं। शाम के समय ये टिड्डियाँ झाड़ियों और दरख़्तों की शाखों पर इकट्ठा हो जाती हैं इस हालत में बहुत सरलता से जलाकर मारी जा सकती हैं। सूखी झाड़ियों पर बैठी हुई टिड्डियों को मशाल से जलाया जा सकता है। पेड़ों के ऊपर की टिड्डियाँ जलती हुई मशालों से नष्ट की जा सकती हैं। दिन के समय जवान आदमी दस्ती जाल के द्वारा अधिक संख्या में टिड्डियों को पकड़ सकते हैं। यदि यह अवसर हाथ से न जाने दिया तो हज़ारों टिड्डियाँ खड़ी हुई फ़सल को खाने के लिए कम हो जावेंगी, सुबह व शाम टिड्डियाँ छत्ते के तौर पर इकट्ठा होकर सर्दी की वजह से बहुत सुस्त हो जाती हैं, यही समय उनको वश में करने का है। जिस समय वे सुस्त हों आसानी से इकट्ठा की जा सकती हैं और भूनी जा सकती हैं तथा सुखाकर मुर्ग़ियों या आदमियों के लिए ख़ुराक बनाई जा सकती है या जलाकर राख की जा सकती हैं, इस समय फ़ौरन काम शुरू कर देना चाहिए ताकि उसका फल मिल सके। यदि इस अवसर को हाथ से खो दिया तो बड़ी हानि उठानी पड़ेगी। अतः टिड्डियों के मारने का बाक़ायदा इन्तज़ाम आज से ही आरम्भ कर देना चाहिए ताकि फिर पछताना न पड़े।

पशुओं के लिए खनिज पदार्थ की ज़रूरत

लेखक, पी० व्यङ्कट रमैया एग्रिकल्चरल कैमिस्ट, मद्रास

कोयम्बटूर में इम्पीरियल कौंसिल आफ़ एग्रिकल्चरल की आर्थिक सहायता से सन् १९३५ ई० में एक आयोजना बछड़ों और गायों की चूने और फासफोरस की ज़रूरत पर जाँच करने के लिए जारी की गई। जिन जानवरों पर यह तजुर्बा किया गया, उनको खुराक में खनिज पदार्थ की जानी हुई मात्रा दी गई और इन पदार्थों की जितनी मात्रा गोबर के साथ बाहर आई उसको मालूम किया गया। इस तहक़ीक़ात के द्वारा यह मालूम हुआ कि एक बछड़ा जवान होने तक औसतन एक औंस कलशियम और एक औंस फासफोरस खुराक में रोज़ाना इस्तेमाल करता है जिनसे उसकी हड्डियाँ बनती हैं। और शरीर बढ़ता है। जब बछड़ियाँ जवान होकर गाभिन हो जाती हैं उस वक्त से बच्चा पैदा होने के वक्त तक चूने और फासफोरस की मात्रा का औसत एक-एक औंस ही रहता है। लेकिन दूध देने के वक्त से गाय की फासफोरस की रोज़ाना खुराक की मात्रा तो एक औंस ही रहती है लेकिन चूने की मात्रा दूध की कमी या ज़्यादती पर निर्भर होती है, जैसे रोज़ाना १५ से २० पौंड दूध देनेवाली गायों को दो औंस चूना की ज़रूरत होती है।

तजुर्बे के दिनों में जानवरों को काफ़ी मात्रा में अच्छी खुराक दी गई जो कि बिनौले, मूँगफली की खली, चावल का चोकर, दाल का छिलका, हरी मकई, गिनी घास तथा हरी घास पर निर्भर थी। इसके अलावा एक औंस हड्डी का चूरा और "शेललाइम" का मिनरल मिक्सचर रोज़ाना दिया गया, तजुर्बों के द्वारा यह बात मालूम हुई है कि रासन बछड़ों तथा छोटे जानवरों के शरीर के पालन के लिए काफी था। लेकिन जो गायें दूध दे रही थीं उनको इस खुराक से इतना काफ़ी चूना इकट्ठा न हो सका, जो कि इन जानवरों के शरीर में चूने की कमी को पूरा कर देता। ज़्यादा दूध देनेवाली गाय को ऊपर लिखी हुई खुराकों और खनिज पदार्थ देने पर भी शरीर में चूना कम हो जाने की शिकायत रहती है।

कोयम्बटूर के तजुर्बात ने बताया है कि जानवरों के लिए खनिज पदार्थ का खुराक में काफ़ी मात्रा में होना ज़रूरी है और इस सिलसिले में यह मालूम हुआ है कि खनिज पदार्थ की कमी को पूरा करने के लिए चूना और फासफोरस में खुराक अलग देनी चाहिए ताकि जानवर दोनों ज़रिये से खनिज पदार्थ हासिल कर सकें। यह अलग से दिया हुआ मिनरल मिक्सचर बुझे हुए चूने और गली हुई हड्डी के चूरे पर निर्भर था जो कि बराबर मात्रा में मिलाकर दिया गया था। नीचे दिये हुए चार्ट में बताया गया है कि बछड़ों, गायों, बैलों और साँड़ों को औसतन कितनी संख्या में खनिज पदार्थ देना चाहिए।

क़िस्म जानवर	मिनरल मिक्सचर की रोज़ाना की मात्रा	कैफियत
१—बछड़े १८ माह की उमर तक	१ औंस	
२—बछड़े १८ माह से २४ माह तक की उमर के	१ औंस	हमल की हालत में भी।
३—दूध देने वाली गायें	२ औंस	२० पौंड रोज़ाना से ज़्यादा दूध देने पर ½ औंस रोज़ाना बढ़ा देना चाहिए।
ख़ुश्क गाय	२ औंस	
हल चलाने वाले बैल	१ औंस	१,५०० पौंड ज़्यादा वज़न के जानवर को १½ औंस देना चाहिए।
साँड़	२ औंस	

यह मिनरल मिक्सचर दाने की खुराक के साथ मिलाकर खिलाना चाहिए क्योंकि आमतौर से जानवर इसकी खुराक को पसन्द नहीं करते अगर्चे धीरे-धीरे उनको इसकी आदत पड़ जाती है। दाने के साथ मिलाने से खुशबू ज़्यादा ज़ाहिर नहीं होने पाती और जानवर उसको खा लेते हैं। खनिज पदार्थ का इस्तेमाल जानवर को रोज़ाना कराना चाहिए और जहाँ तक हो इसका नागा न किया जाय।

(उद्धृत "इंडियन फार्मिङ्ग" दिसम्बर १९४१ के अंक से)
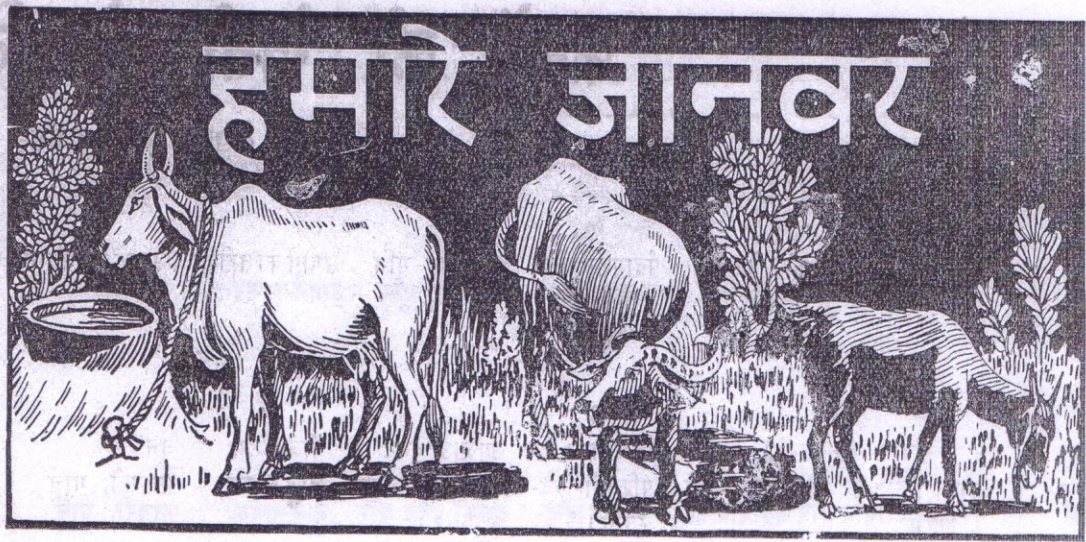
हमारे जानवर

कोसी के खत्ते के पशु

लेखक, एच० आर० कपूर व आर० के० राम

कोसी का रक़बा पुरनिया, उत्तरी भागलपुर, उत्तरी मुंगेर और माधोबनी (दरभंगा) के ज़िलों पर सम्मिलित होनेवाला है। यह रक़बा लगभग ८० मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। यहाँ मलेरिया, काला आज़ार, एङ्कीलास्टूम्पियासिस और हैज़ा की भयंकर बीमारियों से बहुत-से आदमी मर जाते हैं और जानवरों में "पैरेसेटिक डायेरिया रेंडरपेस्ट" यानी माता, चेचक और हेमोरेजिक सिपटी सीमिया यानी गलघोटू, गला विसारी की भयंकर बीमारियाँ अधिकता से फैलती रहती हैं। यहाँ से बैल और गायों के बच्चे दूसरे सूबों को भेजे जाते हैं।

काफ़ी घास, चारा और पानी होने की वजह से भैंसें बहुत कामयाबी के साथ पाली जाती हैं। उनके दूध की रोज़ाना पैदावार २ सेर से ५ सेर तक होती है। यहाँ की गायें एक दिन में सेर भर से ज़्यादा दूध नहीं देती हैं और उनको ज़्यादा तादाद में रखने का मुख्य मतलब यह है कि वे बिकने के लिए बच्चे पैदा करें और खेतों के लिए खाद इकट्ठा करें। इन जानवरों का निर्वाह चराई पर होता है। गायों के बच्चे अगर्चे छोटे होते हैं लेकिन वे मज़बूत होते हैं और बाज़ार में मुनासिब दाम मिलता है।

कोसी के ख़त्ते के पशुओं को अच्छा बनाने के लिए चार बातें ज़रूरी हैं। यानी बीमारियों से सुरक्षित रखना, चरागाहों को ज़रखेज़ बनाना, दूध-घी इत्यादि की तिजारत में उन्नति और नस्लकशी के द्वारा जानवरों को मज़बूत और बढ़िया बनाना।

बीमारियों की रोक-थाम--जब दूर-दूर स्थानों के जानवर किसी एक जगह इकट्ठा होते हैं, तो रेण्डरपेस्ट की बीमारी रोगी जानवर से तन्दुरुस्त जानवर को बहुत आसानी से लग जाती है। भैंसें इस बीमारी से बहुत ज़्यादा मरती हैं। यह अन्दाज़ा लगाया गया है कि ९० फ़ी सदी जानवर इस बीमारी के शिकार होते हैं। इस बीमारी की रोक-थाम के लिए भिन्न भिन्न उपाय सोचे जा रहे हैं। हेमोरेजिक सिपटी सेमिया बिहार-प्रान्त के और हिस्सों में ज़्यादातर वर्षा में फैलता है लेकिन कोसी में यह बीमारी पूरे साल तक मौजूद रहती है। इसको दूर करने के लिए एक बहुत बढ़िया विकेसन की तैयारी जेरग़ौर है।

चरागाहों की ज़रखेज़ी में इज़ाफ़ा--इस ख़त्ते के जानवर ज़्यादातर घासों पर गुज़र करते हैं जो कि यहाँ पर अधिकता से पाई जाती है। ख़स घास "कड़ों एकड़ मुरब्बा ज़मीन में पाई जाती है। यह ६ फ़ीट से भी ज़्यादा ऊँची हो जाती है और दरिया के निकट के रेतीले मैदानों में पाई जाती है। नर्म हालत में पशु इसको पसन्द करते हैं लेकिन यह फ़रवरी के बाद सख़्त हो जाती है। यह साल में कई बार काटी जाती है। दाँती, हारा, एमल, तीलड़ भी काफ़ी पैदा होती है। कहा जाता है कि दाँती घास के खिलाने से जानवरों का दूध बढ़ जाता है। दाभी और रढ़ी घासें नर्म हालत में जानवरों को खिलाई जाती हैं और सख़्त हो जाने पर छप्पर बनाने के काम में आती हैं। दूब और बकी नाम की घासें बहुत अच्छा चारा इकट्ठा करती हैं। और दरिया का पानी हट जाने के बाद ख़ूब बढ़ती हैं। जिन ज़मीनों में ये घासें उगती हैं वह चार रुपया से बीस रुपया तक फ़ी बीघा के हिसाब से भैंसों इत्यादि के चराने के लिए किराये पर उठा दी जाती हैं।

डेरी की सिनअत में तरक़्क़ी--कोसी के रक़बे में ज़्यादा दूध मिलने की वजह से बहुत-से क्रीम सप्रेटर रक्खे जाते हैं। उनके द्वारा अलग की हुई बालाई ४-५ दिन या इससे भी ज़्यादा दिनों तक ग़ैर सेहत बख़्श हालत में पकने दी जाती है और उसके बाद देशी तरीक़ों से उसमें से मक्खन निकाल लिया जाता है फिर उसको उबालकर घी तैयार किया जाता है। इसके बाद उसे पीपों में भरकर बाहर को भेजते हैं। मक्खन निकाला हुआ दूध बाज़ार में बेच दिया जाता है। आम-तौर से इसका भाव ६ पाई फ़ी सेर होता है।

जानवरों की क़ीमत--इस रक़बा की आमदनी का ज़्यादा हिस्सा पशुओं की बिक्री और दूध-घी के कारोबार से हासिल होता है। मौजूदा हालत में दूध, घी और पशुओं की बिक्री का कारोबार कोसी के इलाक़े में खेती के मुक़ाबिले में ज़्यादा मुफ़ीद है, इसलिए कि खेती से इतनी आमदनी नहीं होती जितनी कि पशुओं के कारोबार से होती है। इस बात से भी इनकार नहीं हो सकता कि यह इलाक़ा बहुत ज़्यादा तादाद में घी बाहर भेजने के अलावा भैंसों और बैलों की नस्ल-कशी के लिए बहुत मुनासिब है।

नस्ल की तरक़्क़ी--नस्ल की तरक़्क़ी के लिए यह बात बहुत ज़रूरी है कि कोसी के इलाक़ों में मुर्रा भैंसों को ज़्यादा तादाद में रक्खा जाय। भैंसोंवाले साँड़ का मौजूदा तरीक़ा अच्छा नहीं है और चूँकि भैंसों की तादाद ज़्यादा है। इसलिए इनके साँड़ों की तक़सीम मुनासिब तौर पर होनी चाहिए। मुर्रा नस्ल इस काम के लिए बहुत उपयोगी है।

(इण्डियन फ़ार्मिंग नवम्बर मास, सन् १९४१ ई० से लिया गया)।

फलों की खेती के लिए

लेखक, कुँवर तेजसिंह चौहान,

नाम फल	सर्मपित फलों की क़िस्में	पैदायशी मुल्क	उपयुक्त भूमि	उगाने का तरीक़ा	उगाने का मौसम	दरख़्त लगाने के लिए थालों की नाप
१	२	३	४	५	६	७
१. आँवला	बड़ा आँवला (बनारसी)	हिन्दुस्तान	उपजाऊ दूमट	बीज-क़लम	जून	४′ x ४′
२. शरीफ़ा	भूपाल, हैदराबाद और फ़ैज़ाबाद की क़िस्में।	पश्चिमी हिन्दुस्तान।	हलकी दूमट और चूनेदार।	बीज-क़लम	फ़रवरी, मार्च	४′ x ४′
३. इंजीर	बँगलौर, ब्लेकेशिया, ब्राउन, टर्की	सीरिया, फ़िलस्तीन।	हलकी, चूनेदार मिट्टी जो उपजाऊ और भुरभुरी हो।	बीज, कटिङ्ग और लेयरिंग (गूटी और दबका)	जून-जाड़ा	४′ x ४′
४. चकोतरा	मार्श, सहारनपुर स्पेशल, ब्लडरेड, परनिम्बको, डङ्कन, ट्रायम्फ।	अमेरिका	दूमट	तुरशाया पर चश्मा से।	फ़रवरी, मार्च, बरसात।	४′ x ४′
५. अमरूद	इलाहाबाद सफ़ेदा, रेडफ़्लेश्ड (लाल गूदेवाला), फ़ैज़ाबादी, हरी छाल का।	मैक्सिको	गहरी हलकी दूमट	बीन और इनाचिङ्ग।	जनवरी और बरसात।	४′ x ४′
६. बेर	क़ल्मी, लम्बी क़िस्में	हिन्दुस्तान और, साइबेरिया।	मामूली ज़मीन	बीज़ और क़लम	जनवरी, फ़रवरी और जून।	४′ x ४′
७. कटहल	खाजा	हिन्दुस्तान	उपजाऊ, दूमट	बीज	बरसात	४′ x ४′
८. नीबू	कागज़ी, कागज़ीकलाँ, बेदाना, बारामासी।	हिन्दुस्तान	हलकी दूमट	बीज, दबका, गूटी	फ़रवरी, मार्च, बरसात।	४′ x ४′
९. लोकाट	गोल्डन एलो और पेल एलो	चीन और जापान	काफ़ी हलकी दूमट	चश्मा और इनाचिङ्ग।	जनवरी, फ़रवरी, बरसात।	४′ x ४′
१०. माल्टा	माल्टा, मोसम्बी, ब्लड क़िस्में	हिन्दुस्तान (शायद)।	हलकी दूमट और चूनेदार।	बीज और चश्मा	फ़रवरी, मार्च, बरसात।	४′ x ४′
११. आम	बंबई, लँगड़ा, फजली, जाफ़रानी, सफ़ेदा, दसहरी, वग़ैरह	हिन्दुस्तान	उपजाऊ दूमट	इनार्चिङ्ग	फ़रवरी, मार्च, बरसात।	४′ x ४′
१२. शहतूत	सफ़ेद और काला	हिन्दुस्तान और फ़ारस।	हलकी दूमट	बीज और कटिङ्ग	अप्रेल, मई और नवम्बर।	४′ x ४′
१३. लीची	अर्ली, लार्ज रेड, कलकत्ता, मुज़फ़्फ़रनगर	चीन।	गहरी, उपजाऊ और भुरभुरी	दबका और गूटी	जुलाई, अगस्त	४′ x ४′
१४. पपीता	हनीड्यू, वाशिंगटन, सीलोन और सी० आई० क़िस्में	टी० एस० अमेरिका।	हलकी दूमट जिसमें पानी की निकासी का अच्छा प्रबंध हो।	बीज	फ़रवरी, मार्च, जून और जुलाई।	३′ x ३′
१५. केला	काबुली, चम्पा, हज़ारा, मुचेली	हिन्दुस्तान, एशिया।	गहरी, उपजाऊ जिसमें पानी की निकासी का अच्छा प्रबन्ध हो।	पूतियाँ	बरसात	नालियाँ गहरी ४′ x ३′
१६. फालसा	बीजू क़िस्में अच्छी होती हैं	हिन्दुस्तान	मामूली	बीज	गर्मी	३′ x ३′
१७. सन्तरा	एम० इम्पीरियल, नागपुर, आडू और कोंडानारंग।	हिन्दुस्तान (दूसरी बाहर से लाई हुई क़िस्में)	हलकी दूमट और चूनेदार।	बीज और चश्मा	फ़रवरी, मार्च और बरसात।	४′ x ४′
१८. अंगूर	अगेती क़िस्में	दक्षिणी योरप	उपजाऊ, हलकी ज़मीन जिसमें पानी की निकासी का अच्छा इन्तज़ाम हो	कटिङ्ग	नवम्बर, दिसम्बर	३′ x ३′

लिए

एक उपयुक्त चार्ट

ह चौहान,

सुपरिण्टेण्डेण्ट, सरकारी बाग़, इलाहाबाद

दरख़्त लगाने के लिए थालों की नाप	पौदे लगाने का समय	दो दरख़्तों के बीच का फ़ासला	फल आने की उमर और मौसम	फ़ी एकड़ दरख़्तों की तादाद	पेड़ों के अच्छी तरह बढ़ने पर फलों की पैदावार	आमदनी फ़ी दरख़्त	गुण	कैफ़ियत
७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
४'×४'	बरसात, फ़रवरी	३५'	छठा साल, जाड़े का मौसम	३५	१ मन	५) से १०) तक	रक्तशोधक, भूख बढ़ानेवाला	
४'×४'	,,	१५'	चौथा साल, अगस्त, दिसम्बर।	१९३	१०० से १५० मन	५)	रक्तशोधक	पाले से बचाना चाहिए।
४'×४'	बरसात और जाड़ा	२०'	चौथा साल, मई, जून	१०८	½ मन	५)	ख़ून न बनने की बीमारी को दूर करता है।	
४'×४'	बरसात, फ़रवरी	२०'	चौथा साल, नवम्बर से फ़रवरी तक।	१०८	१०० से ३०० फल तक।	१०) से १२) तक	भूख बढ़ाता है।	
४'×४'	बरसात, फ़रवरी	२५'	तीसरा और पाँचवाँ साल अगस्त, जनवरी।	७०	१ मन	५) से ८) तक	दस्तावर और पौष्टिक	
४'×४'	बरसात	३०'	पाँचवाँ साल, जनवरी, फरवरी	४८	३ से ५ मन	३) से ५) तक	मातदिल	
४'×४'	बरसात	४०'—४५'	सातवें से दसवें साल तक, जुलाई।	२७	१०० फल	५) से १०) तक	पौष्टिक, भारी, जिगर की रतूवत को बढ़ाता है।	
४'×४'	जाड़ा, फ़रवरी, बरसात।	२०'	तीसरा साल, बरसात	१०८	४०० से ८०० फल।	६) से १०) तक	हाज़िम, ठंडा।	
४'×४'	फ़रवरी, दिसम्बर, नवम्बर और बरसात	२५' से ३०'	पाँचवाँ साल, मार्च, अप्रैल	४८	१ मन से २ मन	८) से १२)	ताज़गी लानेवाला और भारी।	
४'×४'	बरसात, नवम्बर और फ़रवरी।	२०'	चौथा साल, नवम्बर और मार्च।	१०८	३०० से ४०० फल।	५) से ८) तक	रक्तशोधक, अच्छा शरबत	
४'×४'	फ़रवरी, बरसात	३५' से ४०' फ़ीट	पाँचवाँ साल, जून, अगस्त	२७	१,००० से १,५०० फल।	१०) से २०) तक	पौष्टिक, रक्तशोधक, दस्तावर और जिगर की रतूवत को बढ़ाता है।	पाले और लू से बचाना चाहिए
४'×४'	जाड़ा और बरसात	२५'	तीसरा साल, अप्रैल, मई	७०	५,०००	५)		
४'×४'	फ़रवरी और बरसात	३०'	पाँचवाँ साल, मई, जून	४८	१ से ३ मन तक	६) से १०) तक	भारी और ठंडी	पाले और लू से बचाना चाहिए सिंचाई ख़ूब करनी चाहिए।
३'×३'	फ़रवरी, बरसात	१०'	पहला साल, मार्च, अप्रैल, जाड़ा।	४३५	५० से ८० फल तक	३) से ४) तक	हाज़िम, दस्तावर	पाले से बचाना चाहिए।
नालियाँ गहरी ४'×३'	फ़रवरी, बरसात	४' से ६' तक	दूसरा साल, हर महीना	×	×	लाभदायक	×	×
३'×३'	बरसात, जाड़ा	२०' से ६' अगर काट-छाँट की जाय।	चार साल	१०८	×	×	ठंडा और ताज़गी लानेवाला।	
४'×४'	बरसात, नवम्बर, फ़रवरी।	२०'	चौथा साल, नवम्बर-फ़रवरी।	१०८	३०० से ८०० फल।	५) से १२) तक	ठंडा और ताज़गी लानेवाला	
३'×३'	दिसम्बर, जनवरी	१०'	चौथा साल, जून से अगस्त तक	४३५	×	लाभदायक	भूख बढ़ाता और ख़ून बनाता है।	

हमारे सूबे में ग्राम सुधार

नवम्बर सन् १९४१ के कार्य की तफ़सील

इस महीने में ख़ास कर प्रदर्शनियाँ, स्काउट रैलियाँ और टूर्नामिन्टें की गईं। गाँव के स्त्री और पुरुष दोनों ने विभाग के इन कामों में बड़ा उत्साह दिखाया और उससे शिक्षा ग्रहण की। इटावा ज़िले की प्रदर्शनी में १५ नवम्बर से २२ नवम्बर तक एक एक ग्राम-सुधार कोर्ट बनाया गया था। ज़िले के अफ़सरों ने इस कोर्ट की बड़ी प्रशंसा की। बिजनौर के दरियागंज के मेले की प्रदर्शनी भी काफ़ी सफल रही। रायबरेली ज़िले के चौवारी नामक स्थान पर एक ग्राम-सुधार-प्रदर्शनी की गई और वहाँ एक स्काउट रैली भी की गई। श्री सी० एम० खरे ने इनाम बाँटे। टिगरी के गंगा-मेले में भी एक प्रदर्शनी और प्रचार-कैम्प खोला गया था। इसने जनता को ख़ूब आकर्षित किया और पूर्ण सफल रहा। प्रत्येक सुधार-विभाग ने इस प्रदर्शनी को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। ददरी, चुनार और चोचकपुर में भी प्रदर्शनियाँ की गईं। प्रत्येक विभाग के लिए अलग अलग कोर्ट बनाये गये थे और प्रेक्टिकल डिमान्सट्रेशन भी दिये गये थे। आगरा ज़िले के बटेश्वर के मेले में एक बड़ी प्रदर्शनी की गई और वह सफल भी रही। गढ़वाल में श्रीनगर और नैनीताल के ग्रामपारो स्थानों पर होनेवाली प्रदर्शनियाँ भी बहुत सफल रहीं। रायबरेली में डलमऊ में बनाया गया ग्राम-सुधार-कैम्प सर्वोत्तम माना गया और फलत: ३० इनाम दिये गये। हिज़ एक्सिलेन्सी दी गवर्नर संयुक्तप्रान्त लखनऊ ज़िले के भदिच गाँव में गये और उसकी उन्नति से प्रसन्न होकर १००) का इनाम दिया।

डिविज़नल सुपरिन्टेंडेन्ट की दस जगहों को पुन: स्थापित करने के विचार से फिर से डिवीजन बनाये गये। अब सूबे में दस डिविज़नल सुपरिन्टेन्डेन्ट काम कर रहे हैं। इनके हेड क्वार्टर मेरठ, अलमोड़ा, झाँसी, लखनऊ, बरेली, इलाहाबाद, गोरखपुर, आगरा, फ़ैज़ाबाद और बनारस हैं।

मुज़फ़्फ़रनगर की एक तहसील में टिड्डियों का आक्रमण हुआ। ग्राम-सुधार-विभाग के कार्य-कर्त्ताओं ने उचित समय पर टिड्डियों को नष्ट करने का उपाय करके इस विपत्ति को दूर किया।

सन् १९४१ के लगाये हुए पौधे बहुत जगह सूखे के कारण सूख गये। गत वर्ष की असफलताओं को दूर करने के लिए सन् १९४२ के बरसात में फिर से पौधे लगाये जायेंगे। बहुत-सी नई जगहें मंज़ूर की गई हैं और भूमि को भी कई जगहों पर तैयार कर लिया गया है। लेकिन बहुत-सी गत वर्ष की कठिनाइयों का भी सुधार करना है अत: नवीन प्रबन्ध कुछ थोड़े से चुने हुए स्थानों पर ही किया जायेगा।

अपेयरी में कुल ४८ छत्ते थे। इस महीने में कुल १२५ रु० १२ आना ३ पाई की बिक्री हुई। आठवें बैज को ट्रेनिंग दी जा रही है। नमूने के बने हुए ८ छत्तों से ५४ पौं० मधु निकाली गई। अब जेली कोट से अपेयरी को हल्द्वानी बदल दिया गया है।

जीवन-सुधार-समितियों के बहुत-से नये मेम्बर बनाये गये और बहुत-सी नई समितियाँ बनाई गईं। समितियों का चन्दा इन्हीं समितियों के सदस्यों ने इकट्ठा किया। १७३ नई समितियाँ बनाई गईं और १७ की रजिस्ट्री की गई। २८ क्रय-विक्रय-समितियाँ, ८ क़र्ज़-समितियाँ और २६ अन्य समितियाँ बनाई गईं।

इस महीने में ७,३५६ खाद के गढ़े बनाये गये और ८,४७४ पेशाबख़ाने बनाये गये। १,७७३ बैलों को बधिया किया गया और ७१ साँड़ बाँटे गये। ६,९२८ मन रबी का बीज गाँववालों को बाँटा गया और ४,६२५ जानवरों की दवा की गई। सिंचाई के साधनों को सुलभ बनाने के लिए २८ कुओं की बोरिंग की गई या सफ़ाई की गई और २७३ नये कुएँ बनाये गये।

प्रौढ़-पाठशाला के अध्यापकों के लिए मेरठ और देहरादून में १५ नवम्बर से २४ नवम्बर तक एक रिफ़ेशर कोर्स लिया गया। १४२ नई प्रौढ़-पाठशालायें बनाई गईं और ३५७ सेवादल स्थापित किये गये। २,२३० स्काउटों को ट्रेनिंग दी गई। यह आशा की जाती है कि ये स्काउट जाकर ग्राम-सुधार के काम की उन्नति करेंगे। १६ रेडियो सेट लगाये गये और १६० टूर्नामेंट और प्रतियोगितायें की गईं।

३,५९७ सोखते के गढ़े बनाये गये और २,९८१ रोशनदान लगाये गये। २३९ सुअर-बाड़े बस्तियों से हटाये गये और १२,१२८ घूर साफ़ किये गये। ४६० पाख़ाने बनाये गये और १,१४१ गढ़े पाटे गये। ६५९ मरीज़ों की दवा की गई। २०४ को दाई की ट्रेनिंग दी गई और ९७९ को प्राथमिक सहायता की ट्रेनिंग दी गई।

जनता को विभाग के कार्य समझाने और गाँव की कुरीतियों को दूर करने के विषय पर भाषण देने के लिए कुल ४,४३१ सभायें की गईं। १४९ ड्रामा किये गये और २६३ भजन-मंडलियाँ बनाई गईं। इन भजन-मंडलियों तथा ग्राम-सुधार की प्रचार-गाड़ियों ने गाँवों में घूम-घूमकर ख़ूब प्रचार किया। मैजिक लैन्टर्न-द्वारा भी बहुत-से प्रदर्शन किये गये।

क्रियात्मक कार्य में लोगों ने बड़ी दिलचस्पी दिखाई और गाँवों से काफ़ी चन्दा मिला। ९ पंचायतघर बनाये गये और बहुत-से बन रहे हैं। १६५ नमूने के घर बनाये गये और २०४ व्यक्तियों को व्यावसायिक आधार पर ट्रेनिंग दी गई।

रेडियो-प्रोग्राम

हमारा पंचायतघर

समय ६-४५ से ७-३० बजे शाम तक

१ फ़रवरी, १९४२--बच्चों की सभा। [illegible]न्नाबादोस्त (नाटिका), श्री जगन्नाथसिंह। [illegible]ती गाने, श्री फकीरेलाल जायसवाल [illegible] उनके साथी। तुम्हार खत मिला; [illegible]ई के हाल चाल, (बतकही) श्री लपेटे [illegible] झपेटे। ख़बरें।

२ फ़रवरी, १९४२--ग्राम-सुधार-[illegible]ह का आरम्भ, ग्राम-सुधार-दिवस, [illegible]-सुधार करो (कोरस)। प्रारम्भिक [illegible]ख्यान, श्री पी० डब्लू, मार्श। व्याख्यान [illegible] अनुवाद, श्री एन० एम० तिवारी। [illegible]न (कविता)। उद्योग-धन्धा, श्री ए० [illegible] सप्रू। उन्नति की ओर (कोरस)। [illegible]-सुधार (भाषण), पंडित काशीनाथ।

३ फ़रवरी, १९४२--शिक्षा-दिवस; [illegible]-जीवन का उजियाला (कोरस)। [illegible]-प्रसार (भाषण), श्री एस० एन० [illegible]दी। अनपढ़ की कहानी (नाटक), [illegible] बुद्धिभद्र। बुद्ध तोता ना पढ़े, श्री [illegible] और झपेटे। निशानी अँगूठा (बतकही)। [illegible]यें और ख़बरें।

[illegible] फ़रवरी, १९४२--खेती किसानी [illegible] हरी भरी यह धरती (कोरस)। [illegible] की उपजें (भाषण), श्री सी० माया-[illegible] जाग-जाग मेरे खेत राजा (गाना)। [illegible] (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे। [illegible] में बहे दूध की धारा (कविता)। [illegible]सुधार (बतकही)। कहावतें, घोष-[illegible] और ख़बरें।

[illegible] फ़रवरी, १९४२--सहयोग-दिवस, [illegible] अनेक पर एक बने (कोरस)। सह-[illegible] (भाषण), श्री एस० एस० हसन। [illegible] संसार (नाटिका), श्री बुद्धिभद्र। [illegible] (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे। [illegible] (कविता), श्री राज। घोषणायें और [illegible]।

६ फ़रवरी, १९४२--स्वास्थ्य और सफ़ाई-दिवस, वीर धीर बलवान बनो (कोरस)। स्वास्थ्य और सफ़ाई (भाषण), डाक्टर एस० सी० बनर्जी। तन्दुरुस्ती (बतकही)। अखाड़ा (कविता)। साफ़-सुथरा गाँव हमारा (गीत)। घोषणायें और ख़बरें।

७ फ़रवरी, १९४२--महिला-दिवस, बहिनो जागो (कविता)। जच्चा और बच्चा का प्रबन्ध (भाषण), एक डाक्टर। उन्नति करो (कविता), श्रीमती तोरनदेवी शुक्ल लली। सुधार और शिक्षा (भाषण), श्री सुमित्राकुमारी सिनहा। भारत की दुखिया नारी (कोरस)।

८ फ़रवरी, १९४२--उद्योग-धंधा-दिवस, उद्योग करो धनवान् बनो (कोरस)। हमारा सप्ताह (भाषण), श्री जी० मुकर्जी। रंक से राजा (नाटिका), श्री बुद्धिभद्र। आलस में मत सो (गीत)। लक्ष्मी (कविता)। ख़बरें।

९ फ़रवरी, १९४२--दादरा और गीत, श्री मुख़तार अहमद। केला की खेती (बतकही)। श्री भूषण और रामू। लड़ाई के हाल-चाल, श्री लपेटे और झपेटे। ख़बरें और बाज़ार-भाव।

१० फ़रवरी, १९४२--भजन, रामायण और कीर्तन, श्री समरबहादुर और उनके साथी। घी कुँवार के फ़ायदे (भाषण), श्री करतारसिंह। ऊन की धुलाई और रँगाई, (बतकही), श्री भूषण और रामू। कठिया (कविता), श्री चन्द्रभूषण। ख़बरें और बाज़ार-भाव।

११ फ़रवरी, १९४२--बच्चों की सभा, हमारा शरीर (भाषण), श्री काका। आल्हा, श्री रामहज़ारी तिवारी। ऊख की खेती (बतकही), श्री भूषण और रामू। देश-विदेश की बातें, श्री लपेटे और झपेटे। ख़बरें और बाज़ार-भाव।

१२ फ़रवरी, १९४२--पूर्वी और भजन, श्री रामजीदास। विजय-पन्थ, श्री नासिरुद्दीन अब्बासी। जुकाम, श्री ओ० एन० त्यागी। घोषणायें और ख़बरें।

१३ फ़रवरी, १९४२--नात और क़व्वाली, श्री मुर्तज़ाहुसेन। कर्ज़ा-क़ानून (भाषण), श्री इसरारहुसेन। दुनिया के हाल-चाल, श्री लपेटे और झपेटे। बीता ज़ारा (कविता), श्री एम० बी० बेग़। घोषणायें और ख़बरें।

१४ फ़रवरी, १९४२--भजन और गीत, श्री यशोदादेवी और उनकी पार्टी। सती चिन्ता (नाटक), श्री बी० एन० चौबे। बहिनो तुम्हार खत मिला। श्री पद्मा दीदी। ख़बरें।

१५ फ़रवरी, १९४२--बच्चों की सभा, ढपोरसंख (कहानी), श्री महेशचन्द्र मिश्र। बाँसुरी और सरोद, श्री सज्जादहुसेन और बुद्धिभद्र। तुम्हार खत मिला। लड़ाई के हाल चाल, श्री लपेटे और झपेटे। घोषणायें ओर ख़बरें।

१६ फ़रवरी, १९४२--ग़ज़ल और गीत, श्री अब्दुलहाफ़िज किदवई। भूल (नाटक), श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'। लड़ाई के हाल चाल, श्री लपेटे और झपेटे। ख़बरें और बाज़ार-भाव।

१७ फ़रवरी, १९४२--भजन (रिकार्ड)। आरती और कीर्तन, श्री रामेश्वर वाजपेयी। शिक्षा का ढंग (भाषण), सत्यप्रकाश श्रीवास्तव। कहानी, श्री भूषण। बाज़ार (बतकही), श्री चौधरी और देहाती। ख़बरें और बाज़ार-भाव।

१८ फ़रवरी, १९४२--बच्चों की सभा, ढपोरसंख। कविता, श्री महेशचन्द्र मिश्र। गीत और पूर्वी, श्री रामआसरे। लड़ाई के हाल-चाल, श्री लपेटे और झपेटे। झूठी गवाही (कविता), श्री भूषण। ख़बरें और बाज़ार भाव।

१९ फ़रवरी, १९४२--मधुर गीत और लचारी, श्री समरबहादुर और उनकी पार्टी। उन्नति की ओर, श्री बुद्धिभद्र। ज़मीन की क़िस्में (बतकही), भूषण और लपेटे। ख़बरें।

२० फ़रवरी, १९४२--नात और क़व्वाली, मुहम्मद सफ़ी और उनके साथी। उच्च शिक्षा की समस्या (भाषण), सैयद काज़िम

रजा नाजिम । ऊख की बोआई, श्री लपेटे और भूषण । खबरें ।

२१ फ़रवरी, १९४२—रामायण, भजन और गीत, श्री सुशीला विद्या और उनकी पार्टी । दुखवा मैं कासो कहूँ (नाटक), श्री बी० एन० चौबे । देश-विदेश की बातें (बतकही), श्री सावित्री खन्ना और दीदी । बहिनो तुम्हार खत मिला, दीदी । खबरें ।

२२ फ़रवरी, १९४२—स्काउटिंग, श्री काका । बसन्ती गाने, श्री रामजीदास । पंचो तुम्हार खत मिला, श्री काका । खबरें ।

२३ फ़रवरी, १९४२—होली (रिकार्ड) । भजन और गीत, श्री भगवानदीन । कोरस, श्री जंगबहादुर और पंच । जय भैरों बाबा की (नाटक), श्री रमेशचन्द्र अवस्थी । नागफनी के फ़ायदे, श्री करतारसिंह । लड़ाई के हाल चाल (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे । खबरें और बाज़ार भाव ।

२४ फ़रवरी, १९४२—रामायण और भजन, श्री बलदेवप्रसाद । डुयेट, श्री बलदेवप्रसाद और जंगबहादुर । लड़ाई के हथियार, श्री सालिगराम चतुर्वेदी । किफ़ायतशारी (बतकही), भूषण और झपेटे । खबरें और बाज़ार-भाव ।

२५ फ़रवरी, १९४२—बच्चों की सभा, विद्यासागर की जीवनी । आल्हा और धमार, श्री रामहजारी तिवारी और उनके साथी । लड़ाई के हाल, श्री लपेटे और झपेटे । कोल्हौर (कविता), श्री भूषण । खबरें और बाज़ार-भाव ।

२६ फ़रवरी, १९४२—गीत (रिकार्ड) । दादरा, श्री मंज़ूरहुसेन । चरवाहा (फीचर), श्री बुद्धिभद्र । पंखा बनाना, श्री विश्वनाथप्रसाद राय । खबरें ।

२७ फ़रवरी, १९४२—नात और कव्वाली श्री मुर्तज़ाहुसेन । जयासी, श्री रसल अहमद 'अबोध' । कवि की याद में, कविता-पाठ । खबरें ।

२८ फ़रवरी, १९४२—पनघट—ढोलक के गीत, श्री शान्तिदेवी और उनकी पार्टी । ग्रामोन्नति, श्री प्रकाशकुमारी जैन । कपड़ों की सिलाई (बतकही), श्री धानवती मिश्रा और दीदी । देश-विदेश की बातें, श्री सावित्री खन्ना और दीदी । बहिनो तुम्हार खत मिला, श्री दीदी । खबरें ।

किसानों का परम धर्म गाय की सेवा

लेखक, श्री राय बजरंगबहादुरसिंह, एम० एल० सी०

हमारा देश 'गोलोक' कहलाता है । इसी पवित्र भूमि में भगवान् कृष्ण ने गायें चराई थीं । वह भी एक समय था जब यहाँ दूध की नदियाँ बहती थीं और एक समय यह है कि किसान दाने दाने को तरसता है । गाँव में किसी ही किसी को दो वक्त पेट भर खाने को मिलता है । अपनी इस दीन दशा के लिए हम अपने भाग्य को दोष देते हैं । परन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो इसका मूल कारण गायों का सन्ताप ही है । और उन्हीं के शाप से भगवान् हमें दण्ड दे रहे हैं ।

गाय किसान के लिए विशेषतया मा का काम देती है । हमारी जीविका का एकमात्र सहारा गाय ही है । उसी के बछड़े हमारे हल जोतते और गाड़ी खींचते हैं । उन्हीं के गोबर से खेतों को खुराक मिलती है । हमारे और हमारे बच्चों के लिए तो उत्तम और पवित्र भोजन इसके दूध से बढ़कर हो ही नहीं सकता । मरने पर भी वह अपना उपयोगी चाम हमारे लिए छोड़ जाती है ।

परन्तु उसी माता के इतने उपकारों के बदले हमारा बर्त्ताव उसके साथ कितना अनुचित है । वह बेचारी भूखी-प्यासी कितनी मुसीबत से हमारे यहाँ अपनी उमर बिता रही है । यह हमारी ही लापरवाही और बेरहमी का परिणाम है कि उसका डील इतना छोटा, बदन कमज़ोर और दूध नाम-मात्र ही रह गया है ।

किसानों का सुख गायों के सुख के साथ ही है । गोमाता को भूखा रखकर किसान कभी भर पेट नहीं रह सकता । जब तक हमारे किसान भाई गायों की उचित सेवा नहीं करेंगे, उनकी अपनी हालत भी नहीं सुधर सकती । हमारी भलाई देश की उन्नति और धर्म का इससे बढ़कर दूसरा काम नहीं है ।

हमें गौओं की तरफ़ ध्यान देना चाहिए और उनकी उन्नति के लिए यत्न करना चाहिए ।

परन्तु यह काम अकेले अकेले नहीं हो सकता । सब मिलकर इसमें भाग लें तभी इस महान् कार्य में सफलता मिल सकती है । इसके लिए 'गो-पालन', 'गो-हितकारिणी' सभा या 'तरक्क़ी नस्ल मवेशी' की सोसाइटी बनाने की ज़रूरत है । अभी ऐसी एक सभा प्रतापगढ़ जिले की कुण्डा तहसील में गंगा जी के किनारे तरीमऊदारा मौज़े में आठ गाँव के बीच में क़ायम की गई है । इसमें एक सौ चालीस किसान शामिल हुए हैं, और आशा की जाती है कि एक साल के अन्दर इसके पाँच सौ मेम्बर हो जायँगे । सभा की तरफ़ से दो बढ़िया साहीवाल साँड़ आगये हैं । मेम्बरों के लिए अच्छी गायें मँगाने का प्रबन्ध किया जा रहा है । और जो भाई गौ नहीं खरीद सकते उनके लिए रुपये का प्रबन्ध किया जायेगा ।

जो दूध तैयार होगा उसका सभा की तरफ़ से मक्खन और घी बनाकर अच्छे दामों पर बेचने का प्रबन्ध किया जायगा । इस सभा से यह आशा की जाती है कि पाँच साल के अन्दर इन गाँवों में गायों की नस्ल बदल जायेगी । किसानों के पास अच्छे मज़बूत बैल हो जायँगे और इसी से उनकी माली हालत भी सुधर जायगी । इस सभा ने अपने मेम्बरों के लिए निम्नलिखित चार क़ायदे बनाये हैं—

(१) हर एक मेम्बर एक अच्छी गाय रक्खे और उसे सभा के रजिस्टर में दर्ज कराये ।

(२) सभा के रक्खे बढ़िया साँड़ से ही अपनी गायों से बच्चे ले ।

(३) अपने सब नर बछड़ों को आख्ता कराये ।

(४) चार आना साल गौओं की उन्नति के लिए सभा को चन्दा दे ।

जो भाई किसानों की उन्नति चाहते हैं, और समझते हैं कि गो-सेवा से ही देश और किसानों का उद्धार हो सकता है, उनको चाहिए कि इस प्रकार की सभायें गाँवों में खोलें ।

इस विषय की विशेष जानकारी के लिए अपने जिले के कोआपरेटिव मोहक़मे के इन्स्पेक्टर से सहायता लें अथवा रजिस्ट्रार साहब, कोआपरेटिव सोसाइटीज़, यू० पी०, लखनऊ से दर्याफ़्त करें ।

———

संयुक्त-प्रान्त में ऋण से छुटकारा दिलाने का ऐक्ट और कोआपरेटिव के क़र्ज़े

लेखक, श्रीयुत के० के० शर्मा, एम० ए०, बी० कॉम, अध्यक्ष, कामर्स-विभाग, मेरठ-कालेज

गत महायुद्ध के बाद आर्थिक मंदी के समय में क़र्ज़दार किसानों को सहायता पहुँचाने के विचार से ऋण से छुटकारा दिलाने का क़ानून व्यापक रूप से अमल में लाया गया। आस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूज़ीलैंड और संयुक्त-राष्ट्र अमरीका में बहुत महत्त्वपूर्ण ऋण-क़ानून बनाये गये जिनके बिना किसानों की आर्थिक दशा वास्तव में बहुत बुरी होती।

भारत में भी किसानों को सहायता देने के लिए अभी हाल में ऋण से छुटकारा दिलाने के ऐक्ट बनाये गये हैं। विभिन्न प्रान्तों में क़रीब-क़रीब एक ही आधार पर बनाये गये हैं। सेन्ट्रल बैंकिंग इन्क्वायरी कमेटी ने सन् १९३० ई० में यह अनुमान लगाया था कि देश में कृषि-ऋण ९०० करोड़ रुपया है। [illegible] रिज़र्व बैंक के एग्रीकल्चरल क्रेडिट डिपार्टमेंट की सन् १९३६ ई० की रिपोर्ट के अनुसार अब यह क़र्ज़ा दामों के गिर जाने के कारण दुगना ज़रूर होगा। यू० पी० बैंकिंग इन्क्वायरी कमेटी ने संयुक्तप्रान्त के कृषि-ऋण का अनुमान १२४ करोड़ किया था और [illegible] वर्ष बाद यू० पी० डेट इन्क्वायरी कमेटी ने ऋण का अनुमान १८० करोड़ किया। ऋण को इस प्रकार बढ़ते देखकर क़ानून बनाना आवश्यक हो गया।

संयुक्तप्रान्त में सन् १९३४ ई० में पाँच ऐक्ट बनाये गये—इन्कम्बर्ड स्टेट ऐक्ट, रेगुलेशन आफ़ सेल्स ऐक्ट, टेम्पोरेरी रेगुलेशन आफ़ इक्ज़ीक्यूशन ऐक्ट, यूज़ोरियस लोन्स अमेन्डमेन्ट ऐक्ट और एग्रीकल्चरिस्ट रिलीफ़ ऐक्ट। इन ऐक्टों का मुख्य उद्देश्य ऋण के भार को कम करना, आसान क़िश्तें बाँधना तथा मूल धन तथा ब्याज इतना कम करना कि ऋणी आसानी से अदायगी कर सके। सन् १९४० ई० में दो और ऐक्ट बनाये गये, एक महाजनी पर नियंत्रण करने के लिए, दूसरा किसानों और मज़दूरों की सहायता देने के लिए। पहले क़ानून के अधीन पेशेवर महाजनों को लाइसेंस प्राप्त करना आवश्यक है। छल व कपट करने तथा क़ानून के आदेशों का उल्लंघन करने पर लाइसेंस रद्द किया जा सकता है। पंजाब और अन्य जगह की तरह केवल लाइसेंसप्राप्त महाजन ही ऋण की वसूलयाबी के लिए अदालत में दावा दायर कर सकते हैं। दूसरे ऐक्ट के अनुसार क़र्ज़ देनेवाले को एक वर्ष के अन्दर ही नालिश कर देना चाहिए। ऐसा न करने पर यह समझा जायगा कि ऋण अदा कर दिया जा चुका है। दामदुपात क़ानून के लिए भी आयोजन है और ब्याज की दर भी नियमित कर दी गई है।

ऋण से छुटकारा दिलाने के इन ऐक्टों से देहात में क़र्ज़ा मिलना कठिन हो गया है। महाजन ने ऋण देना कम कर दिया है और किसान कठिन परिस्थिति में पड़ गये हैं। कुछ सूरतों में क़ानून का पालन नहीं किया जाता। ठीक ज़ामिन न होने की सूरत में २५ फ़ी सदी रक़म ऋण देते समय ही काट ली जाती है और इस समय ऐसा कोई उपाय बताना कि यह प्रथा कैसे रोकी जा सकती है कठिन है।

महाजन के पास दूसरे भी रास्ते हैं। युद्ध से उसको नये अवसर मिल गये हैं। वह अपना रुपया सरकारी काग़ज़ों में लगा सकता है जिससे उसकी आमदनी सुरक्षित हो जाती है और वह उसे सुगमता से पा भी सकता है। समझौता करने व रक़म को कम करने का कोई प्रश्न ही नहीं है। न ऋण ही खतरे में है और न मुक़दमाबाज़ी ही है। हर प्रान्तीय सरकार इस दिशा में अपनी कार्रवाई विस्तृत कर रही है और रिज़र्व बैंक आफ़ इंडिया के परामर्श से प्रान्तों में ऋण लेने का प्रोग्राम बनाया जा रहा है। युद्ध से उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन मिलता है और वे बढ़ रहे हैं। अतः अब महाजन को अपनी पूँजी लगाने के लिए भी अनेक साधन हैं परन्तु अभी तक वह अपनी पूँजी लगाने के इन विभिन्न तरीक़ों से अच्छी तरह भिज्ञ नहीं है।

यह पूँजी कृषि के काम में लगाई जा सकती है। यदि महाजन को यह आश्वासन हो जाय कि उसका धन सुरक्षित है तो वह अपनी पूँजी को इस तरीक़े से लगाना जिससे वह भली भाँति परिचित है अधिक पसन्द करेगा। इसलिए इसकी कोशिश की जानी चाहिए कि काश्तकारों और महाजनों के हितों की क्षति न हो। यह दो तरीक़ों से किया जा सकता है। पहले यह कि काश्तकार इस क़ाबिल बना दिये जायँ कि वे क़र्ज़ा अदा कर सकें। समझौता और अन्य तरीक़ों से क़र्ज़ा कम कर दिये जाने की सूरत में क़र्ज़ा देनेवाले को इस बात का आश्वासन मिल जाना चाहिए कि वह अपना रुपया पा जायगा। इसके लिए काश्तकार की अज्ञानता तथा निरक्षरता दूर करना आवश्यक है। उसकी क्रय-शक्ति बढ़ाई जानी चाहिए और बिक्री की सोसाइटियाँ स्थापित करके उसे क्रय-विक्रय की और सुविधायें दी जानी चाहिए। बेमुनाफ़े की जोतों को एकजा करना चाहिए और क़ानून बनाकर तथा सहयोग-द्वारा जोतों की बाँट को रोकना चाहिए। काश्तकार को सिखाना चाहिए कि जहाँ तक हो सके वह अपने ऋण को उत्पादक कार्यों में लगाये, क्योंकि उत्पादक ऋण से उसकी अदायगी के साधन निकल आते हैं।

दूसरे यह कि इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए कि महाजन अपनी पूँजी कृषि के काम में ही लगायेगा। यह एक राष्ट्रीय उद्योग है और इसकी उन्नति पर पूरे देश की उन्नति निर्भर है। वास्तव में देश की उन्नति किसानों पर ही निर्भर है और इसलिए धन की कमी के कारण उनको कोई नुक़सान नहीं पहुँचना चाहिए। परन्तु ऋण से छुटकारा दिलाने के ऐक्ट को दृष्टिकोण में रखते हुए ऐसा कौन-सा उपाय है जिससे इस बात का निश्चय हो सकता है कि महाजन अपना धन कृषि में ही लगायेगा? इसका उत्तर बहुत

तीन बार घुमा हुआ होता है। बीज के ऊपर इतना मज़बूत परदा होता है कि बीज बहुत दिनों तक सुरक्षित रह सकता है। नया बीज उतनी सुगमतापूर्वक नहीं उगता है जितनी सुगमता से दो या तीन वर्ष का पुराना बीज। यह पौधा विभिन्न जलवायु में उग सकता है। यह गरम और सर्द दोनों प्रकार की जलवायु का सामना कर सकता है। यदि गरम जगह में किसी प्रकार अधिक नमी मिल जाती है तो पौधे को हानि होती है। जिन जगहों में ४० इंच से अधिक वार्षिक वर्षा होती है वहाँ यह पौधा नहीं बोना चाहिए। यह पौधा हर प्रकार की ज़मीन में उपज जाता है लेकिन विशेषकर दोमट ज़मीन में। जिन जगहों में पानी लगता है उन जगहों में इसकी उपज नहीं हो सकती है। इसकी बोआई या तो छीटकर या कूँड़-द्वारा की जा सकती है। प्रथम तरीका नम स्थानों में और दूसरा अधिक वर्षा होनेवाली जगहों में उपयुक्त होता है। उत्तरी भारतवर्ष में इसकी बोआई सितम्बर और अक्टूबर के प्रारम्भ में की जाती है। प्रतिएकड़ ५ सेर बीज बोया जाता है। बोआई के बाद तुरन्त ही सिंचाई की जाती है और खेत को अकसर सिंचाई-द्वारा उस समय तक नम रखते हैं जब तक बीज न निकल आवे। इसके बाद गरमी में १५ या २० दिन बाद सिंचाई की जाती है और जाड़े में इससे भी अधिक दिनों में। इसको गरमी में दूब और मोथा से हानि पहुँचती है और जाड़े में बथुये से। इन सबको सावधानीपूर्वक दूर कर देना चाहिए।

इसकी कटाई इसकी उपज और सिंचाई पर निर्भर है। दो या तीन महीने बाद पहली कटाई की जाती है। ऐसा करने से पौधे में और भी अधिक शाखायें बढ़ती हैं। जब इसकी पत्तियाँ अधिक और अधिक लाभ-दायक हों तब कटाई करनी चाहिए। साल भर में इसकी ६ या ८ बार कटाई की जा सकती है और साल भर में प्रतिएकड़ प्रतिवर्ष ६०० मन से लेकर ८०० मन तक हरा चारा उपज सकता है। एक बार लगाने पर यह फ़सल कई वर्ष तक रह सकती है फिर भी इसको ४ या ५ वर्ष से अधिक न रखना चाहिए।

त्रिपत्र उद्भिज--इसमें बरसीम, शफ़तल सेंजी, बर्र और मेथी विशेष हैं।

बरसीम का प्रचार भारतवर्ष में सन् १९०४ से हुआ। यह पौधा मिस्र देश से लाया गया। उस समय से इसकी उपज की बहुत उन्नति हुई है। यह केवल चारा ही नहीं है बल्कि इससे भूमि की भी शक्ति बढ़ती है। यह १½ फ़ीट से लेकर दो फ़ीट तक ऊँचा होता है। इसके फूल अकसर सफ़ेद होते हैं। भारतवर्ष में मिसकावी और खदरावी इसकी दो नस्लें उपजती हैं।

शफ़तल का जन्म-स्थान मध्य एशिया है जहाँ से इसका प्रचार भारतवर्ष में हुआ। यह पौधा देखने में बरसीम की तरह होता है। यह पौधा गिरता भी है। डंठल खोखला होता है और बरसीम के समान लम्बा नहीं होता है।

सेंजी पंजाब और संयुक्त-प्रान्त के पश्चिमोत्तर भागों में बोई जाती है। इसका पौधा १½ फ़ीट तक ऊँचा होता है। पशुओं को निरी सेंजी नहीं खिलाई जा सकती है बल्कि उसके साथ भूसा या और कोई सूखा चारा मिलाना चाहिए।

बर्र लता के समान होती है। पत्तियों पर सफ़ेद या लाल लाल दाग़ होते हैं और वे धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं। इसकी खेती नहीं की जाती है बल्कि यह संयुक्त-प्रान्त, पंजाब और भारतवर्ष के उत्तरी हिस्सों में जंगली दशा में उत्पन्न होती है।

मेथी की साधारणतया दो क़िस्में होती हैं। इसका पौधा सीधा होता है और बहुत-सी डालियाँ होती हैं। बड़ी नस्ल को मोथा कहते हैं जिसे चारे के काम में लाते हैं और छोटी नस्ल को मेथी कहते हैं जिससे चटनी आदि बनाई जाती है। इसके बीज ओष-धीय उपयोगवाले होते हैं।

ये सब त्रिपत्र उद्भिज जाड़े यानी अक्टूबर में बोये जाते हैं। इसके लिए भूमि उसी प्रकार तैयार की जाती है जिस प्रकार रबी के लिए, फिर सिंचाई करने के बाद बीज छीट दिये जाते हैं। कभी-कभी बीज बोने के पहले उसे २४ घंटे तक भिगो देते हैं। प्रतिएकड़ बरसीम का बीज ३० या ४० पौंड तथा शफ़तल और सेंजी २० पौंड लगता है। पंजाब आदि स्थानों में तो कपास या मक्का के खेतों में सिंचाई करने के पहले सेंजी को छीट देते हैं। इस प्रकार खेत तैयार करने की मेहनत और खर्च बच जाती है। इन सब उद्भिजों की सिंचाई होती है। दिसम्बर और अप्रैल के बीच में इसकी दो या दो से अधिक बार कटाई की जा सकती है।

गौरा--इसकी खेती चारे के लिए की जाती है लेकिन उत्तर-भारतवर्ष के कुछ स्थानों में हरी खाद के लिए भी काम में लाते हैं। यह पौधा स्थानीय है। इसका पौधा खड़ा होता है। डंठल सादे होते हैं और जिसमें कम शाखायें होती हैं। यह अकसर ३ से ६ फ़ीट तक ऊँचा होता है लेकिन इसकी और नस्लें क़रीब ८ फ़ीट से १० फ़ीट तक ऊँची होती हैं। इसकी छीमी मोटी और १½ इंच से लेकर २ इंच तक लम्बी होती है और हर एक छीमी में क़रीब सात बीज होते हैं। छीमियाँ सीधी होती हैं। जब छीमी मुला-यम होती है तो इसे तरकारी के काम में लाते हैं। इसकी बड़ी और छोटी दो नस्लें होती हैं। बड़ी नस्ल की खेती अधिकतर गुजरात में होती है जहाँ पर छीमियाँ बड़ी होती हैं। छोटी नस्ल की खेती पंजाब और संयुक्त-प्रान्त में होती है।

उत्तरी भारतवर्ष में इसकी खेती अधिकतर खरीफ़ के साथ की जाती है। यह बलुई ज़मीन में अधिक उपजती है और काली मिट्टी में कम होती है। बीज अधिकतर छिटाई करके ही बोये जाते हैं लेकिन कभी-कभी लीक की भी बोआई होती है। बोआई होने पर बीज को हैरो से ढक देते हैं। पंजाब में इसकी खालिस खेती होती है लेकिन संयुक्त-

ही सरल है। महाजन का सहयोग सहकारी आन्दोलन-द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

आजकल देहातों में कोआपरेटिव सोसाइटियों-द्वारा बहुत कम उधार लिया जाता है। यू० पी० बैंकिंग इन्क्वायरी कमेटी के अनुसार प्रान्त के देहातों के कुल क़र्ज़े का केवल ५.३ फ़ी सदी कोआपरेटिव सोसाइटियाँ देती हैं, सरकार तक़ावी-द्वारा २ फ़ी सदी बाँटती है जब कि पेशेवर महाजन ३३.४ फ़ी सदी देते हैं। अब जब कि महाजन क़र्ज़ देना कम कर देंगे तो काश्तकार बड़ी परेशानी में पड़ जायगा।

इसलिए ऋण से छुटकारा दिलाने के क़ानून के साथ ही साथ कोआपरेटिव क़र्ज़ा भी ज़्यादा बढ़ाना चाहिए। लेकिन इसके लिए कोआपरेटिव क़र्ज़े के पुराने तरीक़ों को त्यागना पड़ेगा। आजकल कोआपरेटिव क़र्ज़ों का आयोजन अपरिमित दायित्व के सिद्धान्त पर किया जाता है। एक समय यह सच्चे सहयोग का सार समझा जाता था। परन्तु अब वह बात नहीं है। धनी लोग अपरिमित दायित्व सोसाइटी के मेम्बर (सदस्य) होना क्यों चाहेंगे जहाँ नुक़सान की सम्भावना ज़्यादा है और लाभ सीमित है? अपरिमित दायित्व के सिद्धान्त के कारण महाजन कोआपरेटिव के क़र्ज़ों से अलग रहने के लिए मजबूर है। वह यह जानते हुए कि नुक़सान होने की सम्भावना ज़्यादा है निर्धन लोगों के साथ मेम्बर होना नहीं पसन्द करेंगे। इस प्रकार कोआपरेटिव के क़र्ज़े के लिए देहातों के एक प्रमुख अनुभवी और होशियार महाजन की सहायता नहीं मिलती।

यह सहायता परिमित दायित्व के सिद्धान्त को अपनाने से तथा अपरिमित दायित्व के सिद्धान्त को त्याग देने से प्राप्त हो सकती है। महाजन के पास धन भी है तथा योग्यता भी। कोआपरेटिव के क़र्ज़ और कृषि के लिए इन दोनों से लाभ उठाया जा सकता है। परिमित दायित्व के सिद्धान्त को अपनाने से महाजन ग्रामीणी के सहकारी साख सोसिटी का ज़िम्मेदार हो सकता है। जब महाजन सोसाइटी का प्रबन्ध करने लगेगा और उसकी उन्नति के लिए कोशिश करेगा तो कोआपरेटिव के क़र्ज़े की दशा अवश्य सुधर जायगी। वह अपने अतिरिक्त धन को भी, जो काफ़ी होता है, सहकारी साख समिति के सेविंग्स बैंक में जमा कर देगा। परन्तु वह उस समय तक ऐसा नहीं कर सकता जब तक कि वह अपने धन के सुरक्षित रहने तथा आय के सम्बन्ध में निश्चित न हो।

वह उस ऋण का भी ज़ामिन बनाया जा सकता है जो सोसाइटी अपने मेम्बरों को दे। उसे उस ऋण का जिसका वह प्रतिभू बने १½ फ़ी सदी कमीशन भी दिया जा सकता है। ऐसे ऋण की अदायगी के लिए वह अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होगा और काश्तकार के सम्पर्क में होने के कारण ऋण को उत्पादक कार्यों में लगाने के लि अनुरोध करेगा क्योंकि उसका भी इसी लाभ है। इस विधि से कोआपरेटिव के क की पूरी प्रणाली में मौलिक परिवर्तन जायगा। इसके बिना कृषि के लिए सस्ते पर क़र्ज़ा नहीं मिल सकता।

ऋण से छुटकारा दिलाने के ऐक्ट बनना बहुत आवश्यक था परन्तु इससे अधिक लाभ न हो सका। किसी खास फ़ायदेमन्द तरीक़े की ज़रूरत है और यह है कि जैसा कि ऊपर बताया जा चुका देहात के महाजन की सहायता प्राप्त जाय। इसलिए संयुक्तप्रान्त में सहयो आन्दोलन के आर्गनाइज़रों को चाहिए वे इस पर अपना ध्यान दें।

पगला ?

लेखक, श्रीयुत मनोहर

खो गया तेरा अरे! ऐसा बता क्या,
जो न मिल सकता कभी फिर?

कौन-सी वह वस्तु है अनमोल,
खो जिसे तू स्वयं भी खो-सा गया, कुछ बोल!
मौन क्यों? मुख खोल पागल!
यों बहाता ही रहेगा बोल! कब तक अश्रु
अविरल?

एक दिन तो थक थमेंगे हो नयन-घन,
जो घुमड़ते आज घिर-घिर!

विश्व है अक्षय अमर भंडार,
क्यों हुआ तेरे लिए ही शून्य सब संसार?
भर रहे नर-नारि अनगिन,
क्यों भला तू ही अकेला तड़पता ज्यों मीन
जल-बिन?
व्यर्थ क्यों रह-रह पटकता शीश पगले!
स्वप्न कब रहते सदा थिर?

क्या न होती है सभी को पीर?
क्या न चुभता है सभी के तीक्ष्ण विष-सा ती
भूल जाते हैं सभी थक,
पर, न जाने क्या घुलाता जा रहा तु
अभी त
और कुछ होगा नहीं! तू मर मिटेगा,
जग हँसेगा खिलखिला फि

प्रशान्त महासागर के मोर्चे

प्रशान्त महासागर संसार का सबसे बड़ा महासागर है। यह एशिया और अमरीका के बीच में प्रायः उत्तरी ध्रुवप्रदेश से दक्षिणी ध्रुवप्रदेश तक चला गया है। उत्तर में एशिया का पूर्वी सिरा (कम्सकाट्का का प्रायद्वीप) और अमरीका का पश्चिमी छोर (अलास्का) एक-दूसरे से केवल ६० मील रह जाते हैं। किन्तु दक्षिणी एशिया के अंतिम स्थान सिंगापुर से सैनफ़्रांसिस्को प्रायः १०,००० मील दूर है। सिंगापुर से आस्ट्रेलिया तक छोटे-बड़े टापुओं की एक श्रेणी दक्षिण में, और एक श्रेणी फ़िलिपाइन होती हुई प्रायः जावा द्वीप तक चली गई है। उत्तर में सघालिन और जापान से फारमोसा होते हुए एक द्वीपमाला इन दक्षिणी द्वीपों से मिल जाती है।

इस विशाल प्रशान्त महासागर में असंख्य छोटे-बड़े द्वीप हैं और इस क्षेत्र में छः मुख्य शक्तिमान् राष्ट्रों की संक्रान्ति हुई है। वे छः राष्ट्र ये हैं—अमरीका, ब्रिटेन, चीन, हालैंड, जापान और रूस। जर्मनी, फ़्रांस और पुर्तगाल का प्रभाव यहाँ से उठ-सा गया है। पूर्वी दक्षिण एशिया में श्याम एक राज्य है जो बड़ी शक्ति न होते हुए भी स्वतंत्र था।

इनमें यदि जापान को बीच में मान लिया जाय तो मालूम होगा कि वह पश्चिम में रूस और चीन से घिरा है। दक्षिण में डच लोगों

हांगकांग के पहाड़ी के क़िले पर अँगरेज़ी तोपें

हांगकांग में शंघाई बैंक का भवन
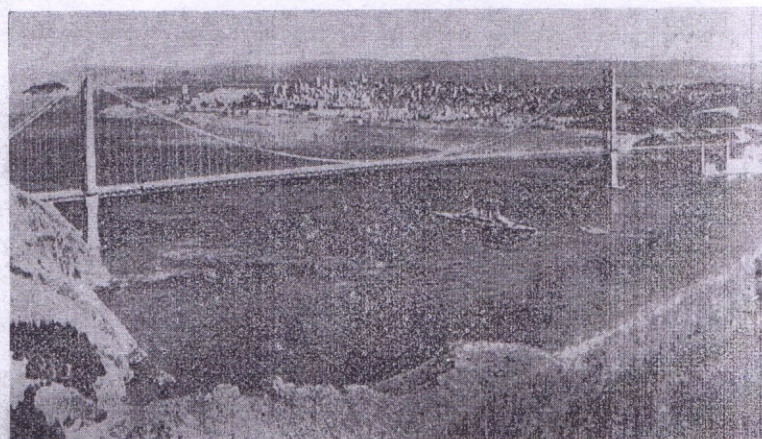
सेन फ्रांसिस्को के स्वर्णद्वार का पुल
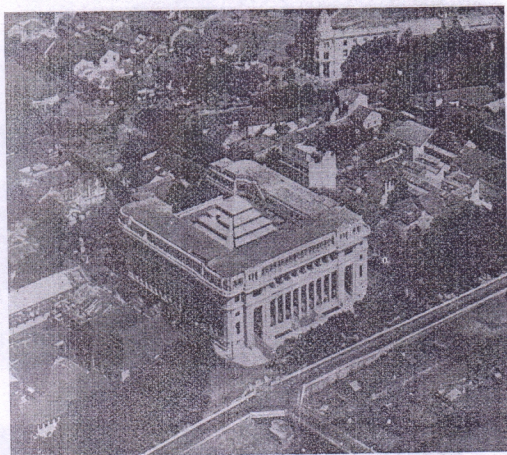
साइगौन (हिन्द-चीन) में एक सरकारी दफ़्तर की इमारत

पहाड़ी पर से हांगकांग के बन्दरगाह का दृश्य।

कौलून प्रायद्वीप से हांगकांग नगर का दृश्य।

का जावा और सुमात्रा, अमरीकनों के अधीन फ़िलिपाइन और अँगरेज़ी साम्राज्य के अन्तर्गत आस्ट्रेलिया है। पूर्व में अमरीका है। प्रशान्त महासागर में असंख्य छोटे-बड़े द्वीप हैं। इनमें पश्चिम की ओर के द्वीपों में कुछ जापान के पास हैं, कुछ अँगरेज या डच के और कुछ अमरीका के पास हैं। किन्तु दक्षिण के प्रायः सभी द्वीप अँगरेज़ों के पास और पश्चिम के प्रायः सभी द्वीप अमरीका के पास हैं।

इस महासागर के पश्चिम में अमरीका का सैनफ़्रांसिस्को नामक प्रसिद्ध नगर है। यह अमरीका का पूर्व का द्वार है। यहाँ जलसेना का अड्डा है, किन्तु अमरीका का प्रशान्त महासागर का मुख्य मोर्चा हवाई द्वीप-समूह होनोलूलू का पर्ल हार्बर है। अँगरेज़ों का मुख्य मोर्चा सिंगापुर में है।

अँगरेज़ों का एक दूसरा मोर्चा हांगकांग है जो चीन में है। किन्तु यह स्थान व्यापारिक महत्त्व का है—सैनिक महत्त्व का नहीं। आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में सिडनी, पोर्ट डार्विन आदि और मोर्चे हैं। अमरीकनों के पास गुआम, वेक द्वीप, मिडवे द्वीप और मनीला के मोर्चे हैं। डच लोगों के पास सूराबाया और बटाविया के मोर्चे हैं।

जापान ने चीन के किनारे पर तो अधिकार कर ही लिया है, उसने हिन्दचीन पर भी अधिकार करके साइगौन और कामरान खाड़ी के बन्दर को भी छीन लिया है। फारमूसा पर भी उसका अधिकार है।

प्रशान्त महासागर में स्थानों का अन्तर बहुत है। देखिए इन स्थानों के बीच की दूरी कितनी है :—

होनोलूलू	से	हांगकांग	४,८६० मील
"	"	मनीला	३,३३०
"	"	पनामा	५,२८०
सिंगापुर	"	हांगकांग	१,४४०
"	"	शंघाई	२,२६०
"	"	बटाविया	५०९

हांगकांग	से	ब्लाडिवास्टक	२,४१५ मील
सिंगापुर	"	मनीला	१,४०० "
"	"	सिडनी	४,३८० "

इस सूची से मालूम होगा कि प्रशान्त महासागर में जलसेना और वायुसेना का महत्त्व कितना है। जलसेना के लिए ऐसे सुरक्षित स्थान चाहिए जहाँ लड़ाकू जहाज़ सुरक्षित रह सकें, जहाँ उनकी मरम्मत हो सके और जहाँ से उनको कोयला, पानी, तेल, खाने का सामान, गोला-बारूद, टारपीडो बराबर मिलते रहें। जहाज़ों में गोला-बारूद कितना लगता है इसका अनुमान इससे किया जा सकता है कि गत महायुद्ध के जुटलैंड के जलयुद्ध में प्रायः एक दिन में अँगरेज़ी जहाज़ों ने ७,७०० गोले और जर्मनों ने १०,५०० गोले चला डाले थे! यदि जहाज़ों के पास गोले चुक जायँ तो वे बेकार हो जायँ! इसके सिवाय वे स्थान ऐसे भी हों जहाँ से शत्रु पर आक्रमण करने का भी सुभीता हो। प्रशान्त
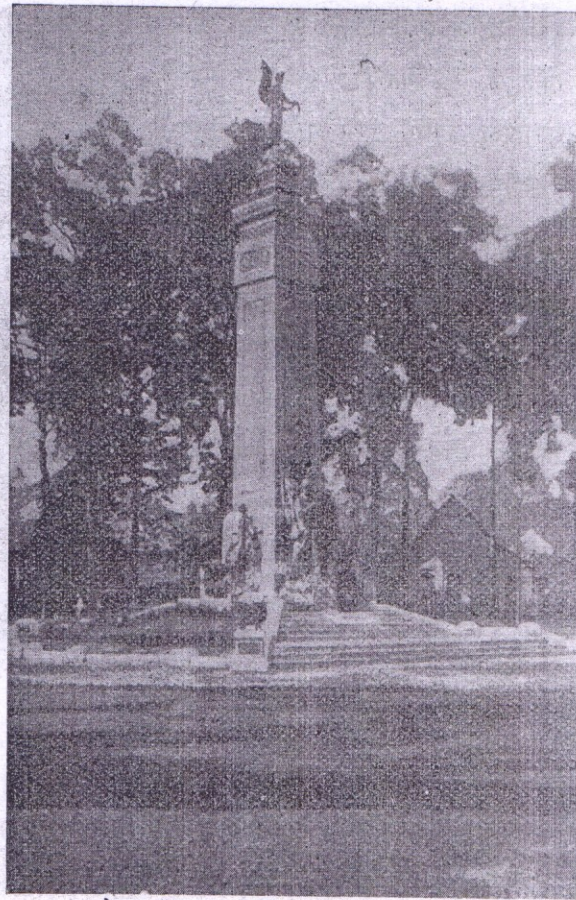
साइगौन (हिन्द-चीन में) गत महायुद्ध का स्मारक

बैंकूवर
पोर्ट लैंड
सैन फ्रांसिस्को
लास ऐंजिलिस
टोकियो
योकोहामा
शंघाई
बोनिन
मिडवे द्वीप
हांगकांग
हानोलूलू
हवाई
वेक द्वीप
गुआम
फिलिपाइन
याप
केरालाइन
मार्शल
पालमीरा
फैनिंग
क्रिसमस
गीलबर्ट
नाउरू
न्यूगिनी
जारविस
माल्डन
सालोमन
एलिस
फीनिक्स
विक्टोरिया
मारक्विस
टिमोर
सेंटक्रूज़
तोकोलो
डेन्जर
पैनरिन
न्यूहेब्रिडीज
समोआ
सोसाइटी
मनीहीकी
फीजी
हार्वी
तुआमोती
न्यूकैलिडोनिया
कुक
आस्ट्रल
पिटकैर्न
ईस्टर
आस्ट्रेलिया
टसमेनिया
न्यूज़ीलैण्ड
रेविला गिजेडो
पनामा
गैलापगस
जावा
बटाविया
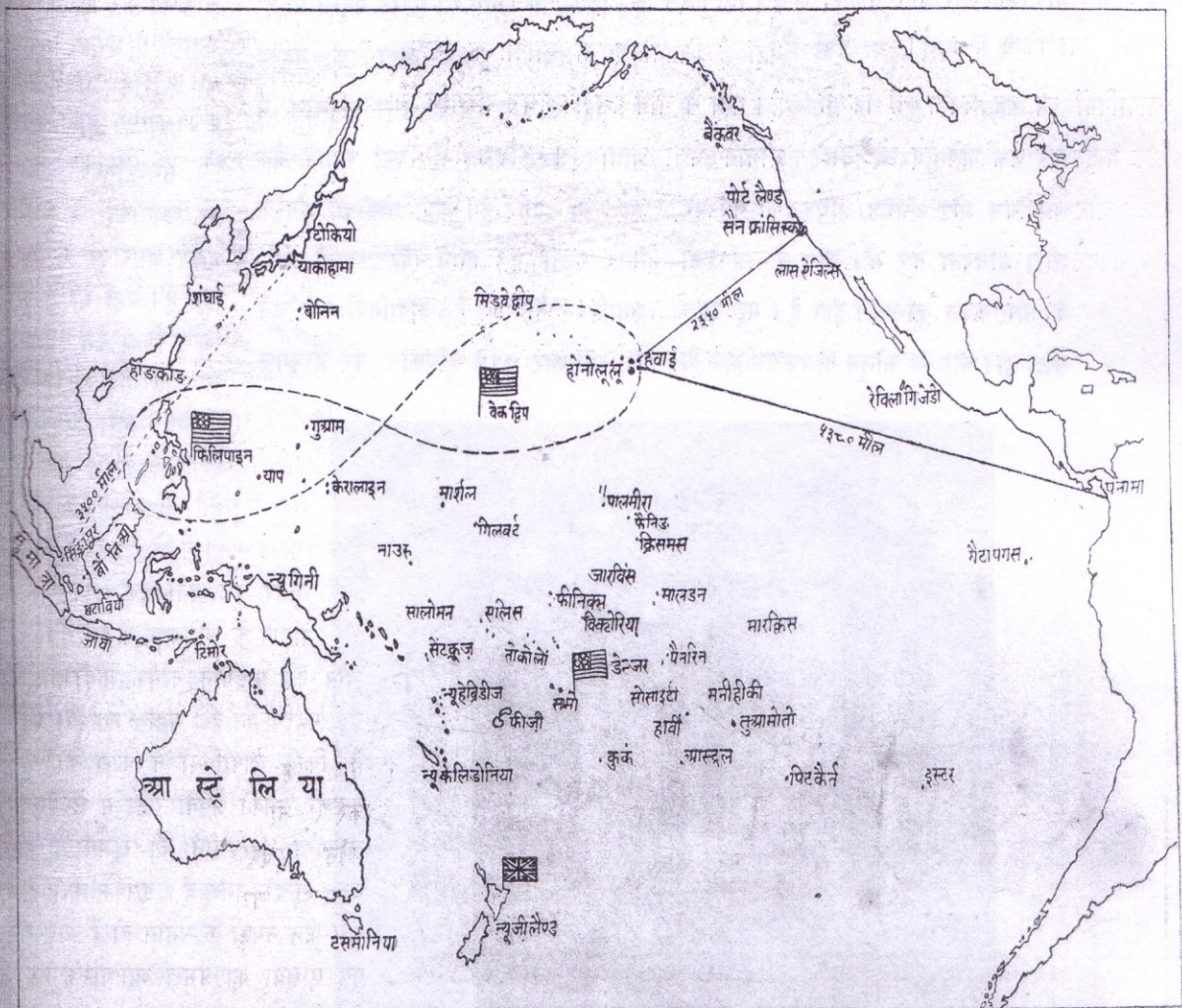
प्रशान्त महासागर का नक़्शा

महासागर में मित्रराष्ट्रों के लिए महत्त्वपूर्ण मोर्चे ये हैं—सिंगापुर, सुराबाया और अम्बोयना (डच), तथा मनीला (फ़िलिपाइन)।

मित्रराष्ट्रों की जलसेना इन मोर्चों पर रहकर जापान को दक्षिण में बढ़ने से रोक सकेगी क्योंकि जापान का उद्देश्य जावा, सुमात्रा आदि डच द्वीपों और आस्ट्रेलिया पर अधिकार करने का है। अतएव यह स्पष्ट है कि यहाँ जो लड़ाई होगी वह समुद्री लड़ाई होगी। हाँ, वायुसेना का महत्त्व अवश्य बढ़ता जायगा। किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान सिंगापुर है। जिसके अधिकार में यह रहेगा वह पूर्वी प्रशान्त महासागर पर प्रभुत्व कर सकेगा।

इन मोर्चों में केवल सिंगापुर ही ऐसा स्थान है, जहाँ ऐसे सूखे डॉक बने हैं जिनमें बड़े से बड़े जहाज़ों की तली की भी मरम्मत हो सकती है। यहाँ सैनिक सामान भी बड़े परिमाण में जमा किया गया है।

जापानियों का यह प्रयत्न है कि वे पैसिफ़िक महासागर में बिखरे हुए छोटे-छोटे अमरीकन और अँगरेज़ अधिकृत स्थानों पर शीघ्र अधिकार कर लें। चीन में अँगरेज़ों के पास केवल हांगकांग द्वीप है। यह बहुत छोटा द्वीप चीन के कौलून नामक प्रायद्वीप के पास है। हांगकांग एक समृद्धिशाली स्थान है। यह स्थान पहाड़ी है। पहाड़ की चोटी पर अँगरेज़ी क़िला है। यहाँ के बन्दरगाह में सारे राष्ट्रों के जहाज़ आते-जाते हैं। यह बन्दरगाह जहाज़ों के लिए बड़े आराम का है। किन्तु इस स्थान का सैनिक महत्त्व उतना नहीं है जितना इसका व्यापारिक महत्त्व है। यहाँ से चीन देश को प्रचुर परिमाण में सामान भेजा जाता है। यहाँ शंघाई बैंक का मुख्य दफ़्तर है। यहाँ थोड़ी-सी अँगरेज़ सेना रहती है। इसमें हिन्दुस्तानी और कनाडियन सेना भी है। जापानियों ने कौलून पर अधिकार करके हांगकांग पर आक्रमण कर दिया है। यहाँ की मुट्ठी भर अँगरेज़-सेना बड़ी वीरता से लड़ी किन्तु अन्त में उसे आत्म-समर्पण करना पड़ा।
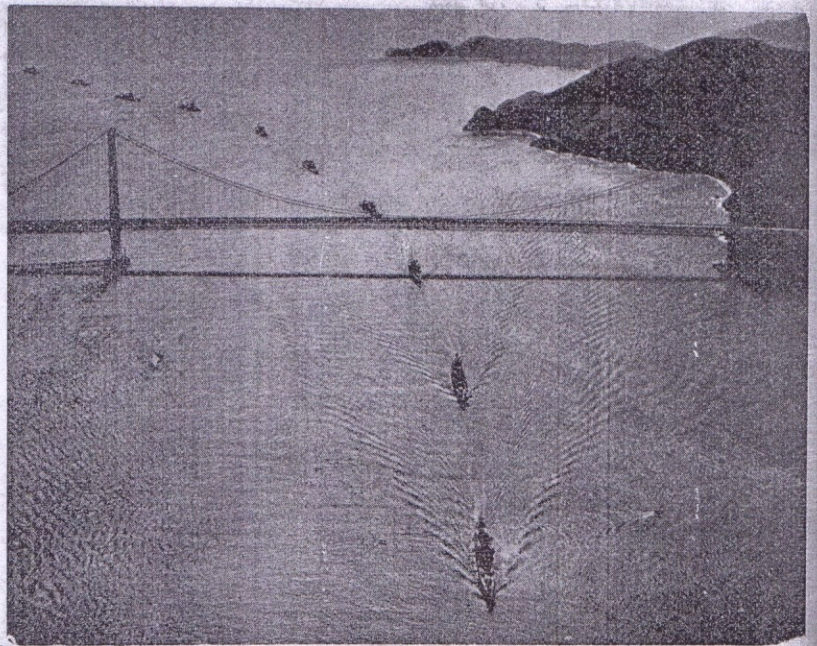
सैनफ़्रांसिस्को के स्वर्णद्वार के पुल के नीचे से अमरीकन लड़ाकू जहाज़ निकल रहे हैं।

गुआम और वेक द्वीपों पर जापानियों ने अधिकार कर लिया है और अब वे फ़िलिपाइन द्वीप पर बड़ी तैयारी के साथ भीषण आक्रमण कर रहे हैं। यहाँ जापानियों ने ८० जहाज़ों में भरकर अपनी सेना भेजी है। यहाँ की अमरीकन सेना बड़ी वीरता से लड़ रही है। यहाँ भी अमरीकन सेना बहुत कम है।

सैनफ़्रांसिस्को, जो पैसिफ़िक महासागर पर अमरीका का सबसे बड़ा नगर है, इस समय अमरीकन सैनिक कामों का केन्द्र हो रहा है। यहाँ भी जापानी वायुयान पहुँचे थे किन्तु बिना बम गिराये ही लौट गये। यहाँ का बन्दरगाह संसार के सर्वोत्तम बन्दरगाहों में गिना जाता है। इसमें प्रवेश करने के लिए दो पहाड़ियों के बीच में होकर जाना पड़ता है! बन्दरगाहों के इस प्रवेश-द्वार को स्वर्ण-द्वार (गोल्डेनगेट) कहते हैं। इसके ऊपर एक बड़ा सुन्दर पुल बना हुआ है।

जापान के अधिकार में इस समय हिन्द-चीन का साइगौन नामक बन्दरगाह है जो बड़े महत्त्व का है। यहाँ राज्य तो फ़्रांस का है, किन्तु जापानियों ने फ़्रांस को कमज़ोर देखकर उसको अपनी रक्षा में ले लिया है। साइगौन हिन्दचीन की राजधानी है, यह बहुत सुन्दर नगर है। इसकी बनावट बहुत कुछ फ़्रेंच नगरों के समान ही है, यह दक्षिण-पूर्व एशिया का प्रमुख व्यापारिक नगर भी है।

—'सचित्र संसार' से
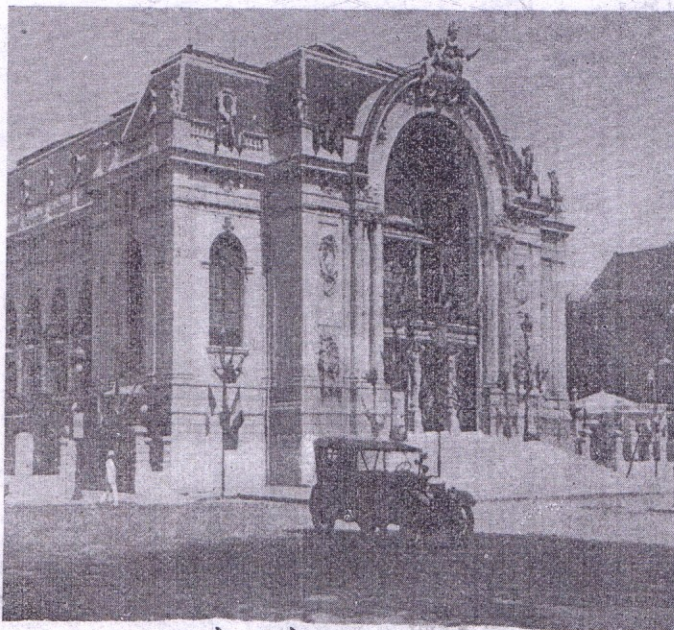
साइगौन में फ़्रेञ्च सरकार के दफ़्तर

जाड़े में पैदा होनेवाली चन्द तरकारियों की काश्त

लेखक, मिस्टर इन्दुशेखर शर्मा, मेम्बर सबारडिनेट एग्रीकलचर सर्विस, सहारनपुर

नन्दा--ऐ रक्खा! आज शाम को लम्बरदार की चौपाल पर लेक्चर है, चलोगे?

रक्खा--कैसा लेक्चर? कौन देगा?

नन्दा--अरे वही ज़राअत के महक़मे के इन्स्पेक्टर जो पहले आये थे और बाग़ वग़ैरह के बाबत कहते थे, याद आई।

रक्खा--हाँ अब समझा, वो इन्स्पेक्टर! भाई, ज़रूर चलेंगे।

लम्बरदार--आओ पंडित जी, यहाँ बैठो, हमारे पास।

पंडित जी--राम-राम लम्बरदार, कहिए इन्स्पेक्टर साहब आये।

लम्बरदार--बस आते ही होंगे, अभी गाँव में से आदमी भी तो आ ही रहे हैं।

पंडित जी--आइए आइए इन्स्पेक्टर साहब, इधर से आ जाइए, जय राम जी की, बैठिए।

लम्बरदार--जय राम जी की इंस्पेक्टर साहब।

इंस्पेक्टर--जय राम जी की, कहो सब आदमी आ चुके। काम शुरू किया जाय।

लम्बरदार--हाँ शुरू कीजिए।

इंस्पेक्टर साहब--बैठिए, इधर सुनिए। मैं आप लोगों को सर्दी में पैदा होनेवाली चन्द तरकारियों के बारे में बताऊँगा, पर पेश्तर इसके मैं आपको चन्द ऐसी ज़रूरी बातें बताना चाहता हूँ जो हर एक सब्ज़ी बोनेवाले को जाननी चाहिए।

पंडित जी--हाँ, ये क्या-क्या बातें हैं, इन्स्पेक्टर साहब!

इंस्पेक्टर--सब्ज़ी बोने के लिए स्थान का चुनाव पहला काम है। जहाँ सब्ज़ी लगाई जाय वहाँ कोई पेड़ नहीं होना चाहिए, स्थान खुला और पानी की निकासी का प्रबन्ध अच्छा होना चाहिए। नीची ज़मीन जहाँ पानी भर जाय सब्ज़ी की काश्त के लिए ठीक नहीं रहती।

लम्बरदार--और ज़मीन कैसी ठीक है?

इंस्पेक्टर--दोमट यानी जिसमें चिकनी और बलुई बराबर-बराबर हो, सब्ज़ी की काश्त के लिए सबसे ठीक है। अब इसके आगे मैं आपको चन्द क़िस्म की सब्ज़ी लगाने की तरकीब बताऊँगा। सब्ज़ी लगाते समय इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि आपको अपने यहाँ कौन-कौन सी तरकारी लगानी चाहिए और कौन-सी नहीं।

नन्दा--हाँ, यह ज़रूर बताइए।

इंस्पेक्टर--सब्ज़ियों को आप आसानी से बाज़ार भेज सकें और जो गाँव से बाज़ार तक ले जाने में खराब न हों उनको लगाना चाहिए। जो जगह शहर से दूर है वहाँ आलू, घुइयाँ आदि चीज़ें बोनी चाहिए क्योंकि इनको काश्तकार लोग अपने घर में रख सकते हैं और शहर में अपनी सुविधा से भेज सकते हैं। पर जो गाँव शहर के नज़दीक हैं--जैसे आपका, वहाँ तो टमाटर, मटर, गोभी आदि चीज़ें लगानी चाहिए। ये चीज़ें ऐसी हैं जिनको तोड़कर तुरन्त बाज़ार रवाना कर दी जायँ क्योंकि देर करने से उनके खराब होने का डर रहता है। पर आप शहर के बिलकुल पास हैं, आपके लिए यह काम कोई मुश्किल नहीं। अब मैं आप लोगों को कुछ सब्ज़ियों की काश्त के बारे में बताता हूँ, सुनिए।

टमाटर--इसके बीज को जुलाई से अक्टूबर तक छोटी क्यारियों में छिड़ककर बोना चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि ये क्यारियाँ खूब गोड़ाई करके और खाद देके तैयार करनी चाहिए। जब पेड़ कुछ बड़े हो जायँ तो उनको दूसरी जगह खेत में बदल देना चाहिए। पेड़ों को हमेशा पाले से बचाना चाहिए। जहाँ पाला गिरता हो वहाँ पेड़ को १½ फ़ीट के फ़ासले से लगाना मुनासिब है पर जहाँ इसका डर नहीं वहाँ कुछ फ़ासले से लगाया जा सकता है। पेड़ों में हमेशा पानी ज़्यादा नहीं देना चाहिए पर इसका मतलब यह भी नहीं कि ज़मीन खुश्क ही हो जाय। ज्यों-ज्यों पेड़ बढ़ें उनको लकड़ी का सहारा देना चाहिए। इसकी फ़सल तोड़ने का समय अक्टूबर से अप्रैल तक है।

लम्बरदार--अच्छा अब मटर के बारे में भी बताइए।

इन्स्पेक्टर--अच्छा मटर के बारे में भी सुनिए। मटर के बीज को क्यारियों में बोकर फिर पेड़ों को खेत में बदलने की ज़रूरत नहीं। इसे आप सीधे खेत ही में बोइए। बीज लगाने का समय है शुरू अक्टूबर से नवम्बर के बीच तक। बीज बोने के पहले खेत की जोताई करके और खाद दे करके अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए। खेत की तैयारी के बाद दो फ़ीट चौड़ी और क़रीब तीन इंच गहरी नालियाँ बनानी चाहिए। नालियों का एक दूसरे से तीन फ़ीट का फ़ासला रखना चाहिए। इसके बाद हर नाली के बीच में कूँड़ बनानी चाहिए और उसमें बीज बोना चाहिए। बीज को दो इंच या तीन इंच के फ़ासले से बोकर ढक देना चाहिए। यदि ज़मीन में नमी है तो जब तक ज़मीन से पेड़ ऊपर न निकल आयें पानी देने की ज़रूरत नहीं, पर अगर ज़मीन खुश्क है तो बोआई के बाद ही फ़ौरन नाली में पानी दे देना चाहिए। जब पेड़ ३ या ४ इंच बड़े हो जायँ तो खेत में निकाई-गोड़ाई कर देनी चाहिए। पेड़ों की जड़ को मिट्टी चढ़ाकर मज़बूत बनाना चाहिए। इसके बाद जब पेड़ कुछ और बड़े हो जायँ तो नाली के दोनों ओर झाँकड़ गाड़कर पेड़ों को उनका सहारा देना चाहिए। जब तक फूल न आ जायँ पानी लगातार अच्छी तरह देते रहना चाहिए। और सब्ज़ियों की तरह मटर में ज़्यादा पानी की आवश्यकता नहीं है। पर तो भी खुश्क मौसम में आठवें दिन पानी देना चाहिए और फली जमने पर हफ़्ते में दो बार। मटर की फलियाँ फ़रवरी, मार्च तक तोड़ने लायक़ हो जाती हैं।

अच्छा आज अब यहीं खत्म करते हैं फिर दुबारा और बातें कहेंगे।

लम्बरदार--हाँ, अब देर काफ़ी हो गई है।

इन्स्पेक्टर--जय राम जी की।

लम्बरदार--जय राम जी की।

हमारी सहकारी पंचायतें

लेखक, श्री जे० पी० मिश्र, प्रकाशन आफ़िसर, सहयोग-विभाग

ऐसा भला कौन किसान होगा जिसने पंचायतों का नाम न सुना होगा। हमारे बाबा-परबाबा के समय में गाँव-गाँव में पंचायतें थीं। गाँव के सभी आदमी इन पंचायतों में बँधे थे। वे अपने में से पाँच या छः बुज़ुर्ग, होशियार पड़ोसियों को पंच बना लेते थे। ये पंच गाँव के आपसी झगड़ों का फ़ैसला कर देते थे। और उनका फ़ैसला सब मान लेते थे। पंचायती राज में सब बड़े सुखी थे। एक दूसरे का विश्वास करते थे। आड़े समय में मदद देते थे और गाँवों का सब बन्दोबस्त पंचायत के हाथ में था। जब लोगों में फूट बढ़ गई, कपट छा गया और अपने-अपने मतलब की बात ठीक समझी जाने लगी तब पंचायतों का मान कम हो गया और धीरे-धीरे वे टूटने लगीं। आज से ५० वर्ष पहले ऐसा वक्त आगया कि पंचायतें बिलकुल ग़ायब हो गईं। किसानों में आपस के मेल-जोल न होने के कारण महाजन और ज़मीन्दार की बन आई। एकन्नी और अधन्नी रुपया ब्याज लेकर उनके बाग़-बग़ीचे और खेत सभी लेने लगे। किसान क़र्ज़े से लद गये और चारों तरफ़ ग़रीबी ही देख पड़ने लगी।

यह देखकर सोचा गया कि जब तक किसानों के बीच एका और संगठन फिर से न होगा तब तक उनकी हालत न ठीक होगी। इसलिए सहकारी बैंक यानी पंचायतें खोली गईं जिनसे किसानों को कम सूद पर क़र्ज़ा दिया जाने लगा। ऐसी पंचायती बैंकें हमारे गाँव में बहुत जगह काम कर रही हैं। महाजन के पास जाने की ज़रूरत नहीं। अब किसानों को खेती के काम के लिए हैसियत के मुताबिक़ क़र्ज़ मिल जाता है। ये पंचायतें आपस में मेल-जोल बढ़ाने की संस्थायें हैं। दस-पाँच आदमी आपस में मिलकर अपनी ताक़त बढ़ा लेते हैं और उनकी मिली हुई साख अलग अलग साख से बहुत बढ़ जाती है। जब ये लोग यह वादा करते हैं कि वे सब एक दूसरे के देनदार हैं तब महाजन को रुपया डूबने का डर नहीं रहता और वह अपना रुपया कम सूद पर देने को तैयार हो जाता है। यही इन पंचायतों के काम करने का बड़ा भारी उसूल है।

कभी-कभी पंचायतों के मेम्बर चाहे वे जीवन-सुधार की पंचायत हों, चाहे क़र्ज़ देनेवाली पंचायत हो, चाहे बीज-भंडार हो, यह कहने लगते हैं कि पंचायत हमारी नहीं है। यह तो सरकारी मशीन है, इसके मालिक कलेक्टर साहब, रजिस्ट्रार साहब व इन्स्पेक्टर साहब हैं। यह मेम्बरों की बड़ी भारी भूल है। उनको अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि वही पंचायत के पूरे-पूरे मालिक हैं। पंचायत का लेन-देन, बीज बाँटना, दवा-दारू का बन्दोबस्त, सब पंचों के हाथ में रहता है। वे खुद ही पंचायत का जलसा करते हैं। इन्तज़ाम और लेन-देन के बारे में उन्हीं का बोलबाला रहता है। वे ही राय देते हैं और जिस ओर ज़्यादा लोगों की राय होती है वही बात ठीक समझी जाती है। कहने का मतलब यह है कि पंचायत मेम्बरों की चीज़ है और उसके बन्दोबस्त में उनका पूरा हाथ रहता है। इन्स्पेक्टर और दूसरे सरकारी लोग मेम्बरों को सलाह देने के लिए और रास्ता बताने के लिए हैं। अगर कोई मेम्बर ख़राब काम करता है या कोई ग़ैर क़ानूनी बात होती है तो यह सहकारी मुलाज़िम मेम्बरों को ऐसा करने से रोकते हैं। और अगर वे ऐसा न करें तो पंचायत का काम बिगड़ जाता है।

एक बात और भी है। हमारी पंचायतों के मेम्बर अकसर यह भी कहते हैं कि बैंक तो इसलिए है कि उससे क़र्ज़ लो और क़िश्त पर अदा कर दो। इससे और दूसरे काम नहीं लिये जा सकते। लेकिन ऐसा नहीं है। बैंक से जो किसानों की ज़रूरतें हों पूरी हो सकती हैं तथा उनकी दिक्क़तें भी दूर हो सकती हैं। किसानों को उनकी फ़सल का पूरा पूरा दाम बाज़ार के अढ़तियों से नहीं मिलता। हिसाब लगाकर देखा गया है कि रुपये में दस आने ही किसान को मिलते हैं। बाक़ी छः आना आढ़त, भराई, तौलाई, गोशाले का चंदा, स्कूल का चंदा और न जाने कितने चंदों की वजह से काट लिया जाता है। जब किसानों को उनकी गाढ़ी कमाई का सिर्फ़ दस आना ही मिलता है तो उनकी हालत कैसे ठीक हो सकती है। वे कैसे अपनी गृहस्थी की ज़रूरी चीज़ों का बन्दोबस्त कर सकते हैं और कैसे अपने बच्चों को पढ़ा सकते हैं। जो किसान दुनिया भर को रोटी पहुँचाता है खुद भूखा रहता है, जो दुनिया भर को कपड़ा पहनाता है उसको खुद कपड़ा पहनने को नहीं मिलता। अब यह सोचना चाहिए कि किस उपाय से किसानों को उनकी फ़सल का पूरा-पूरा दाम मिल सके? इसका एक ही उपाय है। और वह यह है कि किसान अपना-अपना अनाज बाज़ार में अलग-अलग ले जाकर अढ़तियों के द्वारा न बेचें बल्कि उसे पंचायत में जमा करें। पंचायत उनका अनाज अच्छे भाव में बिकवा देगी और वे बहुत-से करों से बच जायेंगे।

अब समय बदल गया है। गाँव में जो महाजन पहले क़र्ज़ देने के लिए जल्द तैयार हो जाते थे अब वे बहुत मुश्किल से तैयार होते हैं। क्योंकि क़र्ज़ के क़ानून ऐसे बन गये हैं कि वे अब न तो मनमाना ब्याज ले सकते हैं और न किसानों को परेशान ही कर सकते हैं। इसलिए किसानों को चाहिए कि वे अपनी ज़रूरतें अपनी पंचायतों-द्वारा ही पूरी करें और अपने पड़ोसियों को भी समझायें कि वे पंचायत में शामिल हो जायँ और उनसे फ़ायदा उठायें। जिन-जिन गाँवों में ये सहकारी पंचायतें नहीं खुली हैं उन लोगों को चाहिए कि वे अपने ज़िले के सहकारी इन्स्पेक्टर, सुपरवाइज़र और आर्गेनाइज़र से कहकर ऐसी पंचायतें खुलवायें। क्योंकि उन्नति की जड़ संगठन, सहयोग और मेल-जोल है। जब तक किसान इनको नहीं अपनायेंगे तब तक उनकी दशा ख़राब ही रहेगी।*

---

*यह वह भाषण है जिसे श्री जे०पी० मिश्र प्रकाशन आफ़िसर, सहयोग-विभाग ने हाल में लखनउ रेडियो स्टेशन से ब्राडकास्ट किया था।

गुड़

लेख

इस देश की पै

१९३८-३९

कर ४०

जाती थी

कितने चंदों की
। जब किसानों
सिर्फ़ दस आना
हालत कैसे ठीक
अपनी गृहस्थी
स्त कर सकते
को पढ़ा सकते
र को रोटी पहुँ-
जो दुनिया भर
गे खुद कपड़ा
ब यह सोचना
किसानों को
ाम मिल सके ?
और वह यह है
ाज बाज़ार में
तियों के द्वारा न
मा करें। पंचा-
व में बिकवा
बच जायेंगे।

। गाँव में जो
जल्द तैयार हो
तैयार होते हैं
न गये हैं कि वे
सकते हैं और
कर सकते हैं
कि वे अपनी
ही पूरी करें
समभायें कि वे
और उनमें
गाँवों में
हैं उन लोगों
के सहकारी
आर्गेनाइज़र से
यें। क्योंकि
और मेल-जोल
नहीं अपनायेंगे
ही रहेगी।*

जे०पी० मिश्र,
ाग ने हाल में
कास्ट किया

गुड़-धन्धा और सहयोग-समितियाँ

लेखक, श्री एस० एस० हसन, आई० सी० एस०, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़, यू० पी०

इस देश में संयुक्तप्रांत निस्सन्देह ईख की पैदावार का एक मुख्य स्थान है। सन् १९३८-३९ ई० में इसकी पैदावार कुल मिलाकर ४० लाख एकड़ से अधिक रक़बे में की जाती थी। इसमें से हमारे प्रांत में लगभग २५ लाख एकड़ में ईख की खेती होती थी। इनमें से बहुत-से लोगों को यह जानकर कदाचित् आश्चर्य होगा कि इस प्रांत में ८० शक्कर के कारखाने होते हुए भी ईख की पैदावार के ६५ फ़ी सदी हिस्से का हर साल गुड़ बनाया जाता है।

इस प्रकार प्रान्त के देहाती कारबार में गुड़ का धंधा बड़ा महत्त्वपूर्ण है। चूँकि यह काम किसान लोग करते हैं जिनको इससे अतिरिक्त आमदनी की आशा होती है। इस लिए यह मुख्यतः एक घरेलू धंधा बन गया है।

और जब कि इस प्रान्त के लाखों किसानों के लिए यह धंधा इतना बड़ा और महत्त्वपूर्ण है यह खेद की बात है कि उसके तरीक़े और व्यवहार अभी तक निकम्मे हैं और उनमें कोई उन्नति नहीं हो रही है। गुड़ बनाने में पहला काम ईख से रस निकालना है। ईख की काश्त करनेवाले, सस्ता और घटिया कोल्हू काम में लाते हैं जिससे केवल ५० फ़ी सदी या उससे भी कम रस निकलता है। उन्नत प्रकार के कोल्हू जैसे सुल्तान से जो महँगा ज़रूर होता है, ६० फ़ी सदी से ७० फ़ी सदी तक रस निकलता है। इन दोनों प्रकार के कोल्हुओं में रस निकालने का अंतर किसानों के लिए एक विशेष सम्बन्ध रखनेवाली बात है। पर वे इसे सहन करते हैं क्योंकि वे ग़रीबी के कारण एक तो महँगे कोल्हू खरीद नहीं सकते और दूसरे उन्ह उन कोल्हुओं की बाद में मरम्मत कराने और रखने का संतोषजनक प्रबन्ध करने में कठिनाई होती है।

इन कठिनाइयों और कमियों को दूर करने के लिए कोआपरेटिव सोसाइटी से बढ़कर और कोई दूसरी संस्था नहीं है। यह कहना सही होगा कि सहयोग इस धंधे में ही विद्यमान है। पड़ोस के खेतों में ईख की काश्त करनेवाले, बोने, सींचने और फ़सल काटने में एक दूसरे के साथ पूर्णरूप से सहयोग करते हैं। इसकी कल्पना नहीं की जा सकती कि छोटे और ग़रीब किसान ईख की खेती बिना परस्पर सहायता और सहयोग के भी कर सकते हैं। तीन या चार किसान मिलकर एक कोल्हू ख़रीद लेते हैं, चाहे वह कितना ही भद्दा और निकम्मा क्यों न हो और बारी बारी से पेरने के एक ही स्थान पर उसका प्रयोग करते हैं। ईख पेरने में वे कभी कभी बैल और आदमियों से एक दूसरे की सहायता करते हैं। जब कि आरंभिक श्रेणियों में ही सहयोग द्वारा यह धंधा इतनी उन्नति कर सकता है तो उन सब कामों में जिनका करना वे अपनी शक्ति के बाहर समझते हैं उन्हें आपस में मिलजुल कर काम करने के लिए तैयार करना कठिन न होगा। उन लोगों में यदि सहयोगी संस्था बनाई जाय तो उन्हें अच्छे प्रकार के कोल्हू और कड़ाहियाँ ख़रीदने में सुविधायें होंगी। सोसाइटी उन्हें अपने पास रख सकती है और मेम्बरों को किराये पर दे सकती है या उनके हाथ किराया देकर ख़रीदने के उसूल पर बेच सकती है। उनकी मरम्मत और उनको ठीक हालत में रखने का भी उचित प्रबन्ध भी हो सकता है। गुड़ के काम सीखे हुए अमले की मदद से भट्ठियों की बनावट में रस उबालने की कला में और रस साफ़ करनेवाली चीजों के प्रयोग में उन्नति की जायगी। इनका कुल मिलाकर असर यह होगा कि न केवल गुड़ अधिक मात्रा में ही तैयार होगा बल्कि अधिक अच्छा गुड़ भी बनने लगेगा।

इतना गुड़ की उन्नति के बारे में कहा गया। यह पहले ही कहा जा चुका है कि ईख की काश्त करनेवाले गुड़ उतना अपने खाने के लिए नहीं बनाते जितना कि बाज़ार के लिए। खेती की पैदावार बेचने के सम्बन्ध में उन्हें आमतौर पर जो अड़चनें और कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, उनके अतिरिक्त उन्हें गुड़ के इकट्ठा रखने में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ईख के मौसम में गुड़ बनाया जाता है और अच्छे बाज़ार की आशा में इकट्ठा करके रख दिया जाता है, इस विचार से कि यह गर्मी में रिसने न लगे या बरसात में गीला या चिपचिपा न हो जाय। गोदाम की फ़र्श और दीवारों में नमी न होना चाहिए। गोदाम में कम से कम दर्वाज़े और खिड़कियाँ होनी चाहिए और सदर दरवाज़े पर इस बात का विशेष प्रबन्ध होना चाहिए कि माल निकालते समय उसमें नम हवा न भर जाय। गुड़ के ऊपर चारों तरफ़ एक फ़ीट मोटी भूसे की तह लगाना चाहिए जिससे कि गुड़ के भीतर नम हवा के भर जाने की सम्भावना न रहे। गुड़ और भूसे के बीच में टाट का कपड़ा बचाव के लिए लगा होना चाहिए जिससे कि भूसा गुड़ में न लग जाय और गुड़ की शक्ल खराब न हो जाय। इसलिए गुड़ के बेचने में इसका इकट्ठा रखना एक महत्त्वपूर्ण बात है और उचित गोदामों का होना इस धंधे की एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है। अधिकतर ईख की काश्त करनेवाले इन बातों का पहले से यत्न नहीं करते और न उचित गोदामों का प्रबन्ध ही करते हैं। इसका यह परिणाम होता है कि उन्हें इसका शोक होता है कि उनकी पैदावार रक्खे-रक्खे अपने ही दबाव से नष्ट हो जाती है। कोआपरेटिव संस्थायें भले प्रकार ऐसे गोदाम बना सकती हैं या मंडियों में किराये पर ले सकती हैं, अपने

मेम्बरों के गुड़ वहाँ रख सकती हैं, स्टाक के हिसाब से रुपया भी पेशगी दे सकती हैं और इस प्रकार गुड़ बनानेवालों को उससे अधिक मूल्य पाने में सहायता कर सकती हैं जितना उस समय मिलता है जब ईख का मौसम नहीं होता।

भारत-सरकार के एग्रीकल्चरल मार्केटिंग एडवाइज़र ने गुड़ के क़िस्मबन्दी नियमों को प्रकाशित किया है। चूँकि ईख की काश्त करनेवाले बाज़ार में थोड़ा-थोड़ा गुड़ बेचने के लिए ले जाते हैं। इसलिए गुड़ की क़िस्मबन्दी करना व्यावहारिक रूप से कठिन है। इसके अतिरिक्त ईख का हर काश्त करनेवाला प्रायः एक ही क़िस्म का गुड़ बनाता है, इसलिए उसकी क़िस्मबन्दी करने में अधिक गुंजाइश नहीं है। क़िस्मबन्दी नियमों से काश्त करनेवालों को लाभ पहुँचाने के लिए उनका सहयोग के आधार पर संगठन किया जाना आवश्यक है। वे लोग अपना-अपना माल सोसाइटी के दफ़्तर में जमा कर दें और यहाँ पर उस माल की क़िस्मबन्दी हो। वह माल इकट्ठा करके रखा जाय और उसे उचित दामों पर बेचा जाय—जिस प्रकार का गुड़ हर मेम्बर ने दिया हो उसी के अनुसार उसे उसकी क़ीमत मिले।

सन् १९३८ ई० से जब से गुड़-सुधार-योजना चलाई गई तब से गुड़ की संख्या और क़िस्म में और अच्छे प्रकार के कोल्हुओं के और विशेष तौर से सुल्तान के प्रयोग से उचित भट्ठियों के बनाने से और भिन्न-भिन्न प्रकार से रस को साफ़ करनेवाली चीज़ों जैसे एक्टीवेटेड कार्बन, देवला और सक्लाई इत्यादि के प्रसार से बहुत उन्नति हुई है। कोआपरेटिव विभाग ने क़रीब १,००० उन्नतिशील कोल्हू सोसाइटियों को दिये हैं। इस बात का भी गुड़-सुधार के अमलों-द्वारा प्रयत्न किया गया है कि काश्त करनेवालों का माल बेच दिया जाय ताकि उन्नतिशील माल के और अच्छे दाम मिल सकें। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि इस काम में उद्योग-धंधा के विभाग ने जिसके अधीन गुड़-सुधार-योजना चल रही है सहयोगी तरीक़े का अधिकाधिक प्रयोग किया है। और यह ठीक भी है क्योंकि गुड़ के धन्धे की तरह कोई और घरेलू धंधा ऐसा नहीं है जिसमें सहयोगी तरीके का प्रयोग इतना अधिक किया जा सके। बनारस, ग़ाज़ीपुर, बलिया, कानपुर, फ़र्रुख़ाबाद, बरेली, मुरादाबाद, लखनऊ, नैनीताल और मेरठ के ज़िलों में आजकल गुड़ में सुधार करने और उसे बेचनेवाली एक-एक दर्जन सोसाइटियाँ काम कर रही हैं। इनमें से बहुत-सी जगहों में सहयोगी आढ़त की दूकानें भी जो सहकारी गुड़ व्यापारमंडल के नाम से मशहूर हैं और जो इन सोसाइटियों से सम्बन्धित हैं, मंडियों में खोल दी गई हैं। यह भी ख़बर मिली है कि इन्स्पेक्टरों और सुपरवाइज़रों के गुड़ के अमलों ने भी जिसे सहयोगी सिद्धान्तों और काम में शिक्षा दी गई है, गुड़-सम्बन्धी प्रारम्भिक सोसाइटियों के संगठन का काम शुरू कर दिया है ताकि इसी आधार पर आगे चलकर इस प्रकार की ज़िला सोसाइटियों का भी संगठन किया जा सके। कुछ ज़िलों में जिसमें ग़ाज़ीपुर जहाँ ५९ आरम्भिक सोसाइटियाँ हैं उल्लेखनीय हैं, पहले से ही ऐसी आरम्भिक सोसाइटियाँ बन गई हैं।

मिसाल के तौर पर बनारस की गुड़ में सुधार करने और बेचनेवाली सोसाइटी में ६३ व्यक्ति और ४० से ऊपर प्रारम्भिक सोसाइटियाँ-मेम्बर हैं। सोसाइटी की पूँजी २,७०० रुपया है। सन् १९४०-४१ ई० के दौरान में इसे ४२६ रु० का मुनाफ़ा हुआ। मेम्बरों को उन्नतिशील गुड़ के बेचने में सहायता देने के लिए इस सोसाइटी ने मंडी में एक सहयोगी आढ़त की दूकान खोल रक्खी है। इस योजना के अधीन शिक्षा पाये हुए सुपरवाइज़रों, विज्ञान-शिक्षकों और अवैतनिक काम करनेवालों की सहायता से गाँवों में निम्नलिखित उन्नति हुई है :—

१. उन्नतिशील गुड़ की मात्रा जो तैयार हुई, १२,७०० मन।

२. गुड़ की मात्रा जो आढ़त-द्वारा बेची गई, १,४९७ मन।

३. कोल्हुओं की संख्या जो लोगों को दिये गये, ७६।

४. भट्ठियों की संख्या जो बनाई गई, ९११।

पिछले वर्ष कानपुर के सहकारी गुड़-व्यापार-मंडल ने पक्की आढ़त का काम आरम्भ किया। पहले ही साल में क़रीब ४ लाख रुपये का रोज़गार हुआ और इससे उसे क़रीब ५,००० रु० का कमीशन मिला।

लेकिन अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है। देहातों में अब भी बहुत-सी ऐसी जगहें हैं जहाँ ईख बहुत ज़्यादा बोई जाती है लेकिन आमद-रफ़्त के साधारण साधन न होने के कारण उन्हें कारख़ानों में नहीं भेजा जा सकता। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कारख़ानों में आवश्यकता से अधिक ईख पहुँच जाती है। ऐसा विशेष तौर से पिछले वर्ष हुआ था, जब ईख बहुत बच गई थी। इसलिए गुड़-सुधार-योजना में काम करने का और उसके सुधार और उसे बेचने के कार्यक्रम में सहयोगी सोसाइटियों से अधिक से अधिक लाभ उठाने का बहुत बड़ा क्षेत्र है।

चीनी और गुड़ का धन्धा

चीनी-व्यवसाय के इतिहास में १९३०-३१ ई० का वर्ष बड़ा महत्त्वपूर्ण था। संरक्षण के प्रश्न पर विचार करने के लिए इसी साल एक टैरिफ़ बोर्ड नियुक्त किया गया। अप्रैल १९३२ ई० में चीनी-व्यवसाय को १५ वर्ष के लिए संरक्षण प्रदान किया गया। उसी समय से इस व्यवसाय की उन्नति बड़ी तेज़ी के साथ होने लगी। वास्तव में हम कह सकते हैं कि संरक्षण के फलस्वरूप चीनी-व्यवसाय में क्रांति उपस्थित हो गई। जो भारत १९३१-३२ ई० तक मुख्यतः देश के बाहर से आनेवाली चीनी पर निर्भर करता था, चीनी के उत्पादन में उसका संसार भर में पहला नम्बर है। साल में देश को जितनी चीनी की आवश्यकता होती है उससे अधिक अब यहाँ पैदा की जाती है। इस समय भारत के अन्दर चीनी की जो फ़ैक्टरियाँ मौजूद हैं वे साधारण अवस्था में १५ लाख टन सफ़ेद चीनी साल भर में तैयार कर सकती हैं। इस समय देश के अन्दर लगभग १० लाख टन चीनी की खपत होती है। इस प्रकार खपत से उत्पादन डचौढ़ा हो सकता है बशर्ते कि सब फ़ैक्टरियाँ ठीक से चलती रहें, किसी के काम में बाधा न पड़े।

व्यवसाय की तीव्र गति से होनेवाली उन्नति का ही परिणाम है कि चीनी का आयात अब बन्द हो गया है। १९२९-३० ई० में क़रीब ९,००,००० टन चीनी—जिसका मूल्य लगभग १६ करोड़ रुपया होता है—बाहर से आई थी। अब भारत चीनी के लिए विदेशों पर आश्रित नहीं है, वह पूर्ण स्वतंत्र बन गया है।

१९३१-३२ ई० में हमारे देश के अन्दर कुल ३२ फ़ैक्टरियाँ थीं। १९४०-४१ ई० में उनकी संख्या बढ़कर १४७ हो गई है। इसी प्रकार चीनी के उत्पादन में भी बड़ी उन्नति हुई है। १९३१-३२ ई० में कुल फ़ैक्टरियों ने मिलकर १,५८,००० टन चीनी तैयार की थी जब कि १९३९-४० ई० में १२,००,००० टन तथा १९४०-४१ ई० में ८,७५,००० टन से अधिक चीनी तैयार हुई। १९३१-३२ ई० में जहाँ ४,००,००० टन से अधिक चीनी बाहर से मँगाई गई थी वहाँ १९४०-४१ ई० में सिर्फ़ ३५,००० टन चीनी ही बाहर से आई।

१९३६-३७ ई० में पहली बार भारत में चीनी का उत्पादन अनुमानित खपत से बढ़ गया। २,००,००० टन से अधिक चीनी बच गई और अगले साल के लिए जमा हो गई। उसके बाद ही चीनी का उत्पादन गिरने लगा कारण कि एक तो ईख के लिए खेती-बोई जानेवाली ज़मीन कम कर दी गई, दूसरे फ़सल भी अच्छी नहीं हुई। १९३८-३९ ई० में उत्पादन इतना घट गया कि लगभग ३,००,००० टन चीनी बाहर से मँगानी पड़ी। १९३९-४० ई० में ईख की फ़सल के बहुत बढ़ जाने से क़रीब १३,७३,००० टन चीनी तैयार हो गई। इसका फिर यही परिणाम हुआ कि ४,००,००० टन चीनी की खपत उस साल न हो सकी और अगले साल के लिए पहले से ही जमा हो गई। भारत के चीनी-व्यवसाय के इतिहास में किसी भी वर्ष इतनी अधिक चीनी की बचत नहीं हुई थी। वर्तमान स्थिति को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि १९४१-४२ ई० में बचत में और भी वृद्धि हो जायगी।

यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारे देश में अब पहले की अपेक्षा बहुत बढ़िया दर्जे की चीनी बनने लगी है। वह जावा की चीनी का मुक़ाबिला करने लगी है। अतः विदेशों में भेजने के सर्वथा उपयुक्त है। यदि कोई समुचित योजना बना ली जाय तो निर्दिष्ट परिमाण में प्रतिवर्ष चीनी किसी बाहरी देश को पहुँचाई जा सकती है।

यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि भारत के अन्दर ईख की जितनी खेती की जाती है उतनी संसार के और किसी भी देश में नहीं। १९३०-३१ ई० में क़रीब ३० लाख एकड़ भूमि में ईख की खेती की गई थी। उसके बाद तो और भी विस्तार हुआ। १९३६-३७ ई० में ४५ लाख एकड़ से भी अधिक ज़मीन में ईख बोई गई थी। १९३९-४० ई० में ३७,०५,००० एकड़ तथा १९४०-४१ ई० में लगभग ४२,१५,००० एकड़ भूमि ईख की पैदावार के लिए लगाई गई। ईख की क़िस्म में भी सुधार हुआ है। बढ़िया क़िस्म की ईख की खेती का भी विस्तार हुआ है। प्रतिएकड़ पीछे ईख की पैदावार १२·३ से बढ़कर १५·६ टन हो गई है। किन्तु वास्तव में जावा आदि देशों के मुक़ाबिले में यह पैदावार थोड़ी ही है।

गुड़ के व्यवसाय की चर्चा किये बिना चीनी के व्यवसाय का वर्णन पूरा नहीं कहा जा सकता। जितनी ईख सफ़ेद चीनी तैयार करनेवाली फ़ैक्टरियों में ख़र्च होती है उसकी चार गुनी ईख गुड़ बनाने के काम में लाई जाती है। दूसरे शब्दों में ईख की सालाना पैदावार का लगभग ६५ प्रतिशत भाग गुड़ के उत्पादन में लग जाता है। पिछले कुछ वर्षों के अन्दर गुड़ का सालाना उत्पादन २७,००,००० टन से ४२,००,००० टन तक होता रहा है जब कि चीनी की पैदावार ६,००,००० टन से १३,००,००० टन तक रही है। प्रतिव्यक्ति पीछे गुड़ की खपत लगभग २० पौंड और चीनी की खपत ६ से ७·५ पौंड होती है। साल में जितना गुड़ पैदा किया जाता है उतना उसी साल ख़र्च हो जाता है। न तो उसका निर्यात होता है और न अगले साल के लिए ही बच रहता है।

आगे यह दिखाया जाता है कि संसार के ९ देशों में प्रतिव्यक्ति पीछे कितनी चीनी ख़र्च होती है। ये आँकड़े १ सितम्बर १९३८ ई० से आरम्भ होनेवाले तथा ३१ अगस्त

१९३९ ई० को समाप्त होनेवाले वर्ष के आधार पर दिये गये हैं :—

संयुक्तराज्य अमरीका	१०३ पौंड
ब्रिटेन	११२ पौंड
जावा	११ पौंड
डेनमार्क	१२८ पौंड
मिस्र	२० पौंड
जापान	२९ पौंड
आस्ट्रेलिया	११४ पौंड
न्यूज़ीलैंड	११५ पौंड
भारत (गुड़ लेकर)	२३ पौंड

इन आँकड़ों से यह प्रकट होता है कि हमारे देश में चीनी की खपत बढ़ाने की बड़ी गुंजाइश है किन्तु इसके लिए चीनी का मूल्य घटाना जरूरी है। खपत के अतिरिक्त जो चीनी बच रहे उसका निर्यात पास-पड़ोस के देशों में जैसे—अफ़ग़ानिस्तान, तिब्बत, नैपाल, बरमा, सीलोन तथा ब्रिटेन—किया जा सकता है।

चीनी का व्यवसाय भारत का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा राष्ट्रीय व्यवसाय है। इस व्यवसाय में, ३२,००,००,००० रुपये की पूँजी लगी हुई है। इसमें ३,००० के लगभग ग्रेजुएट काम में लगे हुए हैं और करीब १,२५,००० मज़दूर काम करते हैं।

ऐसे महान् उद्योग की उन्नति और समृद्धि के लिए प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकार मज़दूर-नेताओं, राजनीतिज्ञों, कृषकों और औद्योगिकों—सबकी सहानुभूति होनी चाहिए। आशा की जाती है कि केन्द्रीय सलाहकारी कौंसिल जिसकी स्थापना की घोषणा हाल में वाणिज्य सदस्य ने की थी, उन अनेक जटिल समस्याओं को हल करने में सहायता देगी जो आज इस व्यवसाय के सम्मुख उपस्थित है।

—'इंडियन फार्मिंग' से

भारत के ग्राम

लेखक, श्रीयुत भागवत मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०

अखिल विश्व के प्रेम-निधान।
हे भारत के ग्राम महान॥

तेरा जीवन स्वास्थ्यपूर्ण है, रुचिर मनोहर अति पावन।
लेश नहीं कृत्रिमता का है—सब प्रकार है मनभावन॥

हो तुम शाश्वत स्वर्ग-समान,
हे भारत के ग्राम महान॥ १॥

कहीं बैल हैं जोत रहे हल, गाय कहीं पर चरती हैं।
कहीं लड़कियाँ गाने गाकर, हृदय मोद से भरती हैं॥

हो तुम कान्ति-सदन अम्लान।
हे भारत के ग्राम महान॥२॥

अबलायें फिरतीं मदमाती, मलिन वसन धारण कर-कर।
देख पुरुष अनजान गली में, हट जातीं लज्जित होकर॥

हैं दारिद पर शील-निधान।
हे भारत के ग्राम महान॥३॥

जीव-जगत को अन्न-दान कर, करते हो उपकार अनन्त।
ऋतुएँ सब हैं स्वागत करतीं, बसता तुममें सदा वसन्त॥

तुम हो सुखद और छविमान।
हे भारत के ग्राम महान॥४॥

गिरधर ने अपनाया तुमको, मुरली-तान सुना करके।
मान बढ़ाया गांधी ने तब, जीवन-ज्योति जगा करके॥

क्यों न करें हम तव सम्मान।
हे भारत के ग्राम महान॥५॥

बल पौरुष अभिमान भरे हैं, कृषकों के प्रमुदित मन में।
जग का पूर्ण रहस्य छिपा है, इनके ही सूखे तन में॥

कृषक तुम्हारे जीवन-प्रान।
हे भारत के ग्राम महान॥६॥

है निर्भर उत्थान देश का, ग्राम तुम्हारी उन्नति पर।
दूर करो दुख मातृभूमि का, प्रेम-भाव को धारण कर॥

होवे सिकसित देशोद्यान।
हे भारत के ग्राम महान॥७॥

दूध के उत्पादन का धन्धा

लेखक, महामना पंडित मदनमोहन मालवीय

भारत की अधिकांश जनता कृषि पर निर्भर करती है। वह आपाद-मस्तक ग़रीबी में डूबी हुई है। किन्तु जैसा कि साइमन कमीशन ने लिखा है उसकी ग़रीबी की गहराई का अंदाज़ लगाना आसान नहीं है। दुर्भाग्य की बात यह है कि वह किसान जो अनाज पैदा करता है, अपना पेट नहीं भर पाता। उसे हीन से हीन श्रेणी के भोजन से ही सन्तोष करना पड़ता है। श्री एस० के० आयंगर ने अपनी पुस्तक 'इंडियन रूरल इकानामिक्स' में लिखा है कि देहात की जनता भूख को मारने की कोशिश करती है, वह शायद ही कभी यह ख्याल करती हो कि जो कुछ खा रहे हैं वह पौष्टिक तथा स्वास्थ्यप्रद है। बम्बई अहाते के कृषि के भूतपूर्व डाइरेक्टर डा० हैरोल्ड मैन ने अवकाश ग्रहण करने के कुछ ही पहले कहा था कि "इस देश के लोगों को, सभी सामाजिक कार्य-कर्त्ताओं को तथा उनको जिनके हाथ में शासन का सूत्र है मेरा अन्तिम सन्देश यह है कि ऐसे उपाय सोच निकालें जिनके द्वारा किसानों को पर्याप्त भोजन मिल सके।"

मिश्रित कृषि-व्यवस्था

किसानों की आर्थिक अवस्था को सुधारने के लिए अनेक उपाय सुझाये गये हैं। केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा के भूतपूर्व सदस्य चौधरी मुख्तारसिंह ने अपनी पुस्तक 'रूरल इंडिया' (ग्रामीण भारत) में सामहिक तथा मिश्रित कृषि-व्यवस्था की सिफ़ारिश की है। मिश्रित कृषि-व्यवस्था से अभिप्राय है कि कृषि के साथ डेरी की भी व्यवस्था की जाय। इस प्रणाली के अन्दर फ़सल उगाने के साथ ही साथ पशुओं से दूध आदि भी पैदा किया जाता है। इससे कई लाभ हैं। एक लाभ यह है कि डेरी की पैदावार का उपयोग किया जा सकता है। दूसरे सर्वोत्तम प्रकार की खाद प्रचुर मात्रा में सुलभ रहती है। तीसरे किसान तथा उसके परिवार के लोगों के लिए पूरा काम निकल आयेगा, वे बेकार न बैठे रहेंगे। चौथे, दूध के उत्पादन तथा उपयोग में बहुत वृद्धि हो जायेगी। यह अंतिम बात राष्ट्र के स्वास्थ्य तथा कल्याण के लिए बहुत आवश्यक है।

भारत-सरकार के ढोरों के विशेषज्ञ कर्नल सर आर्थर आलिवर ने अवकाश ग्रहण करने के अवसर पर यह मत प्रकट किया था कि अगर भारतीय कृषि से पूरा-पूरा लाभ उठाना है तो यह आवश्यक है कि दूध का उत्पादन बढ़ाया जाय। मिश्रित कृषि-व्यवस्था के अंग के रूप में दूध बहुत सस्ते में पैदा किया जा सकता है और वह बहुत ही लाभकर घरेलू उद्योग सिद्ध हो सकता है। वास्तव में खेतों की पैदावार तथा उर्वरता को बढ़ाने के लिए प्रत्येक किसान को अपनी ज़मीन का काफ़ी हिस्सा चारा की पैदावार के लिए लगा देना चाहिए।

भोज्य पदार्थ के रूप में दूध की महत्ता के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा जाय कम है। हज़ारों वर्ष पूर्व भारत के प्राचीन ऋषियों ने दूध के पौष्टिक मूल्य को समझ लिया था। दूध तथा मक्खन का इस्तेमाल ग़रीब और अमीर दोनों श्रेणी के लोगों में काफ़ी होता था। पिछले ५० वर्षों के दर्मियान वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने यह प्रकट कर दिया है कि आधुनिक सभ्यता की अवस्था में दूध भोजन का आवश्यक अंग क्यों बन गया है। एक अमरीकन लेखक का कथन है कि दूध के बिना मनुष्य के भोजन में कुछ आवश्यक पदार्थों का विशेषतः विटामिन, कैलशियम तथा प्रोटीन का—अभाव रहेगा और वर्तमान सभ्यता का अस्तित्व ही नहीं रह जायगा।

दूध सर्वोपरि है

भारत-सरकार के हाट-व्यवस्था के सलाहकार ने हाल में अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि मनुष्य को जितनी ऐसी चीज़ें अब तक ज्ञात हैं जिनपर वह पूर्णतः निर्भर कर सकता है उनमें दूध सर्वोपरि है। गर्भवती माता, शिशु, बढ़ते हुए बच्चे, जवान और बूढ़े सबके लिए यह एक आदर्श भोजन है। एक सेर दूध, आध सेर मांस, ९ अंडे तथा सेर भर मछली के बराबर शक्तिप्रद होता है। अव्वल दर्जे का प्रोटीन मौजूद रहने से शाकाहारियों के लिए खास महत्त्व रखता है। विटामिन विषय के सर्वोत्तम अधिकारियों का कहना है कि विभिन्न पशुओं के दूध में प्रायः सभी तरह के विटामिन और विशेषकर विटामिन 'ए' 'डी' तथा 'ई' पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहते हैं। गाय के दूध में तो ये तीनों विटामिन और भी अधिक परिमाण में वर्तमान रहते हैं। भारत में इस समय दूध का जितना उत्पादन होता है उसके अनुसार हर व्यक्ति पीछे ६ औंस से कुछ ही अधिक दूध का ख़र्च होता है। अन्य देशों में लोग इससे पाँच गुना से अधिक दूध इस्तेमाल करते हैं। भारत में ग़रीबों को तो ६ औंस भी नहीं मिलता और बहुत-से लोग बिना दूध के ही रहते हैं। इस समय हमारे देश में प्रतिवर्ष १८० करोड़ रु० मूल्य का दूध पैदा किया जाता है।

बच्चों के भोजन में दूध सम्मिलित कर देने से उनके स्वास्थ्य तथा शारीरिक गठन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। स्काटलैंड में २०,००० स्कूली बच्चों पर एक प्रयोग किया गया है और उससे यह प्रमाणित हो गया है कि दूध बच्चों के विकास में योग देता है।

शिमला म्युनिसिपैलिटी की मुफ्त में दूध-वितरण करने की योजना का उद्घाटन करते हुए लार्ड लिनलिथगो ने कहा था कि यह अविवादग्रस्त एक वैज्ञानिक तथ्य है कि बढ़ते हुए बच्चों के लिए दूध बहुत आवश्यक है। इस बात में भी सन्देह नहीं किया जा सकता कि प्रारम्भिक जीवन में अच्छा पौष्टिक पदार्थ ग्रहण करना आवश्यक होता है क्योंकि बाद को चलकर शरीर मज़बूत होता है।

बच्चों को दूध पिलाने की योजना

स्कूल के बच्चों को दूध पिलाने की योजना इँगलैण्ड में अक्टूबर १९३९ ई० से काम में लाई जा रही है। शिक्षा-बोर्ड से सहायता पानेवाले तथा उसके द्वारा मान्य ठहराये गये सभी स्कूलों में यह योजना लागू है। बच्चों को प्रतिदिन एक तिहाई पिन्ट दूध आधे दाम पर दिया जाता है। इस योजना का आधा खर्च सरकार तथा आधा स्थानीय अधिकारी सहन करते हैं। जबसे यह योजना कार्यान्वित की गई है, स्कूल के बच्चों पर खर्च होनेवाले दूध में वृद्धि हुई है।

डा० राइट ने हिसाब लगाकर बतलाया है कि भारत में हर व्यक्ति पीछे ७ औंस दूध खर्च होता है जब कि अन्य सभ्य देशों में प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति पीछे १० से ६३ औंस तक खर्च होता है। डा० राइट ने बतलाया है कि भारत में प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति पीछे १५ औंस दूध की ज़रूरत है और इसके लिए यह आवश्यक है कि दूध के वर्तमान उत्पादन को दुगना कर दिया जाय। सर राबर्ट मैक कैरीजन ने १९२८ ई० में लिखा था कि वर्तमान समय में जनता के स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक आवश्यक काम यह है कि दूध का अधिक उत्पादन किया जाय और जो दूध पैदा किया जाय वह इस समय से अधिक विशुद्ध हो। खेद की बात है कि ऐसी स्पष्ट सलाहों के होते हुए भी हमारे देश में दूध के उत्पादन और उपयोग में वृद्धि करने के लिए प्रायः कुछ भी प्रयत्न नहीं किया गया है।

मांस न खाया जाय

दूध के उत्पादन को बढ़ाने के लिए मांस खाना छोड़ देना चाहिए। अमरीका के प्रसिद्ध शरीर-विज्ञानवेत्ता डा० केलाग ने, जिन्होंने ५० वर्ष से भी ज़्यादा समय तक मांस न खाने का प्रचार किया है, लिखा है कि गोश्त में मनुष्य की शारीरिक शक्ति या स्वास्थ्य के लिए कोई भी ऐसी चीज़ नहीं है जो आवश्यक हो और जो अन्न तथा शाक के भोजन में सुलभ न हो। अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक भोजन कमीशन ने गत महायुद्ध के दर्मियान पेरिस में जो बैठक की थी उसमें यह निर्णय किया गया था कि गोश्त का रासन बाँधना अनावश्यक है क्योंकि शरीर के लिए उसकी कोई अनिवार्य आवश्यकता नहीं है और मांस मिलनेवाला प्रोटीन दूध, पनीर तथा अण्डों में भी प्राप्त होता है। मैक-कोलम का कथन है कि हम मांस का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर सकते हैं। इससे हमारे शरीर पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ सकता। डा० ग्राहम लक ने लिखा है कि यदि अन्य खाद्य पदार्थों के साथ दूध भी ग्रहण किया जाय तो मांस की कुछ भी आवश्यकता नहीं रह जाती।

मांस का भोजन भारतीय जलवायु तथा परिस्थितियों को देखते हुए और भी अधिक अनुपयुक्त है। बार-बार यह बात दुहराई गई है कि अनिरामिष भोजन—चाहे वह मांस का हो या अण्डे और मछली का—हानिकर होता है और उससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। मानव-जाति का हित इसी में है कि भोजन से मछली तथा मांस का बहिष्कार किया जाय और उसकी जगह दूध को दिया जाय।

कठिनाइयाँ

दूध के कम उत्पादन के मुख्य मुख्य कारण संक्षेप में ये हैं :—

(१) दूध देनेवाले पशुओं की हत्या,

(२) अच्छी नस्ल के साँड़ों की कमी,

(३) गउओं की चिकित्सा के लिए अपर्याप्त व्यवस्था,

(४) चराई के लिए पर्याप्त भूमि का अभाव।

इन कारणों को दूर करने की आवश्यकता है। यदि प्रान्तीय सरकारें, असार्वजनिक संस्थायें तथा किसान लोग ऊपर लिखी हुई सिफ़ारिशों के महत्त्व को समझ लें तो उनको कार्यरूप में परिणत करने में अधिक विलम्ब नहीं लग सकता।

—'भारत' से

संसार का संक्षिप्त घटनाचक्र

लेखक, रायबहादुर पण्डित शुकदेवबिहारी मिश्र

यकतीस जनवरी भर इन ३२ दिनों में हमारा सांसारिक घटनाचक्र साधारणी मंद्रता के साथ चला, बहुत तीव्रता से नहीं। जापान को जो प्राथमिक विजय अमरीका और बिर्तानिया के कुछ मोर्चों पर धोखेबाज़ी तथा भाग्यवश मिली थी, वह बहुत आगे नहीं बढ़ी। अमरीका के फिलीपाइन द्वीपसमूह का मुख्य टापू लुज़ान है, जिसकी राजधानी मैनिला पर जापानी अधिकार हो गया है। किन्तु फिर भी अमरीकन स्थानीय सेनापति जनरल आर्थर महोदय थोड़ी ही सी फ़ौज के होते हुए भी जापानियों से ख़ासा युद्ध कर रहे हैं तथा कई बार उन्हें भारी हानि पहुँचा चुके हैं। आशा है कि शीघ्र ही उन्हें

लन्दन में रूस और जेकोस्लोवाकिया के बीच होनेवाले समझौते का दृश्य।

जनरल चांगकाई शेक।

स्वदेश से कुमक भी मिल जायगी, किन्तु यदि ऐसा न हुआ, तो भारी जापानी सेना से चिरकालपर्यन्त लोहा लेना उनकी छोटी सेना के लिए कठिन भी हो सकता है। मलय-प्रान्त में बिर्तानिया की स्थानीय शक्ति थोड़ी है विशेषतया आकाशी। वायुदल की जापानी स्थानीय प्रबलता के कारण लघुकाय सरकारी सेना भारी जापानी दल से अब तक जी खोलकर लड़ भी नहीं पाई है। फल यह हुआ कि मलय देश का एक बड़ा भाग जापानी अधिकार में आगया है तथा सिंगापुर के सौ डेढ़ सौ मीलों पर ही थल युद्ध होने लगा है। अभी तक सरकारी दलने जमकर युद्ध नहीं किया है। केवल पीछे हटते हुए तथा अपना घिर जाना बचाते हुए यथासाध्य भारी से भारी हानि शत्रु को पहुँचाई है। सुना जाता है कि हाल ही में तीन बैटिल शिप्स (बड़े से बड़े युद्धपोत) सरकार या अमरीका के सिंगापुर पहुँच चुके हैं। पहले ऐसा समझ पड़ने लगा था कि स्थानीय सेना की कमी के कारण शायद सिंगापुर का बचाना भी कठिन हो जावे, किन्तु जब तक सरकार उसकी रक्षा में दृढ़ता न समझती, तब तक नये भारी जलपोत वहाँ ले जाकर उन जहाज़ों को भी जोखिम में क्यों डालती? इससे भी समझ पड़ता है कि उसे सुरक्षित मानना चाहिए। जापान ने बोर्नियो पर भी आक्रमण किया है तथा सुमात्रा और सिलेबीज़ पर भी करना चाहता है। उधर जनरल वावेल महोदय मित्रशक्तियों
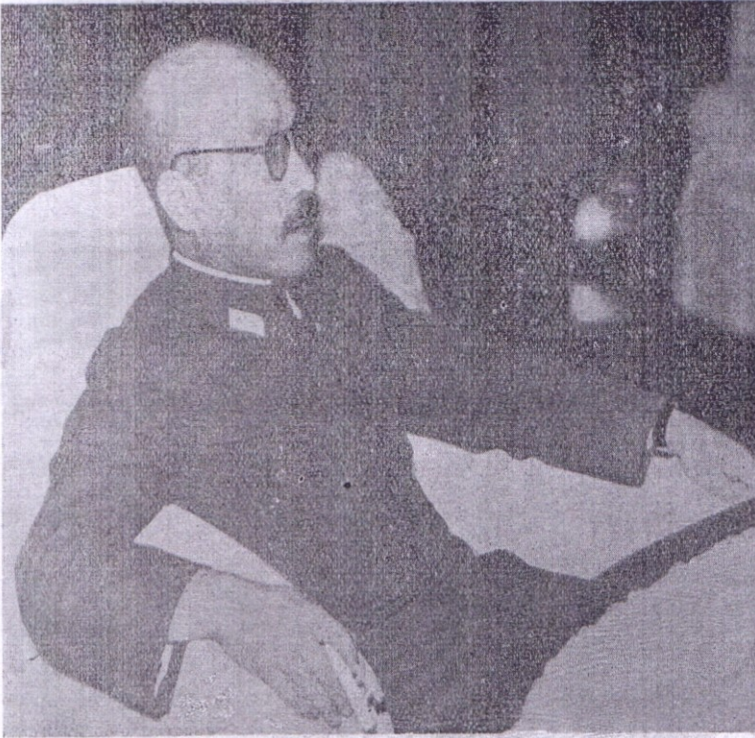
जापान के प्रधान मन्त्री जनरल टोजो।

की सारी सेनाओं के इस ओर कमांडर नियत हुए हैं। आप ही ने उत्तरी अफ़्रीका में इटली को हराया था। आपने डच पूर्वी इंडीज़ को ही मुख्य निवासस्थान बनाया है। इससे प्रकट है कि उसे आप सुदृढ़ समझते हैं। इधर बर्मा में कुछ चीनी दल गुरिला-युद्ध-प्रणाली से काम करने तथा बर्मावाली चीनी सड़क की रक्षा करने को आया है। अभी इस ओर से धावा बोलने का सरकारी इरादा नहीं समझ पड़ता, वरन् रक्षामात्र का डौल दिखता है। दक्षिणी बर्मा की ओर से जापानी धावा भी हो रहा है किन्तु अभी इसका पूरा आकार-प्रकार अनिश्चित है।

चीनी लोगों ने चांगशा के युद्ध में जापानियों को करारी पराजय देकर उनकी हताहत संख्या प्रायः पैंतालीस हज़ार तक पहुँचाई है। उसके आगे भी बढ़कर उन्होंने कुछ सफलता प्राप्त की है। चीनी युद्ध इस समय ख़ासी प्रबलता से हो रहा है। चीनियों की इच्छा है कि सुदूर प्राची का युद्ध मित्रशक्तियाँ विशेष बल के साथ चलावें। आस्ट्रेलिया के चित्त में जापानी धावे का विचार भी उठ रहा है और सरकारी युद्धसम्बन्धी ढिलाई समझकर वह अमरीका से भी सहायता माँगने का नया व्यवहार खोलना चाहती है, ऐसी भी हवा उड़ी थी। इसमें कुछ सार नहीं समझ पड़ता। अभी मलय में आस्ट्रेलियन सैनिक भारतीयों के साथ होकर युद्ध कर ही रहे हैं। बर्मा के महामन्त्री यूसा महोदय प्रेम-प्रदर्शनार्थ ब्रिटेन को गये थे। उनको आशा थी कि बात करके वे स्वदेश (बर्मा) के लिए डोमीनियन राज्य प्राप्त कर सकेंगे। वहाँ उन्हें इस विषय पर निराशा समझ पड़ी जिससे उन्होंने सरकार के प्रतिकूल कुछ कथन किये। कहा जाता है कि उन्होंने यहाँ तक कह डाला कि बर्मा के लिए बौद्ध-धर्म के नाते जापान बिर्तानिया के सामने अधिक प्रेम-पात्र हो सकता है। इस कथन का निश्चय अभी तक नहीं है। कम से कम इतना कहा जाता है कि उनके बर्मा पलटने से जापानी मामलों में सरकार के प्रतिकूल कोई गोलमाल सम्भव था। इसलिए वे सरकार बिर्तानिया के द्वारा अमरीका में ही रोक लिये गये हैं तथा बर्मा में दूसरा मंत्रिमंडल बन गया है। कुछ बर्मावालों का इस बात पर नाराज़ होना सम्भव है। फिर भी समझा जाता है कि युद्ध देश में ही जारी होने से शायद वे कोई गड़बड़ न करें। जब तक बर्मा और सिंगापुर सुदृढ़ हैं, तब तक भारत पर जोखिम का खटका नहीं है। हाँ, कहीं थोड़े बहुत वायुयानों-द्वारा आक्रमण आजकल सदैव सम्भव रहते हैं।

अमरीका युद्ध-सामान के लिए अरबों-खरबों रुपये ख़र्च करके उत्तमोत्तम प्रबन्ध करना चाहती है। वहाँ के सारे राजनीतिक दल अब राष्ट्रपति की पूरी सहायता कर रहे हैं। २६ रियासतों ने मिलकर पूर्ण शक्ति के साथ जर्मनों, जापानियों आदि से लड़ने तथा अकेले होकर कोई सन्धि न करने का मेल किया है। इन शक्तियों में अमरीका, बिर्तानिया, रूस, चीन, भारत आदि सभी आगये हैं। यह मेल अभूतपूर्व है तथा इससे भविष्य में आशा भी बहुत है। अमरीका ने जापानी वायु तथा जलदल को इन दिनों हानि

रूस की नई युद्धसमिति के सदस्य

जनरल सर आर्चीवाल्ड वावेल प्रशान्त महासागर के जल, स्थल और नभ के प्रधान सेनाध्यक्ष ।

को बहुत पहुँचाई है। डच-पनडुब्बियों ने भी ऐसा ही किया है। दक्षिणी अमरीका की सभी शक्तियाँ मिलकर युद्ध के सम्बन्ध में संयुक्त रियासत अमरीका को बहुत कुछ सहायता देने का विचार एक कान्फ़रेंस करके कर रही हैं। सबका एक मत है। केवल अर्जेंटाइन अभी कुछ आगा पीछा करती है। किन्तु उसपर भी संयुक्त रियासत एवं बिर्तानिया का ऐसा आर्थिक दबाव है कि अन्त में उसे भी शायद मानना ही पड़े। आजकल संसार में अदृष्ट शासन-प्रणाली का चलन बहुत चल रहा है। इसका प्रयोजन यह है कि कहने भर को तो कोई देश स्वतन्त्र माना जाता है, किन्तु वास्तव में आर्थिक अथवा अन्य प्रकार के दबाव उसपर ऐसे रहते हैं कि वह किसी अन्य शक्ति की इच्छा के प्रतिकूल जा नहीं सकता। कहते हैं कि संयुक्त रियासत अमरीका का आर्थिक दबाव बहुतसी रियासतों पर इसी प्रकार का है। अमरीका के युद्ध में कूद पड़ने से मित्रों की शक्ति बहुत बलवती हो गई है और यद्यपि अभी जापान की बहुत कुछ विजय हो रही है। तथापि साल दो साल के भीतर जब मित्रशक्तियों के पूर्ण बल की पेंग दृढ़ हो जावेगी, तब जर्मनी और जापान के दोनों के लिए बहुत ही बुरा दिन उपस्थित हो जावेगा।

सरकार ने आजकल उत्तरी अफ़्रीका में जर्मनी और इटली को करारी पराजय दी है। प्रायः ३२,००० शत्रु हताहत संख्या में आ चुके हैं। लिबिया तथा सिरोनिका पर सरकारी अधिकार भी हो चुका है। इटली की शक्ति नगण्य-सी हो गई है। उसकी प्रायः तीन लाख सेना हताहत या क़ैद में आ[illegible]ी है, पाँच लाख यूनान तथा यूगोस्लाविया पर अधिकार रखने में लगी हुई है तथा प्रायः अन्य पाँच लाख रूसी युद्ध में संलग्न हैं। रूस में जर्मनी की हार बराबर हो रही है। मुजैस्क पर रूसी अधिकार हो गया है तथा खारकोव पर उनका आक्रमण चल रहा है। क्राइमिया में भी कर्च की ओर उनका अधिकार हो चुका है। समझा जाता है कि इधर तथा मास्काऊ के सामने भारी जर्मन-सेनायें घिर जाने के भय में हैं। अभी तक रूस की ओर ऐसा नहीं कहा जा सक[illegible] कि जर्मन पराजय ही हो चुकी है, किन्[illegible]ब जर्मनी उधर अपने बचाव भर में लगी [illegible]ा रूसियों के करारे धावे हो रहे हैं [illegible]यः दो महीनों तक उधर सख्त जाड़ा [illegible]ा जिसके रूसी तो अभ्यस्त हैं किन्तु जर्मन नहीं। इन्हीं दो-पौने दो महीनों में यदि रूसी ऐसी विजय पा लें कि जिससे जर्मन-दल ध्वस्तप्राय हो जावे तथा उनकी युद्ध-सामग्री का बृहदंश नष्ट हो जावे या छिन जावे, तो भविष्य के लिए पूर्ण विजय की आशा हो सकेगी। अब भी आशा इस बात की पूरी है, किन्तु उसके सफल होने का निश्चित रूप महीने-डेढ़ महीने में प्रकट होने लगेगा। फ़िनलैंडवालों ने भी रूस के प्रतिकूल जर्मनी का साथ युद्ध में दिया है, जिससे विजय की दशा में रूस उनपर भी प्रचंड कोप करेगा। अमरीका ने प्रायः दो महीने हुए तब फ़िनलैंड को रूस से सन्धि कर लेने की सलाह दी थी किन्तु उन्होंने न मानी। या तो इच्छा से न माना या जर्मनी के ऐसे दबाव में थे कि चंगुल से बाहर निकलना उनके लिए अशक्तता की बात थी। गत महायुद्ध के पूर्व फ़िनलैंड रूसी राज्य में सम्मिलित था। यदि रूसी जीते, जैसा कि देख पड़ रहा है, तो फ़िनलैंड का भी भविष्य उजला नहीं होगा।

उधर रूस और अफ़्रीका में करारी पराजय पाने से जर्मनी की बाहरी तथा आन्तरिक दोनों दशायें सन्देह में पड़ गई हैं। हिटलर स्वयं रूस में जाकर सेनापतित्व का काम कर रहा है, किन्तु अभी तक उसके लिए कोई मनमाना फल नहीं निकला है। इसलिए वह इस बात के प्रयत्न में है कि कहीं कोई भारी विजय प्राप्त करे जिससे जर्मनी का प्रभाव बहुत न बिगड़ने पावे। आजकल जैसे मित्र-शक्तियों के साथ २६ रियासतों की प्रेमपूर्ण सन्धि हुई है, वैसी ही जर्मनी, इटली और जापान ने की है। समझा जाता है कि आजकल जर्मनी किसी ओर धावा करना चाहती है। किस ओर ऐसा होगा, सो अभी अनुमान ही अनुमान है। कहा जाता है कि जैसे जापान ने साथ ही साथ कई स्थानों पर धावा किया है, वैसे ही जर्मनी भी योरोप में करना चाहती है। इसके लिए बिर्तानिया, जिब्राल्टर, टर्की, इराक़ आदि लक्ष्य हो सकते

हैं। किसी ओर अभी कुछ खुलाव तो खुला नहीं है, केवल गोरिंग महोदय जर्मनी की ओर से टर्की गये हैं। अवश्य कुछ तय करने का इरादा होगा। है तो वह अभी तक बिर्तानिया की ही ओर। देखना चाहिए कि किस ओर से क्या आरम्भ उठाया जाता है। बिर्तानिया पर का आक्रमण असम्भवप्राय समझ पड़ता है। जिब्राल्टर के लिए फ़्रांस और स्पेन की सहृदयता जर्मनी के लिए आवश्यक है। इन दिनों जर्मन-पराजयों के कारण इन दोनों देशों के रुख थोड़ा-बहुत फिरे हुए हैं। स्पेन ने अपनी कुछ फ़ौजें भी इन दिनों तोड़ दी हैं।

भारत में आजकल कांग्रेस आल इण्डिया वर्किंग कमेटी की बैठक वर्धा में हुई। वहाँ से वही मन्तव्य दृढ़ रहा जो बारदौली में पास हुआ था। उसका प्रयोजन यह है कि यदि सरकार भारतीय स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में कांग्रेस से मनमानी बात तय करे, तो कांग्रेस भी सच्चे जी से सरकार के हितार्थ युद्ध में कूद सकती है। महात्मा गांधी, डाक्टर राजेन्द्रनाथ तथा कुछ और नेताओं के विचार हर हालत में शान्ति-भंग के प्रतिकूल थे और हैं, किन्तु महात्मा ने कांग्रेस के उपर्युक्त विचार का समर्थन कर दिया है। उधर सर सप्रू आदि कई नरम दलवाले नेताओं ने भी सरकार के पास माँग भेजी है। अब तक सरकार जिन्ना आदि की माँगों के प्रतिकूल न जाने के विचार से ८ अगस्त १९४०वाले अपने कथन के आगे न बढ़ती थी तथा हिन्दुओं आदि को यह समझा रही थी कि उसका न मानना उनकी मूर्खता थी और उनकी बातें उन्हीं के प्रतिकूल थीं। अब ऐसा समझ पड़ता है कि सरकार फिर कोई नवीन घोषणा करनी चाहती है। महामन्त्री चर्चिल महोदय शायद कुछ कहें। जितनी माँग कांग्रेस की है वहाँ तक तो जाती हुई सरकार दिखती नहीं। कांग्रेस भी माँगती तो स्वतंत्रता है किन्तु डोमीनियन स्थिति के निश्चित वादे-

रूसी वायुसेना के दो सैनिक।

मात्र पर शायद राज़ी हो जावे। इस बात पर मुस्लिम लीग की मंज़ूरी है नहीं और सरकार भी निकट भविष्य में इसे मानती हुई दिखती नहीं। अतएव देखना चाहिए कि भारतीय प्रश्न का निर्णय अभी होता है या नहीं? यदि किसी भाँति नरम-गरम रूप में यह प्रश्न तय हो जाता, तो भारत में सरकार के प्रतिकूल जो वैमनस्यता कही जाती है वह मिट जाती तथा यहाँवाले सम्पत्तिवादियों अथच साम्यवादियों के भी टंटे दूर हो जाते। आशा अभी महती नहीं है यद्यपि कुछ कुछ पड़ने भी लगी है।

हमारी कोऑपरेटिव सोसाइटियाँ

फरेंदा कोऑपरेटिव डेवलपमेंट यूनियन की चतुर्थ वार्षिक रिपोर्ट

सन् १९४०-४१ में मेम्बरान की संख्या में काफ़ी तरक्क़ी हुई है। मेम्बरान की संख्या इस वर्ष ४,८३९ से ४,९७१ हो गई है। गाँवों की तादाद में कोई अन्तर नहीं हुआ है। यूनियन का मुख्य कार्य अपने मेम्बरों के जीवन का सुधार करना है और ख़ासतौर से उनकी खेती-बारी में तरक्क़ी देना और पैसे की बचत करना है। इस हल्क़े में प्रायः गन्ने की काश्त अधिक होती है अतः इसकी उन्नति और ख़रीद व फ़रोख़्त का काम बहुत सहूलियत से करने की कोशिश की जाती है। हमारे मेम्बरान को ग़रीबी की वजह से इन कामों में क़र्ज़ की आवश्यकता होती है। उनको पहले महाजन से क़र्ज़ा लेना पड़ता था जिसका सूद चार आने से छः आने तक देना पड़ता था। यूनियन ने मेम्बरान की इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए ६,८१५) लगभग क़र्ज़ा दिया जिस पर कि मेम्बरान को सूद सिर्फ़ डेढ़ आना फ़ी रुपया देना पड़ता है। प्रायः मेम्बरों का यह ख़्याल होता है कि यूनियन के लोग इतनी ज़रूरतों के पूरा करने के लिए और बचत कराने की कोशिश क्यों करते हैं? आज हम उन मेम्बरों को यह बतला देना चाहते हैं कि यह कोशिश कोई बाहर से नहीं करता, बल्कि मेम्बरान के स्वयं चुने हुए लोग, जिनके सुपुर्द मेम्बरान के सुधार का काम दिया गया है, अपने दिलोजान से उसके पूरा करने की कोशिश करते हैं। इसी का नतीजा यह है कि जीवन के प्रत्येक कार्य में यूनियन अपना हाथ बँटाने को अग्रसर हो रही है।

यूनियन का प्रबन्ध

यूनियन का प्रबन्ध एक चुने हुए बोर्ड के द्वारा होता है, जिसमें आठ डाइरेक्टर काम करते हैं। इसके अलावा एक प्रबन्ध-कारिणी कमेटी है, जिसमें ५ मेम्बर हैं जो काम करते हैं। कमेटी का काम अधिकतर मैनेजिंग डाइरेक्टर की देख-रेख में होता है। बोर्ड और कमेटी की साल में ११ बैठकें हुईं जिसमें डाइरेक्टरों ने बड़ी दिलचस्पी से काम किया। यूनियन का कारोबार बढ़ जाने से कुछ मुलाज़िम अलावा सरकारी ओहदेदारान के रखने पड़े हैं।

"यूनियन का काम"

यूनियन का मुख्य उद्देश्य खेती को तरक्क़ी देना है। इस वर्ष गन्ने की खेती पर ख़ासतौर से ध्यान दिया गया। यूनियन ने क़रीब ३,३५० मन गन्ना बीज के वास्ते और ६८९ मन खाद बाँटी है जिससे कि गन्ने की पैदावार काफ़ी अच्छी हुई है। जिन खेतों में रेडराट की बीमारी का प्रकोप हुआ था, स्टाफ़ की मेहनत से नुक़सान कम हुआ। यूनियन ने गन्ने के अलावा १०० मन मटर, १,३०० मन गेहूँ और १०० मन जौ बीज के वास्ते तकसीम किया और फ़सलों की तरक्क़ी करने में यथाशक्ति सहायता दी।

"स्वास्थ्य और सफ़ाई"

यूनियन ने अपने मेम्बरों की तन्दुरुस्ती और गाँव की सफ़ाई पर ख़ास ध्यान रक्खा है। इस साल क़रीब १४९) की दवा मँगाकर मुफ़्त तकसीम की गई। पाँच सौ खाद के गड्ढे आबादी के बाहर कूड़ा-करकट रखने के लिए बनवाये गये।

"शिक्षा-योजना"

यह हल्का शिक्षा में बहुत पीछे है। यूनियन ने तीन गाँवों में प्रौढ़ शिक्षा का काम किया है। जिससे थोड़ा बहुत लोगों को लाभ प्राप्त हो सका है। रिपोर्ट के अन्तर्गत साल में १२५ प्रौढ़ों ने शिक्षा पाई है। इस योजना में पब्लिक की सहायता की विशेष आवश्यकता है जिसके बिना यूनियन कामयाबी के साथ अग्रसर नहीं हो सकती है। यूनियन ने केवल ३९१ रुपया इस काम में ख़र्च किया है। रुपये की कमी की वजह से अप्रैल सन् १९४१ ई० में प्रौढ़-पाठशालाओं को उनका कार्य-काल समाप्त होने पर बन्द कर देना पड़ा।

"यूनियन की आर्थिक दशा"

मेम्बरों को उधार दिये हुए रुपये की वसूली उनके गन्ने की बिक्री से मिल के मार्फ़त कराई गई है। यह रक़म १०,३४५।) ३ पाई मिल से ३० जून तक वसूल नहीं हुई जिसकी वजह से यूनियन को क़रीब ८०) माहवार का नुक़सान बतौर सूद हुआ है। इस साल ३,४७,००० मन गन्ना यूनियन की तरफ़ से कोटा के मुताबिक़ गणेश शूगर मिल्स को दिया गया। इसके अलावा १८,४९१ मन ३० सेर गन्ना और मेम्बरान से मिल को दिलवाया गया, जिस पर यूनियन ने अपने मेम्बरान और मिल दोनों को फ़ायदा पहुँचाने की ग़रज़ से कोई कमीशन नहीं लिया। ठीके के अलावा गन्ना मिल को बेचने का पूरा ख़र्चा यूनियन ने बरदाश्त किया है। यह यूनियन को सिर्फ़ इसलिए करना पड़ा कि यूनियन किसी न किसी प्रकार अपने मेम्बरों की कुल पैदावार बिकवा देना अपना कर्त्तव्य समझती रही। उपरोक्त घाटे को सह करके भी यूनियन ने मेम्बरों के फ़ायदे के लिए इस कार्य का सहर्ष सम्पादन किया। ऊपर की दोनों ही बातें हमारी माली हालत को कमज़ोर करने की ज़िम्मेदार हैं और इसी लिए मुनाफ़ा कम हुआ।

अगले साल यूनियन को सहकारी गोला खोलने के सिलसिले में अधिक रुपये की ज़रूरत होगी इसलिए यूनियन ने मियादी अमानतों पर एक साल के लिए ४½ फ़ी सदी

और एक साल से अधिक के लिए ५ फ़ी सदी सूद देना तय किया है। विश्वास है कि यूनियन के मेम्बरान अपने फ़ाज़िल रुपये को इसमें लगाकर स्वयं लाभ उठावेंगे और यूनियन के कामों में मदद करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग-दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग-दिवस मनाने के लिए सूबे के विभिन्न भागों में और खासकर जौनपुर, प्रतापगढ़, फ़तेहगढ़, लखनऊ, बस्ती, बनारस, आज़मगढ़, गोंडा, आगरा, गोरखपुर, देहरादून, बाँदा, इलाहाबाद, उन्नाव, झाँसी, जालौन, बाराबंकी, मथुरा, मिर्ज़ापुर, खीरी और एटा में सभायें की गईं। इन सभाओं में अधिकतर सहयोग-समितियों के मेम्बर और बहुत-से स्थानीय लोग उपस्थित थे। युद्ध और शान्ति, स्वतन्त्रता और न्याय की विजय तथा आर्थिक और सामाजिक न्याय के लिए सहयोग में विश्वास और युद्ध के बाद शान्ति, सहृदयता और न्याय पर निर्भर संसार का स्थायी पुनर्निर्माण करने पर प्रभावशील भाषण दिये गये। यह भी बताया गया कि वर्तमान उलझनों का समाधान केवल सहयोग-द्वारा ही किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एलायन्स का सरकारी प्रस्ताव हर जगह सर्व-सम्मति से पास किया गया। इन सब सभाओं में सहयोग सिद्धान्तों के प्रति बहुत उत्साह दिखाया गया।

रायबरेली में कोआपरेटिव कान्फ्रेंस

रायबरेली में युद्ध-सप्ताह मनाने के अवसर पर एक कोआपरेटिव कान्फ्रेंस की गई जिसके द्वारा ग्राम-सहयोग-समितियों में स्काउटिंग का प्रसार करने, उचित केन्द्रों में पंचायतघर बनाने और स्त्रियों में मितव्ययिता और जीवन-सुधार-समितियों के बनाने तथा युद्ध-उद्योगों में हर प्रकार से सरकार की मदद करने के विषय पर प्रस्ताव पास किये गये। माननीय पी० डब्लू० मार्श, एडवाइज़र टु गवर्नर, यू० पी०, ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

रायबरेली के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर एस० राघवा, आई० सी० एस० द्वारा संगठित किये गये युद्ध-सप्ताह-प्रदर्शनी का उद्‌घाटन भी मिस्टर मार्श ने किया।

इस अवसर पर बहुत-से अफ़सर, राजा, ताल्लुक़ेदार और क़स्बे के बहुत-से रईस उपस्थित थे।

ज़िले की सहयोग-समितियों-द्वारा सभापति को १०१) की थैली भेंट की गई।

बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री अमृतराय ने ज़िले की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। उससे यह ज्ञात हुआ कि ज़िले में क़रीब ४९३ समितियाँ हैं। इनमें से ३६२ ग्राम-क़र्ज़-समितियाँ, १६ नगर-समितियाँ, ९ चकबन्दी की समितियाँ, ३ सिंचाई की समितियाँ, ४ मार्केटिंग यूनियन, ९४ जीवन-सुधार-समितियाँ, २ केन्द्रीय बैंक, १ कोआपरेटिव होमियोपैथिक फ़ार्मेसी और १ कोआपरेटिव सेवर्स स्काउट एसोसियेशन हैं।

मिस्टर मार्श ने अपने भाषण में सहयोग की उन्नति पर सन्तोष प्रकट करते हुए कहा कि चकबन्दी पर और भी अधिक ध्यान देना चाहिए और उससे सम्बन्ध रखनेवालों को विशेष ध्यान देना चाहिए।

हिज़ एक्सेलेन्सी-द्वारा बैंक-भवन का उद्‌घाटन

बहुत-से सहयोगियों और नगर के प्रसिद्ध रईसों की भीड़ में हिज़ एक्सेलेन्सी सर मारिस हैलेट ने बिजनौर कोआपरेटिव बैंक का उद्‌घाटन किया। मिस्टर एस० एस० हसन, आई० सी० एस०, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़ और बैंक के डाइरेक्टर श्री बलवन्तसिंह ने हिज़ एक्सेलेन्सी को भवन के चारों तरफ़ घुमाया और उनको ज़िले की सहयोग समितियों की उन्नति समझाई। दोपहर के बाद हिज़ एक्सेलेन्सी धर्मनगरी-राजा ज्वालाप्रसाद की रियासत में गये और वहाँ पर एक पंचायत भवन का उद्‌घाटन किया।

संन्ध्या-समय एक कोआपरेटिव कान्फ्रेंस की गई। इस अवसर पर सहसपुर की रामकुमारी ने सभानेत्री का आसन ग्रहण किया। इस अवसर पर बरेली के असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार श्री बी० एल० अग्रवाल और बैंक के डाइरेक्टर भी उपस्थित थे। सामाजिक, आर्थिक समस्याओं पर सुन्दर और दिलचस्प कविताओं और वार्तालापों द्वारा सभा का आरम्भ किया गया। सभानेत्री ने ए० आर० पी० पर एक भाषण दिया और इसके बाद गाँवों में ग्राम की मीटिंग करने, कृषि से उत्पन्न वस्तुओं को खरीदने और स्त्री शिक्षा पर प्रस्ताव पास हुए।

जुलाहा समितियों की कठिनाइयाँ

रामनगर में कान्फ्रेन्स

रामनगर में होनेवाली टाँडा तहसील की कोआपरेटिव कान्फ्रेन्स के सभापति मि० टी० जान्सटन ने यह बताया कि बुनाई करनेवाली समितियों को सस्ते सूत नहीं मिलते। इस कठिनाई को दूर करने का प्रबन्ध किया गया है जिसकी विशद सूचना बाद में दी जायगी। उन्होंने आगे बताया कि इंडस्ट्री-विभाग के विविंग स्कूलों और ट्यूशनल क्लासों की स्थापना भविष्य में टाँडा में ही की जायगी जिससे कि इस व्यवसाय को विशेष उन्नति हो। इसके साथ-साथ उन्होंने मेम्बरों को राय दी कि वे इस अवसर से उचित लाभ उठावें।

बहुत से ग्रामवासी, अफ़सर और स्थानीय गैर सरकारी लोग जैसे रायबहादुर पंडित परमेश्वरनाथ सप्रू, रायबहादुर टी० एन० कपूर, के० एस० मुर्तज़ाअली, श्री एस० एन० कपूर आदि उपस्थित थे।

बहुत से प्रस्ताव पास हुए जिसमें प्रमुख प्रस्ताव रायबहादुर त्रिलोकीनाथ कपूर ने पेश किया कि इस अवसर पर युद्ध उद्योगों में सरकार की पूर्ण मदद की जाय।

इस अवसर पर १०१) की थैली सभापति को भेंट की गई और खाली थैली नीलाम करने पर २०) मिला।

सबेरे मिस्टर ए० सी० काउन, आई० सी० एस० ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट के सभापतित्व में टाँडा बैंक की वार्षिक बैठक की गई।

बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री सुरेन्द्रनाथ कपूर ने बैंक की रिपोर्ट पढ़ी जो कि स्वीकृत हो गई। हिस्सेदारों को ४ प्रतिशत का लाभ ऐलान किया गया। इस रिपोर्ट से यह भी पता चला कि बैंक की लागत कुल ५६,३०० है। तहसील में कुल १०९ समितियाँ हैं। जिनमें से क़रीब ३० बुनाई करनेवाली समितियाँ हैं और उनका एक केन्द्रीय स्टोर टाँडा में है।

टाँडा में तीन मार्केटिंग यूनियनें भी हैं। एक पाल्ट्री सोसायटी का प्रबन्ध किया गया है लेकिन यह अभी प्रयोग-दशा में है।

कोऑपरेटिव डेवलपमेंट यूनियन लिमिटेड भाटपार रानी का वार्षिकोत्सव

भाटपार रानी यूनियन का तृतीय वार्षिकोत्सव श्रीयुत पं० मुनेश्वरप्रसाद त्रिपाठी सब-डिवीज़न अफ़सर सलेमपुर की अध्यक्षता में गत तारीख २१ दिसम्बर, १९४१ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव में ज़ोन के प्रायः सभी गाँवों के प्रतिनिधि तथा प्रमुख व्यक्ति उत्साह के साथ सम्मिलित हुए थे। इसके अतिरिक्त जनता का भी समारोह काफ़ी था। सभापति के चुनाव के पश्चात् सेक्रेटरी ने यूनियन की तृतीय वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। इसके बाद नये डाइरेक्टरों तथा चेयरमैन का चुनाव हुआ। यूनियन-सम्बन्धी आवश्यक प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हुए।

प्रतिनिधियों ने गन्ने के वर्तमान भाव के कम होने के प्रति असन्तोष प्रकट किया। श्रीयुत पी० एल० बिसारिया साहब डिप्टी, सी० डी० वो० देवरिया ने यूनियन के चेयरमैन, डाइरेक्टरों तथा जनता को उनके उत्साह, एकता तथा सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

अन्त में अध्यक्ष महोदय का "वर्तमान युद्ध तथा हमारा कर्त्तव्य" पर विद्वत्तापूर्ण ओजस्वी भाषण हुआ। सुयोग्य वक्ता ने आर्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा राजनीतिक—सभी दृष्टि-कोणों से देश के लिए सैनिक शिक्षा की आवश्यकता बतलाई और लोगों से अपील की कि वे वीरों की तरह आगे आवें। और ग्राम-रक्षा-समिति बनाकर चोर, डाकू तथा गुण्डों से अपनी रक्षा की व्यवस्था में हाथ बटावें। प्रभावशाली भाषण से प्रभावित होकर यहाँ की आन्तरिक व्यवस्था में सहायता करने के लिए प्रमुख सज्जनों की एक ग्राम-रक्षा समिति बनाई गई। अन्त में धन्यवाद देते हुए सभा विसर्जित हुई।

चौथी फ़ैज़ाबाद डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव कान्फ्रेंस की रिपोर्ट

यह रिपोर्ट डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव कान्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी श्री परमेश्वरनाथ सप्रू के सौजन्य से प्राप्त हुई है। इसका सारांश हम नीचे दे रहे हैं—

ऐसी कान्फ़्रेंसों की सबसे बड़ी मंशा यह है कि मुख्तलिफ़ सोसाइटियों के मेम्बर एक-दूसरे से मिलकर अपनी सोसाइटियों की बाबत बातचीत कर सकें और जो दिक्क़तें उनको काम चलाने में होती हैं उनके मिटाने के लिए उपाय सोच सकें। दूसरे यह कि जो लोग इस तहरीक से वाकफ़ियत व दिलचस्पी रखते हैं वे अपनी राय और मशविरा से मेम्बरान को फ़ायदा पहुँचा सकें।

यह ज़िला की खुश क़िस्मती है कि आज की कान्फ़रेंस के सदर मिस्टर मार्श साहब हैं जिनको इस तहरीक से हमेशा दिलचस्पी रही और जिनको काश्तकारी से ख़ास हमदर्दी है। आपने अपनी मुलाज़मत का कुल ज़माना काश्तकारों की सेवा और उनकी हालत दुरुस्त करने में सर्फ़ किया है। जिन जिन अज़ला में आप रहे हैं वहाँ का बच्चा बच्चा आपको सराहता है। आपकी दिलचस्पी का अन्दाज़ा इससे किया जा सकता है कि आपने बावजूद इन्तिहाई अदीमुलफ़ुरसती के यहाँ आने की ज़हमत गवारा फ़रमाई। हम लोग आपकी इस इनायत का शुक्रिया पूरे तौर से अदा नहीं कर सकते।

इस ज़िला में सहकारी तहरीक़ सन् १९०१ ई० में शुरू हुई मगर सन् १९०९ ई० तक बहुत कम तरक्क़ी हुई। उस साल में डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक क़ायम किया गया जिसने इस तहरीक़ को तरक्क़ी देना शुरू किया।

बहुत से क़र्ज़े जो शुरू में दिये गये नाक़ाबिल वसूल साबित हुए और सन् १९२० ई० में बैंक को बन्द कर देने का सवाल दरपेश हो गया मगर तहरीक़ में काम करनेवाले हिम्मत न हारे और अफ़सरान मोहक़मा और हुक्काम ज़िला की इमदाद से मुरदा तहरीक़ में जान पड़ गई और अब हमारा ज़िला सिवाय चन्द ज़िलों के कोआपरेटिव सोसाइटी के लिहाज़ से किसी से पीछे नहीं है।

सन् १९०१ ई० में टाँडा बैंक जारी किया गया जो टाँडा तहसील भर में लेन-देन करता है यही दोनों बैंक इस ज़िला में कुल देहाती व शहरी सभाओं को क़र्ज़ा देते हैं।

मोहकमा ग्राम-सुधार ने भी जीवन-सुधार सभायें कोआपरेटिव ऐक्ट के मुताबिक़ बनाई हैं। कुछ गन्ना बेचनेवाली सोसाइटियाँ मोहक़मा केन डेवलपमेंट ने क़ायम की हैं। इस तरह पर कुल सहकारी सभाओं की तादाद ५९८ तक पहुँच गई है जिसमें २३,३४१ मेम्बरान शरीक हैं। ये सभायें इस वक्त क़रीब २,४७० मवाज़ियात में हैं यानी इस ज़िला के क़रीब दो एक चौथाई मवाज़ियात कोआपरेटिव तहरीक़ में आ चुके हैं।

हमारी सहकारी सभायें सिर्फ़ काश्तकारों को क़र्ज़ा देनेवाली जमायतें नहीं हैं बल्कि इसमें दो सेन्ट्रल बैंक, एक लैन्ड मार्टगेज

फ़ैज़ाबाद डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव कान्फ्रेन्स के सभापति मिस्टर पी० डब्लू० मार्श, सी० एस० आई०, सी० आई० ई०, आई० सी० एस० को फ़ैज़ाबाद बैंक के मैनेज़िंग डाइरेक्टर रायबहादुर पंडित परमेश्वरनाथ सप्रू अभिनन्दन पत्र दे रहे हैं। बायें तरफ़ यू० पी० कोआपरेटिव सोसाइटीज़ के रजिस्ट्रार मिस्टर एस० एस० हसन, आई० सी० एस०, भी बैठे हैं।

सोसाइटी, सात मार्केटिङ्ग यूनियन, एक सेन्ट्रल वीवर्स स्टोर, चार मुक़दमात फ़ैसला करनेवाली सोसाइटियाँ, नौ तनख्वाहदार मुलाज़मीन की सोसाइटियाँ, एक हाउसिङ्ग, एक मुर्गी पालनेवाली सोसाइटी, एक सेन्ट्रल और तीन प्राइमरी फल व तरकारी बेचनेवाली सोसाइटियाँ, ७८ औरतों की सोसाइटियाँ, ५० जोलाहों की और दीगर पेशावालों की सोसाइटियाँ, ६४ विलेज बैंक, १५ देहाती क़र्ज़ा देनेवाली, ९ हरिजन सोसाइटियाँ और २६५ जीवन-सुधार सभायें शामिल हैं।

फ़ैज़ाबाद डिस्ट्रिक्ट बैंक और टाँडा सेन्ट्रल बैंक जो सोसाइटियों को क़र्ज़ा देने का इन्तज़ाम करते हैं उनका कारोबारी सरमाया १,५३,५६७ रुपया है और बचती सरमाया ६२,५४० रुपया है। इनका क़र्ज़ा सोसाइटियों पर क़रीब ८३,४९१ रुपये के है। दोनों बैंकों का कोई रुपया मखदूश और नाक़ाबिल वसूल नहीं है। हालत क़ाबिल इतमीनान है।

एक लैन्ड मार्टगेज़ सोसाइटी मक़रूज़ ज़मींदारों को फ़करेहन जायदाद और अदायगी क़र्ज़ा के लिए रुपया देने के लिए क़ायम हुई और क़रीब २४,३१९ रुपये इस वक्त ज़मींदारों को दिये हुए हैं।

टाँडा स्टोर सोसाइटियों के मेम्बरान का माल रेहन रखकर ७५ फ़ी सदी क़ीमत तक रुपया देता है और इससे टाँडा के जोलाहों और दीगर पेशावालों को बहुत फ़ायदा पहुँचा है और क़रीब ८,५४० रुपया इस तरह पर लगा हुआ है। मुलाज़िम पेशावालों की जमायतें ४९,८०० रुपया से ज़ायद सरमाया से काम कर रही हैं और ३१,४०० रुपया से ज़ायद उनको मेम्बरान से वसूल करना है।

शहर फ़ैज़ाबाद के मामूली हैसियत के लोगों के मकान बनवा देने के लिए एक सोसाइटी क़ायम है मगर उसको अब तक ज़मीन नहीं मिल सकी है और ज़मीन हासिल करने की कोशिश की जा रही है।

५० जोलाहों और दीगर पेशावालों की सोसाइटियाँ हैं जो उगाही (११ से १२) के हिसाब में क़र्ज़ा देती हैं और २३,२६७ रुपये क़र्ज़े में बाँटे हैं।

१४ सोसाइटियाँ मेम्बरान के झगड़े का फ़ैसला करने के लिए बनाई गई हैं उसमें ६०३ मेम्बरान शामिल हैं और उन्होंने बहुत से मुक़दमात का फ़ैसला किया और मेम्बरों के झगड़े तय किया। उम्मीद है कि इस काम की जल्द तरक्क़ी हो।

शहर फ़ैज़ाबाद में १ सेन्ट्रल और ३ सभायें फल-तरकारी बेचनेवालों की क़ायम हैं जिनकी मंशा यह है कि वह मुनाफ़ा जो कुँजड़े व खटिक हासिल करते हैं फल और तरकारी की काश्त करनेवालों को मिले।

ग़रीबों की आमदनी बढ़ाने के लिए टाँडा में मुर्गी पालने और उनकी नस्ल बढ़ाने के लिए कोशिश की जा रही है और बाक़ी तादाद में अंडे व ५२ मुर्ग़े व मुर्गियाँ दिये गये हैं।

औरतों की हालत दुरुस्त करने के लिए ८ सोसाइटियाँ शहर फ़ैज़ाबाद में क़ायम हैं, जिनमें किफ़ायतशारी, कपड़ा सीना, काढ़ना, बनियाइन, मोज़े बनाना, खाना पकाना, गाना वग़ैरह सिखलाया जाता है। हमारे यहाँ ८ सोसाइटियाँ हरिजनों की हैं। अलावा मुन्दर्जे बाला सोसाइटियों की २१५ जमायतें काश्तकारों को क़र्ज़ा देनेवाली हैं, जिनका सरमाया १,५५,५०० रुपया से ज़ायद है।

इस वक्त ज़िले में १५ सुपरवाइज़र काम कर रहे हैं। उम्मीद है कि वह साल रवाँ में ५० नई सभायें बना सकेंगे। २३७ जीवन-सुधार सभाओं का काम मुहक़मा ग्राम-सुधार की निगरानी में होता है और शायद ही किसी दूसरे ज़िला से पीछे हो। दो बातें ख़ास हैं। एक तो यह कोआपरेटिव तहरीक बढ़ाने के लिए मुनासिब प्रोपेगेंडा बहुत ज़रूरी है और उसका इन्तज़ाम बग़ैर गवर्नमेंट की मदद के नहीं हो सकता। इसलिए गवर्नमेंट से ऐसी इमदाद की दरख्वास्त की जावे। दूसरी बात यह है कि बैंकों में बेकार रुपया पड़ा रहता है, जिनको वह अपनी सोसाइटियों में नहीं लगा सकते। अगर प्राविन्शियल बैंक क़ायम हो जाय तो यह ज़ायद रुपया उसमें जमा हो सकता है व वक्त ज़रूरत वापस लिया जा सकता है। हमारे सूबे को छोड़कर कोई बड़ा सूबा ऐसा नहीं

है जहाँ प्राविन्शियल बैंक न हो। गवर्नमेंट ने हमारी दरख्वास्त है कि जल्द से जल्द प्राविन्शियल कोआपरेटिव बैंक क़ायम करने में मुहक़मा की इमदाद करे।

इस रिपोर्ट से यह ज़ाहिर होगा कि कोआपरेशन का काम इस ज़िला में काफ़ी कामयाबी के साथ हो रहा है। इस कामयाबी की बड़ी वजह वह मदद है जो खाँसाहब मौलवी मुर्तजाअली साहब असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार से मिलती रहती है।

ज़िला की कोआपरेटिव तहरीक़ रजिस्ट्रार साहब बहादुर का शुक्रिया जिस क़दर अदा करें कम है। आप असिल कोआपरेटिव स्प्रिट से काम करते हैं और हम लोगों को यह कभी नहीं मालूम होता कि आप अफ़सर हैं।

यह खुशक़िस्मती है कि मिस्टर जानस्टन साहब ज़िले के अफ़सर हैं और फ़ैज़ाबाद ज़िला बैंक के चेयरमैन हैं। आपके साथ काम करने में खुशी होती है और हौसला बढ़ता है। आप अपना क़ीमती वक्त कोआपरेशन की तरक्क़ी में देते हैं और हर तरह की इमदाद करते हैं।

कोआपरेटिव शूगर केन सोसाइटी लिमिटेड देहरादून की

सातवें साल की रिपोर्ट

सन् १९४०-४१ ईसवी

कोआपरेटिव शूगर केन सोसाइटी, लिमिटेड, देहरादून की रजिस्ट्री २६ जनवरी, सन् १९३५ ई० को हुई। डोईवाला कोआपरेटिव डेवलपमेंट यूनियन के इलाक़े को छोड़कर देहरादून का हर एक काश्तकार और चीनी के कारखाने जो इस इलाक़े के गन्ने की खरीद करें, इस सोसाइटी के मेम्बर बन सकते हैं।

सोसाइटी के उद्देश्य

(अ) किसानों की माली हालत को तरक्क़ी देना और उनके गन्ने व दीगर काश्त की पैदावार को बेचने के लिए मुनासिब इन्तज़ाम करना।

(ब) काश्तकारों को उत्तम खेती के तरीक़े बतलाना और उनकी खेती के तरद्दुद के लिए खेती की पैदावार की ज़मानत पर वाजिब सूद पर क़र्ज़ा देने के लिए रुपया मुहय्या करना।

गन्ना जो मिलों में गया

इस साल में सोसाइटी ने सात लाख तिरपन हज़ार सात सौ अस्सी मन गन्ना जै लक्ष्मी शूगर कम्पनी लिमिटेड डोईवाला को दिया। जिसकी सप्लाई ३० मई, सन् १९४१ ई० तक हुई। जै लक्ष्मी शूगर कम्पनी लिमिटेड ने सन् ४० व ४१ ई० में १७,३८,२९९ मन गन्ना मशीन में पेरा है। साल रिपोर्ट में सोसाइटी ने मेम्बरान को नई क़िस्म का गन्ना जैसे सी० ओ० ३३१, सी० ओ० ३५६, सी० ओ० ४२१ ई० के० २८ एम० १६ वग़ैरह मिल को दिये। डोईवाला मिल ने इस साल रिपोर्ट में १७,४६,८०६ मन गन्ना खरीद किया जिसमें से ९,११,०१६ मन इस सोसाइटी के इलाक़े से गया। साल रिपोर्ट में मेम्बरान व ग़ैर-मेम्बरान के गन्ने की सप्लाई का इन्तज़ाम सोसाइटी की मार्फ़त हुआ है। जिस पर कि सोसाइटी ने मिल से ग़ैर-मेम्बरान के गन्ने पर ५००) बतौर कमीशन कमाये।

बीज व खाद का इन्तज़ाम

सोसाइटी के मेम्बरान ने उम्दा क़िस्म की खाद व नई क़िस्म के आलात का इस्तेमाल किया। १५० मन सनई अच्छी पैदावार के लिए दी गई। खाद नम्बर १ नया मिक्स्चर, अमोनियम सलफेट (अँगरेजी खाद) और आलात वग़ैरह अच्छी पैदावार के लिए महक़मा केन डेवलपमेंट की मार्फ़त काश्तकारान को फ़रोख्त किये गये। साल रिपोर्ट में सोसाइटी के १,११८ मेम्बरान के पास ३,५६२ एकड़ गन्ना बोया हुआ था। गवर्नमेंट के मुक़र्रर किये हुए कोट के मुताबिक सोसाइटी ने मिल के मेम्बरान और ग़ैर-मेम्बरान को ७,७२,३८० मन गन्ना देना तय किया था चूँकि दौरान सप्लाई में मिलवालों को गवर्नमेंट की तरफ़ से और कोटा मिल गया। जिसकी वजह से काश्तकारान की तमाम पैदावार का गन्ना मिल में पहुँच गया। यद्यपि दूसरे कोटे के गन्ने पर काश्तकारान ने ढुलाई वग़ैरह के लिए मिल को कुछ चन्दा दिया फिर उनकी यह परेशानी कि गन्ना खड़ा रह जायगा और जलाना पड़ेगा दूर हो गई।

साल ४० व ४१ ई० में मिल ने ९,११,०१६ मन गन्ना सोसाइटी के इलाक़े से खरीद किया। जिसमें से ७,७२,३८० मन पहले कोटे का था और १,३८,६३६ मन बाद कोटे का।

आमदनी

सोसाइटी ने साल ४० व ४१ ई० में ७,८४५≡)७ पाई बतौर कमीशन मेम्बरान व ग़ैर-मेम्बरान के गन्ने पर कमाये। पहले कोटे की सप्लाई पर २ पाई फ़ी मन और बाद के कोटे पर १ पाई फ़ी मन के हिसाब से कमीशन कमाया।

गन्ने की फ़सल की ज़मानत पर पेशगी

मौजूदा हालात को मद्दे नज़र रखते हुए ये मुनासिब खयाल किया गया कि साल १९४१-४२ में गन्ने की फ़सल की ज़मानत पर रुपया बतौर पेशगी न दिया जावे। दूसरे गन्ने की फ़सल के बोने से काफ़ी पहले सोसाइटी ने ये इत्तला कर दी थी कि साल (आइन्दा) (४१-४२) की फ़सल की पैदावार की फ़रोख्तगी के लिए सोसाइटी किसी क़िस्म की जिम्मेदारी न लेगी जो साहबान गन्ना बोयें अपनी जिम्मेदारी पर बोयें।

साल रिपोर्ट में सोसाइटी ने मुबलिग़ ७,६३०) बतौर आबपाशी व मालगुज़ारी गवर्नमेंट को मेम्बरान की तरफ़ से अदा की और कुछ हालात में ज़मींदारों का लगान भी सोसाइटी की मार्फ़त अदा किया गया। ऊपर लिखी हुई बातों से ज़ाहिर है कि सोसाइटी सबके फ़ायदे के लिए किस क़दर फ़ायदेमन्द चीज़ है।

बक़ाया

३० जून, सन् १९४१ ई० को मेम्बरान पर मुबलिग़ २,५९५) १ पाई क़र्ज़ा बक़ाया था जिसमें से ७३॥-)॥ आज तक वसूल हो गये। और २,५२१=)७ पाई वसूल करने बाक़ी हैं। इस रक़म में से १,८३७।=) की डिगरियाँ इजरा के लिए और २७॥-) २ पाई के काग़ज़ात डिगरियाँ हासिल करने के लिए जनाब रजिस्ट्रार साहब बहादुर कोआपरेटिव सोसाइटी के पास भेजे हुए हैं। और बक़ाया रक़म को वसूल करने की कोशिश की जा रही है। ये उम्मीद की जाती है कि इस रक़म में से मुबलिग़ ५००) नाक़ाबिल वसूल होने का ख़याल है।

क़ाबिल तक़सीम मुनाफ़ा

साल ४०-४१ में सोसाइटी को कुल मुनाफ़ा ६,३१०॥=) २½ पाई हुआ। वाजिबुलअदा सूद मुबलिग़ ६१६।≡) १० पाई और ५१=) व सूद जो उन मेम्बरान पर है जिन पर सूद वाजिब है मनहा करने के बाद क़ाबिल तक़सीम मुनाफ़ा ५,६४३॥-) ४½ पाई रह जाता है। पिछले साल के बग़ैर तक़सीम-शुदा मुनाफ़ा १,८९५) ४ पाई को शामिल करने के बाद वाजिब तक़सीम मुनाफ़ा ७,५३८॥-) ८½ पाई होता है।

सरकारी बीज-गोदाम

साल के शुरू में सोसाइटी की ज़ेर-निगरानी में ४ बीज गोदाम थे। १ दिसम्बर, १९४० से चोहड़पुर और सहसपुर के दो बीज-गोदाम मोहक़मा इजरात को तब्दील कर दिये गये थे। अब सोसाइटी के पास झाझरा और सेवला के दो बीज गोदाम हैं सात की कार्रवाई पर सोसाइटी को मुबलिग़ १,१२८≡) मुनाफ़ा हुआ।

कोआपरेटिव आढ़त की दूकान

सोसाइटी फ़सल रबी सन् १९४० से सर्किल आफ़िसर साहब कोआपरेटिव सोसाइटी देहरादून, की ज़ेर निगरानी एक आढ़त की दूकान चला रही है। जिसकी मंशा

मथुराबैंक के वार्षिकोत्सव के समय ऊँची कूद का एक दृश्य दिखाया गया है।
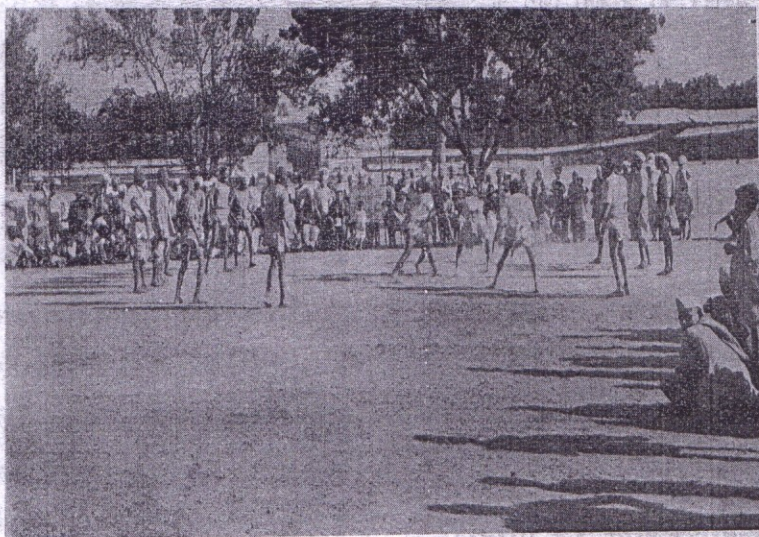
भारत के गाँवों में आज भी दिलचस्पी के साथ खेली जानेवाली कबड्डी के खेल का एक दृश्य।

काश्तकारों के गन्ने की काश्त के अलावा अन्य काश्त की पैदावार को एक जगह बेचने के लिए इन्तज़ाम करना और उनकी हर रोज़ की ज़रूरियात की जिससे माली हालत में तरक्क़ी हो सके मोहय्या करना है। साल ४०-४१ की कार्रवाई पर दूकान को १४५॥|)३ पाई मुनाफ़ा हुआ है।

मथुरा-बैंक की वार्षिक बैठक

इस वर्ष मथुरा डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक की वार्षिक बैठक ४ और ५ दिसम्बर को खेल और कूद के विशद प्रोग्राम के साथ की गई। ज़िले की क़रीब १७० सहयोग-समितियों ने अपने सदस्यों को रस्साकशी, कबड्डी, कूद, ऊँची कूद और हँसी की प्रतियोगिता में भाग लेने को भेजा था। बैंक-द्वारा दिये जाने-वाले 'हसन चैलेंज कप' को प्राप्त करने के लिए बैंक के नौ सुपरवाइज़रों के हल्कों से आई हुई टीमों ने बड़ी दिलचस्पी दिखाई। मेरठ के असिस्टेंट रजिस्ट्रार श्री आर० पी० माथुर बराबर उपस्थित थे और उन्होंने हर एक काम में बड़ी दिलचस्पी दिखाई। संध्या-समय कवि-सम्मेलन और मुशायरा किया गया जिसमें बहुत-से कवियों और बहुत-सी जनता ने भाग लिया। सहयोग और ग्रामोन्नति पर पढ़ी गई सर्वोत्तम कविताओं पर पदक दिये गये।

मथुरा के कलेक्टर मिस्टर आर० जान्सटन के सभापतित्व में ५ दिसम्बर को मीटिंग की गई। कार्यवाही आरम्भ होने के पूर्व प्रकाशन आफ़िसर श्री जे० पी० मिश्र ने जनता
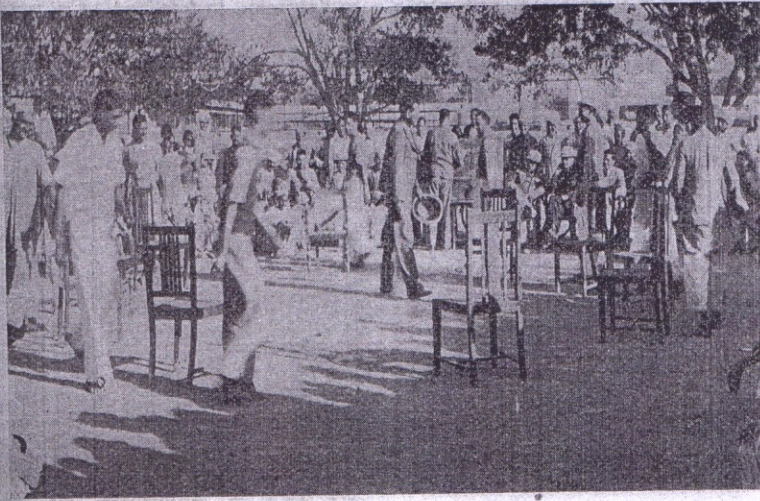
स्यूज़िकल चेयर्स नामक खेल का एक दिग्दर्शन।

को यह समझाया कि यह आन्दोलन जनतंत्र के आधार पर चलाया गया है और इसकी उन्नति वर्तमान समय में बहुत हो सकती है। उपस्थित सज्जनों में रायबहादुर जमुनाप्रसाद, म्युनिसिपल चेयरमैन श्री आर० एस० गोविन्ददास भार्गव और आर० पी० माथुर उपस्थित थे। बैंक की वार्षिक रिपोर्ट (१९४०-४१) मय बैलेंस के हिस्सेदारों के सामने पेश की गई और ५ प्रतिशत लाभ ऐलान करने के बाद सर्वसम्मति से स्वीकृत हुई। श्री [illegible]नाथ ग्रामसुधार-संघ के भूतपूर्व सभापति ने यह राय दी कि बैंक को अपना व्यंवसाय अपने ज़िले में करने के साथ साथ ख़ासकर [illegible] तहसील में करना चाहिए। मेरठ के असिस्टेंट रजिस्ट्रार श्री आर० पी० माथुर ने अपनी स्वीकृति देते हुए कहा कि बैंक से अधिक समितियों का प्रसार करने का प्रयत्न किया जायेगा।

बैंक की रिपोर्ट से यह मालूम हुआ कि इसका मूलधन क़रीब २ लाख है जिसमें से क़रीब [illegible] इसकी अपनी स्थायी सम्पत्ति है। इस बैंक की सहायक समितियाँ क़रीब १७० हैं जिनमें से ५१ ऐसी समितियाँ हैं जो क़र्ज़ देने के अलावा क्रय-विक्रय, अच्छी खेती करना और जीवन सुधार आदि का भी काम करती हैं। बैंक ने हाल में सहयोग के आधार पर समितियों की उन्नति करने का भी प्रबन्ध किया है। इनमें से २३ समितियाँ फ़िज़ूलख़र्ची को रोककर, जीवन-सुधार करने और नमूने के स्वच्छ घरों के बनाने के अलावा जनता को क़र्ज़ देनेवाले महाजनों, ख़ासकर काबुलियों से दूर रखने का काम करती हैं।

इस सफल उत्सव के प्रबन्ध का श्रेय मथुरा के कोआपरेटिव सोसाइटीज़ के सर्किल अफ़सर श्री त्रिलोकचन्द्र को है।

सुखपाल नगर कोआपरेटिव कान्फ़्रेंस और प्रदर्शनी

प्रतापगढ़ के राजा के सभापतित्व में सुखपाल नगर--मेले में खजुरी और भारनी सर्किल की एक ग्रुप कान्फ़्रेन्स की गई। उपस्थित सज्जनों में बनारस डिवीज़न के इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स रायबहादुर पंडित श्यामबिहारी मिश्र और आनरेरी मजिस्ट्रेट रायसाहब ठाकुर नन्दनसिंह प्रमुख थे। ४० समितियों में क़रीब एक हज़ार से भी अधिक लोग उपस्थित थे।

खजुरी के पंचों-द्वारा प्रार्थना के साथ सभा का उद्घाटन हुआ और इसके बाद सर्किल की रिपोर्ट पढ़ी गई। करीब बारह समितियों के सरपंचों ने अपनी-अपनी समितियों के बारे में बताया। वेटेरिनरी और कोआपरेटिव इन्स्पेक्टरों ने पशु-पालन और गृह उद्योग पर भाषण दिये। पंचों ने एक यूनियन बनाने, पशु-पालन स्कीम चलाने और अपने-अपने स्थानों में उचित गृह-उद्योगों के चलाने का निश्चय किया। प्रतापगढ़ रियासत के मैनेजर ने सहयोग पर भाषण दिया और कहा कि रियासत के गाँवों में वे पूर्ण सहयोग देंगे।

वार्षिक मेले के सम्बन्ध में एक कोआपरेटिव कोर्ट भी बनाया गया था। कोर्ट में विभाग के सिद्धान्त सम्बन्धी बातें लिखकर लटकाई गई थीं और सामने दरवाज़े पर सहयोग का झंडा लगाया गया था। देखनेवालों को प्रतिदिन सहयोग सम्बन्धी और घी की ख़रीद फ़रोख़्त के विषय में पोस्टर समझाये जाते थे। सहयोग समितियों की वस्तुओं का भी प्रदर्शन किया गया था। अन्तू के युद्ध सम्बन्धी सामान और बैन्टी के कम्बल भी दिखाये गये थे। ज़िले के बहुत से सरकारी और ग़ैर सरकारी अफ़सरों ने इस कोर्ट को देखा और ज़िले में होनेवाले सहयोग के कामों को बहुत पसन्द किया।

बाँदा में व्यावसायिक कृषि-प्रदर्शनी

बाँदा प्रदर्शनी में कोआपरेटिव पविलियन में बहुत से दिलचस्प हिस्से थे। प्रदर्शन भाग में सहयोग के स्लोगन और बहुत से पोस्टर लटकाये गये थे। आगरा, बाराबंकी, गोरखपुर और सँडीला के कपड़े की वस्तुएँ दिखाई गई थीं और अच्छी तथा सस्ती होने के कारण उनकी काफ़ी बिक्री हुई। आगरा की दरियाँ, बाराबंकी के क़ालीन और गोरखपुर की तौलियों की बड़ी माँग थी।

सहयोग प्रौढ़-शिक्षा विभाग में बहुत से चार्ट ऐसे लगे थे जिनपर मिस्टर माँडी की प्रौढ़ शिक्षा के सिद्धान्तों का प्रदर्शन किया गया था। प्रौढ़-शिक्षा से दिलचस्पी रखनेवालों को ये चार्ट अच्छी तरह समझाये जाते थे।

चकबन्दीवाले हिस्से में बहुत से नमूने बने थे जो कि चकबन्दी के पहले और बाद की हालतों को दिखाते थे और फ़तेहपुर में होनेवाले चकबन्दी के अनुभव और उनसे प्राप्त लाभ नक़शे और चार्टों द्वारा समझाये

जाते थे। इस विभाग की सफलता का श्रेय चकबन्दी के सुपरवाइज़र श्री कालीप्रसाद श्रीवास्तव को है।

रीडिंग रूम और लाइब्रेरी भी प्रदर्शनी के प्रमुख भाग थे। इस जगह अँगरेज़ी और हिन्दी की मासिक पत्रिकायें और सहयोग सम्बन्धी अन्य पत्र इकट्ठा किये गये थे।

छोटी छोटी जगहों में मेथी बोकर सहयोग के बहुत से स्लोगन हिन्दी, उर्दू और अँगरेज़ी में दिखाये गये थे। बहुत से लोगों की राय में यह बिलकुल नवीनता थी।

इसके पंडाल में सहयोग सम्बन्धी कानफ़ेन्स और मीटिंग की जाती थी। कोई न कोई सालाना या माहवारी उत्सव पंडाल में किया जाता था और इसके द्वारा सहयोग के सिद्धान्तों का प्रचार किया जाता था। कोआपरेटिव सोसाइटीज़ के प्रकाशन आफ़िसर श्री जे० पी० मिश्र ने सहयोग के गुणों पर एक सुन्दर भाषण दिया।

मुज़फ़्फ़रनगर-बैंक की बैठक

मुज़फ़्फ़रनगर कोआपरेटिव बैंक का वार्षिक दिवस कुछ दिन पहले मनाया गया। क़रीब ७५ समितियों और ४०० सदस्यों ने इसमें भाग लिया। रस्साकशी और कबड्डी आदि खेलों के साथ कार्यवाही आरम्भ हुई। पशु, कृषि और उद्योग प्रदर्शनी भी की गई थी।

रायबहादुर लाला जगदीशप्रसाद के सभापतित्व में बैंक की सालाना बैठक की गई। बैंक की सालाना रिपोर्ट पढ़ी गई और इससे यह मालूम हुआ कि बैंक के काम में बड़ी उन्नति हुई है। सन् १९४०-४१ में १४ नई समितियों की रजिस्ट्री की गई। बक़ाया बहुत कम रहा और क़र्ज़ देने से इस वर्ष कुल लाभ २,४४३ रु० हुआ जब गत वर्ष १,२८३ रु० था। ख़ास हिस्सेदारों को साढ़े तीन प्रतिशत का लाभ और साधारण को दो प्रतिशत का लाभ ऐलान किया गया। क़रीब ८०० रु० बैड डेट फंड में दिया गया और ६६१ रु० बिल्डिंग फंड में रखा गया। अच्छे कार्यकर्त्ताओं और खेल में जीतनेवालों को सभापति ने इनाम बाँटा।

इलाहाबाद ज़िले में कोआपरेटिव कान्फ़्रेंस

श्री बी० ए० मेहता सर्किल आफ़िसर, श्री रामगोपाल सनद, लेक्चरार नार्मल स्कूल और प्रयाग-विश्वविद्यालय के सोशल सर्विस लीग के डाक्टर विश्वेसरप्रसाद ने मिलकर एक सफल कान्फ़्रेन्स की। थरवई स्टेशन के पास की रामलीला की जगह अच्छी तरह से सजाई गई। विश्वविद्यालय और नार्मल स्कूल के २०० विद्यार्थियों ने भाग लिया और इसके अलावा क़रीब १,००० लोग गाँव की सहयोग-समितियों से और मिल्क सोसाइटीज़ से आये थे।

प्रोफ़ेसर एस० के० रुद्र ने अपने भाषण में प्राचीन भारत के गाँवों की परम्पराओं की सराहना करते हुए वर्तमान साम्प्रदायिक और जातीय विचारों को धिक्कारा। उनके भाषण को गाँव की जनता ने बहुत पसन्द किया। डिस्ट्रिक्ट हेल्थ अफ़सर डाक्टर वर्मा ने सफ़ाई के लाभ पर भाषण दिया। उनके भाषण के बाद प्रयाग-विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने एक नाटक का प्रदर्शन किया। सहयोग-विभाग के टेक्सटाइल इंस्पेक्टर श्री आर० एन० गौर ने गाँववालों को यह समझाया कि किस प्रकार वे युद्ध में सरकार की मदद कर सकते हैं। उन्होंने निवाड़, सुतली और टाट-पट्टी के बिनने पर अधिक ज़ोर दिया। श्री रामगोपाल सनद ने यह बताया कि नार्मल स्कूल के अध्यापकों ने ग्रामोन्नति में कितना काम किया है। खेल और दंगल भी किये गये। इसके बाद श्री बी० के० मेहता रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज तथा आनरेरी सेक्रेटरी कोआपरेटिव मिल्क यूनियन, इलाहाबाद ने इनाम बाँटे। पड़ोस के गाँवों के स्कूल के विद्यार्थियों ने ड्रिल दिखाया और खेल में भी भाग लिया। ग्राम-बैंक के चेयरमैन पंडित सिद्धनारायण तिवारी ने इस कान्फ़्रेंस को सफल बनाने में बहुत कुछ योग दिया।

मानिकपुर के मेले में सहयोग-कार्य

मानिकपुर का मेला बहुत बड़ा होता है और हज़ारों गाँववाले यहाँ इकट्ठा होते हैं। इस वर्ष भी यहाँ क़रीब ७०,००० आदमी आये थे। गत वर्ष की तरह सहयोग-विभाग ने यहाँ कुछ लाभदायक काम किया। पहले दिन सहयोग की आवश्यकता और ज़िले के सहयोग-कार्य का विवरण बताते हुए भाषण दिये गये। सहयोग-समितियों के ख़ास दिन स्काउटों ने पौसला चलाकर काफ़ी काम किया। यहाँ के कैम्प ने भूले हुओं को आश्रय दिया और उनको ठिकाने लगाया।

कोआपरेटिव मार्केटिंग पर एक डिमान्स्ट्रेशन दिया गया और इससे बराबर जनता आकर्षित होती रही। आनेवालों को समझाने के लिए सहयोग के लाभ पर छोटे-छोटे भाषण सुनाये गये।

इस कैम्प को सफल बनाने में इफ़्तिख़ार अहमद, रामपुर गदौली के सुपरवाइज़र ने अधिक योग दिया।

"कोआपरेटिव कान्फ़रेंस, सरइया"

गवर्नमेन्ट स्टेट के बारह गाँवों की कोआपरेटिव सोसाइटियों की एक कान्फ़रेंस मौज़ा सरइया ज़िला ग़ाज़ीपुर में बड़े समारोह के साथ की गई। ग़ाज़ीपुर के कलेक्टर श्री ए० एस० मनरो, आई० सी० एस० ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। लगभग एक हज़ार दर्शकों की भीड़ थी, जिनमें स्पेशल मैनेजर कोर्ट आफ़ वार्ड्स, मैनेजिंग डाइरेक्टर डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक, चेयरमैन रूरल डेवलपमेन्ट ऐसोसियेशन, वाइस चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक, हेल्थ आफ़िसर म्यूनिसिपल बोर्ड, ग़ाज़ीपुर और प्रिंसिपल म्यूज़िक डिपार्टमेन्ट हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

कान्फ़रेंस की कार्रवाई ईश-प्रार्थना के

साथ शुरू की गई। इसके बाद सर्किल रिपोर्ट पढ़कर सुनाई गई जिसमें साल के अन्दर सर्किल में जो उन्नति के कार्य किये गये थे उनका तफ़सीलवार वर्णन था। तत्पश्चात् डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक ग़ाज़ीपुर के वाइस चेयरमैन बाबू चन्द्रिकाप्रसाद और सरइया कोआपरेटिव सोसाइटी के सरपंच पं० चन्द्रशेखर मिश्र ने अपने भाषणों में सहयोग समितियों के लाभ जनता को समझाये।

कई आवश्यक प्रस्ताव पास किये गये जिनमें से ख़ास गवर्नमेन्ट स्टेट के गाँवों की चकबन्दी और अफ़यून की काश्त पर थे। चकबन्दी के प्रस्ताव में मैनेजर कोर्ट आफ़ वार्ड्स से प्रार्थना की गई थी कि वे इस सिलसिले में सोसाइटियों की मदद करें। बड़े हर्ष की बात है कि मैनेजर कोर्ट आफ़ वार्ड्स ने सोसाइटियों की इस प्रार्थना को स्वीकार किया और इस बात का वादा किया कि वे गवर्नमेंट से इस काम के लिए एक नायब तहसीलदार को माँगेंगे जिसकी उनको पूर्ण आशा है कि मिल जायगा।

अफ़यून की काश्त के प्रस्ताव में ज़िला मैजिस्ट्रेट से इस बात की प्रार्थना की गई थी कि कोआपरेटिव सोसाइटीवाले गाँवों में भी इसकी काश्त के लिए दादनी बँटवाई जावे। ज़िला मैजिस्ट्रेट ने सोसाइटियों के इस प्रस्ताव को बड़े ध्यान से सुना और वादा किया कि अगले साल वे इस बात के लिए कोशिश करेंगे।

समय-समय पर हिन्दू-विश्वविद्यालय के सङ्गीताचार्य के गानों-द्वारा कान्फ़रेंस का प्रोग्राम काफ़ी मनोरंजक बना दिया गया था।

सभापति महोदय ने अपने भाषण में अफ़यून, आलू, ईख और दूसरी पैसा कमाने-वाली फ़सलों की उपज और बिक्री पर ज़ोर दिया तथा ग्रामोन्नति के अन्य साधनों पर भी प्रकाश डाला। अन्त में कोआपरेटिव सोसाइटी के मेम्बरों ने खेल-तमाशे दिखलाये। इसके अलावा सरइया कोआपरेटिव सोसाइटी के एक मेम्बर ने अपने सीने पर २० मन पक्का वज़न का एक पत्थर रक्खा तथा अपने ऊपर से आदमियों से भरी हुई एक बैलगाड़ी उतारी।

कान्फ़रेंस की कार्रवाई समाप्त होने के पश्चात् सरइया कोआपरेटिव सोसाइटी के सरपंच पं० चन्द्रशेखर मिश्र ने आये हुए मेहमानों को दावत दी जिनकी संख्या लगभग डेढ़ सौ के थी।

शिवराजपुर ग्रुप कान्फ़रेंस

शिवराजपुर गंगास्नान का मेला फ़तेहपुर ज़िले का सबसे बड़ा मेला है। कम से कम आधी लाख जनता वहाँ हर साल इकट्ठी होती है। रायबहादुर दलीपमानसिंह के सभापतित्व में एक ग्रुप कान्फ़रेंस की गई। पशु और घोड़ों की प्रदर्शनी के साथ साथ एक उद्योग प्रदर्शनी भी की गई थी। डिस्ट्रिक्ट रूरल डेवलपमेन्ट एसोसियेशन की वार्षिक बैठक भी यहाँ होती है। रात्रि में स्काउटों ने कैंपफ़ायर किया। प्रातःकाल प्रभातफेरी में तरह तरह के देहाती गाने गाते थे और उनके द्वारा गाँवों मे किसी न किसी प्रकार के सुधार का वर्णन था। विभिन्न विभाग के लोगों ने सहयोग, ग्रामोन्नति, वैज्ञानिक कृषि, जन स्वास्थ्य और हाइजीन पर बहुत से भाषण दिये गये। दोनों दिन दंगल, कूद और अन्य देहाती खेल खेले गये। सबसे दिलचस्प बात थी प्रांतीय वॉलीबाल टूर्नामेंट, जिसमें इटावा, कानपुर, इलाहाबाद और फतेहपुर की टीमों ने भाग लिया। इस समय पर ख़ूब प्रचार किया गया।

सिकन्दराबाद ग्रुप कान्फ़रेंस

भराना सोसाइटी के सरपंच श्री बाबूलाल के सभापतित्व में बुलन्दशहर बैंक के संरक्षण में सिकन्दराबाद सर्किल की सहयोग समितियों की एक ग्रुप कान्फ़रेंस की गई। ११ समितियों के करीब दो सौ मेम्बर और ग़ैर मेम्बर इसमें सम्मिलित थे। प्रार्थना के बाद कार्यवाही आरम्भ हुई और निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास किये गये—

(१) भविष्य में गाँव के छोटे मोटे झगड़े का निबटारा ग्राम बैंक की पंचायतें करेंगी।

(२) सिकन्दराबाद सर्किल की सहयोग समितियों के मेम्बर अपना माल सिकन्दराबाद अरहट दुकान के ज़रिये बेचेंगे।

इसके बाद श्री आर० पी० माथुर, मेरठ कोआपरेटिव सोसाइटीज़ के असिस्टेंट रजिस्ट्रार ने कोआपरेटिव यूनियन द्वारा ख़रीद-फ़रोख़्त करने के लाभ को बताया। कान्फ़रेंस में उपस्थित लोगों ने इस भाषण को बहुत पसन्द किया। इसके बाद सहयोग सम्बन्धी गानों से जनता का मनोविनोद किया गया।

बुलन्दशहर ग्रुप कान्फ़रेंस

बुलन्दशहर सर्किल की सहयोग समितियों की एक ग्रुप कान्फ़रेंस मिर्ज़ापुर में की गई। मेम्बरों के अलावा क़रीब १४ समितियों ने भाग लिया। इस अवसर पर पड़ोस के गाँव से भी हज़ारों लोग इकट्ठा हुए थे। पड़ोस के गाँव के बहुत से सभ्य लोगों ने कान्फ़रेंस में भाग लिया। गाँव के स्कूल के विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया और बहुत से खेलों का भी प्रदर्शन किया।

क़र्ज़ की क़िश्त और बकाया लगान सम्बन्धी बहुत से आवश्यक प्रस्ताओं पर विचार हुआ और वे पास हो गये।

सालाना जलसा कोआपरेटिव लैंड मोरगेज़ सोसाइटी, उरई

कोआपरेटिव लैंड मोरगेज़ सोसाइटी, उरई ने अपनी सातवीं सालाना मीटिंग मुवर्रख़ः ९-११-१९४१ को ज़ेर सदारत जनाब शफ़ीक़अहमद साहब डिप्टी कलेक्टर, उरई मुनअक़िद हुई। जलसे में कसीर तादाद मेम्बरान ने शिरकत की और सोसाइटी के मुताल्लिक़ काफ़ी दिलचस्पी ज़ाहिर की। जलसे में सालाना रिपोर्ट, बजट व आडिट नोट वग़ैरह हस्ब मामूल पेश किये गये और बिना खिला-

फ़त मंजूर हुए। बाबू रमाशंकर साहब सक्सेना जो सोसाइटी के इब्तदा से आनरेरी सेक्रेट्री हैं फिर से सेक्रेट्री चुने गये और मिरज़ा मुहम्मद हादी सरकिल आफ़िसर, उरई ज्वाइन्ट सेक्रेट्री चुने गये। सोसाइटी की माली हालत ३० जून १९४१ की हस्ब ज़ैल मुख्तसर तौर पर लिखी है--

कारबारी सरमाया--५३,२११)

रिज़र्व फंड--१,६२५)

दीगर फंड--१,५८०)

सरमाया हिस्सा--४,६२१)

क़र्ज़ा ज़िम्मे मेम्बरान--३९,१५८)

बक़ाया--२,०००)

वसूलयाबी--८६ फ़ी सदी

तक़सीम मुनाफ़ा--५ फ़ी सदी

जलसा सालाना जालौन डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक, उरई

जालौन डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक लि० उरई की ३४वीं सालाना मीटिंग २१ दिसम्बर सन् ४१ ई० को ज़ेर सदारत ख़ानबहादुर सय्यद अशरफ़अली साहब कलेक्टर ज़िला जालौन मुनअक़िद हुई। जनाब एस० एस० हसन साहब, आई० सी० एस० रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़, यू० पी० व नीज़ जनाब इनामुर्ररहमान साहब ए० आर० सरकिल, इलाहाबाद ने बराय मेहरबानी जलसे में शिरकत फ़रमाई।

जनाब रजिस्ट्रार साहब बहादुर ने बैंक की मौजूदा माली हालत व उसके इन्तज़ाम की काफ़ी तारीफ़ की। इस बैंक को इस सूबे का मॉडल कोआपरेटिव बैंक बतलाया और पं० शिवनाथ मिश्रा एडवोकेट आनरेरी मैनेजिंग डाइरेक्टर को उनकी दिलचस्पी के लिए शुक्रिया अदा किया।

डाइरेक्टरान का चुनाव हस्ब मामूल इस जलसे में हुआ और पं० शिवनाथ मिश्रा एडवोकेट, कुँवर विश्वम्भरनाथ सक्सेना व सेठ गोकुलदास फिर से डाइरेक्टर चुने गये। सालाना जलसा ख़त्म होने पर बोर्ड की मीटिंग हुई और बाबू रमाशंकर सक्सेना वाइस चेयरमैन व पं० शिवनाथ मिश्रा एडवोकेट आनरेरी मैनेजिंग डाइरेक्टर चुने गये। रायसाहब बाबू कामतानाथ सक्सेना चेयरमैन एजूकेशन कमेटी डि० बोर्ड जालौन व ठा० राजारामसिंह साहब डिप्टी कलेक्टर, उरई बोर्ड में कोआप्ट किये गये।

बैंक की माली हालत जो ३० जून सन् १९४१ को थी--

(१) कारोबारी सरमाया--३,९७,९०७)

(२) हिस्सा सरमाया--८५,०७४)

(३) रिज़र्व फंड--९६,६७३)

(४) दीगर फंड--४९,१२०)

(५) कुल ज़ाती सरमाया--२,३०,८६७)

(६) ज़ाती सरमाया व कारोबारी सरमाया में निस्बत--५८ फ़ी सदी

(७) सोसाइटियों पर क़र्ज़ा --१,३९,२३१)

(८) सोसाइटियों से वसूली ९४·५ फ़ी सदी

(९) बक़ाया व कुल क़र्ज़ में निस्बत १७·७ फ़ी सदी

(१०) शरह तक़सीम मुनाफ़ा

(अ) तरजीही हिस्सेदार--६ फ़ी सदी

(ब) मामूली हिस्सेदार--४॥ फ़ी सदी

सैकरीन या मिठाई-सार

दिन भर प्रयोगशाला में बहुत व्यस्त रहने के बाद एक रासायनिक थका-माँदा और भूख से बेचैन होकर घर आया और आते ही भोजन पर बैठ गया। एक ग्रास रोटी मुँह में देते ही उसने अपनी बीबी से पूछा, "तुमने रोटी में चीनी डाल दी है आज!" रोटी मीठी लगी, इसी लिए उसने ऐसा कहा।

बीबी से जवाब मिला, "जैसी रोटी सब दिन तुम्हें मिलती है, वही आज भी है।" अच्छा, इस टुकड़े को तो खाकर देखो। रासायनिक ने उस टुकड़े का भी एक टुकड़ा अपनी अँगुलियों से तोड़कर अपने मुँह में रखा। वह भी मीठा था। उसने दूसरा टुकड़ा काटकर अपनी बीबी के मुँह में ठूँस दिया, वह भी मीठा ही निकला।

रासायनिक का नाम था फाल्हवर्ज, अमरीका के जौन होपकिन्स यूनिवर्सिटी का एक विज्ञानवेत्ता! रोटी के अनायास मिठास ने उसे हैरत में डाल दिया। जब उसकी बीबी रोटी स्पर्श करती थी तब उसमें कोई विशेष मिठास नहीं आती थी, लेकिन जब वह स्वयं अपनी अँगुलियों से रोटी छू देता था तब वह मीठी लगने लगती थी। तब उसने सतर्क होकर अपनी जीभ को अपने हाथ पर रखा और पता लगाया कि उसका हाथ ही हद से ज़्यादा मीठा हो रहा है। लेकिन आज कई दिनों से उसने चीनी का स्पर्श भी नहीं किया था। फिर यह मिठास आई कहाँ से?

इस घटना ने फाल्हवर्ज को परेशान कर दिया। यह निश्चित था कि किसी भेद-भरे तरीक़े से उसके हाथ को कोई ऐसी सार वस्तु स्पर्श कर गई थी जिसका स्वाद बहुत ज़्यादा मीठा था। हाँ, वह चीनी नहीं थी। फिर वह थी क्या और आई कहाँ से? रासायनिक ने उन चीज़ों के विश्लेषण की ओर अपने दिमाग़ को दौड़ाया जिनका प्रयोग उसने प्रयोगशाला में किया था। वहाँ उस दिन वह कोलतार या अलकतरा पर प्रयोग कर रहा था और किसी मीठे पदार्थ का कोई भी प्रयोग उसने नहीं किया था। तो क्या कोलतार के भीतर भी इतनी मिठास छिपी थी?

दूसरे दिन उसने इस समस्या को दुनिया के परदे पर लाने का निश्चय किया। उसने यह सिद्ध कर दिखाया कि कोलतार से एक ऐसा सार पदार्थ निकल सकता है जो चीनी से भी कहीं ज़्यादा मीठा है। बस, यही सार सैकरीन नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। अचानक रोटी मीठी हो जानेवाली घटना ने मनुष्य जाति को एक ऐसी महत्त्वपूर्ण वस्तु का पता दिया जो चीनी का काम दे सकती है।

फाल्हवर्ज के उस अनचाहे प्रयोग के [illegible] से सैकरीन बनना शुरू हो गया। आज संसार में कोलतार से बड़े पैमाने पर सैकरीन तैयार होने लगा है। चीनी के मिठास से इसकी मिठास चालीस गुना ज़्यादा है यानी एक तोला सैकरीन में आधा सेर चीनी के मिठास के बराबर मिठास है।

'किसान' से

जब मैं लन्दन वापस आई

लेखिका, श्रीमती हेलन डगलस इरविङ्ग

मैं एक वर्ष के बाद लन्दन वापस आई हूँ। इस प्राचीन शहर के इतिहास में यह वर्ष बहुत ही करुणाजनक और वीर घटनाओं से परिपूर्ण है।

एक वर्ष पहले लन्दन सतर्क और आत्म-विश्वास पर था। रक्षक और स्वच्छ चमकीले गुब्बारे आकाश में उड़ रहे थे। प्रत्येक रात्रि को संध्या से लेकर प्रातःकाल तक सारे शहर में ब्लैक आउट से अंधकार छाया रहता था। आनन्द-विनोद के साधन कम कर दिये गये थे और शहर का ऐश-आराम विलीन सा हो रहा था। बहुत से बाल-वृद्ध और अपाहिज शहर छोड़कर देहातों में चले गये थे।

इस समय युद्ध की ध्वनि इस द्वीप से बहुत दूर में थी अतः, बहुत से अनजान और कुछ विचारवालों के लिए यह युद्ध का आतंक निर्मूल सा जान पड़ता था। कभी-कभी वे इसको भूल जाते थे और कभी-कभी वे यह सोचते थे कि यह असम्भव भी है।

तत्पश्चात् सन् १९४० का वसंत आया। वह भयानक वसंत जब कि फ़्रांस ने सिर झुका दिया। जून के प्रथम सप्ताह में जब कि लन्दन के बहुत से लोगों ने फ़्रांस की राजधानी पेरिस में जाकर उसकी सुन्दरता तथा उसकी सभ्यता तथा कला का आनन्द लेने का प्रोग्राम बना रहे थे, उसी समय उन्हें मालूम हुआ कि उस शहर ने आत्म-समर्पण कर दिया है। यह वास्तव में दुःखद घटना थी। लेकिन पतझड़ में हिटलर ने लन्दन पर अपना 'ब्लिज़रिंग' (हवाई हमला) आरम्भ कर दिया। इस भयानक सत्य ने लन्दनवासियों के हृदय से पूर्ण रक्षा का झूठा विचार उठा दिया और वे तत्काल घटना का सामना करने को तैयार हो गये।

हवाई हमले ने भयानक और दुःखद चोट की। वे सुन्दर इमारतें जिनके साथ बहुत-सी मधुर स्मृतियों का सम्बन्ध था—दी मिडिल टेंपिल हॉल जहाँ रानी एलिज़ावेथ ने शेक्सपियर-रचित 'ऐज़ यू लाइक इट' का अभिनय देखा था; सेंट जेम्स चर्च और पिक्का डिल्ली जहाँ कि जेम्स द्वितीय के समय सुन्दर और धनी स्त्रियाँ प्रातःकाल वायु-सेवन करने या रविवार को प्रार्थना करने जाती थीं, आज नष्ट हो गई हैं।

ओल्ड वेस्ट एण्ड—बर्कले स्क्वायर, मैनचेस्टर स्क्वायर-जहाँ कि कुछ दिनों पहले सुन्दर इमारतें दिखाई देती थीं और मालूम होता था कि ये सदैव ऐसी ही रहेंगी वहाँ आज टूटे-फूटे खँडहर दिखाई दे रहे हैं।

शहर के प्रत्येक कोने में इसी प्रकार के टूटे-फूटे मकान दिखाई देते हैं यद्यपि उनमें रोते और बिलबिलाते हुए स्त्री और पुरुष नहीं दिखाई देते हैं। यदि आप किसी परिचित मित्र का घर या किसी परिचित होटल या रेस्टोरेंट को खोजें तो आपको नष्ट-भ्रष्ट वस्तुएँ दृष्टिगोचर होंगी।

यदि आप सेन्ट पाल कैथड्रिल के पास स्थित पैटरनास्टर रोको जाकर देखें जहाँ कि मध्य-युग की पुस्तकें रची और बेची गई थीं आज नहीं है। परम्परागत यह साहित्य का घर आज बिखरे हुए ईंटों और धूल से भरा-पुरा है।

इससे भी पूरब की ओर बहुत-से घर और सड़कें बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट हो गई हैं।

लेकिन आज भी लन्दन मृतक नहीं हुआ, न उसे घातक घाव ही लगा। आज भी शहर की सड़कें और स्क्वायर अपनी मर्य्यादा को स्थापित किये हैं। कुछ इमारतें नष्ट हो गई हैं लेकिन बहुत-सी अब भी खड़ी हैं। लन्दन की बहुत-सी इमारतें जिनका गहरा सम्बन्ध लन्दन के जीवन से है वे अब भी नष्ट नहीं हुई हैं। सेन्ट पाल्स कैथड्रिल, वेस्ट-मिनिस्टर एबे जहाँ सम्राट् की राजगद्दी होती है और जहाँ वहाँ के प्रसिद्ध लोगों की समाधि बनती है, दी कैथोलिक वेस्टमिनिस्टर एबे, दी रायल पैलेस, दी टावर आफ़ लन्दन, दी रायल एक्सचेंज और दी बैंक आफ़ इँगलैंड अब भी स्थित हैं यद्यपि इनमें से कुछ टूट-फूट गये हैं।

इस चित्र में स्त्रियाँ बाज़ार करती हुई दिखाई गई हैं। कुछ दूकानदार बर्दी पहने हुए हैं। एक के सर पर फ़ौजी अफ़सर की टोपी है। दूकान के सामने शीशे के स्थान पर बोर्ड लगा दिये गये हैं जहाँ कुछ चुने हुए सामान दिखाये जाते हैं। दूकानें खुली हुई हैं और सामानों से भरी हुई हैं। ये स्त्रियाँ पारसल और कुछ फल खरीद कर ले जा रही हैं।

यह दृश्य पिकाडिल्ली सरकस का है। साल भर बाद लंदन वापस आनेवाले किसी भी व्यक्ति को यहाँ कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई देता। सिनेमा और रेस्टोरेन्ट बराबर चालू हैं और उनके पास अब भी मोटरों का जमघट दिखाई देता है। हाँ, नये शेल्टरों (रक्षागृहों) के देखने से थोड़ी सी नवीनता अवश्य दिखाई देती है।

लंदन की स्ट्रीट मार्केट का एक दृश्य। सामने दूकानदार अपने सामान ख़रीदारों को बेच रहे हैं। पीछे बम से गिरी हुई दूकान का एक दृश्य दिखाई दे रहा है।

लन्दन इतना विस्तृत और बड़ा है, इसकी स्मृतियाँ और इसकी भव्य इमारतों का मूल्य इतना अधिक है कि इतने भयानक और व्यापक आक्रमण में भी यह शक्ति नहीं कि वह लन्दन की ख्याति को नष्ट कर सके या उसकी तरह-तरह की दिनचर्य्याओं को रोक सके।

लन्दन अब भी लन्दन है; तेज़ और बड़ी-बड़ी बसें आज भी सड़कों पर दौड़ती हैं, दुकानें और आफ़िस अब भी खुले हुए हैं यद्यपि उनमें से बहुत से अपना काम टूटी-फूटी जगहों में करते हैं; और आज भी लोग ओल्ड लन्दन में ख़ूब चलते-फिरते और बसों पर चलते हैं।

लोगों की रहन-सहन में काफ़ी फ़र्क़ दिखाई दे रहा है। जनता में कार्य-तत्परता आगई है। सुस्त लोग या तो कहीं चले गये हैं या चुस्त हो गये हैं। बहुत-से लोग तो शहर की रक्षा में लग गये हैं। बहुत-से लोग उनकी मदद करते हैं जिनका घर नष्ट हो गया है और जो घर-विहीन हो गये हैं।

गवर्नमेन्ट डिपार्टमेन्ट, फ़ारेनट्रेड और पोर्ट का काम चला जा रहा है और बहुत से लोग इस कार्य में लग गये हैं। इन काम करनेवालों को उचित घर और उचित भोजन देना आवश्यक है अतः व्यापार, घरेलू काम आदि बराबर हो रहे हैं। शहर में बहुत से संघ हवाई हमले से पीड़ित लोगों की रक्षा या मदद करने के लिए और समुद्रपार तथा अन्य सूबों से आनेवाले निराश्रितों की मदद करने के लिए बने हैं। लन्दन होकर जानेवाले सिपाहियों, समुद्री नाविक या हवाई उड़ाकों के लिए बहुत से होस्टल और रेस्टोरेंट बने हुए हैं।

यह तत्पर जनता बड़ी गम्भीरता से काम कर रही है क्योंकि यह वह काम कर रही है जिसे वह बहुत आवश्यक समझती है और दूसरे इसलिए कि इसकी स्मृतियाँ बहुत ही दुःखद हैं तथा उनका लक्ष निश्चित और दृढ़ है।

स्मृतियाँ उन भयानक रात्रियों की हैं जब कि आकाश में वायुयान मँडरा रहे थे, धड़-धड़ बम फट रहे थे, रक्षक वायुयान भेदक तोपें तड़प रही थीं, चमकती हुई अग्निप्रकोप था और काल सामने खड़ा था। उनका लक्ष यह था कि शान्तिप्रिय देशों पर इस प्रकार के होनेवाले आतंक का नाश सदा के लिए संसार से उठ जाय।

लन्दन की जनता सीधी-सादी, प्रसन्न-चित्त और बनावटी दिखावे से दूर रहनेवाली

हैं। वह मुसोलनी और हिटलर से घृणा नहीं करती बल्कि उनपर हँसती है। इसका कारण यह है कि ये डिक्टेटर अभिनायक हैं अतः उनके काम भयानक न होकर हास्यास्पद होते हैं।

लन्दनवासियों ने डिक्टेटरों, हवाई हमलों तथा हवाई हमले के भयानक कारनामों और दुर्घटनाओं के दिलचस्प उपनाम रखे हैं। उनका जीवन बहुत तत्पर है फिर भी उसे वे अपने हँसमुख मनोविनोद से छिपा देते हैं।

उनके मनोविनोद विभिन्न होते हैं। दोपहर के बाद कुछ सिनेमाघर और थियेटर-कम्पनियाँ अपना प्रदर्शन करती हैं। दोपहर के समय काम से छुटकारा पाने पर लोग नाच व गाने का आनन्द धूम-धाम से मनाते हैं। जाड़े में पुस्तकों की बिक्री कसरत से हुई और आज जब लोग हवाई हमले के डर और ब्लैक आउट के कारण अपने घरों में रहते हैं तो इन्हीं पुस्तकों को पढ़ते हैं। गर्मी में लोग समय-समय सड़कों पर टहलते हैं और आनन्द लेते हैं। जिन लोगों के घर नष्ट हो गये हैं और कुछ लोग जिन्हें अपना घर सुरक्षित नहीं जान पड़ता है वे शेल्टरों में या जमीन के अन्दर बने हुए रेलवे स्टेशनों पर रहते हैं।

रात्रि के समय इन रेलवे स्टेशनों पर जाना बहुत ही आनन्ददायक होता है। वे इतनी गहराई पर बने हैं कि हवाई हमले या बम की चोट से बहुत दूर और सुरक्षित हैं। प्लेटफार्म पर चमकती हुई बिजलियाँ जलती हैं और बहुत से कुटुम्ब आनन्दपूर्वक वहाँ पड़े हुए दिखाई देते हैं। संध्या समय हर जगह स्वच्छता दिखाई देती है। शान्ति रखने के लिए मार्शल नियुक्त रहते हैं। महिलायें चमकीली और रंगीन टोपियाँ पहने हुए गोली ट्रे लेकर घूमती हैं, जिनमें केक और चाय आदि सामान रखे रहते हैं और ये सब सामान सस्ते दामों में मिलते हैं। रात्रि

लंदन के सिपाही और वहाँ के चाकलेट मिठाई बेचनेवालों पर लड़ाई का कोई विशेष असर नहीं पड़ा है। सिपाही अपना काम करते हुए भी प्रसन्नचित होकर चाकलेट मिठाइयों को खरीदता है। इस चित्र में उन दोनों—सिपाही और मिठाई बेचनेवाले का एक दृश्य दिखाया गया है।

में शेल्टरों में रहनेवाले थोड़ा-थोड़ा भोजन करके आराम करने चले जाते हैं। सफ़ाई का अच्छा प्रबन्ध किया गया है और वहाँ पर स्वयंसेविकायें बराबर उनकी सेवा करने को तैयार रहती हैं, जिन्हें आवश्यकता होती है।

दस बजे से पूर्ण शान्ति का राज्य हो जाता है। इसके पश्चात् केवल गाड़ियों के चलने और सोनेवालों की आवाज़ के अलावा किसी प्रकार का शब्द नहीं होता है। लन्दन-निवासी गहरी और शान्त निद्रा में मग्न रहते हैं।

यद्यपि कभी-कभी बच्चों की चिड़चिड़ाहट और सोनेवालों की आवाज़ आ जाती है फिर भी अधिकांश लोग प्रसन्नचित्त रहते हैं। वे लोग सुरक्षित रहते हैं इसलिए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। लन्दननिवासी सच्चे नागरिक और मिलनसार हैं अतः आज होनेवाले भयानक कृत्यों तथा युद्ध ने उनमें अपने नागरिक बन्धुओं के प्रति अधिक प्रेम और सहानुभूति उत्पन्न कर दी है।

बुद्ध-वाणी

स्वच्छ पानी का बर्तन जब गरम हो जाता है, तब उस पानी से भाप निकलने लगती है और वह खौलने लगता है। उस समय मनुष्य उस खौलते हुए पानी में अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकता।

इसी तरह मनुष्य जब क्रोधाभिभूत होता है, तब उसकी समझ में यह नहीं आता कि उसका आत्म-हित किसमें है।

× × ×

जो स्मृतिमान मनुष्य अपने भोजन की मात्रा जानता है, उसे अजीर्ण की तकलीफ़ नहीं होती। वह आयु का पालन करते-करते बहुत वर्षों के बाद वृद्ध होता है।

हल पुरस्कार-प्रतियोगिता

नीचे लिखे प्रश्न का उत्तर दीजिए और २०), १०) और ५) रुपये का नक़द इनाम लीजिए

नीचे एक प्रश्न दिया जा रहा है। इसका उत्तर हिन्दी या उर्दू में लिखकर भेजनेवालों में तीन को, जिनके उत्तर सर्वोत्तम होंगे, क्रमशः २० रुपये, १० रुपये और ५ रुपये का नक़द पारितोषिक दिया जायगा। इस पारितोषिक के नियम भी यहाँ दिये जा रहे हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने से पहले इन नियमों को अच्छी तरह से पढ़ लेना चाहिए।

प्रश्न

ग्राम-जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली एक कहानी लिखिए।

यह कहानी ३,००० शब्दों यानी 'हल' के ३ छपे सफ़हों से अधिक बड़ी न होनी चाहिए। कहानी भेजनेवाले को कहानी के साथ एक सर्टीफ़िकेट भी इस आशय का भेजना चाहिए कि यह कहानी स्वयं उसी की लिखी हुई है और पहले कहीं छपी नहीं है।

नियम

१—यह प्रतियोगिता "हल" के सिलसिले में प्रारम्भ की जा रही है। जो उत्तर आयेंगे उनमें सर्वोत्तम तीन को पारितोषिक प्रदान किया जायगा। प्रतियोगिता में आये हुए उत्तरों की संख्या और विषय के अनुसार पारितोषिकों की संख्या और पुरस्कार की रक़म में कमी बेशी की जा सकेगी। यह प्रतियोगिता हल के अक्टूबर के अंक से प्रारम्भ हुई है और अप्रैल तक चलेगी।

२—इस मास की प्रतियोगिता के सिलसिले में भेजे जानेवाले उत्तर सम्पादक "हल", इलाहाबाद के पास १५ मार्च तक पहुँच जाने चाहिए। १५ मार्च सन् ४२ के बाद जो उत्तर भेजे जायँगे उनपर विचार नहीं किया जायगा।

३—उत्तर संक्षिप्त और विषय के भीतर ही होना चाहिए। विषय का ध्यान भाषा और शैली की अपेक्षा अधिक किया जायगा और संपादक को यह स्वाधीनता होगी कि वह उत्तर की शब्दावली में जैसा उचित समझे वैसा परिवर्तन कर दे।

४—इस तरह इस प्रतियोगिता में पुरस्कार पाने का एक विद्यार्थी को उतना ही अवसर है जितना कि अनुभवी लेखक को हो सकता है।

५—जिन लेखों पर पुरस्कार दिया जायगा वे सब ग्राम-सुधार-अफ़सर की सम्पत्ति होंगे और यह उनकी मर्ज़ी पर होगा कि वे उन्हें चाहे जिस शकल में प्रकाशित करायें या बिलकुल प्रकाशित न करायें।

६—इस प्रतियोगिता और इसके पुरस्कार के सिलसिले में आनेवाले पत्रों का उत्तर न दिया जायगा।

७—प्रतियोगिता में भाग लेनेवालों के पास उनकी रचनायें वापस न भेजी जायँगी इसलिए यदि वे चाहें तो अपनी रचना की प्रतिलिपि अपने पास रख सकते हैं। ये उत्तर हिन्दी, उर्दू या अँग्रेज़ी में लिखकर भेजे जा सकते हैं।

८—प्रतियोगियों को चाहिए कि वे साफ़-साफ़ और कागज़ के एक ही तरफ़ चौड़ा मार्जिन छोड़कर लिखें। उन्हें अपनी रचना के अन्त में अपना नाम और पूरा पता भी लिखना चाहिए। इस प्रतियोगिता का परिणाम और पारितोषिक विजेताओं का नाम उचित समय पर प्रकाशित किया जायगा।

९—ग्राम-सुधार-अफ़सर, संयुक्तप्रान्त का निर्णय अन्तिम होगा और वही सबके लिए मान्य होगा।

१०—पारितोषिक इस प्रकार दिया जायगा—

पहला पारितोषिक २० रुपये का, दूसरा १० रुपये का और तीसरा ५ रुपये का होगा।

ग्राम-सुधार-अफ़सर,
संयुक्तप्रान्त।

पिछले प्रश्न का उत्तर

गत दिसम्बर और जनवरी के महीनों में जो प्रश्न छपा था उसके उत्तर आगये हैं और वे अंतिम निर्णय के लिए ग्राम-सुधार अफ़सर के पास भेज दिये गये हैं। 'हल' के आगामी अंक में इस निर्णय की सूचना पुरस्कार-विजेताओं के नाम के साथ छपेगी। कुछ उत्तर भी छपेंगे।

सरिता से

लेखिका, श्रीमती कमला दीक्षित

श्वेत धवल उज्ज्वल मुक्ता-सी,
चंचल चपल चारु आभा-सी।
शान्त स्निग्ध कोमल शैशव-सी,
आलोकित शशि की ज्योत्स्ना-सी॥
कहाँ चली अपनापन खोकर?
पावन हिमगिरि का पद धोकर।
क्या ज्योतिर्मय करने जीवन!
या करतीं शैशव का परिवर्तन?
मत सखि बनना उन्माद भरी,
चिर तृष्णामय है जग जीवन।
स्वप्निल जग के आकर्षण में,
पग-पग पर अज्ञात पतन॥
तरल तरंगों से क्रीड़ा कर,
स्वर्ण जाल से स्वप्नों को तन।
कण-कण से भर-भर नव आँचल,
निर्मित करना बिखरा जीवन॥

काम की किताबें

हिन्दुओं की पोथी——लेखक, पंडित [illegible]दत्त शुक्ल, प्रकाशक, श्री रमादत्त शुक्ल, [illegible] ९३२ कल्याण-मन्दिर, प्रयाग। मूल्य [illegible]) डेढ़ रुपया।

मनुष्य के जीवन में धर्म एक मुख्य अंग है और कोई भी व्यक्ति प्रयत्न करते हुए भी उससे पृथक् नहीं रह सकता। मनुष्य की आन्तरिक शान्ति धर्म में ही होती है। इसी कारण समय आने पर नास्तिक भी आस्तिकता में परिवर्तित होते देखे जाते हैं। हिन्दू होते [illegible] प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने धर्म के बारे में जितना जान सके जानने का प्रयत्न करे; यही कारण है कि भारतीयों को अपनी धार्मिक अज्ञानता के कारण विदेश जाकर लोगों के सम्मुख लज्जित होना पड़ा है, जब वे प्रश्न करने पर भी अपने धर्म का सूक्ष्म परिचय भी न दे सके। अन्त में यह हमारी धार्मिक उदासीनता है जो हमें अवनति के गर्त में डुबा सकेगी; और ढूंढ़ने पर भी जिसका उदाहरण और कहीं न मिल सकेगा।

इंगलैंड के सुप्रसिद्ध विद्वान् बर्क का कथन है कि "वे लोग अपने मस्तक को गर्व से ऊंचा करने के कदापि अधिकारी नहीं; जो [illegible] अपनी सन्तान को नहीं सुधार सकते।" वास्तव में यह अक्षरशः सत्य है; हमें चाहिए कि हम किसी भी वातावरण में बहते हुए भी अपने धर्म को न भूलें और उसका अधिकाधिक प्रचार करें।

आधुनिक समय में यदि किसी भी व्यक्ति से यह पूछा जाय कि धर्म क्या है, उसका [illegible] आधार क्या है, हिन्दुओं के संस्कार क्या हैं आदि; तो ९० प्रतिशत लोग इसे बताने में असमर्थ रहेंगे। वास्तव में इसके लिए हमें [illegible] आनी चाहिए। प्रस्तुत पुस्तक इन्हीं [illegible] का सार है; इसको पढ़ना हिन्दू-धर्म के बारे में एक समुचित ज्ञान प्राप्त करना है। प्रत्येक हिन्दू का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने धर्म के महत्त्व और उसकी उपादेयता को समझे।

धार्मिक अनभिज्ञता का एक कारण और है कि अधिकतर लोग संस्कृत-भाषा से एकदम अशिक्षित हैं। पुस्तक में संस्कृत-श्लोकों के साथ ही साथ सरल हिन्दी में इस अभाव की पूर्ति की गई है। पुस्तक में जन्म से लेकर मृत्यु तक रात्रि से लेकर प्रातःकाल तक हमारे क्या कर्त्तव्य हैं; हमें उनका पालन किस प्रकार करना चाहिए यह सब उत्तम ढंग से समझाया गया है।

आजकल यद्यपि कीर्तन का प्रचार श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के प्रयत्न से दिनों-दिन बढ़ रहा है तथापि इतने से ही हमारा वास्तविक उत्तरदायित्व पूरा नहीं हो जाता। पुस्तक में हिन्दुओं के संस्कार, देवताओं और उनके पूजा करने की विधि, उनके स्तोत्र, पर्वों के विधान तथा उनपर आचरण आदि अनेक बातों को समझाकर बताया गया है। प्रत्येक हिन्दू को इससे लाभ उठाकर लेखक के परिश्रम को सफल बनाना चाहिए। प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति को इसकी एक प्रति रखना आवश्यक है। ——कालीप्रताप द्विवेदी

सयानी कन्या से——लेखक, श्री नरहरि परीख और महादेव देसाई, अनुवादक श्री काशीनाथ त्रिवेदी, प्रकाशक, नव-जीवन प्रकाशन-मंदिर, अहमदाबाद। मूल्य ।।), पृष्ठ-संख्या १२०।

प्रस्तुत पुस्तक गुजराती से अनुवादित है। इसका अनुवाद इतना सरल और सुन्दर है कि अनुवादित होते हुए भी पुस्तक की रोचकता और विषयगांभीर्य ज्यों का त्यों बना है। इसके लिए अनुवादक धन्यवाद के पात्र हैं।

'सयानी कन्या से' विषय गंभीर और आवश्यक है। भारतवर्ष के माता-पिता आज इतने शर्म और हया की पुतली बन गये हैं कि अपनी सन्तान को और विशेषकर अपनी कन्याओं को प्राकृतिक नियमों और उसके उद्गारों से अनभिज्ञ रखते हैं। यह पुस्तक उस महान् प्राकृतिक नियम का उन्मूलन करती है जो मनुष्य से लेकर जानवर, जीव-जन्तु और पौधों तक में पाया जाता है। यौवन, इसका प्रस्फुरण और जनन व्यापार सृष्टि का एक अंग है। इसकी उमंग में केवल वही पतित होते हैं जिनको इसका ज्ञान नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपनी पुत्री को पत्र-द्वारा उस प्राकृतिक नियम का पूर्ण वर्णन गम्भीरता के साथ बताया है। इन पत्रों से उन्होंने अपनी पुत्री को नहीं बल्कि भारतवर्ष की सारी पुत्रियों को जो इन विषयों से अनजान रहती हैं, ज्ञान दिया है। पुस्तक के प्रथम भाग में यह बताया गया है कि किस प्रकार युवा के चिह्न आते हैं और उनसे किस प्रकार अपने को नियंत्रित करना चाहिए। इसके बाद संक्षिप्त में प्रजनन व्यापार पेड़-पौधे से लेकर मनुष्य तक समझाया गया है। पुस्तक के दूसरे भाग में यह बताया गया है कि कन्या को किस प्रकार से अध्ययन करना चाहिए और किन किन नियमों का पालन करना चाहिए। अन्त में लेखक ने कहा है कि स्त्री तो वहीं पूर्ण है जहाँ "गर्भाधान के बाद तुरन्त ही गर्भिणी अपने गर्भ की रक्षा के पवित्र कर्त्तव्य को समझ ले, तो वह अत्यन्त उपकार कर सकती है। गर्भ की रक्षा का अर्थ यह है कि गर्भिणी नौ महीनों तक संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे, खान-पान में संपूर्ण संयम से काम ले, प्रसन्नचित्त रहे, सद्वाचन और सद्विचार में समय बिताये और इस प्रकार गर्भ का पोषण करके अपने पवित्र कर्त्तव्य का पालन करे।" यदि ऐसा हो "तो पुरुष जगज्जननी की जितनी पूजा आज करते हैं उससे कहीं अधिक करने लगें।"

पुस्तक वास्तव में बहुत ही उपयोगी है। प्रायः इस प्रकार की पुस्तकों के पढ़ने से जो कुत्सित विचार उठते हैं उनसे यह पुस्तक सर्वथा रहित है।

——चन्द्रबलीसिंह, बी० ए०

मार्शल द्वीपसमूह

आदर्श पतियों का देश

लेखक, श्री चन्द्रबलीसिंह बी० ए०

संसार विभिन्न रीति-रिवाजों का आगार है। प्रशान्त महासागर जो आज मित्रराष्ट्रों और धुरीराष्ट्रों का युद्ध-क्षेत्र बना हुआ है कुछ विचित्र रीति-रिवाजोंवाला है। इसी प्रशान्त महासागर के एक किनारे जनतंत्रवादी राज्य अमरीका है जहाँ स्त्रियों को प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसी सागर के दूसरे किनारे चीन और जापान हैं जहाँ स्त्रियों का स्थान उच्च होते हुए भी अमरीका के समान नहीं है। जापान और चीन एशिया महाद्वीप के भाग हैं। भारतवर्ष भी इसी एशिया का एक खण्ड है। यहाँ पर स्त्रियों की जो सामाजिक अवस्था है उससे पाठकगण स्वयं परिचित हैं। प्रशान्त महासागर के बीचो-बीच लहरों को चुम्बन करनेवाले बहुत-से द्वीपसमूह हैं। इनमें मार्शल द्वीपसमूह भी है। इसकी विशेषता यह है कि यहाँ पूर्ण महिला-राज्य है। वर्तमान युग की महिलायें जिन अधिकारों के लिए प्रयत्न कर रही हैं वे अधिकार मार्शल द्वीपसमूह की स्त्रियों के परम्परागत अधिकार हैं। आप यों कह सकते हैं कि यहाँ पूर्ण महिला-साम्राज्य है। इस द्वीप की महिलाओं और उनके सेवक पतियों का परिचय देना ही इस लेख का तात्पर्य है।

लेख को पढ़कर शायद पाठकगण कुछ भड़कें लेकिन यह भड़कने का विषय नहीं। भारतवर्ष में जब 'इस्तानों' का प्रश्न चल रहा था उसी समय कांग्रेस के एक कार्यकर्त्ता ने जनता के समक्ष 'ज़नानिस्तान' का भी प्रस्ताव किया था। इस ज़नानिस्तान में क्या होता है उसका सच्चा और सुन्दर वर्णन आप अधोलिखित लेख में पढ़िए।

मार्शल द्वीपसमूह में स्त्री ही मर्द है और उसका यह पद वहाँ के पुरुषों ने सहर्ष स्वीकार किया है। स्त्री अपना समय आराम से व्यतीत करती है। सब लोग उसकी इज्ज़त करते हैं और उसका विशेष ध्यान रखते हैं। कुटुम्ब उसी के नाम से चलता है। स्त्री अपनी विवाह की इच्छा प्रकट करती है लेकिन प्रणयाभिनय पुरुष को ही करना पड़ता है। कुटुम्ब की सारी सम्पत्ति की भागी स्त्री होती है, पुरुष केवल सेवकमात्र है और स्त्री के सुख तथा आनन्द की एक आवश्यकता। यह तो है पुरुष की सामाजिक स्थिति। अब उसके गार्हस्थ्य जीवन को देखिए। वह भोजन बनाता है, बच्चों को खिलाता-पिलाता है, बच्चों की सेवा-शुश्रूषा करता है और मशीन-द्वारा केवल अपने ही नहीं, अपनी स्त्री और बच्चों के कपड़े भी सीता है। वह जीविका उपार्जन करता है, उद्यान का काम देखता है और बोझा भी ढोता है। वह स्वयं तो साधारण कपड़े पहनता है लेकिन उसकी स्त्री और पुत्रियों को रेशमी वस्त्र ही चाहिए। अतः स्त्री व्यर्थ बैठी हुई गपशप में समय व्यतीत करती है और पुरुष उसकी सुविधा के लिए दिन भर दिल तोड़ परिश्रम करता है।

यदि यह बात यहाँ हो तो कुटुम्ब कलह का आगार बन जाय परन्तु प्रसन्नता तो यह है कि मार्शल द्वीप का प्रत्येक विवाहि[त] पुरुष प्रसन्न और संतुष्ट रहता है। पति बराबर अपनी पत्नी का सच्चा प्रेमी रहता है। अपनी स्त्री की इच्छाओं की पूर्ति करने को वह अपनी बहादुरी समझता है और कठिन से कठिन कार्य करता है। वह अपने कुछ भी परवाह नहीं करता है लेकिन घंटों बैठकर अपनी स्त्री के केश-कलाप करता है, इत्र आदि से उसे सुवासित करता है और उसे सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित करता है। भारतवर्ष में भी यह भाव शायद श्रीकृष्ण में पाये जाते थे। कहते हैं वे गोपियों का शृंगार स्वयं करते थे। उनकी वेणी अपने हाथों गूँथते थे। मार्शलवासी इससे भी आगे बढ़े हुए हैं। यदि स्त्री को कहीं नाली वगैरह पार करनी हो तो पति उसके लहँगे को स्वयं सिकोड़ता है और उसे अपनी गोद में उठाकर ले जाता है। बैठने के लिए सुन्दर चटाइयाँ और आहार के लिए सुन्दर भोजन भी देता है। कितनी भाग्यशाली हैं वे मार्श[ल]

चाइल्ड वेलफेयर सेन्टर में एक भारतीय न[र्स]

बम्बई-सेवासदन की वार्षिक साधारण सभा की सभानेत्री कुमारी एम० ए० कैप्टेन अन्य प्रमुख महिलाओं के साथ

...स्त्रियाँ! लेख पढ़ते समय शायद बहुत-से ...क और पाठिकाओं के मुंह में पानी आ ...।

इन सुविधाओं के कारण बहुत-सी स्त्रियाँ ...परवाह हो गई हैं और अपनी लाडिले ...सन्तान की भी फ़िक्र नहीं करती हैं। कभी-...में वह क्रोध भी दिखाती है। क्या पति ...से काम ले सकता है? कदापि नहीं। ... तो यही सोचता है कि शायद उसी से ...ई त्रुटि हो गई अतः वह अपनी रूठी ... का बार-बार चुम्बन लेता है लेकिन ... चुप, मौन और मानिनी-सी बैठी उस ...म्बन का आनन्द लेती है। कभी प्रत्युत्तर ... देती क्योंकि वह तो पति का कर्त्तव्य ही ... मार्शल द्वीप की यह परम्परा है कि बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक पुरुष स्त्री का मान करे। कोई-कोई स्त्रियाँ इस उदारता का अनुचित लाभ उठाती हैं लेकिन उनमें से अधिकांश अपने पतियों को स्त्री-जन सुलभ व्यवहारों से प्रसन्न रखती हैं। इन गुणों में सर्वप्रथम है उनकी अत्यधिक लज्जा-शीलता।

मार्शल द्वीप की स्त्री लज्जा की मूर्ति होती है। कोई भी स्त्री अपना लहँगा टखने तक नहीं उठा सकती। यदि किसी अतिथि के समक्ष उसका लहँगा आध इंच भी ऊपर उठ जाय तो वह निर्लज्ज घोषित कर दी जाती है। तुरन्त वह जाति से बाहर निकाल दी जाती है। वहाँ के जीवन में लज्जा का विशेष स्थान है। वहाँ पति निराश्रय और निराधार होते हुए भी प्रसन्न और सुखी रहते हैं। मार्शल द्वीप में कन्याओं का आदर पुत्रों से अधिक होता है।

वर्तमान युग में साम्राज्यशाही का अन्त हो रहा है लेकिन मार्शल में पूर्ण साम्राज्य-शाही अब भी है। वहाँ की जनता अपनी रानी और राजाओं को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखती है और उनकी सच्ची सेवा करती है।

अन्ततः उपर्युक्त लेख से आपको ज्ञात हो गया होगा कि मार्शल द्वीपसमूह भावी समाज के लिए और खासकर वर्तमान महिलाओं के लिए आदर्श स्थान है। यदि वे पुरुषों की समानता या उनसे ऊपर उठना चाहती हैं तो उन्हें मार्शल द्वीप की स्त्रियों का जीवन अध्ययन करना चाहिए।

शिशुओं की मृत्यु-संख्या

लेखक, श्री० डा० सत्यप्रकाश, डी० एस० सी०

हमारे देश की विकटतम समस्याओं में एक समस्या शिशुओं का जीवित रहना भी है। किसी की दस सन्तानों में से पाँच-छः का शैशवावस्था में मर जाना एक साधारण बात है। कृषक और मज़दूर-परिवार में शिशुओं की मृत्यु सामान्य घटना समझी जाती है। माता के लिए पुत्र की मृत्यु से अधिक दुःख देनेवाली और कोई बात हो ही नहीं सकती। अन्य देशों की अपेक्षा हमारे देश में शिशुओं की मृत्यु संख्या अधिक क्यों है, इसके कारण तो स्पष्ट हैं, पर मृत्यु-संख्या कम करने की ओर राष्ट्र के संचालकों का ध्यान ही नहीं है। देश की आधी से अधिक सन्तानों का काल-कवलित हो जाना एक लज्जा की बात है।

शिशुओं की मृत्यु इतनी अधिक क्यों होती है? इसके मुख्य कारण निम्न हैं—

(१) बाल-विवाह के परिणाम-स्वरूप कन्याओं का छोटी-सी ही अवस्था में माता बन जाना।

(२) गर्भावस्था में और प्रसव के उपरान्त माता को उचित भोजन न मिलना।

(३) नवजात बालकों के लिए दूध के प्रबन्ध की कुव्यवस्था।

(४) शिशुओं के रोगों का अन्य विश्वास-जनक साधनों से उपचार किया जाना। उचित और योग्य डाक्टरों के पास पहुँचने से पूर्व ही रोग का भयंकर बन जाना।

(५) जन्म-संख्या का अधिक होना, अर्थात् शीघ्र ही एक के बाद एक बच्चों का जन्म होना जिससे मातृ-शक्ति का शीघ्र ह्रास हो जाना।

ये सब कारण परम्परा के चक्र में ऐसे दुरूह हो गये हैं कि इसका उपाय करना बड़ा कठिन प्रतीत होता है। बाल-विवाह निषेध के लिए शारदा बिल पास किया गया, पर उसके पास हो जाने से ही समस्या हल नहीं हो गई। इने-गिने विवाह रोके तो गये पर इतने से क्या होता है? इन क़ानूनों को सुदूर ग्रामों में लागू कराने का हमारे पास कोई साधन नहीं है। ग्रामों की बात जाने दीजिए। नगर में ही हम देखते हैं कि छोटी श्रेणी के व्यक्तियों के घर आज भी छोटी उमर के बच्चों का विवाह होता चला आ रहा है। लोगों को शारदा क़ानून पर कोई विश्वास नहीं रहा है। राज्य की उदासीनता इस क़ानून की असफलता का मुख्य कारण है। यह नियम होना चाहिए कि १८ वर्ष से पूर्व कोई कन्या माता न बने।

माता अपने भोजन के सम्बन्ध में जितनी असावधानी इस देश में रखती है, उतनी कहीं नहीं। हमारे समाज की गृहस्थी में वह बड़ा बुरा चलन पड़ गया है कि स्त्रियों के भोजन को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। पुरुष कमानेवाले हैं, अतः अच्छे से अच्छा भोजन उनके अधिकार में आता है। यह कुप्रथा बड़े बड़े परिवारों में भी देखी गई है। चौके की बची-खुची जली अधपकी सूखी रोटियाँ ही नववधुओं और गृहणियों के बाँट में पड़ती हैं। यदि घर का स्वामी पुरुष कहीं बाहर चला गया हो और उसके लिए भोजन न बनाना हो तो रसोई बहुत साधारण-सी बनाई जायगी। दो बार भोजन बनाने के स्थान में सम्भव है कि एक बार ही भोजन बन जाय, रोटियाँ न पकाकर खिचड़ी ही डाल ली जाय, और दो-तीन तरकारियों के स्थान पर सम्भवतः एक तरकारी से ही काम निकाल लिया जाय। पुरुष की अनुपस्थिति में इस प्रकार की व्यवस्था का हो जाना ही यह बताता है कि स्त्रियों के भोजन को हमारे परिवार में किस उपेक्षा से देखा जाता है। नववधू के नवमाता बनने की अधिक सम्भावना है, पर उसे परिवार में अन्य महिलाओं की अपेक्षा अधिक बुरा खाना मिलता है। इन सब मनोवृत्तियों का परिणाम यह हुआ है कि हमारी सन्तानें रोगी और दुर्बल होती हैं और शैशवावस्था में ही प्राण त्याग देती हैं। परिवार में नववधुओं और नवमाताओं को पुरुषों से भी अच्छे भोजन का प्रबन्ध होना चाहिए।

तीसरी बात शिशुओं के भोजन की है। माता को स्वस्थ भोजन नहीं मिलता है। अतः इस देश की अधिकांश मातायें बच्चों को स्वस्थ स्तन-पान नहीं करा पातीं। बच्चे के लिए माता के दूध से अधिक अच्छी और कोई चीज़ नहीं। माता के दूध के बाद गाय का दूध है। खेद की बात है कि हमारे ग्रामों की अवस्था इतनी शोचनीय हो गई है कि वहाँ प्रतिबच्चा १ पाव दूध भी नहीं मिल पाता। बकरियाँ सस्ते में पाली जा सकती हैं और उनका दूध भी बच्चों के लिए हितकर है। पाश्चात्य देशों में राज्य की ओर से बच्चों और जच्चा माताओं के दूध का मुफ़्त या सस्ते दामों पर प्रबन्ध किया जाता है। हमारे यहाँ म्युनिसिपैल्टी और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए कि माताओं और बच्चों को रियायती दाम पर दूध प्राप्त हो सके। गाँवों में दो या तीन पैसे सेर दूध बेचे जाने का प्रबन्ध हो सकता है।

हमारे-यहाँ शिशुओं की मृत्यु-संख्या का एक कारण चिकित्सा का न होना है। दूरस्थ ग्रामों में योग्य चिकित्सक नहीं मिलते। बच्चों के बहुत-से रोग आरंभ से ही असाध्य मान लिये जाते हैं। झाड़-फूँक और मिन्नतों से काम लिया जाता है। राज्य की ओर से झाड़-फूँक करनेवालों को क्रिमिनल सज़ा दी जानी चाहिए और इन अन्धविश्वासजनक प्रथाओं का उच्छेद करना चाहिए। गाँव के लोग शहर में बच्चों को डाक्टरों के पास तब लाते हैं, जब उनका रोग पराकाष्ठा को पहुँच जाता है। डाक्टर की चिकित्सा से ऐसी अवस्था में रोगी अच्छा नहीं हो सकता। बच्चे मर जाते ही हैं और साथ ही साथ ग्रामीणों का विश्वास भी डाक्टरों के ऊपर से उठ जाता है। वे फिर दूसरे बच्चों के लिए झाड़-फूँक

का आश्रय लेते हैं। अतः ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए कि बच्चों को गाँवों में ही डाक्टरों, वैद्यों और हकीमों की सहायता मिल जाय, और चिकित्साप्रणाली पर ग्रामीणों की निष्ठा बनी रहे।

शिशुओं की मृत्यु संख्या का एक कारण अधिक सन्तानों का होना भी है। सन्तानों के प्रति माता-पिता का विशेष उत्तरदायित्व है। माता-पिता उतनी ही सन्तानें उत्पन्न करें जितनी का वे पालन आसानी से कर सकें। शीघ्र-शीघ्र सन्तानों का उत्पन्न होना माता के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है। अतः इस सम्बन्ध में संयमता से काम लेना चाहिए। ग्रामवासियों को इस सम्बन्ध में उचित परामर्श मिलने चाहिए। स्वस्थ सन्तानों की प्रदर्शनियाँ होनी चाहिए और लोगों को पारितोषिक देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। बहुत से माता-पिताओं को टोटके और टोने का डर रहता है। किसी भी माता के सामने आप उसके स्वस्थ बालक के स्वास्थ्य की प्रशंसा कर दीजिए—उसका दिल दहल जायगा। उसे चिन्ता लगी रहती है कि बच्चे को नजर न लग जाय! ये अन्धविश्वास अब भी भले-भले घरों में विराजमान हैं। इन्हें दूर कराने की आवश्यकता है।

लेडी हैलेट की अपील

सूबा मुत्तहदा की औरतों से

इस सूबे की औरतों से मेरी यह अपील है कि वे अपनी जंगी कोशिशों को हर तरह से तरक्क़ी दें। हम अभी बहुत कुछ कर चुके हैं और हमारे यहाँ की औरतों की काम करनेवाली टोलियों ने सचमुच बहुत ही अच्छा काम किया है। लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि हम और भी काम कर सकते थे। खासकर इस वक्त जब जापान ने हम पर हमला कर दिया है हमको और भी ज़्यादा काम करना चाहिए। हमको न सिर्फ़ उन बहादुर सिपाहियों के लिए जो लीबिया, इराक़, ईरान और अब मलाया और सिंगापुर में हिन्दुस्तान की सरहदों की हिफ़ाज़त कर रहे हैं, आराम की चीजें और अस्पतालों का जरूरी सामान भेजना चाहिए बल्कि सिंगापुर और मलाया के रहनेवालों की मदद करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए, जो इस वक्त जापानी हमले का निशाना बने हुए हैं। हमको इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए कि हम हिन्दुस्तान में भी उन सब लोगों की मदद कर सकें जो इस हमले के शिकार बनें। इस नई लड़ाई की पहली मंज़िल में यह ठीक-ठीक कहना आसान नहीं है कि किन किन बातों की ज़रूरत पड़ेगी, लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि हमारी काम करनेवाली टोलियों के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि वे जहाँ तक हो सके ज़्यादा से ज़्यादा सामान तैयार करें। अब से गवर्नमेंट हाउस में काम करनेवाली टोलियाँ हफ़्ते में दो बार, हर बुध और शुक्रवार को, काम किया करेंगी और मुझे उम्मीद है कि यू० पी० की सब काम करनेवाली टोलियाँ ऐसा ही करेंगी। हो सकता है कि बहुत-सी औरतें इन टोलियों में शरीक़ न हो सकें। उनको ऊन और दूसरा सामान आसानी के साथ दिया जा सकता है ताकि वे अपने खाली वक्त में चीज बना सकें। कुछ औरतें ऐसी भी होंगी जो बुनना और सीना न जानती हों, इनके लिए मेरी राय यह है कि वे दर्ज़ी लगाकर यह काम करायें, अगर मेरे पास चन्दे भेजे जायँ, चाहे वे कितने ही कम क्यों न हों, वे दर्ज़ियों पर खर्च किये जायँगे। अगर हममें से हर एक थोड़ा-बहुत जो भी उससे हो सके करे तो कुल मिलाकर बहुत कुछ हो जायेगा।

मनोरञ्जक बातें

विचित्र साइकिल

एक वैज्ञानिक ने ऐसी साइकिल का निर्माण किया है, जो पहाड़ी मार्ग पर भी आसानी से चल सकती है। इस साइकिल में अधिक पुर्जे नहीं हैं और न इसमें मोटर-साइकिल की भाँति पेट्रोल ही खर्च होता है।

× × ×

बाँस और चन्द्रमा का सम्बन्ध

विशेषज्ञों का कहना है कि यदि शुक्लपक्ष की रात्रि में बाँस काटे जायँ तो उनमें घुन नहीं लगते।

× × ×

विद्वान् बदमाश

एक बार बुखारेस्ट (रूमानिया) की पुलिस ने एक ऐसे अपराधी को गिरफ़्तार किया जो लैटिन, हिब्रू, तुर्की, ग्रीक, फ्रेंच और इटालियन बड़े मज़े में बोल और लिख सकता था।

× × ×

हैट या घोंसला

मेलबोर्न की एक सभा में एक युवती ऐसी हैट पहनकर बैठी थी, जो चिड़ियों के परों से बना हुआ था। लोगों को उस समय आश्चर्य हुआ जब उसमें से एक चिड़िया निकलकर फुर्र से उड़ी।

'आज' से

कहानी पर पुरस्कार

इस बार ग्राम-सुधार अफ़सर ने कहानी पर पुरस्कार देने की घोषणा की है। यह कहानी ग्राम-जीवन से संबंध रखनेवाली होनी चाहिए और "हल" के छपे हुए तीन सफ़े से अधिक न हो। पुरस्कार प्रथम तीन कहानियों पर दिये जायँगे। सबसे अच्छी कहानी पर २०), उसके बाद नम्बर दो पर १०) और नम्बर तीन पर ५)। ये कहानियाँ हिन्दी, उर्दू और अँगरेज़ी तीनों में से किसी एक भाषा में लिखकर भेजी जा सकती हैं। इस संबंध में विशेष जानकारी के लिए पृष्ठ ११८ पर छपे हुए नियमों को भी पाठक पढ़ लेने की कृपा करें। "हल" के पाठकों से निवेदन है कि वे इस प्रतियोगिता में अवश्य भाग लें। यह परवाह न करें कि उन्हें अच्छी भाषा लिखनी नहीं आती? ग्राम-सुधार अफ़सर भाषा को उतना महत्त्व नहीं देंगे जितना कि कहानी के विषय को।

हिन्दुस्तान पर जापानी हमले की आशंका

पूर्व में जापान से लड़ाई छिड़ जाने से हिन्दुस्तान को भी हवाई हमले का डर पैदा हो गया है। जापान ने सुदूरपूर्व के टापुओं पर अचानक हमला कर दिया है और बहुत-से टापुओं पर उसने क़ब्ज़ा कर लिया है। जब कि हम ये पंक्तियाँ लिख रहे हैं मलाया में घमासान लड़ाई हो रही है। इसके साथ ही बरमा में भी जापानी फ़ौजें घुस आई हैं। बरमा के बड़े शहरों, जैसे मौलमीन और रंगून पर हवाई हमले हो रहे हैं। उनमें सैकड़ों लोग हताहत हुए हैं। सिंगापुर पर भी जापानी हवाई हमला जारी है। सम्भवतः इस ओर की लड़ाई के लिए ब्रिटेन पूरी तरह से तैयार नहीं था। इसलिए जापान को शुरू में यहाँ सफलता मिल गई। अनुमान किया जाता है कि ज्यों ज्यों उसकी फ़ौजें आगे बढ़ेंगी त्यों त्यों उसकी कठिनाई भी बढ़ती जायगी और उसको सख्त मुक़ाबिले का सामना करना पड़ेगा।

इसमें तनिक भी शक नहीं है कि ब्रिटेन और अमरीका की फ़ौजी और हवाई ताक़त के मुक़ाबिले में जापान कुछ नहीं ठहरता परन्तु एक ऐसे समय में जब कि ब्रिटेन और अमरीका की सारी ताक़त पश्चिम में जर्मनी को दबाने और रूस को मदद पहुँचाने में लगी है, जापान ने सुदूरपूर्व में अवसर पाकर हमला कर दिया है। समाचारपत्रों के पढ़ने में आया है कि कतिपय अँगरेज़ और अमरीकन राजनीतिज्ञ जापान के इस हमले को विशेष महत्त्व नहीं देते। उनका ख़याल है कि जर्मनी को दमन करने के बाद वे जापान को आसानी से समझ लेंगे। और इसी लिए वे पैसफ़िक के युद्ध को कोई महत्त्व नहीं दे रहे हैं।

ऊँची, पेचीदा फ़ौजी कार्यवाहियों को फ़ौजी लोग ही अधिक समझ सकते हैं। परन्तु हमारी मोटी समझ में यह आता है कि दुश्मन कितना ही छोटा क्यों न हो उसकी ओर से लापरवाही ठीक नहीं होती। मलाया के रबड़ के जंगल, टीन के कारखाने, डच इन्डस्ट्रीज के कतिपय मिट्टी के तेल के कुएँ और अन्य कच्चे मालों के स्रोत हाथ में आ जाने से जापान की शक्ति बहुत बढ़ जायगी। और यदि इसी वक्त उसको इन जगहों से न हटाया गया तो आगे चलकर उसका हटाना बहुत कठिन हो जायगा।

इतिहास में यह पहला मौक़ा है जब कि हिन्दुस्तान पर एक बड़ी ताक़त का एक बड़े पैमाने पर हमला होने की आशंका पैदा हो गई है और बरमा पर तो यह हमला शुरू भी हो गया है। इसमें सन्देह नहीं कि इस युद्ध में हिन्दुस्तान काफ़ी हिस्सा ले रहा है। हिन्दुस्तान के लाखों नौजवान और वीर सैनिक पूर्व और पश्चिम के मैदानों में डटे हुए हैं। फिर भी हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी राजनैतिक जमात कांग्रेस का सहयोग न होने से अभी इस उद्योग में एक प्रकार की कमी रह जाती है। पिछले दिनों वर्धा में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के बारडोलीवाले प्रस्ताव को मंज़ूर कर लिया है। इससे यह तो स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस कुछ शर्तों के साथ युद्ध में सशस्त्र सहयोग देने को तैयार हो सकती है। सर तेजबहादुर सप्रू और कतिपय अन्य नर्म-दल के नेताओं ने ब्रिटिश प्रीमियर मिस्टर चर्चिल के पास एक केबुलग्राम भेजा है, जिसमें उन्होंने ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों से अपील की है कि इस अवसर पर हिन्दुस्तान का पूरा सहयोग प्राप्त करने के लिए कुछ भी बाक़ी न उठा रक्खा जाय। मिस्टर चर्चिल ने इस पर ग़ौर करने का वादा किया है।

यह वक्त शीघ्रता के साथ काम करने का है। राजनैतिक समझौतों में भी बिजली की भाँति तेज़ी होनी चाहिए और हिन्दुस्तान के बचाव का पूरा-पूरा इन्तज़ाम होना चाहिए। जान पड़ता है कि यह अवसर हिन्दुस्तान और ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों और नेताओं को बहुत क़रीब ला देगा। उनके हृदयों में जो परस्पर अविश्वास है वह दूर हो जायगा और कोई न कोई ऐसी सूरत ज़रूर निकल आयेगी जिससे सारा हिन्दुस्तान एकमत होकर इस आकस्मिक बला का मुक़ाबिला करने के लिए तैयार हो जाय।

बड़े शहरों पर बमबाज़ी का ख़तरा

बड़े शहरों पर दुश्मन की ओर से बम गिराये जाने का खतरा दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। इलाहाबाद के मैजिस्ट्रेट साहब ने एक पर्चा छपवाकर बँटवाया है कि नगर के लोग हवाई हमले की अवस्था में क्या करें? उन्होंने उस पर्चे में लिखा है कि हवाई हमले की खबर पाते ही शहरवालों को तुरन्त अपने अपने मकान के अन्दर छिप जाना चाहिए, खिड़कियाँ और दरवाज़े बन्द कर लेना चाहिए। जो लोग सड़क पर चल रहे हों उन्हें तुरन्त पास के गढों में छिप जाना चाहिए। जो इक्कों पर हों उन्हें तुरन्त इक्के को सड़क के बायें किनारे खड़ा करा देना चाहिए और खुद पास के किसी गढ़े में छिप जाना चाहिए। घोड़ों को भी खोलकर दूर नीची जगह में कर देना चाहिए। जो लोग मोटरों पर हों उन्हें अपनी मोटरें छोड़कर पास के किसी गढ़े में छिप जाना चाहिए। कलेक्टर साहब ने अपने पर्चे में यह भी लिखा है कि लोगों को हमले के समय अपने कान में रुई डाल लेनी चाहिए और मुँह में अपनी उँगलियाँ या कोई कपड़ा भर लेना चाहिए। कहा जाता है कि यदि हवाई हमले के समय सरकारी चेतावनियों का पालन किया जाता तो रंगून में इतनी जानें न जातीं। आशा है कि रंगून की घटना से अन्य नगर-निवासी सबक लेंगे।

हवाई हमले और गाँव

जैसा कि हम "हल" के गतांक में लिख चुके हैं, गाँवों में हवाई हमलों की वैसी आशंका नहीं है। लेकिन गाँव के निवासी अपने काम-काज से शहरों में बराबर आते-जाते हैं। इसलिए उन्हें भी इस संबंध में समुचित जानकारी रखनी ज़रूरी है। ऊपर का नोट इसी उद्देश्य से लिखा गया है। पिछले दिनों रंगून और कलकत्ता से बहुत से लोग इधर के शहरों और गाँवों में रहने के लिए आये हैं। यदि यहाँ के शहरों पर हवाई हमलों की आशंका और बढ़ी तो शहरी आबादी का बहुत सा हिस्सा गाँवों की तरफ़ फैल जायगा। गाँव के निवासियों को अपने शहरी भाइयों की सेवा करने का यह अपूर्व अवसर मिलेगा। उन्हें इसके लिए अभी से तैयार रहना चाहिए। क्या ही अच्छा हो कि प्रान्तीय सरकारें उन गाँवों के सुधार में विशेष रूप से लग जायँ जो शहरों के क़रीब हों। ताकि वे गाँव पानी, सफ़ाई और मकानियत की दृष्टि से इस लायक़ हो जायँ कि शहरी लोग उनमें फैलकर बस सकें। और उन्हें या उनकी वजह से उन गाँववालों को कोई कष्ट न हो।

सुचितपुर गाँव में गुड़-निर्माण और डाक्टर नेहरू

डाक्टर एस० एस० नेहरू, आई० सी० एस०, कमिश्नर बनारस डिवीज़न ने हाल ही में सुचितपुर ग्राम का निरीक्षण किया था और वहाँ सुधरे हुए ढङ्ग से गुड़ बनते देखा था। इस सम्बन्ध में उन्होंने जो लिखा है वह इस प्रकार है—

एक वर्ष के बाद ग्राम-सुधार गाँव सुचितपुर में दुबारा जाने पर गुड़ बनाने के कुछ सुधरे हुए कामों को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। गाँव की उन्नति सर्वतोमुखी है और गुड़ बनाने का काम भी प्रमुख है। गुड़ का काम बहुत ही विस्तृत है और इसमें पग-पग पर सुधार करने का मौक़ा है। इस तरह अच्छी ऊख की खेती अच्छी खाद के द्वारा की जाती है जो कि अच्छी नस्ल के उन जानवरों से मिलती है जिनकी अच्छी देख-भाल और अच्छा पालन किया जाता है और ये जानवर स्थानीय अच्छी नस्ल के साँड़ों की सन्तान होते हैं। ईख की सिंचाई भी अच्छे कुओं से की जाती है। तूफ़ान और प्रभाकर भठ्ठियों द्वारा गुड़ बनाने का काम देखा गया। मुझे अन्तर तो दिखाई दे रहा था लेकिन यह अन्तिम बात नहीं है और इस विषय में बहुत-से अनुसन्धान करने की आवश्यकता है। सबसे सादी चीज़ तो यह है कि पकते हुए गुड़ को हर प्रकार की राख, धूल और धुएँ से बचाया जाय। इसके बाद गुड़ को बिना हाथ से छुये बनाने का आविष्कार होना चाहिए। अमरीका और योरोप के बहुत-से देशों में खाने योग्य बहुत-से सामान वहाँ के बनानेवाले बिना हाथ से छुये बनाते हैं और इसका बड़ा गर्व करते हैं। मुझे यह सुनकर कोई आश्चर्य नहीं हो रहा है कि यहाँ पर साफ़ किया हुआ गुड़ अठारह आना पंसेरी बिकता है और काला गुड़ पन्द्रह आना पंसेरी बिकता है। यदि गुड़ को सफ़ाई और वैज्ञानिक ढंग पर बनाया जाय तो भविष्य में वह चीनी का स्थान ग्रहण कर सकता है। मुझे पूर्ण आशा है कि थोड़े ही समय में यह कमी भी पूरी हो जायगी।

ग्राम-सुधार-कार्यकर्त्ताओं की गौरव-वृद्धि

गत वर्ष मार्च में सरकार ने ग्राम-सुधार के कार्य में लगे हुए सरकारी और ग़ैर सरकारी व्यक्तियों के गौरव-वृद्धि के लिए उन्हें सनदें और नक़द इनाम दिये थे। जिन लोगों को यह सम्मान प्राप्त करने का अवसर मिला था उनके नाम हम "हल" में प्रकाशित कर चुके हैं। सरकार ने इन व्यक्तियों का चुनाव इस दृष्टिकोण से किया था कि अमुक व्यक्ति ने गाँव की मरम्मत वग़ैरह के काम में गाँववालों से कितना रुपया इकट्ठा किया है।

ग्राम-सुधार अफ़सर रायबहादुर पंडित काशीनाथ जी त्रिवेदी ने इस वर्ष फिर समस्त डिविज़नल सुपरिण्टेण्डेण्टों के नाम एक सरक्यूलर जारी किया है जिसमें यह बताया है कि इस वर्ष भी सरकार ग्राम-सुधार के कार्य में लगे हुए सरकारी और ग़ैर सरकारी लोगों को सम्मानित करना चाहती है। इस सम्बन्ध

में मई सन् १९४२ को ऐसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में सिफारिशें माँगी जायँगी चाहे वे गैर सरकारी हों, चाहे इन्स्पेक्टर या स्काउट मास्टर या आर्गनाइज़र या प्रौढ़ पाठशालाओं के अध्यापक हों। ग्राम सुधार अफसर ने अपना यह सरक्यूलर इतने पहले इसलिए जारी किया है कि जिसमें समस्त कार्यकर्त्ताओं को इस बात की खबर हो जाय और वे अपने कार्य में और भी अधिक मनोयोग से संलग्न होकर अपने आपको इस सम्मान का अधिकारी बना सकें।

हमें आशा है कि जिन लोगों को गत वर्ष कोई सनद या नक़द पुरस्कार नहीं मिल सका वे इस वर्ष अवश्य और अधिक उद्योग करेंगे और जिन्हें मिला है वे भी यह कोशिश करेंगे कि कहीं वे पीछे न छूट जायँ।

अखिल भारतीय ग्राम-उद्योग-संघ

भारतवर्ष के ग्रामीण उद्योग-धन्धे को पुनर्जीवित करने के लिए अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ की ओर से जो प्रयत्न हो रहा है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। इस संस्था को अस्तित्व में लाने का श्रेय महात्मा गांधी को है। इसका प्रधान कार्यालय वर्धा में है और इसकी उप शाखायें सारे देश में फैली हुई हैं। इसके ट्रस्टियों में निम्नलिखित व्यक्ति हैं :—

१—श्री कृष्णदास जाजू, कोषाध्यक्ष।
२—श्री जे० सी० कुमारप्पा।
३—श्री जमनालाल बजाज।
४—श्री डाक्टर खान साहब।
५—श्री गोपीचन्द्र भार्गव।
६—श्री वैकुण्ठराय एल० मेहता।

इसके व्यवस्थापक मंडल में निम्नलिखित व्यक्ति हैं :—

१—श्री कृष्णदास जाजू, वर्धा।
२—श्रीमती गोसीबेन, एम० एस० कैप्टन, अन्धेरी, बम्बई।
३—श्री सूरजी वल्लभदास, कच्छ कैसल, सेण्डहर्स्ट रोड, बम्बई।
४—श्री लक्ष्मीदास पुरुषोत्तमदास अशर, हरिजन आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद।
५—श्री शंकरलाल बैंकर, मिर्ज़ापुर, अहमदाबाद।
६—श्री वैकुण्ठराय एल० मेहता, पो० बक्स नम्बर ४७२, बम्बई।
७—श्री धीरेन्द्र मजूमदार, श्री गांधी आश्रम, गणीवा, पो० गोसाईंगंज, फैज़ाबाद।
८—श्री जे० सी० कुमारप्पा संयोजक और मंत्री, वर्धा।
९—श्री भारतन कुमारप्पा, सहायक मंत्री, वर्धा।

इस संस्था का सन् १९४० का वार्षिक कार्य-विवरण हाल ही में प्रकाशित हुआ है। जिससे यह प्रकट होता है कि थोड़े समय में ही इस संस्था ने ग्रामीण उद्योग-धन्धे को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। इस संस्था को समस्त प्रान्तीय सरकारों का सहयोग प्राप्त है और विभिन्न धन्धों के लिए विभिन्न प्रान्तीय सरकारों ने इसे आर्थिक सहायता भी प्रदान की है। उन प्रान्तों में भी जहाँ कांग्रेसी सरकारें कायम हुई थीं पर विशेष परिस्थिति के कारण स्थगित हो गई, यह संस्था अपना काम सुचारु रूप से किये जा रही है। वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि यद्यपि पूर्ण उत्साह से नहीं तथापि सरकारी सहयोग इसे मिलता रहता है। यदि कांग्रेसी सरकारें बनी होतीं तो यह संस्था शायद और जोश के साथ अपना काम करती। तथापि इसने अपना काम जारी रखा है और आगे भी उसी प्रकार जारी रखेगी।

इस संस्था की देख-रेख में चावल कुटाई, तेल पेराई, गुड़ बनाना, मधुमक्खी पालना, कागज़ बनाना, साबुनसाजी, चर्मकारी, संग तराशी, बटन बनाना, कताई-बुनाई, चटाई बुनाई स्लेट और पेंसिल बनाना और रंगसाजी आदि ग्रामीण उद्योग हो रहे हैं। संस्था की देख भाल में चलनेवाला पूना के कागज़ के केन्द्र के लिए बम्बई सरकार ने करीब २४ हज़ार रुपये मंजूर किये थे। इस संस्था की वर्धा में जो दूकान है उसमें इस साल कुल २१,०४२।=) आने की बिक्री हुई और नागपुर में जो दूकान है उसमें १०,२१३)॥। की बिक्री हुई। रामगढ़ कांग्रेस के साथ इस संस्था की ओर से एक ग्राम उद्योग प्रदर्शनी की व्यवस्था की गई थी। इसका ज़िक्र इस विवरण में किया गया है और उस प्रदर्शनी में जो सबसे खास बात थी वह यह थी कि मध्यवर्गीय मनुष्यों के घर वास्तव में देहात में बनी चीज़ों से कैसे सजाया तथा उपयुक्त बनाया जा सकता है। यह प्रत्यक्ष देखा गया था। इस प्रदर्शनी में देहाती तरीक़ों से लोहा गलाने की विधि भी दिखाई गई थी। यहाँ के लोग पास ही बहनेवाले दामोदर नदी के रेत से कच्चे लोहे समेट लाते और उससे वे फौलाद और उस्तुरे चाकू, रुखानी आदि बनाकर दिखाते इस प्रदर्शनी के टिकट बिक्री और दूकान किराये से कुल १९,९२५।)। की आय हुई। खर्च निकाल देने पर करीब ७५६) बच रहे थे। दान और चन्दे के रूप में इस संस्था को सन् १९४० में कुल ३३,४०७ ≡) मिले थे और तमाम ख़र्च हो जाने के बाद करीब १३,५८२–१०–९·२ पाई बच रहे थे। इस तरह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि यह संस्था कितने सुन्दर तरीक़ों से अपना काम कर रही है। इसकी सफलता पर हम इसके संचालकों को विशेषकर इसके संयोजक श्री जे० सी० कुमारप्पा को हार्दिक बधाई देते हैं।

गाँव की सफ़ाई

अखिल भारतीय ग्राम-सेवा-संघ की वार्षिक रिपोर्ट का जिसका कि हम ऊपर ज़िक्र कर चुके हैं, गाँव की सफ़ाई पर एक छोटा सा नोट ध्यान देने योग्य है। ये पंक्तियाँ हम रिपोर्ट से ज्यों कि त्यों छाप रहे हैं :—

"हाथों की उँगलियों पर गिनेजानेवाले कुछ गाँव छोड़कर अन्य सब जगहों की हालत "पहले थी, वैसी ही अब भी है।" जहाँ कि सफ़ाई विशेष दिखाई देती है, वह भी वहाँ के कार्यकर्त्ता की व्यक्तिगत अकथ परिश्रम के कारण ही है और यदि उसे वहाँ से हटाया जाय, तो वह गाँव पहले जैसा ही घिनौना हो जायगा। इससे यह दीख पड़ता है कि हमारे तरीक़े में कुछ सैद्धान्तिक ही भूल है। शायद ग्राम-सुधार की धुन में हम ग्रामवासियों के सहयोग का ध्यान ही नहीं करते और अपना ही काम किये जाते हैं। इसलिए ग्राम-सफ़ाई का पौधा वहाँ जड़ नहीं पकड़ता। यदि ग्राम साफ़ करने और रखने हों तो वहाँ के बच्चे से लेकर बूढ़े तक सबको इस बात की शिक्षा मिलनी चाहिए कि सफ़ाई न रखने से और पीने के लिए साफ़ पानी न मिलने से क्या-क्या नुकसान हो सकते हैं। कार्यकर्त्ता की खुद की आदतें ही उनके सामने आदर्शरूप हैं, इसलिए उसे स्वयं इस सम्बन्ध में सावधान रहना चाहिए। [illegible] इस प्रकार कार्य करने से फल जल्दी नहीं दिखाई पड़ता।"

ग्राम सुधार के कार्यकर्ताओं को इन पंक्तियों पर विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। वास्तव में गाँव की सफ़ाई तभी हो सकती है जब गाँववाले ही इसकी ज़रूरत समझें और उस काम में अपनी [illegible] से लगें।

तेल-पेराई

गाँवों मे कोल्हू द्वारा तेल पेरने का उपयोग बहुत पुराना है। इधर यह धन्धा कुछ [illegible]-सा जा रहा था। यह प्रसन्नता की बात है कि अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ के [illegible] से हर प्रान्त में फिर से इस उद्योग को जीवित करने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में संयुक्तप्रांत में क्या हुआ है उसका ज़िक्र रिपोर्ट में इस प्रकार है :—

"संयुक्तप्रांत की सरकार बढ़इयों को घानी बनाने की तथा उसे चलाने की शिक्षा देने की कोशिश करती रही है। अलग-अलग तीन ज़िलों में उन्होंने घानी प्रत्यक्ष चलाकर दिखाने की योजना की है और उसके लिए यहाँ शिक्षा पाये हुए तीन आदमी उन्होंने नियुक्त किये हैं। देहातों के तेलियों को सरकार घानियाँ भी बनवा देती है।"

"रणीवा केन्द्र में अच्छा काम हुआ है। पहले उन्होंने स्थानिक घानियाँ ही इस्तेमाल करना शुरू किया। पर जब वे कार्यक्षम न मालूम हुईं तब उन्होंने मगनवाड़ी घानियाँ जारी कर दीं। ये घानियाँ एक बार में आठ सेर सरसों १॥ घंटे में पेर देती हैं और ३३ से ३५ प्रतिशत तेल मिलता है। स्थानिक घानियों में एक समय में ३·२ सेर ही सरसों पड़ती है और चार घंटे में घान पूरा होकर ३२½ प्रतिशत ही तेल मिलता है। इस केन्द्र में अब तक आठ विद्यार्थी घानी का काम सीखकर तैयार हुए हैं। इनमें से तीन स्वतंत्र रूप से घानी चलाकर अपनी उपजीविका चला रहे हैं और दो आश्रम में ही काम कर रहे हैं। तीन बढ़ई घानी बनाना सीख गये हैं और उन्होंने आज तक १० घानियाँ बनाई हैं।"

तेल-पेराई में एक तेली दिन भर में सवा रुपये मजे में कमा सकता है और पेरा हुआ तेल पास पड़ोस में जल्द ही बेचा भी जा सकता है।

गुड़ बनाना

अखिल भारतीय ग्राम उद्योग की ओर से गुड़ बनाने का काम अधिकतर उत्कल और बङ्गाल प्रान्तों में हुआ। बंगाल में ताड़ से भी गुड़ बनाया जाता है। गुड़ बनाने में इस संस्था ने तीन किस्म की भट्ठियों का उपयोग किया है। भट्ठियों का विवरण जैसा कि रिपोर्ट में छपा है नीचे उद्धृत करते हैं—

(अ) बंगाली बैंकर ने बंगाली भट्ठी का उपयोग किया। इसमें मिट्टी के बर्तन में ही नीरा उबाली गई। उतनी ही नीरा के लिए अन्य दोनों भट्ठियों की अपेक्षा इसमें ईंधन दुगुना और समय डेढ़ गुना लगता है। लेकिन इसका गुड़ कुछ चिपचिपा होने पर भी अधिक जायकेदार होता है।

(आ) पिछले वर्ष की भट्ठी इस वर्ष भी हमने चालू रक्खी, पर उसमें इस वर्ष की नई भट्ठी की अपेक्षा अधिक ईंधन लगता है, ऐसा अनुभव हुआ।

(इ) हमारी नई भट्ठी में १०० सेर नीरा के लिए ७५ सेर ही ईंधन लगता है और दो घंटे में उबालने की क्रिया हो जाती है। इसकी रचना बहुत ही सादी है और एक रूपये में ही यह बन जाती है। (आ) में निर्दिष्ट भट्ठी ईंटों की बनी होने के कारण उसमें ६) से ७) तक लग जाते हैं। इसमें खामी एक ही है कि एक बार के लिए कम से कम १०० सेर नीरा तो जरूर चाहिए। (अ) में निर्दिष्ट भट्ठी तो ५० सेर या उससे कम नीरा उबालने के लिए ही काम में आ सकती है।

यह नई भट्ठी समकोण चतुर्भुज रहती है। इसकी उँचाई डेढ़ फ़ुट और गहराई ३ फ़ुट होती है। अन्दर से इसकी लम्बाई ५ फ़ुट और चौड़ाई २ फ़ुट होती है। इसके ऊपर रखने की कड़ाही ठीक इसी नाप की होती है और वह बिलकुल ठीक बैठती है। भट्ठी के ज़मीन पर की चारों भुजायें नौ-नौ इंच मोटी मिट्टी की बनी होती हैं। भट्ठी के दोनों सिरों पर ९ इंच चौड़े और ६ इंच ऊँचे ऐसे सूराख ईंधन लगाने के लिए रखे जाते हैं और वे दोनों बाजुयें अन्दर की ओर १॥ फ़ुट तक उतरती जाती हैं। लम्बाई की दीवालों पर ज़मीन से ६ इंच ऊपर और एक से अन्तर पर धुआँ बाहर जाने के लिए ८ इंच व्यास के ६,६ सूराख बने होते हैं। कड़ाही की लम्बाई ५ इंच, चौड़ाई २ इंच

और गहराई ७ इंच होती है। और वह टीन की गल्वनाइज़्ड चद्दर की बनी होती है।

अन्य प्रांतों में जो लोग गुड़ बनाने का धन्धा करते हैं वे इस तरह की भट्ठियाँ बनाने लगें तो उन्हें काफ़ी आसानी और लाभ हो सकता है।

——

चर्मकारी

चर्मकारी का काम गाँववालों को सिखाने के लिए इस संस्था ने बंगाल, मद्रास, मध्य-प्रान्त, उत्कल और यू० पी० में केन्द्र खोले हैं। यू० पी० में यह केन्द्र रणीवा में है। इस सम्बन्ध में रिपोर्ट में इस तरह लिखा है—

रणीवा (युक्तप्रान्त) में कच्चे चमड़ों में से कई क़िस्म के पकाये हुए चमड़े बनाये गये। उनकी कीमत ४,२९९-१०-३ हुई। इन चमड़ों में से चप्पल, जूते, सूटकेस, पोर्ट-फोलियो, मनीपर्स, कमरबंद और नक्शी काम की फैन्सी चीजें बनाकर बेंची जाती हैं। कुल बिक्री ४,६५३-५-९ हुई। यहाँ पकाया हुआ कोई कोई चमड़ा कारखाने में पके हुए चमड़े की कीमत में बेंचा गया। घरेलू पद्धति से चमड़ा कैसे पकाना चाहिए इसकी शिक्षा देने के लिए युक्तप्रान्त की सरकार ने २६ छोटे छोटे कारखाने खोले। इन सब केन्द्रों की देख, भाल करनेवाले नौजवान रणीवा में काम सीखकर तैयार हुए थे। यहाँ के छीलने और कुरेदने के लिए चाकुओं में काफ़ी सुधार हुआ है। खादी प्रतिष्ठान बनाई हुई ग्लेशिंग और बफिंग मशीनें यहाँ काम में लाई जाती हैं। सोल बनाने के लिए चमड़ा दबाने की एक कठिनाई रह गई है। कारखाने के सोल अच्छे दबे होते हैं इसलिए अधिक टिकाऊ होते हैं। घरेलू पद्धति से चमड़ा, कारखाने के चमड़ों से सभी मानें में लोहा ले सकता है।

रणीवा आश्रम में मूँज और घास की टोकरियाँ और रस्सियाँ बनाने का पुराना उद्योग फिर से शुरू किया जा रहा है। सुधारे हुए औज़ारों से टोकरियाँ बनाने का काम पेशेदार आदमियों को भी सिखलाया जाता है और अभी यह बात देखनी है कि उनकी आमदनी कितनी बढ़ती है।

——

मिशन पाल्टरी फ़ार्म, एटा

देहात में जो लोग मुर्ग़ियाँ पालते हैं, अंडों का व्यवसाय करते हैं और मुर्ग़ियों की नस्ल सुधारना चाहते हैं उनकी सहायता के लिए एटा के पाल्टरी फ़ार्म ने एक विशेष योजना बनाई है। इस योजना का ध्येय यह है कि उन गाँवों को जो ग्रामसुधार के क्षेत्र के अन्तर्गत हैं अच्छी नस्ल की मुर्ग़ियाँ उत्पन्न करने और इस व्यवसाय को लोकप्रिय बनाने की सहायता दी जाय।

यह फ़ार्म नीचे लिखी हुई क़ीमत पर ऐसी जगह के व्यवसायियों को मुर्ग़ियाँ और अंडे देने को तैयार हैः—

(अ) उत्तम क़िस्म के अंडे १।।) प्रति-दर्जन।

(ब) ९—१८ महीने तक के मुर्ग़े ह्वाइट लेग हार्न या ब्लैक मिनर्वा जाति के ४) प्रतिमुर्ग़ियाँ।

(स) अंडा देनेवाली मुर्ग़ियाँ ऊपर की ही जाति की ६) प्रतिमुर्ग़ी।

ऊपर दिये गये मूल्य पर ये मुर्ग़ियाँ और अंडे यू० पी० के अन्दर किसी भी रेलवे स्टेशन तक पहुँचाये जा सकते हैं बशर्ते कि दो दर्जन अंडे, तीन मुर्ग़े या चार मुर्ग़ियाँ एक साथ मँगाई जायँ। इस तरह सूबे के अन्दर सब जगह इसका दाम एक ही है।

यह तो हुआ रियायती मूल्य। इसी का साधारण मूल्य इस प्रकार है :—

(अ) ९) से १८) तक प्रतिदर्जन।

(ब) १०) से १८) तक प्रतिमुर्ग़ा।

(स) १०) से १५) तक प्रतिमुर्ग़ी।

इसमें रेलवे महसूल शामिल नहीं है। यह रियायत सिर्फ़ उन लोगों के लिए है जो कि साधारणतः उन गाँवों में रहते हैं जिनमें आज-कल ग्राम-सुधार का काम जारी है। शहर के निवासियों को यह रियायत नहीं दी जायगी।

यह भी ज़रूरी है कि सिर्फ़ उन्हीं लोगों से आर्डर भेजवाया जाय जो कि पहले से मुर्ग़ियाँ पालते रहे हैं और जो इसे आय का साधन बनाये हुए हैं। जिन्हें मुर्ग़ी पालन का कोई व्यावहारिक ज्ञान नहीं है उन्हें इसके लिए पूर्ण निरोत्साहित करना चाहिए क्योंकि वे इस व्यवसाय में सफल नहीं हो सकते। उनके लिए जरूरी है कि पहले वे यू० पी० पाल्टरी एसोसियेशन, लखनऊ में इसकी शिक्षा प्राप्त कर लें।

सेने के लिए अंडे मँगाने का सर्वोत्तम महीना जनवरी और फ़रवरी का है। यों तो मार्च और अप्रैल में भी अंडों से बच्चे उत्पन्न किये जा सकते हैं परन्तु तब इतनी सफलता नहीं मिल सकती है। मुर्ग़े और मुर्ग़ियों के मँगाने का सर्वोत्तम महीना अक्टूबर से ३१ मार्च तक का है। यों तो वे कभी भी मँगाई जा सकती हैं।

इस संबंध में जिन्हें लिखा-पढ़ी करनी हो वे सीधे मैनेजर, मिशन पाल्टरी फ़ार्म, एटा से पत्र-व्यवहार करें।

पहले पत्र लिखकर पूछ लेना चाहिए कि अंडे प्राप्त हैं या नहीं। उत्तर में हाँ सुनने पर ही ख़रीदार से पूरा दाम लेकर फ़ार्म को भेज देना चाहिए। ज़िला एसोसिएशन की वार्षिक रिपोर्ट में इसका ज़िक्र होना चाहिए कि इस संबंध में क्या किया गया और इससे क्या क्या परिणाम हुआ? ग्राम-सुधार के कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे इस रियायत को गाँववालों में समुचित प्रचार कर दें और उन्हें यह भी बता दें कि देहातों में रहनेवाले लोगों को ग्राम-सुधार स्कीम के बाहर होने पर भी इस योजना से लाभ उठाना चाहिए किन्तु रियायती मूल्य पर अंडे और मुर्ग़ियाँ सिर्फ़ वे ही पा सकेंगे जिनकी दरख़्वास्त ज़िला के ग्राम-सुधार संघ के मंत्री के मार्फ़त आयेगी।

आशा है इससे देहात के मुर्ग़ी पालने की कला में बहुत कुछ उन्नति हो जायगी।

——

Regd. No. A—294.

हल के वार्षिक चन्दे में रियायत

हमारे सूबे की सरकार की मेहरबानी से नीचे लिखे हुए लोगों और संस्थाओं के लिए "हल" का वार्षिक चन्दा ४॥।≈) से ३॥) कर दिया गया है परन्तु यह रियायत केवल ३,५०० प्रतियों तक सीमित है। आशा की जाती है कि नीचे लिखे हुए लोग इस विशेष रियायत से लाभ उठायेंगे।

१—सरकारी इमदाद पानेवाले मदरसे।

२—"किसान उपकारक"—"मुफ़ीदुलमज़ारीन" और "हल" के देहातों में रहनेवाले मौजूदा ग्राहक।

३—वे लोग जो देहातों में खेती करते हों।

४—ज़मींदार जो सरकार को १,०००) या इससे कम सालाना मालगुज़ारी देते हों।

५—वे लोग जो देहात में रहते हों और जिनकी आमदनी १००) महीने से कम हो।

६—सहयोग और जीवनसुधारसभायें या यूनियन या केन-सुसायटियाँ या यूनियनें।

७—वे लोग जो देहात में रहते हों और गाँव में मुफ़्त बाँटने के लिए एक साथ पाँच या ज़्यादा कापियाँ मँगावें।

८—डिस्ट्रिक्ट और म्यूनीसिपल बोर्ड और इमदादी अस्पताल।

सब प्रकार के प्रत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर 'हल'

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मार्च १९४२

अङ्क ३] हल १ ली मार्च १९४२
सचित्र मासिक पत्र

विषय-सूची

वर्ष ४
अङ्क ३

मार्च
१९४२

संयुक्त-प्रान्तीय सरकार के ग्राम-सुधार-विभाग का मुख पत्र

प्रधान सम्पादक

ग्रामसुधार-अफ़सर, यू० पी०, लखनऊ

सम्पादक

श्रीनाथसिंह

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

१९४२

वार्षिक मूल्य ५।।)]

[एक प्रति का ।।)

लव कुश

सचित्र मासिक पत्र

मार्च १९४२ साल ४ अङ्क ३

गाँवों की ओर

लेखक, श्री सुधीन्द्र

चलोगे उन गाँवों की ओर?

जहाँ पर छप्पर सर पर धरे खड़ी है मिट्टी की दीवार।
कँटीली झाड़ों ही ने जहाँ बनाया है घर-घर का द्वार।
इन्हीं में रहता मानवदेह, इन्हीं में करता दैन्य विहार।
इन्हीं के कोने में है यहीं कहीं पड़ सो रहता परिवार॥
खुले रहते हैं घर दिन-रात, नहीं आते पर डाकू-चोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?

कहीं पेड़ों के झुरमुट-झुंड, कहीं लहलहा रहे हैं खेत!
कहीं पर काली मिट्टी बिछी, कहीं बिखरी है बालू रेत!
कहीं पर ऊँचे टीले खड़े, कहीं पर सोया है चट्टान।
कहीं पर बहते नाले-नहर, कहीं है चौड़ा-सा मैदान॥
खुली धरती माता की गोद, मिलेगा जिसका ओर न छोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?

धूल में या कीचड़ में सने खेलते गलियों में गोपाल।
नहीं अंजन से रंजित आँख, कुचैले मैले बिखरे बाल॥
देह उनकी है नंग-धड़ंग, वस्त्र उनको कहना है भूल,
जीर्ण-जर्जर हो जिनका हाथ, रहा हो धागा धागा झूल।
देह है नहीं, खाल में बाँध हड्डियों को है लिया बटोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?

जहाँ घर-घर में गोरू लिये चराते हैं हलधर के लाल।
लँगोटी पहने लकुटी लिये फटे चिथड़े ओढ़े बेहाल॥
रँभाती गोएँ भैंसें जहाँ, उछलते करते बछड़े खेल।
इन्हीं में रहकर ये दिन-रात तीन तापों को सकते झेल॥
सम्पदा बने खेत-खलिहान और धन इनके डंगर ढोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?

जहाँ घर के कोने में नित्य किया करती है करुणा नाच,
जलाती झुलसाती हैं जहाँ देह को कड़ी पेट की आँच॥
सिमिट दुनिया भर का संताप जहाँ आया है आश्रय मान,
न जाने कितने दुख से दबे रहा करते हैं व्याकुल प्राण!
जहाँ पर रहती नित्य अशान्ति, क्रान्ति की आई नहीं हिलोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?

बँधे जो परकोटों से नहीं, बेधती जिसे नहीं मीनार।
जहाँ पर नहीं भयानक खड़े भवन-प्रासाद, दुर्ग दीवार॥
नहीं माता का अंचल जहाँ दिया है शहतीरों ने चीर,
जहाँ पर बँधे नहीं मैदान, धरा-आकाश न नीर-समान॥
मोटरों-ताँगों-इक्कों-ट्राम-मिलों-रेलों का मचा न शोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?

बोलते बुलबुल कोयल बोल, छेड़ते तोता-मैना तान।
कबूतर, पंडुक, सारस, हंस, केलि करते गाते हैं गान॥
जहाँ पर बँधे नहीं हैं पंख, जहाँ संकुचित नहीं संसार,
छीन पाता है मानव नहीं जहाँ पशु का आनन्द-विहार॥
मयूरी को करता है मुग्ध जहाँ पर नाच-नाच कर मोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?

कुएँ के पनघट पर लो देख जहाँ नारी का मंगल-रूप।
रसभरी बातें होती जहाँ जिन्हें सुन पाता केवल कूप॥
शील की प्रतिमा सुषमामयी युवा-बालायें जुड़ें अनेक।
कलश जिनके पानी से भरे, सदा करते रस से अभिषेक॥
लोचनों की कोरों से बँधी जहाँ पर प्रेम-पुलक की डोर।
चलोगे उन गाँवों की ओर?
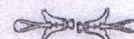
संयुक्तप्रान्त में ईख की कोआपरेटिव सोसाइटियाँ

लेखक, श्री आर० पी० माथुर, असिस्टेंट रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़, यू० पी०, मेरठ

पिछले दस सालों में इस देश ने जो औद्योगिक उन्नति की है उसमें शक्कर के धन्धे की अद्भुत उन्नति का भी एक मुख्य स्थान है। पहले इस धन्धे का कोई विशेष स्थान नहीं था परन्तु अब भारतवर्ष के उद्योग-धन्धों में इसका दूसरा स्थान हो गया है। विभिन्न कारणों से यह धन्धा संयुक्त-प्रान्त और बिहार में ही केन्द्रित रहा है। संयुक्त-प्रान्त में सन् १९३२-३३ ई० में शक्कर के कारखानों की संख्या ३३ थी, दूसरे साल यह संख्या ५९ हो गई और धीरे-धीरे यही संख्या बढ़कर सन् १९३८-३९ ई० में ७१ हो गई। बिहार में शक्कर के कारखानों की संख्या सन् १९३२ ई० में १९ थी और फिर बढ़कर सन् १९३८-३९ ई० में ३३ हो गई। इस प्रकार सन् १९३८-३९ ई० में सारे देश में कुल १४३ कारखानों में से १०० से अधिक इन्हीं दो प्रान्तों में चल रहे थे। जहाँ तक शक्कर के उत्पादन का सम्बन्ध है, कुल भारतवर्ष ने सन् १९३७-३८ ई० में ९,३०,७०० टन शक्कर तैयार की उसमें से संयुक्त-प्रान्त ने ५३,१,३०० टन (५७ फ़ी सदी) और बिहार ने २,२५,३०० टन (२४ फ़ी सदी) शक्कर तैयार की थी।

शक्कर के धन्धे के शीघ्र प्रसार होने के कारण कई समस्यायें उत्पन्न हुईं, जैसे कारखानों को लाइसेंस दिया जाना, कारखानों के लिए अलग-अलग रक़बों का नियत किया जाना या सुरक्षित रखना, ईख मिलने का बन्दोबस्त करना, ईख की उन्नति करना, ईख ख़रीदने के लिए जो तौल काम में लाये जाते हों उनका और जो रुपया दिया जाता हो उसका निरीक्षण करना, ईख की क़ीमत नियत करना, यातायात के साधनों में उन्नति करना, मिलमालिकों और मज़दूरों के परस्पर के सम्बन्ध को ठीक करना इत्यादि। सरकार इनमें से बहुत-सी समस्याओं को हल करने में या क़रीब-क़रीब हल करने में सफल हुई है। लेकिन फिर भी अभी थोड़ी-सी समस्यायें हल नहीं हुई हैं। संयुक्त-प्रान्त में कुछ विशेष समस्याओं को हल करने में विशेषकर ईख मिलने का बन्दोबस्त करने और ईख की उन्नति में कोआपरेटिव सोसाइटियों ने महत्त्वपूर्ण सहायता दी है। निम्नलिखित पैरों में संयुक्त-प्रान्त की इन सोसाइटियों के संगठन, विधान, कार्यों, कार्य-क्षेत्र और उन्नति का उल्लेख करने का प्रयत्न किया गया है।

कोआपरेटिव संगठन का इतिहास

सन् १९३२ ई० में सरकार-द्वारा संरक्षण मिलते ही शक्कर के धन्धे के प्रसार होने के प्रारम्भिक वर्षों में, विशेषकर ईख मिलने के मामले में, बहुत ही गड़बड़ी और कुशलता का अभाव दिखाई पड़ता था। बिना किसी रोक-टोक के कारखाने खुलने लगे और कभी-कभी तो एक ही जगह पर दो-दो कारखाने खुल गये। इन कारखानों ने ईख मिलने का कोई उचित प्रबन्ध नहीं किया। बिना किसी नियम के ईख के काश्त करनेवाले बैलगाड़ियों में ईख कारखानों में लाते थे। इसका फल यह होता था कि जहाँ एक दिन सैकड़ों गाड़ियों की खपत होती थी वहाँ हज़ारों गाड़ियाँ आकर इकट्ठा हो जाती थीं। इस गड़बड़ी का स्वभावतः यह परिणाम हुआ कि ईख के काश्त करनेवालों को कई दिनों तक इन्तज़ार करना पड़ता था और तब उनकी गाड़ियों के तौले जाने की बारी आती थी। इस अरसे में ईख सूख जाती थी जिससे उनका वज़न कम हो जाता था और ईख के काश्त करनेवालों को नुक़सान पहुँच जाता था और कारखाने को भी नुक़सान उठाना पड़ता था क्योंकि ईख में सुक्रोस कम मिलता था। बहुत-सी गाड़ियों के एक ही स्थान पर जमा होने से बहुत-सी अन्य बुराइयाँ पैदा हुईं जिनकी वजह से बेचारे ईख की काश्त करनेवालों को नुक़सान होता था लेकिन दलालों को बहुत फ़ायदा होता था। कुछ कारखानों ने खुलेआम दलालों को इसलिए नौकर रक्खा कि उनसे उन्हें ईख मिलती रहे। इन दलालों से व्यावहारिक रूप में और कोई फ़ायदा न होता था बल्कि वे लोग स्वयं अपना पेट भरते थे। यह गड़बड़ी इस कारण से और भी अधिक बढ़ गई थी कि कारखानों के लिए ईख मिलने के रक़बे अलग-अलग नियत नहीं किये गये थे। ईख की काश्त करनेवाले एक कारखाने के फाटक पर से दूसरे कारखाने के फाटक पर अपनी गाड़ी इस आशा से ले जाया करते थे कि वहाँ पर उनकी ईख जल्दी ही ख़रीद ली जायगी। परन्तु दूसरे कारख़ाने के फाटक पर पहुँचने पर उनका यह ख़याल ग़लत साबित होता था। कुछ कारख़ानों ने एजेंट नौकर रक्खे थे जो ईख बाहर जाकर ख़रीदते थे और रेल-द्वारा कारख़ाने में भेजते थे। ये ईख की काश्त करनेवालों की बेबसी का अनुचित फ़ायदा उठाते और हर प्रकार से, जैसे कम तौलकर या कम क़ीमत देकर कई तरह से ईख की काश्त करनेवालों को ठगा करते थे। इन सबसे बड़ी ख़राबी यह थी कि ईख की कोई कम से कम क़ीमत नियत न की गई थी और सरकारी नियंत्रण न होने का कुछ कारख़ाने बहुत ही घृणास्पद रूप से फ़ायदा उठाया करते थे। एक कारख़ाना बहुत समय तक ईख बोनेवालों से ईख ३ आ० ६ पा० मन के हिसाब से ख़रीदा करता था और ख़ुद बहुत मुनाफ़ा उठाया करता था। दूसरे कारख़ाने ने ५ आ० फ़ी मन से अधिक (अफ़सरों-द्वारा दबाव डाले जाने पर भी) ख़रीदने से इनकार कर दिया और ६ लाख का मुनाफ़ा उठाकर अपना कारख़ाना उस सीज़न में बन्द कर दिया। भारत-सरकार ने सन् १९३४ ई० में, 'शुगर केन ऐक्ट' बनाया जिससे प्रान्तीय सरकारों को यह अधिकार मिला कि वे ईख की क़ीमत और अन्य ऐसे मामलों पर नियंत्रण रखने के लिए नियम बनायें जिनका सम्बन्ध ईख की तौल और ख़रीद से हो। संयुक्त-प्रान्तीय सरकार ने पहले-पहल इस सम्बन्ध में नियम सन् १९३[illegible] ई० में बनाये और सन १९३६ ई० में इनमें संशोधन किया।

इन नियमों के अधीन कम से कम क़ीमत नियत करने का एक तरीक़ा ढूँढ़ निकाला गया और गजटेड अफ़सरों को, जो केन इन्स्पेक्टर कहलाते हैं, नियुक्त किया गया। ये अफ़सर उन नियमों को प्रयोग में लाने के लिए नियुक्त किये गये जो ख़राबियों को दूर करने के लिए बनाये गये थे। लेकिन कार-ख़ानों के लिए अलग-अलग रक़बों को नियत करने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई इसलिए उस समय तक जब कि शक्कर के

कारखानों पर नियंत्रण रखने का ऐक्ट, सन् १९३८ ई० में नहीं बनाया गया, ईख मिलने में गड़बड़ी और भीड़ होती रही। यद्यपि कुछ अच्छे और उचित ढंग पर चलनेवाले कारखाने थे जो ईख नियमानुसार लिया करते थे, फिर भी ऐसे कारख़ानों की संख्या बहुत कम थी। यहाँ पर इतना और कहा जा सकता है कि इन प्रारम्भिक वर्षों में ईख की उन्नति करने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई। उस समय प्रान्त में शक्कर सिर्फ़ ८·५ मन बनाई जाती थी (यानी १०० मन ईख से ८·५ मन शक्कर बनती थी) १०० मन ईख से क़रीब ११·८ मन शक्कर जावा और हवाई में, ११·२ मन फ़िलीपाइन्स में, १२·५ मन क्यूबा में और १३·० मन फ़ारमोसा में बनती थी। भारतवर्ष में अब १० मन बनने लगी है।)

सम्भव है कि कोई यह सोचे कि कोआपरेटिव-विभाग के लोग ऊपर बताई हुई समस्याओं को हल करने के लिए आगे बढ़ते। लेकिन उस समय इस प्रान्त का कोआपरेटिव-विभाग एक बहुत ही छोटा विभाग था जिसके पास अमला भी कम था और कोष भी सीमित था। इन्हीं कारणों से विभाग किसी नये संगठन का आयोजन किसी बड़े पैमाने पर न कर सका। फिर भी इस प्रान्त की विभिन्न जगहों में सहयोग के आधार पर इस दिशा में प्रयत्न किया गया। कारख़ानों को ईख देने के लिए घुघली (गोरखपुर), पडरौना (गोरखपुर), देहरादून, मुज़फ़्फ़रनगर, सीतापुर और मेरठ में कोआपरेटिव प्राइमरी सोसाइटियाँ और यूनियन बनाये गये। इन्होंने वास्तव में बड़ा उपयोगी काम किया परन्तु इनके काम करने में बहुत-सी अड़चनें आईं। कोई ऐसा क़ानून उस समय नहीं बना था जिनसे इन्हें सहायता मिलती। कारख़ानों को यह अधिकार था कि चाहे वे इनके साथ ठेका करें या न करें; यही नहीं बल्कि अगर वे चाहें तो वे इस संगठन का कोई ख़याल न करके सीधे उसके मेम्बरों से व्यवहार रख सकते थे। कई जगहों पर अफ़सरों को इस बात के लिए लोगों पर ज़ोर देना पड़ता था कि रिवाज यह है कि इन सोसाइटियों से ही व्यवहार किया जाय। कमीशन की कोई नियत दर न थी और कई जगहों पर सोसाइटियों ने यह देखा कि मिलें उनके साथ उचित बर्त्ताव करने से इनकार करती थीं। उनके साधन बहुत ही सीमित थे और इसलिए वे ईख के सुधार के सम्बन्ध में कोई बड़ी योजना अपने हाथ में नहीं ले सके। आमतौर से उनका कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा था और कुछ हालतों में सुसम्बद्ध नहीं हुआ करता था। इनकी वजह से वे कोई प्रभावशाली काम नहीं कर सकते थे। इन असुविधाओं के होते हुए भी ईख पहुँचाने की ये प्राइमरी सोसाइटियाँ इस मतलब से बहुत ही फ़ायदेमन्द साबित हुईं कि इन्होंने उस कोआपरेटिव संस्था की नींव डाली जो भविष्य में कार्य और अधिक पूर्ण रूप से कर सकती थी। इन सोसाइटियों ने ईख की काश्त करनेवालों की दो प्रकार से सेवायें कीं। ये ईख की काश्त करनेवालों को रुपया पेशगी देती थीं और ईख पहुँचाने का नियमित रूप से प्रबन्ध करती थीं। (यद्यपि नियमित रूप से ईख पहुँचाने का कोई सन्तोषजनक प्रबन्ध उस समय तक न हो सका जब तक सरकार ने ईख के रक़बों को हर कारखाने के लिए अलग-अलग रखने की प्रथा जारी नहीं की थी)।

सन् १९३५ ई० में जब सरकार को सेंट्रल शुगर एक्साइज़ फ़ंड से आधे लाख रुपये की रक़म ईख की काश्त की उन्नति के लिए मिली ताकि सहयोगी सिद्धान्त पर ईख की बिक्री का प्रबन्ध किया जा सके, तो सरकार ने शक्कर के धंधे की बुराइयों को दूर करने के लिए पहला संगठित प्रयत्न किया था। ईख की पूर्ति (सप्लाई) और उन्नति का संगठन करने के लिए एक सहयोगी और कृषि-सम्बन्धी योजना चन्दे के आधार पर कारख़ानों के सामने रक्खी गई। सरकार ने उन कारख़ानों के रक़बों में ईख की उन्नति करने का काम अपने हाथ में लिया जो सरकार को ३,००० रुपया सालाना चन्दा देने को तैयार थे और ईख किसी ऐसी कोआपरेटिव सोसाइटी से लेने को तैयार थे जो किसी ऐसे रक़बे में संगठित की गई हो और जो ३ पाई फ़ी मन की दर से कमीशन देती थी। हर यूनिट में एक असिस्टेंट केन डेवेलपमेंट अफ़सर, तीन सुपरवाइज़र और ९ कामदार होते थे। इन लोगों से यह आशा की जाती थी कि ये लोग चार साल में ईख के २,००० से लेकर २,४०० एकड़ तक के रक़बे में काश्त करेंगे और उसका प्रसार करेंगे। हर यूनिट के सालाना ख़र्चे का तख़मीना सामने लिखे तौर पर ९,००० रुपया लगाया गया था—

एक असिस्टेंट डेवेलपमेंट अफ़सर तनख़्वाह ८०-५-१५०, चपरासी की तनख़्वाह १० रुपया और सफ़री भत्ता २० रुपया माहवार। — रु० १,३२०

तीन फ़ील्डमैन सुपरवाइज़र, तनख़्वाह ३०-१-४० रुपया पोर्टर ७ रुपया और सफ़री भत्ता ८ रुपया माहवार। — १,६२०

९ कामदार, तनख़्वाह १५ रु० — १,६२० रु०

बीज और खाद की सरकारी सहायता — ४,००० रु०

फुटकर — ३०० रु०

इस कुल ख़र्चे में सरकार ६,००० रुपया देती थी और कारख़ाना ३,००० रुपया। इस योजना के शुरू होते ही २२ कारख़ाने इसमें शामिल हो गये। सन् १९३७-३८ ई० के अन्त तक ३० यूनिट काम करने लगे थे।

प्रारम्भ में यह योजना इस इरादे से चलाई गई थी कि, अगर ईख की काश्त करनेवाले को ईख की और अधिक पैदावार मिलती है और उसे और अधिक आर्थिक लाभ होता है और अगर उसे कारख़ानों में ऐसी ईख देना है जिससे उनको उस ईख से इतना सुक्रोस मिले जितना कि उनको आवश्यकता है और वह ईख किसी सीज़न में इतने समय तक रखी जा सके जितना कि जलवायु की वजह से मुमकिन हो सके, तो ऐसा रक़बा बनाया जाय कि जिसमें वे सब ख़ूबियाँ हों जिससे कि ईख अधिक परिमाण में और अधिक अच्छी उत्पन्न हो और जिन ख़ूबियों को अनुसन्धान और परीक्षा-द्वारा इस प्रकार का घोषित कर दिया गया हो। यह काम कृषि-सुधार के एक विस्तृत कार्यक्रम-द्वारा किया जानेवाला था। इस सम्बन्ध की विशेष बातें नीचे दी हुई हैं।—

(१) शुरू फ़सल में, बीच फ़सल में और देर में पकनेवाले ऐसे ईख की काश्त जिसमें अच्छी सुक्रोस बड़ी मात्रा में पाई जाती है; सरकारी सहायता से बीज के फ़ार्मों का खोला जाना और काश्त करनेवालों को मदद देना।

(२) खाद बनाने के वर्तमान तरीक़ों में उन्नति करना। (क) जैसे हरी पत्तियों की खाद और मिश्रित खाद की मात्रा बढ़ाकर, (ख) विभाग द्वारा तैयार किये हुए मिश्रित खादों को उधार देकर।

(३) ठीक-ठीक दूरी पर बोकर और विभिन्न प्रकार की ईखों की काश्त करके

ईख की क़िस्म सुधारने के तरीक़े का प्रचार करके।

(४) आबपाशीवाले रक़बों की सूरत में जिनमें पानी की आवश्यकता हो, नहर के अधिकारियों की सहायता से, उतने पानी का इन्तज़ाम करना।

(५) कीड़ों को मारने के लिए जो ख़र्चा होता है उसे कम करने के लिए सहयोगी उपायों का संगठन।

यह सारी योजना स्वयं ऐसे ईख की काश्त करनेवालों की सहायता से चलाई जानेवाली थी जो कोआपरेटिव सोसाइटी के रूप में संगठित किये जानेवाले थे। इस सोसाइटी को अपने सदस्यों के ईख के क्रय-विक्रय का कार्य भी करना था।

इस उपयोगी योजना को मिस्टर आर० जी० अलन, आई० ए० एस०, ने जो उस समय डाइरेक्टर आफ़ एग्रिकल्चर थे और मिस्टर विष्णुसहाय, आई० सी० एस०, ने जो उस समय कोआपरेटिव सोसाइटियों के रजिस्ट्रार थे मिलकर तैयार की थी। सरकार इस योजना के आधार पर तब से कार्य करती आ रही है। कुछ समय तक इस योजना को मेसर्स अलन और सहाय मिलकर चलाते रहे मगर जब सन् १९३६ ई० में मिस्टर अलन चले गये तो मिस्टर सहाय ने अकेले ही इस योजना को चलाया। जैसी सुन्दर योजना उन्होंने तैयार की थी उतनी ही ख़ूबसूरती से उन्होंने उस योजना को चलाया।

शुरू से ही इस योजना को बहुत सफलता मिलती रही। उन्नतिशील तरीक़ों से जितनी अच्छी और अधिक संख्या में ईख पैदा होने लगी उससे ईख की काश्त करनेवाले और कारख़ानों दोनों को आश्चर्य हुआ। कोआपरेटिव सोसाइटियों-द्वारा कारख़ानों को ईख देने का काम बहुत संतोषजनक रहा और पहले जितनी गड़बड़ी फैली हुई थी उससे कहीं अधिक सुचारु रूप से कार्य चलने लगा। लेकिन ऐसा मालूम होता था कि कारख़ाने आमतौर से यह नहीं चाहते थे कि उन्हें जो ईख मिलती थी उसपर नियंत्रण रक्खा जाय और उसके लिए उन्हें कमीशन देना पड़े। 'उन्नतिशील ईख' की परिभाषा, बिना उन्नतिशील ईख के लिए कमीशन देने, मेम्बरों की भर्ती इत्यादि के विषय में छोटे-छोटे झगड़े उठ खड़े हुए। अलन-सहाय-योजना के अनुसार कारख़ानों और सरकार के बीच में जो इक़रारनामा हुआ उससे कारख़ानों ने यह मतलब निकाला कि वे कोआपरेटिव सोसाइटियों के सदस्यों के उन्नतिशील ईख को ही ख़रीदने के लिए बाध्य थे। अधिकारियों-द्वारा हतस्क्षेप करने पर ये झगड़े निबटा दिये गये। परन्तु यह बात स्पष्ट थी कि उस समय जो क़ानून लागू था उससे कोआपरेटिव सोसाइटियाँ कारख़ानों की दया पर छोड़ दी गई थीं। इसके अतिरिक्त कोआपरेटिव संगठन का फ़ायदा कुछ सीमित क्षेत्र ही उठा सकते थे क्योंकि बहुत से कारख़ाने इस योजना में शामिल नहीं हुए थे। देखने से यह बात स्पष्ट थी कि ईख बोनेवालों के संगठन के और सरकारी हस्तक्षेप के डर से ही बहुत से कारख़ाने इस योजना में शामिल हुए थे क्योंकि सन् १९३७ ई० के अन्त तक इस प्रान्त के आधे कारख़ाने इस योजना में शामिल नहीं हुए थे। इस प्रकार अलन-सहाय-योजना शीघ्र ही उन्नति न कर सकी क्योंकि इस योजना के अनुसार यह कारख़ानों की स्वेच्छा पर निर्भर था कि वे इस योजना में शामिल हों या न हों।

जुलाई सन् १९३७ ई० में जब कांग्रेस सरकार आई तब शक्कर के धन्धे की समस्याओं पर, विशेषकर उन समस्याओं पर जिनका असर ईख की काश्त करनेवालों पर होता था, ध्यान दिया गया। एक वर्ष के अन्दर ही 'शुगर फ़ैक्टरी कण्ट्रोल ऐक्ट, सन् १९३८ ई०' बनाया गया और कुछ विषयों पर इस ऐक्ट के बनाये जाने के पूर्व ही कार्यवाही की गई थी। ख़ास-ख़ास कार्यवाहियाँ निम्नलिखित की गई थीं—

(१) नये कारख़ाने उसी समय बनाये जा सकते थे और मौजूदा कारख़ानों में तभी प्रसार किया जा सकता था जब कि प्रान्तीय सरकार लाइसेंस दे दे (दफ़ा ९ शुगर फ़ैक्टरी कन्ट्रोल ऐक्ट, सन् १९३८ ई०)।

(२) ईख को पेरने के लिए कारख़ानों को हर साल लाइसेंस लेना पड़ेगा (दफ़ा १०)। सरकार ने यह भी अख़्तियार अपने हाथ में ले लिया कि वह इन लाइसेंसों में सेंडिकेट के सदस्यता के, शक्कर की क़ीमत के, शक्कर का ग्रेड इत्यादि बनाने के, कम से कम ईख पेरने के, मज़दूरों को नौकर रखने की शर्तों के विषय में अपनी शर्तें लगा सकती थी। (दफ़ा ११)।

(३) हर कारख़ाने के लिए रक़बे अलग-अलग नियत कर दिये गये थे ताकि ईख की उन्नति हो और उसी रक़बे के अन्दर ईख पहुँचाने का उचित तौर पर संगठन कि[या] जा सके।

(४) कम से कम क़ीमत नियत क[रने] का नियम फ़िर से दोहराया गया।

(५) यह पहला समय था जब कि ई[ख] पहुँचाने की कोआपरेटिव सोसाइटियों [की] ओर विशेष ध्यान दिया गया। कारख़ाने [अब] इस बात के लिए बाध्य कर दिये गये कि वे किसी नियत रक़बे के अन्दर ही कि[सी] कोआपरेटिव सोसाइटी से ईख ख़रीदें [और] इसके लिए उन्हें इतना कमीशन देना पड़[ता] था जितना कि नियमों-द्वारा नियत कर दि[या] गया था। इस प्रकार 'उन्नतिशील' [और] 'बिना उन्नतिशील' ईख का प्रश्न अब न[हीं] उठ सकता था। कारख़ानों को सीधे कोआ[प]रेटिव सोसाइटियों के मेम्बरों से व्यव[हार] रखने की मुमानियत कर दी गई थी। वास्[तव] में उस इक़रारनामे का फ़ार्म भी अब निय[मों] द्वारा नियत कर दिया गया है जो सोसा[इ]टियों और कारख़ानों के बीच में भरा जा[ना] चाहिए। पंचायत-द्वारा सब झगड़ों का फ़ैस[ला] होगा।

(६) शक्कर की बिक्री पर एक टै[क्स] लगा दिया गया है। उसकी मौजूदा दर [...] पाई फ़ी मन है। इससे प्रान्तीय सरकार [को] ३० से लेकर ४० लाख तक की साला[ना] आमदनी हुई है। यह रुपया ईख की उन्[नति] करने, ईख के रक़बों में यातायात के साध[नों] का सुधार करने और अन्य ऐसे ही सुधार [के] विषयों पर ख़र्च किया जा रहा है।

(७) यह आज्ञा दी गई थी कि अल[न-]सहाय-योजना में जल्दी की जाय। के[न] कमिश्नर (मिस्टर बी० सहाय, आई० सी० एस०) के अधीन एक अलग विभाग बना[या] गया जो इस योजना को कार्यान्वित करता [है] और इस नये क़ानून के कारण जो अन्य माम[ले] उठ खड़े हुए हैं उनकी ओर विशेष[...] शक्कर के कारख़ानों के लिए अलग-अल[ग] रक़बों के नियत किये जाने के सम्बन्ध [में] देख-भाल करता है। इस विभाग को का[फ़ी] रुपया दिया गया है।

सरकार के शासन और व्यवस्था-सम्बन्[धी] उपायों से कोआपरेटिव सोसाइटियों को ब[हुत] सहायता मिली जिसकी उन्हें आवश्यक[ता] थी। कोआपरेटिव सोसाइटियाँ अब स्वतन्त्रता[-] पूर्वक बहुत से कारख़ानों के रक़बों में इस बा[त] पर ध्यान दिये बिना स्थापित होने लगीं [कि] उन्हें कारख़ाने का सहयोग प्राप्त होगा

[illegible] या यह कि कारख़ानों से उन्हें चन्दा [illegible] या नहीं। सुधार करनेवाली यूनिटों [illegible] संख्या में जो सन् १९३७ ई० के अन्त में [illegible] ३० ही थी पहले ५६ और बाद में [illegible] की और वृद्धि हुई और इस प्रकार कुल [illegible] की संख्या १३६ हो गई। कोआपरेटिव [illegible], जो इन यूनिटों में बनाये जाते थे, [illegible]तापूर्वक बिना उन पाबन्दियों के, जो [illegible] पहले लगाई गई थी, मेम्बर बनाते [illegible] स्वयं अपना रक़बा चुन लिया करते [illegible] कारख़ानों ने इस संगठन का स्वागत [illegible] और अपनी ही ओर से अपने कुल [illegible] रक़बे का नियंत्रण कोआपरेटिव सोसा-[illegible] के हाथ सौंप दिया। दूसरे मिलों ने इस [illegible] नियंत्रण का विरोध किया और इसके [illegible] खुलेआम लड़ाई की। परन्तु नये क़ानून [illegible]शों की, ऐसे उत्साही अमले की जिसकी [illegible] अब बढ़ा दी गई थी और अपनी [illegible] के कारण जिसको कोआपरेटिव [illegible]टियाँ प्रचार के अस्त्र के रूप में प्रयोग [illegible] थीं, कोआपरेटिव संगठन की ताक़त [illegible] गई, यहाँ तक कि आज इसके द्वारा [illegible]-प्रान्त में ८० फ़ी सदी ईख पहुँचाई जाती [illegible] निम्नलिखित आँकड़ों से यह मालूम हो [illegible] कि कितनी अद्भुत उन्नति हुई है—

इस समय इस योजना पर सरकारी ख़र्चा क़रीब १½ लाख वार्षिक से बढ़कर १० लाख वार्षिक हो गया है। (संयुक्त-प्रान्तीय कोआपरेटिव विभाग का कुल सालाना बजट सिर्फ़ ७ लाख है)।

ईख की सोसाइटियों का विधान और कार्य-प्रणाली

ईख की सोसाइटियों के संगठन का इतिहास और प्रसार का ज्ञान होने के बाद अब हम लोगों को इन सोसाइटियों के विधान और कार्य-प्रणाली का भी ज्ञान होना चाहिए। मामूली तौर पर यह कहा जा सकता है कि ईख की सोसाइटियाँ दो प्रकार की हैं। (१) एक तो वे जिनको कोआपरेटिव विभाग ने शुरू-शुरू में बड़े-बड़े रक़बों के लिए बनाया था। (२) और दूसरे वे जिनका ईख-विभाग ने ईख-प्रसार-योजना के एक भाग के तौर पर संगठन किया है। सैद्धान्तिक दृष्टि से दोनों के एक ही उद्देश्य हैं और उनका एक ही विधान है। व्यवहार में पहले प्रकार की सोसाइटियों ने अपना कार्य-क्षेत्र विशेषकर सिर्फ़ ईख देने ही तक सीमित रक्खा है और दूसरे प्रकार की सोसाइटियाँ कृषि-सुधार का और माल पहुँचाने का, यानी दोनों ही काम कर रही हैं। पहले प्रकार की सोसाइटियाँ बड़े-बड़े रक़बों से सम्बन्धित हैं और दूसरे प्रकार की सोसाइटियाँ छोटे-छोटे ऐसे रक़बों में काम करती हैं जिनका कार्यक्षेत्र आमतौर से उसी रक़बे तक सीमित है जो किसी ख़ास कारख़ाने के लिए नियत कर दिया गया है या जिसका माल किसी ख़ास स्टेशन-द्वारा बाहर जाता है। पूर्वीय रेंज में पहले प्रकार की सोसाइटियाँ ईख-प्रसार की ओर बड़ी सोसाइटियों में शामिल कर ली गई हैं और यह प्रत्यक्ष रूप से मालूम होता है कि इस प्रान्त के और हिस्सों में भी ऐसा ही किया जायगा।

	सन् १९३६-३७	सन् १९३७-३८	सन् १९३८-३९	सन् १९३९-४०
[illegible]कों की संख्या	२२	८६	११४	१३६
[illegible]तिशील रक़बा (एकड़ में)	२६,५००	७४,६००	१,९०,०००	४,७४,०००
[illegible] की संख्या जिनमें उन्नति [illegible] जा रही है।	१,०००	२,०००	९,५९४	१३,८००
[illegible] पहुँचानेवाली कोआपरेटिव यूनियनों की संख्या।	२३	२८	४२	८१
[illegible]ख़ानों की संख्या जहाँ [illegible] दी जाती है।	२३	३०	४९	६१
[illegible]आपरेटिव सोसाइटियों के [illegible] की संख्या।	२५,०००	६३,०००	३,७१,०००	४,६१,०००
[illegible] का परिमाण जो कोआपरेटिव सोसाइटियों-द्वारा [illegible]चाई गई (लाख मन में)।	१२७ लाख	१३४ लाख	४७६ लाख	१,२७७ लाख
[illegible] का बीज जो बाँटा गया [illegible] मन में)।	६ लाख	१९ लाख	३५ लाख	३२ लाख
[illegible]तिशील खाद जो बाँटी [illegible] मन में।	४८,०००	६१,०००	१,५४,०००	२,०३,०००

जहाँ तक संगठन का सम्बन्ध है प्रथा यह है कि किसी ख़ास मिल या स्टेशन के रक़बे के कुल गाँवों के लिए एक यूनियन का संगठन किया जाता है ताकि उस यूनियन के सब मेम्बरों की ईख एक ही रास्ते से बाहर जाय। एक यूनियन में ५० से लेकर ४०० तक गाँव हो सकते हैं। इनमें से कुछ ही गाँवों में रजिस्ट्रीशुदा प्राइमरी सोसाइटियाँ हैं और बाक़ी गाँवों में लोग सीधे यूनियन के मेम्बर बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि यूनियन बड़ी-बड़ी प्राइमरी सोसाइटियाँ ही होती हैं। और पुरानी सोसाइटियों की जिनका कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा है वास्तव में यूनियन के तौर पर रजिस्ट्री नहीं हुई है। केन्द्रस्थ कार्य की यह प्रथा इस वास्ते अपनाई गई कि प्रसार जल्दी हो सके और इस प्रथा ने व्यावहारिक रूप में आश्चर्यजनक कार्य किया है। लेकिन यह कोई नहीं कहता कि इससे गाँवों में सहयोगी जीवन का प्रादुर्भाव होगा।

उस कमी को पूरा करने के लिए प्रत्येक गाँव में उप-पंचायत स्थापित की गई है और इस बात की कोशिश की जा रही है कि जितने गाँवों में सम्भव हो सके क्रमशः प्राइमरी सोसाइटियों का संगठन किया जाय। सन् १९३९-४० ई० के अन्त में इस प्रकार की प्राइमरी सोसाइटियों की संख्या ८३९ थी जिनमें से ३३२ केवल गोरखपुर ज़िले में थीं।

इन सोसाइटियों के प्रारम्भिक उद्देश्य और प्रयोजन गन्ने की तरक्की, माँग के मुताबिक़ उसके भेजने का प्रबन्ध और इन प्रयोजनों की सफलता के लिए इसके सदस्यों को आर्थिक सहायता पहुँचाना था। परन्तु बाद को इस मद में उन्होंने कृषि-उन्नति और ग्राम-पुन-

निर्माण के कार्य को भी शामिल कर दिया। वास्तव में अब वे डेवलपमेंट यूनियन (सुधार-सम्बन्धी संस्थायें) बन गई हैं और उनमें अधिकांश ने अपना यही नाम रजिस्ट्री करवा लिया है। साधारण सभा उन प्रतनिधियों की बनाई गई है जो गाँवों से (प्रत्येक गाँव से एक या ५० सदस्यों के पीछे एक) चुने गये हैं क्योंकि सब सदस्यों की साधारण बैठक का होना असम्भव है। डाइरेक्टरों का बोर्ड निर्वाचित तथा कुछ नामज़द डाइरेक्टरों से बनाया गया है। आमतौर से चेयरमैन या तो ज़िले का हाकिम होता है या डिप्टी कलेक्टर और सेक्रेटरी। आमतौर से 'असिस्टेंट केन डेवलपमेंट अफ़सर' (सरकारी नौकर) होता है। डाइरेक्टर प्रायः बहुत अधिक शिक्षित नहीं होते लेकिन वे अपनी संस्था के प्रबन्ध में उत्तरोत्तर अधिक रुचि लेते हैं और कहीं-कहीं तो संस्था की नीति को निर्धारित करने में और दैनिक कार्य को खत्म करने में काफ़ी परिश्रम करते हैं। इन सोसाइटियों के कर्मचारियों की तनख्वाह सरकार देती है और उनके ऊपर केन डेवलपमेंट अफ़सर का शासन-सम्बन्धी नियंत्रण रहता है।

प्रबन्ध के उद्देश्य से प्रान्त तीन भागों में बाँटा गया है। केन्द्रीय, पश्चिमीय और पूर्वीय—प्रत्येक एक 'केन डेवलपमेंट अफ़सर' के अधीन रहता है। इन केन डेवलपमेंट अफ़सरों में दो तो डिप्टी कलेक्टर हैं और एक कोआपरेटिव डिपार्टमेंट का अफ़सर है। उनकी सहायता के लिए और सहायक अफ़सर हैं जो कोआपरेटिव या एग्रिकल्चर-विभागों के अफ़सर होते हैं। इस वक्त ऐसे सहायक अफ़सर ११ हैं जिनमें ५ कृषि-विभाग के और ६ कोआपरेटिव-विभाग के हैं। इनके अधीन गन्ना-उन्नति-योजना के सभी कर्मचारी हैं जिनमें १३७ असिस्टेंट केन डेवलपमेंट अफ़सर (प्रधान रूप से एग्रिकल्चरल ग्रेजुएट), ३६० सुपरवाइज़र (प्रधानतः एग्रिकल्चरल स्कूल के डिप्लोमा प्राप्त), १०८४ कामदार और ३८ आडीटर हैं। केन डेवलपमेंट अफ़सर उस आर्थिक सहायता का भी निरीक्षण करते हैं जो सोसाइटियों के द्वारा बीज तथा खाद के लिए दी जाती है। क्योंकि असिस्टेंट केन डेवलपमेंट अफ़सर प्रायः अपने पद के कारण सेक्रेटरी होते हैं इसलिए केन डेवलपमेंट अफ़सर इन संस्थाओं का प्रधान इक्ज़ीक्यूटिव अफ़सर भी कहा जा सकता है। इसलिए केन डेवलपमेंट अफ़सर के रूप में महत्त्वपूर्ण कार्य हैं, वह केन कमिश्नर का कृषि-सम्बन्धी सलाहकार है। उस केन डेवलपमेंट स्कीम का ऐडमिनिस्ट्रेटर (प्रबन्धक) है जिसमें बहुत-से कर्मचारियों और फंडों पर अधिकार रहता है। सोसाइटियों का प्रधान एक्ज़ीक्यूटिव अफ़सर और कभी-कभी वह क्षेत्रों को सुरक्षित करनेवाला अफ़सर भी रहता है। गन्ने के मामलों में केन डेवलपमेंट अफ़सर असिस्टेंट रजिस्ट्रार होते हैं और वे हिसाब के जाँच करने के अफ़सर भी होते हैं। एक केन डेवलपमेंट अफ़सर और दो डिप्टी केन डेवलपमेंट अफ़सर गन्ने की सोसाइटियों के अलावा और सोसाइटियों के प्रबन्ध के लिए भी असिस्टेंट रजिस्ट्रार बनाये गये हैं। एक अफ़सर के पास इतने अधिकार के होने के विषय में आक्षेप भी किया गया परन्तु यह बात भी उल्लेखनीय है कि कोआपरेटिव केन-सोसाइटियों की सराहनीय सफलता के लिए यह भी एक प्रधान कारण है। फिर भी एक सबसे बड़ा कारण इस क्षेत्र में सहयोग प्राप्त करने के लिए मिस्टर विष्णुसहाय, आई० सी० एस० का प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व है। पिछले लगभग ८ वर्षों में जो अच्छा और कठिन काम हुआ है वह उन्हीं के प्रोत्साहन से हुआ है। सन् १९३४-३९ तक कोआपरेटिव सोसाइटीज के रजिस्ट्रार के रूप में और सन् १९३७ से आगे 'केन-कमिश्नर' के रूप में वे केन-सोसाइटियों के संगठन और केन डेवलपमेंट स्कीम के अफ़सर रहे हैं। वे अब भी केन-विभाग के अफ़सर हैं। उनका वास्तविक पद एग्रिकल्चर के डाइरेक्टर का है। वह युक्ति कुशलता, परिश्रम और धैर्य जिसके द्वारा उन्होंने साधारण रूप से चीनी के उद्योग में और विशेष रूप से कोआपरेटिव सोसाइटियों की जटिल समस्याओं को हल किया है और नई योजनाओं का आरम्भ करने तथा उन्हें आगे बढ़ाने के कार्य में उन्होंने जो कुशलता दिखाई है उसके कारण उनकी चारों ओर से प्रशंसा हुई है।

इस सरकारी अमले के अतिरिक्त सोसाइटियाँ एक बड़े अस्थायी (सीज़नल) अमले को काम में लाती हैं जो गन्ना भेजने का प्रबन्ध करने के कामों से सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार ठीक तखमीने के अनुसार वहाँ ५,००० अस्थायी कर्मचारी काम करते हैं जिनमें १,००० कर्मचारी इंट्रेंस परीक्षा पास हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि इस कार्य ने बेकारी की समस्या को वास्तव में हल किया है।

ये सोसाइटियाँ अपना कार्य किस प्र[...] कर रही हैं इसके विषय में भी दो-चार [...] लिखनी जरूरी हैं। सोसाइटियों के सद[...] के गन्ने के क्षेत्रों की पैमाइश पटवारी [...] हैं और उनकी जाँच कामदार करते हैं। [...] नक़शे की सहायता से गन्ना भेजने की [...] सूची गन्ना पेरने के मौसम से बहुत [...] तैयार की जाती है। इस सूची की सहा[...] से और ईख की ख़ास क़िस्मों को दृष्टि [...] रखते हुए बीज-कार्य-क्रम तैयार किया ज[...] है। गन्ना पेरने के मौसम में उन स्लिपों [...] माँग पर सदस्य गन्ना भेजते हैं जिन्हें साइकि[...] वाले कर्मचारी उनके पास पहुँचा देते हैं। [...] वितरण सभी गन्ने की काश्त करनेवालों [...] समान रूप से होता है लेकिन कम परि[...] में गन्ने की काश्त करनेवालों का विशेष ध्या[...] रक्खा जाता है। गन्ने की तौल [...] उसकी क़ीमत का देना सोसाइटियों के [...] कर्मचारियों के सामने होता है। जो इन [...] और क़ीमतों का लेखा रखते हैं। इससे [...] ठीक तौर पर तौला जाता है और उ[...] मूल्य भी ठीक मिलता है, जो कि कोआ[...] रेटिव संस्था का पहला काम है। स[...] अनुभव करते हैं कि एक संस्था के अंग ब[...] उनकी कोई हैसियत होती है और उ[...] यह शक्ति मिल जाती है कि उनकी बा[...] सुनी जाय। पैमाइशी के समय [...] सदस्यों को खाद और बीज उधार दे [...] जाते हैं।

केन-विभाग द्वारा खाद (फरटीलाइज़[...] खरीदने और बाँटने का प्रबन्ध किया [...] है। बीज के सम्बन्ध में इस विभाग[...] शिक्षित अमला सरकार से या निजी [...] से या स्वीकृति-प्राप्त किसानों से अच्छे [...] के ऐसे बीजों को खरीदता है जिनमें [...] बीमारी न हो। अच्छे बीज के लिए प्रीमि[...] देना पड़ता है और ढुलाई में भी कुछ [...] होता है। केन-विभाग द्वारा यह अति[...] खर्च अधिकतर सरकारी कोष से दिया [...] है ताकि किसानों के लिए इस बढ़िया [...] का कुल खर्च भी मौजूदा दर से अधि[...] होने पावे। बीज और खाद के लिए [...] सहायता देने के अतिरिक्त जितना [...] उसके अनुसार कृषि तथा दूसरे उत्पाद[...] कार्यों के लिए पेशगी रुपया भी दिया [...] है। ये क़र्ज़े के रुपये दूसरी फ़सल में [...] क़ीमत से रुपया काटकर इकट्ठा कि[...] हैं। यह एक ऐसी प्रथा है जो अत्यन्त [...]

[illegible] सिद्ध हुई है। किसानों के लिए क़र्ज़े की दर ६ से ९ प्रतिसैकड़ा तक है और इसमें यूनियन ख़ुद बहुत थोड़ा फ़ायदा उठाती है। यूनियन कोआपरेटिव बैंकों या कारख़ानों या सरकारी तक़ावी से धन का प्रबन्ध करती है। यूनियनों को केन सप्लाई करने से जो कमीशन मिलता है उससे अच्छी आमदनी होती है। इसलिए वे बहुत मुनाफ़ा दिखाते हैं जो ग्राम-सुधार के कार्यों में काम में लाया जाता है। उदाहरणार्थ प्रौढ़ शिक्षा, स्काउटों की शिक्षा पञ्चायत घरों का निर्माण, रास्तों और कुओं की उन्नति, खाद के गढ़ों और सोकेज पिट्स को खोदना और इसी प्रकार के अन्य कार्य किये जाते हैं। सभायें बुलाकर, प्रदर्शनी करके, मैजिक लालटेन दिखाकर, मेम्बरों द्वारा प्रदर्शन करने के क्षेत्र (?) तथा इसी प्रकार के अन्य साधनों द्वारा काश्तकारी के अच्छे तरीक़ों के लिए जन समुदाय की स्वीकृत प्राप्त करने के कार्य में विशेष ध्यान दिया जाता है। हाल में इन यूनियनों को इन्हें अपने क्षेत्र में कृषि-सुधार सम्बन्धी साधारण कार्य सुपुर्द किये गये हैं और इन केन्द्रों के समस्त बीज-गोदाम प्रबन्ध के लिए केन-विभाग को सौंप दिये गये हैं। बहुत-सा (हरी खाद के लिए) सनई का बीज, रबी का बीज तथा अच्छे हथियार (औज़ार) किसानों को दे दिये गये हैं। इस प्रकार यह मालूम होता कि ये यूनियनें अनेक कार्यों को अपने हाथ में लेकर अपना कार्य-क्षेत्र बढ़ा रही हैं।

सफलतायें तथा त्रुटियाँ

केन सोसाइटियों तथा उनक कार्य-कारिणी समिति केन-विभाग को अनेक सफलतायें मिली हैं। अच्छे बीजों का प्रचार करके तथा अच्छे तरीक़ों से गन्ने की खेती करवा के गन्ने की उन्नति करने में उन्होंने ठोस काम किया है। सन् १९३९-४० ई० के अन्त में काश्त किये हुए क्षेत्र का क्षेत्रफ़ल लगभग [illegible] लाख एकड़ था। गन्ने की प्रतिएकड़ पैदावार निस्सन्देह बढ़ गई है। यद्यपि वैज्ञानिक ढंग से पैदावार के कोई आँकड़े नहीं रक्खे गये हैं फिर भी इस बात के लिए काफ़ी प्रमाण मौजूद हैं कि गन्ने की पैदावार में औसतन् [illegible] प्रतिसैकड़ा से ऊपर बढ़ती हुई है। सोसाइटियों ने गन्ने के कीड़ों और बीमारियों को नष्ट करने में भी अत्यन्त उपयोगी काम किया है। सन् १९३६-३७ ई० में पश्चिमी ज़िलों में "पाइरीला" नाम की बीमारी का बड़ा प्रकोप हुआ था। इस महामारी से गन्ने की फ़सल को बहुत नुक़सान पहुँचा। इस समस्या को हल करने के लिए विशेष रूप से एक अमला नियुक्त किया गया था और खेतों में उन्होंने इतना अच्छा काम किया कि तब से वह महामारी उतने भयंकर रूप में देखने में नहीं आई है। सन् १९३८-३९ ई० में पूर्वी जिलों में "रेडराट" नाम की बीमारी महामारी के रूप में हुई थी जिसके कारण गन्ने की पैदावार में ४० प्रतिसैकड़ा नुक़सान हुआ था। यदि गन्ना-सुधार-योजना-द्वारा बनाया हुआ अच्छे बीज का उपयोगी केन्द्र न होता तो उन भागों में शक्कर के उद्योग के लिए बड़ी भारी आपत्ति आगई होती। केन-सोसाइटियों-द्वारा सम्पादित कार्य के महत्त्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि सन् १९३९-४० ई० में उन्होंने अपने सदस्यों में लगभग ३२ लाख मन बीज और दो लाख मन खाद बाँटी थी। सहकारिता के आधार पर बिक्री का प्रबन्ध करने के क्षेत्र में भी उनका काम उल्लेखनीय है। इस प्रान्त में जितना गन्ना शक्कर के कारखानों में भेजा जाता है उसके लगभग ८० प्रतिसैकड़ा गन्ने में अब उनका नियंत्रण है। सन् १९३९-४० ई० में कारखानों ने कुल क़रीब १६ करोड़ मन गन्ना पेरा। उसमें से १२$\frac{1}{2}$ करोड़ मन से अधिक गन्ना इन्होंने दिया था। गन्ने की सप्लाई के नियंत्रण में ठीक तौल स्थिर करने में, तथा गन्ने की क़ीमत चुकाने में इन्होंने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम किया है। इन सोसाइटियों ने कम ब्याज पर क़र्ज़ा मिलने का बड़ा प्रबन्ध किया है और उसमें वह ख़तरा भी नहीं है जो बाज़ार की परिस्थिति से सम्बन्ध न होने के कारण क़र्ज़ा लेने में अक्सर होता है। सन् १९३९-४० ई० में सोसाइटियों ने मेम्बरों को बीज, खाद और उत्पादन-कार्यों के लिए नक़द पेशगी रुपयों के रूप में ३६ लाख रुपये से अधिक बाँटा था। इसके अतिरिक्त इन सोसाइटियों-द्वारा बीज और खाद के लिए तक़ावी के तौर पर लगभग २$\frac{1}{4}$ लाख रुपये बाँटे गये थे। यह एक अत्यन्त सन्तोषजनक बात है कि रुपया काफ़ी तादाद में वापस दे दिया जाता है जो गन्ने की क़ीमत से काटकर वसूल किया जाता है। थोड़े ही समय के भीतर सोसाइटियाँ अच्छा मुनाफ़ा उठाने में समर्थ हो गई हैं और सन् १९३९-४० ई० के अन्त में उनके पास लगभग ८ लाख रुपये की निजी पूँजी थी जिसमें उनकी चालू पूँजी का २० प्रतिसैकड़ा शामिल है। किसी भी कोआपरेटर को इस प्रकार के आँकड़ों से अवश्य ही हर्ष होगा। इन सफलताओं के अतिरिक्त इन सोसाइटियों ने नये कुएँ बनाकर, प्रौढ़-स्कूलों को खोलकर, दवाइयाँ बाँटकर, स्काउटों को शिक्षा देकर, गाँवों के रास्तों को सुधार कर तथा ऐसे ही और काम करके काफ़ी ग्राम-सुधार-कार्य किया है। सन् १९३९-४० ई० के भीतर उन्होंने ५७,००० अच्छे हथियारों और २५० साँड़ों को बाँटा था। उन्होंने बहुत-सा रबी-बीज भी बाँटा जिसमें हरी खाद के लिए ११,००० मन सनई-बीज शामिल था और उसी समय में २५,००० एकड़ ज़मीन में हरी खाद भी डाली गई थी। सन् १९३९-४० ई० के अन्त में केवल पूर्वी रेंज गोरखपुर में ही गाँवों के लिए ६५३ दवाइयों के सन्दूक़ थे जिनसे उस वर्ष के भीतर ७२,००० रोगियों का इलाज किया गया और १४४ प्रौढ़-स्कूल थे जिन्होंने ५,००० के अधिक प्रौढ़ों को साक्षर बनाया और ३०० से अधिक ट्रेनिंग पाये हुए स्काउट थे और उसी समय क़रीब ५०० कुएँ केवल इस रेंज में खोदे गये थे।

इन सोसाइटियों ने जो सबसे प्रशंसनीय कार्य किया है वह है गन्ने की काश्त करनेवालों का संगठन। यह संस्था उन्नतिशील कार्यों के लिए जनमत एकत्रित करने का और काश्तकारों की कठिनाइयों को व्यक्त करने का उपयुक्त साधन बन गई है। मुझे आशा है कि कुछ ही समय में संयुक्त-प्रान्त की केन कोआपरेटिव सोसाइटियाँ काश्तकारों के वास्तविक हितों का प्रतिनिधित्व करनेवाली सबसे प्रभावशाली संस्था सिद्ध होंगी।

केन-सोसाइटियाँ अभी शैशवावस्था में हैं। उनमें कुछ दोषों का पाया जाना स्वाभाविक है, जिनका यहाँ पर वर्णन करना उचित होगा। उनके प्रमुख आलोचक कारखाने हैं, जिन्होंने इस संस्था पर कभी भी अपनी कृपा-दृष्टि नहीं रक्खी। उन्होंने सोसाइटियों के विरुद्ध जो दोषारोपण किये थे उनकी सूची खेतन कमेटी के सम्मुख उपस्थित की गई। यह कमेटी सन् १९३९ ई० में गन्ने के नियमों और शक्कर के कारखानों* के

*देखिए यू० पी० गवर्नमेंट द्वारा प्रकाशित कमेटी की रिपोर्ट। अब तक केवल पहला भाग प्रकाशित हुआ है जिसमें कारखानों के मालिकों के विचार दिये गये हैं।

मज़दूरों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए नियुक्त की गई थी। वे कारखाने, सोसाइटियों पर फ़िज़ूलखर्ची, गन्ने की उन्नति की उपेक्षा करने, गन्ने के भेजने में घूस लेने और धाँधली करने, कारखानों की भलाई के लिए नियंत्रित रूप से गन्ना भेजने, कारखानों के साथ सहयोग न करने, कारखानों के विरुद्ध काश्तकारों को उत्तेजित करने और कर्मचारियों का अपने अधिकार का आवश्यकता से अधिक प्रयोग करने का दोषारोपण किया करते हैं। केन-सोसटियों के विरुद्ध, कारखानों के उत्तेजनापूर्ण दोषारोपणों के कारण मुझे उस क़ैदी की याद आती है जिसे कोर्टमार्शल के समय जब पूछा गया कि उसकी क्या विशेष शिकायत है तो उसने उत्तर दिया कि मुझे सब बातों की शिकायत है। कुछ कारखानों को छोड़कर शेष सब कारखाने काश्तकारों के संगठन-कार्य का विरोध करते हैं क्योंकि वह अन्त में उनके लिए असुविधाजनक सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त वे नियमों के अधीन नियुक्त कमीशन देना पसन्द नहीं करते। उनका सम्मान कम हो गया है और उनके बहुत-से अधिकार छिन गये हैं और कारखानों के कर्मचारी अपने स्वार्थ के कारण कोआपरेटिव सोसाइटियों की उन्नति नहीं चाहते। इन्हीं कारणों से कारखानों में असन्तोष उत्पन्न होता है जो कई रूपों में प्रकट होता रहता है।

परन्तु मैं यह नहीं कहता कि केन-सोसाइटियाँ दोषरहित हैं। उनका तीव्र गति से संगठन होने के कारण उनमें कई दोषों का होना स्वाभाविक है। पहली बात यह है कि केन डिपार्टमेंट के छोटे कर्मचारी ऐसे समय में भर्ती किये गये जब कि ऐग्रिकल्चर के ग्रेजुएट कम थे और उनकी माँग अधिक थी जिसके फलस्वरूप कई असिस्टेण्ट केन डेवलपमेंट अफ़सर उतनी योग्यता प्राप्त नहीं हैं जितना आवश्यक थी। फ़ील्डम्यन सुपरवाइज़र के भर्ती करने में भी इन्हीं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन कर्मचारियों को थोड़े समय के लिए ट्रेनिंग देकर इन दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया गया है, परन्तु मेरी सम्मति में यह पर्याप्त नहीं। विभाग की आवश्यकतायें तभी पूरी हो सकती हैं जब कि कर्मचारियों को ख़ूब अच्छी ट्रेनिंग दी जाय और अयोग्य कर्मचारियों को अलग कर दिया जाय। गन्ने की उन्नति (केन डेवलपमेंट) के लिए अभी बहुत कुछ काम करने की आवश्यकता है। इसके लिए अनुसंधान-कार्य और खेती के कार्य में सम्बन्ध स्थापित करना होगा। तब इस संगठन को अधिक विस्तृत करना होगा और इसके लिए कई प्राइमरी सोसाइटियाँ स्थापित करनी होंगी जिन्हें सब अधिकार दिये जायँगे और जिन्हें सब आवश्यक काम करना होगा। अब तक इस आन्दोलन का प्रबन्ध केवल सरकार करती है, और अधिकारियों-द्वारा ही यह आन्दोलन प्रेरित हुआ है। इसलिए इनमें वे कमियाँ अवश्य हैं। जिनका ऐसे संगठन में होना स्वाभाविक है। केन-सोसाइटियों के लिए भी एक ऐसे प्रान्तीय संगठन की आवश्यकता है जिसकी अनेक शाखायें हों। मेरा विचार है कि एक डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बोर्ड स्थापित किया जाय, जिसका सेंट्रल प्राविंशियल बोर्ड से सम्बन्ध हो। मैं समझता हूँ कि ऐसी संस्था बहुत पहले ही स्थापित हो जानी चाहिए थी। मेरा यह भी ख़याल है कि इन केन-सोसाइटियों को जो कि डेवलपमेंट सोसाइटियाँ कही जा सकती हैं, ही अपने-अपने क्षेत्र में ग्राम-सुधार-कार्य करना चाहिए। उनके प्रयत्न करने पर भी डेवलपमेंट डिपार्टमेंटों में एक ही काम कई डेवलपमेंट डिपार्टमेंट में किया जाता है। सोसाइटियों को कारखानों के ख़िलाफ़ एक बात में संरक्षण चाहिए। कारखानों को अपने क्षेत्र में ग़ैर सदस्यों, जिनकी संख्या कम है, से व्यवहार करने का अधिकार है। उन्होंने इस कमज़ोरी से सोसाइटी की एकता को नष्ट करने के लिए विश्वासघाती लोगों के द्वारा सदस्यों से त्यागपत्र दिलाने का आन्दोलन किया है। इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि एक ऐसा क़ानून बनाया जाय जिससे कि अगर किसी विशेष क्षेत्र के अधिक काश्तकार, कोआपरेटिव मार्केटिंग संस्था के सदस्य हों तो दूसरे काश्तकारों को बाध्य किया जाय कि वे भी अपनी पैदावार को उसी संस्था* के द्वारा बेचे। इससे केन कोआपरेटिव के प्रजातंत्रात्मक अधिकार पर कुठाराघात होता है परन्तु अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के काश्तकारों को अपने ही द्वारा अपनी रक्षा करनी होगी।

सारांश में यह कहा जा सकता है कि सरकार-द्वारा प्रचलित संयुक्तप्रान्त की केन कोआपरेटिव सोसाइटियों का सहयोग बहुत उन्नत हो चुका है इस साहसपूर्णता और सफलता के साथ अन्य प्रान्त होड़ कर सकते हैं।

यह एक शुभ चिह्न है कि अब ये सोसाइटियाँ अपना यह कर्त्तव्य समझती हैं कि अपने कार्य-क्रम को विस्तृत करें। वे धीरे-धीरे उस कार्य की ओर अग्रसर हो रही हैं जिसकी आवश्यकता हमारे ग्राम्य-जीवन का पुनरुत्थान करने के लिए आवश्यक है। उनका संकल्प और हमारी आशायें बहुत उच्च हैं। हमें आशा है कि ये सोसाइटियाँ संयुक्त-प्रान्त के ग्रामोद्धार में प्रमुख भाग लेंगी।

---

* ऐग्रिकल्चरल मार्केटिंग बिल में, जिसे कांग्रेस-सरकार ने लेजिस्लेटिव असेम्बली में पेश किया था, इस सम्बन्ध में नियम बनाये गये थे।

को अपने क्षेत्र
या कम है, से
हैं। उन्होंने इस
एकता को नष्ट
लोगों के द्वारा
आन्दोलन किया
आवश्यकता है
जाय जिससे कि
धिक काश्तकार
ा के सदस्य हों
ाध्य किया जाय
को उसी संस्था
कोआपरेटिव के
कुठाराघात होता
कर दिया है कि
अपने ही द्वारा

जा सकता है कि
्तप्रान्त की के
ा सहयोग बहुत
पूर्णता और सफ
ड़ कर सकते हैं
के अब ये सोसा-
ामझती हैं कि
्तृत करें।
अग्रसर हो रही
ारे ग्राम्य-जीवन
ए आवश्यक है
शायें बहुत उच्च
ाइडियाँ संयुक्त-
भाग लेंगी।

ग बिल में, जिस
व असेम्बली में
में नियम बनाये

स्ट्राबेरी की खेती

लेखक, श्रीयुत एस० आर० स्वरूप

स्ट्राबेरी की खेती कुछ वर्षों से संयुक्त-प्रान्त के कुछ हिस्सों में खासकर मेरठ, मुज़फ़्फ़रनगर, सहारनपुर के ज़िलों में और नैनीताल के ज़िले में ज्योलीकोट में एक प्रधान व्यवसाय हो चला है और कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद जैसे केन्द्रीय ज़िलों में भी इसको बड़े आकार पर उगाये जाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इसकी खेती विघ्न-बाधाओं से भरी हुई है। अगर मार्च और अप्रैल के महीने में जब कि स्ट्राबेरी फूल पर होती है कुछ दिन सूखा पड़ जाय तो फ़सल नष्ट हो जाती है। इसको भली भाँति उगाने के लिए एक अनुभवशील कृषक का निरीक्षण परमावश्यक है।

मिट्टी—स्ट्राबेरी की खेती के लिए जो ज़मीन चुनी जाय उसका किसी बड़े शहर के पास होना बहुत ज़रूरी है। स्ट्राबेरी भारी चिकनी ज़मीन से लेकर हलकी बलुई ज़मीन तक में लाभ के साथ उगाई जा सकती है, लेकिन भारी दूमट ज़मीन जिसका रुख सूरज की तरफ़ हो यानी जो दिन के अधिकतर भाग में सूरज की गर्मी पाती हो इसके लिए सर्वप्रधान है। स्ट्राबेरी उर्वरा नम ज़मीन और शीतकाल में सबसे अच्छी होती है भारी दूमट ज़मीन में नमी ज़्यादा स्थिर रहती है इसलिए उसमें उतना ध्यान देने की ज़रूरत नहीं रहती जितना कि जल्द सूख जानेवाली ज़मीन में।

ज़मीन की तैयारी—नये पौधों को लगाने के लिए, ज़मीन की सफ़ाई भली भाँति करना चाहिए और उसको बरसात में कम से कम आठ बार जोतकर गर्मी के मौसम में वैसे ही छोड़ देना चाहिए, इसके बाद उसकी बराबर गोड़ाई, सफ़ाई और पाटा करते रहना चाहिए। पौधों को लगाने के पहले खेतों को १२ फ़ीट चौड़ी क्यारियों में बाँट देते हैं और हर एक क्यारी में तीन-तीन इंच ऊँची मेड़ें बना देते हैं दो मेड़ों के बीच में केवल उतनी ही ज़मीन छोड़ी जाती है जितनी पानी देनेवाली नालियों के लिए काफ़ी हो। बड़े और अच्छे रंगवाले फल केवल उन्हीं पौधों में लगते हैं जो कि सूरज का प्रकाश सदैव पाते रहते हैं। अगर मेड़ों की लम्बाई उत्तर-दक्षिण रक्खी जाय तो यह अभिप्राय सुगमता से सिद्ध हो सकता है। मेड़ों को २४ से ३० इंच की दूरी पर बनाते हैं।

खाद—चूँकि स्ट्राबेरी ज़मीन से खाद्य पदार्थ को बहुत अधिक मात्रा में खींच लेती है और चूँकि नये पौधों के लगाने के बाद उनमें गोबर की खाद आसानी से नहीं दी जा सकती क्योंकि ऐसा करने से नये निकलते हुए कल्लों को हानि पहुँचने का भय है, इसलिए पौधों को लगाने के पहले ही ज़मीन को बहुत अच्छी हालत में होना चाहिए। बहुधा क्यारियों के बनाने के पहले ही ३० से ४० गाड़ी खाद (हर एक गाड़ी २० घनफ़ुट) एक एकड़ में डाल दी जाती है। अगर गोबर की खाद न प्राप्त हो सके तो बाग़ के कूड़ा-करकट से तैयार की हुई खाद का प्रयोग कर सकते हैं। इस दशा में भी वही मात्रा काफ़ी होगी। भेड़ों की मेंगनी इस फ़सल के लिए विशेषतः गुणकारी है और इसको थोड़ी मात्रा में (२-३ गाड़ी एक एकड़ में) पौधों के फूलने के समय डालना चाहिए। अगर इसको गोबर की खाद के अतिरिक्त डाला जाय तो और भी अच्छा है। अगर दिसम्बर के अन्त में हड्डी की खाद का एक हलका छिड़काव (एक एकड़ में १५० पौंड) कर दिया जाय तो फल बड़े और स्वादिष्ट होंगे।

पौधों का बढ़ाना—स्ट्राबेरी अधिक मात्रा में फल ही नहीं देती बल्कि छोटे पौधों को भी बहुतायत से पैदा करती है। अगर इसको निर्विघ्न छोड़ दिया जाय तो हरएक बड़े पौधे से एक प्रकार की बेल निकलती है जिसको रनर कहते हैं। इस बेल पर जगह-जगह पर गाँठें होती हैं और हर एक गाँठ पर एक नया पेड़ पैदा हो जाता है। स्ट्राबेरी से नये पौधों के बनाने का यही सर्वसाधारण उपाय है और यही सबसे अच्छा भी है क्योंकि यही प्राकृतिक तथा सुगम भी है। तथापि हर दशा में कुछ बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है। केवल उन्हीं पौधों से नये पौधे लेना चाहिए जो फल अच्छे देते हों तथा स्वच्छ हों। इस बात पर जितना ही ध्यान रक्खा जाय थोड़ा है। स्ट्राबेरी का एक साल पुराना पौधा बरसात में १५ से २० बेलें पैदा करता है लेकिन अच्छे जड़दार और स्वस्थ पौधों को प्राप्त करने के लिए इनमें से केवल ४ से ८ अच्छी बेलों को ही छोड़ना चाहिए और बाक़ी को निकाल देना चाहिए, हर एक बेल से केवल एक पेड़ लेना चाहिए। यदि पुरानी क्यारी के पौधे सबल हों और ख़ूब तेज़ी से बढ़ रहे हों तो इनमें से पहले चलनेवाली बेलें ली जाती हैं क्योंकि ऐसा देखा गया है कि बहुधा १२ महीने आयुवाले पौधों में ही सुन्दर फल बहुतायत से आते हैं। बलुई मिट्टी में सबसे अच्छी बेलें पैदा होती हैं क्योंकि ऐसी मिट्टी में जड़ें अच्छी चलती हैं और नये पौधों को हर एक मौसम में उनकी जड़ों को बिना हानि पहुँचाये हुए उठा सकते हैं।

बेलों को मेड़ों के किनारे-किनारे चलाते हैं और उनकी गाँठों को उँगली से ज़मीन में थोड़ा दबा देते हैं। ऐसा करने से मेड़ों के दोनों तरफ़ गुड़ाई इत्यादि सरलता से हो सकती है और ज़मीन के अन्दर नमी भी स्थिर रहती है साथ ही साथ गुड़ाई में खर्च भी कम होता है।

पौधों को लगाना और उसके बाद की देख-भाल—स्ट्राबेरी के पौधों के लगाने का सबसे अच्छा समय शुरू आक्टोबर है। जिन पौधों में फल आये हों वही लगाने के लिए

सबसे अच्छे होते हैं। ऐसे पौधे उसी फ़सल के उगे हुए होते हैं यानी वे बरसात में चलकर आक्टोबर तक लगाने योग्य हो जाते हैं। पौधों को हाथ से १२-१२ इंच की दूरी पर हर एक क़तार में लगा देते हैं। लगाने के बाद उसको तुरन्त पानी दे देते हैं और फिर जब कभी भी उनको पानी की ज़रूरत होती है पानी देते रहते हैं। जब ये पौधे अच्छी तरह लग जाते हैं तो उनमें से बेलें चलने लगती हैं। इन बेलों को जहाँ तक हो सके शीघ्र ही निकाल देना अच्छा होता है गो कि कुछ लोग इस मत के ख़िलाफ़ हैं। बेलों को निकाल देने से यह लाभ होता है कि एक ही साथ में अच्छे, स्वस्थ पौधे तैयार हो जाते हैं और अच्छा फल भी देने लगते हैं। जाड़े के मौसम में इन बेलों तथा फूलों के गुच्छों को भी दो-तीन बार निकाल देना चाहिए और जब स्ट्राबेरी फलने लगे तब तो बेलों को निकलते ही हटा देना चाहिए। इँगलिस्तान में सबसे अच्छे फल दो साल की आयुवाले पौधों पर आते हैं लेकिन इस देश में बहुमत यही है कि एक ही साल के पौधे अधिक सफल होते हैं। एक एकड़ भूमि के लिए २०,००० से २४,००० पौधों की ज़रूरत होती है।

बीच की देख-भाल——लगाने के बाद बेलों के हटा देने के अतिरिक्त स्ट्राबेरी में केवल अच्छी गोड़ाई व निराई की ही ज़रूरत रह जाती है। अच्छे पौधे बनाने के लिए ज़मीन को साफ़ रखना चाहिए और उसे कभी सूखने न देना चाहिए। यह अभिप्राय तभी सिद्ध हो सकता है जब कि मिट्टी सदैव भुरभुरी हालत में हो। मेडों के बीच की मिट्टी को प्लैनेट जूनियर जैसे किसी हलके हल से बराबर गोड़ते रहना चाहिए और स्वयं मेड़ों की गोड़ाई हाथ से करना चाहिए। इस क्रिया को सारी फ़सल में कम से कम ८ या १० बार करना होगा। वसन्त-ऋतु के प्रारम्भ होते ही बिछाली के लिए पुवाल का प्रबन्ध कर लेना चाहिए और इसको एक लकड़ी के सहारे पौधों के नीचे बिछा देना चाहिए। बिछाली जब कि दाने बहुत छोटे ही रहते हैं तभी हो जानी चाहिए। एक एकड़ के लिए ३ मन पुवाल की ज़रूरत होती है।

सिंचाई——स्ट्राबेरी क्यारियों में उस समय लगाई जाती है जब कि उनकी मिट्टी न तो बहुत गीली, न बहुत सूखी रहती है। इसलिए लगाने के थोड़े दिनों पहले क्यारियों में एक पानी दे देना ज़रूरी होता है। लगाने के बाद ही एक गहरा पानी दे देना चाहिए। इसके पश्चात् नये पौधों को अच्छी तरह बढ़ते रहने के लिए १० या १५ दिन के अवकाश से उनकी बराबर सिंचाई व गोड़ाई करते रहना चाहिए। फल की तैयारी के समय उनको अधिक आकार तथा रंग पर लाने के लिए हर तीसरे चौथे दिन पानी देना चाहिए।

चुनना व बन्द करना——चूँकि स्ट्राबेरी का बढ़ियापन उसके पकने व फल की दशा पर बहुत कुछ निर्भर रहता है। अतएव उसको बहुत जल्द कच्चा न तोड़ना चाहिए किन्तु उस समय तक प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक कि सारे फल पर रंग न चढ़ जाय और यह अपनी जाति के विशेष रंग की गहराई को न पहुँच जाय। सदा इस बात का ध्यान रक्खो कि फल धूप के तेज़ होने के पूर्व ही प्रातःकाल में चुन लिये जायँ। बहुत कोमल होने के कारण स्ट्राबेरी के फल बहुधा उसी टोकरी में चुनकर रख लिये जाते हैं जिनमें कि उन्हें बेचना है। यह ध्यान रहे कि एक समय में एक ही प्रकार के फल तोड़े जायँ क्योंकि घड़ी-घड़ी उलटने-पलटने से फल ख़राब हो जाते हैं। मेज़ पर खाने के लिए फलों को मयडंडी के तोड़ना चाहिए और यदि जाम या मुरब्बा बनाने का अभिप्राय हो तो विना डंडी के हों। घरेलू उपयोग के लिए एक पौंड की उथली टोकरियों में कुछ पत्तों के बीच में चुनकर रख देने से फल अधिक आकर्षक हो जाते हैं। स्ट्राबेरी के पैदा करनेवाले को सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक टोकरी में पूरा एक पौंड फल रहे और वह बहुत उत्तम प्रकार का हो। टोकरियों की नाप इस प्रकार की हो कि एक टोकरी का फल औसत दर्जे का आदमी एक दिन में ख़र्च कर सके और वे इतनी सुन्दर हों कि घर की मालकिनें उनको प्रसन्नता-पूर्वक ले जा सकें।

चूँकि स्ट्राबेरी के फल दूर की यात्रा में ख़राब हो जाते हैं इसलिए उनको दूर की मंडियों में भेजने की राय नहीं दी जा सकती। दूर की मंडियों के वास्ते उनको बन्द करने के लिए भी निपुण हाथों की आवश्यकता होती है, तथापि यदि उनको ऐसी जगह भेजना हो तो उनको बन्द करने का सबसे उत्तम उपाय नीचे लिखा जाता है।

प्रत्येक फल को एक पत्ते के टुकड़े या भर्रे काग़ज़ में लपेट लो और एक अच्छे बने हुए उथले सन्दूक़ में उनको एक दूसरे के साथ सटाकर एकहरी तह में रख दो। सन्दूक़ के अगल-बग़ल व तह में एक-एक तह रुई की रहनी चाहिए। सब फलों का मुँह एक ही तरफ़ होना चाहिए और वे थोड़े झुके हुए इस प्रकार से रक्खे जायँ कि एक दूसरे पर चढ़े हुए से मालूम हों, फिर उनको स्ट्राबेरी के पत्तों से ढक दो।

स्ट्राबेरी लगाने के ऋतु में फल ही के समान उनकी बेलों की भी अधिक माँग रहती है अतएव यहाँ पर बेलों के भी बन्द करने का उपाय बतला देना अप्रासंगिक न होगा। मिट्टी के कणों से बिलकुल रहित बेलें उखाड़ ली जाती हैं। प्रायः सौ बेलें एक साथ ली जाती हैं और जड़ों को नम रखने के अभिप्राय से उनको ढीले कीचड़ में डुबो लेते हैं और फिर केले के पत्तों में या बाँस तथा बाग़ में होनेवाली दूसरी घासों में लपेट देते हैं। घास के पत्ते मज़बूती से एक साथ बाँध दिये जाते हैं लेकिन बेलों की पत्तियों को बिलकुल खुली छोड़ देते हैं। गिनने की सुगमता के हेतु एक-एक सौ बेलों की गड्डियाँ लेना अच्छा

ारी में पूरा एक
उत्तम प्रकार का
। प्रकार की हो
दर्जे का आदमी
वे इतनी सुन्दर
नको प्रसन्नता-

दूर की यात्रा में
उनको दूर की
दी जा सकती।
को बन्द करने के
ावश्यकता होती
जगह भेजना हो
से उत्तम उपाय

ते के टुकड़े या
एक अच्छे बन
क दूसरे के साथ
दो। सन्दूक के
क तह रुई की
का मुँह एक ही
थोड़े झुके हुए
एक दूसरे पर
उनको स्ट्राबेरी

में फल ही के
धिक माँग रहती
बन्द करने का
न होगा। मिट्टी
बेलें उखाड़ ली
साथ ली जाती
ने के अभि-
में डुबो लेते हैं
बाँस तथा बाग़
लपेट देते हैं।
साथ बाँध दिये
ों को बिलकुल
की सुगमता के
याँ लेना अच्छा

रहता है। इसके बाद इन गड्डियों को अच्छी बाँस की टोकरियों में बन्द करके उनको मय पत्ते के पार्सल-द्वारा ग्राहकों के पास भेज दिया जाता है।

पैदावार—फ़सल की पैदावार का अनुमान हमारे देश में मिट्टी व खेतों के ढंग के अनुसार ४०० से ६०० पौंड फ़ी एकड़ किया गया है। यद्यपि इँग्लैंड व अमेरिका जैसे देशों में इसकी पैदावार १ से २ टन तक होती है। यह देखा गया है कि पैदावार उस स्थान की निचाई, उँचाई तथा तापमान के अनुसार जहाँ कि यह पैदा की जाती है, घटती-बढ़ती रहती है। ठंडे और ऊँचे स्थानों में अच्छी और गर्म और नीचे स्थानों में कम पैदावार होती है।

फलों की निकासी—स्ट्राबेरी बहुत ही कोमल फल है इसलिए इसको चुनते ही मंडी में भेज देना चाहिए। इस व्यवसाय के करनेवालों के लिए यह अधिक लाभदायक होगा कि उनका माल मंडियों में बहुत तड़के ही बिक्री के लिए पहुँच जाय। बड़ी बड़ी मंडियों में फल को उन डिब्बों में जिनमें उत्तम ठंडक रखनेवाले यन्त्र लगे हों, भेजना चाहिए, जो कि इस समय भारतवर्ष के कुछ ही प्रधान प्रधान रेलगाड़ियों में लगे हुए हैं। बहुत अच्छा हो यदि सब ही रेलगाड़ियों में ऐसे डिब्बे रहें, और वे सब तेज़ चलनेवाली गाड़ियों और डाकगाड़ियों के साथ चला करें। भारतवर्ष में अमेरिका के समान संगठित मंडियों का कोई प्रबन्ध नहीं है इसलिए यहाँ के लिए व्यवसायी को बहुधा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और बड़े बड़े घाटे भी उठाने पड़ते हैं।

फल को सुरक्षित रखना—बहुत से दूसरे फलों के समान स्ट्राबेरी बोतल में बन्द करके सन्तोषजनक रूप में सुरक्षित नहीं रक्खी जा सकती क्योंकि इसमें पानी की मात्रा अधिक रहती है और फल अपना रंग स्थिर नहीं रख सकते। सम्भवतः उनको बोतलों में सुरक्षित रखने का निम्नलिखित उपाय सर्वोत्तम है—

फल की डंडियों को तोड़ डालो और दानों पर सफ़ेद चीनी छिड़ककर उनको बोतलों में बिला कुचले हुए जितना सम्भव हो कस कर भर दो, परन्तु पानी न मिलाओ। बोतलों में मयछल्ले के ढकना कस दो और उनको एक कढ़ाई में, जिसमें इतना पानी भरा हो कि बोतलों के मुँह से १ इंच नीचे तक हो, रख दो, धीरे-धीरे पानी को उबलने के तार तक लाओ और इस तार को ५ मिनट के लगभग स्थिर रक्खो, उस समय यह देखने में आयेगा कि फल अपने ही रस में बोतल में सिकुड़कर बैठ गये हैं। तब उनको कढ़ाई से निकालकर ख़ूब कसकर बन्द कर दो।

स्ट्राबेरी का जाम या मुरब्बा बनाने के लिए अच्छी छटी हुई ६ पौंड स्ट्राबेरी में ४ पौंड कुटी हुई चीनी का छिड़काव देकर उसको एक रकाबी में रख दो। दूसरे दिन उसमें से जो रस निकले उसको कढ़ाई में डालकर एक पौंड चीनी के साथ गलाओ। फिर ख़ूब सावधानी से स्ट्राबेरी के फलों को इसमें डाल दो। धीमी आँच से उबाल तक लाओ और फिर आध घंटे तक ख़ूब तेज़ी से उबालो। तब मरतबान में डालने से पहले इसको थोड़ा ठण्डा हो लेने दो। ऐसा करने से किसी हद तक फल मरतबान के सिरे तक उठ आने से बचा रहता है। बाहरी कीटाणुओं को दूर रखने के लिए मरतबान में ख़ूब कसकर ढकना चढ़ा दो।

उत्पात—पक्षी और गिलहरियाँ बहुधा इस फ़सल को बड़ी हानि पहुँचाया करती हैं। इसलिए फल के पकने के समय चौकीदारी अत्यन्त आवश्यक है।

(कृषि-विभाग की बुलेटिन नं० ५ से उद्धृत)

घर की महिमा

सृष्टि के प्रथम पुरुष का घर स्वर्ग में था और उसकी सन्तान का स्वर्ग घर है।

—हेयर

सैकड़ों पुरुष हों, वे पड़ाव लगा सकते हैं, डेरा डाल सकते हैं, परन्तु घर तो घरनी से ही होता है।

—लोकोक्ति

चाहे कोई राजा हो या किसान—सुखी वह है, जिसे घर में शान्ति मिलती है।

—मोर्थ

हृदय नहीं, तो घर नहीं।

—बायस

'घर' में कुछ जादू है। घर ऐसी रहस्य-पूर्ण जगह है, जिसमें वे सब सुख और गुण आ जाते हैं, जिन्हें उसकी सीमा के बाहर कोई नहीं जानता।

—सौदी

किसी राष्ट्र की शक्ति है नागरिकों के सुव्यवस्थित और बुद्धि-सम्पन्न घर।

—मो० सिगोरनी

घर, घर, प्यारा घर! घर जैसा अन्य कोई स्थान नहीं है।

—वर्डस्वर्थ

वह घर ही है जो राज्य-स्थापना कर सकता है।

—जोज़ेफ़ कुक

घास का भोजन

अभी तक हम लोग अपने पूर्वजों का हाल पुराणों आदि में पढ़ते थे तो जानते थे कि वे लोग जड़ी बूटी और कई तरह की घास खाते थे। वे लोग बहुत बलवान् और बुद्धिमान् होते थे। आजकल के लोग इन बातों को सच नहीं मानते। वे कहते हैं भला घास खाकर आदमी बलवान् और बुद्धिमान् कैसे हो सकता है। ये सब बातें झूठ लिख दी गई हैं।

किन्तु अब ये बातें झूठ न कही जा सकेंगी। अब अमरीका में भी घास से मनुष्य के खाने लायक भोजन बनने लगा है। यह न समझना चाहिए कि कहीं एक जगह किसी ने थोड़ा-सा घास का भोजन बना लिया होगा जिस पर यह तूमार बाँधी जा रही है। इस प्रकार का घास का भोजन बनाने के लिए छः बड़े-बड़े कारखाने खोले गये हैं जिनमें से तीन खास अमरीका और तीन कनाडा में हैं। इन कारखानों में बहुत बड़ी मात्रा में यह घास का भोजन बनता है।

इस प्रकार का भोजन अभी अधिकतर अल्फाल्फा नाम की घास से बनता है। यह बहुत ताक़तवर होता है। और घासों से भी यह बनाया गया है। परन्तु अल्फाल्फा का बना हुआ भोजन अधिक लाभकारी है।

घास में से पानीवाला भाग मशीनों से अलग कर दिया जाता है। फिर जो सूखा भाग बचता है उसको कूटकर चूर्ण बना लेते हैं। जिन घासों से यह चूर्ण बनाया जाता है उनमें विटामिन बहुत होते हैं। ये विटामिन सूखे मेवे से २८ गुना अधिक होते हैं। 'ए' भेद का विटामिन मूली से २३ गुना अधिक इसमें होता है। 'बी' भेद का विटामिन इसमें पत्तीदार तरकारियों से ९ गुना होता है। और विटामिन 'बी' २, सलाद से २२ गुना होता है। विटामिन 'सी' टमाटर १४ से गुना होता है।

अल्फाल्फा घास में प्रोटीन, विटामिन और खनिज पदार्थ ये तीनों बहुत होते हैं। एक पौंड अल्फाल्फा के चूर्ण में जितना विटामिन 'ए' होता है उतना एक साधारण आदमी के लिए लगभग सवा महीने को काफ़ी होता है।

यह तो ऊपर कहा ही जा चुका है कि अमरीका और कनाडा में घास से भोजन बनाने के छः कारखाने हैं। इनमें काफ़ी तादाद में घास का भोजन बनता है। इनमें से एक कारखाना सबसे बड़ा है। यह ओंटोरियो में है। इसका फैलाव ३०० एकड़ में है। इस भूमि के कुछ भाग में कारखाने के लिए अल्फाल्फा घास भी उगाई जाती है। इस कारखाने में जो घास का भोजन बनता है वह बहुत दूर-दूर भेजा जाता है।

अभी अल्फाल्फा से बने भोजन को आदमी कम खाते हैं। परन्तु पशुओं और मुर्गियों को यह बहुत दिया जाता है और देखा गया है कि यह उनको लाभ भी बहुत पहुँचाता है। यह भोजन चारे के साथ गाय और भैंस को देने से दूध बहुत होता है। ताक़त बढ़ाता है। इसे मुर्गियों को खिलाने से वे अंडे जल्दी जल्दी देती हैं।

यदि घास काटकर खुली डाल दी जाय तो उसका वह तत्त्व, जो बल बढ़ानेवाला होता है, नहीं रह जाता है। उसका कुछ भाग हवा में मिल जाता है। कुछ सूर्य की गरमी से भाप बनकर उड़ जाता है और कुछ नमी के कारण बिगड़ जाता है। इस प्रकार उसका बहुत कम लाभ करनेवाला तत्त्व बचता है।

परन्तु जब उसी घास को नये ढंग से साफ़ करके उसको मशीनों से काटा जाता है और उसका भोजन बनाया जाता है तो उसके विटामिन नाश नहीं होने पाते और उसमें पूरी ताक़त भरी रहती है। यह भोजन बनाने का काम इतनी जल्दी होता है कि घास काटने से लेकर उसका चूर्ण बनाकर बोरों में भरने तक केवल एक घंटा लगता है। जब यह बोरों में भरकर रक्खा जाता है तो भी इसमें किसी तरह की हानि नहीं होती क्योंकि जिन बोरों में यह भरा जाता है उनमें कोई ऐसा मसाला लगाया जाता है जिससे हवा और सरदी-गरमी का असर नहीं होता। सीलन भी नहीं लगती। इसी लिए उसमें कोई विकार नहीं आता।

अब हमें यह देखना है कि यह घास का चूर्ण बनता कैसे है —

अल्फाल्फा घास ताज़ी काटकर लारियों में लादकर कारखानों में पहुँचा दी जाती है। वहाँ पर घास को तौलकर एक चबूतरे पर रख देते हैं। चबूतरे पर सीमेंट लगी होती है इसलिए वह चिकना होता है और साफ रहता है। चबूतरे के पास एक मशीन लगी होती है जो उस घास को उठाकर एक बक्स में डाल देती है। बक्स में एक दूसरी कल लगी रहती है। इस कल के चलने से बक्स के अन्दर लगे हुए चाकू चलने लगते हैं और वह घास बक्स के अन्दर ही अन्दर बहुत जल्द कट जाती है। कटकर वह बहुत महीन हो जाती है। फिर इस कटी हुई घास की ६ इंच से लेकर १६ इंच तक मोटी तह लगा ली जाती है। उसके बाद उसमें हवा छोड़ी जाती है। एक भट्ठी में से एक बहुत तेज़ पंखे के चलने से बहुत गरम हवा घास के नीचे से निकलती है। यह हवा जब घास में लगती है तो १० मिनट में उसका लगभग ९० फ़ी सदी पानी भाग भाप बनकर उड़ जाता है किन्तु विटामिन को कोई हानि नहीं पहुँचती।

इस तरह कटी और सूखी हुई घास मशीनों में डाल दी जाती है। इन मशीनों में उसके अन्दर का सब कूड़ा करकट आदि साफ़ हो जाता है। साफ़ हो जाने पर मशीनों से ही यह घास एक पाइप में चली जाती है जहाँ मशीन से ही कुट-पिसकर इसका चूर्ण बन जाता है। उसके बाद मशीन से ही यह चूर्ण बोरों में भर जाता है। एक बोरे में १०० पौंड (लगभग सवा मन) चूर्ण भरा जाता है। यह सब काम बड़ी सफ़ाई और जल्दी से होता है।

यद्यपि यह घास का चूर्ण अभी आदमी बहुत कम खाते हैं पर दूसरी भोजन की चीज़ों में मिलाकर थोड़ा बहुत खाया जाता है। इस चूर्ण के खाने से एक बड़ा लाभ यह है कि यह खून को गाढ़ा करता है। इसलिए जिन लोगों का खून पतला है उनके लिए यह बहुत फ़ायदे की चीज़ है।

अमरीका की कुछ प्रयोगशालाओं में आजकल इस बात पर विचार हो रहा है कि अल्फाल्फा औरतों के मासिक धर्म आदि के रोगों पर कितना लाभ कर सकता है।

—'दीपक'

मनोरञ्जक ...

लेखक,

...दन नगर में ... कपड़े का ... स्त्री ने उस ... साल हो ... गृहस्थी के ... सैर-सपाटे को ... लोगों के विव... एक घोड़ा-गाड़ी ... के लि... और उसका ... गाड़ी में सव... सवारी के ... सिलपिन ने ... का प्रबन्ध ... न होगी ... है और ... जाना है कि ... घोड़ा दे दे... सिलपिन की ... — बहुत ... करती हैं ... शराब ... महँगी ... शराब है
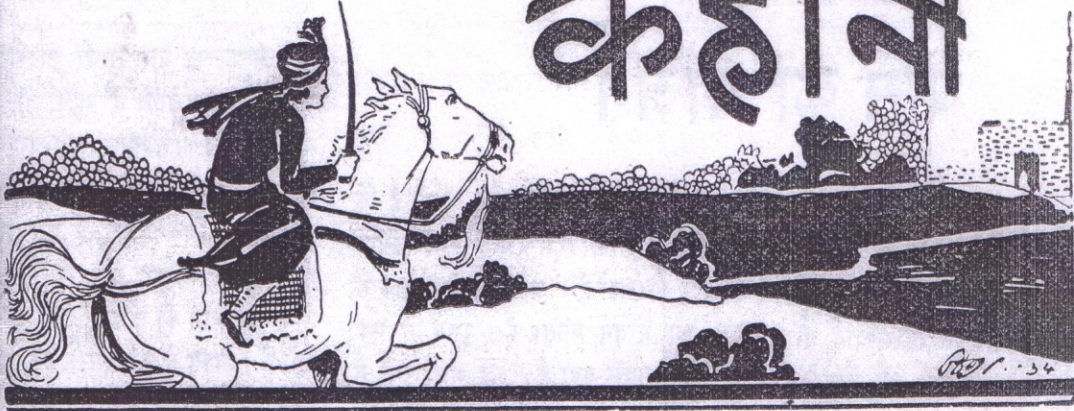
[illegible] मनोरञ्जक अँगरेज़ी कहानी

जॉन गिलपिन

लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा, बी० ए०, एल० टी०, विशारद

लन्दन नगर में जॉन गिलपिन एक प्रसिद्ध कपड़े का व्यापारी था। एक बार [illegible]की स्त्री ने उससे कहा—“हमारे विवाह [illegible] बीस साल हो गये। हमारा सारा समय [illegible]हस्थी के झंझटों में ही बीता। हम [illegible] सैर-सपाटे को बाहर नहीं निकले। कल [illegible] लोगों के विवाह का दिन है। इसलिए [illegible] एक घोड़ा-गाड़ी मँगाओ, और हम लोग [illegible]हलाव के लिए एडमान्टन चलें। मेरी [illegible] और उसका बच्चा, मैं और मेरे तीन [illegible] गाड़ी में सवार हो जायँगे और तुम [illegible] सवारी के लिए एक घोड़े का प्रबन्ध [illegible]।”

गिलपिन ने कहा—“बहुत अच्छा, मैं [illegible] का प्रबन्ध अभी करता हूँ। मुझे कोई [illegible] न होगी। क्योंकि मैं एक धनी [illegible] हूँ और सब मेरा आदर करते हैं। [illegible] आशा है कि मेरा मित्र क्लैरेन्डन मुझे [illegible] घोड़ा दे देगा।”

गिलपिन की बीबी बहुत प्रसन्न हुई और बोली—“बहुत अच्छा, तो मैं भी अपना [illegible] करती हूँ, लेकिन एक बात तो सुनो। [illegible]-सी शराब भी ले चलनी है। बाज़ार [illegible] शराब महँगी पड़ेगी। मैं अपने घर की [illegible] हुई शराब ही ले चलूँगी।”

(२)

सुबह हुई। गाड़ी आगई। सब लोग उसपर सवार हुए। कोचवान ने घोड़ों के चाबुक रसीद किया। गाड़ी चल दी। सब लोग मारे ख़ुशी के फूले न समाते थे। गिलपिन घोड़े के पास लगाम पकड़े हुए खड़ा था। शीघ्रता से गाड़ी का पीछा करने के लिए ज्यों ही गिलपिन घोड़े पर सवार हुआ, उसने देखा कि तीन ग्राहक सौदा ख़रीदने के लिए दुकान की ओर जा रहे हैं। वह तुरन्त ही उतर पड़ा। यद्यपि पीछे रह जाने के कारण उसे बड़ा बुरा लग रहा था, किन्तु पैसे की लालच बुरी बला है। उसने सोचा सौदा कर लें, फिर जल्दी से पहुँच जायँगे। कम्बख़्त ग्राहकों ने कपड़ा पसंद करने में बड़ी देर लगा दी। इतने में घर की नौकरानी चिल्लाती हुई आई और बोली—“मालकिन शराब तो घर में ही भूल गईं।” गिलपिन और भी झल्ला गया। अन्त में उसने नौकरानी से कहा कि घर से शराब ले आवे और उसकी चमड़े की पेटी भी लेती आवे जिसमें वह अपनी तलवार लटकाया करता था।

(३)

गिलपिन की बीबी ने शराब को सुरक्षित रखने के लिए दो पत्थर की बोतलें रख छोड़ी थीं। बोतलों के ऊपर दोनों तरफ़ झुके हुए दो हैन्डिल थे। गिलपिन ने उन्हीं में पेटी डालकर अपने दोनों तरफ़ एक-एक बोतल लटका ली और ऊपर से निहायत साफ़-सुथरा लबादा ओढ़ लिया। इस तरह गिलपिन महाशय पूरी तैयारी के साथ घोड़े पर सवार हुए।

शुरू में रास्ता पथरीला था। इसी लिए घोड़ा धीरे-धीरे होशियारी से चलने लगा। आगे चलकर जब रास्ता साफ़ मिला तो घोड़े ने अपनी चाल तेज़ की। गिलपिन पक्के सवार तो थे नहीं, उन्हें बड़ा भय लगने लगा। उन्होंने घोड़े को पुचकारकर कहा—“बेटा, धीरे धीरे चलो, इतनी जल्दी की क्या आवश्यकता है।” घोड़े ने मानो सुना ही नहीं। अब वह सरपट भागने लगा। गिलपिन महाशय थर-थर काँपने लगे। उन्होंने दोनों हाथों से ख़ूब कसकर घोड़े के बाल पकड़ लिये और गरदन पर झुक गये।

घोड़े को भी बड़ा ताज्जुब हुआ। आज तक किसी ने इस तरह उसपर सवारी नहीं की थी। वह चौंक कर और भी सरपट भागा। गिलपिन महाशय की हुलिया तंग थी। उन्हें स्वप्न में भी यह आशा न थी कि घोड़ा इतने ज़ोर से भागेगा। हवा भी तेज़ चलती थी। उनकी हैट उड़कर न जाने कहाँ जा गिरी। लबादा झंडे की भाँति फहराने लगा। गिलपिन उसे सँभाले तो कैसे! इसलिए वह भी उनके शरीर को छोड़कर उड़ गया।

जॉन गिलपिन पूरी तैयारी के साथ घोड़े पर सवार हुए

(४)

गिलपिन भागे चले जा रहे थे। बोतलें दोनों तरफ़ लटक रही थीं। इस अजीब-सी शक्ल को देखकर कुत्ते भोंकने लगे, लड़के चिल्लाने लगे. लोग घरों से निकल आये। लोगों ने समझा कि एक हज़ार की बाज़ी जीतने के लिए गिलपिन घुड़दौड़ में भाग ले रहा है और चूँकि सवार और घोड़े हलके हैं, इसी लिए वज़न बराबर करने के लिए दो बोतलें बाँध दी गई हैं।

घोड़ा बेतहासा भागा चला जा रहा था। गिलपिन महाशय पसीने से तर थे। उनका सिर क़रीब-क़रीब झुककर घोड़े की गर्दन से लग गया था। पीछे का भाग जो ऊपर उठा, तो बोतलें भी ऊपर उठीं और आपस में टकराकर टूट गईं। शराब बह चली। घोड़े का शरीर लथपथ हो गया। बोतलों के मुँह अब भी बेल्ट से लटके हुए थे।

इस प्रकार मुसीबतें झेलते हुए, छट्ठी का दूध याद करते हुए, और भगवान् को मनाते हुए गिलपिन महाशय एडमान्टन के पास पहुँच गये। जिस होटल में उनके बीबी-बच्चे ठहरे हुए थे, उसके सामने से सड़क निकलती थी। गिलपिन की बीबी छज्जे पर खड़ी हुई उनकी बाट देख रही थी। जब उसने अपने पति को इस तरह तेज़ी से भागते हुए देखा तो चिल्लाकर बोली,—"अरे ठहरो, आगे कहाँ चले जाते हो। यहीं तो होटल है। खाना तैयार है। हम सब बहुत भूखे हैं, जल्दी उतरो और आओ।"

गिलपिन ने भागते हुए कहा—"हमारी दशा कौन अच्छी है, मारे भूख के दम निकल रहा है।" उन्होंने लगाम खींचकर घोड़े को रोकने की कोशिश की, लेकिन घोड़ा तो रुकने का नाम भी न लेता था। वह आगे चलकर दस मील की दूरी पर अपने मालिक के कोठार पर आने-जाने का आदी था। इसी लिए वह हवा से बातें करता निकल गया और जाकर क्लैरेन्डन के कोठार पर दम लिया।

(५)

क्लैरेन्डन को अपने पड़ोसी की इस दीन-हीन दशा को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने दौड़कर फाटक पर गिलपिन का स्वागत किया और पूछा,—"कहो क्या समाचार हैं, यहाँ कैसे आये? जल्दी बोलो, तुम्हारा सर नंगा क्यों है, हैट क्या हुई।" गिलपिन बोले—"हैट तो पीछे सड़क पर है और मुझे तुम्हारा घोड़ा यहाँ ले आया है।"

क्लैरेन्डन ने कोई उत्तर न दिया और अपनी हैट उसे देते हुए कहा—"देखो गिलपिन, मेरा सिर तुमसे बड़ा है। इसी लिए हैट छोटी न पड़ेगी। किन्तु मेरी बात मानो, घोड़े से उत्तर आओ, हाथ-मुँह धोओ और कुछ खा-पी लो। मैं देखता हूँ तुम बहुत थक गये हो।" गिलपिन ने कहा 'मित्र धन्यवाद' किन्तु आज मेरे विवाह का दिन है। यदि मैं यहाँ खाऊँ और मेरे बीबी-बच्चे एडमान्टन में भोजन करें तो दुनिया क्या कहेगी और यह कितना भद्दा लगेगा। इसलिए मुझे आज्ञा दो।"

गिलपिन ने घोड़े की बाग मोड़ी और घोड़े से बोले—'देखो जी, मुझे खाने को देर हो रही है। यह तुम्हारी ख़ुशी थी कि तुम मुझे यहाँ ले आये। अब मुझे वापस ले चलो।' बेचारे गिलपिन कठिनता से ये शब्द कह पाये थे, कि एक गधा बड़ी ज़ोर से रेंकने लगा। घोड़े ने कान खड़े किये मानो उसने शेर की दहाड़ सुनी हो। अब क्या था! अपनी पूरी चाल से घोड़ेराम फिर भाग खड़े हुए। गिलपिन बेचारे की फिर वही दशा हुई। शीघ्र ही यह माँगी हुई हैट भी उड़ गई।

(६)

एडमान्टन के पास से गुज़रते हुए गिलपिन की बीबी ने इन्हें फिर देखा और फिर पुकारा, किन्तु घोड़ा हवा से बातें करता हुआ लिये जा रहा था। अब मेम साहब घबराईं। उनका सारा मज़ा किरकिरा हुआ जा रहा था। उन्होंने झट अपने कोचवान को बुलाया और उसे एक नोट दिखाकर कहा—"यदि तुम मेरे पति को अच्छी तरह लौटा लाओ तो यह तुम्हारा है।"

कोचवान घोड़े पर सवार हुआ और शीघ्र घोड़ा दौड़ाता हुआ गिलपिन के पास जा पहुँचा और घोड़े की बाग पकड़कर रोकना चाहा। किन्तु चौंका हुआ घोड़ा और भी बहक गया। अब घोड़ा पहले से भी तेज़ भाग रहा था। आगे-आगे गिलपिन और पीछे-पीछे कोचवान।

कुछ आदमियों ने सड़क पर यह तमाशा देखा। वे चिल्ला पड़े "पकड़ो! पकड़ो! चोर!! डाकू!!" सबके मुँह से यही शब्द निकल रहे थे। सबने उनका पीछा किया। चुङ्गीवालों ने यह समझकर कि घुड़दौड़ हो रही है, सड़क पर के फाटक खोल दिये। एक प्रकार से यह घुड़दौड़ थी भी, क्योंकि गिलपिन और कोचवान में होड़ लगी थी। गिलपिन ने बाज़ी जीती भी क्योंकि वे लन्दन में पहले पहुँचे। घोड़ा जाकर वहीं रुका, जहाँ से चला था।

इस प्रकार गिलपिन और उसकी बीबी ने विवाह-दिवस मनाया। अन्त में उन्होंने कान पकड़े, कि ऐसी सैर से बाज़ आये।

———

लोक-सेवा और साधु-समाज

लेखक, पण्डित श्रीधर नेहरू, आई० सी० एस०

गत २ जनवरी सन् १९४२ को श्री चन्द्र महाविद्यापीठ का ४६ वाँ वार्षिकोत्सव उसके नये भवन (ईश्वरी मिमोरियल अस्पताल के पास, कबीर चौरा, बनारस) में मनाया गया था। इस अवसर पर डाक्टर एस० एस० नेहरू, कमिश्नर बनारस डिवीजन, ने सभापति के आसन से जो भाषण दिया था उसे हम यहाँ अँगरेज़ी से अनुवादित करके प्रकाशित करते हैं।

महन्त स्वामी दर्शनानन्द जी, अध्यापकों, महाविद्यापीठ के छात्रों, देवियों और सज्जनों, सिक्रेटरी साहब की दिलचस्प रिपोर्ट ने आशा से अधिक समय ले लिया है। अतः मैं आपका समय १२ मिनट से अधिक नहीं लूंगा। कृपया आप ध्यान देकर सुनें क्योंकि इस विद्यापीठ की भलाई के लिए मैं जो कुछ बताऊँगा वह दूसरों के भाषण और लिखित विचारों पर निर्भर न होकर व्यक्तिगत अनुभवों का परिणाम है।

मैं इस भवन के लिए आपको बधाई देता हूं यद्यपि अभी यह अपूर्ण है। मैं विश्वास करता हूँ कि वे दातागण जिन्होंने दीवालों और छतों को बनाने में सहायता दी है वे इसकी खिड़कियाँ, दरवाजे और भवन को फर्नीचरों से सजाने में भी सहायता करेंगे। लेकिन अभी और भी काम करना है। बाग़ के लिए जो जगह खाली छोड़ दी गई है उसने मुझे ख़ास तौर से आकर्षित किया है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप यहाँ सजावट के फूल, गेंदे आदि न लगाकर ऐसे पौधे लगावें जिनमें औषधीय गुण हों और जिनका उपयोग आप अपनी आयुर्वेदिक अनुसंधानशाला में कर सकते हों। यह आपको युद्ध उद्योग में सबसे आगे ला खड़ा करेगा। आज तक होनेवाले युद्धों में वर्तमान युद्ध वैज्ञानिक उत्कर्ष का युद्ध है। यूरोप की प्रयोगशालायें खाद्य पदार्थों में कमियों को पूरा करने के लिए विटामिन से पूर्ण पदार्थों का उत्पादन कर रही हैं, इसके साथ-साथ खाद्यशक्ति को पुनर्जीवित करने तथा खाद्यशक्ति को बढ़ाने का भी प्रयत्न हो रहा है। ऐसी दशा में यहाँ का आयुर्वेदिक विभाग जो कि साधारण जड़ी-बूटी और ओषधि द्रव्य पर निर्भर है काफ़ी सेवायें कर सकता है। मेरा यह विश्वास कीजिए कि इस समय जन-स्वास्थ्य और विज्ञान के बड़े-बड़े विज्ञाताओं का अनुसंधान खाद्यशक्ति के बढ़ाने और उसे संचित करने और ख़ासकर विटामिन के विषय में है। ताकि उसे पहचाना जाय और सुरक्षित रखकर उसे साधारण जनता या सैनिकों के आहार के उपयुक्त बनाया जाय। मुझे पूर्व और पश्चिम के बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में भाषण देने का अवसर मिला है। इस प्रकार मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूँ कि अमेरिका और यूरोप के वैज्ञानिकों के अनुसंधान का प्रमुख ध्येय आयुर्वेद के सिद्धान्तों, सत्यों और कथनों के सत्य का पुनः प्राप्त करना ही है। आज-कल विटामिन का सिद्धान्त केवल आयुर्वेद के सिद्धान्त का नया रूप है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सामने है। मैंने हाल में रेडियो पर सुना कि आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के लोग रात्रि के समय वायुयान से उड़ने का काम बड़ी सफलता से करते हैं और इसका केवल एक-मात्र कारण यह है कि गाजर उनके खाद्य पदार्थों में प्रमुख है। यह कोई नवीन बात नहीं है क्योंकि प्रत्येक भारत-वासी यह जानता है कि जानवरों की रतौंधी गाजर से अच्छी की जा सकती है। इसका गुप्त भेद उस विटामिन में होता है जिसे कैरोटीन कहते हैं। दूसरी कन्दें भी इसी प्रकार गुणकारी हैं। इँगलैंड में घोड़ों को शलजम खिलाया जाता है। जब मैं १६ वर्ष की उम्र में कैम्ब्रिज में अध्ययन करने के लिए प्रथम बार इँगलैंड गया तो शायर के इन तगड़े घोड़ों को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। इँगलैंड के जानवरों की शक्ति का वास्तविक कारण वहाँ के कन्द ही हैं। जापान और चीनवालों ने एक अन्य कन्द का पता लगाया है जिसे रैडिस कहते हैं और जिसे वे लोग चावल के साथ खाते हैं। यूनानियों और टर्की की पुष्टता का कारण प्याज़ है। इन सबमें काफ़ी विटामिन होता है। दूध की बनी हुई चीज़ों में भी विटामिन होता है। मैं उन अँगरेज मजदूरों की प्रशंसा करता हूँ जो रोटी और पनीर के ज़ोर पर सड़कें पीटने या पत्थर तोड़ने का काम करते हैं। पनीर और घी विटामिन से भरे आहार हैं।

इस सिलसिले में वनस्पति घी की थोड़ी-सी चर्चा कर देना अनुचित न होगा। यह स्वयं हानिकारक नहीं होता है परन्तु इसमें खाद्य शक्ति कम होती है। वनस्पति घी को ढाक से रंग देना चाहिए। यह रंग देहातों में बहुत दिखाई पड़ता है। गाँव की स्त्रियों और लड़कियों को पीली धोतियाँ पहने आप देखते ही हैं। यह बिलकुल अनुपकारी होता है और हालैंड की कोफनील से बेहतर होता है जिससे पनीर को रँगते हैं। इँगलैंड का पनीर भारतीय पनीर से अच्छा होता है क्योंकि वहाँ की गायें मजबूत और स्वस्थ होती हैं तथा उनको अच्छे चरागाहों के साधन प्राप्त हैं। इसकी परीक्षा मैंने स्वयं की है। जब मैं कैम्ब्रिज में पढ़ता था उस समय मैं दोपहर को केवल रोटी, मक्खन और पनीर खाता था अतः डाक्टर के लिए या दवा के लिए मुझे एक पैसा भी नहीं ख़र्च करना पड़ा। आप अपने गिर्द देखें तो आपको इन जड़ों के आश्चर्य-जनक गुण दिखाई पड़ेंगे जिनसे कि आयुर्वेद सर्वथा परिचित है। बहुमूत्र-रोग-निवारण के लिए और इसके लिए कि प्रत्येक ऊँच-नीच, धनी, ग़रीब, काला या गोरा के लिए इस रोग से मुक्त करने का केवल एक-मात्र साधन इंसुलीन है जो कि सुअर के उदर-स्थित ग्रन्थिविशेष से निकाला जाता है। इसका आविष्कार कैनाडा के विद्वान् सर फ्रेडेरिक बेंटिंग ने किया था। इसके थोड़े ही दिनों बाद बाजारों में इससे भी अच्छी चीज़ वनस्पति की बनी हुई बिकने लगी।

यहाँ भी आपके लिए अनुसंधान का क्षेत्र है। अभी हाल में मैंने रेडियो से सुना है कि विटामिन एच० नामक पदार्थ का आविष्कार हुआ है जो कि मेढक में पाया जाता है। इसमें सारे शारीरिक बीमारियों को रोकने और खासकर इंफ्लुएन्जा और उसके बाद के बुरे प्रभावों को रोकने की शक्ति है। यह मेढक से निकलता है और यदि लोग काड मछली के यकृत से प्राप्त क्षयरोगनाशक तेल का उपयोग करते हैं तो मेढक के सर से निकले हुए पदार्थ को स्वीकार करने में क्यों नाक-भौं सिकोड़ते हैं? अभी अनुसंधान के बहुत-से रास्ते खुले हुए हैं। सबसे अधिक अभीष्ट फलदायक धातु होती है जिनका मूल आधार स्वर्ण होता है और सीसा आदि उनके सहायक पदार्थ होते हैं। यूरोप और अमेरिका में रोगों को दूर करने का यह प्रमुख साधन है लेकिन जहाँ उन देशों में सीसा विष के काम में आता है वहाँ हमारे यहाँ यह उस विष से बिलकुल परे होता है। इसका कारण है कि हमारे निर्माण का अजीब ढंग मकरध्वज और मृगांक का नाम किसने नहीं सुना है। रसायन शास्त्र के अनुसार सीसा विष पैदा करता है लेकिन आयुर्वेद के मत से ऐसा नहीं होता। जिन जानवरों को धातु के हौजों में पानी पिलाया जाता है उन्हें प्रायः पेट की बीमारी हो जाती है। वह जानवर जितना ही कम पालतू होगा उतना ही अधिक कष्ट का अनुभव करेगा और यदि उसे झरने का पानी दिया जाय तो वह तुरन्त अच्छा हो जायेगा। आजकल जीव-विद्या-सम्बन्धी आधारों पर धातुओं की जो चीजें बनी हैं वे मनुष्य के उपयोग के लिए ही बनाई गई हैं फिर भी आयु-द्वारा जड़ी और बूटियों की मदद से, जिंक मैंगनीज़, और ताँबा का उपयोग बिना कठिनाई से हो जाता है। इस विषय में अनुसंधान करके आप युद्ध-उद्योग में और जनता की भलाई के लिए नये नये विटामिन खाद्य निकाल सकते हैं। आपकी रिपोर्ट से यह प्रकट हुआ है कि किस प्रकार रोग से रोग पैदा होते हैं, किस प्रकार इलाज रोग से भी बुरा साबित होता है। विष से विष का नाश कर देना ही काफ़ी नहीं है। इसके विपरीत यदि आप प्रकृति की ओर झुकें जो कि आयुर्वेदिक है तो आप उसके द्वारा खाद्यों के मिश्रण के सिद्धान्तों का सुधार कर सकते हैं। यही आपका ध्येय है।

आपने अपनी रिपोर्ट में सर मालकम हेली का उद्धरण करते हुए कहा है कि विद्यालय साधुओं को जीवन का सिद्धान्त और संसार के प्रति कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाता है और यह भी कहा है कि विद्यालय ने बहुत-से साधुओं को शिक्षा दी है जिनका प्रभाव ऐसे व्यक्तियों पर है जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह सलाह बहुत अच्छी है और मेरी इच्छा है कि आप उसे उसी खूबी से पालन करें। मन्दिरों, पाठशालाओं, आश्रमों और मठों तथा दान आदि को अनजान और निरुत्साही लोगों के हाथ में छोड़ने से अधिक हानि होने की संभावना है। आपको चाहिए कि ऐसे साधुओं को शिक्षा देकर भेजें जो आत्मनिष्ठ हों और जो अपने प्रभाव से जनता को सच्चे धर्म की राह दिखा सकें और वर्तमान समय के ढोंग और निरर्थक धार्मिक कामों से बचा सकें। अन्य देशों में जनता के ऊपर अधिकार रखनेवाले लोग बहुत शिक्षित और आत्मनिष्ठ विचारवाले हैं। इनका उदाहरण हम तीन प्रमुख जातियों से ले सकते हैं। (१) आयरलैंड के मैनूथ, (२) वेल्स का एक धार्मिक पुनः संगठनकारी गाँव और (३) तेल-अबीब की यहूदी कालनी। मैं दो बार आयरलैंड जा चुका हूँ और वहाँ की जनता संसार के अन्य लोगों से अधिक धर्म से प्रभावित होती है। इसका कारण मैनूथ कालेज से आनेवाले भक्तगण ही हैं। यहाँ पर मेरे समक्ष बैठे हुए ३०० लोगों में बिरला ही कोई ऐसा होगा जिसने मैनूथ का नाम सुना होगा। फिर भी मैनूथ आज आयरलैंड के धार्मिक जीवन में एक नई शक्ति भर दी है। वेल्स के गाँवों में भी वहाँ के लोगों का धर्म इतना सादा और सच्चा होता है कि उसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी ही है। यहूदियों के रबी लोगों के धार्मिक प्रभाव का ही यह परिणाम है कि वे यहूदी आज बिना घर-बार के होते हुए भी संसार में एक जीवित जाति की तरह बने हुए हैं। यह देखते हुए कोई कारण ऐसा नहीं दिखाई देता जिसके कारण आप भी ऐसे ही लोगों को बाहर भेजें जो गाँवों में जाकर गाँववालों की आवश्यकताओं को पूरी करने की कोशिश करें और इस प्रकार उनके सांसारिक कष्टों को दूर करने से ही धीरे-धीरे वही धार्मिक रूप धारण कर लेगा। आप गाँव और गाँववालों की उन्नति कर सकते हैं। जहाँ वह जाड़े से काँपता और थर्राता हुआ बैठा हो वहाँ आप जाकर उसे जाफरी के द्वारा जो कि ताड़ और खजूर के सूखे पत्तों से बने होते हैं, मदद दें। क्योंकि इसके द्वारा जाड़े से अच्छी तरह रक्षा की जा सकती है। चीन और जापान में कागज़ के मकान बने होते हैं जो कि लकड़ी के गूदे को गारकर परत या चद्दर के रूप में बनाये जाते हैं। आपको खजूर और ताड़ की पत्तियाँ बहुत ही लाभदायक हैं। इनसे हवा का तापक्रम ठीक किया जा सकता है। मैंने अप्रैल के महीने में एक शामियाने में इसकी हरी पत्तियों को लगाकर वहाँ की गर्मी को ५ से १० डिग्री तक कम कर दिया था क्योंकि हरी पत्तियाँ गर्मी को खींचती हैं। इसमें कुछ खर्च नहीं पड़ता है और इसके अलावा पत्तियों को गिराने से पौधों की भी उन्नति होती है। आप गाँववालों को धान की खेती करना सिखा सकते हैं क्योंकि आजकल वह सर्वोत्तम फ़सल है। आप उन्हें अंडी की खेती करना सिखा सकते हैं क्योंकि इससे मोटर के इंजनों के लिए कैस्टर आयल बनाया जा सकता है। ढाक के पौधे रंग, फूल, पत्ती और लकड़ी के लिए लगाये जा सकते हैं। आप लोग धार्मिक नेता होने के साथ-साथ देहातवालों के सच्चे हितचिन्तक हो सकते हैं क्योंकि आपका काम उन लोगों से अच्छा होगा जो कि शहरों और विश्वविद्यालयों में रहकर काम करते हैं और देहात से दूर रहते हैं।

मैं आपके सिक्रेटरी साहब से इस बात पर सहमत नहीं हूँ कि आपको आर्थिक संकट है।

यदि आप अपने अनुसंधानों को ठीक-ठीक करेंगे तो दयालु लोग और व्यापारी आपको आर्थिक मदद देंगे क्योंकि आपका पन्थ निराला और सच्चा है। मेरा समय पूर्ण हो चुका है अतः मैं अपने भाषण को समाप्त करता हूँ और आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यह शुभ अवसर दिया कि मैं अपने विचारों को आपके समक्ष रख सका।

—

आदर्श गाँव जयरामपुर

लेखक, श्रीयुत राजदेवप्रसाद मंत्री, जीवनसुधार सभा, जयरामपुर सर्किल—
विरनों; ज़िला ग़ाज़ीपुर।

यह मौजा क्या था; क्या हो गया,
और क्या होगा अभी।
आओ विचारें, आज मिलकर;
यह समस्यायें सभी॥

समय परिवर्त्तनशील है, इसी प्राकृतिक नियम के द्वारा जयरामपुर-प्रान्त ग़ाज़ीपुर के अन्तर्गत विरनों सर्किल का आदर्श तथा प्रथम श्रेणी का गाँव हो गया है। पहले यह गाँव पार्टीबन्दीवाला गाँव था। किन्तु अब इसकी हालत, क्या से क्या हो गई है, यह बात इस लेख के पढ़ने से मालूम हो जायगी।

जैरामपुर बिलकुल छोटा-सा गाँव है, जिसका कुल रक़बा १६४ एकड़ है। जिसमें मज़रुआ १३६ एकड़ और ग़ैर-मज़रुआ २८ एकड़ है। इस गाँव के अन्तर्गत ९ एकड़ बंजर, और १ एकड़ ऊसर है। इस गाँव की ख़ास पैदावार, साठी, धान, अरहर, उड़द तथा रबी की ख़ास फ़सल, जौ, गेहूँ, चना, तिलहन और ईख है। इस गाँव में क्षत्रिय, ब्राह्मण, लोहार, अहीर, कुम्हार, कानू, चमार, दुसाध, नाई, तेली, मुसलमान, गड़रिया, कोइरी और भर इत्यादि जाति के लोगों के ७२ घर आबाद हैं।

सहयोग व संगठन

इस गाँव में फ़रवरी सन् १९४० ई० में पहले-पहल सोसाइटी का जन्म हुआ, जिसकी रजिस्टरी १३–७–४० ई० को होकर आ गई और कार्य-संचालन प्रारम्भ हुआ। एक साधारण ग्राम-सुधार की पंचायत बनाई गई, जिसमें ७ पंच चुने गये। इस पंचायत में दो, तीन व्यक्ति ऐसे थे जो ग्राम-सुधार की स्कीम तथा पंचायत मौज़े में बन जाने पर इधर-उधर काम में रुकावट डालनी शुरू किये। परन्तु श्रीमान् बाबू रामअवधसिंह सरपंच, इनके के ग्राम-सेवक श्रीयुत देवनारायण-प्रसाद जी गुप्ता के अथक परिश्रम द्वारा सब काम अच्छे ढंग पर आगया और सुचारु रूप से चलने लगा। पहले इस मौज़े का नाम कोई नहीं जानता था, किन्तु इस स्कीम के सुचारुरूप से चलने के कारण जयरामपुर जयरामपुर हो गया है। अब जयरामपुर के नाम से सारी लिखा-पढ़ी तथा कार्रवाई होती है, इस जीवन-सुधार सोसाइटी में कुल ७२ घर हैं जिसमें से ५४ घर के मुखिये इस सोसाइटी में मेम्बर हैं और अपना वार्षिक चन्दा सोसाइटी को बिना रुकावट अदा करते हैं। पंचायत की बैठक सदैव समयानुकूल हुआ करती है, और हर माह के ७ तारीख़ को आम बैठक होती है, गाँव के लोग पंचायत के नियमानुसार कार्य करते हैं।

यह सोसाइटी गाँव के तमाम छोटे-छोटे मामलों को गाँव ही में तय कर देती है; जिससे गाँव के बहुत से मामले गाँव के बाहर नहीं होने पाते। मुक़दमेबाजी लगभग नहीं के बराबर हो गई है।

कृषि

सन् १९४० ई० में पंचायत ने बीज-गोदाम मरदह से १७ मन उन्नतिशील बीज फ़सल रबी का लेकर अपने मेम्बरों को सवाई पर बाँटा। कुल बीज सवाई से वसूल करके १० प्रतिशत के हिसाब से बीजगोदाम को वापस पहुँचा दिया। और १५ प्रतिशत के हिसाब से जो २ मन २२ सेर बीज पंचायत को मिला उसे पंचायत ने बहिफ़ाजत अपने गाँव में बाँटने के लिए रख लिया। दो रुपया डाकखाने में जमा करके हिसाब खोलने से जो पन्द्रह रुपया बचा, उसका भी अनाज ख़रीदकर पंचायत ने रख दिया; इस प्रकार जो बीज सोसाइटी के स्टाक सवाई रजिस्टर में जमा हुआ, उसे सोसाइटी ने बाँटने के लिए यूनियन को दिया।

पंचायत ने दो मेस्टन-हल, ३५ खाद के आदर्श गड्ढे, ३ कम्पोस्ट के ढेर, १५ रबी फ़सल के प्रदर्शन खेतों में किये, पेशाब की खाद, मेस्टन-हल और सनई के खाद के भी प्रदर्शन कराये गये।

इस गाँव में जहाँ बंजर और ईंधन के पेड़ लगाने योग्य जगह है, वहाँ जंगलात (पलास के वृक्ष) लगाये गये हैं। एक कुएँ में बोरिंग भी कराई गई है। इस साल खेत तथा गाँव बड़े शौक़ के साथ आदर्श बनाये जा रहे हैं।

स्वास्थ्य

ग्राम-सुधार स्कीम में आने के पहले यह गाँव बहुत गंदा था, गलियाँ बहुत गन्दी और नाबदानों का पानी बराबर बहा करता था, जिस कारण सदैव बदबू आती और बीमारी की डर बनी रहती थी, जगह बजगह पेशाब व पाखानों के ढेर बने हुए दिखाई देते थे। स्वास्थ्य-रक्षा इस स्कीम का मुख्य उद्देश्य होने के कारण ग्राम-सेवक ने अथक परिश्रम से इन बुराइयों को दूर किया, और पंचायत को विशेष सफ़ाई पर ध्यान देने का ज़ोर दिया; जिसका परिणाम यह हुआ कि यह गाँव ८५ प्रतिशत पहले से अच्छा हो गया है। पंचायत ने एक चपरासी नियत किया है जो गाँव का निरीक्षण बराबर करता और समय-समय पर सबको इकट्ठा करता है, जिसकी तनख्वाह—अन्न के रूप में गाँववालों से पंचायत अदा करवाती है। गाँव के जितने तंग रास्ते थे, सब काटकर चौड़े और सुन्दर बनवाये गये हैं; जगह-जगह पर चबूतरे बनवाये गये हैं, अँधेरे मकानों में रोशनदान लगवाये गये हैं। नाबदानों को बहते से रोकने के लिए सोकेज़पिट (सोख्ते) नमूने के बनवाये गये है। गाँव के अन्दर पानी पीने के कुएँ ठीक तरीक़े पर नहीं थे। अतएव ग्राम-सुधार-संघ की आर्थिक सहायता से पंचायत ने ३ कुओं को मरम्मत करवाकर आलीशान बनवा दिया

है, एक गुशलखाना भी बना हुआ है। एक कुएँ की मंजूरी भी होकर आगई है; और काम लगा हुआ है। आशा है कि आधे नवम्बर सन् १९४१ ई० तक यह कुआँ भी बनकर तैयार हो जायगा। दो कुओं के लिए फिर दरख्वास्त पड़नेवाली है, पंचायत का विचार है कि गाँववालों को प्रोत्साहित करके इस साल सब कुएँ आदर्श बना दिये जायँ। गाँव के अन्दर ५ खंडहर और बबूल के वृक्ष थे, उनको दूर करके, फूल लगाने का प्रयत्न किया जाता है, गाँव के अन्दर जो पेड़ हैं उनकी जड़ में मिट्टी डालकर फल लाने की कोशिश की जा रही है। तीन सूअरबाड़े गाँव से बाहर बनवाये गये हैं। प्रत्येक त्योहार के पहले ही लोग अपनी दीवारों, मकानों तथा सहनों की सफ़ाई सुचारुरूप से कर लेते हैं। और प्रतिसप्ताह गोबर से मकान के अन्दर नीचे लिपाई पोताई की जाती है। गाँव के मकानों की दीवारों के ऊपर मोटे-मोटे अक्षरों में 'शिक्षाप्रद वाक्य' लिखवाये गये हैं। जिन पर लोगों की निगाहें, आते-जाते बराबर पड़ती हैं। एक सरकारी दवा का बक्स भी मिला है। जिससे मरीज़ों को दवा मुफ़्त दी जाती है।

प्रचार व शिक्षा

इस गाँव में हर माह के ७ तारीख को निश्चित जलसा हुआ करता है, जिसमें समग्र दिन ग्राम-सुधार का कार्य होता है। प्रभात-फेरी, जानवरों की सफ़ाई, घर व रास्तों की सफ़ाई जानवरों को काम से छुट्टी तथा खेल भी होता है। ग्राम को पंचायत का आम जलसा किया जाता है, जिसमें ग्राम-सुधार सम्बन्धी प्रस्ताव पास किये जाते हैं। महीने भर के काम की ज़रूरी बातें लोगों को बतलाई जाती हैं। इस जलसे में गाँव के लगभग सब लोग शामिल होते हैं। गाँव में एक स्काउट संस्था क़ायम है जिसमें २० मेम्बर हैं। उन्हें ग्राम-सेवा, प्रारम्भिक चिकित्सा, सड़क पर चलने, डाक, रेल तथा ज़िले की ज़रूरी भौगोलिक बातों की शिक्षा दी जाती है। इस गाँव में निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए एक प्रौढ़ पाठशाला तथा बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए एक हिन्दू-पाठशाला भी खुली हुई है। जिसमें ३५ प्रौढ़, ४० नाबालिग़ और ७ बालिकायें निःशुल्क शिक्षा पा रही हैं।

गाँव के लोगों के दिलों में फ़ुटबाल, कबड्डी, रस्साकशी तथा अन्य खेलों का शौक़ है। गाँव के अन्दर दो अखाड़े—एक बालकों के और दूसरा प्रौढ़ों के लिए बना हुआ है।

पंचायत दो अखबार 'हल' और 'कल्याण' मासिक तथा एक 'विश्वमित्र' साप्ताहिक मँगाती है, गाँव के मेम्बरों के दिल में नशाखोरी, मुक़दमेबाजी, जुवा, शादी और गमी के अवसरों पर फ़िज़ूलखर्ची रोकने का विशेष ध्यान रखती है।

पंचायत ने एक कच्ची सड़क लगभग ४॥ फ़र्लांग लम्बी बनवाई है, जो विरनों से शादियाबाद कच्ची सड़क जाती है उससे मिला दी है। जिस कारण गाँववालों के आने-जाने में बहुत सुविधा हो गई है। इस सड़क के बनवाने में ज़िला सुधार-संघ ने १००) की मदद दी, शेष पंचायत ने स्वयं खर्च किया; इसके अतिरिक्त सड़क के अन्दर तीन पुलियाँ और तीन नालियाँ भी बनवाने का प्रबन्ध हो रहा है। पंचायत एक और सड़क जिसकी लम्बाई लगभग २ फ़र्लांग के है बनवाना चाहती है आशा है इस साल बनकर तैयार हो जायगी।

इसी गाँव में केन्द्रीय पंचायत-भवन भी बननेवाला है, जिसकी मंजूरी २४५) की ज़िला-सुधार-संघ से हो गई है। बाक़ी मदद सर्किल के और गाँवों से मिलेगी—जिसके निमित्त एक लाख ईंटें का भट्ठा पककर तैयार हो गया है और सामान इकट्ठे किये जा रहे हैं।

मुतफ़र्रिक काम जो गाँव में हुए

इस गाँव में एक मेम्बर 'मेल्हू गणेरी' जनता के हितार्थ एक तालाब बनवा रहा है। जिसमें लगभग आधा काम हो गया है। श्रीयुत सरपंच साहब भी एक ग्राम-सुधार आश्रम बनवाये हैं, जिसमें दिन के समय छोटे-छोटे बच्चों की पाठशाला और रात्रि के समय प्रौढ़ों की पाठशाला लगती है। इसी आश्रम में पंचायत की बैठकें भी हुआ करती हैं। पंचायत ने अपने गाँव में जो-जो काम किये, उनको केवल वे ही लोग समझ सकते हैं जो पहले देखने के बाद, अब फिर से गाँव को देखते हैं तो गाँव एक नई और बदली हुई शक्ल में देखने में आता है। यही कारण है कि—विरनों, ग्राम-सुधार सर्किल में यह गाँव आदर्श बन गया है। और आदर्श गाँव की सर्किल टण्डन शील्ड इसी मौज़े को प्राप्त हुई है, जो कुछ अभी कमी रह गई है, वह आशा है कि इस वर्ष अच्छी तरह से पूरी हो जावेगी।

इस मौज़े को आदर्श बनाने का सबसे अधिक श्रेय ज़िले के प्रमुख ग्राम-सुधार कार्यकर्ता श्रीमान् श्री भागवत मिश्र जी चेयरमैन ज़िला ग्राम-सुधार-संघ, विरनों सर्किल के, श्री देवनारायणप्रसाद जी गुप्ता आर्गनाइज़र, श्रीयुत ठाकुर रामअवधसिंह जी सरपंच तथा जगरदेवप्रसाद स्नेही पंच को है जिन्होंने तन, मन, धन तथा अथक परिश्रम लगाकर इस गाँव को इस ढंग पर बनाया है कि जयरामपुर आदर्श ग्राम का रूप सर्किल व ज़िले के अन्दर हो गया है।

इस गाँव को शुरू से सन् १९४१ ई० तक नीचे लिखे सरकारी अफ़सरों ने देखा और अपने विचार मुआइने में प्रगट किये।

१—श्री अब्दुलशकूर साहब परगना हाकिम ग़ाज़ीपुर।

२—श्रीमान् भागवत मिश्र जी चेयरमैन ग्राम-सुधार-संघ ग़ाज़ीपुर।

३—श्रीमान् जे० एम० राणासाहब सेक्रेटरी, ग्राम-सुधार-संघ ग़ाज़ीपुर।

४—डिविज़नल सुपरिंटेंडेंट साहब, ग्राम-सुधार, बनारस डिवीज़न।

५—श्रीमान् शिवरामसिंह डिप्टी कलेक्टर व सेक्रेटरी ग्राम-सुधार-संघ ग़ाज़ीपुर।

६—भूतपूर्व इन्सपेक्टर साहब ग्राम-सुधार ग़ाज़ीपुर।

७—वर्तमान इन्सपेक्टर साहब ग्राम-सुधार ग़ाज़ीपुर।

८—ज़िला ग्राम-सुधार स्काउट मास्टर आदि-आदि प्रमुख सज्जनों ने समय-समय पर निरीक्षण किया।

—

कृषि-शिक्षा की उपयोगिता

लेखक, श्री सी० मायादास स्क्वायर, एम० ए०, बी० एस० सी०, आई० ए० एस०,
डाइरेक्टर कृषि-विभाग, यू० पी०

यह वह भाषण है जिसे लेखक ने गोरखपुर स्कूल के सन् १९४२ ई० के पुरस्कार-वितरण पर सभापति के आसन से दिया था।

आजकल हिन्दुस्तान में खेती का विशेष महत्व है। हम लोग आजकल लड़ाई में हिस्सा ले रहे हैं और यद्यपि लड़ाई हमारे देश तक अभी नहीं पहुँची है, लेकिन हमारे सिपाही जो कि देश की सरहदों की रक्षा कर रहे हैं काफ़ी मात्रा में खाने का सामान चाहते हैं। हमारी आबादी तेजी के साथ बढ़ रही है और देश की नाजवाली फ़सलों की पैदावार, विभिन्न प्राकृतिक आपत्तियाँ जैसे सूखा, टिड्डी-दल का हमला इत्यादि की वजह से कम होने का अन्देशा है। ऐसे वक़्त में कृषि-शिक्षा बहुत उपयोगी है। लड़ाई के पश्चात् जब कि हमको खेती को नये सिरे से सजीव देना होगा, हमें ज्यादा माँग की वजह से अपनी पैदावार बढ़ाने के मसले पर विचार करना होगा।

गोरखपुर एग्रिकल्चरल स्कूल में हम दो साल की ट्रेनिंग दे रहे हैं जिसके बाद सफल विद्यार्थी को डिप्लोमा दिया जाता है। यहाँ पर यद्यपि कृषि एक मुख्य लेख है। हम इस बात की कोशिश करते हैं कि शिक्षक को विज्ञान, मिकेनिक्स और खेल-कूद, कसरत और अच्छी चाल-चलन की शिक्षा दी जाय, जो कि समस्त आयु उसके लिए उपयोगी सिद्ध हों। इस स्कूल का अभिप्राय यह रहा है कि खेती में दिलचस्पी लेनेवाले सज्जनों के लड़कों को शिक्षा दी जाय और उनको इतनी जानकारी जरूर कराई जाय, जितनी कि सफल खेती के लिए जरूरी है। अभाग्य से यहाँ पर दाख़िल होनेवाले विद्यार्थी की अधिक संख्या ट्रेनिंग हासिल करने के बाद घर पर खेती करने के लिए नहीं आती बल्कि नौकरी हासिल करना उनका मुख्य अभिप्राय होता है। इन नौजवानों को मौजूदा लड़ाई की हालत से शिक्षा लेनी चाहिए और उन्हें कोशिश करनी चाहिए कि अपने विचारों को ख़ुदग़र्जी से पाक व साफ़ रक्खें और अपने देश की आवश्यकता और हालत का ख़्याल करते हुए अपने निजी लाभों को पीछे रक्खें। हमको कृषि-विभाग के वास्ते इस स्कूल के पास हुए लोगों की जरूरत है। लेकिन हम ऐसे आदमी नहीं चाहते कि जिनका मुख्य उद्देश्य यह हो कि महीने के आख़िर में उनको वेतन मिल जाय। हमें ऐसे आदमियों की जरूरत है जो कि अपने ऊपर तकलीफ़ उठा कर अपने सूबे के किसानों की मदद करें और उन्हें फ़ी एकड़ ज्यादा नाज और रुपया प्राप्त होनेवाली फ़सलें पैदा करने में मदद दें।

स्कूल के मौजूदा हेडमास्टर साहब ने यहाँ की शिक्षा का मान बढ़ाने के लिए बहुत कोशिश की है और मुझे यह देखकर बहुत ख़ुशी हुई कि जिस मतलब के लिए यह स्कूल खोला गया था उसमें सफलता हो रही है। अब इस बात की जरूरत है कि जो विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं या जो आगे दाख़िल होकर शिक्षा प्राप्त करेंगे उनको केवल परीक्षा पास करने और नौकरी हासिल करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि उन्हें चाहिए कि तन-मन से भिड़कर इस सूबे की कृषि मुख्य तौर से पूर्वी ज़िलों की कृषि के दर्जे में उन्नति करें।

मैं समस्त इनाम पानेवालों को धन्यवाद देता हूँ। मुझे आशा है कि उन्हें इस सूबे की कृषि को उन्नति देने में सफलता प्राप्त होगी। विभिन्न खेलों और व्यायाम के मुक़ाबिले में हिस्सा लेनेवाले विद्यार्थी भी धन्यवाद के भागी हैं और मैं आशा करता हूँ कि वे अपने गाँवों में न केवल खेती की नई रीतियों को जारी करेंगे बल्कि खेलकूद और कसरत के मुक़ाबिलों की चाह जो कि हमारे नौजवानों की तन्दुरुस्ती के लिए जरूरी है उनमें पैदा करेंगे।

दो धनी

जब मैं धनकुबेर राथ्सचाइल्ड की तारीफ़ में सुनता हूँ कि उसने अपने अतुल भण्डार और असंख्य आमदनी में से हज़ारों पौंड बच्चों की शिक्षा के लिए, बीमारों के इलाज के लिए तथा वृद्धों के पालन-पोषण के लिए दान किये हैं, तो मेरा हृदय द्रवित हो जाता है और मैं भी उसकी सराहना करता हूँ।

लेकिन राथ्सचाइल्ड की प्रशंसा करते हुए भी मुझे एक किसान-परिवार की याद आये बिना नहीं रहती, जिसने एक अनाथ लड़की को अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी में आश्रय दिया था।

कृषक की स्त्री ने कहा था—'अगर हम कटका को अपने घर में रखेंगे, तो हमारे पास एक पैसा भी न बचेगा और हमें अपनी रोटी बिना नमक के ही खानी पड़ेगी।'

किसान ने उत्तर दिया—'ख़ैर, कोई बात नहीं, अलोनी ही खा लेंगे।'

मैं समझता हूँ कि राथ्सचाइल्ड को उस किसान तक पहुँचने के लिए अभी बहुत काफ़ी चलना पड़ेगा।

—तुर्गनेव
(प्रसिद्ध रूसी साहित्यकार)

गाँव की ग़रीबी और उसका इलाज

लेखक, श्री रणवीर वर्मा, प्रभाकर टैकनीकल अफ़सर, ग्राम-सुधार, यू० पी०

आज भारत एक ग़रीब देश है, पर सदा से ही इस मुल्क की यह दशा रही हो, यह बात नहीं है। जब भारत में मुसलमान बादशाहत थी, ग़ुलाम-वंश, ख़िलजी ख़ानदान की और मुग़लों की हुकूमतें थीं तब यह देश धन-धान्य से पूर्ण था। दूसरे मुल्क भारत का रास्ता खोज निकालने के लिए होड़ लगाये थे। उस समय भारत की खेती-बारी उन्नत थी। दुनिया के प्रायः सभी बाजारों में हिन्दुस्तान के दस्तकारों-द्वारा बनाई गई चीज़ें बिकने के लिए जाया करती थीं, तिजारती दुनिया में भारत का नम्बर अव्वल था। उस ज़माने के धन-दौलत की गवाही मुग़लिया ज़माने की बनी इमारतें आज भी माथा ऊँचा करके दे रही हैं। उस समय के किसान सुखी और धनवान् थे!

लेकिन मौजूदा ज़माने में किसानों की हालत, माली, जिस्मानी, रूहानी बहुत ही ज़्यादा गिरी हुई है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सोने की चिड़िया कहा जानेवाला मुल्क दुनिया में सबसे ज़्यादा दरिद्र और कंगाल देश हो गया है। यहाँ दुर्भिक्ष की दुहाई फिर रही है, मौत का डंका बज रहा है, संसार में कँगले हैं तो हम हैं, रोगी हैं तो हम हैं, अल्पायु हैं तो हम हैं, सबसे अधिक मरनेवाले हैं तो हम हैं। बेकारी का हमारे मुल्क में नंगा नाच हो रहा है। ग़ैर मुल्कों में क़ुली और ग़ुलाम कहकर हमारी इज़्ज़त की जाती है। हमारे मुल्क के भूखे नौनिहाल बालक हलवाइयों की दूकान के जूठे दोने चाटने को दौड़ते हैं। बेचारे भूखे किसानों के पेट की आग के सेंकने से ही जाड़ों की रातें कटती हैं, आम की जूठी गुठलियाँ और महुवे को सुखा, पीस-छानकर हमारे मुल्क के किसान ही गुज़र-बसर करते हैं। जानवरों के गोबर से अनाज के दाने चुनकर हमारे ही अभागे मुल्क में खाये जाते हैं।

हमारे ग़रीब होने के कारण हमारी ग़रीबी के दुःख से भी कहीं ज़्यादा दर्द भरे हैं।

१—कल-कारख़ानों और भाप के आविष्कारों की वजह से शहर तिजारत के केन्द्र बन गये और देहाती हाथ की दस्तकारी बन्द हो गई। विलायती ताजिरों ने मशीनों के बने माल से भारत के बाज़ारों को पाट दिया। विदेशी चीज़ें सस्ते दामों में यहाँ मिलने के कारण प्राचीन देहाती धन्धे बन्द हो गये। इससे मुल्क में पैदा न हुई, न लोगों को काम ही मिला। बेकार दस्तकारों की टोलियों ने खेती की ओर दौड़ लगाई। खेती से जितने लोगों की परवरिश होती थी उससे कहीं ज़्यादा आदमियों ने खेती-बारी का सहारा लिया। शहरों में मज़दूरी का काम कम लोगों ही को मिला।

दूसरे मुल्क की आबादी बढ़ी। उत्तराधिकार के क़ानून ने खेतों को टुकड़े टुकड़े कर दिये। जमीन की ताक़त खाद न मिलने की वजह से घट गई। हमारे मुल्क के दुधारु जानवरों की नस्लें सूख गईं और मुल्क का पशु-धन कम हो गया, अच्छे बैलों और घोड़ों की ताक़त कम हो गई। खेतों की जोताई भी कम हो गई और पैदावार भी कम हो गई। ज़्यादा तादाद में खेती के लायक जमीन पानी न मिलने की वजह से कम उपजाऊ हो गई। चरागाह और जंगल खेती के लिए अधिक जमीन पाने के लालच से नष्ट कर दिये गये और वहाँ खेत बना लिये गये। इस कारण से वर्षा भी कम हो गई। जंगलों की कमी और दूरी की वजह से गोबर जलाया जाने लगा जिसकी वजह से उपयोगी उपजाऊ खाद न बन सकी और इसका असर भी खेती पर [illegible] पड़ा। जंगल कम होने की वजह से रेश[illegible] और शहद का कारोबार बन्द-सा हो गया[illegible]

इधर मालगुज़ारी में अनाज के बज[illegible] नक़द रुपया लिया जाने लगा जिसके कार[illegible] किसान सस्ते दामों पर ही अनाज बेचने [illegible] लिए असमय पर ही मजबूर हुए और किसा[illegible] को घाटा हुआ। ऐसे समय में साहूकारों [illegible] बन आई। उन्होंने मनमाने ब्याज पर रुप[illegible] सूद पर दिया, भारी क़र्ज़े के नीचे किसान द[illegible] गये। साहूकारों ने क़ानून का जा और बेज[illegible] फ़ायदा उठाकर किसानों को तबाही के किना[illegible] ला खड़ा किया। इसका फल यह हुआ [illegible] बहुत-से ख़ुद-काश्त ज़मींदार अपनी ही ज़मीन[illegible] पर मालिक के बजाय काश्तकार बने औ[illegible] अन्त में बेदख़ल हो गये। जमीनें किसान[illegible] के हाथों से निकलकर महाजन, साहूकार[illegible] के हाथ बेदाम चली गईं।

खेती के औज़ारों में तब्दीली नहीं हुई[illegible] वे विज्ञान से कोसों दूर रहे। इससे खे[illegible] की अच्छी जोताई न हो सकी और फल-स्वरू[illegible] पैदावार पर असर पड़ा।

अच्छी फ़सल न होने की वजह से खे[illegible] के लिए अच्छे बीज न मिले।

खेतों में सालों साल एक-सी ही खे[illegible] होती रही जिसकी वजह से उपज कम हो[illegible] गई।

समय पर पानी न मिला इसका असर [illegible] खेती पर पड़ा। किसानों ने नहरों के भरोसे [illegible] कुएँ खोदने की आदत कम कर दी और गाँव[illegible] वाले नहरों के ही भरोसे रहने लगे। पैदावार [illegible] कम हुई लेकिन नहरों का टैक्स कम न हुआ[illegible] पैदावार कम होती गई और कर बढ़ते गये[illegible]

किसानों के पास धन न होने के कारण [illegible] खेती के महत्त्वपूर्ण कामों की व्यवस्था न हो [illegible] सकी और फल कम उपज रही।

खेतों के ज़्यादा बड़े भाग उन उच्च वर्ग-वालों के हाथ में चले गये जो स्वयं खेती नहीं

करते हैं। ऐसी ज़मीन पर किसान का मालिकाना हक़ूक न होने की वजह से किसान इस खेती में उत्साह नहीं दिखाते और न अच्छी देख-भाल ही करते हैं। इस कारण पैदावार कम हुई।

रेल मोटरों-द्वारा माल जल्दी जहाँ ज्यादा दाम लगे ऐसी मंडियों में माल भेजने से किसानों का गाड़ी-बैल का रोजगार जाता रहा और गाँव में बेकारी बढ़ी। गाँव की आमदनी घट गई और बीच के सौदागरों को लाभ हुआ, किसान यहाँ भी पिसा ही।

दस्तकारी के कम हो जाने से विदेशों में कच्चा माल जाने लगा और बनी हुई चीजें आने से किसानों को ज्यादा दाम देना पड़ा। किसान का माल सस्ते दामों पर गया और उसे ज़रूरत पूरी करने के लिए ज्यादा दाम देकर चीज मोल लेनी पड़ी। विनिमय दर का घटना-बढ़ना भारत के लाभ की [illegible] किसी दशा में भी नहीं रही।

भारत में रुपया ज़मीन में दाबकर रखने की रीति चल गई जिससे देशवासियों के हाथ से व्यापार निकल गया।

किसानों को मुक़दमेबाज़ी का चस्का लगा, अदालतों में किसानों की कमाई का बड़ा हिस्सा खप गया। किसानों की खेती आज-कल [illegible] पेशी के कारण चौपट हो गई।

किसानों में तमाखू, अफ़ीम, गाँजा, ताड़ी, शराब आदि का चस्का लग गया जिसकी वजह से धन, धर्म, स्वास्थ्य सभी चौपट हुआ।

पैदावार कम, आमदनी कम, लेकिन सामाजिक रीति-रिवाजों में कमी नहीं हुई। विवाह, श्राद्ध, वग़ैरह में कुल प्रतिष्ठा निभाने के जोश में किसानों ने भारी क़र्ज़दारी मोल ले ली।

सबसे भयानक और ख़तरनाक बात जो इस ज़माने में हुई वह थी किसानों का आत्म-विश्वास चला जाना और किसान लोग काहिली और जहालत को ही गले का हार समझने लगे। जिसका गहरा धक्का माली हालत पर पड़ा।

लेकिन सिर्फ़ हाथ पर हाथ रखकर भाग्य को दोष देने से ही भारत के गाँवों की आर्थिक अवस्था अच्छी न हो जावेगी, इसके लिए किसानों को भारी प्रयत्न करना होगा। आत्मविश्वास पूर्वक अपनी ग़रीबी के जामे को बदलने के लिए पाताल तोड़ मेहनत करनी होगी।

ग़रीबी को ख़ुशहाली में बदलने के लिए नीचे लिखे कुछ एक उपायों को काम में लाया जा सकता है। वस्तु-स्थिति के अनुसार इन उपायों में गाँव गाँव की भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्या होने के कारण इन बातों में परिवर्तन भी करने होंगे।

खाना और कपड़ा किसानों के ये दो ख़ास और अहम सवाल हैं। यदि इन दोनों मुख्य सवालों का हल किसान कर लेते हैं तो अन्य सहायक सवाल अपने आप ही हल हो जावेंगे।

खेती में सुधार के नीचे लिखे उपाय हैं—

(क) ज़मीनों की चकबन्दी की जावे।

(ख) ज़मीन में ताक़त लाने के लिए वैज्ञानिक और गोबर की खादों का उपयोग किया जावे। खेतों की भले प्रकार जुताई की जावे।

(ग) खेती के आलात नये प्रकार के गाँवों में बने हुए होने चाहिए।

(घ) जंगल लगाये जाने चाहिए और पशुओं के लिए चरागाह का इन्तज़ाम होना चाहिए।

(ङ) पशुओं की नस्ल सुधार के लिए अच्छी नस्ल के जानवर होने चाहिए।

(च) गाँव में उद्योग-धन्धों का प्रचलन होना चाहिए। तथा मृतप्राय दस्तकारियों को फिर से चेताना चाहिए।

(छ) घर की देवियों को सूत कातना और अनाज ख़ुद कूटना-पीसना चाहिए।

(ज) साहूकारों से क़र्ज़ा न लेकर गाँव में सहकारी बैंक खोले जाने चाहिए, जिसका प्रबन्ध गाँववालों को ही करना चाहिए।

(झ) मुक़द्दमेबाज़ी की रोक-थाम के लिए गाँव गाँव में जीवन-सुधार पंचायत स्थापित की जानी चाहिए और प्रायः सभी मामले पंचायतों-द्वारा तय होने चाहिए।

(ञ) ग्रामीण समाज में किफ़ायतसारी और उचित रूप से धन ख़र्च करने की आदत डालनी चाहिए।

(ट) रोज़ाना ज़िन्दगी के काम की चीज़ों के बनने का प्रबन्ध गाँव में ही होना चाहिए। गाँव की बनी चीज़ों की खपत गाँव में ही होनी चाहिए। गाँव का धन गाँव के बाहर जाने से रोकने का प्रबन्ध होना चाहिए।

(ठ) खेती के साथ सहायक खेती के धन्धे मसलन—पपीता केला नीबू के बाग़ लगाना, केले और शाक-सब्ज़ी की खेती करना, रेशम के कीड़े पालना, शहद निकालना आदि सहायक खेती के काम गाँव में प्रचारित किये जाने चाहिए।

(ड) माल की खपत के लिए नई-नई मंडियों की तलाश की जानी चाहिए।

(ढ) खेती के लिए पानी की ज़रूरत पूरी करने के लिए कुएँ, तालाब और बाँध आदि बनाने चाहिए।

(ण) सामाजिक रीति-रिवाजों के ख़र्च कम करने चाहिए।

यही कुछ एक उपाय हैं जिनके सहारे से किसान अपनी माली हालत को ठीक कर सकता है और जीवन की ज़रूरतों को पूरा कर सुखी हो सकता है। और अपने जीवन को सफल बना सकता है।

——

गुड़ का भविष्य

लेखक, श्रीयुत ए० एन० सप्रू, आई० सी० एस०, डाइरेक्टर आफ़ इण्डस्ट्रीज़ एण्ड कामर्स, यू० पी०

पिछले कई सालों से किसानों की भलाई की बातों को बहुत महत्त्व दिया जा रहा है। उनमें सरकार और राजनैतिक विचारों के लोग--दोनों बड़ी दिलचस्पी ले रहे हैं। संयुक्तप्रान्तीय सरकार की गुड़-सुधार-योजना जो कि चार वर्ष पहले कार्यान्वित हुई थी, इसका एक अच्छा उदाहरण है। यह सभी स्वीकार करते हैं कि हमारे घरेलू धंधों के निर्माण करने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रान्तीय उद्योग विभाग के कार्यों में घरेलू उद्योग धंधों की उन्नति और पुनर्निर्माण का विशेष स्थान है।

यह सर्वथा सत्य है कि उद्योग धन्धों की उन्नति के लिए केन्द्रीय और बड़े बड़े उद्योग केन्द्रों की स्थापना करना अत्यन्त आवश्यक है, फिर भी घरेलू धन्धों की उन्नति भी ज़ोरों से होनी चाहिए। संयुक्तप्रान्त के बहुत से धन्धों में गुड़ का व्यवसाय बहुत ही आवश्यक और व्यापक है। इसके सहारे गाँवों के अधिकांश लोगों की आमदनी का द्वार खुला रहता है। यह अनुमान किया जाता है कि क़रीब ५० लाख लोगों पर जिनमें स्त्रियाँ और बच्चे भी शामिल हैं गुड़ के धन्धे का असर पड़ता है। इस देश में गन्ने की जितनी काश्त होती है उसका ५० सैकड़ा गन्ना यू० पी० में पैदा होता है। हिन्दुस्तान में गन्ने की खेती में यह प्रान्त सबसे आगे है।

कुछ दिनों से प्रान्त में बहुत सी चीनी की मिलें खुल गई हैं फिर भी सारी उपज का केवल १८ प्रतिशत गुड़ चीनी बनाने के काम में आता है। खाँड़ बनाने में भी बहुत कम गन्ना काम में लाया जाता है और क़रीब १० प्रतिशत गन्ना बीज और चूसने के काम में आता है। क़रीब ६५ प्रतिशत गन्ना गुड़-निर्माण के काम में लाया जाता है।

गुड़ का व्यवसाय सूबे के प्रत्येक ज़िले में किया जाता है, यद्यपि कुछ ज़िलों में नहीं के बराबर होता है। सूबे भर में क़रीब ३ लाख कोल्हू काम कर रहे हैं। सूबे में गुड़ का सालाना औसत ४ या ५ करोड़ मन है। सारा गुड़ सूबे में ही खप जाता है, केवल एक करोड़ के क़रीब बाहर भेजा जाता है। गुड़ की बिक्री हर जगह होती है और यहाँ तक कि कमायूँ के पहाड़ी स्थानों में भी इसकी बिक्री होती है फिर भी मेरठ, मुज़फ़्फ़रनगर, सीतापुर और बरेली गुड़ के ख़ास बाज़ार हैं। यदि गुड़ का औसत मूल्य ४) मन रक्खा जाय तो कुल गुड़ का दाम क़रीब २० करोड़ के होगा। किसानों की ग़रीबी का ध्यान करते हुए यह रक़म एक काफ़ी बड़ी आमदनी है। यदि इसका उचित उपयोग हो तो किसानों को बहुत बड़ा लाभ होगा लेकिन इसके भाव गिर जाने पर किसानों की बहुत बड़ी हानि भी होगी।

गुड़-निर्माण-योजना का ध्येय यह है कि गुड़-निर्माण इस ढंग से हो कि किसानों को अधिक से अधिक धन मिले। यदि यह सम्भव न हो सका तो यह योजना असफल ही कही जायेगी। अब तक जो काम हुआ है वह काफ़ी आशाजनक है। किसानों को ही इस प्रकार की शिक्षा दी जा रही है कि वे इस योजना से अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। बहुत-से किसानों ने यह प्रार्थना की है कि उनके गाँवों को भी इस योजना में सम्मिलित कर लिया जाय। इस योजना को सफल बनाने में विभाग ने जो प्रचार का का[म] किया है वह आश्चर्यजनक रहा है। किसा[नों] के सहयोग और समझदारी का प्रत्यक्ष उदा[-] हरण उस समय मिला जब उन्होंने गत व[र्ष] विभाग की राय-द्वारा गन्ना के बहुतायत हो[ने] की कठिनाई का सामना किया।

जिन लोगों को गुड़-निर्माण का ले[श] मात्र भी ज्ञान है वे इस बात से पूर्ण सहम[त] हैं कि गुड़-निर्माण के वैज्ञानिक तरीक़ों [का] प्रबन्ध होना आवश्यक है। सदियों से गु[ड़] बनाने का वही पुराना तरीक़ा चला आ र[हा] है। किसानों ने गुड़-निर्माण में सुधार [पर] ध्यान ही नहीं दिया। जो कु[छ] थोड़ा रुपया उन्हें गुड़ से मिल जाता है [उसे] पाकर उन्होंने कभी यह सोचा ही नहीं [कि] वैज्ञानिक तरीक़ों का उपयोग न करने [से] उनको कितनी हानि होती है।

उन पुराने तरीक़ों को दूर करके जि[न] नये तरीक़ों का प्रचार किया जा रहा है [वे] बिलकुल कठिन नहीं हैं और आसानी से पहचाने और समझे जा सकते हैं। इन न[ये] तरीक़ों में वैज्ञानिक ढंग के कोल्हू, भट्टि[याँ] और उचित ढंग की बिक्री का प्रबन्ध क[रना] विशेष हैं।

भविष्य की उन्नति का विचार करने [के] पूर्व पहले हो चुके काम का एक दिग्दर्शन क[र] लेना आवश्यक है। गत चार वर्षों में क़रीब ७,००० गाँवों में यह योजना प्रचलित [की] गई। विभाग ने क़रीब १०,००० सुध[री] हुई भट्टियों का निर्माण किया है। क़[रीब] पाँच हज़ार सुधरे हुए कोल्हू बाँटे गये औ[र] इनके ख़रीदने के लिए क़रीब ४ लाख [की] तक़ावी दी गई। रस को साफ़ करनेवा[ली] मशीन का प्रचार करने से भी काफ़ी ला[भ] हुआ। तरह-तरह से गुड़ की ख़रीद औ[र] बिक्री का भी प्रबन्ध किया गया है। [इन] कारणों से गुड़ की नस्ल में काफ़ी उन्नति हु[ई] है।

इस योजना की सफलता आनरेरी कार्य-कर्त्ताओं पर भी बहुत कुछ निर्भर है क्योंकि वे लोग इसके सिद्धान्तों को अच्छी तरह समझते हैं और उसका प्रचार भी कर सकते हैं। बहुत-से आनरेरी कार्यकर्त्ताओं को चुन लिया गया है और उनका कार्य प्रशंसनीय रहा है।

चार वर्ष काम करने के बाद हम यह समझ पाये हैं कि हमने क्या किया है और हमें भविष्य में क्या करना है? हमें अपने भावी कार्य-क्रम अवश्य बना लेने चाहिए। यद्यपि उस कार्य-क्रम का अक्षरशः पालन करना कठिन है। हमें विशद योजना भी नहीं बनानी है बल्कि यह अच्छी तरह समझ लेना है कि हमें किन-किन समस्याओं का हल शीघ्र करना है और हम उन्हें किस ढंग से करेंगे।

हमारे दो ध्येय होने चाहिए। प्रथम तो यह कि जिन गाँवों में यह योजना काम कर रही है उनमें और तत्परता से काम किया जाये और दूसरे यह कि उनके पासवाले नये स्थानों में योजना की नींव डाली जाये। इसका कारण यह है कि योजनावाले गाँवों में भी अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है। अभी हम सिर्फ़ यही दावा कर सकते हैं कि हमने सफलतापूर्वक कार्य आरम्भ करके ऐसी दृढ़ नींव डाली है जिसपर भव्य भवन निर्मित हो सकता है। सुधरी हुई भट्ठियों की संख्या पर्य्याप्त नहीं है। इसके अलावा सुधरे हुए कड़ाहों के विषय में तो कुछ भी नहीं किया गया है। रस साफ़ करने का प्रचार भी अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है और सुधरे हुए अच्छे कोल्हुओं की संख्या अभी बहुत कम है। गुड़ की बिक्री का प्रबन्ध करना बहुत ही आवश्यक है। नये क्षेत्रों का भी विचार निम्नलिखित ढंग से किया जायेगा।

नये गाँवों के चुनाव करने में बड़ी सतर्कता रखनी चाहिए। ऐसे गाँव चुने जायँ जहाँ पर देख-रेख का काम स्टाफ़ के लोग आसानी से कर सकें। इस प्रकार नये गाँव अधिकतर उन गाँवों के पड़ोस में हों जहाँ पहले से ही यह योजना कार्यान्वित होती हो।

सुधरी हुई भट्ठियों का प्रचार भी अधिकतर होना चाहिए। वर्तमान समय में सुधरी हुई भट्ठियाँ केवल १०,००० हैं जहाँ कि उनकी संख्या ३ लाख होनी चाहिए। यह संख्या बहुत असन्तोष-जनक है।

रस को साफ़ करने के लिए सुधरे हुए तरीक़ों के आविष्कार और उनके प्रचार करने पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। तेज़ कार्बन बनाने के लिए और किसानों-द्वारा उसका अधिक से अधिक प्रयोग करने के विशेष प्रयत्न किये जायँगे। इस विषय में प्रयत्न आरम्भ हो चुके हैं और यदि हम निरन्तर प्रयत्न करें और हमारे प्रयोग बराबर जारी रहें तो सम्भव है शीघ्र ही हमारे पास ऐसी छोटी-छोटी फ़ैक्टरियाँ हो जायँ जिनके द्वारा किसानों को सस्ते दामों में तेज़ कार्बन मिल सके। यह सत्य है कि तेज़ कार्बन के प्रयोग से किसानों को गुड़ का अधिक दाम मिल सकेगा।

इसके बाद दूसरी समस्या है किसानों को अधिक से अधिक सुधरे हुए कोल्हुओं को देना। यह देखकर कि कुल ३ लाख कोल्हू हैं, जिनमें क़रीब १०,००० सुधरे हुए कोल्हू हैं कोई सन्तोष नहीं होता है। हमारा ध्येय यह होना चाहिए कि एक नियमित समय में इन सब कोल्हुओं के स्थान पर सुधरे हुए कोल्हू ही काम करें।

इन कोल्हुओं के स्थान पर सुधरे हुए कोल्हुओं के लिए बहुत काफ़ी धन की आवश्यकता होगी। उचित धन हमें मिलेगा या नहीं, यह कहना असम्भव है। जो कुछ रुपया मिले उसका उपयोग तो करना ही चाहिए। कोल्हू ख़रीदने के लिए तक़ावी के रूप में देने के लिए एक बड़ी रक़म की ज़रूरत है। सुधरे हुए कोल्हू ख़रीदने के लिए रुपया इकट्ठा करना किसानों के लिए कठिन काम है। इस काम में उनकी मदद करनी पड़ेगी और वह मदद तक़ावी के द्वारा हो सकती है। कोल्हू और कड़ाह ख़रीदने के लिए गत तीन वर्षों में क़रीब ४ लाख रुपया तक़ावी दी गई। इसके अलावा कोआपरेटिव बैंकों से भी एक लाख रुपया मिला। इस आवश्यकता का ध्यान रखते हुए और इससे होनेवाले लाभ को देखते हुए आशा की जाती है कि वह आर्थिक कठिनाई शीघ्र ही दूर हो जायगी।

एक समस्या जो उठ खड़ी हुई है और दिन-प्रतिदिन बढ़ती जायगी वह है कोल्हू के बनाने और उसके मरम्मत करने की दूकानों का खोलना, कोल्हू को इस ढंग से बनाना कि वे सस्ते और मज़बूत भी हों। मरम्मत करने की बहुत-सी दूकानें हैं लेकिन उनका काम ठीक नहीं होता है। कोल्हू का निर्माण भी सन्तोषजनक नहीं होता है। सरकार कोल्हू बनाने का एकाधिकार नहीं ले सकती। इसके लिए सरकार कुछ दूकानें खोल सकती है जो कि केवल नमूने का काम दे सकती हैं। यह हो सकता है कि इन दूकानों का ठीक प्रबन्ध करने और उनका किसानों-द्वारा उचित लाभ उठाने के ध्यान से उनपर कुछ अधिकार रखा जाये। वे अधिकार क्या होंगे उनका वर्णन करना उचित नहीं है फिर भी व्यक्तिगत अनुचित लाभों के प्रतिकूल कुछ अधिकार होने आवश्यक हैं, यद्यपि प्राइवेट दूकानों के हक़ों की पूर्ण रक्षा की जायगी।

वर्तमान कार्य को एकत्रित करना और नये क्षेत्रों में प्रचार करने के लिए स्टाफ को अधिक मज़बूत और शिक्षित बनाना पड़ेगा। आनरेरी कार्यकर्त्ताओं की ट्रेनिंग भी आवश्यक है। स्टाफ के लोग चाहे कितने ही ट्रेंड और बहुसंख्यक हों फिर भी आनरेरी कार्य-

कर्त्ताओं की सेवायें श्लाघ्य हैं। हमें चाहिए कि उत्साही, चतुर और योग्य किसानों को चुनें और उन्हें अच्छी तरह की ट्रेनिंग दें। इसके बाद उनके लिए रिफ़्रेशर कोर्स का प्रबन्ध किया जाय और उनको हर तरह से उत्साहित करना चाहिए।

अन्ततः इस व्यवसाय की मार्केटिंग का भी उचित प्रबन्ध करना होगा। यह समस्या भी हल होनी चाहिए।

गुड़ का व्यवसाय इतना अच्छा है कि इसका प्रबन्ध कोआपरेटिव आधार पर किया जा सकता है। इस तरफ़ जो उन्नति की गई है वह बहुत ही कम है। यदि इसकी उन्नति कम हुई है तो इसका कारण गुड़ बनाने और उसकी बिक्री के प्रबन्ध के दोष नहीं हैं। यदि कोआपरेटिव सोसाइटियाँ बनाई जायँ और वे सुचारु रूप से काम करें तो किसानों को गुड़ बनाने और बेचने दोनों ढंगों में इससे काफ़ी मदद मिलेगी। अतः इस व्यवसाय को कोआपरेटिव ढंग पर चलाने के लिए अधिक और दृढ़ परिश्रम की आवश्यकता है।

हमें आशा है कि इस व्यवसाय को कोआपरेटिव ढंग पर चलाने में हम प्रतिवर्ष आगे बढ़ेंगे। कोआपरेटिव सोसाइटियों की सबसे बड़ी मदद यह है कि वे उस कठिनाई को दूर कर सकती हैं जो गुड़ ख़रीदने में होती है। उनके द्वारा कोल्हू ख़रीदे जा सकते हैं, कोल्हू की मरम्मत करना, रस को साफ़ करनेवाले पदार्थ तथा गुड़ का स्टाक करना यह सब काम इन समितियों-द्वारा हो सकता है।

एक प्रान्तीय कोआपरेटिव बैंक की स्थापना भी होनी चाहिए। इस बैंक को काफ़ी सरकारी मदद भी मिलनी चाहिए। ये बैंक डिस्ट्रिक्ट की संस्थाओंको रुपया देंगे। सरकारी मदद के कारण लोगों का विश्वास बढ़ेगा और इससे बैंक की स्थायी सम्पत्ति में काफ़ी बढ़ती होगी। ये सहयोग-समितियाँ पहले आर्थिक ढंग पर आरम्भ होकर बाद में उस शासन का भार भी ले सकती हैं जो इस समय विभाग कर रहा है बशर्ते कि वे योग्य साबित हो जायँ। वह केन्द्रीय शासन जो इस समय है धीरे-धीरे विभाजित हो जायगा और विभाग केवल एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र का सहयोग कराने और उसे समय-समय पर उचित राय और मदद देने का काम करेगा।

केवल रुपया ही नहीं बल्कि और भी बहुत-सी कठिनाइयाँ हैं जिनके कारण हम कोआपरेटिव-प्रसार की योजना नहीं बनाते हैं लेकिन फिर भी मैं चाहता हूँ कि धीरे-धीरे सतर्कता के साथ यह योजना काम में लाई जा सकती है और ऐसा किया जायेगा।

गुड़ की बिक्री की भी बहुत-सी समस्यायें हैं जिनपर ध्यान देना आवश्यक है। कानपुर, लखनऊ और बनारस में अरहट की दूकानों का प्रयोग हो रहा है। इन दूकानों में उन किसानों को शरण मिलती है जो साधारण अरहटियों के यहाँ जाकर तरह-तरह की कठिनाइयाँ और हानियाँ उठाते हैं। हर जगह अरहट की दूकानें बननी चाहिए और इस प्रकार थोड़े ही समय में हर एक मंडी में एक अरहट की दूकान खोली जायेगी। पहले इनके लिए काफ़ी रक़म की ज़रूरत होगी लेकिन थोड़े ही दिनों में वे इतनी सम्पत्ति पैदा कर लेंगी कि अपना ख़र्च स्वयं सँभाल लेंगी।

सबसे आवश्यक प्रश्न है गुड़ के लिए नये बाज़ारों का प्रबन्ध और उसे बाहर भेजने के सुलभ साधनों का उचित प्रबन्ध। इस सूबे के बाहर गुड़ के प्रमुख बाज़ार पंजाब, राजपूताना, मध्य-प्रान्त, सिन्ध, बंगाल और आसाम हैं। यह सम्भव है कि थोड़े-से प्रबन्ध से इन स्थानों में काफ़ी मात्रा में गुड़ भेजा जा सकता है। गुड़ की बिक्री का प्रचार उसी ढंग पर किया जा सकता है जिस ढंग पर इंडियन टी मार्केट इक्सपैंशन बोर्ड ने इंडियन टी का प्रचार किया है। इससे केवल बाहर गुड़ भेजने पर ही असर नहीं पड़ेगा बल्कि सूबे के विभिन्न भागों में भी इसके आदान-प्रदान में उन्नति होगी। बाहर भेजने और सूबे के अन्दर गुड़ का व्यापार आसानी से होने के लिए तरह-तरह के गुड़ों के भाव का जानना भी उत्साहवर्धक होगा।

गुड़ मार्केटिंग का दूसरा आवश्यक प्रश्न है मिलों-द्वारा गुड़ का ख़रीदना। आजकल मिलें गुड़ बहुत ही कम भाव पर ख़रीदती हैं। मिलों-द्वारा भी गुड़ की काफ़ी खपत होती है। यदि कम से कम दाम निश्चित कर दिया जाय जिससे कम पर मिलें गुड़ न ख़रीद सकें तो इससे काफ़ी लाभ हो जाय। इस विचार से गुड़ मार्केटिंग रिव्यू का प्रकाशन और कामर्शियल ट्रेवलर्स की तैनाती बहुत ही आवश्यक कार्य है। मेरी राय में ये बहुत ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

इस छोटे से लेख में इतने बड़े विषय का वर्णन करना पड़ा है अतः प्रत्येक विषय का सूक्ष्म वर्णन करना सम्भव न हो सका। फिर भी इस लेख से हमें यह मालूम हो गया कि हमें भविष्य में क्या करना है और हमने इस समय तक किसानों और देश की सेवा कहाँ तक की है इसका भी एक विहंगम पर्यवेक्षण हो गया है।

[गुड़ मार्केटिंग रिव्यू से अनुवादित]

मक्का

कृषि-विभाग यू० पी० के बुलेटिन नं० ७५ से संकलित

मक्का का पौधा भारतवर्ष में पुर्तगाल के निवासियों-द्वारा इस देश में अठारहवीं शताब्दी में लाया गया, अब इसकी खेती भारतवर्ष के लगभग हर हिस्से में की जाती है। इसका दाना नाज के तौर पर इस्तेमाल होता है, और हरे भुट्टे भूनने के बाद बहुत स्वादिष्ठ होते हैं। इसका दाना पशुओं और घोड़ों को मटर और चने के साथ आधो-आध मिलाकर दिया जा सकता है और इसके इस्तेमाल से पशु मोटे हो जाते हैं। इसके आटे की रोटी आसानी से नहीं बन सकती इसलिए कि इसमें गिलोटीन काफ़ी मात्रा में नहीं होती। मक्का की हरी कुट्टी जानवरों के लिए बहुत अच्छे चारे का काम देती है। मगर इसके सूखे डण्ठल जानवरों के इस्तेमाल में चारे के रूप में नहीं आ सकते। दाना निकले हुए भुट्टों में पोटाशियम कार्बोनेट होता है इसलिए इनको कम्पोस्ट की खाद बनाने में इस्तेमाल करना चाहिए।

खेती का रक़बा--सन् १९३४-३५ ई० में मकई का रक़बा ब्रिटिश इंडिया में ६१,७२,००० एकड़ था और हिन्दुस्तानी राज्यों में ३,१३,००० एकड़ था। बंगाल में मक्का का रक़बा सबसे ज़्यादा था और इसके बाद हमारे सूबे का नम्बर था। यह फ़सल अपने आपको विभिन्न ज़मीनों और जलवायु के अनुसार बना लेती है, इसलिए इस सूबे के हर हिस्से में बोई जाती है। यह साधारण रीति से ख़रीफ़ की और फ़सलों के साथ वर्षा में आमतौर से बोई जाती है। लेकिन इसको रबी में भी सिंचाई के साथ बोया जा सकता है।

मुनासिब ज़मीन--इस फ़सल में अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए उपजाऊ ज़मीन की ज़रूरत है जिसमें कि पानी की निकासी का अच्छा प्रबन्ध हो और जो कुछ ऊँचाई पर हो कि जिससे उसमें पानी न रुक सके।

खाद--मक्का की खेती के लिए खाद की बहुत ज़रूरत होती है। अगर खेत में आलू की फ़सल लेने के बाद मक्का बोया जाय तो खाद की ज़रूरत नहीं पड़ती है इसलिए कि आलू के खेतों में इतनी ज़्यादा खाद पड़ती है कि उसका प्रभाव आलू खुद जाने के बाद भी बाक़ी रहता है और मक्का के लिए अधिक खाद की ज़रूरत नहीं पड़ती। कुछ फ़सलों के हेर-फेर ऐसे हैं जिनपर काम करने से मक्का में खाद की ज़रूरत नहीं पड़ती जैसे अगर खेत में पहली ख़रीफ़ में ग्वार बोई जाय और उसके बाद रबी में चना या मटर बोया जाय और इनको पशुओं को खेत ही में चारे के तौर पर खिला दिया जाय तो आनेवाली मक्का की फ़सल के लिए खाद देने की ज़रूरत नहीं है, दूसरी हालतों में खाद की ज़रूरत पड़ेगी। ८० से १०० मन गोबर की खाद, ४० से ५० मन भेड़ की मेंगनी की खाद, १०० मन घूरे की खाद, १० मन अण्डी की खली प्रतिएकड़ इस्तेमाल की जाय।

जोताई--४ जोताइयाँ और एक बार ढेले फोड़ने के लिए पाटा चलाना ज़रूरी है। कानपुर एक्सपेरीमेन्टल-स्टेशन के पाँच वर्ष के नतीजे से मालूम होता है कि इस फ़सल के लिए १० इंच गहरी जोताई बहुत उपयोगी है और ऐसा करने से ४० मन तक फ़ी एकड़ पैदावार हो जाती है।

इतनी गहरी और अच्छी जोताई करने के लिए दो गहरी जोताई करनेवाले हलों की ज़रूरत पड़ती है जो कि एक ही कूँड़ में एक दूसरे के पीछे चलाये जाते हैं। इस जोताई के बाद देशी हल की दो जोताइयाँ और एक बार पाटा चलाना काफ़ी है। अगर गहरी जोताई करनेवाले हल न मिल सकें तो फावड़ों से १० इंच गोड़ाई कर दी जाय जब कि यह काम कम मज़दूरी पर हो सके।

क़िस्में--रंग के लिहाज़ से मक्का को सफ़ेद हल्की पीली, पीली, हल्की लाल, लाल, धब्बेदार और काली क़िस्मों में बाँटा जा सकता है। धब्बेदार और काली क़िस्में बहुत कम पाई जाती हैं। हल्के पीले रंग का मक्का जो कि जौनपुर, मेरठ और मुज़फ़्फ़रनगर की सिमतों में बहुत साधारण है, ७ से १० फ़ीट ऊँचा होता है इसके भुट्टे २½ फ़ीट से ३ फ़ीट की ऊंचाई पर लगते हैं और ८० दिन से ९० दिन में तैयार होते हैं। गहरे पीले रंग का मक्का कानपुर की तरफ़ बोया जाता है, इसके पौधे ४ से ७ फ़ीट तक ऊँचे होते हैं, इसके भुट्टे ज़मीन से १ से डेढ़ फ़ीट की ऊँचाई पर लगते हैं और ७० से ८० दिन में दाना तैयार हो जाता है। एकोनौमिक बोटैनिस्ट साहब ने मक्का की कुछ नई क़िस्में निकाली हैं जो कि देशी क़िस्मों के मुक़ाबिले में ज़्यादा अच्छी हैं। इनके नाम नम्बर १०, नम्बर १३, नम्बर १९ और नम्बर ४१ हैं। अच्छी काश्त करने पर नम्बर १० की पैदावार २५ से ३५ मन फ़ी एकड़, नम्बर १३ की पैदावार २२ से ३० मन, नम्बर १९ की पैदावार २५ से ३० मन फ़ी एकड़ और नम्बर ४१ की पैदावार २५ से ४० मन फ़ी एकड़ तक हो जाती है।

बीज और बोआई--बोआई के लिए अच्छा बीज इस्तेमाल करना चाहिए जो कि पिछले वर्ष के भुट्टों से निकाला गया हो, बीज को हिफ़ाज़त से रखने के लिए ऐसे बर्तन काम में लाये जायँ जिनके अन्दर वायु न जा सके। उन बर्तनों के अन्दर नेफ्थलीन की गोलियाँ डाल देनी चाहिए, जब भुट्टों से दाने निकाले जायँ तो बोआई के लिए बीचवाले हिस्से का बीज रक्खा जाय। और उनको हाथों से अलग करना चाहिए, इसलिए कि लकड़ी से पीटने या मशीन से अलग करने से बीज को हानि पहुँचती है।

बोने का वक्त और तरीक़ा--जब यह फ़सल दाने के लिए बोई जाती है तो इसकी बोआई वर्षा शुरू होने पर करते हैं, लेकिन जब इसे हरे भुट्टों के लिए बोना हो तो मई के अन्त या इससे भी पहले पलेवा करके बोआई की जाती है। जल्द बोई हुई फ़सल देर में बोई हुई फ़सल के मुक़ाबिले में ज़्यादा पैदावार देती है, और जल्द बोई हुई फ़सल के हरे भुट्टे भी बाज़ार में अच्छे भाव पर बिकते हैं, इसके बोने के तीन तरीक़े हैं यानी--छिटकवाँ बोआई, कूँड़ के पीछे की बोआई और खुरपी-द्वारा क़तारों में बोआई। कानपुर एक्सपेरीमेन्टल स्टेशन कानपुर पर जो तजुर्बे किये गये हैं, उनसे यह मालूम होता है कि क़तारों के बीच १½ फ़ीट से ३ फ़ीट की दूरी और पौधों के बीच १ फ़ीट की दूरी रखने से दाने की पैदावार बढ़ जाती है। ऊपर लिखी हुई दूरी का घटाना-बढ़ाना पैदावार पर असर डालता है। एक एकड़ में ८ सेर से १४ सेर तक बीज पड़ जाता है अगर बीज छोटा है तो कम पड़ेगा, अगर बड़ा है तो ज़्यादा।

आबपाशी--अगर फ़सल पलेवा करके जल्द बोई जाय तो हर ८-१० दिन के बाद आबपाशी की ज़रूरत पड़ेगी परन्तु वर्षा शुरू होने पर सिंचाई की ज़रूरत नहीं रहती।

छँटाई-निकाई और गोड़ाई—अगर क़तारों में बोआई की जाय तो जब पौधे ६ इंच के हो जायँ, तो उनकी छँटाई कर दी जाय और केवल तन्दुरुस्त पौधों को एक-एक फ़ीट की दूरी पर रहने दिया जाय। उखाड़े हुए पौधों को जानवरों को खिला देना चाहिए, शुरू में एक दफ़ा खुरपी से निकाई कर दी जाय, उसके बाद एक या दो बार बैलों-द्वारा (प्लेन्ट जूनियर कल्टीवेटर) से निकाई-गोड़ाई की जाय, ताकि फ़सल में घास न उगने पाये और ज़मीन भुरभुरी रहे, जिससे खेत में नमी क़ायम रहे।

मिट्टी चढ़ाना—पौधों पर मिट्टी चढ़ाना बहुत ज़रूरी है इससे फ़सल गिरने से बची रहती है। २-४ फ़ीट ऊँचा हो जाने के बाद मिट्टी चढ़ानी चाहिए।

देख-भाल—जब फ़सल में फूल आना शुरू हो, तो उसकी देख-भाल ज़रूरी हो जाती है इसलिए कि ऐसी हालत में तोते, कौवे और अन्य चिड़ियाँ हानि पहुँचाती हैं और इसके अलावा गीदड़ों, साहियों और जंगली सूअरों से भी हानि पहुँचती है। भुट्टे चुराने के लिए आदमी कोशिश करते हैं।

कटाई—दाने की फ़सल में कटाई उस वक़्त की जाय, जब कि पौधे सूखते हुए दिखाई देने लगें और दाना अच्छी तरह से पक जाय। अगर हरे भुट्टे लेने हों तो भुट्टों को दुधिया हालत में काट लेना चाहिए।

पैदावार—मक्का के दानों की पैदावार मामूली खेती की रीति से १० से १५ मन फ़ी एकड़ होती है लेकिन अच्छी खेती करने पर २५ से ३० मन दाना फ़ी एकड़ मिल सकता है, जैसा कि ऊपर लिखा गया है कि मक्का के डंठलों को आमतौर से चारे के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाता है। इसलिए कि उसमें ताक़त के पदार्थ बहुत कम होते हैं। अगर इसको चारे के लिए बोया जाय और हरी हालत में काट लिया जाय तो यह पशुओं के लिए अच्छा चारा हो जाता है और मामूली रीति पर खेती करने से २०० मन चारा फ़ी एकड़ मिल जाता है और खेती की अच्छी रीति से २५० मन से ३०० मन तक चारा मिल सकता है।

आलू को कोल्ड स्टोरेज के द्वारा सुरक्षित रखना

लेखक, श्री पी० के० डे० प्लान्ट पैथोलोजिस्ट टू गवर्नमेंट यू० पी०, कानपुर

हमारे सूबे में गोदाम में आलू सड़ जाने के आमतौर से तीन कारण होते हैं।

१—आलू की सूँड़ी से हानि।

२—वेटराट यानी तर गलने की बीमारी।

३—ड्राईराट यानी खुश्क गलने की बीमारी।

नं० १—आलू की सूँड़ी जो कि बढ़ने के बाद तितली का रूप अख़्तियार कर लेती है, आलू को बहुत हानि पहुँचाती है। जब आलू खेत के अन्दर दरारें हो जाने की वजह से दिखलाई देने लगते हैं यह तितली आमतौर से उन आलुओं की आँखों पर बैठकर अंडे देती है। यह कीड़ा जनवरी और फ़रवरी के महीनों में दिखाई नहीं देता, लेकिन गर्मी का मौसम शुरू होते ही आना शुरू हो जाता है और जब फ़सल तैयार होने के क़रीब होती है तो खेतों में अधिकता से पाया जाता है। इस कीड़े की सूँड़ी एक सप्ताह के अन्दर अंडे से बाहर निकल आती है आलू के अन्दर पेंचदार पेंच अर्थात् टेढ़ी-मेढ़ी घुसती चली जाती है। इस प्रकार से न केवल खेत में उगते हुए आलुओं को हानि पहुँचती है बल्कि खेत के बाहर ढेर लगे हुए आलुओं को भी बहुत हानि पहुँचती है, लगभग ३ सप्ताह तक सूँड़ी के रूप में रहने के बाद पूपा की शक्ल अख़्तियार कर लेती है १४ दिन के बाद पूपा के अन्दर से तितली निकल आती है। ये तितलियाँ आपस में जोड़ खाने के बाद आलू पर अंडे देकर इस बीमारी को आलू की फ़सल में क़ायम रखती हैं।

मज़बूत और तन्दुरुस्त आलुओं में जो कि अच्छी तरह पक गये हों, तितली का बनाया हुआ सूराख़ बहुत जल्द भर जाता है और आलू को अधिक हानि नहीं पहुँच पाती, लेकिन अगर आलू छोटे और कमज़ोर हैं तो इस सूँड़ी के सूराख़ करने की वजह से आलू गलना शुरू हो जाता है और बहुत जल्द नष्ट हो जाता है, क़रीब के आलू भी इसका पानी लग जाने से गलने लगते हैं और बहुत जल्द तमाम ढेर ख़त्म हो जाता है। आलू के इस प्रकार गलने को वेटराट कहते हैं और यह मई तथा जून में जबकि टेम्परेचर ज़्यादा होता है आलू में असर करती है।

आलू की दूसरी बीमारी जिसको ड्राईराट कहते हैं वेटराट से भी ज़्यादा भयंकर है। इसका फ़ङ्गस लगभग हर ज़मीन में पाया जाता है। इस बीमारी में आलू सख़्त और खुश्क हो जाता है और इसकी सतह पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं और दबे हुए भागों में सफ़ेदी प्रकट होती है जिसकी वजह से आमलोग इस बीमारी को दहिया के नाम से पुकारते हैं। यह बीमारी आमतौर से अगस्त और सितम्बर के महीनों में आलू में पाई जाती है, इन बीमारियों से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय काम में लाने चाहिए।

१—तितली के हमले से बचने के लिए आलुओं को जल्द बोया जाय ताकि वे जनवरी के अन्त तक खोद लिये जायँ और गोदाम में उनपर बालू की तह बिछा दी जाय।

२—कोल्ड स्टोरेज में रखने से आलू बीमारी से सुरक्षित रह सकता है।

गवर्नमेंट एग्रिकलचर स्टेट कानपुर के कोल्ड स्टोरेज में आलू ५ मास तक यानी अप्रैल के मध्य से सितम्बर के अन्त तक सुरक्षित रक्खे जाते हैं और कोल्ड स्टोरेज का टेम्परेचर ५० डिग्री फार्नहाइट रक्खा जाता है। इस प्रकार से रखने पर आलू की जमनेवाली शक्ति कम नहीं होती।

बुलेटिन "आलू का कोल्ड स्टोरेज" से उद्धृत।

संयुक्त-प्रांत में मिल्क सप्लाई यूनियन

लेखक, श्री० एन० के० भार्गव, बी० एस० सी०, आई० डी० डी०, इण्डस्ट्रियल
इन्स्पेक्टर, कोआपरेटिव डिपार्टमेंट, संयुक्त-प्रान्त

दूध एक ऐसी वस्तु है जिसकी खपत सारे संसार में होती है पर विशेष-कर हिन्दुस्तान में लोगों के खाने-पीने में किसी न किसी रूप में यह बहुत आवश्यक वस्तु समझी जाती है। लेकिन इस देश में अच्छे क़िस्म के खालिस दूध की दशा बहुत खराब है। दूध देनेवाले जानवरों की खराब खुराक, लापरवाह देख-भाल और उनके वैज्ञानिक पालन-पोषण के अभाव के कारण जो अवनति हुई उससे न केवल दूध की पौष्टिक शक्ति में ही कमी हुई है बल्कि जनता के स्वास्थ्य के लिए भी यह बहुत खतरनाक साबित हुआ है और विशेष-कर बच्चों की मृत्यु इस कारण होती है कि दूध जहाँ दुहा जाता है वह जगह बहुत गन्दी और असन्तोषजनक होती है और फिर उसमें मिलावट भी की जाती है। पिछले तीस-चालीस वर्षों से जनता का ध्यान दूध की सप्लाई में उन्नति करने की ओर अच्छी तरह से आकर्षित हुआ है पर आधुनिक सामग्री और सफ़ाई का प्रयोग करते हुए दूध की पैदावार और उसके वितरण की कोई सन्तोषजनक योजना नहीं निकाली गई, जिससे कि दूध के महँगे होते हुए भी उसे सब लोग खरीद सकें।

शहरों में दूध की पैदावार—हमें उन शहरों पर विचार करना है जहाँ घनी आबादी में उचित और अच्छे क़िस्म के दूध के मिलने में विशेष कठिनाई होती है। आमतौर पर दूध का ७५ प्रतिशत भाग शहर में ५ मील के इर्द-गिर्द से आता है और १० प्रतिशत ऐसी जगहों से आता है जो म्युनिसिपल रक़बों से ५ मील से अधिक दूरी पर होती हैं इसलिए दूध देनेवाले जानवर काफ़ी तादाद में शहरों में रक्खे जाते हैं। ये जानवर बाड़े में रक्खे जाते हैं बाहर नहीं निकाले जाते हैं और या तो थोड़ा चराये जाते हैं या बिलकुल नहीं, और नतीजा यह होता है कि वे विशेष रूप में दूध कम देते हैं और दूध के स्टाक में भी कमी होती है। अतः शहरों में यह एक आम बात है कि लोग जानवरों को उस समय खरीदते हैं जब कि वे खूब दूध देते हैं और जब वे दूध कम देने लगते हैं तो उन्हें बेच डालते हैं, जिससे कि दूध के उत्पादन में बड़ा असर होता है। दूसरे यह कि शहर में दूध का उत्पादन करना एक बहुत खर्च की बात है क्योंकि किराया ज्यादा देना पड़ता है और जानवरों के खिलाने की चीजें बहुत महँगी मिलती हैं जो देहातों से मँगानी पड़ती हैं। शहर के ग्वाले इस महँगाई को इस तौर पर पूरी करते हैं कि वे दूध में मिलावट कर देते हैं जो जनता के स्वास्थ्य के लिए बड़ा हानिकारक है। इन सब बातों पर विचार करते हुए शहर में दूध की पैदावार करना केवल स्वास्थ्य ही की दृष्टि से नहीं बल्कि खर्च के विचार से भी ठीक नहीं है। इसलिए हमें दूध की सप्लाई में उन्नति का विचार केवल शहर के बाहर ही करना चाहिए।

दूध की पैदावार के लिए देहातों में उचित स्थान—देहातों में दूध की पैदावार हर तरह से बढ़ाना बहुत ज़रूरी है। यह सबसे अच्छा होगा कि यदि दूध की पैदावार "मिश्रित खेती" (मिक्सड फ़ार्मिंग) का एक भाग बना दिया जाय। जिससे कि किसान अपने और अनाजों की पैदावार के साथ-साथ दूध की पैदावार भी करेगा और इस नये नियम से वह अधिक से अधिक लाभ उठा सकता है। हल या गाड़ी में वह बैलों को जोत सकता है। मिट्टी की उपज गोबर की खाद से बढ़ाई जा सकती है और इससे एक एकड़ ज़मीन में अधिक पैदावार होगी। जानवरों के लिए दलहन फ़सल (चारे की खेती) जैसे बरसीम, जो दूध देने-वाले जानवरों के लिए एक बहुत अच्छा भोजन है, मिट्टी की उपज को और भी अधिक बढ़ायेगी। गेहूँ, जौ, दाल और दूसरे अनाजों का भूसा बिना खर्च के ही जानवरों को खिलाया जा सकता है। इस प्रकार दूध देनेवाले जानवरों को रखने में कम खर्च होगा और इस मिश्रित खेती से न केवल दूध की उत्पत्ति ही सस्ती हो जायगी बल्कि किसान को भी इससे बड़ा लाभ होगा। इसमें सन्देह नहीं कि देहातों से शहरों में दूध शीघ्र बेचने के लिए पहुँचाने में कठिनाई अवश्य होगी पर मिलजुल कर उद्योग करने से यह कठिनाई दूर हो सकती है।

सहकारिता के आधार पर मिलकर काम करना—देहातों में बड़े पैमाने पर और कम खर्च में दूध का उत्पादन करना मुमकिन नहीं है क्योंकि किसानों में व्यक्तिगत उद्योग करने की नादानी और लापरवाही है और देश की हालत भी गिरी हुई है। जानवरों के लिए चारा और दूसरी वस्तुओं को थोक भाव पर खरीदना, दूध इकट्ठा करना और शहर को भेजना, वैज्ञानिक नियमों के अनुसार दूध को रखना जिससे कि उसके गुण में खराबी न आ जाय और खाने-पीने से नुक़सान न हो, अच्छे क़िस्म के जानवरों को खरीदना और उनकी पैदाइश में उन्नति के लिए अच्छे क़िस्म के साँड़ों को देना, लगान पर चरागाहों को लेना। इन सब बातों के लिए मिलकर काम करना आवश्यक है। इसलिए पारस्परिक सहायता, संयुक्त उद्योग और व्यक्तिगत लाभ के लिए मिलकर काम करना आवश्यक है। सहकारिता के आधार पर काम करने से सबसे अच्छा फल मिलेगा जिससे कि कोआपरेटिव सोसाइटीज़ ऐक्ट के अनुसार सभी सुविधायें मिलेंगी, जैसे वार्षिक हिसाब-किताब रखने का लाभ, रजिस्ट्री की फ़ीस और टिकट में छूट, पंचायत-द्वारा आसानी से झगड़ों का फ़ैसला और कोआपरेटिव विभाग के अमलों की निःस्वार्थ सहायता।

लखनऊ कोआपरेटिव मिल्क यूनियन—उपर्युक्त बातों पर ध्यान देते हुए संयुक्त-प्रान्त में एक योजना निकाली गई है जिसका उद्देश्य सहकारिता के आधार पर देहात से

प्राप्त होनेवाले दूध का प्रबन्ध करना है। पहले तो यह १६ महीने तक १०० रुपये की लागत से आरम्भ की गई और इस प्रयोग का इतना संतोषजनक परिणाम हुआ कि २३ मार्च, सन् १९३८ ई० को लखनऊ कोआपरेटिव मिल्क सप्लाई यूनियन लिमिटेड की रजिस्ट्री हो गई। इस योजना के अनुसार जो गाँव इस योग्य हैं कि वे कम से कम दो मन दूध प्रतिदिन दे सकें, लखनऊ ज़िले में और वहाँ की कोआपरेटिव मिल्क सोसाइटीज़ में चुन लिये गये हैं। ये समितियाँ लखनऊ कोआपरेटिव मिल्क सप्लाई यूनियन से संबंधित हैं। जिसका विशेष कार्य गाँव की समितियों से दूध इकट्ठा करना, उसे लखनऊ भेजना, जनता को देने से पहले उसे कुछ गरम करना, ग्राहकों के घर-घर बाँटना, गाँव की समितियों को उनके द्वारा भेजी गई वस्तुओं का ठीक दाम देना और ऐसी हर कार्रवाई करना है जो दूध की पैदावार की उन्नति के लिए और दूध की समितियों के मेम्बरों के हित के लिए हो। तीन साल के अनुभव से यह पता चला है कि यह योजना सन्तोषजनक कार्य कर रही है और इस आधार पर इस देश में दूध के धन्धे में उन्नति करने का विस्तृत क्षेत्र है। संयुक्त-प्रान्त में इसी प्रकार का एक संगठन इलाहाबाद में क़ायम करने की कार्रवाई हो रही है और ऐसा यूनियन बनारस और कानपुर में क़ायम करने के संबंध में विचार किया जा रहा है।

गाँवों का चुनाव--चूँकि इस योजना से सन्तोषजनक काम हुआ है इसलिए इसके काम का कुछ ब्यौरा देना सबके लिए हितकर होगा। यह ऊपर बताया जा चुका है कि जो गाँव दो मन दूध प्रतिदिन दे सकते हैं, दूध की पैदावार के लिए चुन लिये गये हैं। चुनाव में आसानी के लिए पहले गाँव के जानवरों की गिनती कर ली जाती है और फिर यह मालूम किया जाता है कि साल के विभिन्न मौसमों में कितना दूध मिल सकता है। इससे यह मालूम हो जाता है कि गाँव में और अधिक दूध देनेवाले जानवरों की ज़रूरत है या नहीं और इसके लिए हर एक संबंधित व्यक्ति के लाभ का ध्यान रखते हुए प्रबन्ध किया जाता है।

जानवरों का प्रबन्ध (सप्लाई)--आमतौर पर मेम्बर भैंस रखना पसन्द करते हैं क्योंकि वे दूध अधिक मात्रा में और अधिक समय तक देती हैं। पर बिना गायों के रक्खे साल भर बराबर दूध नहीं मिल सकता क्योंकि गर्मी के दिनों में भैंस दूध देना बन्द कर देती हैं और वे सितम्बर या अक्टूबर के महीने में बियाती हैं और गायें फ़रवरी या मार्च के महीने में बियाती हैं और आमतौर पर गर्मी के दिनों में दूध देती हैं। हम लोगों के अब तक के अनुभव से यह मालूम हुआ है कि एक मेम्बर को एक भैंस और दो गायें रखना चाहिए और इसी बात का ध्यान दूध देनेवाले जानवरों के प्रबन्ध करते समय भी रक्खा जाता है। इस तरह गर्मी के दिनों में भी दूध की कमी नहीं होने पाती।

एक स्थान पर दुहना--चुने हुए गाँव में पंचायत के सामने जानवर एक स्थान पर या दो या तीन विभिन्न झुंड में दुहे जाते हैं और दूध के रजिस्टर में समिति का मंत्री सप्लाई का इन्दराज करता है, और सम्बन्धित मेम्बर की पासबुक में भी जो उसी के पास रहती है, इन्दराज किया जाता है। दूध दुहने के पहले पोटास के पानी से हाथ और जानवरों के थन धोये जाते हैं। समय-समय पर जो बर्तन प्रयोग किये जाते हैं उनकी सफ़ाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

छप्पर (शेड्स) और कुएँ--सब जानवरों को एक स्थान पर दुहने के लिए गाँवों में उपयुक्त छप्पर बनाये जा रहे हैं और जहाँ जानवरों को साफ़ करने और धोने के लिए पानी की कमी है उन रक़बों में कुएँ का प्रबन्ध भी किया जा रहा है। इस काम के लिए गवर्नमेंट ने ५,४०० रुपया की ग्राण्ट दी है। एक छप्पर का आधा खर्च और कुएँ का तीन चौथाई खर्च इस ग्राण्ट में से किया जाता है और बाक़ी खर्च सम्बन्धित समिति पूरा करती है। लेकिन, चूँकि समिति की स्थिति ऐसी नहीं है कि रुपया लगा सके इसलिए यूनियन, जो रुपये की आवश्यकता होती है, अपने फण्ड से देता है। ऐसी आशा की जाती है कि छप्पर और कुएँ के प्रबन्ध से इस काम में काफ़ी उन्नति होगी।

दूध भेजना--गाँव से दूध इकट्ठा करने के बाद यह मोहर लगे हुए टीन के बर्तन में साइकिल, बहँगी या सर पर लदाकर गोदामों को भेजा जाता है जो थोड़ी-थोड़ी दूर पर स्थित हैं। वहाँ दूध लाया जाता है और उसकी जाँच की जाती है और फिर ले जानेवाले को रसीद दे दी जाती है। विभिन्न गाँवों से इकट्ठा किया हुआ दूध फिर बर्तनों के सहित उबलते हुए पानी में छोड़कर १६०° फारनहाइट तक गरम किया जाता है। गर्म किया हुआ दूध उसके बाद दूध की गाड़ी या ताँगों में लखनऊ भेज दिया जाता है।

दूध को शुद्ध करना--दूध पहले इकट्ठा करनेवाले केन्द्र पर गर्म किया जाता था, ऊपर बताये गये नियम के अनुसार गर्म करने के बाद दूध पानी में और बर्फ़ से भरे हुए पीपे में रखकर ठंडा किया जाता था। ऐसा गर्म किया हुआ दूध गाड़ी में लखनऊ भेजा जाता था यह गाड़ी विशेष रूप से सिलोटेक्स की बनी होती थी और दूध का तापक्रम कम करने के लिए उसमें बिजली का पंखा लगा होता था। पर इतना अधिक खर्च होते हुए भी इससे गर्मी और बरसात के दिनों में काम न चल सका। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। अब गर्म दूध लखनऊ भेजा जाता है जहाँ यह देखा जाता है कि दूध ले जाते समय उसका तापक्रम ८०° से १२०° फारनहाइट तक रहने के कारण दूध में बैक्टीरिया अच्छी तरह फैल सकता है इसलिए यह किसी तरह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं है।

दूध जैसे ही सदर मुक़ाम में पहुँचता है वैसे ही एयरेटर (गैस भरनेवाला यंत्र) को ऊपर की सतह में पहुँचाकर और जिसमें नीचे

...मन में दबी हुई गैस भरी रहती है, ४५° फ़ारनहाइट तक ठंढा किया जाता है। यह मशीन बिजली से चलाई जाती है और बिजली का खर्च आमतौर पर दो आना फ़ी मन दूध के हिसाब से लगता है और पहलेवाले नियम के अनुसार जब कि बर्फ़-द्वारा दूध ठंढा किया जाता था, उसमें चार आना फ़ी मन दूध के हिसाब से खर्च होता था, इस ठंढा करनेवाली मशीन के प्रयोग करने से केवल खर्च ही में कमी नहीं होती बल्कि समय भी कम लगता है और मेहनत भी। ठंढा करने के बाद दूध एक कमरे में इस तरह रक्खा जाता है कि उसका तापक्रम बराबर ४५° फ़ारनहाइट रहे। बाँटनेवालों को देते समय दूध निकाला जाता है और वे शहर में कूपन-द्वारा घर-घर दे देते हैं।

हमें मालूम है कि दूध में मिलावट करने से और उसमें गंदगी पैदा करने से बीमारी फैलती है या उसमें प्राकृतिक रूप में बैक्टीरिया का होना भी लोगों के लिए हानिकारक है। लोगों के खाने-पीने के लिए इसे शुद्ध बनाने का यही नियम है कि दूध को लगभग १६०° फ़ारनहाइट तक थोड़े समय में गर्म कर लिया जाय और फिर थोड़ी देर तक वही तापक्रम रखकर शीघ्र ही लगभग ४५° फ़ारनहाइट तक ठंढा कर लिया जाय। इस तरह गर्म और ठंढा करने से दूध के सब खतरनाक कीड़े मर जायँगे। यूनियन जो दूध देता है उसे इसी तरह शुद्ध किया जाता है, अन्तर केवल यह है कि इकट्ठा करनेवाले केन्द्र पर यह गर्म किया जाता है और शहर के गोदाम में ठंढा किया जाता है और ऐसा दूध भारत के डाइरेक्टर आफ़ डेरीज़-द्वारा शुद्ध घोषित किया जाता है।

शुद्धता की परख--दूध की शुद्धता की परख के लिए पहले लैक्टोमीटर (दूध की सफ़ाई देखने का यंत्र) का प्रयोग किया जाता है। डाक्टर गरबर के तरीक़े के अनुसार और शक्कर के लिए रासायनिक परख की जाती है और एस० एन० एफ़० का पता लगाया जाता है। दूध बाँटनेवाले आदमियों के पीपों से अचानक नमूने के लिए दूध ले लिया जाता है और उसकी यह जाँच की जाती है कि जिस समय दूध बाँटने के लिए दिया गया था उस समय भी वह ऐसा ही था या नहीं, इस तरह से दूध में मिलावट रोकी जाती है।

नस्ल की उन्नति--अच्छे क़िस्म का दूध पैदा करने के लिए पहले अच्छे नस्ल के जानवर का होना आवश्यक है। जैसा कि मालूम है लखनऊ ज़िले के जानवर बहुत निकम्मे क़िस्म के होते हैं और निकम्मे नर-पशुओं से उनकी नस्ल बढ़ाई जाती है और छोटेपन में वे भूखों मरते हैं। उन्नति के विचार से मिल्क-यूनियन ने ६१ हिसार जाति की गायें और ५६ मुर्रा भैंसे पंजाब से खरीदे और सन् १९३८-३९ ई० में समितियों को दिया, पर विशेषकर जलवायु के कारण उनके स्वास्थ्य और दूध में अवनति ही हुई। विशेषज्ञों की राय है कि पंजाब से देश के इस भाग में जानवरों को मँगाने से कोई उन्नति नहीं होगी और अच्छे नस्ल के साँड़ों का प्रबन्ध करने से काम चल सकता है। इसलिए दिल्ली-प्रान्त से मुर्रा भैंसे भैंसों के लिए मँगाये जायँगे, और अभी हाल ही में करनाल से थारपरकर साँड़ मँगाने के लिए एक आर्डर भेजा गया है। ये साँड़ छोटी गायों के लिए अच्छे होंगे और इससे गायें न केवल दूध ही अधिक मात्रा में देंगी बल्कि हल में जोतने के लिए अच्छे बछड़े भी पैदा करेंगी। दो गाँवों के बीच में आमतौर पर एक साँड और एक भैंसे का प्रबन्ध किया जायगा और यहाँ के जो साँड़ नस्ल बढ़ाने के काम के लिए ठीक नहीं हैं उन्हें बधिया कर दिया जायगा।

पौष्टिक खुराक--जैसा कहा जा चुका है यहाँ के जानवरों को खाना कम दिया जाता है और उचित मात्रा में पौष्टिक भोजन भी नहीं दिया जाता। इस हालत में इस प्रकार सुधार करना होगा कि गाँववालों को अच्छे क़िस्म की शिक्षा दी जाय और उनसे कहा जाय कि और सब आवश्यक बातों के अतिरिक्त वे अपने खेतों में बारहमासी घास लगायें। अभी हाल में जानवरों को बैबोमोलेसेस दिया गया था पर गाँववालों की इस प्रथा के कारण कि वे कोई नया काज नहीं शुरू करते, अधिक उन्नति नहीं हुई। ऐसा प्रयोग प्रचार और प्रदर्शन-द्वारा किया जायगा।

एग्रिकल्चर और वेटेरिनरी विभागों का सहयोग--नस्ल की उन्नति कृषि और वेटेरिनरी विभागों की सहायता और सहयोग के बिना नहीं हो सकती। यूनियन, कृषि-विभाग से बारहमासी घास की जड़ें, जानवरों के खरीदने और अच्छी नस्ल के साँड़ों के लिए बहुमूल्य सहायता लेता है। वेटेरिनरी विभाग ने हमारे अधिकांश गाँवों को "कैटिल वैलफ़ेयर यूनिटस्" के तौर पर लेने का प्रस्ताव किया और अपना सारा प्रयत्न जानवरों को टीका इत्यादि लगाकर उन्हें बीमारी से दूरकर तन्दुरुस्त और अच्छे नस्ल का बनाने के लिए किया है। यूनियन को अपने फंड के अनुसार पगडडियाँ बनवाने का भी प्रबन्ध करना होगा।

हर्डबुक--'इम्पीरियल कौंसिल आफ़ एग्रिकल्चरल रिसर्च' की सिफ़ारिश के अनुसार यह प्रस्ताव किया गया है कि सब जानवरों को रजिस्ट्रीशुदा दूध की समितियों में शामिल कर लिया जाय और उनके लिए 'हर्डबुक' रक्खी जाय। इस हर्डबुक में हर एक जानवर की नस्ल और उसके दूध देने की मात्रा दर्ज होगी और इससे यह पता चलेगा कि यह उद्देश्य पूरा हो रहा है या नहीं, यदि नहीं, तो उद्देश्य को पूरा करने के लिए क्या कार्रवाई करनी चाहिए।

यूनियन के डाइरेक्टर--मिल्क-यूनियन के 'बोर्ड आफ़ डाइरेक्टरस्' में १२ व्यक्ति होते हैं। यानी डिप्टी कमिश्नर सभापति होता है। गाँव की समितियों के ५ प्रतिनिधि होते हैं, व्यक्तिगत हिस्सेदारों के दो प्रतिनिधि, कोआपरेटिव समितियों के रजिस्ट्रार-द्वारा

नामज़द दो व्यक्ति और बोर्ड-द्वारा स्वयं चुने गये दो व्यक्ति होते हैं। रजिस्ट्रार आमतौर पर ऐसे आदमियों को नामज़द करता है जो दूध के धन्धे के विषय में विशेष ज्ञान रखते हों। जैसे, गवर्नमेंट का पब्लिक अनालिस्ट, मिलिटरी डेरीफ़ार्म का मैनेजर, कृषि, पब्लिक हेल्थ या वेटेरिनरी विभाग का कोई अफ़सर, कोआपरेटिव विभाग का कोई अनुभवी इंस्पेक्टर या अफ़सर। बोर्ड ऐसे आदमियों को चुनती है जिससे आदमियों को लाभ हो सके। इस प्रकार बोर्ड में यूनियन की भलाई और उन्नति के लिए सब हितों का प्रतिनिधित्व होता है और यह आशा की जाती है कि यूनियन जिस उद्देश्य से खोला गया है, प्रतिनिधियों के सहयोग और उनकी विशेष राय से उसे पूरा करने में शीघ्र उन्नति करेगा। म्युनिसिपल बोर्ड का एक प्रतिनिधि बोर्ड-द्वारा नामज़द किया जा सकता है या चुना जा सकता है पर शर्त यह है कि म्युनिसिपल बोर्ड इस काम के लिए अपना सहयोग देवे और सहायता करने के लिए तैयार हो।

कुल कितना काम हुआ--नीचे दिये हुए आँकड़ों से यह पता चलेगा कि यूनियन-द्वारा कुल कितना काम हुआ और बराबर कितनी अधिक उन्नति होती रही।

दूध	१९३८-३९	१९३९-४०	१९४०-४१
	मन	मन	मन
दूध की मात्रा जो मिली.......	५,६६३	११,४५०	११,४६८
मक्खन की मात्रा जो तैयार हुई और बेची गई।	१३	५७	८७

टेकनिकल स्टाफ़ (शिल्पी अमला)--लगभग १२५ आदमी यूनियन में नौकर हैं जो अधिकतर समितियों के मेम्बर हैं। आफ़िसर इंचार्ज कला-सम्बन्धी योग्यता रखता है। जैसे इंडियन डेरी डिप्लोमा आफ़ बंगलोर। जो कि कला-कौशल-सम्बन्धी काम के लिए ... असिस्टेंट मैनेजर होता है जिसने एग्रिकल्चर कालेज कानपुर में दूध के बारे में छः महीने का कोर्स पूरा किया हो। वे सुपरवाइज़र जो मिल्क-समितियों का प्रबन्ध करते हैं और जो न केवल समितियों की भलाई ही का ध्यान रखते हैं बल्कि यूनियन के हित के लिए भी काम करते हैं कोआपरेटिव यूनियन संयुक्त-प्रान्त के नौकर होते हैं और उनके वेतन का ५५ प्रतिशत देकर यूनियन उनके काम से लाभ उठाता है। कोआपरेटिव विभाग का डेरी इंस्पेक्टर जो डेरी के काम में ऊँची योग्यता रखता है, यूनियन के काम का नियंत्रण करता है।

आर्थिक स्थिति--इतना संतोषजनक काम होते हुए भी यूनियन की आर्थिक स्थिति अभी दृढ़ नहीं हुई है। पिछले साल लगभग ५,००० रुपया का घाटा हुआ पर यह घाटा विशेषकर इस कारण से हुआ कि यूनियन बिलकुल व्यापारिक आधार पर नहीं चलाया जा रहा है। उपकार की भावना का भी यूनियन के काम पर बड़ा असर पड़ता है। जैसे, ५,००० रुपया का जो घाटा हुआ इसकी आधी रक़म का घाटा इस कारण हुआ कि बाहर से लाने में रेलवे को जानवरों की चुंगी देनी पड़ी और उन प्रतिनिधियों का ख़र्च देना पड़ा जो जानवरों को ख़रीदने के लिए पंजाब गये थे। यूनियन को दूध दुहने के छप्पर और कुएँ बनवाने में भी कुछ रुपया देना पड़ता है। यह स्पष्ट है कि कोई संस्था आरम्भ में इतना ख़र्च इन सब मदों में नहीं कर सकती, लेकिन तब भी यूनियन ने अपना ख़र्च कम करके और विभिन्न कार्यों-द्वारा निर्धारित मापों को निश्चित करके अपनी स्थिति बहुत सँभाल ली है और घाटे को भी बहुत कुछ पूरा कर लिया है। इसकी आर्थिक स्थिति तभी दृढ़ होगी जब इसे ७० मन दूध प्रतिदिन मिले और ५० मन प्रतिदिन की बिक्री हो।

सरकारी सहायता--गवर्नमेंट ने यूनियन को २०,००० रुपया की ग्राण्ट, वैज्ञानिक यंत्र और मशीनरी इत्यादि ख़रीदने के लिए दी और ५,००० रुपया दूध ले जाने की गाड़ी के लिए दी और ये दोनों रक़में लगभग ख़र्च हो गई हैं। गवर्नमेंट ने ५,४०० रुपया की एक और ग्राण्ट गाँवों में दूध दुहने के लिए छप्पर और कुएँ बनवाने के लिए दी। और यह रक़म काम में लाई जा रही है। दूध के काम में उन्नति के विचार से यूनियन दूध से बनी हुई दूसरी चीज़ों का और अलग किये हुए दूध का बहुत अच्छा प्रयोग करता है जिससे कि उसका सारा ख़र्च पूरा हो सके।

म्युनिसिपैलिटी-द्वारा सहायता--चूँकि ख़ालिस और अच्छे दूध का जनता के स्वास्थ्य से बड़ा सम्बन्ध है इसलिए लखनऊ-म्युनिसिपल बोर्ड को चाहिए था कि वह कुल शहर के लोगों को दूध देने का भार अपने ऊपर लेती। चूँकि यूनियन ने म्युनिसिपैलिटी को इस काम के भार से मुक्त कर दिया है इसलिए बोर्ड को चाहिए कि यूनियन की सहायता करे। यूनियन म्युनिसिपल बोर्ड से आर्थिक सहायता और काम में प्रोत्साहन की आशा करता है पर अब तक उससे कोई सहायता नहीं मिली है।

नतीजा--यूनियन के काम के बारे में जो हवाला दिया गया है उससे मालूम होता है कि यूनियन देहातों से दूध मँगाकर उसे शुद्ध कर शहर में ग्राहकों के घर-घर दूध देता है। इस तरह यूनियन दूध देने का प्रबन्ध करने के लिए बड़ा काम कर रहा है। किसी-किसी महीने में यूनियन ४५ मन दूध पाता है ... भी इस विचार से बुरा नहीं है कि यूनियन को खोले हुए अभी तीन ही साल हुए हैं। दूध के धन्धे में उन्नति करते हुए यूनियन ने किसान मेम्बरों को भी कई तरह से लाभ पहुँचाया है। यूनियन उनको दूध का ... मूल्य देता है अर्थात् उनसे एक रुपया ... ११ सेर या १२ सेर दूध लेता है ... लोग हलवाइयों के हाथ पहले १४, १६ ... फ़ी रुपये के हिसाब से बेचते थे। दूसरे ... कि यूनियन उनके घर ही पर रुपये ...

और उन्हें बेचने के लिए लखनऊ नहीं आना पड़ता जिससे कि उनका समय नष्ट न हो। उन्हें हर चौदहवें दिन दूध का रुपया मिल जाता है और उनके वाजिब दाम में कोई गड़बड़ी नहीं होती जैसा कि प्रायः हलवाई किया करते थे। यूनियन दूध देनेवाले जानवरों और उनकी नस्ल के सम्बन्ध में जो काम कर रहा है इससे कुछ साल में ही उनकी आर्थिक दशा सुधर जायगी। कुएँ के प्रबन्ध से उनकी बहुत कुछ कठिनाई दूर हो जायगी। छप्परों का बनाना और यातायात के साधनों की उन्नति भी उनके लिए बहुत उपयोगी होगी। कोआपरेटिव विभाग के नियंत्रण में दूध की समितियों को 'कोआपरेटिव सोसाइटीज़ ऐक्ट' के अधीन प्रान्त सुविधाओं के अतिरिक्त यह सुविधा प्राप्त है कि गाँववालों को मुक़दमे के सिलसिले में अदालत नहीं जाना होगा जिससे कि उनकी तबाही हो। गाँववालों और डेरी की उन्नति के लिए मिल्क यूनियन जो सब करता है उसके अतिरिक्त छोटे-छोटे कोआपरेटिव संगठनों की भी सहायता इस प्रकार करता है कि उनका दूध का दाम वसूल कर लेता है और वसूल किया हुआ रुपया ज़िला कोआपरेटिव बैंक में जमा कर देता है। उधार देनेवाली समितियों का लगभग १,००० रुपया इस साल इस प्रकार वसूल किया गया। अन्त में यह कहना चाहिए कि मिल्क यूनियन ने इतना उपयोगी काम करके अपने अस्तित्व का अच्छा सबूत दिया है। इसने नाम तो पैदा कर ही लिया है और भारतवर्ष के दूसरे भागों के लोगों और संस्थाओं का जो दूध के धन्धे से दिलचस्पी रखते हैं ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। इसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है और लगभग १० साल में पूरे लाभ की आशा की जाती है, जब कि यह अपने काम में दक्ष हो जायगा इसकी आर्थिक स्थिति दृढ़ हो जायगी और आधुनिक नियमों के अनुसार बड़ी मात्रा में इस से दूसरी चीज़ें भी बनने लगेंगी।

बाग़ में छोटे पेड़ों की झाड़ियाँ लगाना

कृषि-विभाग यू० पी० के बुलेटिन नम्बर ८० से

छोटे पेड़ों की झाड़ी और पौधों की झाड़ी में यह अन्तर है कि पहले बताई हुई झाड़ी बाग़ की एक पुष्ट चीज़ बन जाती है और बाद में बतलाई हुई चीज़ साल में एक बार फूल आने के कारण से ख़त्म हो जाती है, बाग़ के लिए झाड़ी इतनी ही ज़रूरी है जितनी कि एक तसवीर के लिए फ्रेम। झाड़ी इसलिए लगाई जा सकती है कि अपने पीछे के दृश्य को अपनी आड़ में छिपा दे। दो समानान्तर तौर पर लगाई हुई झाड़ियाँ मनुष्य की निगाह को अपने साथ बहुत दूर तक ले जाती हैं। झाड़ी के अन्दर खाली जगहें किसी पेड़ या बैठने के स्थान इत्यादि को दिखाने के लिए बनाई जाती हैं। बाग़ों के चारों तरफ़ लगाने से यह बाड़ तथा दीवार का काम देती है और अपने फूलों की वजह से बाग़ की शोभा को बढ़ाती हैं।

ज़मीन की तैयारी—अच्छी बढ़वार के लिए झाड़ी लगाई जानेवाली ज़मीन में ख़ूब खाद देनी चाहिए लेकिन अगर ज़मीन ज़रखेज़ है तो यह ज़रूरी नहीं है। ज़मीन को एक फ़ीट की गहराई तक खोद देना चाहिए और मिट्टी निकालकर किनारों पर लगा देनी चाहिए। अगर खाद डालने का विचार है तो ६ इंच मिट्टी वहाँ से खोदकर हटा दी जाय, अगर खाद डालने का अभिप्राय नहीं है तो केवल ३ इंच गहराई की मिट्टी निकाली जाय। इसके बाद एक फ़ीट गहरी खुदाई की जाय और ज़मीन को अच्छी तरह भुरभुरी कर दी जाय। जो मिट्टी निकाल कर बाहर डाल दी गई है उसका आधा भाग खुदी हुई ज़मीन में फैला दिया जाय और उसके ऊपर खाद की ३ इंच मोटी तह फैला दी जाय, उसको भुरभुरी मिट्टी में मिला दिया जाय और फिर बाक़ी बची हुई आधी मिट्टी डालकर ज़मीन बराबर कर दी जाय, सिचाई करने के बाद ज़मीन आस-पास की सतह से ३ इंच नीची हो जायगी और आगे सिचाई करने में आसानी होगी। इतनी तैयारी के बाद झाड़ीवाले छोटे पेड़ (शरब्ज़) लगा दिये जायँ। ज़मीन तैयार करने का बढ़िया समय अप्रैल व मई है।

छोटे पेड़ (शरब्ज़) लगाना—शरब्ज़ की झाड़ी लगाते वक्त इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१—ये पेड़ सदाबहार हैं या पतझड़वाले हैं।

२—इनको प्रूनिंग की ज़रूरत होती है या नहीं। और अगर होती है तो कम या ज़्यादा।

३—पेड़ कितना ऊँचा हो जाता है।

४—फूल आने का वक्त।

५—रंगों की मौज़ूनियत।

यह प्रकट है कि पतझड़ करनेवाले शरब्ज़ या वे पौधे जो कि फूल आने के बाद बहुत ज़्यादा काट-छाँट किये जाते हों नंगे मालूम होने लगते हैं, और इसलिए झाड़ी के सामने ठीक नहीं मालूम होते हैं। उनको सदाबहार पेड़ों के झुंड के अन्दर जगह मिलनी चाहिए। इसी तरह से ऊँचे शरब्ज़ के पीछे नीचे शरब्ज़ को लगाना सख्त ग़लती है। शरब्ज़ में फूल आने का वक्त मालूम होना ज़रूरी है ताकि तमाम साल कुछ न कुछ फूल दिखाई देते रहें। झाड़ी के किनारे एक ही क़िस्म की लम्बी क़तार नहीं लगानी चाहिए और न भिन्न भिन्न क़िस्मों को बेढंगे तरीक़े से लगाना चाहिए। बल्कि क़िस्मों को छोटे-छोटे झुंडों में अलग अलग लगाया जाय, झाड़ी को बाग़ के किनारे की बाड़ से मिलाकर नहीं लगाना चाहिए। कम से कम ४ फ़ीट चौड़ी जगह दोनों के बीच में छोड़ी जाय। इसी प्रकार झाड़ी को दीवार से मिलाकर नहीं लगाना चाहिए।

नाम	ऊँचाई फ़िटों में	फूलने का समय	फूल का रंग	बीच की दूरी फ़िटों में	कैफ़ियत
अचेनिया लेसेहिनौल्टी	६	अक्तूबर से अप्रैल तक	लाल	६	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला
वुडलेइया एसियाटिका	८	मार्च से अप्रैल	नीला	८	मई में काट-छाँट करना चाहिए
वुडलेइया इंडिका	८	फ़रवरी से अप्रैल तक	सफ़ेद	९	" "
वुडलेइया मेडागासकेरेन्सिस	९	जनवरी से मार्च तक	नारंगी रंग	८	अप्रैल में काट-छाँट करनी चाहिए
केरियोपटेरिस वालचियाना	९	फ़रवरी से मार्च	नीला	८	" "
गारडेनीया फिलोरेडा	८	मार्च से अप्रैल	सफ़ेद	८	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला।
गैल फ़ीमिया नितेडा	५	पूर्ण वर्ष	पीला	६	" " "
हैसिकस (बहुत-सी क़िस्में)	८	"	सफ़ेद, गुलाबी, लाल	६	दिसम्बर में काट-छाँट करनी चाहिए
हैमिलटोनिया स्वाबीओलैन्स	८	जनवरी से मार्च तक	सफ़ेद	६	अप्रैल में काट-छाँट की जाती है
हाई प्रेकमचिनेन्सिस	२	पूर्ण वर्ष	पीला	२	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला
यकज़ोरा बन्धूका	६	"	गहरा लाल	६	" " "
लीगर्स टोइमिया अन्डीका (३ क़िस्में)	८	अप्रैल से जून तक	गुलाबी, सफ़ेद	६	पतझड़वाला, दिसम्बर में छँटाई होनी चाहिए।
मुरैया एक्ज़ोओटिका	६	जुलाई से सितम्बर तक	सफ़ेद	६	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला
निरियम ओडोरम (३ क़िस्में)	८	अप्रैल से अक्तूबर तक	गुलाबी, लाल और सफ़ेद।	६	पतझड़वाला, दिसम्बर में काट-छाँट होनी चाहिए।
प्लमवैगो केपेन्सिस	२	पूरे वर्ष तक	नीला	२	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला।
प्वाइनसियाना पलचेरिमा (दो क़िस्में)	१०	जुलाई से अक्तूबर तक	पीला और लाल	८	नवम्बर में काट-छाँट होनी चाहिए
प्वाइनसेटिया पलचेरिमा	९	दिसम्बर से फ़रवरी तक	गहरा लाल	६	मार्च में काट-छाँट होनी चाहिए
रेनवारटिया ट्रिगिना	२	"	पीला	२	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला
रुसेलिया फ्लोरीबंडा	३	पूरे वर्ष तक	लाल	३	" "
टैवरनेमोन्टाना कोरोनेरिया	५	"	सफ़ेद	५	" "
*टेकोमा स्टान्स	१०	अक्तूबर से दिसम्बर तक	पीला	८	जनवरी में काट-छाँट होनी चाहिए
*हिबिस्कस मुतावलिस (२ क़िस्में)	९	अक्तूबर, नवम्बर	गुलाबी, सफ़ेद	८	दिसम्बर में काट-छाँट होनी चाहिए
खुशबूदार फूलवाले शरब्ज़					
कैस्टरनम नाकटरनम	६	अगस्त-सितम्बर	सफ़ेद	६	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला
जस्मीनमपोबससेन्स	५	दिसम्बर, जनवरी	"	६	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला
जस्मीनम सम्बक (मूँगरा)	२	मार्च, जून	"	२	" "
निकटेनथिस अरबोर ट्रस्टिस	९	सितम्बर, अक्तूबर	"	८	फ़रवरी में काट-छाँट होनी चाहिए
रंग-बिरंगे पत्तेवाले शरब्ज़					
अकेलीफ़ा मुज़ीका और दूसरी क़िस्में	४	तमाम साल	लाल	४	हमेशा हरा-भरा रहनेवाला
अरन्डो डूनेक्सवरसीकूलर	१०	"	सफ़ेद	८	" "
हेमलिया पेटेन्टस	१०	"	लाल	८	" "

*नोट—ये दोनों क़िस्में पुरानी क़िस्म को तरक्क़ी देकर निकाली गई हैं जिनमें कि सफ़ेद फूल आते हैं जो गुलाबी हो जाते हैं, उन्नति-प्राप्त क़िस्मों में बहुत-से गुलाब ऐसे दो रंगे फूल आते हैं जिनका रंग पक्का होता है।

(कृषि-विभाग यू० पी० बुलेटिन नं० ८० से उद्धृत)

गन्ने की फ़सल के बारे में तजुर्बात जिनसे किसान लाभ उठा सकते हैं

किसान गन्ने की फ़सल बोने के लिए आमतौर से खेतों का अच्छा चुनाव नहीं करते। अनुचित ज़मीन जैसे खलार और पानी भरे हुए खेतों में बीमार और कमज़ोर फ़सलें पैदा होती हैं, किसान को यह बात बताने की ज़रूरत है कि इस फ़सल को उस ज़मीन में बोना चाहिए जिसमें कि पानी की निकासी का उचित प्रबन्ध हो, और इतनी ही ज़मीन में खेती करें जितनी में कि वह आसानी से कामयाब फ़सल पैदा कर सकता है, और बाक़ी ज़मीन में दूसरी फ़सलें जिनमें गन्ने के मुक़ाबिले में कम मेहनत की ज़रूरत है बोई जायँ।

गन्ने की उन्नति-प्राप्त क़िस्में जो कि कृषि-विभाग ने तजुर्बे के बाद किसानों को बाँटी हैं, इस प्रान्त के बड़े रक़बे में फैल गई। दरम्यानी और देर में पकनेवाली क़िस्में जो कि जल्द पकनेवाली क़िस्मों के मुक़ाबिले में ज़्यादा पैदावार देती हैं, खासतौर पर किसानों को पसन्द हुई हैं। रिसर्च स्टेशनों पर जो हाल में तजुर्बात हुए हैं उनसे इस बात की आशा पाई जाती है कि गन्ने की जल्द पकनेवाली क़िस्में भी अब ज़्यादा पैदावार देने लगेंगी और इस तरह से शकर बनाने की सनअत का एक बहुत बड़ा मसला हल हो जायगा।

मौजूदा ज़माने में इस बात की ज़रूरत है कि जल्द, दरम्यानी और देर में तैयार होनेवाले गन्ने का सही अनुपात क़ायम रक्खा जाय कि जिससे देर में पकनेवाली क़िस्में किसी एक रक़बे में बहुत ज़्यादा न बोई जायँ जैसा कि हमारे प्रान्त के पूर्वी ज़िलों में आमतौर से देखा गया है।

बोआई और बीज का चुनाव--बोआई के वक्त बीज का चुनाव बहुत होशियारी से करना चाहिए। देर में बोई जानेवाली फ़सल के वास्ते गन्ने के ऊपर के हिस्से को बीज के तौर पर इस्तेमाल करना लाभदायक सिद्ध हुआ है, लेकिन किसानों में अभी यह तरीक़ा जारी नहीं हुआ है। गन्ने के टुकड़ों को जिनमें कम से कम तीन आँखें हों, एक दूसरे से इस प्रकार से मिलाकर बोना चाहिए कि उनके सिरे एक दूसरे के ऊपर पड़ जायँ। यह तरीक़ा किसानों में आमतौर से प्रचलित है लेकिन जहाँ कहीं ऐसा नहीं किया जाता है वहाँ इसको जारी करने की ज़रूरत है। नालियों में बोआई उस हालत में करनी चाहिए, जब कि बहुत अच्छी खेती की जाय और बहुत ज़्यादा पैदावार होने की आशा हो। खेती की मामूली रीति में गन्ने को सपाट ज़मीन पर बोना चाहिए और वर्षा से पहले उसपर मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए। एक क़तार से दूसरी क़तार की दूरी खेत की ज़रखेज़ी पर निर्भर है। ज़्यादा ज़रखेज़ खेतों में जिनकी पैदावार ९०० से १,००० मन होती हो, ३॥ फ़ीट की दूरी होनी चाहिए। ७०० से ८०० मन फ़ी एकड़ पैदावार में ३ फ़ीट की दूरी होनी चाहिए, ५०० मन से ६०० मन फ़ी एकड़ पैदावार में २॥ फ़ीट दूरी रक्खी जाय।

बोआई का वक्त--बोआई का उचित समय पूर्वी ज़िलों में जनवरी के मध्य से फ़रवरी के मध्य तक है। केन्द्रीय ज़िलों में फ़रवरी में गन्ने को जल्द से जल्द बो देना चाहिए। पश्चिमी ज़िलों में फ़रवरी के मध्य से मार्च के मध्य तक बोआई की जाय, देर में बोआई करने से पैदावार कम हो जाती है और इस कमी की पूर्ति खाद देने या सिंचाई करने से नहीं हो सकती।

गोड़ाई--तजुर्बात से यह मालूम हुआ है कि हर सिंचाई के बाद ३ इंच से ४ इंच की गहरी गोड़ाई, जिसके बाद ज़मीन बराबर कर दी जाय, फ़सल के लिए उपयोगी है।

खाद--हमारे सूबे की ज़मीनों में फास्फेट और पोटाश काफ़ी मात्रा में हैं लेकिन नाइट्रोजन की कमी है। इस कमी को पूरा करने के लिए फ़सल में नाइट्रोजन की खाद देनी ज़रूरी है। यह मालूम हुआ है कि गन्ने की फ़सल के लिए १०० पौंड से १२० पौंड नाइट्रोजन फ़ी एकड़ की ज़रूरत होती है। इतनी नाइट्रोजन देने पर ९०० मन से १,००० मन फ़ी एकड़ गन्ने की पैदावार हो जाती है बशर्ते कि सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध हो। जहाँ पर सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध नहीं है और ज़्यादा खाद इकट्ठा नहीं हो सकती तो ६० पौंड नाइट्रोजन फ़ी एकड़ के हिसाब से खाद देने से ६०० मन से ७०० मन फ़ी एकड़ पैदावार हासिल हो सकती है।

नाइट्रोजन की खाद किस रूप में दी जाय? वानस्पतिक तथा खनिज खादों का मिक्शचर इस्तेमाल करने से बहुत अच्छे नतीजे हासिल हुए हैं। कृषि-विभाग की निगरानी में तैयार किया गया मिक्शचर जिनमें मूँगफली या अंडी की खली और अमोनियम सल्फ़ेट मिले हुए होते हैं, गन्ने की फ़सल में सफल सिद्ध हुए हैं। इसके अलावा सनई को खेत में बोकर ६० दिन से ७५ दिन के अन्दर खेत में मिट्टी पलटनेवाले हल के द्वारा दबा देने से ६० पौंड नाइट्रोजन फ़ी एकड़ फ़सल को प्राप्त हो जाती है।

सिंचाई--संयुक्त-प्रान्त के गन्ने की खेती-वाले रक़बों में सिंचाई के प्रबन्ध की ओर ध्यान रखना ज़रूरी है। तजुर्बात के ज़रिये यह बात साबित हुई है कि अधिक बार सिंचाई करके

फ़ी सिंचाई कम पानी देना बनिस्बत कम बार सिंचाई करने और फ़ी सिंचाई ज़्यादा पानी देने के मुक़ाबिले में ज़्यादा उपयोगी है। उदाहरण के तौर पर ६० हज़ार गैलन फ़ी घंटा की ५ सिंचाई एक लाख गैलन की ३ सिंचाइयों के मुक़ाबिले में अधिक लाभदायक है। सिंचाई की संख्या मौसम और ज़मीन के ऊपर निर्भर है। लेकिन आमतौर से पश्चिमी ज़िलों में वर्षा से पहले ५ से ६ बार और वर्षा के बाद एक से दो बार पानी देने की ज़रूरत पड़ती है। केन्द्रीय ज़िलों में वर्षा से पहले ४ से ५ सिंचाइयाँ और वर्षा के बाद एक सिंचाई की ज़रूरत पड़ती है। पूर्वी ज़िलों में वर्षा से पहले ३, ४ सिंचाइयों की ज़रूरत पड़ती है। ऊपर लिखी हुई सिंचाइयों की संख्या १०० पौंड नाइट्रोजन फ़ी एकड़ के इस्तेमाल के साथ लाभदायक साबित होती है, कम सिंचाई करने पर नाइट्रोजन की संख्या भी कम होनी चाहिए।

(बुलेटिन नं० ८६, कृषि-विभाग, यू० पी० से लिया गया।)

खुलासा रिपोर्ट सालाना फ़ार्मजात ज़रायती बाबत सन् १९४०-४१, उत्तरीपूर्वी सरकिल, गोरखपुर

गोरखपुर तजुरबे का फ़ार्म

यह फ़ार्म गोरखपुर-कसयावाली सड़क के दक्खिन गोरखपुर शहर से ३½ मील पूरब कूड़ाघाट गाँव के क़रीब है। इसका कुल रक़बा ११०.०७ एकड़ है, जिसमें से ९४.१७ एकड़ ज़ेर काश्त है और बाक़ी रक़बा मकानात, सड़क और पानी की नालियों से घिरा हुआ है। ज़मीन खासकर हलकी दोमट है। किसी-किसी खेत में ऊसर के छोटे-छोटे टुकड़े भी पाये जाते हैं जिससे उनमें तजुरबे ठीक नहीं हो सके। इस फ़ार्म की आबपाशी ट्यूबवेल से होती है। इस फ़ार्म पर गन्ने, धान व जौ के तजुरबे इकोनामिक बोटनिस्ट (गन्ना व धान) की देख-रेख में होती है और इनके नतीजे अलग से छापे जायँगे। बाक़ी फ़सलों के नतीजे इस लेख में दिये जावेंगे।

अभिप्राय—इसका अभिप्राय उन्नतिशील बीजों की खोज करके निकालना और उसको पैदा करके काश्तकारों को बाँटना है। इसके अलावा उन्नतिशील औज़ारों का तजुरबा करना और गाँव में प्रचार करना भी है। इस फ़ार्म पर काश्तकारों की मदद के लिए अच्छे क़िस्म की मुर्ग़ियाँ पाली गई हैं जिनके अंडे, बच्चे व मुर्ग़े सस्ते दामों पर देकर काश्तकारों की माली हालत बढ़ाई जाती है। एक छोटा-सा बग़ीचा भी फ़ार्म पर लगाया गया है जहाँ से सस्ते दामों पर क़लम व बीज काश्तकारों को बाँटे जाते हैं। मुर्रा भैंस व बकरे जमुनापारी नस्लकशी के लिए रक्खे गये हैं जिनसे काश्तकारों को बहुत ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाया जाता है। इनके अलावा ज़मींदार के लड़के यहाँ आकर शिक्षा पाते हैं।

इस फ़ार्म पर नीचे लिखे तजुरबे किये गये हैं—

१—तजुरबा अलसी—छः क़िस्म की अलसी का मुक़ाबिला देशी के साथ किया गया जिनमें पूसा नं० ५० की पैदावार सबसे अच्छी रही।

२—गन्ने की फ़सल पर सनई की हरी खाद का तजुरबा—जो खेत सनई की फ़सल ७५ दिन पर जोत दी गई उनकी पैदावार उन टुकड़ों से कुछ अच्छी हुई जो कि दो माह के बाद जोते गये या जिनसे रेशा लिया गया।

३—गेहूँ की फ़सल पर अमोनिया सल्फ़ेट व फासफोरिक खादों का तजुरबा किया गया। ४० पौंड नाइट्रोजन देने का नतीजा अच्छा रहा। फासफोरिक खादों का कोई खास फ़ायदा नहीं मालूम हुआ। यह तजुरबा फिर अगले साल किया गया।

मौसम—इस साल मौसम बहुत खराब रहा, बारिश बेवक्त और बहुत अन्तर देकर होती रही जिससे गन्ने व धान की फ़सल को नुक़सान रहा। आगे चलकर बारिश सितम्बर के तीसरे हफ़्ते से बन्द हो गई जिससे रबी के खेतों की तैयारी में बड़ी कठिनाई रही और जमाव भी खराब रहा। जाड़े के दिनों में थोड़ी बारिश रही जिससे फ़सल को कुछ फ़ायदा हुआ पर मई की बारिश से कटी हुई फ़सल को नुक़सान हुआ। जो गन्ने की फ़सल को कुछ फ़ायदा रहा। इस फ़ार्म पर कुल बारिश इस साल जो दर्ज हुई, वह २७.१७ इंच हुई।

फ़ायदा व नुक़सान—इस फ़ार्म पर इस साल गन्ने के भाव के गिर जाने से और मौसम की खराबी की वजह से सिर्फ़ ३७० रुपया का फ़ायदा रहा जब कि पारसाल ६,१८४ रुपये का फ़ायदा था।

बहराइच डिमान्सट्रेशन व बीज-फ़ार्म

यह फ़ार्म बहराइच कलेक्टरी कचहरी व डिप्टी कमिश्नर के बँगले के पास ही बहराइच-कैसरगंज सड़क पर क़रीब दो मील रेलवे स्टेशन से है। इसका कुल रक़बा १०१.५२ एकड़ है जिसमें ९१.७५ एकड़ ज़ेर काश्त है व बाक़ी में मकानात, सड़कें व पानी की नालियाँ हैं। ज़मीन कुछ हलकी दूमट है और बालू से मिली हुई है। कहीं-कहीं ऊसर के भी टुकड़े हैं जिसकी हालत अब धीरे-धीरे बदल रही है।

अभिप्राय—इस फ़ार्म पर उन्नतिशील गेहूँ, गन्ना, मक्का, जौ, अलसी, तिल, चना, ज्वार, मूँगफली, धान व चरी का बीज पैदा किया जाता है। इस ज़िले की खास पैदावार धान है पर इस फ़ार्म पर बहुत थोड़ी ज़मीन धान के क़ाबिल है और उसी पर थोड़ा बीज पैदा किया जाता है। यह फ़ार्म तजुरबे का फ़ार्म न होते हुए भी बहुत-सी फ़सलों का तजुरबा जो इस ज़िले की मुख्य फ़सलें हैं, किया जाता है। इस साल १२ फ़सलों का तजुरबा हुआ जिनमें ज्वार ८ बी, तिल काली देशी, मक्का जौनपुर पीला, धान ओसहन टाइप ६५, धान अगहनी टाइप १००, अलसी नं०

ारिश सितम्बर
जिससे रबी के
ताई रही और
ड़े के दिनों में
फ़सल को कुछ
रेश से कटी हुई
गन्ने की फ़सल
फ़ार्म पर कुल
ई, वह २७१७
फ़ार्म पर इस
से और मौसम
फ़ी ३७० रुपया
ारसाल ६,१८४

व बीज-फ़ार्म

टरी कचहरी व
स ही बहराइच-
दो मील रेलवे
क़बा १०१.५२
ज़ोर काश्त है
व पानी की
ी दूमट है और
कहीं ऊसर के
अब धीरे-धीरे
र उन्नतिशील
, तिल, चना,
का बीज पैदा
खास पैदावार
थोड़ी ज़मीन
र थोड़ा बीज
ें तजुरबे का
फ़सलों का
फ़सलें हैं, किया
ें का तजुरबा
क़ाली देशी,
सेहन टाइप
अलसी नं०

३७, चना क़ासवी का नतीजा अच्छा रहा। नका फिर दूसरे साल तजुरबा होगा।

इसके अलावा यहाँ मुर्गियाँ पाली गई हैं और भैंसा, साँड़, हिसार व जमुनापारी बकरे रक्खे गये हैं जिनसे गाँव के लोग बहुत कम दाम पर अपने जानवरों की नसल बदल रहे हैं।

मौसम—इस साल मौसम बहुत अच्छा नहीं रहा। मई की बारिश से रबी की फ़सल को नुक़सान हुआ और फिर जुलाई के पहले हफ़्ते और सितम्बर तक भारी बारिश होती रही जिससे खरीफ़ की फ़सल को नुक़सान हुआ—खासकर तिल व ज्वार को जो बिल्कुल मारी गईं।

फ़ायदा व नुक़सान—इस फ़ार्म पर भी गन्ने के भाव के गिर जाने की वजह से इस साल सिर्फ़ ७५१ रुपये का ही लाभ हुआ जो पारसाल के मुक़ाबिले में बहुत कम है।

इन फ़ार्मों के अलावा इस सर्किल में छोटे-छोटे डिमास्ट्रेशन फ़ार्म ज़िलों में या गाँवों में काश्तकारों को दिखलाने के लिए खोले गये हैं—जैसे बलिया, बेलथरा रोड व बेलीपार जहाँ अच्छे बीज व काश्त के अच्छे तरीक़े करके दिखाये जाते हैं।

कृषि-विभाग, संयुक्त-प्रान्त

सन् १९४१-४२ की गेहूँ की फ़सल की प्रथम भविष्यवाणी

नोट—पिछले पाँच वर्षों (सन् १९३९-४०) तक संयुक्त-प्रान्त में गेहूँ की खेती का औसत सारे भारतवर्ष के कृषि क्षेत्रफल का लगभग २२.४ प्रतिशत रहा है।

सिंचाई होनेवाले गेहूँ के क्षेत्रफल का अनुपात कुल कृषि-क्षेत्रफल का (१) ब्रिटिश भारत और (२) संयुक्त-प्रान्त में पिछले पाँच वर्षों (१९३९-४०) तक का औसत क्रमशः (१) ४५.३ प्रतिशत और (२) ५३.१ प्रतिशत रहा है।

सितम्बर सन् १९४१ के पहले तीन सप्ताह में वर्षा साधारण और काफ़ी जगहों में हुई। लेकिन अन्तिम सप्ताह में मेरठ, आगरा, रुहेलखण्ड, इलाहाबाद और झाँसी की कमिश्नरियों में बिलकुल पानी नहीं पड़ा। क़रीब उन दो तिहाई ज़िलों में औसत से कम पानी पड़ा जहाँ अधिक पानी की ज़रूरत थी। आक्टोबर के प्रथम तीन सप्ताह में कई ज़िलों में कुछ वर्षा हुई परन्तु अन्तिम सप्ताह सूखा ही बीता। सिर्फ़ देहरादून और बिजनौर के ज़िलों में मात्रा से अधिक वर्षा बताई गई है। नवम्बर भी सूखा ही बीता। दिसम्बर में भी सूखा रहा। केवल दूसरे सप्ताह में मेरठ, आगरा, रुहेलखंड और कमायूँ की कमिश्नरियों में कुछ वर्षा हुई जो उपस्थित फ़सल को लाभदायक सिद्ध हुई।

बोने का काम समय पर आरम्भ हुआ। वर्षा और नमी के कारण बहुत-से ज़िलों में सिंचाई से मदद लेनी पड़ी। उपज भी अच्छी बताई जाती है यद्यपि सूखे के कारण कहीं कहीं नये पौधे सूख गये। फ़सल का भविष्य काफ़ी अच्छा है लेकिन अधिकतर भावी मौसम की दशा पर निर्भर है।

फ़सल की सूचना देनेवालों के सहारे यह अनुमान लगाया जाता है कि सूबे भर में कुल गेहूँ की फ़सल का क्षेत्रफल ७३,५८,००० एकड़ है जब कि पिछले साल का अनुमान ७८,१९,००० एकड़ था और संशोधित क्षेत्रफल ७९,३५,२५५ एकड़ था। इन तीन संख्याओं में अल्मोड़ा, गढ़वाल और नैनीताल के पहाड़ी भागों का अनुमान भी १,४८,४६१ एकड़ शामिल हैं।

यह भविष्यवाणी फ़सल की ५ जनवरी, सन् १९४२ तक की दशा पर निर्भर है।

सी० मायादास,
डाइरेक्टर आफ एग्रीकल्चर,
संयुक्त-प्रान्त

कृषि-विभाग, संयुक्त-प्रान्त

सन् १९४१ के अलसी और सरसों की फ़सल की भविष्य सूचना

नोट—पिछले पाँच वर्षों (१९३९-४०) तक के (१) अलसी, (२) राई और सरसों का क्षेत्रफल संयुक्त-प्रान्त में सारे भारत के कुल उपज का औसत क्रमशः (१) ६.९ और (२) ४४.४ प्रतिशत रहा है।

अलसी और सरसों की खेती समयानुकूल की गई। सितम्बर के पहले पखवारे में साधारण वर्षा हुई लेकिन तीसरे सप्ताह थोड़ा पानी बरसा। अन्तिम सप्ताह सूबे के अधिकांश भागों में सूखा ही बीता। आक्टोबर में कुछ वर्षा हुई लेकिन नवम्बर तो सूखा ही बीता। बहुत-से ज़िलों में पानी की कमी के कारण बुरा असर पड़ा और फलतः फ़सल पर भी बुरा असर पड़ा। फिर भी फ़सल की उपज अच्छी बताई जाती है। यदि जाड़े में पानी न पड़े तो इसका भविष्य काफ़ी अच्छा है।

कुछ चुने हुए ज़मींदारों की रिपोर्ट के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि अलसी और सरसों का कुल क्षेत्रफल इस वर्ष क्रमशः २,४४,००० एकड़ और २,३९,००० एकड़ रहा है जब कि पिछले वर्ष का संशोधित क्षेत्रफल क्रमशः २,५५,९३४ एकड़ और २,५७,४०६ एकड़ तथा साधारण अनुमान २,७५,००० एकड़ और २,८२,००० एकड़ रहा।

यह भविष्य सूचना इन दोनों फ़सलों की १० दिसम्बर, सन् १९४१ तक की हालत पर की गई है।

सी० मायादास,
डाइरेक्टर आफ एग्रीकल्चर,
यू० पी०

कृषि-विभाग, संयुक्त-प्रान्त

सन् १९४१ की कपास की उपज की अन्तिम भविष्यवाणी

नोट—पिछले पाँच वर्षों (१९३९-४०) तक की कपास की उपज का औसत संयुक्त-प्रान्त में सारे भारतवर्ष के कृषि-क्षेत्रफल का २.५ प्रतिशत रहा है।

कपास की बोआई वक्त से शुरू हुई। कुछ ज़िलों में वर्षा की कमी और देरी से वर्षा होने के कारण बोआई देरी से शुरू हुई।

कपास की खेती करनेवाले अधिकांश ज़िलों में जून के महीने में मात्रा से कम वर्षा हुई। जुलाई में तो हर जगह मात्रा से बहुत कम वर्षा हुई। कपास की खेती करनेवाले आधे से अधिक ज़िलों में अगस्त में साधारणतया काफ़ी वर्षा हुई और अन्य स्थानों में मात्रा से कम वर्षा हुई। इलाहाबाद और झाँसी कमिश्नरी के अधिकांश ज़िलों में सितम्बर में मात्रा से अधिक वर्षा हुई लेकिन अन्य जगहों में मात्रा से कम थी। आक्टोबर का महीना सूखा ही था। फ़सल को सूखे से बहुत नुक़सान हुआ। फ़ारस और अमरीका की कपासों के अलावा देशी कपास को अधिक हानि पहुँची। प्रथम क़िस्म की उपज सिंचाई से बहुत अच्छी हुई है। मुज़फ़्फ़रनगर और हरदोई के ज़िले में फ़सल को कीड़ों से हानि पहुँची और अन्य जगहों की फ़सल हर तरह की बीमारी से सुरक्षित रही। नवम्बर के आरम्भ होने तक बिनौले निकाल लिये गये थे क्योंकि इस वर्ष फ़सल कुछ पहले ही तैयार हो गई। सूत कुछ अच्छा नहीं हुआ। इस वर्ष उपज ५३ प्रतिशत रही जब कि पिछले साल ८१ प्रतिशत थी। पिछले १० वर्षों का औसत ७० प्रतिशत रहा है।

अगस्त में निकलनेवाली प्रथम भविष्य-सूचना में कपास की उपज का अनुमान ३,०३,००० एकड़ और दूसरी सूचना में ३,२९,००० एकड़ का अनुमान लगाया गया था। उन जगहों को छोड़कर जहाँ बन्दोबस्त आदि कारणों से फ़सल की रिपोर्ट नहीं मिल सकी अन्य जगहों की प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार कपास की खेती का कुल क्षेत्रफल ४,२७,४७६ एकड़ है जब कि पिछले वर्ष का संशोधित क्षेत्रफल ३९,१९८ एकड़ था। इस प्रकार ३३,२७८ एकड़ या ८.४ प्रतिशत की उन्नति मालूम होती है।

पिछले पाँच और दस वर्षों के औसत क्षेत्रफल से तुलना करने पर क्रमश: २८.७ और ३५.१ प्रतिशत की कमी दिखाई देती है।

उपज का अनुमान ४०० पौंड का १,०५,००० गट्ठर हर एक का किया जाता है जब कि गत वर्ष १,४६,००० गट्ठर था। इस हिसाब से ४१,००० गट्ठर या २८.१ प्रतिशत की कमी रही।

मिलों को छोड़कर कपास का स्थानीय प्रयोग ४०० पौंड का ५०,००० गट्ठर है और मिलों-द्वारा ४०० पौंड का १,००० गट्ठर है। इस प्रकार सादी कपास का प्रयोग मिलों में ५४,००० गट्ठर अनुमान किया जाता है।

बिनौला निकाली हुई कपास का विक्रय मूल्य ८२।२।७ पौंड के प्रत्येक मन का इस प्रकार है--

	नवम्बर, ३०, १९४०	नवम्बर ३०, १९४१
	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
कानपुर	१५ ४ ०	१४ १२ ०
आगरा	१४ ८ १	प्रथम श्रेणी १६ ८ ०
		द्वितीय श्रेणी १५ ० ०

रामपुरराज्य में कपास की फ़सल का क्षेत्रफल और उपज क्रमश: ६,५०० एकड़ और १,२०० गट्ठर है।

सी० मायादास,
डाइरेक्टर आफ़ एग्रीकल्चर
संयुक्त-प्रान्त

कृषि-विभाग, संयुक्त-प्रान्त
सन् १९४१ के धान की फ़सल की दूसरी भविष्य-सूचना

नोट--पिछले पाँच वर्षों (१९३९-४०) तक की धान की फ़सल का औसत संयुक्त-प्रान्त में सारे भारतवर्ष के कृषि-क्षेत्रफल का ९.६ प्रतिशत रहा है।

फ़सल की रिपोर्ट के अनुसार धान की खेती का कुल क्षेत्रफल ६३,९९,१७५ एकड़ होता है जब कि पिछले वर्ष इसी समय की रिपोर्ट में ७१,२१,९१४ एकड़ थी और अन्तिम भविष्य-सूचना में ७२,५७,९७८ एकड़ बताई गई थी।

सितम्बर तक के मौसम का वर्णन पहली भविष्य-सूचना में किया गया है। आक्टोबर के महीने में मात्रा से कम वर्षा हुई और नवम्बर का महीना बिलकुल सूखा ही बीता।

पहले और बाद बोई जानेवाली दोनों फ़सलों को सूखे से बहुत नुक़सान पहुँचा। मानसून कम होने के कारण सिंचाई न होनेवाली जगहों की हालत सिंचाई होनेवाली जगहों से बहुत ख़राब रही। बनारस, गोरखपुर, बस्ती और फ़ैज़ाबाद में कुछ जगहों पर बाढ़ से नुक़सान होने की सूचना भी मिली है और कुछ ज़िलों में गंधी मक्खी से भी फ़सल को नुक़सान पहुँचा है। पहले और बाद में बो[ई] जानेवाली दोनों क़िस्मों की उपज का अनुमा[न] ६५ प्रतिशत किया जाता है।

सी० मायादास,
डाइरेक्टर आफ़ एग्रीकल्चर,
संयुक्त-प्रान्त

कृषि-विभाग, संयुक्त-प्रान्त
सन् १९४१-४२ के तिल की फ़सल की अन्तिम रिपोर्ट

नोट--पिछले पाँच वर्षों (सन् १९३९-४० तक का तिल की खेती का औसत सारे भारत[वर्ष] के कृषि-क्षेत्रफल का लगभग ६.२ प्रति[शत] रहा है।

क्षेत्र--पैदावार-सूचना के अनुसार ति[ल] की खेती का क्षेत्रफल का अनुमान इस सूबे [में] ३,१६,६३४ एकड़ किया जाता है जब कि पिछ[ले] साल का क्षेत्रफल २,८३,०९७ एकड़ था। इस तरह ३३,५३७ एकड़ या ११.८ प्रति[शत] की उन्नति मालूम होती है।

पैदावार--सितम्बर तक की मौसि[म] हालत का वर्णन द्वितीय भविष्य-सूचना [में] दिया जा चुका है। आक्टोबर में कहीं कहीं [...] वर्षा हुई और नवम्बर बिलकुल सूखा ही बीत[ा]। कुछ जगहों में सूखे और आँधी से फ़सल [को] कुछ हानि पहुँची थी। कुछ ज़िलों में अन्न [...] हलका बताया जाता है और बाक़ी ज[गहों] में औसतन ठीक। हाल की सूचना के आ[धार] पर सूबे की इस वर्ष की फ़सल का अनु[मान] ७२ प्रतिशत लगाया जाता है जब कि पि[छले] साल ९० प्रतिशत था। पिछले १० [वर्षों] का औसत ८० प्रतिशत रहा। ख़ालिस [...] की उपज का अनुमान २६,३०० टन ल[गाया] जाता है जब कि पिछले साल २७,००० [टन] था। इस हिसाब से ७०० टन या २.४ प्रति[शत] की कमी दिखाई देती है।

अन्य पैदावारों के साथ तिल की [...] का क्षेत्रफल का अनुमान क़रीब १०,४६,[...] एकड़ और उपज का अनुमान २७,००० [...] लगाया जाता है।

उपज का अधिकांश साधारणतया स्था[नीय] आवश्यकताओं के लिए रख लिया जाता [है]।

सी० मायादास,
डाइरेक्टर आफ़ एग्रीकल्[चर],
संयुक्त-प्रान्त

खेती और उसके साथ के कुछ धंधे

लेखक, श्री गंगाधर सुकुल, बी० एस० सी० (एग्रीकल्चर)

आबादी अगर बढ़े तो बढ़े मगर ज़मीन का उसके साथ बढ़ना नहीं हो सकता। ऐसी हालत में काश्तकारों को मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा यह भी मानी हुई बात है। क्योंकि आबादी के बढ़ने से नतीजा यह होगा कि लोगों के बाँटे कम ही कम ज़मीन पड़ेगी और जैसा कि अनुभव और परम्परा से देखा जाता है प्राकृतिक और दूसरे ज़रूरी कारणों से हमारे देश में अस्सी फ़ी सदी आदमी अपनी आजीविका खेती और किसानी पर चलाते आये हैं, उनके सामने एक समस्या आ खड़ी होगी। फिर और ख़ास रोज़गारों के न होने से काश्तकारों को बाध्य होकर करना पड़ेगा--

(अ) अपनी रहन-सहन को बदलकर जो कि यों ही बहुत गिरी दशा को प्राप्त हो चुकी है।

(ब) खेती में काम आनेवाले अंगों को तोड़-मरोड़ करके जैसे--मजदूरों में कमी, अपने यहाँ पैदा किये हुए चारे की बरबादी व खाद की बरबादी जलाकर या बेचकर वगैरह।

(स) पैदावार बढ़ाकर। यह ज़रा कम ही सम्भव है।

हमारे किसान अभी उस अवस्था को नहीं पहुँच पाये हैं कि जिसको सुव्यवस्थित होने का श्रेय दिया जा सके। अनुभव और जाँच से यह पता चला है कि कुल साल भर में जितना काम करने का समय रहता है उसमें से ४५ फ़ी सदी तो बैल बेकार रहते हैं और ३० फ़ी सदी किसान। खेती के अतिरिक्त बैलों से बैलगाड़ी का काम लिया जा सकता है या पुर से पानी खींचने का सिंचाई के लिए। पर नहरों, रेलों और बसों ने एक तरह से बैलों का काम बहुत कम कर दिया है जिसका असर किसानों की आर्थिक दशा पर बुरा पड़ा है। हज़ारों के तो रोटियों के लाले पड़े गये हैं। दूसरी बात यह भी देखी गई है कि अनाज के अतिरिक्त और चीज़ों की उपज का कोई ऐसा उपयोग नहीं किया जाता जिससे कि किसानों को कुछ फ़ायदा हो। और यह शायद हम लोगों के ग़लत ढंग पर काम करने का फल है। जैसे सबसे ज़्यादा नुक़सान होता है गोबर को जला देने से जिसको कि खाद के रूप में खेत पाकर एक अच्छी फ़सल दे सकते। इसी प्रकार की ग़लतियों को अगर हम लोग देखें तो पता चलेगा कि किस प्रकार हम लोग अपनी दशा को दिन ब दिन ख़राब करते जा रहे हैं।

ऐसी हालत में अगर इस समस्या को सुलझाने की ओर ध्यान दिया जाय तो सबसे पहले यह आवश्यक होगा कि खेती के अतिरिक्त उसके अन्य अंगों को अपनायें। गौ-पालन, मधुमक्खी-पालन आदि का खेती के साथ संयोग कर देने से दशा बहुत कुछ सुधर जाने की आशा की जा सकती है। भिन्न भिन्न अंगों का संयोग इस बात को सामने रखकर ही करना चाहिए कि उससे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाया जा सके और कोई भी चीज़ जहाँ तक सम्भव हो ख़राब न जाय।

मामूली खेती के साथ और किन-किन चीज़ों का संयोग किया जा सकता है वह नीचे बताई जाती हैं। अब चाहे वे सबकी सब एक साथ ही संयोजित रूप में की जायँ या एक, एक दो-दो। यह रहेगा अपनी काम करने की शक्ति और सुविधा पर निर्भर।

(१) गौ-पालन यानी दूध-घी का व्यवसाय।

(२) मधुमक्खी यानी शहद का व्यवसाय।

(३) मुर्ग़ी आदि पालना।

(४) जानवरों का व्यवसाय जैसे भेड़, बकरी आदि।

यह बात नहीं कि हमारे किसान इन बातों को जानते ही नहीं हैं वे बहुधा करते भी देखे गये हैं। लेकिन जब तक ये सब व्यावसायिक ढंग से न की जायँ तब तक उनसे कोई फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता, वरन् मुमकिन है कि कुछ नुक़सान ही हो। इनकी उपेक्षा के कई कारण हो सकते हैं। जैसे, धर्म-भीरुता और वही लकीर के फ़क़ीर बने रहने की आदत। जो कुछ वंश-परम्परा से होता चला आ रहा है उससे कुछ ज़्यादा करने-धरने की कुछ आवश्यकता ही नहीं समझी जाती। अगर कहीं कुछ नई चीज़ में फ़ायदे की संभावना दीख भी पड़ी तो न किया जा सकेगा। कदाचित् कहीं पूर्वजों की तौहीनी न हो जाय। हमारा किसान किसी बात को जल्दी से समझकर अपना अच्छा-बुरा नहीं तय कर पाता और यही कमी उसके उत्थान में एक बहुत बड़ी रोक हो जाती है।

गौ-पालन या दूध-घी का व्यवसाय शायद ऐसा है कि बिना कुछ ख़ास असुविधा के सभी जगह किया जा सकता है। दूध के व्यवसाय के लिए गाय पालना ज़्यादा अच्छा रहता है। क्योंकि पहली बात तो यह कि दूध ज़्यादा होगा और फिर खिलाई में ज़्यादा ख़र्च नहीं। मगर दूध की खपत के लिए शहरों या घनी आबादियों के समीप रहना आवश्यक-सा हो जाता है। इसलिए अगर ऐसा सम्भव नहीं तो वैसी दशा में घी का व्यवसाय ही ज़्यादा लाभदायक सिद्ध होगा। घी का व्यवसाय करना है तो फिर उसके लिए भैंसें ज़्यादा उपयोगी होंगी क्योंकि उससे ज़्यादा घी मिलता है। एक जानवर के चारे का प्रबन्ध डेढ़ बीघे ज़मीन से साल भर चल सकता है इसी हिसाब से जानवर पालने चाहिए तो फिर चारे के ख़रीदने की आवश्यकता न रह जायगी।

मधुमक्खी पालना एक नया-सा हो रोज़गार है पर फिर भी यह कहना पड़ेगा कि इससे आमदनी के अलावा मनोरंजन भी ख़ूब होता है। कुछ ही रुपयों से ख़ास ख़ास सामान ख़रीद कर या डिपार्टमेंटल सरकारी मदद लेकर यह शुरू किया जा सकता है। इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि यह धंधा किसी शहर के पास ही रहकर उठाया जा सके।

मुर्ग़ी वग़ैरह पालना ज़रा हेठी नज़र से देखा जाता है। पर ज़रा ग़ौर करने पर मालूम होगा कि इससे ज़्यादा मुनाफ़ेवाला व्यवसाय जो कि इतने कम दामों में शुरू किया जा सके दूसरा कोई नहीं है। एक अच्छी मुर्ग़ी कुछ नहीं तो दस या बारह रुपये साल तक दे सकती है। मगर ख़याल रहे कि हमेशा अच्छी ही मुर्ग़ियाँ पालना चाहिए। ज़्यादा पालने से कम पालना अच्छा अगर अच्छी ज़्यादा न मिल सकें। यह तो फ़ायदे की चीज़ है ही पर कुछ ख़ासतौर की मुर्ग़ियाँ जैसे 'टर्की' वग़ैरह बहुत अच्छे दाम लाती हैं। एक जोड़े से डेढ़ वर्ष में कम से कम एक दर्जन टर्कियाँ तैयार की जा सकती हैं। और बड़े दिन के अवसर पर एक एक पाँच-छः रुपये की बिकती हैं। इस तरह शहरों के पास बहुत फ़ायदा हो सकता

है। खिलाई-पिलाई पर कुछ खास खर्च नहीं, कूड़े-कर्कट का अनाज काम आ जाता है, कीड़े-मकोड़े भी नहीं रहने पाते। इस प्रकार बहुत-से कीड़ों से जैसे दीमक वग़ैरह से रक्षा ही होती है।

अब रहा जानवरों का व्यवसाय। जिन्दा जानवरों का भी रोजगार किया जा सकता है और उनसे पाये गये ऊन वग़ैरह का भी। पर यह उसी जगह रक्खे जा सकते हैं जहाँ कि चराई का अच्छा प्रबन्ध हो। पहाड़ी जगहों पर इनका रखना ज्यादा उपयोगी होगा क्योंकि अधिकतर वहां पर घास की बहुतायत रहती है।

यही नहीं और भी अनेकों रोजगार हैं। जैसे रेशम अंडो या फल लगाना आदि। मगर सुविधानुसार ही यह तय करना चाहिए कि कौन 'संयोग' कहाँ पर उपयोगी होगा। उनका ठीक चुनाव ही उनकी सफलता का कारण होता है और यही इसका बीजमंत्र है। इन्हीं सब बातों को सुगम कर देने के लिए जिस जगह जो 'व्यवसाय या खेती के अंग' संयुक्त करके फ़ायदा उठाया जा सकता है, सरकारी डिमान्स्ट्रेशन फ़ार्म हैं। उनसे हर मामले में राय लेकर चलने में नुक़सान की सम्भावना बहुत कुछ कम हो जाती है।

खेती के उपयोगी अंगों के संयोग से बहुतेरे फ़ायदे होते हैं। पहली बात तो यह है कि वह समय जो कि किसान के पास फालतू बचता है उसका सुन्दर उपयोग होगा। उस उपयोग से आर्थिक दशा सुधरेगी ही। और इस प्रकार एक खाता-पीता सुखी किसान अपने नैतिक विकास की ओर ज्यादा ध्यान दे सकेगा। अगर पानी न बरसा तो खेती न होगी, यह ठीक है मगर किसान कम से कम अपने खेती के दूसरे अंग या अंगों से फ़ायदा उठा सकेगा इस सामर्थ्य पर उसके अन्दर एक दृढ़ता क़ायम हो जायगी और उसमें किसी काम को कर उठाने का उत्साह होगा क्योंकि अब न तो वह उतना दीन ही रहेगा न हीन।

प्रायः जितने भी 'संयोगों' का उल्लेख किया गया है उनसे प्रचुर मात्रा में खाद मिलेगी जिसकी कि ज़रूरत हमारी जमीन को बहुत ज्यादा है। इस प्रकार निस्सन्देह उपज बढ़ेगी जो कि आज दिन-ब-दिन घटती चली जा रही है। सच तो यों है कि इन संयोगों का प्रारम्भ वैज्ञानिक और व्यावसायिक आधार पर इँगलैंड से ही हुआ था। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में देखा गया कि वहाँ के किसानों की फ़सल दिन-ब-दिन बुरी तौर से गिरती चली जाती थी। इससे एक प्रकार का आतंक-सा फैल गया था और जल्दी से जल्दी इसका रोका जाना आवश्यक था। बात यह है कि वहाँ की जमीन में वानस्पतिक पदार्थों की कमी है और उसकी पूर्ति के लिए गोबर से बढ़कर दूसरी चीज हो भी नहीं सकती। इस प्रकार वहाँ पर खेती के साथ ही साथ गाय आदि का भी रखना शुरू हुआ।

स्वास्थ्य की उन्नति होगी, कारण फिर एक बार दूध-घी घर घर होने लगेगा और नन्हें नन्हें बच्चे, घर की स्त्रियों के लिए भी ऐसे काम निकल आयँगे कि वे भी हाथ बँटा सकें।

इस प्रकार सब काम बिना और ज्यादा मजदूरों के बढ़ाये हुए ही हो जायगा। फिर भूमि अगर कम भी बाँटे पड़े तो इन अ[...] व्यवसायों के साथ किये रहने की वजह [...] आय का हमेशा पक्का-पोढ़ा हिसाब रहेगा [...] इस प्रकार आर्थिक अवस्था सुधरती ही जायगी।

मगर यह एक बार दुहराने की आवश्यक[ता] है कि इन खेती के अंगों का संयोग समझ-बूझ [...] कर ही करना चाहिए और ध्यान रहे इस ब[ात] का कि जिस प्रकार भी हो कोई भी चीज [...] खराब न जाने पावे। कार्यक्रम इस प्रकार [...] रखना चाहिए कि सब चीजों पर बरा[बर] ध्यान दिया जा सके। कहीं ऐसा न हो कि इतनी ज्यादा चीजें साथ ही साथ कर उठा [...] जायँ कि एक भी भली भाँति न की जा सके [...] इस प्रकार तो नुक़सान अवश्यम्भावी है [...] स्थिति या जगह जहाँ पर खेती की जा र[ही] हो उस पर भिन्न भिन्न अंगों का चुनाव ब[हुत] कुछ निर्भर रहेगा। और बिना सब बातो [...] भली भाँति सोचे-विचारे कुछ कर उठ[ना] मूर्खता में शामिल होगा।

—

दुखिया

लेखक, श्री जगदीशप्रसाद गुप्त, 'विश्व'

(१)

बादल के आँसू सूखे,
रवि ज्वाला लगा उगलने।
तन की क्या जठरानल में,
अब लगा हृदय भी जलने॥

(२)

जिस छोटी-सी कुटिया में,
बहती करुणा की धारा।
वह भी अब टूट गई है,
'दुखिया' का कौन सहारा!

(३)

दुख की इस भीषणता में,
मानो यमदूत खड़े हैं।
टूटी खटिया पर 'वे' भी,
टूटा उर लिये पड़े हैं॥

(४)

ज्वर से पीड़ित दो बालक,
तपते तन अंगीठी से।
हैं तीन दिनों के भूखे,
मिल गये पेट पीठी से॥

(५)

तन पिंजर शेष रहा है,
कंकाल सदृश हो आये।
दो गृद्ध सामने तरु पर,
बैठे हैं दृष्टि लगाये॥

(६)

आखिर वह दिन भी आया,
जब काल शीश पर छाया।
खो गये हृदय के टुकड़े,
यह भी थी प्रभु की माया।

(७)

दो दिन के इस जीवन में,
दुख कौन न मैंने भोगा?
प्रभु! क्या इस वंचक जग में
मेरा भी कोई होगा?

——

हल पुरस्कार-प्रतियोगिता

नीचे लिखे प्रश्न का उत्तर दीजिए और २०), १०) और ५) रुपये का नक़द इनाम लीजिए

नीचे एक प्रश्न दिया जा रहा है। इसका उत्तर हिन्दी या उर्दू में लिखकर भेजनेवालों में तीन को, जिनके उत्तर सर्वोत्तम होंगे, क्रमशः २० रुपये, १० रुपये और ५ रुपये का नक़द पारितोषिक दिया जायगा। इस पारितोषिक के नियम भी यहाँ दिये जा रहे हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने से पहले इन नियमों को अच्छी तरह से पढ़ लेना चाहिए।

प्रश्न

ग्राम-जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली एक कहानी लिखिए।

यह कहानी ३,००० शब्दों यानी 'हल' के ३ छपे सफ़्हों से अधिक बड़ी न होनी चाहिए। कहानी भेजनेवाले को कहानी के साथ एक सर्टीफ़िकेट भी इस आशय का भेजना चाहिए कि यह कहानी स्वयं उनकी लिखी हुई है और पहले कहीं छपी नहीं है।

नियम

१—यह प्रतियोगिता "हल" के सिलसिले में प्रारम्भ की जा रही है। जो उत्तर आयेंगे उनमें सर्वोत्तम तीन को पारितोषिक प्रदान किया जायगा। प्रतियोगिता में आये हुए उत्तरों की संख्या और विषय के अनुसार पारितोषिकों की संख्या और पुरस्कार की रक़म में कमी बेशी की जा सकेगी। यह प्रतियोगिता हल के अक्टूबर के अंक से प्रारम्भ हुई है और अप्रैल तक चलेगी।

२—इस मास की प्रतियोगिता के सिलसिले में भेजे जानेवाले उत्तर सम्पादक "हल", इलाहाबाद के पास १५ मार्च तक पहुँच जाने चाहिए। १५ मार्च सन् ४२ के बाद जो उत्तर भेजे जायँगे उनपर विचार नहीं किया जायगा।

३—उत्तर संक्षिप्त और विषय के भीतर ही होना चाहिए। विषय का ध्यान भाषा और शैली की अपेक्षा अधिक किया जायगा और संपादक को यह स्वाधीनता होगी कि वह उत्तर की शब्दावली में जैसा उचित समझे वैसा परिवर्तन कर दे।

४—इस तरह इस प्रतियोगिता में पुरस्कार पाने का एक विद्यार्थी को उतना ही अवसर है जितना कि अनुभवी लेखक को हो सकता है।

५—जिन लेखों पर पुरस्कार दिया जायगा वे सब ग्राम-सुधार-अफ़सर की सम्पत्ति होंगे और यह उनकी मर्ज़ी पर होगा कि वे उन्हें चाहे जिस शकल में प्रकाशित करायें या बिलकुल प्रकाशित न करायें।

६—इस प्रतियोगिता और इसके पुरस्कार के सिलसिले में आनेवाले पत्रों का उत्तर न दिया जायगा।

७—प्रतियोगिता में भाग लेनेवालों के पास उनकी रचनायें वापस न भेजी जायँगी इसलिए यदि वे चाहें तो अपनी रचना की प्रतिलिपि अपने पास रख सकते हैं। ये उत्तर हिन्दी, उर्दू या अँग्रेज़ी में लिखकर भेजे जा सकते हैं।

८—प्रतियोगियों को चाहिए कि वे साफ़-साफ़ और काग़ज़ के एक ही तरफ़ चौड़ा मार्जिन छोड़कर लिखें। उन्हें अपनी रचना के अन्त में अपना नाम और पूरा पता भी लिखना चाहिए। इस प्रतियोगिता का परिणाम, पारितोषिक और विजेताओं के नाम उचित समय पर प्रकाशित किये जायँगे।

९—ग्राम-सुधार-अफ़सर, संयुक्तप्रान्त का निर्णय अन्तिम होगा और वही सबके लिए मान्य होगा।

१०—पारितोषिक इस प्रकार दिया जायगा—

पहला पारितोषिक २० रुपये का, दूसरा १० रुपये का और तीसरा ५ रुपये का होगा।

ग्राम-सुधार-अफ़सर,
संयुक्तप्रान्त।

पिछले प्रश्नों का उत्तर

गत दिसम्बर और जनवरी के महीनों में जो प्रश्न छपा था उसके उत्तर आगये हैं और वे अंतिम निर्णय के लिए ग्राम-सुधार-अफ़सर के पास भेज दिये गये हैं। 'हल' के आगामी अंक में इस निर्णय की सूचना पुरस्कार-विजेताओं के नाम के साथ छपेगी। कुछ उत्तर भी छपेंगे।

संसार का संक्षिप्त घटनाचक्र

लेखक, रायबहादुर पण्डित शुकदेवबिहारी मिश्र

इस विषय का अपना गत लेख मैंने २१ जनवरी को लिखा था और आजवाला २० फ़रवरी को लिख रहा हूँ। इस महीने में भी हमारा घटनाचक्र बहुत तेजी से चला है। अमरीका युद्ध-सामग्री बहुत शीघ्रता से बना रही है। हाल ही में ३५,००० टन का महायुद्ध पोत तैयार हुआ है। आशा है कि वहाँ साधारण जहाज प्रतिदिन दो के हिसाब से भविष्य में तैयार होंगे। सिंगापुर के गिरने से अमरीका और आस्ट्रेलिया को भी भारी क्षोभ हुआ है, क्योंकि यदि जावा और सुमात्रा भी निकल जावें तो अमरीकन जल-शक्ति के लिए उस ओर युद्धार्थ पहुँचने का मार्ग बहुत बढ़ जावेगा। इसलिए ब्रिटानिया के अतिरिक्त ये दोनों शक्तियाँ भी इन टापुओं की रक्षा में प्रचुर परिश्रम करेंगी। ऐटलांटिक महासागर में जो अमरीका और इँग्लैंड के बीच सामान और सेनाओं से लदे हुए जहाज़ आते-जाते थे, उनपर जो आक्रमण जर्मनी की ओर से हुआ करते थे, वे अब ढीले हैं। फ़्रांस के ब्रेस्ट नामक बन्दरगाह में जो तीन जर्मन भारी युद्धपोत थे, वे किसी समय उपर्युक्त समुद्र-यात्रा पर छापे मार सकते थे। इन कारणों
सरकार को उस बन्दरगाह पर बहुतेरे वा
वाले आक्रमण करने पड़े तथा उनके रोक
को उधर युद्धपोतों का भी काफ़ी प्रबन्
करना पड़ता था। इन आक्रमणों से उन
हानि काफ़ी पहुँची तथा वे सरकारी जाह
को नुक़सान न पहुँचा पाये, किन्तु सरकार
भी इन प्रबन्धों में काफ़ी अड़चन पड़ती
और वे वायुयान तथा जलयान अन्यत्र का
करने से वंचित रहते थे। इन दिनों जर्म
ने वे तीनों भारी युद्धपोत इँगलिश चैनेल
मार्ग से निकालकर जर्मनी पहुँचा दिया
मार्ग में अँगरेज़ी वायुयानों ने उनपर करा
आक्रमण किया और समझा जाता है
उन्हें हानि भी पहुँचाई, किन्तु निश्चित
नहीं है। इस वायुरण में प्रायः बीस सरका
तथा आठ-दस जर्मन वायुयान नष्ट हुए
समय कोहरे आदि के कारण कुछ अन्धका
पूर्ण था, जिससे वे निकल जाने में सफल
गये। फिर भी उनके इस प्रकार ब्रेस्ट बन्द
से हट जाने में है सरकारी लाभ भी, जै
कि ऊपर दिखलाया गया है।

उत्तरी अफ़्रीका में जो युद्ध होता
उसमें पहले तो जर्मन सेनापति रोमेल पश्चि
की ओर भागते रहे, किन्तु पीछे कुमक पा
लौट पड़े तथा सरकारी दल को पूरब की
हटना पड़ा। दो-चार दिनों से अब रोमे
साहब फिर कुछ ठहर गये हैं; यह पता
है कि आगे इधर का युद्ध किस प्रकार चले
आशा यही है कि अपनी विजय होगी।
की ओर जर्मनी हार रही है और रूसी
आगे बढ़ती जा रही है। ख़ारकोव
स्मालेंस्क के निकट कठिन युद्ध हो रहा
मास्काऊ पर आक्रमण का भय जाता
है किन्तु यूक्रेन, क्राइमिया तथा लेनिनग्रे
निकट जो युद्ध चल रहा है, उसमें अभी

रूसी स्कूलों के लड़के युद्धक्षेत्र के सैनिकों के लिए उपहार जमा कर रहे हैं।

श्चित फल नहीं
विजय की
स लाख नवीन
न्ध किया है।
नान-द्वारा रूस
सुदूर प्राची
नेड़ नहीं हुई है
जर्मनी की उत्तर
सुगमतापूर्वक
छोड़ने को तैय
मार्च के अन्त
होती है? नई
वर्तमान रूसी
नी को इस नवं
रहा है। यदि
न दल का अधि
झाड़े के पीछे व
ती हैं, उसमें
यह भी समझ
जर्मनी शाय
सेना रक्खे, तथ
इराक़ के मा
प्रयत्न करे। क
वाला जर्मन प्रय
अब जर्मनी
युद्ध चला सक
हैं और यदि
तो उसका खेद
रूस से युद्ध
के वह टर्की
क्या करेगी, य
अब तक तो वह
हुई है और
रही हैं; पि
उसकी मि
विचारणी
हैं कि टर्की
हैं। देखना च
कर काम क
रहती है
चल रहा
में सन्देह न
को मिलाकर
तो ईरान
सरकार की

निश्चित फल नहीं निकला है, यद्यपि दृढ़ [illegible]शा विजय की है। रूसी सरकार ने प्रायः [illegible]चास लाख नवीन सेना खड़ी करने का भी [illegible]बन्ध किया है। अमरीका और बितानिया [illegible]मान-द्वारा रूस को सहायता पहुँचा रही [illegible]। सुदूर प्राची में जापान से अभी रूसी [illegible]भेड़ नहीं हुई है। योरप में दो-ढाई महीनों [illegible] जर्मनी की उतरती हुई कला है। फिर भी [illegible] सुगमतापूर्वक अपने जीते हुए रूसी भागों [illegible] छोड़ने को तैयार नहीं है। देखना यह है [illegible] मार्च के अन्त तक उसके बल की क्या [illegible] होती है? नई सेना जर्मनी ने तैयार की [illegible] वर्तमान रूसी आक्रमण रोकने में भी [illegible]र्मनी को इस नवीन सेना से भी काम लेना [illegible] रहा है। यदि मार्च के अन्तपर्यन्त इस [illegible]न दल का अधिकांश काम में आ जावे, [illegible] जाड़े के पीछे वह जो युद्ध फिर से ठानना [illegible] है, उसमें कमी आ जावेगी। बहुतेरे [illegible] यह भी समझते हैं कि अब की बार जाड़े [illegible]छे जर्मनी शायद रूस की ओर थोड़ी ही [illegible]ना रक्खे, तथा टर्की की ओर आक्रमण [illegible] इराक़ के मार्ग से कोहकाफ़ पर जाने [illegible] प्रयत्न करे। कहते हैं कि गत वर्ष पेट्रोल [illegible]ला जर्मन प्रयत्न असफल हो गया था, [illegible] अब जर्मनी के पास केवल चार मास [illegible] युद्ध चला सकने भर को पेट्रोल शेष रह [illegible] है और यदि वह अति शीघ्र तेल न पा [illegible] तो उसका खेल बिगड़ सकता है। इसी [illegible] रूस से युद्ध किसी प्रकार स्थगित या [illegible]रके वह टर्की पर झुकेगी। ऐसी दशा में [illegible] क्या करेगी, यह भी एक कठिन समस्या [illegible] अब तक तो वह बितानिया और अमरीका [illegible]ली हुई है और ये दोनों उसे अस्त्र-शस्त्र [illegible] दे रही हैं; फिर भी कठिन समय पड़ने [illegible] भी उसकी मित्रता दृढ़ रहेगी या नहीं, [illegible] एक विचारणीय विषय है। लोगों का [illegible]ना है कि टर्की अपनी बात पर पक्की रहा [illegible]ती है। देखना चाहिए कि सब कुछ नक्की [illegible] रखकर काम करने के समय भी उसकी [illegible] दृढ़ता रहती है या नहीं? जहाँ तक अभी [illegible]र-बार चल रहा है, वहाँ तक सरकार को [illegible] बात में सन्देह नहीं समझ पड़ता है। यदि [illegible] को मिलाकर या जीतकर जर्मनी इराक़ [illegible]चेगी, तो ईरान का भी प्रश्न उठ खड़ा [illegible]गा। सरकार की शक्ति इस ओर निर्बल न पड़ेगी, ऐसी आशा है। विशेषतया इस कारण से भी कि इधर रूसी दल का भी सहयोग हमें प्राप्त रहेगा। यदि ईरान में जर्मनी का प्रभाव किसी प्रकार से बढ़ा तो पश्चिम से भी भारतीय रक्षा का प्रश्न उठ खड़ा होगा। हर हालत में १९४२ में युद्ध का क्या रुख़ रहता है, यह बात पूरब और पश्चिम दोनों ओर से भारत के लिए महत्ता की है।

अनलिस्ट के भेजे हुए तारों से समझ पड़ता है कि रूसी लोगों ने कोई भारी काम किया है किन्तु अभी उसके पूरे न हो जाने के कारण वे उसका कथन नहीं करते तथा जर्मनी हार के कारण चुप है। ईजिप्ट (मिस्र) में प्राचीन मन्त्रिमंडल गिर गया है तथा ज़ग़लुल पार्टीवाले नहसपाशा ने नया मन्त्रिमंडल बनाया है। अब वहाँ पार्लमेंट का नया चुनाव भी होने ही वाला है जिसमें ज़ग़लूलियों के जीतने की आशा है। सीरिया, लेबैनन, इराक़, ईरान आदि में सरकारी प्रभाव अक्षुण्ण है। उत्तरी और दक्षिणी अमरीका अभी तक पूरे मेल के साथ काम कर रही हैं। रूस की अभी तक चढ़ती कला है, किन्तु मार्च के अन्त में क्या दशा रहती है, इस बात पर रूसी प्रश्न बहुत कुछ निर्भर है।

जापान सुदूरप्राची में काफ़ी द्वन्द मचाये हुए है। मलय देश पर उसका पूरा अधिकार हो गया है। आशा थी कि सिंगापुर में सरकार कुछ पैर अड़ा सकेगी, किन्तु यह बात भी न हो सकी, और थोड़े ही दिनों के युद्ध में वह टापू जापान के अधिकार में आगया। दशा ऐसी थी कि जब तक बर्मा और सिंगापुर अपने हाथ में थे, तब तक भारत पर आँच नहीं आ सकती थी। अब सिंगापुर के गिर जाने से यदि चाहे तो जापान भारत पर वायु तथा जल-दल द्वारा आक्रमण कर सकता है और अपने को अधिक सम्पन्न समझने से सेना भी उतार सकता है, यद्यपि ऐसा करने से उसपर भी खटका आ सकता है। लंका पर भी जापानी आक्रमण का भय है। इस समय बर्मा में घोर युद्ध हो रहा है। जापानी लोग सालवीन नदी पार कर चुके हैं और अब विलिन नदी पार करने के प्रयत्न में हैं। अभी इस प्रयत्न में उन्हें सफलता नहीं मिल रही है और उनके दल की छीज भी कम नहीं हो रही है। पूर्वी बर्मा में जो चीनी दल हमारी सहायता को आया था, उसने श्याम पर आक्रमण कर दिया है, जिसमें कि जापानी दल पूरा बल दक्षिणी बर्मा पर ही न लगा

एक रूसी कारख़ाने की स्त्रियाँ सैनिकों की लेनिनग्रेड की रक्षा करने के लिए उत्साहवर्द्धक गीत गा रही हैं।
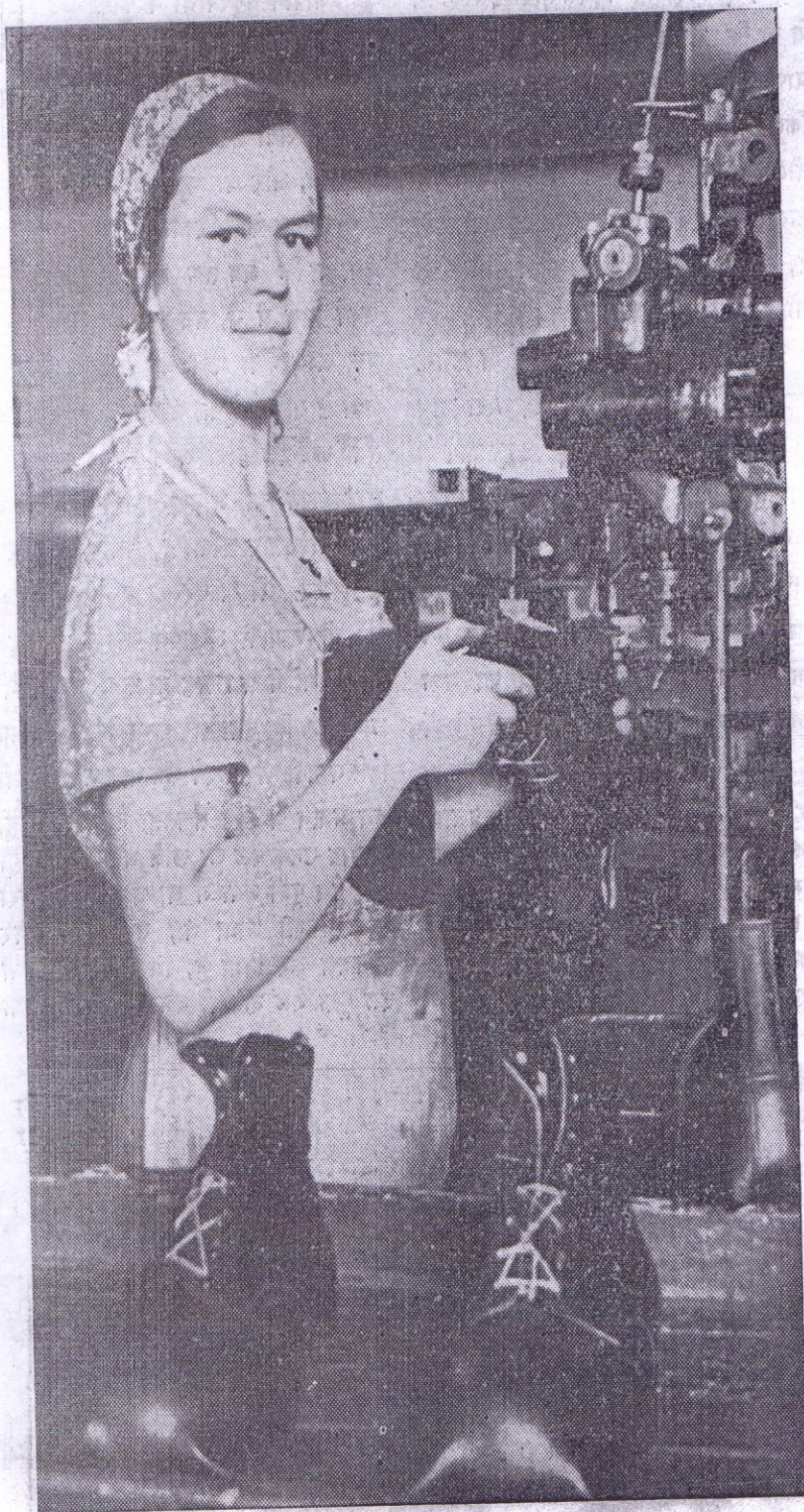
रूस के कल कारख़ाने में सब काम स्त्रियों ने सँभाल लिये हैं ताकि पुरुष लालसेना में भर्ती होकार देश के लिए लड़ें।

सके। भारतीय जंगी लाट महोदय ने फिर भी कहा है कि अभी कुछ दिनों तक निराशापूर्ण ख़बरें सुनने के लिए हम लोगों को सन्नद्ध रहना चाहिए। इस कथन से बर्मावाली लड़ाई में शीघ्र विजय की आशा कम है, यद्यपि उसकी रक्षा के सुगम होने से हार का खटका भी विशेष नहीं है। आशा है कि भारतीय, योरोपीय और चीनी दल मिलकर बर्मा की रक्षा में अन्ततोगत्वा शायद समर्थ हो जावें। जापानियों ने यह हवा उड़ाई थी कि बहुत-सी भारतीय सेनायें उनसे मिल गईं। यह बात बिलकुल झूठ है, ऐसा जंगी लाट महोदय का कथन है। कहीं-कहीं यह भी हवा उड़ाई गई कि सालवीन नदी पार करने में बर्मा के निवासियों ने ही जापान की सहायता ख़बर-द्वारा की थी। यह बात भी अशुद्ध समझ पड़ती है। राजनीतिक मामलों में भारतीयों त[...] बर्मावालों में से कुछ का विरोध सरकार [...] अवश्य है, किन्तु इस दर्जे का नहीं [...] शत्रुओं से मिलकर देश पर उनका अधिक[...] ही करा दिया जावे। योग्य तो यह है [...] अपने देश के लिए हम लोग जी तोड़कर ल[...] तक, और हमारी सेनायें ऐसा कर भी र[...] हैं। किन्तु कम से कम शत्रुता का व्यवह[...] अपने ही पक्ष के प्रतिकूल तो हो नहीं सकता[...] ईश्वर ने चाहा तो बर्मा में अपनी ही वि[...] होगी।

इन दिनों चीनी राष्ट्रपति चियांगकाई [...] महोदय कई मामले प्रेमपूर्वक निबटाने [...] विचार से भारत पधारे हैं। अब तक र[...] होकर योरोपीय युद्ध-सामग्री बर्मा सड़क [...] द्वारा चीन पहुँचाई जाती थी, किन्तु [...] रंगून के जापानी हाथ में पड़ जाने का [...] उपस्थित है। इसलिए रंगून बन्दरगाह [...] निकटवाले समुद्र में नाशकारी सुरंगें बि[...] गई हैं जिससे कि कोई जहाज़ उसके नि[...] न जा सके। इसलिए चीन में सामान पहुँ[...] का दूसरा मार्ग आसाम होकर स्थापित कि[...] गया है। शायद उसी के मामले निबटाने [...] तथा बर्मा में फ़ौजी सहायता देने की ब[...] को सुलझाने के लिए ही राष्ट्रपति महो[...] भारत आये हों। कहते हैं कि जिन बातों [...] लिए वे आये थे उनका निबटारा ठी[...] ठीक हो गया है। वे क्या हैं सो [...] बात है। राष्ट्रपति महोदय का भारत[...] राजनीतिक नेताओं से भी मित्रभाव [...] इसी लिए महात्मा गांधी, जवाहर[...] नेहरू, जिन्ना आदि नेताओं से मि[...] आपने भारतीय राजनीतिक झमेला [...] सुलझाने का भाव प्रदर्शित किया। [...] हमारे सब नेताओं से बहुत प्रेम[...] मिले, किन्तु कोई मामला अभी तक [...] निबट नहीं सका है। जिन्ना साहब का [...] है कि भारतीय मुसलमानों के नेता वे [...] हैं तथा हिन्दुओं के महात्मा गांधी। जब [...] कांग्रेस यह बात स्वीकार न करे तब [...] निबटेरे की बात करने को भी वे तैयार [...] हैं। उधर कांग्रेस का कथन है कि वह स[...] हिन्दू-मुसलमान दोनों से समभाव रखने[...] आजकल कांग्रेस के प्रधान नेताओं [...] श्रीयुत राजगोपालाचारियर ने कहीं यह[...]

[...] दिया कि मुस्लिम [...] गीय प्रधान संस्थ[...] महोदय ने यह [...] उपर्युक्त विचारों [...] उधर हिन्दू-महास[...] इस बात का स[...] राजगोपालाचारि[...] उनका यह विचा[...] नेतापन का कथन [...] है न कि इसका [...] की नेत्री है। च[...] भारतीय नेताओं [...] मामला शायद तय [...] ब्रिटिश महामन्त्र[...] सकते हैं। अभी [...] समझ पड़ता कि [...] मनचाही शर्तों क[...]

जापानी यु[...] तथा बर्मा के अति[...] सुमात्रा, सेलिवी[...] है। लूज़ान में [...] महोदय थोड़ी से [...] जापानियों से दबे [...] ही दिनों में उस [...] जावेगी। जावा [...] नहीं पाये हैं। [...] जाने जाते हैं, व[...] कुछ बिगाड़ते जा[...] के समान जापान[...] रही हैं और बिना [...] के पीछे उनका [...]

आस्ट्रेलिया [...] जापानी बहुत [...] बन्दरगाह हैं जि[...] के सब अ[...] है। यदि जाप[...] [...] तथा अ[...] [...] तो अमरीक[...] [...] कोई स्थान [...] [...] कहने में अमर[...]

दिया कि मुस्लिम लीग और कांग्रेस दो भारतीय प्रधान संस्थायें हैं। इसका अर्थ जिन्ना महोदय ने यह लगाया कि कांग्रेस उनके उपर्युक्त विचारों को स्वीकार करने लगी है। उधर हिन्दू-महासभा के एकाध नेता ने भी इस बात का सन्देह प्रकट किया। इसपर राजगोपालाचारियर जी ने कह दिया कि उनका यह विचार था ही नहीं, वरन् वे केवल नेतापन का कथन अपने व्याख्यान में कर रहे थे न कि इसका कि कांग्रेस केवल हिन्दुओं की नेत्री है। चीनी राष्ट्रपति से बातें तो भारतीय नेताओं से प्रेमपूर्वक हुई, किन्तु कोई मामला शायद तय नहीं हो सका है। यह मामला ब्रिटिश महामन्त्री महोदय ही निर्णीत कर सकते हैं। अभी तक उनके रुख से ऐसा नहीं समझ पड़ता कि वे भारतीय नेताओं की मनचाही शर्तों को स्वीकार करना चाहते हैं।

जापानी युद्ध पूरब में इस समय मलय तथा बर्मा के अतिरिक्त लूज़ान (फ़िलिपाइंस), सुमात्रा, सेलिवीज़, जावा आदि में हो रहा है। लुज़ान में अमरीकन जनरल मैकार्थर महोदय थोड़ी सेना होने पर भी अभी तक जापानियों से दबे नहीं हैं। आशा है कि थोड़े ही दिनों में उस ओर अमरीकन कुमक पहुँच जावेगी। जावा में अभी तक जापानी उतर नहीं पाये हैं। इतर स्थानों में वे जहाँ-जहाँ बढ़ते जाते हैं, वहाँ वहाँ डच लोग पेट्रोल के कुएँ बिगाड़ते जाते हैं। बात यह है कि जर्मनों के समान जापान के हाथ में भी पेट्रोल थोड़ा ही है और बिना अधिक पेट्रोल पाये साल भर के पीछे उनका काम न चलेगा।

आस्ट्रेलिया पर अधिकार करने के जापानी बहुत उत्सुक हैं। वहाँ ४० अच्छे बन्दरगाह हैं जिनमें १२ औवल दर्जे के हैं। वे देश के सब ओर ६,००० मीलों पर फैले हुए हैं। यदि जापान फ़िलिपाइन्स, जावा आदि टापुओं तथा आस्ट्रेलिया पर अधिकार पा जावे, तो अमरीकन जहाज़ों के इस ओर ठहरने का कोई स्थान ही न रह जावे और जापान से लड़ने में अमरीका को काफ़ी दिक्कत हो।

रूस के वयस्क बालक भी युद्ध में काफ़ी हिस्सा ले रहे हैं। यह एक बालक का चित्र है जो कृषि की एक मशीन को सफलतापूर्वक चला रहा है।

इसी लिए जापान इन प्रदेशों को अति शीघ्र अधिकार में लाने की युक्ति में है। भारत पर हाथ वह शायद पीछे बढ़ाने की सोचे। तब तक सरकारी बल-वृद्धि भी इस ओर हो जावेगी। जापानी महत्ता थोड़े ही दिनों की पाहुनी समझ पड़ती है।
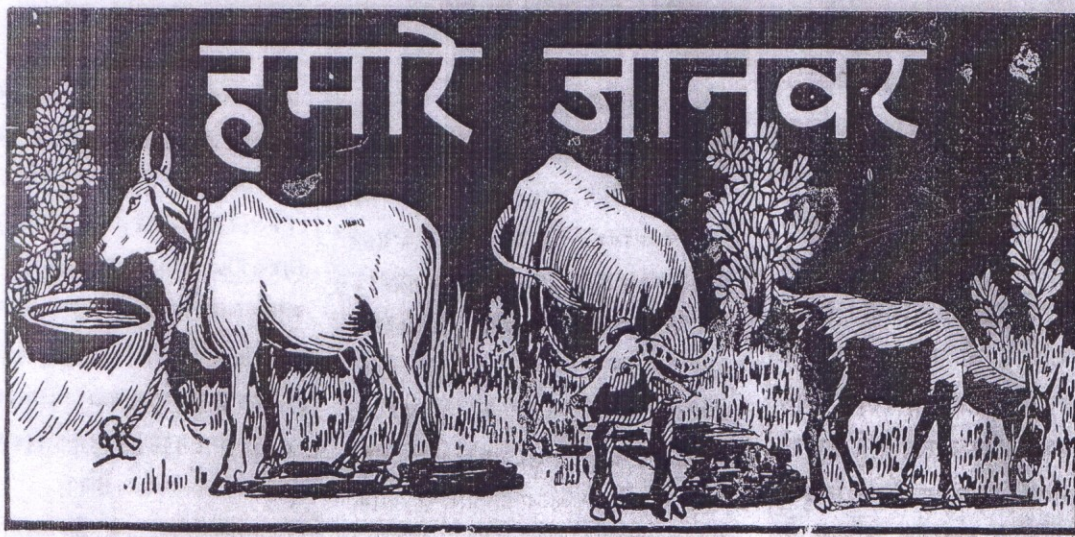
पशुओं की बीमारियाँ और उनका इलाज

लेखक, डाक्टर ख़्वाजा अमीनुद्दीन ग़ोरी, साहित्य-विशारद, एल० वी० पी०,
वेटेरिनरी आफ़िसर, ख़ानपुर कोटा स्टेट, राजपूताना

हीमोरेजिक सेपटी सीमिया या गलघोटू, घुड़वा, भैंसों की बीमारी, गले की ख़तरनाक सूजन।

यह मर्ज़ माता के बाद दूसरे नम्बर पर पशुओं की ख़ासतौर से भैंसों की ख़तरनाक छूतदार बीमारी है, जिसमें कि पशु को बुख़ार हो जाता है, साँस मुश्किल से आती है। गले पर सूजन हो जाती है। ज़बान सूज कर बाहर निकल आती है।

यह बीमारी तर मौसम में होती है, ज़्यादातर बरसात में और कम तादाद में सर्दियों में पानी बरसने के बाद होती है। तलहटी में जहाँ पानी हर वक्त भरा रहता है बहुत होती है। ऐसी जगह जहाँ नहरों से पानी दिया जाता हो वहाँ पूरे साल यह बीमारी बनी रहती है। जवान पशु इससे बहुत बीमार होते हैं। भैंसों में यह बीमारी इसलिए ज़्यादा होती है, क्योंकि वे गर्मी की वजह से गन्दे पानी में पड़ी रहती हैं। गन्दे पानी में इस बीमारी का कीड़ा होता है।

सबब

बीमारी का सबब बारीक ज़हरीला कीड़ा है। इस कीड़े के क़रीबी रिश्तेदार इनसान में लेग पैदा करते हैं, लेकिन इस बीमारी के कीड़ों से इनसान में किसी क़िस्म की बीमारी नहीं होती। इससे ९० फ़ी सदी जानवर मर जाते हैं और जो इत्तिफ़ाक़ से बच जायँ उन्हें अकसर यह बीमारी फिर नहीं होती। बीमारी छूत लगने के एक या दो दिन बाद ज़ाहिर हो जाती है।

पहचान

इस बीमारी में १०५ से १०८ दर्जे तक बुख़ार हो जाता है। पशु खाना पीना बन्द कर देता है, गला बहुत सूज जाता है। ज़्यादातर सूजन गले पर ही होती है, लेकिन कभी कभी सिर, गर्दन, झालर और अगले पाँव पर भी हो जाती है। सूजन गरम होती है और दबाने से चिरचिराहट की आवाज़ होती है। दबाने से जानवर तकलीफ़ महसूस करता है। बाद में सूजन सख़्त पड़ जाती है। ज़बान सूज जाती है और बाहर निकल आती है। साँस बहुत मुश्किल से आती है। साँस लेने में घरघर की आवाज़ आती है। आख़िर दम घुटकर जानवर १२ से २४ घंटे में मर जाता है। हिन्दुस्तान में गले की सूजन के ज़्यादा मरीज़ होते हैं। एक दो में आँतों पर बीमारी का असर होता है, ऐसी हालत में ख़ूनी दस्त होते हैं। कितने ही पशुओं में यह बीमारी फेफड़ों पर असर करती है। आँतों और फेफड़ों के मरीज़ बहुत कम मिलते हैं।

इलाज

क्योंकि इस बीमारी में जानवर जल्द मर जाता है इसलिए इलाज का मुश्किल से मौक़ा मिलता है। अगर मर्ज़ का पता फ़ौरन् लग जाय तो शुरू में जानवर को यह जुलाब दें—

१—मगनेशिया—डेढ़ पाव।
नमक—आध पाव।
पानी—३ पाव में मिलाकर दें।

या

२—तेल अलसी—३ पाव।
जमालगोटे का तेल—३० बूंद मिला कर दें।

ताक़त बनाये रखने को ये दवाइयाँ दें।

३—शराब—आध पाव।
सोंठ—१। तोला।
काली मिर्च—८ माशा।
माँड़—३ पाव में मिलाकर दे।

सूजन को सेकें या ठंडक पहुँचायें। इस देश में सूजन पर डाह लगाते हैं। बेहतर तरकीब यह है कि डाक्टर को इत्तिला दे दी जाय और गले में साँस लेने के लिए सूराख बनवा लिया जाय। पुटाशियम परमागनेट का पानी पीने को और माँड़ खाने को दी जाय।

रोक-थाम

मरीज़ जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग कर दिया जाय और उन्हीं उसूलों पर अमल करना चाहिए जो छूतदार बीमारियों में पहले बताये जा चुके हैं। मरे हुए जानवर जलाये जायँ। या गाड़े जायँ। ख़ास बात यह है कि खाने-पीने की जगह निहायत साफ़-सुथरी होनी चाहिए। ऐसी जगह जहाँ हर वक्त पानी भरा रहता हो और बीमारी का ख़तरा हो पशुओं को नहीं जाने देना चाहिए। ख़तरनाक जगहों के चारों तरफ़ बाड़ कर देनी चाहिए। चारा अगर खुली जगह में रक्खा जाय तो ऊँची जगह पर होना चाहिए। तालाबों की पालें ऊँची होनी चाहिए ताकि गंदा पानी उनमें जमा न हो सके। भैंसों को तालाब व गड्ढों में नहीं घुसने देना चाहिए।

इस बीमारी के फैलने पर तन्दुरुस्त जानवरों के फ़ौरन सीरम का टीका लगवा लेना अक़लमन्दी है।

जिन जगहों पर यह बीमारी हर साल होती हो बेहतर तरकीब यह है कि ख़तरनाक

मौसम के शुरू होने के कुछ हफ़्ते पहले सब जानवरों में वेकसीन का टीका लगवा लेना चाहिए ताकि बीमारी जानवरों में न होने पाये।

उन जगहों पर जहाँ बीमारी पूरे साल बनी रहती है अक़्लमन्दी यह है कि साल के शुरू में ही तमाम जवान पशुओं के टीका लगवा लिया जाये या जब जानवर तीन या छः माह का हो जाय उस वक्त ही टीका लगवा लिया जाय।

एनथेक्स या गोली, सट, सूल, मरी, तिल्ली का बुख़ार।

यह पालतू व जंगली जानवरों की तेज़ बुख़ारवाली छूतदार बीमारी है। इस बीमारी में तिल्ली बहुत सूज जाती है। नाक, मुँह, पेशाब व पाख़ाने के रास्ते से ख़ून बहता है।

यह बीमारी तलहटी व दलदल की जगहों में बहुत होती है। गर्मी में बरसात का पानी पड़ने के बाद इस बीमारी के मरीज़ देखने में आते हैं।

यह बीमारी बैल, गाय, भैंस, घोड़ा, खच्चर, ऊँट, बकरी, हाथी, कुत्ता, बिल्ली व आदमी को हो जाती है। परिन्दों में गिद्ध को यह बीमारी नहीं होती।

इस बीमारी का सबब कीड़ा है जो ख़ुर्दबीन से देखा जा सकता है।

छूत लगने के दो-तीन दिन बाद जानवर बीमार हो जाता है। अकसर जानवर मरा हुआ मिलता है। लेकिन अगर बीमारी को शुरू से आख़िर तक देखने का मौक़ा मिल जाय तो नीचे लिखी हालत देखने में आयेगी।

पहचान

जानवर बेचैन दिखाई देता है। १०६ [illegible] दर्जे तक बुख़ार होता है। आँखें लाल, नाक से ख़ून बहता है। ख़ूनी दस्त, पेट में और बदन के हिस्सों पर ठंडी सूजन। सूजन को दबाने से दर्द नहीं होता। पेशाब काला होता है।

बाद में जानवर बेचैनी से घबराया हुआ नीचे गिर जाता है और मर जाता है।

इस बीमारी से मरे हुए जानवरों की लाश बहुत जल्द सड़ने लगती है और हवा से फूल जाती है। एक घंटे बाद ही बदबू आने लग जाती है। ख़ून टार की तरह काला हो जाता है। गोश्त नरम हो जाता है। तिल्ली बहुत बड़ी हो जाती है।

इलाज व रोकथाम

इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। अगर शुरू में एण्टी एंथ्रेक्स सीरम मिल जाय तो उसका टीका लगवा लेना मुफ़ीद साबित हो सकता है। बीमारी को दूसरे जानवरों में फैलने से रोकना बहुत ज़रूरी है। लाश को बहुत होशियारी के साथ जलाया जाय या पानी से बहुत दूर ६ फ़ीट गहरा गाड़कर उस पर हमवज़न चूना डाला जाय। अगर लाश को दूसरी जगह ले जाना हो तो मुँह, नाक, आँख व पाख़ाने की जगह मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर दें ताकि ख़ून बह न सके। लाश को चीरना-फाड़ना निहायत ख़तरनाक है। जहाँ जानवर मरा हो वहाँ की पराल जला देना मुनासिब है और दीवारों वग़ैरह को भी जलाना बहुत ज़रूरी है। चूँकि यह बीमारी इनसान को भी हो जाती है इसलिए बड़ी एहतियात से काम करना चाहिए वरना मौत हो जाने का ख़तरा है। जहाँ जानवर जलाया गया हो या गाड़ा गया हो बाड़ लगा देनी चाहिए ताकि कुत्ते वग़ैरह न जा सकें।

बीमारी फैलने पर सही जाँच हो जाने के बाद तन्दुरुस्त जानवरों में सीरम का टीका लगवा लेना मुफ़ीद है, ताकि बीमारी तन्दुरुस्त जानवरों में न फैल सके।

ऐसी जगहों पर जहाँ बीमारी का हर साल ख़तरा हो स्पोर वेक्सीन का पहले से तन्दुरुस्त जानवरों में टीका लगवा लेना चाहिए ताकि एक साल तक जानवर इस बीमारी से महफ़ूज़ रह सकें।

रे हल!

लेखक, श्री रतननारायण सक्सेना, प्रथम वर्ष
एग्री० इंस्टीट्यूट, गोरखपुर

घर-घर अलख जगा रे हल,
जीवन सफल बना रे हल!
मन में मेरे मीत समा जा,
योद्धाओं के युद्ध में साजा।
मंदिर और मसजिद में बिराजा,
तू राजाओं का भी राजा॥
घर-घर अलख जगा रे हल,
जीवन सफल बना रे हल!
हैं किसान तेरे अनुयायी,
भारत मां की शान बढ़ाई।
खेत खेत फ़सलें उपजाई,
कवियों ने है महिमा गाई॥
घर-घर अलख जगा रे हल,
जीवन सफल बना रे हल!
तेरा गात बना लकड़ी का,
मूल्य में केवल कुछ दमड़ी का।
फिर भी तू ईश्वर सृष्टी का,
तुझको है प्रणाम सभी का॥
घर-घर अलख जगा रे हल,
जीवन सफल बना रे हल!
हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख ईसाई,
आपस में हैं भाई भाई।
गाते हैं तेरी प्रभुताई,
तूने है एकता बढ़ाई॥
घर-घर अलख जगा रे हल,
जीवन सफल बना रे हल!

हमारा पंचायतघर

समय ६-४५ से ७-३० बजे तक (शाम)

१ मार्च, १९४२--बच्चों की सभा। बच्चों को उद्योग-धंधा की शिक्षा, श्री सूर्य-नारायण सिनहा। धमार और होली, श्री राम-हज़ारी तिवारी और उनकी पार्टी। पंचो तुम्हार खत मिला। खबरें।

२ मार्च, १९४२--डभ की होली, श्री रामहज़ारी तिवारी और उनके साथी। चन्द्रग्रहण (भाषण), श्री बी० के० मिश्र। खबरें और बाज़ारभाव।

३ मार्च, १९४२--होली की धूम, श्री रामेश्वर वाजपेयी। होली (भाषण)। श्री रूपनारायण पाण्डेय। होली आई (कविता), श्री भूषण। खबरें और बाज़ारभाव।

४ मार्च, १९४२--बच्चों की सभा, खेल कूद। धमार और होली, श्री रामेश्वर वाजपेयी। होलिकादहन (फ़ीचर)। दुनिया का हाल-चाल (बतकही)। अबीर गुलाल (कविता)। खबरें और बाज़ारभाव।

५ मार्च, १९४२--पूर्वी और भजन, श्री रामआसरे। स्वामी की भेंट (नाटक)। थोक और फुटकर बिक्री (बतकही), श्री आनन्दस्वरूप। खबरें और बाज़ारभाव।

६ मार्च, १९४२--दादरा, श्री मुबारक-अली और उनकी पार्टी। लखनऊ के ऐतिहासिक महत्त्व (भाषण), श्री हयातउल्ला अंसारी। खेती के औज़ार (बतकही), श्री भूषण और लपेटे। खबरें और बाज़ारभाव।

७ मार्च, १९४२--पनघट, होली (रिकार्ड)। भजन और गीत, श्री स्नेहलता। सच्चा पर्दा (भाषण), श्री अनीस खातून। देश-विदेश की बातें (बतकही), श्री सुशीला विद्या और दीदी। बहिनों तुम्हार खत मिला। खबरें।

८ मार्च, १९४२--बच्चों की सभा। प्रश्न और उत्तर। भजन, श्री गोपाल बनर्जी। होली और विदेशिया, श्री बलदेवप्रसाद। पंचो तुम्हार खत मिला। खबरें।

९ मार्च, १९४२--नोहा और सलाम, श्री मुर्तुज़ाहुसेन। चेहल्लुम (भाषण), श्री नज़मुद्दीन नदवी। सूखी खेती (बतकही), श्री चौधरी और भूषण। लड़ाई के हाल-चाल। खबरें और बाज़ारभाव।

१० मार्च, १९४२--आरती (रिकार्ड के गाने)। भजन और कीर्तन, श्री मुरारीलाल और उनकी पार्टी। चोरी (भाषण), श्री एन० सी० चतुर्वेदी। बाँध बनाना (बतकही), श्री अर्जुनलाल और झपेटे। आज्ञापालन (कहानी), श्री करमसिंह सिन्धी। खबरें और बाज़ारभाव।

११ मार्च, १९४२--बच्चों की सभा। कोरस। सड़क के नियम (भाषण)। बाँसुरी की धुनि, श्री सज्जादहुसेन। दादरी, श्री मुर्तुज़ाहुसेन। गाँव की रात्रि-पाठशलायें, लाइब्रेरी और पढ़ने के कमरे (बतकही), श्री हरिश्चन्द्र। दुनिया के हाल-चाल। खबरें और बाज़ारभाव।

१२ मार्च, १९४२--ग़ज़ल (रिकार्ड)। गीत और भजन, श्री कृपाशंकर तिवारी। अन्धा (नाटक), श्री इसरारहुसेन। अदरक़ की खेती (बतकही)। श्री रमेशचन्द्र अवस्थी। घाघ की कहावतें, श्री जगन्नाथप्रसाद। खबरें।

१३ मार्च, १९४२--नात, क़व्वाली और ग़ज़ल, श्री मुर्तुज़ाहुसेन। गाँवों में इच्छानुसार या अनिवार्य शिक्षा (भाषण), श्री अब्बास अहमद अदीब। भूसा का रोज़गार (बतकही), श्री भूषण और झपेटे। खबरें।

१४ मार्च, १९४२--भजन, (रिकार्ड)। ढोलक के गीत और सोहर, श्री शिवदेई और उनकी पार्टी। गंगा (नाटक), श्री शान्तिदेवी। देश विदेश की बातें, श्री धानवती मिश्रा और सौभाग्यवती। बहिनो तुम्हार खत मिला। खबरें।

१५ मार्च, १९४२--बच्चों की सभा। अपनी सफ़ाई। होली और पूर्वी, श्री रामजी दास। पंचो तुम्हार खत मिला। खबरें।

१६ मार्च, १९४२--भजन, (रिकार्ड)। देहाती गीत, श्री अबूमुहम्मद खाँ। दहेज (नाटक), श्री सैयद जाफ़रहुसेन। दीमक (बतकही), श्री लपेटे और भूषण। सप्ताह का प्रोग्राम। खबरें और बाज़ार-भाव।

१७ मार्च, १९४२--भजन और गीत, श्री रामजीदास और पंच। अन्न की ख़रीद-फ़रोख्त (भाषण), श्री बी० एल० जसपाल। अंडी की खेती (बतकही), चौधरी और पंचो। चकिया (कविता), खबरें और बाज़ार-भाव।

१८ मार्च, १९४२--चिरैयावाला (नाटिका), श्री सुरेशचन्द्र अवस्थी। देहाती गाने, श्री रघुराय और पार्टी। लड़ाई के हाल-चाल, श्री लपेटे और भूषण। कहानी, श्री ए० आर० अल्वी। खबरें और बाज़ार-भाव।

१९ मार्च, १९४२--देहाती गाने, श्री राजाराम और पार्टी। बग़ीचों की डायरी, श्री भूषण और लपेटे। कुंडलिया (कविता), श्री केशवनाथ मिश्र। खबरें।

२० मार्च, १९४२--क़व्वाली और ग़ज़ल, श्री अख्तर आलम खाँ। मुक़दमेबाज़ी से हानियाँ, श्री फ़रीद अहमद अंसारी। देश-विदेश की बातें (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे। खबरें।

२१ मार्च, १९४२--पनघट, (देहाती स्त्रियों के लिए विशेष प्रोग्राम)। भजन, श्री एच० एस० माथुर और उनकी पार्टी। गढ़वाली (नाटक), श्री सुरेशचन्द्र अवस्थी। खिलौना का चुनाव (बतकही), श्री पद्मा और सुशीला। बहिनो तुम्हार खत मिला। खबरें।

२२ मार्च, १९४२--शिक्षा और जीवन (भाषण), श्री भूषण। चैता और गीत, श्री रामआसरे। दुनिया के हाल-चाल (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे। खबरें।

२३ मार्च, १९४२--भजन (रिकार्ड)। दादरा और गज़ल, श्री अब्दुल हाफ़िज़। प्रायश्चित्त (नाटक), श्री महावीरप्रसाद शुक्ल। बुनाई (बतकही), श्री भूषण और झपेटे। सप्ताह का प्रोग्राम। खबरें और बाज़ारभाव।

२४ मार्च, १९४२--भजन आरती और कीर्तन, महाराष्ट्र कीर्तनमंडल। टिड्डी का हमला (बतकही), श्री चौधरी और पंच। बरखोज (कविता) श्री भूषण। खबरें और बाज़ारभाव।

[illegible] २५ मार्च, १९४२--गणेश विजय ([illegible]टिका), श्री चन्द्रभूषण शुक्ल। देहाती [illegible] श्री तोखे और पार्टी। आम की खेती ([illegible]कही), श्री लपेटे और झपेटे। खबरें [illegible] बाज़ारभाव।

[illegible] २६ मार्च, १९४२--भजन, कीर्तन और [illegible]नी, श्री रामेश्वर वाजपेयी और उनकी [illegible] रामअवतार (नाटक), श्री बी० एन० [illegible] वनवास (कविता), श्री केदारनाथ [illegible] 'नवीन'। खबरें।

२७ मार्च, १९४२--नात और कव्वाली, [illegible] मुर्तुज़ाहुसेन। सिपाही के घर की देख-[illegible] (भाषण), श्री रहनुल हक़। देश-विदेश [illegible] बातें (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे। [illegible]।

२८ मार्च, १९४२--पनघट (देहाती [illegible] के लिए विशेष प्रोग्राम)। भजन, ([illegible]र्ड)। सोहर और गीत, श्री शान्तिदेवी [illegible] पार्टी। घर का इन्तज़ाम (भाषण), [illegible]रन देवी शुक्ला। कढ़ी बनाना (बतकही), [illegible] सुशीला, विद्या और बहनें। बहिनो [illegible] खत मिला। खबरें।

२९ मार्च, १९४२--बच्चों की सभा। [illegible] दूसरा (बतकही), श्री भूषण। [illegible] और भजन, श्री रामजीदास। दुनिया के [illegible]चाल (बतकही), श्री लपेटे और झपेटे। [illegible] खत मिला। खबरें।

३० मार्च, १९४२--विशेष प्रोग्राम--[illegible] और महावीरजयन्ती। [illegible] (रिकार्ड)। नात और कव्वाली, [illegible] मुर्तुज़ाहुसेन, बारःवफ़ात (भाषण), श्री [illegible] नदवी। महात्मा महावीर [illegible]), श्री मूलचन्द और पार्टी। सप्ताह [illegible]। खबरें और बाज़ारभाव।

३१ मार्च, १९४२--रामायणपाठ, श्री [illegible] शुक्ल। देहाती कर्ज़ (भाषण), श्री [illegible] के० ककड़। दूध के फ़ायदे (बतकही), [illegible] सुरेशचन्द्र और पंच। कहानी, श्री भूषण। [illegible] और बाज़ारभाव।

खलियान

लेखक, श्री ठाकुर महावीरसिंह 'वीर' गूँगानगला

(१)

खलियान लगे खेतों में, जब चैत्र-मास था आया।
इस समय वन्य-वसुधा को, हलधर ने स्वच्छ बनाया॥
भूतल नितान्त राजित था, होता प्रतीत परिवेषण।
रक्खा जंगल में मानो, मणि-जटित-रजत-सिंहासन॥

(२)

गोधूम-गरी कोने में, थी एक ओर उपपादित।
दूसरी ओर छोटा-सा, था चणक-पुंज उद्भासित॥
यों था अरहर का भूका, इस समय चतुर्दिक वितरित।
यौवन-प्रवाह मिटने पर, ज्यों कच होते उद्घाटित॥

(३)

जो कहीं कटे रक्खे थे, अलसी के सम्मिश्रण से।
जो देख नहीं पड़ते थे, लाई के आच्छादन से॥
मध्याह्न समय इनके ही, नीचे मिलती थी छाया।
जब कृषक दायँ से थककर, आया करता घबराया॥

(४)

सुन्दर कितनी थी दँवरी, जिस समय दायँ चलती थी।
जब पदच्छाप वृषभों की, सब शुष्क-लाख मलती थी॥
परिक्रमा मेढ़ की करते, थे वृषभ उस समय ऐसे।
जीवन में चक्कर खाते, वय और वित्त हैं जैसे॥

(५)

दोपहर समय लाती थी, भोजन किसान की बाला।
ईप्सित जिसकी सुन्दरता, लख थी सुमनों की माला॥
चलते क्षण उसकी साड़ी, करती थी भू-आलिंगन।
उसका ललाट स्वेदित था, थे वारि-भरे मृदु लोचन॥

(६)

आगे बढ़ती जाती थी, कुछ प्रहसित, लज्जितवदना।
इस क्षण श्रम-वश भूली थी, वह कोमलांगपन अपना॥
जब पिता तनिक दम लेता, वह करती थी आवर्त्तन।
बस एक परिश्रम ही था, उसका जीवन-अवलम्बन॥

(७)

इन दिनों नहीं सोता है, चासा कदापि अपने घर।
करता रहता रखवाली, पैरों की वह चित् होकर॥
है उसके सभी सुखों का, खलियान एक बस साधन।
शिशु-जन का हृदयोन्मीलन, उसका कुटुम्ब-परिपालन॥

हमारी कोआपरेटिव सोसाइटियाँ

कुम्भ-मेला में कोआपरेटिव कोर्ट

इलाहाबाद के कुम्भ-मेले में कोआपरेटिव-विभाग ने बहुत अच्छा काम किया। मि० इनामुर्रहमान असिस्टेंट रजिस्ट्रार, इलाहाबाद के नियंत्रण में मि० बी० ए० मेहता, सर्किल आफ़िसर, इलाहाबाद ने एक कोआपरेटिव प्रदर्शनी खोली थी। इस प्रदर्शनी को अपूर्व सफलता मिली। यह प्रदर्शनी २० दिन तक रही और कम से कम ५,००० लोग इसे प्रतिदिन देखने आते थे। मकर संक्रांति और वसन्तपंचमी आदि जैसे बड़े पर्वों पर दर्शकों की संख्या लगभग एक लाख हो जाती थी। यह प्रदर्शनी बाँध के नीचे की गई थी। कोआपरेटिव प्रदर्शनी में बहुत-से स्टाल थे।

मि० बी० एल० जसपाल, डिप्टी रजिस्ट्रार, कोआपरेटिव सोसाइटीज़ २१ जनवरी को यह प्रदर्शनी देखने आये। मि० इनामुर्रहमान, असिस्टेंट रजिस्ट्रार और मि० बी० ए० मेहता ने उन्हें चारों ओर घुमाया। पहले उन्होंने इलाहाबाद मिल्क सप्लाई यूनियन का स्टाल देखा। इस स्टाल पर दूध की औसत बिक्री ७ मन तक प्रतिदिन रही। लोगों ने दूध की बड़ी प्रशंसा की। मेले की माँग को पूरा करने के लिए मि० प्रेमवल्लभ पन्त ने बड़ी मेहनत करके गाँवों की टोलियों का प्रबन्ध किया था। उसके बाद डिप्टी रजिस्ट्रार गोरखपुर वीवर्स स्टोर्स के स्टाल पर गये। जनता ने इस स्टाल पर बिकनेवाली तौलियों को बहुत पसन्द किया। मि० देवीसहाय, इन्स्पेक्टर वार सप्लाई, गोरखपुर की सहायता से साड़ी और क्रेप कपड़ा बनाने का प्रदर्शन किया गया था। उसके बाद डिप्टी रजिस्ट्रार बसुमती चावल और इटावा घी के स्टालों पर और कोआपरेटिव लाइब्रेरी ले जाये गये। इस पुस्तकालय में कोआपरेटिव साहित्य के अतिरिक्त दैनिक समाचारपत्र भी रहते थे, जिससे लोग बड़ी संख्या में आते थे। लाइब्रेरी देखने के बाद डिप्टी रजिस्ट्रार ने इश्तिहारों का कोर्ट देखा। उन्होंने यह कोर्ट (कमरा) आदमियों से भरा हुआ पाया। सुपरवाइज़र जो वहाँ ड्यूटी पर था, गाँववालों को इश्तिहारों का मतलब समझाता था। इस कोर्ट में कोआपरेटिव आन्दोलन और उसके विभिन्न रूपों पर भाषण का प्रबंध किया गया था, और मि० जे० पी० मिश्र पब्लिसिटी अफ़सर, मि० बी० ए० मेहता, मि० आर० एस० श्रीवास्तव, सर्किल अफ़सर रामनगर और दूसरे लोग देहाती बोली में लेक्चर देते थे। उसके बाद असिस्टेंट रजिस्ट्रार डिप्टी रजिस्ट्रार को "मनी फ़ाम वेस्ट" वाले सेक्शन में ले गये जहाँ लोगों को कम खर्च करने की शिक्षा दी जाती थी और रद्दी सामान से बनी हुई चीज़ों का प्रदर्शन किया गया था। इस सेक्शन की चीज़ों को डिप्टी रजिस्ट्रार ने बहुत पसन्द किया। उसके बाद वे अलमोड़ा वूलेन कोआपरेटिव सोसाइटी के स्टाल पर गये और श्रीकृष्ण ऊन चरखे का प्रदर्शन देखा। फिर वे ग़ाज़ीपुर वीवर्स स्टोर्स पर गये। उसके बाद वे वार सप्लाई स्टाल पर गये जहाँ कोआपरेटिव समितियों - द्वारा सप्लाई डिपार्टमेंट को भेजी गई चीज़ें रक्खी गई थीं। वार सप्लाईज़ के असिस्टेंट रजिस्ट्रार ने इस स्टाल को लगाने के लिए मि० आर० एन० गौड़ को नियुक्त किया था। एक कैमुफलाज जाल दूकान पर बिछाया गया था और उसके ऊपर हरी पत्तियाँ बिछा दी गई थीं। डिप्टी रजिस्ट्रार ने यहाँ रक्खी [illegible] तरह-तरह की चीज़ों को पसन्द किया [illegible] खासकर नमूने की सोलर हैट को बहुत [illegible] किया जो लड़ाई में भेजने के लिए इलाहा[illegible] में बनाई गई थी।

इसके बाद वे कड़ा कोआपरेटिव [illegible]इटी के स्टाल पर गये जहाँ निवाड़ बुनने [illegible] प्रदर्शन किया गया था। कड़ा सोस[illegible] लड़ाई में भेजने के लिए निवाड़ बनाती [illegible] है और उससे उसे ९००) का मुनाफ़ा भी [illegible] है। वहाँ कैमुफलाज जाल बनाने का [illegible] भी शुरू कर दिया गया है।

कोआपरेटिव प्रदर्शनी में परतापग[illegible] एक कोआपरेटिव डिस्पेंसरी भी थी। [illegible] डिस्पेन्सरी (अस्पताल) में ६ साल से [illegible] वैदिक चिकित्सा हो रही है। इस डिस्[illegible]
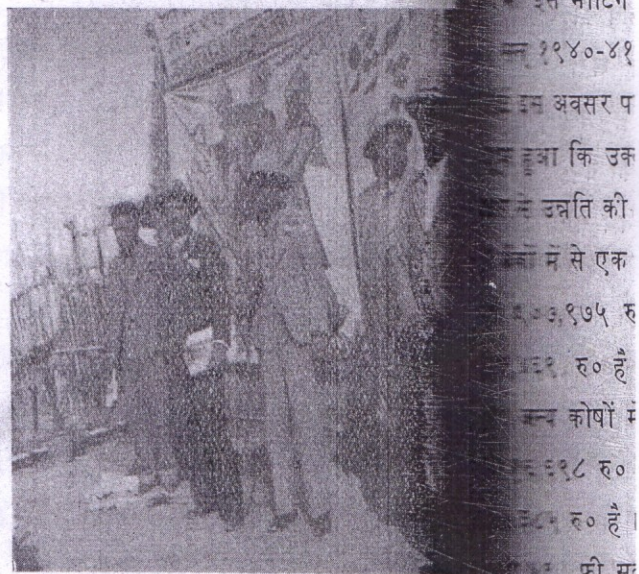
मिस्टर बी० एल० जसपाल, डिप्टी रजिस्[illegible] कोआपरेटिव सोसाइटीज़, सहयोगी नुमाइश [illegible] जा रहे हैं। खड़े हुए बाँये से दाहिनी [illegible] मिस्टर विष्णुनाथ, एम० डी० इलाहाबाद, मि[illegible] बी० एल० जसपाल, डिप्टी रजिस्ट्रार, मि[illegible] इनामुर्रहमान असिस्टेंट रजिस्ट्रार इलाहा[illegible] मिस्टर आर० एस० श्रीवास्तव, सर्किल अ[illegible] रामनगर, मिस्टर एन० के० भार्गव [illegible] इन्सपेक्टर।

[illegible] बड़ी संख्या में रोगियों की प्रतिदिन [illegible]कित्सा की जाती थी और जो वैद्य इसके [illegible] में था वह रोगियों को देखता था।

अन्त में उन्होंने असिस्टेंट रजिस्ट्रार मि० [illegible] नूर्रहमान को बधाई दी जिनके नियंत्रण [illegible] प्रदर्शनी को सफलता मिली। मि० वी० [illegible] मेहता सर्किल अफसर इलाहाबाद ने [illegible]नी के सदर फाटक और हाते को बड़े [illegible] ढंग से सजाया था।

[illegible]-बैंक की सालाना आम मीटिङ्ग

[illegible] जिला कोआपरेटिव बैंक बाँदा की [illegible] आम बैठक बाँदा के कलेक्टर [illegible] डब्लू० आर० गिल, आई० सी० [illegible] के सभापतित्व में हुई। सोसाइटियों [illegible] से प्रतिनिधियों, रिआयती हिस्से- [illegible] और क़स्बे के प्रमुख व्यक्तियों के अति- [illegible] मि० वी० एल० जसपाल, डिप्टी रजि- [illegible] कोआपरेटिव सोसाइटीज़ और मि० [illegible], असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार, इलाहा- [illegible] इस मीटिंग में पधारे थे।

[illegible] १९४०-४१ की जो बैंक की सालाना [illegible] अवसर पर पेश की गई उससे यह [illegible] हुआ कि उक्त वर्ष में बैंक ने हर [illegible] उन्नति की। यह बैंक प्रान्त के सबसे [illegible] में से एक है। इसकी कार्यशील [illegible]३५ रु० है और निजी पूँजी [illegible] रु० है। इसके सुरक्षित कोष [illegible] कोषों में क्रमशः ४४,३८६ रु० [illegible] रु० हैं। इसकी शेयर पूँजी [illegible] रु० है। उक्त वर्ष में बैंक की [illegible] फ़ी सदी थी। इस प्रकार [illegible] इस वर्ष इसकी उगाही ७ फ़ी [illegible]

[illegible] बैंक से सम्बद्ध सोसाइटियों की [illegible] हैं। इनमें से १४ घी की सोसा- [illegible] है। ५ क्रय-विक्रय के यूनियनों के [illegible] एक केन्द्रीय घी यूनियन भी है। [illegible] के आतंक के कारण बहुत-से लोगों [illegible] अपने रुपये बैंक से निकाल लिये।

सहयोगी नुमाइश का भीतरी दृश्य।

सहयोगी नुमाइश का बाहरी दृश्य।

जिन लोगों ने बैंक से रुपया निकालना चाहा उन्हें रुपया तुरन्त दे दिया गया ताकि इस बैंक पर जनता का विश्वास बना रहे। इस प्रकार कुल मिलाकर ३६,३५० रु० की रक़म लोगों को देनी पड़ी और २४,१५० रु० इस बैंक में जमा हुए। इस बैंक ने ७,००० रु० डिफेंस सेविंग सार्टीफ़िकेट ख़रीदने में लगाये और ५६४ रु० युद्ध-प्रयोजनों के फंड से चन्दा में दिये।

अपनी-अपनी सोसाइटियों में अच्छा काम करने के कारण सरपंचों और ख़ज़ाञ्चियों को पारितोषिक वितरण किये गये। सर्किल अफ़सर मि० बी० पी० वैश्य ने फिर इस मीटिंग में भाषण दिया। उन्होंने मि० एस०-एस० हसन, आई० सी० एस०, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़ का नये साल का सन्देश सहयोगियों को सुनाने के बाद बाँदा ज़िले की सोसाइटियों की वास्तविक स्थिति और सहयोगी आन्दोलन का सिंहावलोकन किया। उन्होंने सोसाइटियों की कुछ शासन-सम्बन्धी कठिनाइयाँ भी बयान कीं और इस बात पर ज़ोर दिया कि अभी और उन्नति करने की आवश्यकता है।

सभापति के पद से कलेक्टर साहब ने अपने भाषण में संक्षिप्त रूप से इस देश पर आनेवाली विपत्तियों का सिंहावलोकन किया और सहयोगियों से यह ज़ोर देकर कहा कि उन्हें चाहिए कि वे अपनी मातृ-भूमि की रक्षा के लिए जो कुछ कर सकें, करें।

कोआपरेटिव आन्दोलन की विशेषतायें

रजिस्ट्रार-द्वारा बैंक के भवन का उद्घाटन

ज़िले के प्रमुख कोआपरेटरों और सरकारी और ग़ैर सरकारी लोगों की एक बड़ी उपस्थिति के सामने पिछली जनवरी में मि० एस० एस० हसन, आई० सी० एस०, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़ ने खेरी ज़िला कोआपरेटिव बैंक के भवन का उद्घाटन

मिस्टर बी० एल० जसपाल, डिप्टी रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़, नुमाइश का निरीक्षण कर रहे हैं। उनके साथ मिस्टर इनामुर्रहमान, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, इलाहाबाद हैं।

किया। इस भवन का शिलारोपण डा० कैलाशनाथ काटजू भूतपूर्व न्याय और डेवलपमेंट मंत्री ने सन् १९३९ ई० में किया था।

रायबहादुर पं० संकटाप्रसाद वाजपेयी, आनरेरी मैनेजिंग डाइरेक्टर तथा खेरी ज़िला कोआपरेटिव बैंक के संस्थापक ने प्रारम्भ से बैंक के इतिहास और उन्नति का यथा-क्रम वर्णन किया। उन्होंने कहा कि सर एस० फ्रीमेंटल को जिन कठिनाइयों की आशंका थी उनके होते हुए भी उन्हें उन कार्यों के करने में सफलता मिली है जिनको वे तथा कई दूसरे प्रमुख कोआपरेटर असम्भव समझते थे। सन् १९२३ ई० में उन्होंने लगभग १०,००० रुपये की छोटी-सी निजी पूँजी से बैंक खोला था और ४७ सोसाइटियाँ स्थापित कीं, जिनमें १,६७९ मेम्बर थे और जो उस समय मोहमदी तथा ओएल कोर्ट आफ़ वार्ड स्टेट की संरक्षता में काम कर रही थीं।

इस समय १९८ कोआपरेटिव सोसाइटियाँ हैं जो हर प्रकार के सहकारी कामों को करती हैं और जिनमें मेम्बरों की संख्या १२,००० है। बैंक की निजी पूँजी अब बढ़कर ४०,००० रुपये हो गई है। इसकी चालू पूँजी इस समय लगभग सवा लाख रुपया है। बैंक की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी है क्योंकि अभी तक शेयर होल्डरों (हिस्सेदारों) से लगभग ८०,००० रुपया वसूल नहीं किया गया है। अपने जीवन के १८ वर्षों में इसने अपने शेयर होल्डरों (हिस्सेदारों) को एक साल के अलावा हर साल डिवीडेंड (मुनाफ़ा) दिया है।

तीन क्रय-विक्रय के यूनियनों के कामों की चर्चा करते हुए उन्होंने अनाज के क्रय-विक्रय पर विशेष ज़ोर दिया और लोगों को यह भली भाँति समझा दिया कि मानवता की सच्ची सेवा सबसे अधिक सहयोग-द्वारा ही की जा सकती है।

उद्घाटन करने के पहले मि० एम० एस० हसन रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़ ने उस काम की सराहना की जो ... के अधीन किया गया और इसकी सफलता का श्रेय मि० वाजपेयी को दिया जिन्होंने ... काम में बड़ी दिलचस्पी ली है। उन्होंने आये हुए लोगों को यह भी बताया कि कोआपरेटिव आन्दोलन का उद्देश्य शान्ति, सद्... और बन्धुत्व स्थापित करना है। यह ... ऐसे आश्रम के समान है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने ही लिए नहीं बल्कि समस्त जाति की भलाई के लिए काम करता है और ... जाति का वह स्वीकृत नियमों तथा अनुशासन के अनुसार एक अंग है। उनके ... से सोसाइटियों के मेम्बरों का उत्साह ... और यह आशा की जाती है कि भविष्य में ... और अच्छा काम किया जायगा।

खान बहादुर मोहम्मद हबीबुल्ला खाँ डिप्टी कमिश्नर साहब की अध्यक्षता में ज़िला कोआपरेटिव बैंक खेरी तथा ... कोआपरेटिव शूगर केन सप्लाई एसोसिएशन की भी वार्षिक सभायें की गईं। बैंक ... के विशाल हाल में विभिन्न सोसाइटियों ...

युद्ध-उद्योग के सम्बन्ध में बने हुए एक नमूने के हैट को डिप्टी रजिस्ट्रार देख रहे हैं। यह हैट मिस्टर वी० ए० मेहता, सर्किल अफ़सर इलाहाबाद के निरीक्षण में तैयार किया गया है।

प्रतिनिधियों-द्वारा लाई हुई कृषि तथा शिल्प-सम्बन्धी वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया और चर्खा-प्रतियोगिता, दंगल तथा अन्य खेल-तमाशों का आयोजन भी किया गया।

केन एसोसिएशन की सभा में इस आशय का एक प्रस्ताव पास किया गया कि सरकार से प्रार्थना की जाय कि वह ईख का भाव ८ आना मन की दर से नियत कर दे।

कृषि-सम्बन्धी उपज का क्रय-विक्रय कोआपरेटिव योजना के परिणाम

संयुक्त-प्रान्त में कोआपरेटिव क्रय-विक्रय यूनियनों और आढ़त की दूकानों ने सन् १९४०-४१ ई० में ३·२५ लाख मन ग़ल्ले का कारबार किया जिसका मूल्य लगभग १०,००,००० रुपये है। पिछले वर्ष उन्होंने २,९७,००० मन ग़ल्ले का कारोबार किया जिसका मूल्य लगभग ८,४४,००० रुपये था। यह काम ७४ क्रय-विक्रय यूनियनों और आढ़त की दूकानों ने किया। जो चीज़ें बाज़ार में रक्खी गईं उनमें से मुख्य गेहूँ, जौ, चना, दाल और तिलहन हैं।

खेती की पैदावार के क्रय-विक्रय की इस योजना का जो सन् १९३८-३९ ई० में चलाई गई थी तीसरा वर्ष जून सन् १९४१ ई० में पूरा हुआ। यह योजना प्रान्त के प्रायः सभी ज़िलों में चलाई गई थी और केवल इसी काम के लिए जो सुपरवाइज़र नियुक्त किये गये थे उनकी संख्या १५२ थी। गवर्नमेंट ने १,२४,००० रुपये सुपरवाइज़रों के रखने, क्षति-पूर्ति और क्रय-विक्रय संस्थाओं की आर्थिक सहायता के लिए दिये।

इस योजना से केवल सोसाइटियों के सदस्यों को अपनी पैदावार का उचित मूल्य पाने में ही सहायता नहीं मिली वरन् उनको बहुत-से ऐसे कर भी नहीं देने पड़े जो बाज़ार उनपर स्वेच्छापूर्वक लगाती थी।

क्रय-विक्रय के कार्यों से फिर एक बार इस बात की आवश्यकता मालूम हुई कि ज़िला बैंकों को क्रय-विक्रय के लिए आर्थिक सहायता देने के लिए प्रान्त में एक प्रान्तीय कोआपरेटिव बैंक खोला जाय क्योंकि ज़िला बैंक यह उपयोगी काम ठीक तरह से नहीं कर सके। यदि ऐसे बैंकों को, जिनको आर्थिक सहायता की आवश्यकता है (और जिनकी संख्या थोड़ी नहीं है) इस काम के लिए आवश्यक पूंजी उचित सूद पर मिल जाती तो बहुत अधिक कारबार होता और लाभ भी अधिक होता।

संयुक्तप्रान्त में सहयोग

सहयोग के प्रसार के लिए दृढ़ और सतर्क नीति का पालन किया गया और इसके फल-स्वरूप इस वर्ष हर तरह की समितियों को मिलाकर उनकी कुल संख्या १६,००० हो गई। इनमें से अधिकांश आज भी ग्राम-क़र्ज़-समितियाँ हैं जिनको बहुत-सी असुविधायें हैं। वर्तमान क़र्ज़-समितियों को बदल करके क़रीब २,००० विभिन्न कार्य करनेवाली समितियाँ या ग्राम-बैंक बनाकर उनकी रजिस्ट्री की गई।

मार्केटिंग

सहयोग-आन्दोलन की विशेषता यह है इस वर्ष ग़ैर-क़र्ज़ देनेवाली समितियों पर अधिक ज़ोर दिया गया। इसमें किसानों द्वारा बनाई गई चीज़ों की बिक्री और ख़रीद का काम प्रमुख था। इस साल विभाग के ७४ मार्केटिंग यूनियन और अरहट की दूकानों के ज़रिये ३॥ लाख मन अन्न १०,००,००० रुपये में ख़रीदा गया जब कि पिछले साल २,९७,००० मन अन्न ८॥ लाख रुपये में ख़रीदा गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ मार्केटिंग यूनियन को २३,००० रु० का लाभ हो गया। कुछ यूनियन की और ख़ास कर जहाँ से जेलों को सामान दिया गया बहुत हानि हुई है। गन्ना को ख़रीदने और बेचने का विशेष प्रयत्न किया गया। इस वर्ष सूबे की मिलों में काम आनेवाले गन्ने का ८५ प्रतिशत गन्ना इन समितियों-द्वारा भेजा गया है। पिछले वर्ष केवल ७९ प्रतिशत गन्ना इन समितियों-द्वारा भेजा गया था।

घी के कार्य का प्रसार

घी बनाने और बेचनेवाली समितियों की संख्या ७५० हो गई है। इनमें से अधिकांश इटावा, मैनपुरी, मेरठ, बुलन्दशहर और आगरा में हैं जहाँ पर घी कसरत से पाया जाता है। घी की समितियों की माँग इतनी बढ़ गई है कि सरकारी मदद बन्द होने पर भी ७ और ज़िलों में यह काम आरम्भ किया गया। इन घी समितियों ने असंदिग्ध सफलता प्राप्त की है। इनकी बहुत आवश्यकता भी है।

दूध की सप्लाई

लखनऊ यूनियन के आधार पर इलाहाबाद में भी एक मिल्क यूनियन चलाया गया। इसके आवश्यक सामानों के लिए सरकार ने १०,००० रुपया दिया था। तरवाई में क़रीब छः समितियाँ क़ायम की गईं और यहाँ से साइकिल और टाँगों पर दूध वहाँ भेजा जाता है जहाँ से बाँटने में सुभीता होता है। यूनियन ने प्रतिदिन १२ मन दूध बेचा और इसके अलावा मक्खन और घी भी भेजा।

चकबन्दी

पश्चिमी ज़िलों में चकबन्दी के काम का ज़ोर रहा। यदि स्टाफ और रुपये की कमी न होती तो ये समितियाँ २१८ से कहीं अधिक होतीं। पशु-पालन, फलों और तरकारियों के बेचनेवाली और अंडे उत्पादन तथा बिक्री करनेवाली समितियों ने असुविधाओं के होते हुए भी उन्नति की।

लड़ाई के सामानों की सप्लाई

लड़ाई के सामानों की ज़रूरत से सहयोग समितियों के काम बहुत बढ़ गये और ख़ासकर बिनाई करनेवाले तथा घरेलू धन्धों के द्वारा उन सामानों का बनाना और सप्लाई करना बहुत आवश्यक हो गया है। क़रीब १३ लाख रुपये का आर्डर इन समितियों को मिला और इसके लिए तम्बू के सामान, टाट-पट्टी, निवाड़, गाज, कम्बल, मोज़े और जाल आदि सप्लाई किये गये। नये कामों को पूरा

करने के लिए नई नई संस्थायें भी बनाई गईं। इससे घरेलू धन्धे करनेवाले हज़ारों लोगों को काम मिला और उनकी आमदनी भी अधिक हुई। इस साल के बीतने के समय से जाल, ए० आर० पी० की बाल्टियों और पट्टी बाँधने के कपड़े का आर्डर भी मिला है।

चन्दे

कोआपरेटिव बैंक और समितियों ने विभाग के अपील करने पर बराबर यथाशक्ति सरकार को युद्ध उद्योग में सहायता दी। डिफ़ेंस बांड और सेविंग सार्टिफ़िकेट तथा चंदे के रूप में इन समितियों ने क्रमश: ४,०५,००० रुपया और ४१,००० रुपया युद्ध-उद्योग के लिए दिया। गोरखपुर सर्किल की समितियों ने ५,००० रु० एक बमबाज़ जहाज़ के लिए और ७०० रुपया एक एम्बुलेन्स कार खरीदने के लिए इकट्ठा किया। वीमन्स वर्क पार्टी के आनरेरी सेक्रेटरी को १,०००) दिया गया।

मुरादाबाद कोआपरेटिव कान्फ़रेंस

मुरादाबाद ज़िले में संदपुर नामक स्थान पर गत जनवरी को एक ग्रुप कान्फ़रेंस की गई। इसके सभापति श्री राहू प्यारेलाल रईस, और यू० पी० कोआपरेटिव यूनियन की प्रान्तीय कमेटी के मेम्बर हुए थे। इसमें क़रीब २,००० लोग उपस्थित थे।

सभापति को ग्राम-स्काउटों ने गार्ड आफ़ आनर दिया। इसके बाद एक जुलूस निकाला गया और सभापति के रंग-मंच पर जाते समय सहयोगसम्बन्धी गानेगाये गये।सभाएकसुन्दर शामियाने में की गई जहाँ लोग दरियों पर बैठे। आरम्भ में भगवानपुर गाँव के बच्चों ने एक प्रार्थना की और इसके बाद सभा की कार्यवाही आरम्भ हो गई।

मार्केटिंग, ग्राम-बैंक बनाने, स्काउटिंग करने और गन्ना खरीदने के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास किये गये। डिस्ट्रिक्ट बैंक के सोसाइटी-डाइरेक्टर तथा समितियों के अन्य मेम्बरों ने भाषण दिये। धनौरा सुपरवाइज़रों ने लोगों को प्रस्तावों को ब्योरेवार समझाया। सर्किल अफ़सर श्री आई० एस० कनसल ने भी भाषण दिया।

सभापति ने उपस्थित लोगों को सहयोग की वास्तविकता ग्रहण करने पर ज़ोर दिया और सहयोग के विभिन्न पहलुवों को समझाया।

कान्फ़रेंस के बाद खेल किये गये, जिसमें क़रीब सभी समितियों के लोगों ने भाग लिया। रस्साकशी, पोल जम्प और लम्बी तथा ऊँची कूद आदि दिखाये गये। 'बुलक रेस' में लोगों ने बहुत दिलचस्पी दिखाया।

इसके बाद प्रतियोगिता में सफल होने-वाले लोगों को इनाम बाँटे गये। बछरावाँ टाउन एरिया कमेटी के सभापति चौधरी सैदुद्दीन ने इनाम बाँटा।

जेतपुर कोआपरेटिव कान्फ़रेंस

जनवरी में जेतपुर में एक कान्फ़रेंस की गई। इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन भी किया गया, जिसमें स्थानीय कवियों ने भाग लिया और सहयोग पर कवितायें सुनाईं।

सबेरे प्रभातफेरी की गई, जिसमें सहयोग के गाने गाये गये। खेल किये गये जिसमें समितियों के मेम्बर और छोटे बच्चों ने भाग लिया। एक प्रदर्शनी भी की गई जिसमें कृषि-विभाग और स्वास्थ्य-विभाग ने भाग लिया। समिति के मेम्बरों ने भी अपनी चीज़ें भेजी थीं जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया।

स्थानीय स्कूल के अहाते में शाम के समय कान्फ़रेंस की गई। महोबा कोआपरेटिव बैंक के डाइरेक्टर श्री सेठ नाथराय ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

प्रार्थना करने के बाद सभा की कार्यवाही आरम्भ की गई। सुपरवाइज़र ने सर्किल की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। वार्तालाप द्वारा सहयोग की उपयोगिता लोगों को बताई गई। जनता को समय के अनुसार अपने आप बदलने की राय दी गई और अपने आप जीवन सुधार करें। यह भी बताया गया कि सरकार द्वारा खोले गये ग्राम-सुधार विभाग द्वारा किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है।

एक मेम्बर ने यह बताया कि समितियों की जाँच-पड़ताल में कमी है। इसपर काफ़ी बहस हुई।

अन्त में तीन प्रस्ताव पेश किये गये और सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गये—

(१) जनता की भलाई के लिए जेतपुर में एक मार्केटिंग यूनियन बनना चाहिए।

(२) क़र्ज़ देने के अलावा मेम्बरों को समितियों को और भी काम करना चाहिए।

(३) जनता हर तरह से युद्ध में सरकार की मदद करे।

सभापति को धन्यवाद देने के बाद सभा समाप्त हो गई। रात में गाना सुनाकर जनता का मनोरंजन किया गया।

प्रयाग स्वदेशी प्रदर्शनी में कोआपरेटिव दूध की दूकान

इलाहाबाद स्वदेशी नुमाइश में इलाहाबाद के असिस्टेंट रजिस्ट्रार मिस्टर इनामुर्रहमान की देख-रेख में केवल प्रचार मात्र के लिए इलाहाबाद कोआपरेटिव मिल्क यूनियन की एक दूकान खोली गई थी। मिस्टर बी० ए० मेहता, सर्किल अफ़सर, इसके प्रधान रहे। यह नुमाइश क़रीब २० दिन तक थी। अधोलिखित वर्णन से मालूम होता है यह प्रचार का काम बहुत सफल रहा।

काम

(१) यूनियन ने ९८१ सेर दूध नुमाइश में भेजा। यह दूध $\frac{1}{2}$ पौंड के बोतलों में रक्खा गया था और कुल बिक्री २००) की हुई। हर एक बोतल का दाम एक आना रक्खा गया था अत: यूनियन को क़रीब ७१) अधिक मिला।

(२) २,७७८ आदमियों ने बाद में दूध पिया। दूध की दैनिक बिक्री ४८ सेर और अधिक से अधिक ८७ सेर की रही।

(३) दूध के अलावा मक्खन और घी का भी प्रचार और बिक्री की गई। यदि यूनियन

ने और भी अधिक सामान भेजा होता तो वह भी बिक गया होता।

प्रचार

प्रचार से जनता को यह अवसर मिला कि वह यूनियन के सामानों की परीक्षा कर सके। नुमाइश में परचे बाँटे गये और जो कोई दूध पीने या देखने आते थे वे सब लोग उन चीज़ों को देखते थे जिसका प्रबन्ध मिस्टर मेहता इन्स्पेक्टर कोआपरेटिव सोसाइटीज़ और यूनियन के आनरेरी सेक्रेटरी ने किया था। इससे लोग काफ़ी प्रभावित हुए। यह कहा जाता है कि दूध की दूकान पर आनेवालों की संख्या उन लोगों की संख्या से कम थी जो लोग नुमाइश देखने आये। लोगों ने दूध, मक्खन और घी के लिए अपना आर्डर भी दिया। यह आर्डर इतना अधिक था कि उनका प्रबन्ध करना कठिन हो गया। नुमाइश के पहले दूध की औसत बिक्री ५ मन प्रतिदिन थी और मक्खन की बिक्री १० पौंड प्रतिदिन थी, परन्तु नुमाइश के बाद दूध की बिक्री ८ मन प्रतिदिन हो गई और मक्खन की बिक्री १६ पौंड। यह उन्नति मिल्क बार के प्रचार का ही परिणाम है।

इलाहाबाद के ट्रेनिंग कालेज के फ़िज़िकल एजुकेशन के सुपरिंटेंडेंट मिस्टर पी० आर० माथुर मिसर्स, नेहरू और मुंशी ईश्वरीशरण ने विज़िटर्स बुक में तारीफ़ लिखी है।

इसकी सफलता का श्रेय यूनियन के आनरेरी सेक्रेटरी और इलाहाबाद के सर्किल अफ़सर श्री बी० ए० मेहता को है।

मथुरा में कोआपरेटिव सोसाइटीज़ का डिवीज़नल खेल-कूद

हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन की डिवीज़नल रैली मेरठ में की गई। मेरठ के असिस्टेंट रजिस्ट्रार मिस्टर आर० पी० माथुर ने इस अवसर पर रैली में भाग लिया और सर्किल के डिवीज़नल खेल-कूद का भी प्रबन्ध किया। हर एक ज़िले ने १२-१२ आदमियों की एक टीम भेजी जिसमें आनेवाले लोग १६ वर्ष के नौजवान थे और जो समितियों के मेम्बर थे। इन लोगों ने स्काउटिंग और खेल दोनों में हिस्सा लिया। एक चुने हुए सुपरवाइज़र ने कैप्टन का काम किया।

स्काउटिंग और खेल की ट्रेनिंग और खासकर कुश्ती, कबड्डी, रस्साकशी, कूद आदि का प्रबन्ध किया गया। यह ट्रेनिंग ज़िलों में १० दिन के लिए थी और केन्द्रों में ४ दिन की।

स्काउटों के ठहरने का प्रबन्ध मेरठ कालेज के अहाते में खेमों में किया गया था। हर एक ज़िले ने अपने खेमे को सजाने की पूरी कोशिश की। सवेरे से शाम तक स्काउटों को बहुत काम में लगे रहना पड़ता था क्योंकि वे रैली के प्रोग्राम को कर रहे थे। रैली के अलावा खेल भी किये गये। डिप्टी रजिस्ट्रार श्री बी० एल० जसपाल के सामने अन्तिम खेल हुए। कुछ लोग 'हसन कोर्ट' को देखने गये जहाँ कोआपरेटिव के सिद्धान्त, खेती के सुधरे हुए बीज और औज़ार तथा देहात की बनी हुई चीज़ें, और हेल्थ डिपार्टमेंट की चीज़ें दिखाई गई थीं। खेलों में कुश्ती, कबड्डी, कूद और रस्से की प्रतियोगिता में लोगों ने विशेष दिलचस्पी ली।

अन्त में मथुरा डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर रायबहादुर जमुनाप्रसाद जी ने खेल में जीतनेवाले लोगों को इनाम बाँटा।

दूसरे दिन हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन के अफ़सर कैम्प देखने आये और मेम्बरों के उत्साह को बहुत पसन्द किया। नेशनल आर्गनाइज़र श्री आनन्दराव और डिवीज़नल कमिश्नर श्री अमरनाथ गुप्त ने हिन्दुस्तानी में भाषण देकर समझाया कि गाँवों में स्काउटों की बहुत आवश्यकता है। उन्होंने यह बताया कि स्काउटिंग के सिद्धान्त कितने विशद हैं और उसकी उन्नति कहाँ तक की जा सकती है।

तीतरा खलीलपुर कोआपरेटिव ग्रुप कान्फ़रेंस, ज़िला जालौन

१० फ़रवरी सन् १९४२ को तीतरा खलीलपुर में एक कोआपरेटिव कान्फ़रेंस हुई, जिसमें एक हज़ार से अधिक पुरुष और १०० के लगभग स्त्रियाँ सम्मिलित थीं। प्रोग्राम के अनुसार उपस्थित लोगों ने दिलचस्पी के साथ कान्फ़रेंस में भाग लिया। इस गाँव में कोआपरेटिव सोसाइटी और ग्राम-सुधार विभाग की सहायता से बहुत कुछ सुधार हुआ। पंचायतघर, भाँति भाँति के आदर्श कुएँ, स्नानागार, सड़कें, बग़ीचे, नालियाँ और गली कूचे अपनी अपनी जगह शोभा दिखला रहे हैं। प्रातःकाल ही से प्रोग्राम के अनुसार गाँववालों ने प्रभातफेरी लगाई। १२ बजे से पंडाल के अन्दर सभा की गई जिसमें ग्राम-सुधार, सहयोग, शिक्षा और सामाजिक कुरीतियाँ, स्त्री-शिक्षा, मार्केटिंग और गृह-उद्योगों पर काफ़ी प्रकाश डाला गया। जिसके समझाने और उसको कार्यरूप में परिणत करने को गाँव के पढ़े-लिखे आदमियों ने गाँव की भाषा में समझाया। इसके बाद कोआपरेटिव सुपरवाइज़र मुंशी मन्नाखाँ ने दर्शकों को हँसा हँसाकर ग्राम-सुधार और मार्केटिंग स्कीम को समझाया। तत्पश्चात् पंडित रमाशंकर इन्स्पेक्टर ने चर्खासंघ के व्यावहारिक कार्रवाई के लिए भाषण-द्वारा ज़ोर दिया। चार बजे से दंगल हुआ जिसमें २० जोड़ कुश्तियाँ हुईं। दूसरे गाँवों की दो पार्टियों में रस्साकशी हुई। इसके बाद स्काउटों ने तरह तरह के शारीरिक व्यायाम दिखलाये। स्त्रियों को श्रीमती रामकुमारी, लेडी सुपरवाइज़र ने दस्तकारी की चीज़ें दिखलाईं और सुधार की बातें समझाते हुए ग्रामोफ़ोन सुनाया। चर्खा-संघ में चर्खा का काम करनेवाली स्त्रियों का चर्खा दंगल कराया गया और यह देखा गया कि आध घंटे में कौन कितना अच्छा महीन और लम्बा सूत कात सकती हैं। खेल-कूद और दंगल के इनाम मिर्ज़ा मुहम्मद क़ाज़ी साहब, इन्स्पेक्टर सहयोग विभाग, उरई, ज़िला जालौन के सामने सभापति द्वारा वितरित किया गया। कान्फ़रेंस की सफलता का सारा श्रेय इसी गाँव के ज़मींदार और रईस चौधरी रघुबीरसिंह जी को है, जिन्होंने अथक परिश्रम और निःस्वार्थ भाव से काम किया। पंडित शिवदत्त शर्मा, कोआपरेटिव सुपरवाइज़र गाँववालों का सहयोग प्राप्त करने में पूरे तौर पर सफल हुए हैं।

कोआपरेटिव केन डेवलपमेंट यूनियन, लिमिटेड बोदरवार की पाँचवीं वार्षिक रिपोर्ट

यह यूनियन सन् १९३६-३७ ई० से काम कर रहा है। पहले इसका नाम केन डेवलपमेंट यूनियन, लिमिटेड रक्खा गया था और इसी नाम से इसकी रजिस्ट्री कराई गई। लेकिन बाद में किसानों की अन्य आवश्यकताओं का अनुभव करते हुए इस यूनियन की नियमावली में यूनियन के कारबार को बढ़ाने के उद्देश्य से कुछ संशोधन किया गया और इस संशोधित नियमावली के अनुसार इसका नाम कोआपरेटिव डेवलपमेंट यूनियन, लिमिटेड बोदरवार रक्खा गया। इन संशोधित नियमों के अन्तर्गत यूनियन का अपना कारबार सिर्फ़ ईख की खेती की उन्नति और उसकी सप्लाई तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि

गाँव का हर एक मनुष्य जिससे कृषि की उन्नति हो इन नियमों के अनुसार काम कर सकता है। गत वर्ष यह यूनियन ए० सी० डी० ओ० साहब कप्तानगंज, जो इसके सेक्रेटरी भी थे, की देख-रेख में काम कर रहा था। उस समय इस यूनियन का कारबार ४२ गाँवों में सीमित था। इसमें से २६ गाँव तो अपना गन्ना बोदरवार कोर्ट पर सप्लाई करते थे और बाक़ी १६ गाँव कप्तानगंज मिल पर सीधे गन्ना ले जाते थे। किसानों और सप्लाई की सुविधाओं को दृष्टि में रखते हुए केन कमिश्नर साहब के हुक्म से वे १६ गाँव जो कप्तानगंज मिल पर गाड़ी द्वारा गन्ना ले जाते थे, कप्तानगंज यूनियन में सम्मिलित कर दिये गये और अब इस यूनियन का कारबार सिर्फ़ २६ गाँवों तक सीमित है और इसमें मेम्बरों की संख्या ३,४९९ है।

इस वर्ष गन्ने की मात्रा अधिक थी और उपज भी अच्छी होने के कारण गन्ने की मात्रा और भी बढ़ गई। इसके विपरीत फ़ैक्टरियों के पास पिछले वर्ष की चीनी काफ़ी मात्रा में होने के कारण गन्ना कम पेरना पड़ा जिसका परिणाम यह हुआ कि गन्ने की मात्रा अधिक थी और फ़ैक्टरियों को गन्ना कम पेरना था अतः इस कठिनाई का अनुभव करते हुए सरकार ने कोटाप्रणाली निकाली जिसमें कि हर आदमी से एक खास मात्रा गन्ने की खेती के अनुसार ली जा सके। यह तरीक़ा बहुत सफल सिद्ध हुआ और इस तरह से हर किसान से चाहे वह छोटा हो या बड़ा १३० मन फ़ी एकड़ के हिसाब से गन्ना लिया गया। बाक़ी उन्नतिशील गन्ने की उपज का किसानों ने गुड़ बनाकर बेच लिया। विभाग की ओर से चार कुमार कोल्हू तक़ावी पर मँगाकर किसानों को दिये गये। लड़ाई के कारण कोल्हू आसानी से नहीं मिल सकते थे इसके अतिरिक्त लोहा महँगा होने के कारण कोल्हू भी काफ़ी महँगे हो गये थे नहीं तो और अधिक संख्या में कोल्हू मँगाकर किसानों को बाँट दिये जाते। इसके अतिरिक्त पेरने के बाद भी जो गन्ना बच रहा और खेतों में खड़ा रह गया उसपर सरकार ने २५ रुपया फ़ी एकड़ मुआवज़ा दिया और इस प्रकार हमारे किसानों का कुल गन्ना खपत में आगया।

यूनियन का उद्देश्य खासतौर से गन्ने की खेती की उन्नति, अधिक चीनी देनेवाले गन्ने मिल को पहुँचाना और अपने मेम्बरों की आर्थिक, शारीरिक तथा मानसिक स्थिति को सुधारना है। इसके लिए यूनियन ने भरसक चेष्टा की। यूनियन का कारबार एक बोर्ड आफ़ डायरेक्टर्स की राय से चेयरमैन केन-डेवलपमेंट अफ़सर और डिप्टी केन-डेवलपमेंट अफ़सर साहब उत्तरी सर्किल जो इस हलक़े के अफ़सर हैं, की देख-रेख में एक जूनियर ए० सी० डी० ओ० जो यूनियन के सेक्रेटरी भी हैं, दो सुपरवाइज़र और ६ कामदारों की सहायता से होता है। इसके अतिरिक्त आफ़िस में एक एकाउन्टेन्ट और एक असिस्टेन्ट एकाउन्टेन्ट दफ़्तर के काम करने के लिए मौजूद हैं। इनका वेतन यूनियन की पूँजी से दिया जाता है। इनके अतिरिक्त एक कामदार, एक चपरासी और एक आर्म-गार्ड का वेतन भी यूनियन ख़ुद देता है। बाक़ी कर्मचारियों का वेतन सरकार देती है। अन्य स्टाफ़ सिर्फ़ सीज़न ही में रक्खा जाता है।

यूनियन ने इस वर्ष लगभग तीन लाख मन गन्ना मिल को पहुँचाया जिस पर ६,९१७॥≡)५ पाई कमीशन मिला। इसके अलावा किसानों को पिछले साल जो २२ हज़ार रुपया खाद, बीज और क़र्ज़े के रूप में दिया गया था उसमें १४३१) सूद वसूल हुआ। इस तरह यूनियन को कुल ८,३४८॥≡)५ पाई आमदनी हुई, जिसमें से यूनियन को कुल ३,०१५॥)॥ मुनाफ़ा हुआ और ५ ३३३≈)॥ ख़र्चा हुआ जो कि वार्षिक उत्सव में विभिन्न फंड में सब लोगों की राय से बाँटा जायगा। इसके अतिरिक्त १०० बोरे खाद बाँटी गई, जिससे कि उन ईख के खेतों में जहाँ कि इसको इस्तेमाल किया गया काफ़ी अच्छी उपज रही है। इसके अतिरिक्त यूनियन में दवा के बक्स देहातों में कामदारों और सुपरवाइज़र के हेड क्वार्टर पर रक्खे हैं जिससे मरीज़ों को साधारण प्रकार की बीमारियों में बहुत काफ़ी सहायता मिली है और जिनसे कि लगभग ४ हज़ार रोगियों को दवा दी गई है। इसके अलावा यूनियन किसानों की स्थिति उदाहरण के लिए निम्न-लिखित कार्य करने की चेष्टा कर रहा है। आशा है कि इसमें बहुत जल्द सफलता प्राप्त होगी—

१—बोदरवार में डाकख़ाना न होने के कारण काफ़ी कठिनाई झेलनी पड़ती है अतः यूनियन की ओर से प्रयत्न किया जा रहा है कि बोदरवार में एक डाकख़ाना खोला जाय।

२—यूनियन इस बात की भी कोशिश कर रहा है कि बोदरवार में एक आयुर्वेदिक औषधालय खोला जाय ताकि अपने मेम्बरों को बीमारी की अवस्था में ज़्यादा अच्छे तरीक़े से सहायता पहुँचाई जा सके। यह औषधालय बहुत जल्द बोदरवार में खोला जायगा और यहाँ काम करने के लिए एक प्रमाणित वैद्य रक्खा जायगा। इस काम में यूनियन को मदद देने के लिए हमारे मेम्बरों ने एक आना फ़ी गाड़ी गन्ने के मूल्य में से देने का वादा किया है।

३—इस बात की भी कोशिश की जा रही है कि बोदरवार में एक पुस्तकालय और वाचनालय खोला जाय जिससे कि हमारे किसान रोज़ समाचारपत्र पढ़ सकें और अन्य बातों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकें।

४—यूनियन इस चीज़ को भी महसूस कर रहा है कि किसानों को बीजगोदाम न होने के कारण काफ़ी कष्ट हो रहा है अतः बोदरवार में एक बीजगोदाम खोलने के लिए एक योजना पर विचार हो रहा है। और इसके लिए अधिकारियों से पत्र-व्यवहार हो रहा है। ग़ल्ला रखने के लिए एक उचित मकान की व्यवस्था न होने के कारण बीज गोदाम खोलने में देर हो रही है।

५—यूनियन का दफ़्तर वर्तमान अवस्था में एक कच्ची और अरक्षित इमारत में है जिसके कारण सब काग़ज़ ठीक से नहीं रक्खे जा सकते हैं और सरकारी काम भी ठीक से नहीं हो सकता। यूनियन अपना दफ़्तर बनाने के लिए कोशिश कर रहा है और हमें आशा है कि बहुत जल्द इसमें सफलता मिल जायगी।

हमें पूरी आशा है कि इस साल अपने उच्च अधिकारियों की कृपा से ऊपर लिखे हुए सब कामों को हम पूरा कर सकेंगे।

अन्त में हम बोर्ड आफ़ डाइरेक्टर और अधिकारियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिन्होंने यूनियन के कामों में निरन्तर दिलचस्पी ली और इसको एक सफल संस्था बनाने की बराबर कोशिश की।

एस० ए० ख़ाँ,
सेक्रेटरी क़ोआपरेटिव डेवलपमेन्ट
यूनियन, लिमिटेड,
बोदरवार।

हमारे सूबे में ग्राम सुधार

दिसम्बर सन् १९४१ के कार्य की तफ़सील

ग्राम-सुधार के इतिहास में वर्ष का यह अन्तिम माह अपनी विशेष सत्ता रखता है। इस माह की २३वीं तारीख़ को विमेन वेलफ़ेयर कार्यकर्त्ताओं के तीसरे दल की ट्रेनिंग समाप्त हो गई। इन महिलाओं को उनके विभिन्न जिलों के केन्द्रों का प्रधान बनाया गया है। ये महिलायें हर तरह से ग्राम महिलाओं को राह सुझावेंगी और ट्रेनिंग में सीखे हुए ढंग पर वहीं रहकर उनके समक्ष आदर्श उपस्थित करेंगी। ये महिलायें दोपहर में १२ बजे से ३ बजे तक प्रौढ़ महिलाओं को शिक्षा देंगी। इस समय गाँव की स्त्रियाँ आकर इनसे सफ़ाई, घरेलू धन्धे, बच्चे के पालन-पोषण, दस्तकारी, सीना-पिरोना, कपड़े साफ़ करना और भोजन बनाने का काम सीख सकती हैं। ८ बजे से १० बजे सवेरे ये कुमारी बालिकाओं को पढ़ने-लिखने का काम सिखावेंगी। इसके अलावा ये इनको दस्तकारी और गर्ल गाइड की भी शिक्षा देंगी। आजकल गर्ल गाइडिंग पर विशेष ज़ोर दिया जा रहा है। दोपहर के बाद होनेवाले क्लासों के समय ये सप्ताह में एक बार सामाजिक गाने या उत्सव आदि से स्त्रियों का मनोरंजन भी करेंगी। सूबे की स्त्रियों की आर्थिक समस्याओं के आधार पर निश्चित किया जा रहा है। इस प्रकार ग्राम-सुधार के काम को सर्वव्यापी बनाया जा रहा है।

आजकल जन-स्वास्थ्य के सुधार करने का विचार सुसंगठित संस्थाओं-द्वारा किया जा रहा है। जीवन की वास्तविक कठिनाइयों की ओर इस तरह झुकना बहुत आनन्ददायक सुधार है। पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट की सहायता से शाहजहाँपुर में कालरा को दूर करने के लिए काम किया गया था और उसमें आशातीत सफलता भी प्राप्त हुई। ४,६१९ सोखते के गढ़े बनाये गये और ३,८०९ रोशनदान लगाये गये। २५४ सूअरबाड़े बस्तियों से बाहर किये गये। १०,३६२ घूरे साफ़ किये गये। २०९ पाखाने बनाये गये और १,१०७ गढ़े पाटे गये। ४९,३८६ मरीज़ों की दवा की गई। १,६०४ आदमियों को प्राथमिक शिक्षा दी गई और ४ को दाई की ट्रेनिंग भी दी गई।

२४० डिमान्स्ट्रेशन किये गये। इनका तात्पर्य यह था कि गाँववालों को दिखाकर और समझाकर शिक्षा दी जाय। इसमें उन्हें सुधरे हुए बीज का उपयोग, ज़मीन की अच्छी तैयारी और फ़सल की रक्षा, कीड़े और बीमारियों से फ़सल को बचाना और खाद का प्रयोग करना आदि बताया गया। इस महीने में ७,५८० खाद के गढ़े बनाये गये और ६,४१३ पेशाब इकट्ठा करनेवाले गढ़े बनाये गये। १,७५६ अच्छी नस्ल के जानवर दिये गये। ६,११४ बीमार जानवरों की दवा की गई। ३७ तालाब बनाये गये। सिंचाई की आसानी के लिए १५६ कुओं की मरम्मत की गई या बोरिंग हुई और ४०२ नये कुएँ बनाये गये।

प्रौढ़ ग्राम स्काउटों की ट्रेनिंग पर भी बड़ा ज़ोर दिया जा रहा है। प्रौढ़ अध्यापकों की कड़ी निगरानी की जा रही है और कुछ को छोड़कर सब जगह इन अध्यापकों के काम अच्छे हो रहे हैं और इन स्काउटों के दस्तकारी के काम ग्राम सुधार की स्थायी निधि हो रहे हैं। मेरठ में चितौली गाँव में क़रीब एक सप्ताह के लिए एक कैम्प खोला गया था जहाँ प्रौढ़ स्काउटों को ट्रेनिंग दी गई। हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन के असिस्टेंट कमिश्नर श्री एच० आर० नाथने ने बस्ती में क़रीब ४०० स्काउटों को ट्रेनिंग दी है। ४७७ सेवा दल बनाये गये और २,४७६ स्काउट और ग्राम सेवकों को ट्रेनिंग दी गई। ३७२ अखाड़े बनाये गये। ३,९४५ प्रचारसभायें की गईं। ११८ ड्रामा खेले गये और २७३ भजन मंडलियाँ बनाई गईं। मथुरा में बलदेव के मेले में एक प्रदर्शनी की गई थी जो बहुत सफल रही। कुल मिलाकर सूबे में ४२ प्रदर्शनियाँ की गईं। २७ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक लखनऊ में मुर्ग़ी पालनेवाले विशेषज्ञ ने एक प्रदर्शन किया जिसे डिप्टी कमिश्नर, सेक्रेटरी और चेयरमैन ने बहुत पसन्द किया।

हाल का प्रकाशित हुक्म, जिसमें यह कहा गया था कि मरीज़ों को यदि अँगरेज़ी दवाख़ाना हो तो दो पैसा और हिन्दुस्तानी हो तो एक पैसा प्रतिमरीज़ देना होगा, रद्द कर दिया गया। विभाग द्वारा प्रचलित दवाख़ानों में दवा करनेवाले मरीज़ों की दवा अब मुफ़्त में की जायगी। आँख के इलाज करने के लिए विभाग ने ३४ ज़िलों और ५ प्राइवेट और मिशन अस्पतालों में प्रबन्ध कर दिया है। इस योजना को सफल बनाने में स्टाफ़ पूरा पूरा सहयोग दे रहा है।

जीवन-सुधार समितियों में नये मेम्बर बनाये जा रहे हैं और नई नई समितियाँ भी बनाई जा रही हैं। १८५ जीवन-सुधार समितियाँ बनाई गईं और ४ की रजिस्ट्री की गई। ६ बिक्री की समितियाँ और ५ अन्य समितियाँ बनाई गईं। ग्राम फंड के लिए सालाना चन्दा और रुपया वसूल किया गया।

इस समय जेलीकोट अपेयरी में ४६ छत्ते थे। इस महीने में ३९५ रु० ४ आ० ३ पाई की शहद बेची गई। ८वें दल की ट्रेनिंग १५ दिसम्बर १९४१ को समाप्त हो गई। १७ आदमियों को मधु-मक्खी पालने के सामान, मक्खियाँ और शहद दी गई।

ग्रामोन्नति का काम बहुत ही उत्साह-वर्धक रहा और गाँववालों ने धन तथा कार्य से पूरा पूरा सहयोग दिया। १० पंचायत-घर बनाये गये और बहुत से बन रहे हैं। १३३ नमूने के घर बनाये गये और ४०७ व्यक्तियों को उद्योग-धन्धे की ट्रेनिंग दी गई।

ग्राम-सुधार-अफ़सर का तार का पता

ग्राम-सुधार अफ़सर, यू० पी० को तार भेजने का पता यह है--"हल", लखनऊ।

ग्राम-सुधार अफ़सर के नाम जिन्हें तार भेजने की ज़रूरत पड़ती है उन महानुभावों से निवेदन है कि वे ग्राम-सुधार अफ़सर को तार देते समय इस छोटे पते का ही प्रयोग करें। यह पता रजिस्टर्ड है। इससे समय और व्यय दोनों की बचत होगी।

कहानियों पर पुरस्कार

जैसा कि हम गत मास में लिख चुके हैं इस बार ग्राम-सुधार अफ़सर ने कहानियों पर पुरस्कार देने की घोषणा की है। ये कहानियाँ ग्राम जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली होनी चाहिए और "हल" के छपे हुए तीन सफ़े से अधिक न हों। कहानी हिन्दी, उर्दू और अँगरेज़ी--तीनों में से किसी एक भाषा में लिखकर भेजी जा सकती है। विशेष जानकारी के लिए पृष्ठ १६९ पर छपे नियमों को पढ़ लें। आशा है "हल" के पाठक इस प्रतियोगिता में अवश्य भाग लेंगे। पाठक इस बात की परवाह न करें कि उन्हें अच्छी भाषा लिखनी नहीं आती। ग्राम-सुधार अफ़सर भाषा को उतना महत्त्व नहीं देंगे जितना कि कहानी के विषय को।

आँखों की चिकित्सा का प्रबन्ध

इस वर्ष जनवरी के "हल" में 'आँखों की चिकित्सा का प्रबन्ध' नाम से एक नोट छप चुका है। उसको "हल" के पाठकों ने अवश्य देखा होगा। उसी नोट के संबंध में कुछ और बातें रह गई थीं, जिनको ग्राम-सुधार अफ़सर ने अपने एक सरक्यूलर-द्वारा सूचित किया है। इस सरक्यूलर में ग्राम-सुधार अफ़सर, रायबहादुर पंडित काशीनाथ जी ने कहा है कि पीलीभीत ओर हमीरपुर के ज़िले में भी ग्राम-सुधार विभाग की ओर से आँखों की चिकित्सा का प्रबन्ध किया गया है।

बाक़ी उन ज़िलों के सिविल सर्जन और मेडिकल अफ़सर जहाँ आँखों की चिकित्सा का प्रबन्ध नहीं किया गया है अपने ज़िले के आँख के रोगियों को पासवाले उस ज़िले में भेज सकते हैं जहाँ इसका उचित प्रबन्ध किया गया है।

इस सम्बन्ध में उन शर्तों का पालन करना आवश्यक है जिनका विवरण जनवरीवाले नोट में छप चुका है।

यह आवश्यक है कि इन आँख के रोगियों को दवाखानों तक भेजने के खर्च का प्रबन्ध ग्राम-सुधार के कार्यकर्त्ताओं को दयालु ज़मींदारों आदि से करना चाहिए, फिर भी यह निश्चय किया गया है कि सिविल सर्जन कुछ खास क़िस्म के आँख के मरीज़ों को राह-खर्च की मंज़ूरी दे सकते हैं।

इस योजना के लिए ग्राम-सुधार-संघ के फंड में से कुछ भी खर्च नहीं किया जायगा।

ग्राम-सुधार की प्रचार गाड़ियाँ

ग्राम-सुधार अफ़सर, रायबहादुर पंडित काशीनाथ जी ने ज़िला ग्राम-सुधार-संघ के मंत्रियों के नाम एक सरक्यूलर भेजा है। इस सरक्यूलर में आपने बताया है कि ग्राम-सुधार की प्रचार-गाड़ियाँ किस प्रकार काम करेंगी। इस सरक्यूलर के द्वारा उन प्रचार-गाड़ियों के प्रचार करने का समय निश्चित कर दिया गया है। इन्हीं निश्चित तिथियों के अन्दर विभिन्न ज़िलों में ग्राम-सुधार का प्रचार किया जायगा। उन प्रचार-गाड़ियों और उन ज़िलों का विवरण जहाँ ये गाड़ियाँ प्रचार करेंगी, नीचे दिया जा रहा है--

गाड़ी नं० १

बस्ती--२४ फ़रवरी से २ मार्च, १९४२
गोंडा--३ मार्च से १० मार्च, १९४२
बहराइच--११ मार्च से १८ मार्च, १९४२

यह प्रचार गाड़ी २० मार्च, सन् १९४२ को लखनऊ वापस आ जायगी।

गाड़ी नं० २

सहारनपुर--२७ फ़रवरी से ५ मार्च, १९४२
देहरादून--६ मार्च से १३ मार्च, १९४२
शाहजहाँपुर--१६ मार्च से २३ मार्च, १९४२

यह प्रचार गाड़ी २३ मार्च, सन् १९४२ को लखनऊ वापस आ जायगी।

गाड़ी नं० ३

ग़ाज़ीपुर--२६ फ़रवरी से ५ मार्च, १९४२
बलिया--६ मार्च से १३ मार्च, १९४२

यह गाड़ी १५ मार्च सन १९४२ को लखनऊ वापस आ जायगी।

समुद्री घास की खाद

टैनूर में समुद्री घास का खाद के रूप में प्रयोग करने से अद्भुत परिणाम दिखाई पड़ता है। पहले पहल यह प्रयोग मुर्दा होते हुए नारियल के पेड़ों पर किया गया। खाद देने के पहले उनकी पत्तियाँ पीली और मुरझाई हुई थीं और यह जान पड़ता था कि वे सूख जायँगे। लेकिन खाद पाने के बाद उनकी पत्तियाँ गहरी हरी हो आईं और पेड़ों में फल भी लगे। इन खादों में तीन हिस्सा समुद्री खाद और एक हिस्सा राख का मिलाया गया था। दूसरे ६ पेड़ों पर समुद्री घास और भेड़ से प्राप्त खाद का प्रयोग किया जा रहा है। अनुमान किया जाता है कि इसका परिणाम और भी अच्छा होगा।

पेड़ पौधों के लिए इस तरह की खाद का प्रयोग अपने यहाँ भी किया जा सकता है। मवेशियों तथा भेड़-बकरियों से यहाँ काफ़ी खाद प्राप्त हो सकती है। अकसर लोग गोबर से उपले बनाकर उससे ईंधन का काम लेते हैं। ऐसा न करके यदि वे ईंधन के लिए फालतू जगहों में बबूल आदि के पेड़ लगायें और गोबर का उपयोग खाद के रूप में करें तो काफ़ी लाभ हो सकता है। अच्छी पैदावार के लिए अच्छे बीज और अच्छी जोताई की जितनी ज़रूरत है उतनी ही अच्छी खाद की भी है और इसके लिए किसानों को सदैव सतर्क रहना चाहिए और नये नये होनेवाले प्रयोगों की ओर ध्यान देना चाहिए।

टिड्डियों के हमले का भय

पंजाब और संयुक्तप्रान्त में टिड्डियों के हमले का भय पैदा हो गया है। पिछली जून और जुलाई में पच्छिमी देशों यानी अरब और ईरान वग़ैरह से बिलोचिस्तान में इनके दल आये। कच्छी, झलवा और चकरा आदि से उनके अण्डे देने के भी समाचार आये हैं।

जिन जगहों में टिड्डियों ने अंडे-बच्चे दिये हैं वहाँ उनके नष्ट-भ्रष्ट करने के सभी मुनासिब उपाय किये गये हैं। एक सरकारी रिपोर्ट से पता चला है कि गत दिसम्बर से पहले ११,७१,२६८ टिड्डियाँ और उनके लाखों अंडे-बच्चे नष्ट किये जा चुके हैं। नई दिल्ली ने जनता को टिड्डियों की खबर देने के लिए जो संस्था है उसका कहना है कि सिन्ध और राजपूताने में टिड्डियों के दल के दल अंडे दे रहे हैं और इन टिड्डियों के हमले बिलोचिस्तान में हो सकते हैं और इधर की तरफ़ भी हो सकते हैं। टिड्डियों से किस प्रकार रक्षा करनी चाहिए इस सबंध में हम "हल" में अक्टूबर, सन् १९४१ में एक लेख प्रकाशित कर चुके हैं। आशा है पाठक उसे एक बार फिर पढ़ लेंगे।

खादर ज़मीन का बनना

खादर ज़मीन खेती के लिए बेकार होती है क्योंकि एक तो वह समतल नहीं रहती और इससे उसकी अच्छी मिट्टी बरसात के पानी के साथ बह जाती है। यमुना और चम्बल के किनारे इस तरह की ज़मीन बढ़ती जा रही है और इस तरह किसानों को जो हानि पहुँच रही है वह कोई भी ज़मीन को देखकर अनुमान कर सकता है। इस संबंध में युक्तप्रान्त के कृषि-विभाग की ओर से एक पर्चा प्रकाशित हुआ है, जिसका नम्बर १३३ है। उस पर्चे में यह बताया गया है कि खादर ज़मीन किस तरह बनती है और उसका बनना कैसे रोका जा सकता है। खादर ज़मीन के बनने के बारे में पर्चे में इस तरह लिखा है—

"जमुना और चम्बल नदियों के द्वाबे की खादर ज़मीन का रक़बा धीरे धीरे बढ़ रहा है। इसका कारण यह है कि वहाँ के जंगल काट डाले गये हैं, बिला किसी रोक-थाम के जानवरों के चरने से वहाँ की घास ग़ायब हो गई है और मूसलधार वर्षा मुलायम व भुरभुरी मिट्टी को काटकर अपने साथ नदियों की ओर बहा ले गई है। इसलिए नालों और गड्ढों के कारण वहाँ की ज़मीन खादर के रूप में बदल गई है। यह आगरा, मथुरा और इटावा के ज़िलों में पाई जाती है। ज़िला इटावा में अन्दाज़न एक लाख बीस हज़ार एकड़ ज़मीन खादर है और इसके अलावा मथुरा, आगरा और जालौन के ज़िलों में भी ऐसी ज़मीनें मौजूद हैं। खादर ज़मीनों की अधिकता का इस बात से अन्दाज़ा हो सकता है कि इस सूबे में बेकार और बलुई ज़मीनें जिनमें खादर भी शामिल है ३१ लाख २० हज़ार एकड़ हैं जो कि ४,९०० वर्गमील घेरे हुए हैं जैसा कि ऊपर बयान किया गया है। खादर ज़मीनें उस हालत में बनती हैं जब कि मिट्टी मुलायम और भुरभुरी होती है और उसकी तह किसी सख्त चट्टान पर नहीं होती। जब ज़मीन में ढाल ज़्यादा होती है और उसकी सतह पर घास नहीं होती तो वर्षा का पानी सूखी ज़मीन पर बहकर मिट्टी की काट देता है। जमुना का द्वाबा इस प्रकार से खादर ज़मीन बनने की उत्तम मिसाल है। इन ज़मीनों में शताब्दियों की लापरवाही की वजह से हरी घास बहुत कम पाई जाती है। जिसके न होने की वजह से वर्षा का पानी मिट्टी को काटकर दरिया में बहा ले जाता है। यह हिसाब लगाया गया है कि जमुना और चम्बल नदियों के द्वाबे की ज़मीन का कटाव आधे टन मिट्टी प्रतिसेकंड के हिसाब से एक हज़ार वर्ष से दिन और रात बग़ैर रुके हुए जारी है।

खादर के हानिकारक प्रभाव—जमुना और उसकी सहायक नदियों के किनारों से हरी घास क़रीब क़रीब ग़ायब हो गई है। इस रेगिस्तानी पट्टी के आगे की ज़मीन साधारण वर्षा होने पर मुश्किल से खेती के योग्य होती है और सूखे सालों में खेती असम्भव होती है। क्योंकि पानी की तह बहुत नीचे होने की वजह से अधिक खर्च होने के कारण सिचाई सम्भव नहीं है। खादर ज़मीन की प्राकृतिक घासें जानवरों के चरने तथा अनियमित खेती करने से नष्ट हो गई हैं और उन पुराने पेड़ों को छोड़कर जिन्होंने कि अपनी जड़ें पानी की सतह तक पहुँचा दी हैं, बड़े बड़े रक़बे पेड़ों से बिलकुल खाली हो गये हैं।"

खादर ज़मीन का सुधार

खादर ज़मीन के सुधार के बारे में भी इस काग़ज़ में विस्तार के साथ बतलाते हुए जिन दो मुख्य बातों की ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया गया है वे ये हैं—

१—चराई नियंत्रित ढंग से की जाय।

२—खादर ज़मीन के किनारे पर खेती बिलकुल बन्द कर दी जाय।

एक ही जगह पर लम्बे अरसे तक बैलों के चरने से ज़मीन के खादर हो जाने का अन्देशा रहता है। क्योंकि ज़मीन को खादर न बनने देने के लिए उस हिस्से में घास का होना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए इस परचे में तीन बातें बताई गई हैं। पहली तो यह है कि चारे की ज़मीन को कई हिस्सों में बाँट दिया जाय और उनपर बारी-बारी से चराई की जाय। दूसरी यह है कि ऐसी ज़मीन को दो हिस्सों में बाँटा जाय। एक हिस्से में एक साल चराई की जाय और दूसरे हिस्से में आगे के साल। तीसरी बात यह है कि उसी ज़मीन को एकबार चराई के बाद कुछ वर्षों के लिए एकदम चराई बन्द कर दी जाय। इस परचे में पहले तरीक़े को सबसे अच्छा बताया गया है और विस्तार के साथ उसके परिणाम भी समझाये गये हैं। चराई में नियंत्रण करने के समय किसान को जो एतराज़ हो सकता है उसका जवाब परचे में दिया गया है। किसान प्रायः यह एतराज़ करते हैं कि चराई में नियंत्रण करने से उनको मजबूर होकर कम पशु रखने पड़ेंगे और इस तरह न तो उन्हें काफ़ी घास ही मिल सकेगी और न वे दूध-दही का रोज़गार ही कर सकते हैं। इसके जवाब में यह कहा गया है कि यदि कमज़ोर पशुओं को जो बहुत कम दूध देते हैं बेच दिया जाय और उनकी जगह पर अच्छी नस्ल के दूध देनेवाले जानवर पाले जायँ और ईंधन के लिए बबूल आदि के पेड़ लगाये जायँ तथा गोबर को बिलकुल खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाय।

खादर ज़मीन के किनारों पर खेती न करने की बात इसलिए कही जाती है कि इस तरह बराबर जोताई करने से ज़मीन ढीली हो जाती है और तेज़ वर्षा होने से बहुत-सी ज़मीन कटकर बह जाती है।

खेतों का कटाव

खेतों के कटाव के संबंध में भी इस परचे में बताया गया है और उसको रोकने का उपाय भी बताया गया है। उसे हम नीचे ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहे हैं—

हम यहाँ एक दूसरे क़िस्म के कटाव का बयान करते हैं जो कि हमारे यहाँ की ज़मीनों में होता है और जिसको खेतों का कटाव कहते हैं। यह उन खेतों में होता है जो ऊँचे-नीचे होते हैं या जो ज़्यादा ढालू होते हैं। तेज़ वर्षा से ज़मीन की ऊपरी सतह की मिट्टी ढालू खेतों से कटकर बह जाती है और इस तरह से उनकी ज़रखेज़ी कम हो जाती है। ज़मीन में होनेवाला यह नुक़सान इस प्रकार से रोका जा सकता है कि नं० १—खेतों में बन्द बनाये जायँ और नं० २—करहे से मिट्टी बराबर की जाय।

१—ढालू खेतों में मेंड़ बनाना—यह
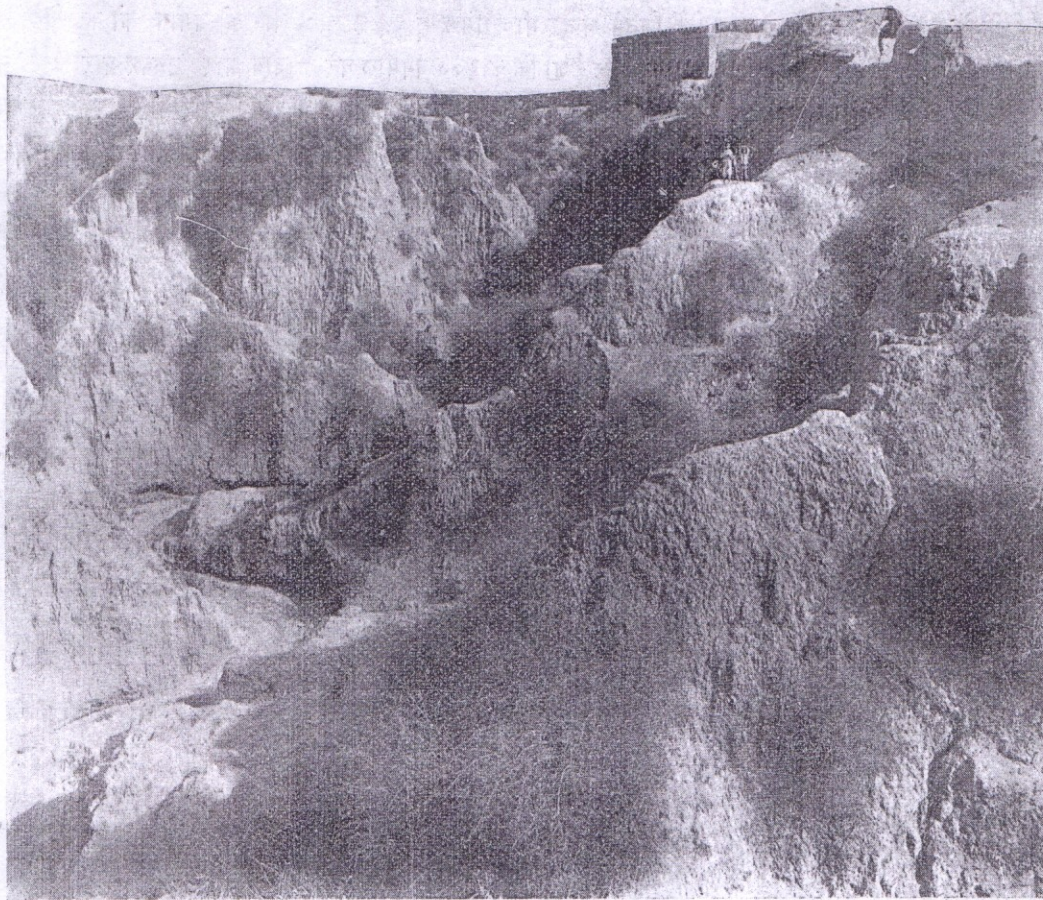
ज़मीन के कटान का एक दृश्य

इस प्रकार से किया जाय कि खेत के नीचे के हिस्से में १ से २ फ़ीट तक ऊँचे मेंड़ बनाये जायँ और उनके दायें, बायें और खेत के अन्दर ढाल के समानान्तर भी मेंड़ बनायें जायँ ताकि तेज़ वर्षा के समय मिट्टी कटकर बहने न पाये। अगर खेत का ढाल एक ओर से अधिक दिशाओं में है तो मेंड़ एक से अधिक रुख पर बनाने पड़ेंगे। पानी की निकासी के लिए नालियाँ भी बनानी होंगी ताकि पानी धीरे धीरे बाहर निकल जाय। इन निकासी के नालियों के बनाने के लिए ऐसी जगह तलाश करनी चाहिए कि जो प्राकृतिक रीति से पानी निकलने का रास्ता हो और जो मामूली तब्दीली के साथ निकासी की नाली बनाई जा सकती है। इस तरीक़े से न केवल खेतों का कटाव ही बन्द होता है बल्कि ज़मीन में अधिक पानी सोख जाता है जिसकी वजह से फ़सलों को सिंचाई की कम ज़रूरत होती है।

२—करहे से मिट्टी बराबर करना—जब खेत में ज़्यादा ढाल न हो तो उसकी ऊँचाई, निचाई, "लेवलिंग करहा" इस्तेमाल करने से ठीक हो सकती है। पहले ज़मीन की जोताई की जाती है जिसके लिए मिट्टी पलटनेवाले भारी हल अधिक मौज़ूँ हैं और उसके बाद करहा इस तरह से इस्तेमाल किया जाता है कि उभरे हुए हिस्से की मिट्टी नीचेवाली जगह में पकड़कर ज़मीन को बराबर कर देती है। अच्छी तरह से बराबर खेतों की मिट्टी पानी के बहाव के साथ कटकर बाहर नहीं निकलती इसलिए खाद के अंश नष्ट नहीं होते हैं, इसके अलावा सिंचाई करने में भी आसानी होती है।

खादर ज़मीनों को सुधारने का काम कृषक सहकारी रीति पर कामयाबी के साथ पूर्ण कर सकते हैं। मामूली खेतों का कटाव हर किसान आसानी से रोक सकता है, अगर वह अपने बेकार समय में "लेवलिंग करहे" के इस्तेमाल से ज़मीन बराबर कर लें। लेवलिंग करहा कोई क़ीमती चीज़ नहीं है और उसको खींचने के लिए एक जोड़ी बैल काफ़ी होते हैं। यह कृषि-विभाग के ग़ल्ला गोदामों से खरीदा जा सकता है।

सिंगापुर का पतन

सुदूरपूर्व में अँगरेज़ों का सबसे बड़ा गढ़ सिंगापुर का पतन हो गया। मलाया प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे पर यह एक छोटा-सा टापू पिछले १५० सालों से ऊपर अँगरेज़ों के क़ब्ज़े में चला आ रहा है। इस बीच में इसकी अच्छी उन्नति हुई थी। यहां पर जंगी जहाज़ों के मज़बूत अड्डे बने हुए थे। यह अड्डा इतन[illegible] मज़बूत था कि कहा जाता था कि दुनिया [illegible] अब कोई ताक़त ऐसी नहीं है जो इस[illegible] विजय प्राप्त कर सकती है। यहीं से तमा[illegible] समुद्री रास्तों पर जो कि हिन्द महासागर [illegible] और पैसिफ़िक महासागर में थे, शासन ह[illegible] था। जब मलाया पर जापानियों का क़[illegible] हुआ था तभी से इस टापू के अँगरेज़ों के ह[illegible] से निकल जाने का ख़तरा बहुत बढ़ गया था[illegible] असल बात यह हुई कि इस टापू पर जापानि[illegible] ने ख़ुश्की के रास्ते से हमला किया। सम्भव[illegible] सिंगापुर की क़िलाबन्दी जब हुई थी तब तक [illegible] बात किसी के ध्यान में न आई थी कि ख़ु[illegible] के रास्ते से भी इस टापू पर दुश्मन का हम[illegible] हो सकता है? मलाया अँगरेज़ों के क़[illegible] में था ही। मलाया के बाद थाईलैंड [illegible] स्वतंत्र राज्य था। थाईलैंड के बाद फ़्रेंच इं[illegible] चाइना फ़्रांसीसियों का एक ज़बर्दस्त साम्रा[illegible] था। इतने बड़े राज्यों का मुक़ाबिला क[illegible] हुए जापान यहां आ सकेगा, इसका स्व[illegible] जापानियों को भी ख़याल नहीं रहा होग[illegible] लेकिन फ़्रांस के पतन के बाद फ़्रेंच इंडोचा[illegible] के जापानियों के हाथ में चले जाने के बाद [illegible] उसके बाद ऐन मौक़े पर थाईलैंड का जाप[illegible] के साथ मिल जाने से, मलाया बिल्कु[illegible]

यह अड्डा इतना
ा कि दुनिया
ं है जो इसका
यहीं से तमाम
न्द महासागर
थे, शासन होना
नियों का क़ब्ज़ा
अँगरेज़ों के हाथ
त बढ़ गया था
पर जापानियों
केया। सम्भवतः
ई थी तब तक
थी कि खुश्की
इमन का हमला
रेज़ों के क़ब्ज़े
थाईलैंड एक
बाद फ्रेंच इंडो-
बर्दस्त साम्राज्य
क़ाबिला करने
, इसका स्वप्न
रहा होगा?
च इंडोचाइना
ने के बाद और
लैंड का जापान
काया बिलकुल

...रक्षित रह गया। इतनी जल्दी इसकी रक्षा का इन्तज़ाम हो भी नहीं सकता था? इस अवसर से यदि जापान लाभ न उठाता तो यह आश्चर्य की ही बात होती।

इधर तो यह सब हो रहा था और उधर अटलान्टिक में अँगरेज़ों के जंगी जहाज़ और हवाई जहाज़ जर्मनी से लड़ने में और ब्रिटेन को जर्मनी के हमले से बचाने में लगे हुए थे। इसी लिए, समय पर सिंगापुर की मदद भी नहीं हो सकती थी। और इसी लिए जापान के लिए इस टापू पर क़ब्ज़ा करना आसान हो गया।

सिंगापुर में अँगरेज़ों की जो हार हुई है उसको ब्रिटिश प्रीमियर स्वयं चर्चिल ने बड़े दुःख के साथ पार्लियामेंट में क़बूल किया है। सम्भव है सिंगापुर के हाथ से निकल जाने से अब हिंदुस्तान, लंका, जावा और आस्ट्रेलिया पर भी जापानियों के हमले का खतरा बहुत बढ़ गया है। आज जब कि हम ये पंक्तियाँ लिख रहे हैं जापानी फ़ौजें बर्मा में बढ़ी आ रही हैं और जावा पर और आस्ट्रेलिया पर भी हवाई हमले हो रहे हैं। मदरास और सिलोन आदि पर जापानी हमले का डर पैदा हो गया है। अंगरेज़ी अखबारों ने इस समय ब्रिटेन की गवर्नमेंट की बड़ी टीका-टिप्पणी की। इसके फलस्वरूप चर्चिल की युद्ध-समिति में कुछ परिवर्तन हो गया है और सम्भव है कि अभी और कुछ परिवर्तन हो। कुछ भी हो जो बात होनी थी वह तो हो ही चुकी है। और आशा की जाती है कि राजनैतिक और फ़ौजी दांव-पेंच के समझनेवाले लोग बीती बातों का ख़याल न करके आगे आनेवाली मुसीबतों के मुक़ाबिले का उपाय सोचेंगे।

सिंगापुर का बलिदान एक प्रकार से व्यर्थ भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि इससे एक तो फ़ौजी तैयारी के लिए कुछ वक्त मिल गया है और दूसरे एक सबक़ भी मिल गया है जिसके द्वारा आगे आनेवाली फ़ौजी कार्यवाहियों पर बग़ैर असर पड़े नहीं रह सकता।

जनरल चांगकाई शेक की भारत-यात्रा

इँगलैंड और अमरीका में जिस वक्त सिंगापुर के पतन की शोकघटा छाई हुई थी उसी वक्त वहाँ के समाचारपत्रों में चांगकाई शेक की भारत यात्रा का समाचार भी आशा की एक सुनहली रेखा-सा अंकित हो उठा था। सिंगापुर की ख़बर यदि निराशापूर्ण घटना
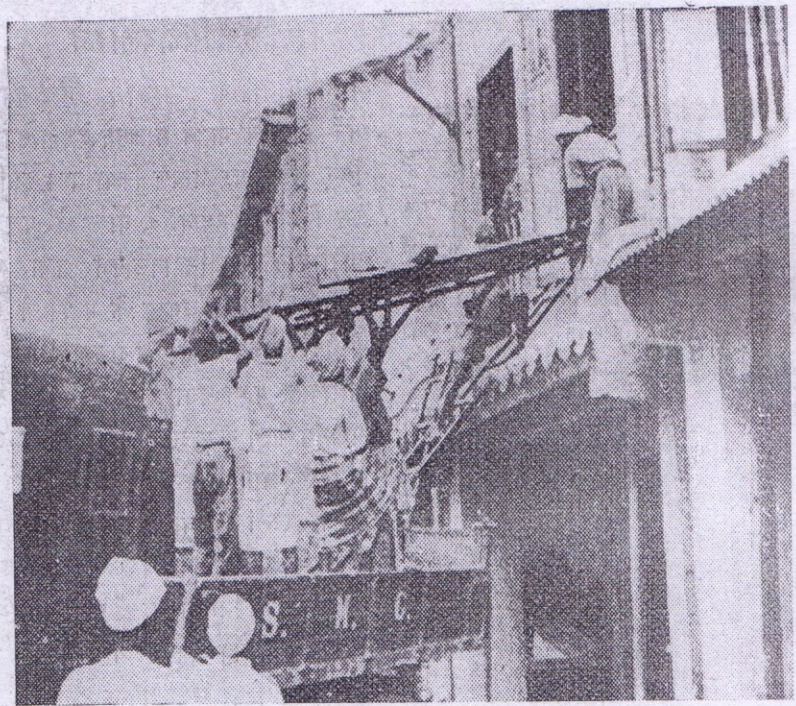
सिंगापुर में हवाई हमले से टूटे-फूटे एक मकान का दृश्य

चीन प्रजातन्त्र के प्रेसिडेन्ट मार्शल चांगकाई शेक तथा मैडम चांगकाई शेक, जिनकी भारत-यात्रा से यहाँ के राजनैतिक जगत् पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है।

थी तो चांगकाई शेक की भारत-यात्रा उतनी ही आशाओं से भरी हुई बात थी। हिन्दुस्तान में चांगकाई शेक की इस यात्रा से खासी चहल-पहल पैदा हो गई है। स्वयं पंडित जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली में जाकर वाइसराय के भवन में चांगकाई शेक और मैडम चांगकाई शेक से घंटों बातें कीं और इस बात पर विचार किया कि भारत और चीन दोनों देशों की रक्षा के लिए परस्पर सहयोग कैसे बढ़ सकता है? वह रास्ता जो बर्मा से होकर चीन को जाता है और जो बर्मा रोड के नाम से मशहूर है भारत और चीन दोनों की रक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है। इसी रास्ते से चीनी फ़ौजें बर्मा में आई हैं और इसी रास्ते से अपार युद्ध-सामग्री जापानियों के खिलाफ़ लड़ने के लिए चीन को भेजी जाती है। मार्शल चांगकाई शेक जी-जान से इस बात की कोशिश करेंगे कि यह रास्ता जापानियों के हाथ में न जाने पावे। कलकत्ता में मार्शल चांगकाई शेक महात्मा गांधी से भी मिल चुके हैं। क्या तय पाया गया है यह तो हमें नहीं मालूम परन्तु प्रतीत होता है कि इस बातचीत का बहुत सुन्दर परिणाम निकल सकता है। सम्भव है कि कांग्रेस और सरकार के बीच में ग़लतफ़हमी की जो खाई दिखाई देती है वह दूर हो जाय और तब हिन्दुस्तान भी पूरे पूरे जोश के साथ इस युद्ध में पड़े। परन्तु यह सब हिन्दुस्तान और ब्रिटेन के बड़े बड़े राजनीतिज्ञों के ऊपर निर्भर है। यदि इस मौक़े पर भी दोनों देशों के राजनीतिज्ञ एकमत नहीं हो सके तो वास्तव में यह बड़ी भूल होगी। विश्वास किया जाता है कि चांगकाई शेक ऐसे लोकप्रिय और प्रभावशाली व्यक्तित्व के पुरुष अपने इस प्रयत्न में ज़रूर सफल होंगे।

मि० चर्चिल का वक्तव्य

सिंगापुर के पतन के बाद ही ब्रिटिश प्रधान मंत्री मिस्टर चर्चिल ने संसार के लोगों के लिए लन्दन से रेडियो के ऊपर एक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि "मैं आप लोगों के सामने एक गहरी फ़ौजी हार की छाया में यह भाषण कर रहा हूँ। यह एक ऐसा क्षण है कि ब्रिटिश राष्ट्र अपनी योग्यता और क्षमता का परिचय दे सकता है और दुर्भाग्य के बीच भी विजय की भावना प्राप्त कर सकता है।" मिस्टर चर्चिल के इस भाषण का सार "हल" के पाठकों की जानकारी के लिए हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं—

एक सिंहावलोकन

"आज प्रायः ६ महीने हो रहे हैं जब कि मैंने अगस्त के महीने में अपने देशवासियों के लिए रेडियो पर भाषण किया था। इसलिए इन पिछले ६ महीनों के बीच की युद्ध की परिस्थिति का सिंहावलोकन करा देना आवश्यक होगा। अगस्त के महीने में मुझे प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट से मुलाक़ात करने का शुभावसर प्राप्त हुआ था और उनके साथ परामर्श करने के फलस्वरूप मैंने ब्रिटिश और अमरीकन नीति के सम्बन्ध में एक घोषणा की थी जो 'अटलांटिक घोषणा' के नाम से मशहूर है। हमने युद्ध के सम्बन्ध की अन्य बहुत-सी बातें बताई थीं जिनका युद्ध की प्रगति के सिलसिले में विशेष महत्त्व था।

"उन दिनों ऐसा प्रतीत होता था कि जर्मन लोग रूसी सेनाओं को छिन्न-भिन्न करते जा रहे हैं, और वे लेनिनग्राड, मास्को, रोस्टोव तथा उससे भी दूर तक रूस में तेज़ी के साथ घुसते जा रहे हैं। मि० रूज़वेल्ट ने जब उस समय यह घोषित किया था कि रूसी लोग जाड़े के दिनों तक अपनी स्थिति को सँभाले रह सकते हैं, तो वह बहुत साहसिक घोषणा जान पड़ी थी। यह कहा जा सकता है कि उस समय शत्रु अथवा तटस्थ संसार के सभी देशों के फ़ौजी लोग समान रूप से इस बात में सन्देह प्रकट कर रहे थे कि प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट का वह कथन सत्य प्रमाणित होगा।

"हमारे ब्रिटिश उत्पादन के साधन यथा-सम्भव अधिक से अधिक बढ़ गये हैं। हम लोग हिटलर और मुसोलिनी के साथ एक साल से अधिक समय तक बिलकुल अकेले लड़ते रहे हैं। हमें अपने देश पर होनेवाले जर्मन हमले का सामना करने के लिए तैयारी करनी थी। हमें मिस्र की रक्षा करनी थी और जर्मन तथा इटालियन पनडुब्बों के हमलों के बीच से अटलांटिक को पार करके अमरीका से भोजन-सामान, कच्चा माल और गोला-बारूद इँगलैंड लाना था।

"अगस्त के उन दिनों में हमारा यह कर्त्तव्य जान पड़ा कि हमें अपनी शक्ति के अनुसार रूसियों की सहायता करनी चाहिए ताकि उनके विरुद्ध जर्मनों ने जो पाशविकतापूर्ण हमला शुरू किया है उसका वे मुक़ाबिला कर सकें। रूस ने जर्मनी और इटली को पराजित करने के लिए जितने प्रयत्न किये उनको देखते हुए हमने रूस को कम सहायता

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर चर्चिल

पहुँचाई। हम लोगों के पास उस समय ऐसे साधन नहीं थे जिनके द्वारा हम जापान से नई लड़ाई छेड़ सकते थे। अगस्त के मध्य में जब मैंने 'प्रिन्स आफ़ वेल्स' जहाज़ पर—खेद है कि वह जहाज़ अब समुद्र की लहरों में विलीन हो गया है—प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट से मुलाक़ात की थी, उस समय इसी प्रकार की परिस्थिति थी।

"यह सच है कि अगस्त के महीने में सन् १९४० की अपेक्षा, जब कि फ्रांस का पतन हो गया था, हमारी स्थिति बहुत अच्छी थी क्योंकि सन् १९४० में हम लोगों ने इस देश में अपना बिलकुल शस्त्रीकरण नहीं किया था और ऐसा जान पड़ता था कि इटालियनों द्वारा सम्पूर्ण मध्यपूर्व और मिस्र पर क़ब्ज़ा कर लिया जायगा। उन दिनों इटालियनों ने हमें ब्रिटिश सुमालीलैंड से भगा दिया था और वे स्वतः अबीसीनिया में डटे हुए थे। १९४० के उन दिनों के मुक़ाबिले में अगस्त के महीने की परिस्थिति, जिसका हमने प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट के साथ सिंहावलोकन किया था, काफ़ी अधिक सुधरी हुई थी।

"लेकिन अब इस समय परिस्थिति किस तरह की है? कुल मिलाकर क्या हमारे अस्तित्व के बने रहने की पहले से अधिक सम्भावनायें हैं अथवा वे अगस्त के महीने की सम्भावनाओं से कम हो गई हैं? ब्रिटिश साम्राज्य अथवा ब्रिटिश प्रजातंत्र की क्या गति-विधि है? हम ऊपर उठे हैं या नीचे

स्टर चर्चिल

उस समय ऐसे ,हम जापान ने गस्त के मध्य जहाज़ पर— मुद्र की लहरों ण्ट रूज़वेल्ट से इसी प्रकार की

के महीने में फ्रांस का पतन त अच्छी थी। गों ने इस देश ण नहीं किया कि इटालियनों स्र पर क़ब्ज़ा गों इटालियनों भगा दिया था डटे हुए थे। लेमें अगस्त के हमने प्रेसिडेंट न किया था.

रेस्थिति किस क्या हमारे के से अधिक स्त के महीने हैं ? ब्रिटिश तंत्र की क्या हैं या नीचे

...गिरे हैं ? उन स्वतंत्रता के सिद्धान्तों तथा उत्तम कोटि की सभ्यता के बारे में क्या हुआ है जिनके लिए हम लड़ रहे हैं ? क्या वे सिद्धान्त उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं, अथवा उनके लिए अपेक्षाकृत अधिक संकट उत्पन्न हो गया है ? हम अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं को एक साथ रखकर विचार करें और देखें कि वस्तुत: हम किस स्थिति में हैं ? पहली और सबसे महान् घटना यह है कि संयुक्तराज्य अमरीका एकमत होकर और हार्दिक रूप से हमारा पक्ष लेकर इस युद्ध में प्रविष्ट हुआ है। अभी कुछ दिन पहले मैं अटलांटिक को पार करके मि० रूज़वेल्ट से फिर मिलने गया था, लेकिन इस बार हम लोग मित्र के रूप में नहीं बल्कि समान शत्रु के विरुद्ध समान हित के लिए युद्ध करनेवाले साथी के रूप में एक-दूसरे से मिले थे। जब मैं संयुक्तराज्य अमरीका की शक्ति तथा उसके विस्तृत साधनों पर विचार करता हूँ तब मैं यह सोचता हूँ कि अब ये साधन हम लोगों को तथा ब्रिटिश प्रजातंत्र को प्राप्त हैं चाहे यह युद्ध कितना ही लम्बा क्यों न हो और चाहे उसके अन्त में हमें विजय प्राप्त अथवा मृत्यु। मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि संसार में ऐसी कोई और बात भी हो सकती है जिसकी तुलना इसके साथ की जा सके। यही वह स्वप्न है जिसकी मैंने कल्पना की है और जिसके लिए प्रयत्नशील हूँ। लेकिन इसके अलावा एक और बात भी है जो किन्हीं रूपों में तात्कालिक प्रभाव डालनेवाली है। रूसी सेनायें पराजित नहीं हुई हैं। शत्रु उन्हें छिन्न-भिन्न नहीं कर सका है। रूसी लोग पराजित अथवा विनष्ट नहीं हुए हैं। लेनिनग्राड और मास्को पर जर्मनों का कब्ज़ा नहीं हुआ है। रूसी सेनायें लड़ाई के मैदान में डटी हुई हैं। वे यूराल अथवा वोल्गा की रण पंक्तियों पर नहीं अड़ी हुई हैं। वे वीरतापूर्वक आक्रमण-कारियों को अपने प्रदेश से बाहर निकालती हुई आगे की तरफ़ बढ़ रही हैं। इससे भी बड़ी बात यह है कि रूसियों ने हिटलर के स्वप्न को पहली बार भंग किया है। पश्चिम में हिटलर तथा उसके कठपुतलों को जो लूट का कुछ माल मिला है उसके सिवाय हिटलर को रूस में अब तक केवल असफलता, अवर्णनीय अपराधों के लिए लज्जा, लाखों जर्मन सैनिकों का संहार तथा रूस में एक सिरे से दूसरे सिरे तक चलनेवाली बर्फ़ीली हवा यही सब मिले हैं। इस प्रकार दो इतनी महान् बातें हैं जिनका अन्त में संसार की परिस्थिति पर प्रभुत्व होगा और इनके द्वारा विजय की सम्भावना इतनी अधिक हो जायगी जितनी कि पहले कभी नहीं थी।"

जापान का युद्ध में प्रवेश

"लेकिन इसके साथ ही एक दूसरी भयानक बात है जिसका कि इस लाभजनक स्थिति के विरुद्ध प्रभाव पड़ेगा। जापान युद्ध में प्रविष्ट हो गया है और सुदूरपूर्व के सुन्दर, उर्वर, समृद्धिशील तथा घनी आबादीवाले प्रदेशों में संहार-लीला कर रहा है। ग्रेट ब्रिटेन के लिए यह उसकी शक्ति के बाहर था कि एक ओर जब कि वह उत्तर सागर, भूमध्य सागर और अटलांटिक महासागर में जर्मनी और इटली से——जिन्होंने बहुत पहले से युद्ध की तैयारी की थी——लड़ रहा है तो दूसरी ओर वह सुदूरपूर्व में जापानी हमले से अकेला बचाव करता। इँगलैंड में अभी अभी हम इस स्थिति में हुए हैं कि समुद्र में अपने सिर को ऊँचा कर सकें। हमने अभी केवल इतना ही भोजन और रसद प्राप्त किया है जिसके द्वारा हम जीवित रह सकें तथा इस युद्ध को जारी रख सकें। केवल इतने कम सामान से ही हम इँगलैंड में अपनी स्थिति को रक्षित रख सकते हैं। भूमध्यसागर का मार्ग बन्द है और हमारा सारा यातायात केप आफ़ गुड होप (उत्तमाशा अन्तरीप) के मार्ग से हो रहा है। प्रत्येक जहाज़ साल भर में केवल तीन बार जहाज़रानी कर पाता है। ब्रिटेन का एक भी जहाज़ वायुयान, टैंक अथवा विमान-वेधी तोपें शान्त नहीं हैं। हमारे पास जो कुछ भी साधन प्राप्त हैं उनमें से प्रत्येक का या तो शत्रु के विरुद्ध हमला करने में या उसके हमले का मुक़ाबिला करने में लगाया जा रहा है। लीबिया के रेगिस्तान में हम दुस्तर युद्ध कर रहे हैं। वहाँ पर सम्भवत: शीघ्र ही एक अन्य भयानक संग्राम छिड़ेगा। हमें एबीसीनिया, एरिट्रिया, फ़िलिस्तीन, सीरिया, इराक और अपने नवे मित्र फ़ारस की मदद करनी है। इन देशों की रक्षा और सहायता करने के निमित्त हमें मध्यपूर्व में सेनायें एकत्र करना तथा उनको क़ायम रखना पड़ा है और उन सेनाओं के लिए हमें शासाल से अविल रूप से, उस देश में जहाज़, सैनिक और सामान भेजते रहना पड़ा है। हमें रूस के लिए यथाशक्ति विशेष रूप से सहायता करनी पड़ी है। हमने रूस को सबसे संकट-पूर्ण समय में सहायता पहुँचाई है और अब भी उसे सहायता पहुँचाना होगा। इन परिस्थितियों में हम किस प्रकार सुदूरपूर्व में जापान के इतने भयानक हमले से बचाव कर सकते हैं। हमारे मस्तिष्क में बराबर यही भावना उत्पन्न होती रहती थी। इन परिस्थितियों में हमें एकमात्र इसी बात की आशा थी कि अगर जापान जर्मनी और इटली के साथ युद्ध में प्रविष्ट होगा तो संयुक्त राज्य अमरीका हमारा पक्ष लेकर लड़ाई के मैदान में उतर पड़ेगा। इन्हीं कारणों से मैं इतने महीने से इस बात के लिए बड़ा ही सतर्क था कि जापान को किसी भी प्रकार से उत्तेजित न किया जाय और जापान की उद्दण्डताओं को, हालाँकि वे ख़तरनाक थीं सहन किया जाय ताकि हम अपने सामने एक नये शत्रु को खड़ा होते न देखें। मुझे यह यक़ीन नहीं है कि हम अपनी इस नीति में सफल होते। लेकिन हमें यह नीति छोड़ देनी पड़ी। जापान ने सुदूरपूर्व में हमला कर दिया है और सुदूरपूर्व के एक नये चेम्पियन (अमरीका) ने हमारा पक्ष लेकर जापान के विरुद्ध म्यान से तलवार खींच ली है।"

जापानियों का पागलपन

"मैं आप लोगों को साफ़ साफ़ यह बता देना चाहता हूँ कि मैं यह विश्वास नहीं करता कि जापान ने ब्रिटिश साम्राज्य तथा संयुक्तराज्य अमरीका दोनों के विरुद्ध जो लड़ाई छेड़ दी है वह उसके हितों के अनुकूल कार्य हुआ है। मेरे विचार से जापान का यह कार्य अविवेकपूर्ण है वस्तुत: जब आप यह स्मरण करते हैं कि उन्होंने हमारे ऊपर डनकिर्क का प्रकरण समाप्त होने के उपरान्त, जिस समय हम अपेक्षाकृत कमज़ोर थे तथा हमें अमरीका से सहायता प्राप्त करने की उतनी दृढ़ आशा नहीं थी, आक्रमण नहीं किया, तब मैं मुश्किल से यह विश्वास कर सकता था कि वे इस तरह का पागलपन का कार्य करेंगे।

"आज रात को जापानियों की विजय हुई है। वे संसार में अपनी विजय के नारे लगा रहे हैं। हमारी क्षति हुई है। हमें पीछे हट जाना पड़ा है। हम मुसीबत में पड़ गये हैं। लेकिन इस निराशापूर्ण घड़ी में भी मुझे यह यक़ीन है कि १९४२ की घटनाओं के उपरान्त इतिहास जापानी हमले के संचालकों को उनके पागलपन के लिए जापान को दोषी ठहरायेगा और १९४२ में इतिहास का पृष्ठ जापानियों के लिए निराशाजनक होगा।

"ब्रिटिश और अमरीकन नौसेनाओं की

अस्थायी तौर से जो हार हुई है वह किसी शक्तिशाली बाँध के टूट जाने के समान है। बाँध के टूट जाने से बहुत समय से इकट्ठा होनेवाला जल विध्वंस और विनाश के फेन उड़ाता हुआ शान्तिपूर्ण घाटियों में विस्तृत रूप से फैल उठा है। जापानी युद्ध-व्यवस्था की गम्भीरता और योग्यता की ओर कम महत्त्व कदापि न देना होगा। आकाश, समुद्र अथवा स्थल की लड़ाई में सभी जगह जापानी अपने को सबसे अधिक भयानक और मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है, पाशविक शत्रु प्रमाणित हो चुके हैं। इस बात से यह पूरी तौर से प्रमाणित हो जाता है कि यद्यपि जर्मन और इटालियन हमले की अपेक्षा कई मामलों में बहुत कुछ तैयार हो चुके थे फिर भी जापानियों के इस हमले के बचाव करने की तनिक भी सम्भावना नहीं थी। इससे एक और भी बात प्रमाणित होती है जो हमारे लिए सन्तोष और आश्वासन प्रदान करनेवाली होगी।"

चीनियों की वीरता

"अब हम चीनी लोगों की आश्चर्यजनक शक्ति का पता लगा सकते हैं जो मार्शल चांगकाई शेक के नेतृत्व में अकेले ही जापानियों के इस घृणित हमले का आज ४॥ वर्ष से विरोध करते आ रहे हैं और आक्रमणकारियों को चकित तथा विस्तृत कर दिया है। हम अपने सबसे नये शत्रु की शक्ति और वैर को कदापि कम नहीं समझ सकते। लेकिन इसके साथ ही इस विश्व-व्यापी स्वातंत्र्य संग्राम में अपने नये मित्रराष्ट्र (अमरीका) का महान् और विशाल कार्य सत्ताओं की शक्ति को भी कम नहीं समझ सकते। इस बीच में चाहे जो कुछ भी हो, किन्तु अमरीका ने अपने प्राकृतिक साधनों को एक बार फिर बहुत उन्नत और विकसित बना लिया है जिसके फल-स्वरूप सभी व्यक्तियों और बुराइयों को दीर्घकाल के लिए निबटारा किया जा सकेगा। आप सब लोग जानते हैं कि मैंने कभी यह भविष्यवाणी नहीं की है कि हमारा मार्ग सरल, सुगम और सम्मानपूर्ण होगा, मैंने जो कुछ भी कहा वह केवल यही कि इस लड़ाई में हमें खून और पसीना बहाना पड़ेगा। मि० चर्चिल ने आगे की एक पखवारे पहले कामन्स सभा में सदस्यों ने मेरे प्रति उदारतापूर्वक विश्वास प्रकट किया था उस समय मैंने यह चेतावनी दी थी कि हमें बहुत-सी दुर्भाग्यपूर्ण वार्ता, भयानक और कष्टदायक क्षतियों तथा गम्भीर चिन्ता के विषयों का सामना करना पड़ेगा। लेकिन इसके साथ ही जिन गुणों के द्वारा हम १९४० के गरमी के दिनों की गम्भीर परिस्थितियों का तथा हेमन्त तथा शिशिर ऋतुओं को बमवर्षा की घड़ियों को पार करने में समर्थ हुए थे उन्हीं योग्यताओं के द्वारा हम इस नई परीक्षा की घड़ी को भी पार कर जायँगे हालाँकि इसके लिए हमें पहले से भी अधिक मूल्य चुकाना होगा और निस्सन्देह यह परीक्षा की घड़ी लम्बी होगी।"

सेठ जमनालाल बजाज़

हमें दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि गत मास में सेठ जमनालाल बजाज़ का स्वर्गवास हो गया। उनके इस आकस्मिक अवसान पर शोक प्रकट करते हुए महात्मा गांधी ने हरिजनसेवक में लिखा है—

"सेठ जमनालाल बजाज को छीनकर काल ने हमारे बीच से एक शक्तिशाली व्यक्ति को छीन लिया। जब जब मैंने धनवानों के लिए यह लिखा कि वे लोक-कल्याण की दृष्टि से अपने धन के ट्रस्टी बन जायँ, तब तब मेरे सामने सदा ही इस वणिक्‌शिरोमणि का उदाहरण मुख्य रहा। अगर वे अपनी सम्पत्ति के आदर्श ट्रस्टी नहीं बन पाये तो इसमें दोष उनका नहीं था। मैंने जानबूझकर उनको रोका। मैं नहीं चाहता था कि वे उत्साह में आकर कोई ऐसा काम कर लें, जिसके लिए बाद में शान्त मन से सोचने पर उन्हें पछताना पड़े। उनकी सादगी तो उनकी अपनी ही चीज थी। अपने लिए उन्होंने जितने भी घर बनाये वे उनके घर नहीं रहे, धर्मशाले बन गये। सत्याग्रही के नाते उनका दान सर्वोत्तम रहा। राजनैतिक प्रश्नों की चर्चा में वे अपनी राय दृढ़तापूर्वक व्यक्त करते थे। उनके निर्णय पुख्ता हुआ करते थे। त्याग की दृष्टि में उनका अन्तिम कार्य सर्वश्रेष्ठ रहा। वे किसी ऐसे रचनात्मक कार्य में लग जाना चाहते थे जिसमें वे अपनी पूरी योग्यता के साथ अपने जीवन का शेष भाग तन्मय होकर बिता सकें। देश के पशु-धन की रक्षा का काम उन्होंने अपने लिए चुना था, और गाय को उसका प्रतीक माना था। इस काम में वे इतनी एकाग्रता और लगन के साथ जुट गये थे कि जिसकी कोई मिसाल नहीं। उनकी उदारता में जाति, धर्म या वर्ण की

स्वर्गीय सेठ जमनालाल बजाज़

संकुचिता को कोई स्थान न था। वे ए[...] ऐसी साधना में लगे हुए थे, जो काम-काज[...] आदमी के लिए विरल है। विचार-पव[...] उनकी एक बड़ी साधना थी। वे सदा ही अ[...] को तस्कर विचारों से बचाने की कोशिश क[...] थे। उनके अवसान से वसुन्धरा का एक र[...] कम हो गया। उनको खोकर देश ने अप[...] एक वीर से वीर सेवक खोया है। जिस का[...] के लिए उन्होंने अपना शेष जीवन सम[...] कर दिया था, उसे अब उनकी विधवा जान[...] देवी ने स्वयं करने का निश्चय किया [...] उन्होंने अपनी समस्त निजी सम्पत्ति को, [...] करीब ढाई लाख के आस-पास है, कृष्णा[...] कर दिया है। ईश्वर उन्हें अपने इस अंगी[...] कार्य में सफल होने की शक्ति दे!"

—सेवा-ग्राम ११-२-४[...]

हवाई हमलों से बचाव

हवाई हमलों से प्रायः आग लग [...] का डर होता है। ऐसी आग से बचने [...] लिए यह आवश्यक है कि हर एक आ[...] अपने घरों में कुछ बोरे बालू के रख छ[...] बनारस डिवीज़न के कमिश्नर डाक्टर ए[...] एस० नेहरू, आई० सी० एस० का क[...] है कि सबसे अच्छा तरीका यह है कि [...] में जहाँ बालू का ढेर हो वहीं गोबर [...] लिपी एक मामूली देहाती टोकरी भी ह[...] चाहिए ताकि ज़रूरत पड़ने पर यह [...] में लाई जा सके।

—

Issued on Ist March, 1942.